श्री मेघमुनि कृत

# मेघविनोद

का

## सौदामिनी भाषाभाष्य

भाष्यकर्ता

दातारपुरवास्तव्य सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्री पण्डित मिहिरचन्द्र-
शर्मात्मज, आयुर्वेद विद्यावारिधि, आयुर्वेदचक्रवर्ती,
कविराज नरेन्द्रनाथ शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य
प्रिंसिपल सनातनधर्म प्रेमगिरि
आयुर्वैदिक कालिज, लाहौर ।

प्रकाशक

मोतीलाल बनारसीदास
हिन्दी-संस्कृत पुस्तक-विक्रेता
सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर ।

सन् १९४२ ]

[ मूल्य ४) रु०

प्रकाशक
सुन्दरलाल जैन,
मैनेजिंग प्रोप्राइटर,
मोतीलाल बनारसीदास,
सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर।



मुद्रक
शान्तिलाल जैन,
बम्बई संस्कृत प्रेस,
शाही मुहल्ला, लाहौर।

---

# समर्पण

जिनके

उदार

वात्सल्य से

हम इस योग्य हुए,

उन्हीं परम पूज्य, स्वर्गीय

श्रीपितृचरणों की पवित्र स्मृति में,

निरीह एवं पीड़ित जनसमूह

की सेवा करने वाले,

वैद्य वन्धुवर्ग के

कर कमलों में !

# भूमिका

वैद्य वन्धु वर्ग !

महाभारत के अनन्तर आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व भारत के देदीप्यमान प्रचण्ड-मार्तण्ड सार्वभौमनृपति विक्रमादित्य तक का युग हमारे देश का स्वर्णयुग था, विक्रमादित्य के दरबार में वराहमिहिर, वररुचि, अमरसिंह, क्षपणक, कालिदास, धन्वन्तरि आदि नवरत्न जगत् प्रसिद्ध थे, जिनके लिखे हुए ग्रन्थ आज तक भी संसार मे अद्वितीय मार्ग दर्शक हैं।

आप कहते होंगे कि आजकल विज्ञान ( साईंस ) ने जितनी उन्नति की है उतनी शायद पीछे कभी हुई हो, किन्तु हम इस बात को मानने को तय्यार नहीं। हमारे विचार में पूर्वयुगो मे विज्ञान ने जितनी उन्नति की थी, आजकल का विज्ञान उसकी केवल नकल मात्र है। जिनको हमारी बात मे कुछ संदेह हो, रामायण मे रावण युद्ध को देखे, कितने अस्त्र, शस्त्र और माया रचित सेनाओं का वर्णन मिलता है। रावण के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध था कि जल, अग्नि, वायु, मेघ आदि सब देवता उसके इशारे पर काम करते थे और काल उसने अपने पाए के साथ बाधा हुआ था। इसका अर्थ वही निकलता है कि जैसे आज आप बटन दबाते ही बिजली की रोशनी वा पंखे की हवा प्राप्त कर लेते हैं वैसे ही रावण काल में आज से दो युग और पहले यह विज्ञान उन्नति की पराकाष्ठा तक पहुचा हुआ था, इसके अतिरिक्त महाभारत का युद्ध भी कुछ कम न था, घटोत्कच तथा मयदानव की माया के अतिरिक्त तत्कालीन शस्त्रास्त्रो को देखकर किसको आश्चर्य नहीं होता। बौद्धयुग मे यह विद्याएं तो लुप्त हो गई किन्तु तन्त्रविद्या तथा यौगिक सिद्धियों का प्रचार हो गया था, नागार्जुनादि बौद्ध मुनि तथा गोरक्षनाथादि सिद्ध इस युग के मुख्य प्रवर्तक माने गये हैं, यह लोग अपनी इच्छा से जहां चाहें प्रकट हो जाया करते थे और जहां चाहें लुप्त हो जाया करते थे, विना किसी सहायता से आकाश मे उड़ना उन लोगो के लिये

साधारण बात थी। रसशास्त्र का आरम्भ और पारद के १८ संस्कारों की खोज उसी समय हुई थी। आजकल यही रसशास्त्र आयुर्वैदिक चिकित्सा का मुख्य अंग माना जा रहा है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान विज्ञान की उन्नति का श्रेय युरोप के उत्साही वैज्ञानकों को ही है। हम तो शताब्दियों से परतन्त्र और गुलाम होने के कारण केवल बाते करने वाले ही रह गये हैं किन्तु फिर भी हमारा विश्वास है कि वर्तमान साइंस का मूलबीज हमारे विज्ञान ग्रन्थ ही हैं।

इतिहास जानने वालो को यह मालूम ही है कि विक्रम के बाद हमारे देश का पतन आरम्भ हो गया था, लोग थक कर उत्साहीन हो गये और विदेशियो के निरन्तर आक्रमणो से इतने दब गये कि आज तक उठने नहीं पा रहे।

इन आक्रमणो मे सब से बढ़ कर हृदय विदारक बात तो यह थी कि धन और जननाश के साथ २ हमारे साहित्य को भी नष्ट कर दिया गया, काशी और काश्मीर के पुस्तकालयो मे लाखो पुस्तको को आग लगा दी गई जो कि छः छः मास तक रात दिन निरन्तर जलते रहे। और जो कुछ बचे खुचे रह भी गये वह युरोप की लाइब्रेरियो मे कैद किये पड़े हैं। इनमें अभी तक कई ग्रन्थ ऐसे है कि संभवतः हम को जिनके नाम का भी पता नही।

कुछ वर्षों की बात है कि बड़ौदा राज्य की ओर से "समरागण सूत्रधार" ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, जो कि योरुप से लाया गया था, इसका शब्दार्थ है—"युद्धक्षेत्र मे वर्ते जाने वाले यन्त्र शस्त्रो का निर्देशक" यह ग्रन्थ महाराज भोज के समय बनाया गया था। इसमे युद्ध मे बर्ते जाने वाले हवाई जहाजो के बनाने की विधि, कई प्रकार की पुतलिया और हाथी आदि बनाने की विधिया हैं, जिनके अंदर गोला, बारूद, लोहे के छोटे २ तीक्ष्ण शस्त्र रख कर मैशीनरी फिट करके युद्धक्षेत्र मे छोड़ दिये जाते थे, यह यन्त्रों की सहायता से स्वय घूमा करते थे और इनके अदर

के गोला बारूद और शस्त्रों से असंख्य सैनिक मर जाया करते थे। एक हजार वर्ष पूर्व इस प्रकार के वैज्ञानिक चमत्कार देख कर किसको आश्चर्य नहीं होता। आयुर्वेद भी ऐसे चमत्कारों से भरा हुआ था।

हमारा यह शतप्रतिशत विश्वास है कि योरोपीय वर्तमान वैज्ञानिकों ने हमारे प्राचीन ग्रन्थों का ध्यान पूर्वक अनुशीलन किया। उन्होंने जब देखा कि संजय घर बैठा ही महाभारत के युद्ध को देख रहा है तब उनके मन मे अवश्य ऐसी लालसा हुई होगी। वर्तमान रेडियो तथा 'वायरलैस' आदि आविष्कार उसी अनुशीलन का फल है जो आजकल के युद्ध कार्य की एक प्रधान वस्तु बन रहे हैं। इसी प्रकार अन्य अस्त्र-शस्त्रों का भी निर्माण होता गया।

हम पीछे ही कह आए हैं कि प्राचीन भारत के आचार्यों ने जिस विषय पर भी लेखनी उठाई उसे पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया है। उदाहरण के रूप में ज्यौतिष शास्त्र को लीजिये केवल ग्रहचाल बल से संसार व्यापी सुख दुःख का तथा अंक गणित से मनुष्य के भूत, भविष्यत्, वर्तमान की दशा का ठीक पता हो सकता है। अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया, तो एक दिन सिकन्दर दोपहर की कड़कती धूप में जेहलम के किनारे घूम रहा था, वहां उसने देखा कि एक नंगा तपस्वी केवल लंगोटी पहने हुए धूप मे जलती बालु पर बैठा कुछ लकीरें खेंच रहा है, सिकन्दर को यह देख कर आश्चर्य हुआ और चुपके २ तपस्वी के पीछे पहुँच कर खड़ा हो गया। तपस्वी कुछ अंक लिखता है और आश्चर्य से 'सिकन्दर' कह कर मिटा देता है, बार २ लिखता है और उसी आश्चर्य से सिकन्दर कह कर मिटाता जाता है। दरअसल तपस्वी काल का कुछ हिसाब लगा रहा था, जिसका फल 'सिकन्दर' निकलता था। जिसका अभिप्राय यह था कि सिकन्दर यूनान का बादशाह इस समय इस देश मे विद्यमान है। उसे यही आश्चर्य था कि इस समय यहां सिकन्दर कहां ? क्या मेरा हिसाब गलत है ? इसी लिये वह बार २ लिखता था और बार मिटाता जाता था। सिकन्दर यह देख कर उसके

चरणों मे गिर कर कहने लगा कि आप का हिसाब ठीक है, "सिकन्दर आप की खिदमत में हाजिर है।" २—उसी जमाने मे सिकन्दर को ज्वर हो गया, उसने कहा 'हम दवाई खाना नहीं चाहते, हम चाहते हैं कि बिना दवाई खाए हम राजी हो जाएं, यूनानी हकीमो ने बड़ी तदबीरें की कुछ न बना, फिर हिन्दुस्तानी वैद्य को बुलाया, उसे भी यही शर्तें बताईं, वैद्य जी ने सिकन्दर की चारपाई उठवा कर एक बागीचे मे रखवा दी जहा कि नीमो के ही वृक्ष थे. नीम की वायु से कुछ चिर मे सिकन्दर का ज्वर दूर हो गया। ३—संसार मे आजतक कोई ऐसा व्याकरण नहीं जो पाणिनि के व्याकरण का मुकाबला कर सकता हो। इस प्रकार कोई विषय ले लीजिये आप को प्रत्येक विषय सर्वांग पूर्ण ही मिलेगा, किसी विषय में भी कोई त्रुटि न मिलेगी।

अब हम दूसरी ओर न जाते हुए आयुर्वेद की ओर ही आते हैं—

## आयुर्वेद—

आयुर्वेद उसे कहते हैं जो हमारे जीवन के सुख और दुःख के संबन्ध में ज्ञान देने वाला हो, अर्थात् जिस शास्त्र द्वारा हम शरीर और मन के रोगों को जान कर उनको उपाय द्वारा दूर कर सके और इस लोक में सुखपूर्वक पूर्ण आयु भोग कर परलोक में भी सुख प्राप्त करने योग्य हो सकें।

आयुर्वेद ऋग्वेद और अथर्ववेद का उपाङ्ग होने के कारण अनादि है, इसके आदि वक्ता भी ब्रह्मा हैं, ब्रह्मा से प्रजापति ने, प्रजापति से अश्विनी-कुमारो ने, अश्विनीकुमारो से इन्द्र ने, इन्द्र के मुख्य दो शिष्य हुए, १ महर्षि भरद्वाज,भरद्वाज के आत्रेय,आदि महर्षि और आत्रेय के १ अग्निवेश,२ भेल, ३ जतुकर्ण, ४ पराशर, ५ हारीत, ६ क्षारपाणि शिष्य हुए। आजकल जो चरक-संहिता मिलती है यह अग्निवेश-सहिता का प्रतिसंस्कार है। यह सम्प्रदाय कायचिकित्सा वालो का है। इस समय भी संसार मे काय-चिकित्सा मे चरक-संहिता से उत्तम ग्रंथ और किसी भाषा में भी नहीं।

इन्द्र के दूसरे शिष्य हुए भगवान् धन्वन्तरि, धन्वन्तरि के,

औपधेनव, औरभ्र, वैतरण, पौष्कलावत, करवीर्य, गोपुर-रक्षित, सुश्रुत। इनमे सुश्रुत सर्वश्रेष्ठ हुए, भगवान् धन्वन्तरि ने इनको शल्यतंत्र ( सर्जरी surgery ) की शिक्षा दी। आजकल "सुश्रुत संहिता" प्राचीन शल्यतन्त्रका का अनुपम ग्रन्थ है। इस प्रकार चिकित्सा के दो सम्प्रदाय हुए, एक आत्रेय सम्प्रदाय यह कायचिकित्सा प्रधान है, २ धन्वन्तरि सम्प्रदाय, यह शल्यचिकित्सा ( चीरफाड़ ) प्रधान है। इसमें एक कारण यह भी है, कि आत्रेय सम्प्रदाय ब्रह्मर्षि सम्प्रदाय हुआ है। इसलिये इसमें प्रायः कन्दमूल (जड़ीबूटी ) की चिकित्सा है। २, धन्वन्तरि सम्प्रदाय राजर्षि सम्प्रदाय हुआ है। क्षत्रिय लोग स्वभावतः युद्धप्रिय होते हैं। अत. इसमे तीर, तलवार आदि के शल्य को प्रधान माना गया है। यह ही दो मुख्य एवं प्राचीनतम सम्प्रदाय हैं।

२००० वर्ष पूर्व सिन्धदेश में वाग्भटाचार्य हुए जो पश्चात् बौद्ध बन गये। जिन्होने चरक और सुश्रुत दोनो के भाव लेकर 'अष्टाङ्ग संग्रह ग्रन्थ' लिखा, इसमें कायचिकित्सा तथा शल्यचिकित्सा दोनों का अति सुन्दर वर्णन किया गया है।

१ चरक, २ सुश्रुत, ३ वाग्भट इन तीनो ग्रन्थोंको वृद्धत्रयी कहते हैं। यह तीनो ग्रंन्थ आदि युग के माने गये हैं। मध्यकाल मे जब कि विदेशियो के अक्रमण हुए उस समय भी शार्ङ्गधर, माधवनिदान आदि ग्रन्थो का निर्माण हुआ। और १६-१७ शताब्दी में भावप्रकाश लिखा गया। शार्ङ्गधर, माधवनिदान, भावप्रकाश इन को लघुत्रयी कहते हैं। इसी काल में अन्य भी कई ग्रन्थों का निर्माण हुआ।

## आयुर्वेद के आठ अंग—

जैसे जैसे आयुर्वेद विज्ञान का विस्तार होता गया वैसे वैसे इसके पृथक् पृथक् विभाग बनते गये। १ शल्य, २ शालाक्य, ३ कायचिकित्सा, ४ भूतविद्या, ५ कौमारभृत्य, ६ अगदतंत्र, ७ रसायन, ८ वाजीकरण, यह आठ अङ्ग वा विभाग माने गये हैं। इन्हीं से आयुर्वेद को अष्टांग कहते हैं।

१—जखमो की चीरफाड को शल्यचिकित्सा कहते हैं, २—कण्ठ, मुख, नाक, आख, कान की चीरफाड को शालाक्यचिकित्सा कहते हैं, क्योंकि इनमे शलाकाओ अथवा बडे बारीक और छोटे छोटे शस्त्रो का व्यवहार होता है। ३—ज्वर, अतिसार, पाण्डु आदि शरीररोगोंकी चिकित्सा को कायचिकित्सा कहते हैं। ४—मन्त्रतन्त्रादि द्वारा भूतप्रेत, पिशाचादिकों की चिकित्सा को भूतविद्या कहते हैं। ५—बच्चो का भरण पोषण तथा उनके विशेष रोगो की चिकित्सा को कौमारभृत्य कहते हैं। ६-साप, बिच्छू, भिड, संखिया, अफीम आदि विषो की चिकित्सा को अगदतंत्र कहते हैं। ७—सारे शरीर के कायाकल्प को रसायन विद्या कहते हैं। ८—वीर्य को शुद्ध करके उत्पत्ति करने योग्य बनाने वाली विद्याको वाजीकरण कहते हैं।

प्राचीनकाल मे आठो ही अंगो के चिकित्सक जुदा जुदा होते थे। अर्थात् जो कायचित्सक होते थे वह शल्यचिकित्सा नहीं किया करते थे। इस प्रकार प्रत्येक विभाग पूर्णरूपेण उन्नत होता गया और एक एक अंग पर कई कई ग्रन्थ लिखे गये थे, किन्तु आज कालवश हमे यह सारे ग्रन्थ नहीं मिल रहे, इसका कारण हम ऊपर बता चुके हैं। विशेष कर शल्य-शालाक्य तो बौद्धकाल मे समाप्त हो गये क्योकि अहिंसावश हो लोगो ने चाकू पकड़ना भी छोड़ दिया। कौमारभृत्य, रसायन और वाजीकरण यह कायचिकित्सा मे मिल गये। अगदतंत्र और भूतविद्या छोटी जातियो मे चले गये।

**रसशास्त्र**—विज्ञान प्रगतिशील है, ज्यो ज्यो बुद्धि का विकास होता जाता है, विज्ञान भी बढ़ता जाता है, जहा बुद्धि रुक गई विज्ञान भी रुक गया। लोग जब अधिक आरामतलब हो गये, काढ़े वा चूर्ण उनकी रुचि के अनुकूल न हुए तो तत्कालिक विज्ञानवेत्ता सिद्धो की कृपा से रसशास्त्र का विकास हुआ। सिद्धों ने अपने योगबल से पारद के संस्कारों की खोज करली और इस प्रकार से सिद्ध किया हुआ पारद मनुष्य को अजर-अमर बनाने की शक्ति रखता है। पारद के १८ संस्कारो का वर्णन प्राचीन रस-शास्त्रो में मिलता है। साधारण बुद्धि वालों के लिये केवल पारद के

८ संस्कार ही पर्याप्त होते हैं। इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारद प्रत्येक योग में प्रयुक्त हो सकता है। इसका सब से उत्तम यौगिक गन्धक है, कुछ विशेष अवस्थाओं को छोड़ कर पारद-गन्धक की कज्जली बना कर ही प्रयुक्त होती है।

इस समय वैद्य लोग केवल कायचिकित्सा ही करते हैं। राज्य-प्रभाव से डाक्टरी चिकित्सा ठीक इसी रूप में चल रही है, सरकार इसके लिये लाखों रुपया प्रतिवर्ष खर्च करती है, यद्यपि कायचिकित्सा में आज भी आयुर्वेद चिकित्सापद्धति सर्वप्रथम है। यह हमारी चिकित्सा की श्रेष्ठता है कि हम बिना किसी सहायता से अनेक रुकावटें होने पर भी रोगियों की सेवा करके यश और गौरव प्राप्त कर रहे हैं।

पारद की विशेषता—अन्य दवाइयों से इसमें यह विशेषता है कि एक तो इसकी मात्रा रत्तियों से अधिक नहीं, २—इसलिये खानेमें कोई अरुचि नहीं होती, ३—तत्काल लाभ देता है, अर्थात् जहां काढ़े का कटोरा आठ दिन में लाभ करेगा वहां पारदसे बने हुए मृत्युञ्जय आदि रस की आधीरत्ति की मात्रा दो तीन दिन में ज्वर का नाश कर सकती है। ४—इसमें यह गुण है कि यह योगवाही है, जिस प्रकार के योग में मिलाएंगे इसकी शक्ति को चारगुना अधिक कर देगा। आज भी इसके बने हुए 'मकरध्वज' आदि संसार की सर्वश्रेष्ठ औषधियों में से हैं। पारद की विशेषता देखकर सब की रुचि इसी ओर हो गई है। और आजकल भी वैद्यों का यश इस रसशास्त्र पर ही निर्भर है। एक छोटे से बक्स में सारा औषधालय बन्द हो सकता है और जहां मनुष्य चाहे लेजा सकता है।

इस प्रकार हमारी चिकित्सा केवल एक पद्धति पर न रह कर मिश्रित हो गई, और इसी के अनुसार हमारे संग्रह-ग्रन्थ तयार होने लगे, अर्थात् एक ग्रन्थ में ही आपको क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, अरिष्ट, रस, गुटिका, धातुभस्म मिल जायेंगे, जिसका यह लाभ हुआ कि आपकी आवश्यकता एक ही ग्रन्थ में पूर्ण हो सकती है। यदि आप ऐसे किसी एक ग्रन्थ का अच्छी तरह अनुशीलन कर ले तो आपको ग्रन्थों का भण्डार उठाने की आवश्यकता नहीं रहती।

त्रिदोष सिद्धान्त—आयुर्वेद का त्रिदोष सिद्धान्त भी बिलकुल सीधा-सादा है, जैसे बाहर की गरमी, सरदी का प्राणियो पर प्रभाव पड़ता है वैसे ही अंदर की गरमी, सरदी का प्रभाव शरीर पर पडता है, शरीर की गरमी को पित्त, और सरदी को कफ, खुश्की को वायु कहते हैं। जब यह वात,पित्त,कफ, तीनो सम अवस्था मे रहे तो शरीर स्वस्थ रहता है,जब यह न्यूनाधिक हो जाते हैं तो उस समय शरीर में रोग पैदा हो जाते हैं।

इनकी चिकित्सा का सिद्धान्त भी सीधासादा है, गरमी से होने वाले रोगो की शीत चिकित्सा, और शीत से होने वाले रोगोकी गर्म चिकित्सा, खुश्की से होने वाले रोगो की स्निग्ध चिकित्सा, बादी से होने वाले रोगों की रूक्ष चिकित्सा की जाती है।

आहार व औषध—हम जो कुछ खाते हैं वह भोजन षट्रस होता है। १ मधुर, २ अम्ल, ३ लवण, ४ कटु, ५ तिक्त, ६ कषाय, यह छ रस होते हैं। इनमे मधुर, अम्ल, लवण यह तीनो वायु को शान्त करते हैं और कफ को बढाते हैं। कटु, तिक्त, कषाय कफ को नष्ट करते हैं और वायु को बढ़ाते हैं। कटु, अम्ल, लवण, पित्त को बढाते हैं, मधुर, तिक्त, कषाय, पित्त को नष्ट करते हैं। इस प्रकार बुद्धिमान वैद्य को इन सब बातो पर विचार कर चिकित्सा करनी चाहिये।

इस ग्रन्थ की उपयोगिता—हम पीछे कह आए हैं कि समय की उपयोगिता के साथ ग्रन्थ रचना भी वैसी होती गई, संस्कृत के जमाने मे संस्कृत और प्राकृत के समय मे प्राकृत, किन्तु जब संस्कृत और प्राकृत का समय समाप्त हुआ तो हिन्दी भाषा का प्रचार आरम्भ हो गया और कई ग्रन्थ हिन्दी कवित्त छन्दो मे लिखे गये और उनमे प्राचीन तथा प्रचलित तत्कालीन रोगों की तथा रूढ़ियो की चिकित्सा का वर्णन भी विशद रूप से किया गया। यही बात हमारे इस मेघविनोद ग्रन्थके विषय मे भी ठीक घटती है। यह ग्रन्थ संवत १८१८ विक्रमी मे लिखा गया, इसके रचने वाले जैन सम्प्रदाय के पूज्य, श्री मेघमुनि हुए हैं, सुना जाता है कि वह होश्यारपुर के थे, किन्तु पश्चात् फगवाड़े चले गये, फगवाड़े का

निवास ग्रन्थ समाप्ति पर उन्होने स्वीकृत किया है। मेघविनोदग्रन्थ अपने समय का अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ साबित हुआ है। इस ग्रंथ के अनुशीलन से आपको मेघमुनि की विद्वत्ता, अस्तिकता एवं सहृदयता स्पष्ट प्रतीत हो जायगी। इसके अतिरिक्त उन्होने बड़े निच्छलभाव से उन ग्रन्थो के नाम अन्त में अंकित कर दिये हैं, जहा से कि उन्होने योग लिये थे। दूसरे— मेघविनोद में बहुत ग्रन्थों के नाम आते हैं, इससे प्रतीत होता है कि मेघ-मुनि ने कितने ग्रन्थो को पढ़ा होगा और उसके पश्चात् जिस जिस ग्रन्थ से जो जो योग अच्छे मिले इस ग्रन्थ मे लिखते गये। चिकित्सा के लिहाज से यह ग्रन्थ अपने समय का उच्चकोटि का ग्रन्थ है। दो सौ वर्ष पूर्व हमारे देश मे संस्कृत भाषा का इतना प्रचार नहीं रह गया था। लोग अपनी प्रान्तीय भाषा पढ़ा करते थे, इसी लिये मेघमुनि ने इस ग्रन्थ को भी पञ्जाबी भाषा मे लिखा। इसके दोहे और चौपाइया श्रीगुरुग्रन्थ साहिब के समान मिश्रित भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई हैं।

## सौदामिनी भाषा-भाष्य की आवश्यकता—

हम पीछे बता चुके हैं कि प्रत्येक वस्तु समय की अनुकूलता मे आकर ही उपयोगी सिद्ध होती है। दो सौ वर्ष पूर्व दोहे चौपाइयो का समय था, उसके पश्चात् क्लिष्ट भाषा का और अब बिलकुल सरल भाषा का समय है, सीधी सादी बात को प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है कठिन बात न ही प्रत्येक व्यति समझ सकता है और न ही प्रत्येक व्यक्ति समझने की कोशिश करता है।

१६३६ ई० की बात है कि एक दिन कालिज से लौटता हुआ सेठ मोतीलाल बनारसीदास जैन के पुस्तकालय में चला गया, जाते ही उन्होने मेरे सामने एक बड़ा-सा ग्रन्थ रख दिया, मैंने देखा यह ग्रन्थ गुरुमुखी मे छपा हुआ 'मेघविनोद' था। मै कोई गुरुमुखी का विद्वान् नहीं हू किन्तु गुरुमुखी अक्षरों के जानने और भूलने मे कोई देर नहीं लगती। इस लिये मैंने एकाग्रचित्त होकर पढ़ना आरंभ किया, वस्तुतः ग्रन्थ मुझे

अत्यन्त रोचक और प्रमाणिक प्रतीत हुआ। जब मैंने पुस्तक से दृष्टि उठाई तो पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमान् लाला सुन्दरलाल जी जैन ने मुझसे इस ग्रन्थ को बिलकुल सरल भाषा मे लिखने का आग्रह किया, इसके साथ ही इसकी एक हस्त लिखित हिन्दी प्रतिलिपि भी दी। यद्यपि उस समय मेरी रुचि अधिकतर संस्कृत की ओर थी, इस ओर आना पसन्द नहीं करता था, किन्तु उनके साथ मेरे सम्बन्ध आज तक ऐसे चले आ रहे हैं कि मैं उनको इन्कार न कर सका। दूसरे उस समय मैं कालिज का वाइस-प्रिंसिपल था, कार्य अधिक रहने पर भी मेरा मस्तिष्क उत्तरदायित्व से बिलकुल मुक्त था, इसलिये उनके आग्रह को लौटा न सका।

पुस्तकें घर पहुँच गई, मैंने इनका अनुशीलन आरम्भ कर दिया और लिखना भी आरम्भ कर दिया। अगले ही वर्ष मुझे जब कालिज का आचार्य (प्रिंसिपल) पद सम्भालना पड़ा तो कार्याधिक्य एवं उत्तरदायित्व आने पर यह सारा कार्य रुक गया। अब पिछले वर्ष मुझे फिर कुछ समय मिल गया और मैंने इसे समाप्त ही करना उचित समझा। कागज अधिक महंगा होने पर भी लाला सुन्दरलाल जी जैन ने इस कार्य को रुकने न दिया। इन दो कारणों से ही आज यह ग्रन्थ प्रभु की कृपा से समाप्त हो रहा है।

## पुस्तक की उपयोगिता—

जो उद्देश्य मेरे अन्तरात्मा मे अंकुरित हो चुका था उसी के अनुसार इस ग्रन्थ को लिखने मे मैंने दो तीन बातों का विशेष ध्यान रखा है।

१ भाषा—अपनी ओर से मैंने इस ग्रन्थ को इतनी सरल और स्पष्ट भाषा मे लिखने की चेष्टा की है कि प्रत्येक पञ्जाबी व हिन्दी जानने वाला व्यक्ति इसको बिना किसी कष्ट के समझ सके।

आप जानते ही हैं कि इस बीसवीं शताब्दी मे भी जब कि ज्ञान की प्रकाश रेखा संसार को प्रकाशित कर रही है, हमारे देश मे आज भी असंख्य देहात ऐसे हैं जहां कि पढ़े लिखे वैद्यों का बिलकुल अभाव है, और कई ऐसी जगह भी हैं जहा कोई पढ़ा हुआ या अपढ़ वैद्य भी नहीं मिलता।

ऐसी अवस्था में गरीब देहातियो पर जो बीतती है उसे प्रभु ही जानता है। असंख्य रोगी बिना चिकित्सा के अथवा वैद्य कहाने वाले मूर्ख टोटके वालो की गलती से मृत्यु के मुख मे जाते रहते हैं।

लोगो में दरिद्रता इस प्रकार छाई हुई है कि इच्छा रखते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रारम्भिक शिक्षा से आगे नहीं बढ़ सकता। हमारा ग्रन्थ लिखने का मुख्य उद्देश्य यही था कि साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य जो कि अपने मे कुछ बुद्धि भी रखता हो इस पुस्तक के पढ़ने से रोगियो को मृत्यु के मुख से बचा सकता है, क्योंकि संसार में विद्यादान और जीवनदान देने से बढ़कर कोई पुण्य नहीं। रोगी की भलाई के उद्देश्य से ही चिकित्सा करनी चाहिये, धन और यश तो स्वयं पीछे पीछे फिरते हैं।

२—दवाइयो के नाम भी बिलकुल प्रसिद्ध दिये हैं, इस बात की पूरी कोशिश की गई है कि जो दवाई बाज़ार मे जिस नाम से मिलती है, उसका यथा सम्भव बाज़ारी नाम ही दिया गया है।

३—दवाई तयार करने के तरीके भी बिलकुल सीधे सादे कर दिये हैं, मूल ग्रन्थ मे जहां कहीं उलझन आई है इसमें हमने साफ कर दिया है, ताकि दवाई बनाने में कोई संकट वा कठिनाई न रह जाये।

४—मात्रा—यह आपको प्रतीत ही है कि प्राचीन ग्रन्थों मे दवाई की मात्रा मिकदार (खूराक) कितनी अधिक लिखी गई है, आजकल इतनी मात्रा कोई व्यक्ति पचा नहीं सकता। हमने इसी बात को देख कर समय के मुताबिक प्रत्येक औषधी के पीछे उसकी मात्रा और अनुपान लिख दिया है ताकि दवाई सेवन मे कोई रुकावट न हो।

५—अन्तिम अध्यायों में बूटियो की पहचान तथा धातुओं की शोधन मारण विधि बड़ी सरलता से लिख दी है, जिस जिस बूटी का हमें पूर्ण ज्ञान है, हमने उसके बताने में कोई कसर नहीं रखी और जो बूटी आम प्रसिद्ध है उसको भी हमने उसी ढङ्ग से लिख दिया है।

६—इस ग्रन्थ के पास रहने पर अन्य ग्रन्थो को साथ उठाने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

## अन्तिम निवेदन

अन्त में हमने इस ग्रन्थ को लोकोपयोगी बनाने मे अपनी ओर से पूर्ण चेष्टा की है, फिर भी समय के अभाव से अथवा मनुष्य स्वभाव से सम्भव है कि मेरे लिखने मे त्रुटिया रह गई हो। क्योकि मनुष्य अपनी त्रटियो को स्वय नहीं जाच सकता। मेरा आप सज्जनो से यही नम्रनिवेदन है कि आप मेरी त्रुटियो की ओर न जाते हुए इस ग्रन्थ की उपयोगिता की ओर जावें, मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस ग्रन्थ की उपयोगिता के आनन्द में मेरी त्रुटियो को अवश्य भूल जावेंगे।

आरोग्य-मन्दिर
१४, राजाराम स्ट्रीट, लाहौर।
चैत्ररामनवमी
१९९८ (१९४२)

भवदीय
नरेन्द्रनाथ शास्त्री
(प्रिंसिपल)

## कुछ ध्यान देने योग्य बातें—

हम इस ग्रन्थ मे आने वाली कुछ विशेष ध्यान देने योग्य बातों का यथा स्थल निर्देश कर चुके हैं, तो भी चिकित्सक के विशेष तत्त्वावधान के लिये हम उनको नीचे सार रूप में लिख देना भी उपयुक्त समझते हैं।

१—वत्सनाभ (बच्छनाग, तेलिया, विष) और २ – सखिया यह तीव्र विष हैं तथाहरताल, अफीम, कुचला, धत्तूरा, गुञ्जा, जमालगोटा आदि विष हैं, इनको बिना शुद्ध किये न वर्तिये, जिस जिस औषधी मे इनका प्रयोग हो उसकी मात्रा भी सोच समझ कर देवे। ऐसे योग जिनमे विष प्रयोग किया जाता है उसकी मात्रा १ रत्ति से २ रत्ति तक हो सकती है। इनकी विशेष शुद्धि ग्रन्थ मे बताई गई है।

२—जिस योग में पारा और गन्धक का प्रयोग हो वहां प्रथम इन दोनों को खरल में डाल कर सुरमे की तरह कज्जली कर लेनी चाहिये। स्मरण रहे कि पारा और गन्धक शुद्ध लेने चाहिये।

३—प्रायः प्रत्येक योग मे पारा और गन्धक दोनों इकट्ठे आते हैं, किन्तु जिस योग मे केवल पारा ही हो वहा कच्चे पारे के स्थान पर रस-सिन्दूर व शुद्ध शिंगरफ लेना चाहिये।

४—धातुओ को अच्छी तरह शुद्ध करके भस्म कर लेना चाहिये। गुग्गुल, गुञ्जा, मधु, घृत, सुहागा इनमे भस्म को मिला आग पर पिघला कर देखो, यदि धातु कच्ची होगी तो डली बन कर एक ओर हो जावेगी। कच्ची को फिर विधिपूर्व भस्म करो।

ताम्र (तांबा) विष से भी अधिक प्रभाव रखता है, इसलिये इसे बड़ी सावधानी से वर्तना चाहिये। इसकी भस्म कर लेने के बाद भी पञ्चामृत की पुटे दे देना चाहिये। इसकी मात्रा १ चावल तक है।

५—स्नेहपाक—घृत-तैल को पकाने से पूर्व मूर्छित कर लेना चाहिये। विधि—हलदी, मंजीठ, नागरमोथा, कुठ, निम्बू के पत्र इनका-

चूर्ण पात्र मे घोल लें। फिर घी वा तैल को खूब गरम करके नीचे उतार लें और थोडा थोडा करके उस पानी को छिडकते जावें। इस प्रकार से तैल मूर्छित एव सुवासित हो जाता है। इसके अनन्तर जिस प्रकार का घृत-तैलपाक करना हो कर लेवें। घृत-तैल का मध्यम पाक ही श्रेष्ठ रहता है।

आसवारिष्ट—आसव और अरिष्ट साधन की जो परिभाषा बताई है, उसका भी ध्यानपूर्वक अनुशीलन कर लेना चाहिये। आसव-अरिष्ट यदि कच्चे रह जावें तो इनमें गैस बनती रहती है और बोतलें फट जाया करती हैं। यदि ठीक समय पर न निकाले जावें तो खट्टे होकर शुक्त वा सिरका बन जाते हैं। इनके छानने मे बड़ी सावधानता रखनी चाहिये, यदि ठीक न छनेंगे तो गाद में फिर खमीर उठता जावेगा और बोतल फटती जावेगी। इनकी मात्रा १। तोला से २॥ तोला तक, बराबर अर्क सौंफ व अर्क काजवान, अथवा जल। आसवारिष्ट खाली पेट नही देने चाहिये, भोजन के दो घण्टा बाद देने चाहिये।

चूर्ण—चूर्णों की मात्रा आजकल ३-४ माशे तक हो सकती है, रेचक चूर्ण ६ माशे तक भी दिये जा सकते हैं।

क्वाथ व काढ़े—काढ़े के द्रव्य दो तोले हों तो जल ३२ तोले मिलाकर क्वाथ करना चाहिये, जब आठ तोले रह जावे तो उतार छान कर पिला देना चाहिये। इसमे प्रक्षेप २ रत्ति से १ माशा तक पीछे पिलाया जा सकता है।

अवलेह—अवलेह चटनी आदि की मात्रा ४ माशे से १ तोला तक हो सकती है।

यह हमने इस ग्रन्थ मे अधिकतया आने वाली बातों का संक्षेप से निर्देश कर दिया है, इनका विस्तार आपको इस ग्रंथ मे मिलेगा सारा ग्रन्थ पढने से पूर्व इन आवश्यक जानने योग्य बातो को अवश्य जान लेना चाहिये, ताकि चिकित्सा कार्य करते समय किसी बात का सन्देह न रह जावे।

हमने अपनी ओर से इस ग्रन्थ को बिलकुल सरल और सन्देह-रहित बनाने की चेष्टा की है। किन्तु फिर भी आयुर्वेद शास्त्र एक समुद्र के समान है, मेरे जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति कहां तक सफल हो सकते हैं, यह तो इस ग्रन्थ के अध्ययन और परिशीलन से ही पता चल सकेगा।

मुझे आशा है यदि फिर समय मिला तो इसके आगामी संस्करण को अत्यन्त रोचक एवं अति सरल बनाने में आज से अधिक सुविधा होगी।

आरोग्यमन्दिर,<br>
१४, राजाराम स्ट्रीट, लाहौर।<br>
चैत्र रामनवमी<br>
१९९८ ( १९४२ ई० )

आपका विनीत<br>
नरेन्द्रनाथ शास्त्री<br>
प्रिंसिपल

# विषय-सूची

## तीसरा अध्याय

## संग्रहणीरोगाधिकार



## अर्शरोगाधिकार



## अजीर्ण-मन्दाग्निरोगाधिकार

## वातरक्तरोगाधिकार

## शोथरोगाधिकार

## दसवां अध्याय

**कर्णरोगाधिकार**

## तेरहवां अध्याय

श्री सरस्वत्यै नम. ।

# अथ मेघविनोद

## सौदामिनीभाषाभाष्य प्रारम्भः ।

समस्त विश्व के आधार, जगत् के शिरोमणि, एवं पापो के नाश करने वाले परम सुखदायी श्री जिनेश्वर प्रभु की जय हो ।

उसी जिनेश्वर महाप्रभु का स्मरण कर सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिये इस सुखदायी 'मेघविनोद' नाम ग्रंथ का निर्माण करता हू ।

निर्विघ्न ग्रंथसमाप्ति के लिये निशिदिन मंगल कामना करता हुआ श्री शारदा माता का ध्यान कर श्री गुरु महाराज एव श्री गणपति के चरण युगल मे वार वार नमस्कार करता हूं ।

ससार मे अनन्त कवि हुए हैं और अनन्त ही उनके रचनाग्रथ है, उन सब ग्रन्थो का मत लेकर मै सुखदायी 'मेघविनोद' नाम ग्रन्थ को रचता हू ।

इस ग्रन्थ मे चतुर वैद्यो के हित रोगो के निदान, लक्षण, सख्या, पथ्यापथ्य-विधान, चिकित्सा, स्वप्न-विधि, साध्यासाध्य विचार, नाडी-परीक्षा तथा मूत्र-परीक्षा-विधि का वर्णन करूगा ।

### अथ नाड़ी-परीक्षा

पुरुषो के दाहिने और स्त्रियो के बाएं हाथ के अङ्गुष्ठ मूल (कलाई) मे नाडी-परीक्षा करनी चाहिये, जिससे कि सब प्राणियो के सुख और दुःख एव जीवन-मरण का ज्ञान होता है ।

प्रथम नाडी-परीक्षा द्वारा रोग का निश्चय कर लेने पर पश्चात् यथा-शास्त्र चिकित्सा करनी चाहिये ।

१ साध्य रोग, २ असाध्य रोग और ३ कष्टसाध्य रोग, इस प्रकार मुनियो ने रोगो की तीन जातियॉ मानी हैं । नाड़ी द्वारा रोग समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये ।

नाडी के आदि मे पित्त मध्य मे श्लेष्मा और अन्त मे वायु प्रधान होता है, यह त्रिविध नाडी के सामान्य लक्षण हैं।

वात-प्रकोप मे नाड़ी की गति सर्प और जलौका (जोंक) की गति के समान होती है, पित्त-प्रकोप से कुलिङ्ग, कौआ और मेढक की गति के समान और कफ कोप मे हंस तथा पारावत ( कबूतर ) की गतिवाली होती है।

सन्निपात मे नाडी की गति लवा, तीतर एवं बटेर की गति के समान होती है

दो दोषों के प्रकोप मे कभी नाडी मन्दगामिनी और कभी शीघ्र-गामिनी होती है।

जो नाडी अपना स्थान छोड दे, अथवा रुक रुक कर चले वह नाड़ी असाध्य ( मृत्युसूचक ) होती है, और जो नाडी अतिक्षीण एवं शीत हो वह भी मृत्युकरी होती है।

ज्वरवेग मे नाडी उष्ण और वेगवती होती है, काम और क्रोध मे वेगवाहिनी, चिन्ता और भय मे नाडी की गति क्षीण होती है ॥ १५ ॥

मन्दाग्नि और क्षीणधातु पुरुष की नाडी की गति मद होती है, रक्त-विकार मे नाडी उष्णस्पर्श ( गरम ) तथा भारी होती है, आमदोष (अलसक आदि ) मे भी नाड़ी भारी होती है।

दीप्ताग्नि नर की नाडी हलकी तथा वेगवती होती है। सुखी नर की नाडी स्थिर एव बलवती होती है, भूखे मनुष्य की नाड़ी चपल होती है और तृप्त मनुष्य की स्थिर होती है।

यह सारी परीक्षा-विधि मेघ कवि ने शार्ङ्गधरसंहिता मे से लेकर इस मेघविनोद ग्रन्थ में लिखी है।

## मूत्र-परीक्षा

अब मै मूत्र-परीक्षा विधि लिखता हूँ, जिसके ज्ञान से वैद्य की सर्वत्र विजय होती है।

मूत्र-परीक्षार्थ मूत्र की पहली धार और अन्त की धार त्याग देनी चाहिये, मध्य का मूत्र लेकर परीक्षा करनी चाहिये।

घडी रात रहे कासी के वर्तन मे रोगी का मूत्र ग्रहण करना चाहिये, और कुछ दिन चढ़े उसकी परीक्षा करनी चाहिये।

कडवे तेल की एक बून्द ले कांस्यपात्र में रखे हुए मूत्र पर डाले, यदि वह सारे मूत्र पर फैल जावे तो रोग साध्य होता है, वैद्य को ऐसे रोगी की चिकित्सा करनी चाहिये। यदि बूंद के असंख्य छोटे छोटे कतरे हो जायें तो रोग कष्टसाध्य होता है, और यदि बूंद मूत्र के नीचे बैठ जावे तो रोग असाध्य होता है।

यदि बूंद पूर्व दिशा की ओर हो जावे तो रोगी स्वस्थ होकर चिर-जीवी होगा, यदि बूंद दक्षिण की ओर जावे तो रोगी की अवश्य मृत्यु होगी, यदि बूंद पश्चिम की ओर बढे तो भी रोगी स्वस्थ होकर दीर्घायु होगा, उत्तर दिशा में बूंद जावेगी तो बहुत सुख प्राप्त करेगा।

ईशान कोण की ओर तेलबूंद जावेगी तो रोगी की एक मास में मृत्यु होगी। आग्नेय और नैर्ऋत कोण की ओर जाने वाली बूंद भी मृत्यु-सूचक होती है, वायव्य कोण की ओर जावे तो रोगी दीर्घायु होता है। मेघ कवि कहते हैं कि जो वैद्य इस प्रकार मूत्र-परीक्षा करके रोगी की चिकित्सा करता है वह ही पण्डित होता है ॥ २१ ॥

अब अन्य विधि से मूत्र-परीक्षा लिखते हैं—यदि तेल की बूंद मूत्र पर छाई रहे तो रोगी स्वस्थ हो जाता है, और यदि डूब जावे तो निश्चय मृत्यु हो जाती है। अथवा जो जो रूप प्रतीत हो उनका फल विचार कर लिखता हूं, यदि मूत्र पर तेल बूंद हल, कछुवा, मकडी और ऊंट के आकार की प्रतीत हो तो रोगी असाध्य होता है। अथवा—चौरस्ता, तीन मार्ग, दो मार्ग अथवा एक मार्ग के रूप में बूंद प्रतीत हो तो भी रोगी की मृत्यु हो जाती है। अथवा शिर-रहित देह प्रतीत हो अथवा खण्ड खण्ड देह प्रतीत हो तो भी रोगी मृत्युमुख में पहुँच जाता है ऐसा मुनियों का मत है। अथवा—शस्त्र, धनुष, दण्ड, तलवार, मूसल, कटा हुआ सिर, त्रिशूल अथवा लाठी के आकार में प्रतीत हो तो भी रोगी जीवित नहीं रह सकता। शुभ लक्षण—यदि बूंद हंस, सरोवर, कमल, फल, चामर, सुन्दर मनुष्य, हाथी, गृह, तोरण, छत्र रूप में प्रतीत हो तो रोगी का कष्ट दूर हो जाता है और रोगी सुख पाता है। यदि तेल छलनी के रूप में हो तो प्रेत-दोष होता है, यदि त्रिकोण रूप धारण करे तो दो दोष जाने,

देव-दोष या शाकिनी का कोप। यदि बूंद आदमी की शकल की बने तो ग्रह-दोष अथवा कुलदेवी की छाया जानना। यदि दो सिर वाला मनुष्य नजर आवे तो देवी का दुःखदाई कोप होता है।

श्री मेघ मुनि कहते है कि यह मूत्र-परीक्षा मैने बताई है इसके आगे काल-ज्ञान का वर्णन करूंगा जिसको अच्छी तरह समझ लेने पर चतुर वैद्य सब स्थान पर जय पाता है, यदि न समझे तो दुःख और अपयश पाता है, इस लिये इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

## काल-ज्ञान

दोपहर के वक्त जब कि आकाश निर्मल हो, एक कासी के कटोरे मे सरसो का तेल भर कर सूर्य के सामने बैठ कर तेल मे सूरज का प्रतिबिम्ब (छाया) देख रोगी की काल-परीक्षा करे, यदि सूर्य दक्षिण दिशा की तरफ से हीन अर्थात् कटा हुआ मालूम हो तो रोगी छः महीने तक मर जायगा, और अगर पश्चिम की तरफ से खंडित (कटा) हो तो तीन महीने तक रोगी मर जायगा, अगर सूर्य उत्तर दिशा की तरफ से खण्डित हो तो दो मास रोगी की आयु है और अगर पूरब दिशा की तरफ से सूर्य खण्डित है तो एक महीने तक रोगी जियेगा। और अगर सूर्य उस तेल मे देर से और बीच से कटा हुआ नजर आवे तो रोगी दस दिन मे मर जायगा, अगर सूर्य काले रंग का नजर आवे तो रोगी तत्काल मर जायगा, और सूरज स्वच्छ निर्मल और पूरा नजर आवे तो रोगी जल्दी ही स्वस्थ और तन्दुरुस्त हो जायगा। काल उसका कुछ नही बिगाड सकता।

इस काल-ज्ञान को चतुर, विद्वान् और जिसने गुरुमुख से विद्या पढी हो और जिस पर गुरु महाराज की कृपा हो वही जान सकता है, गुरु की निन्दा करने वाला, अभिमानी, लोभी, हठी, नीच आदमी इस विद्या को नही पा सकता। इस विद्या को अच्छी तरह जानने वाला वैद्य कही भी हार नहीं पाता, जगह जगह उसकी विजय होती है, यश होता है, आदर होता है, और सारे संसार मे प्रसिद्ध हो जाता है। यह सब गुरु की कृपा से प्राप्त होता है। उसके बिना आदमी मूर्ख रह जाता है, और स्थान स्थान पर ठोकरे खाता और अपयश प्राप्त करता है।

## अथ सर्पाकार चक्र ( काल-ज्ञान से )

सर्प के आकार ( शकल ) का एक चक्र बनावे, उसके आदि ( मुंह की तरफ ) आर्द्रा नक्षत्र लिखे, मध्य मे मूल नक्षत्र और अन्त मे (पूंछ की तरफ) मृगशिरा नक्षत्र लिखे। यदि चन्द्रमा, पुरुप और सूर्य का नक्षत्र एक नाड़ी मे आजावे तो रोगी की अवश्य मृत्यु हो जाती है।

## प्रश्न-विधि

रोगी के नाम के जितने अक्षर हो उन्हे दुगना करो, और प्रश्न-कर्ता के नाम के अक्षरो को उनमे मिला दो, सब को मिला कर सात पर भाग (तकसीम) दो, अगर बाकी जिस्त अर्थात् सम संख्या बचे तो रोगी मर जावेगा, और यदि टांक अर्थात् विषम संख्या बचे तो रोगी बच जावेगा। अर्थात् एक रोगी का नाम 'सीताराम' है, इस नाम मे चार अक्षर हैं, इनको दुगुना करने पर बने आठ, अब जो रोगी के सम्बन्ध में प्रश्न करने वाला है उसका नाम है 'गुणप्रकाश' इस नाम मे हैं पाँच अक्षर, सब मिला कर हुए (८+५) १३ इनको सात से भाग दिया एक बार गया, और बाकी बचे ६ जो कि जिस्त (सम) है इस लिये रोगी का जीवन समाप्त है, और ३-५ वा ७ बचें तो रोगी बच जायेगा।

## पुनः काल-ज्ञान ( हितोपदेश से )

रोगी को शीशे मे तेल घी अथवा पानी मे अपना शरीर बिना सिर के नजर आवे तो रोगी एक पक्ष अर्थात् १५ दिन मे मर जायेगा। स्नान करने के बाद अगर हाथ, पाओं, हृदय, कमर यह अंग तत्काल सूख जावें, अर्थात् बाकी शरीर की निसबत पहले सूखे तो रोगी तत्काल मर जाता है। दिया (सरसो के तेल का दिया हो) बुझने पर उसकी गंध रोगी को मालूम न हो और जिस रोगी के चेहरे की शोभा, कान्ति और लज्जा दूर हो जावे तो भी रोगी मर जाता है।

## रोगी के मूत्र और रंग की परीक्षा

नये बुखार से पेशाब का रङ्ग पीला होता है, लम्बी बीमारी मे मूत्र का रङ्ग लाल होता है। जिस रोगी का मूत्र काले रङ्ग का और बहुत बदबू-दार हो तो रोगी अवश्य मर जाता है। वायुदोष से मूत्र कृष्ण वर्ण और

चिकना, पित्त से पीला होता है, कफदोष से मूत्र मैले पानी के समान होता है, वात और पित्त से सरसों के तेल के समान रङ्गत होती है, कफ-वात मे काजी के रङ्ग के समान, कफ और पित्त मे फीके रङ्ग का होता है, सन्निपात मे पेशाब का रङ्ग बिलकुल काला होता है, मन्दाग्नि हो तो पेशाब का रङ्ग बकरी के पेशाब के समान होता है, पुराने बुखार मे केसर के समान लाल होता है, और अगर बुखार हट गया हो तो पेशाब स्वच्छ पानी के समान होता है।

पेशाब मे कडवे तेल की बूंद डाले, अगर बुलबुले उठे तो समझो कि रोगी का पित्त जल चुका है, यह मेघ कवि कहते हैं।

## मुख-परीक्षा

वात वाले रोगी का मुंह खुश्क, टेढा और सख्त होता है, पित्त रोग में चेहरा बहुत गरम होता है, कफ रोग मे मुख चिकना और भारी होता है। सन्निपात के कोप मे सारे लक्षण मिलते हैं, दो दोषो की खराबी मे मुखलक्षण मिले जुले होते हैं।

## नेत्र-परीक्षा

अगर नेत्रो की रङ्गत पीली हो तो पित्त का कोप जानना और यदि नेत्र सफेद हो तो कफ का कोप समझना, यदि रङ्गत काली अथवा मैली सी हो तो वायु का समझना चाहिये। सन्निपात के प्रकोप मे तीनो दोषो की मिली जुली रङ्गत वाले नेत्र होते हैं।

## वैद्य के लक्षण ( वैद्य जीवन से )

जिस वैद्य ने वैद्यक विद्या सेवा करके गुरुमुख से पढी हो, जिसके हाथ में यश हो, जो सब प्रकार की दवाइयो के बनाने और बरतने की तरकीब को अच्छी तरह समझता हो, जो लालची न हो, धीरज रखने वाला हो, गरीबो पर दया रखने वाला हो और जो पवित्र आचार व्यवहार वाला हो, शुद्ध तथा स्वच्छ वस्त्र पहनने वाला हो, भले मनुष्यो का पहरावा रखने वाला हो, विद्वान्, सत्यवादी हो, बहुत ही मीठा बोलने वाला हो, ऐसा वैद्य चिकित्सा का अधिकारी हो सकता है और ऐसे वैद्य की दवाई खाने से रोगी बहुत जल्दी तंदुरुस्त हो जाता है।

## कुवैद्य-लक्षण

जो वैद्य बदचलन, मूर्ख, कठोर वचन बोलने वाला हो, पराई निन्दा करने वाला हो, वैद्यक ग्रंथो का सार न समझने वाला हो अभिमानी हो ऐसे वैद्य को दूर से ही त्याग देना चाहिये! अथवा जो वैद्य सुनी सुनाई दवाई देवे, अथवा अपने आप ही रोगी रहने वाला हो ऐसे वैद्य की दवाई नहीं खानी चाहिये। अथवा—जो बिना बुलाए रोगी के घर दौड आवे, गुरु के पास कभी कुछ पढ़ा न हो ऐसे वैद्य को अपने घर कभी न बुलाना चाहिये, किसी अच्छे गुणो वाले वैद्य से इलाज कराना चाहिये। अथवा जो वैद्य शराब पीने वाला हो, परम आलसी होवे, कडुआ बोलने वाला हो, अभिमानी होवे, शास्त्र का सार न समझे, झूठ बोले, दया रहित हो, अज्ञानी हो, रोगो की परीक्षा न कर सकता हो, रोगो को दूर न कर सकता हो, क्रोध करने वाला हो, और अधर्मी हो ऐसे वैद्य की दवाई बहुत से रोगियो को मारने वाली होती है, ऐसा वैद्य भाग्यशाली नहीं होता।

## रोगी का लक्षण

रोगी धनवान् हो, कंगाल न हो, रोगी दाता भी हो, कजूंस न हो और वैद्य को धन दौलत देकर प्रसन्न करे तो रोगी बहुत शीघ्र तन्दुरस्त हो जायगा। श्री मेघ मुनि सब नर-नारियो के आगे विनती करते हैं कि जो वैद्य रोग दूर कर देवे अगर वह वैद्य जीवन भी मांगे तो दे देना चाहिये, अर्थात् ऐसे वैद्य का अहसान कभी नहीं भूलना चाहिये।

## दूत-लक्षण

रोगी के इलाज के लिये वैद्य को बुलाने को जो दूत जावे वह अच्छी जाति का हो घोड़े पर सवार होकर जो, प्रसन्न-मुख और सुन्दर वेश वाला हो, वैद्य के आगे फल पुष्प जो भी उचित हो भेंट कर पूर्व दिशा की ओर होकर बड़े प्रसन्न और शान्त मन से वैद्य के आगे मधुर मधुर वचन बोल कर अरदास (प्रार्थना) करे और स्वर का भी विचार करे, यदि दाहिनी नासिका द्वारा स्वर चलता हो तो रोगी राजी हो जायगा, उसका बाल भी बांका नहीं हो सकता। मन्दिर मे देव-दर्शन के लिये, अपने गुरु के दर्शन

को, राजा के दर्शन को, ज्योतिषी के पास और वैद्य के पास, इन पाँचो के पास खाली हाथ नही जाना चाहिये, कुछ न कुछ भेंट लेकर जाना चाहिये, क्योकि फल भेंट करने से फल की प्राप्ति होती है यह शास्त्रो की सम्मति है।

## शुभ शगुन

अक्षत ( चावल ), मास, दूब, हाथी, कन्या, चन्दन, शख, दही, सरसो, फल, शीशा, मछली का जोडा, मंगल गीत, चादी, तावा, मित्र, पुत्र सहित स्त्री, वेद पाठक तिलक मस्तक लगाए हुए ब्राह्मण, ये रास्ते मे शगुन हो तो रोगी राजी हो जावेगा।

## अशुभ (बुरे) शगुन

सर मुंडाए हुए, लम्बे लम्बे दाँतो वाला, हड्डी, हाथ मे अग्नि लिये हुए, अथवा हाथ मे खप्पर लिये हुए, सिर पर जटाजूट हो, तन पर भस्म रमाई हो, न्योला, साप, भगवे वस्त्र वाला, भैंसे की सवारी वाला, अथवा एक रोगी के लिये दो आदमी वैद्य को बुलाने आवे, यह सब अशुभ अर्थात् बदशगुन हैं, वैद्य को चाहिये कि शुभ और अशुभ शगुनो का विचार कर रोगी को देखने जावे।

## साध्य रोगी के लक्षण

रोगी की नजर ठीक हो, वाणी अच्छी हो, दस्त आदि न लगे हो यह रोगी के शुभ लक्षण हैं ऐसे रोगी की चिकित्सा करने से यश मिलता है। जिसके हाथ पाँओ ठण्डे न हो, और कोई दाह आदि उपद्रव न हो, जिसकी जिह्वा ( जबान ) कोमल हो ऐसा रोगी साध्य होता है, और उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

जिस रोगी के शरीर मे उद्यम हो, जिसको रातभर नींद भी आती हो, जिसकी पाँचो इन्द्रियाँ ( आँख, कान, नाक, त्वचा, और जीभ ) चेतन अर्थात् अपने अपने गुण को ग्रहण करने मे चेतन रहे, ऐसा रोगी तन्दुरुस्त हो जाता है। वैद्य को ऐसे रोगी की चिकित्सा करनी चाहिये। जो रोगी दूसरे मनुष्य को अच्छी तरह पहचान सकता है जो सुगन्ध और दुर्गन्ध का ज्ञान रखता है, और जो अच्छी तरह बात चीत कर सकता है, और जिस

के चेहरे पर ओज ( रौनक ) और कान्ति हो ऐसा रोगी शुभ होता है, बहुत शीघ्र स्वस्थ हो जाता है और वैद्य को यशदायी होता है ।

## असाध्य रोगी के लक्षण ( वृन्द से )

जिनका शरीर कांपने लग गया हो, चेहरे की रंगत बदल गई हो, किसी को देख पहचान न सकता हो, मुंह की शकल तोते के मुंह के समान हो गई हो, जीभ कठोर हो गई हो, दांत काले पड़ गये हो, वाणी लड़खड़ा गई हो ठीक बोल न सके और न किसी की बात को अच्छी तरह समझ ही सके, मन अधीर हो, हाथ पाओं और नाक ठंडे पड़ गये हों, दीपक बुझने की गंध की पहचान न रही हो, वस्त्रो से अतिदुर्गंध आती हो, और शरीर में अत्यन्त बेचैनी हो, मूत्र रोग हो, दृष्टि कमजोर पड़ गई हो, ऐसे रोगी यमराज के मुख में पहुँच जाने वाले होते हैं, इसी हेतु वृन्द कवि इन को असाध्य कहते हैं ।

जिस रोगी के अन्दर तो बहुत दाह और जलन हो और शरीर ठण्डा शीतल हो, गले में कफ घुरघुर कर रहा हो, मुख बेरस हो गया हो, आँखो की रंगत केसर के रंग की हो, जीभ अकड़ गई हो, काली पड गई हो, शरीर सूना पड गया हो, नाडी बन्द हो गई हो, ऐसे रोगी की "रामनाम सत्य है" यही दवाई है, अर्थात् ऐसा रोगी नहीं जी सकता और असाध्य होता है ।

जिस रोगी का वायु पित्त के स्थान में और पित्त कफ के स्थान में और कफ गले में आ पहुँचे, उस रोगी का शोक ही होता है कोई चिकित्सा नहीं होती ।

जिस रोगी को रात के समय अत्यन्त दाह ( जलन ) हो और दिन के समय अतिशीत लगे, हिचकी लग गई हो, श्वास हो, स्वर घट रहा हो, ऐसा रोगी शीत से बहुत शीघ्र मर जाता है ।

## रुधिर विधि

रक्तविकार वाले की नाडी बोझल होती है, बल वाले की तेज चलती है, चेहरा लाल, मुंह सूखना ये लक्षण रक्तविकार वाले के होते हैं ।

सोलह बरस से लेकर सत्तर बरस तक रक्तमोक्षण करना ( फस्द

खोलना अथवा खून निकालना ) चाहिये, सोलह वरस से पहले और सत्तर वरस के बाद खून नही निकालना चाहिये।

वातरक्त वाला, बहुत सोने वाला, स्तन रोगी, बवासीर, रक्तपित्त, हाथ पाओं के रोग वाला, विष रोगी, जिगर और तिली के विकार वाला, व्रण रोगी, जिसका मुख पक गया हो, प्रमेह की पिडका ( फिसिएं ), श्लीपद ( फीलपाओ ) अर्बुद ( रसौली ), ग्रंथि विद्रधि, वादफिरंग ( आतशक ) इन रोगो वाला जिसके कान, होंठ सिर और सारा शरीर पक गया हो, ऐसे रोगियो का रक्तमोक्षण करना ( लहू निकालना ) चाहिये, मेघ मुनि कहते हैं कि शार्ङ्गधर का ऐसा मत है।

## लहू निकालने के अयोग्य प्राणी

अत्यन्त कामी, सूतकी, अत्यन्त दुर्बल, पाण्डुरोगी, डरपोक, गर्भवती स्त्री, नपुंसक, श्वासरोगी, खासीवाला, जिसे उलटिया आती हो, उदररोगी, जिसे सोजा पड गया हो, ऐसे रोगियो का रक्त नहीं निकालना चाहिये।

## रक्तमोक्षण ( फस्द निकालने ) की मात्रा

रोगी का वल देख कर एक प्रस्थ, आधा प्रस्थ अथवा एक प्रस्थ का चौथा हिस्सा, इससे भी कम, जिससे रोगी क्षीण न हो जाये उतना रक्त शरीर से निकालना चाहिये।

## रुधिर निकालने योग्य और अयोग्य राशियाँ

मेप राशि मे रुधिर निकाले तो रोग होता है, कुम्भ राशि मे रक्त निकाले तो रोग टिका रहता है, मिथुन और धन राशि मे रक्त निकालने पर शरीर का नाश हो जाता है, तुला राशि मे रक्त निकालने पर दुःख सुख समान ही रहते हैं, इनको छोड और राशियो मे रक्त निकाला जावे तो रोगी को सुख प्राप्त होता है। चतुर्थी, चौदस, नौमी, मंगलवार शनैश्चरवार, एतवार और कृष्णपक्ष मे रक्त निकाला जावे तो शरीर के सारे रोग दूर होते हैं।

सिंगी शरीर से १० अंगुल तक रक्त खींच सकती है, जोक एक हाथ तक

खून चूस सकती है, तुंबी १२ अंगुल तक खून खीचती है। छुरे से पछना लगाने पर एक अंगुल प्रमाण का रक्त निकलता है और शिरा ( फस्द खोलने ) से सारे शरीर का गंदा खून निकल जाता है, और सारे शरीर के रोग दूर हो जाते हैं। परन्तु हर एक का बिना सोचे-समझे खून नही निकालना चाहिये, और इसी प्रकार वमन और विरेचन भी हर एक को नहीं देना चाहिये।

## अधिक रुधिर निकलने के विकार

अगर फस्द खोलने पर शरीर से अधिक लहू निकल जावे तो आक्षेपक ( यह एक वात रोग होता है जिसमे कि सारा शरीर अकड जाता है और हाथ-पाओ मे झटके शुरू हो जाते हैं ) सिर के रोग, अंधापन, अधिक प्यास, तिमिर रोग ( मोतिया ), श्वास, हिचकी, जिस अङ्ग से रक्त निकाला हो उसमे जलन अधिक होती है, पाण्डु रोग, पक्षाघात ( अर्धांग फालिज ) और मृत्यु भी कभी कभी हो जाया करती है। मेघ कहते हैं कि रोगी का बल विचार कर बडी बुद्धिपूर्वक रक्त निकालना चाहिये।

## रुधिर निकालने पर पथ्य

वादीकारक सब वस्तुओं को त्याग दे, मूंग, मोठ, चने, पुराने चावल और शहद इनको थोडी मात्रा मे खाना चाहिये, नमक नही खाना चाहिये, इन सब वस्तुओं को भी बिना नमक थोड़ा घी डाल कर खावे।

## कुपथ्य ( बद परहेजी )

हवा मे घूमना बैठना, स्त्रीसंग, स्नान करना, क्रोध, दुख, और यात्रा ( सफर ) दही, लस्सी, इन चीजों का अवश्य त्याग कर देना चाहिये। यह अत्यन्त कुपथ्य हैं।

## मान प्रमाण ( शार्ङ्गधर से )

मान ( तोल, माप, हिसाब ) रहित वस्तु का किसी को भी ठीक ठीक पता नहीं लग सकता, इस लिये मेघ कवि कहते हैं दवाई बनाने से पहले मान-परिभाषा का अवश्य ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। यह मान परिभाषा शार्ङ्गधर से लिखी है। छः रत्ती का एक माशा, चार माशे का एक शाण होता

हैं, चार शाण का एक कर्ष होता है, दो कर्ष का अर्ध पल, और चार कर्ष का एक पल, दो पल की प्रसृति, दो प्रसृति की एक अंजलि, दो अंजलि की एक मानिका होती है, दो मानिका का एक प्रस्थ, चार प्रस्थ का एक आढक, चार आढक का एक द्रोण, दो द्रोण का एक शूर्प इसे कुम्भ भी कहते हैं, दो शूर्प की एक द्रोणी, इसे वाही और गोणी भी कहते हैं, चार द्रोणी की एक खारी होती है, जो चार हजार छियानवे ( ४०९६ ) पल की होती है। दो हजार पल का एक भार होता है। एक सौ ( १०० ) पल की एक तुला होती है।

मिट्टी अथवा लकडी, वास की पोरी का जो वर्तन ४ चार अगुल चौडा, और चार ही अगुल ऊंचा हो, यह कुडव का सही मान ( माप ) है। यह शार्ङ्गधर का प्रमाण है।

दवाई की मात्रा ( मिकदार खुराक ) का ठीक अन्दाजा नहीं किया जा सकता क्योकि कोई रोगी छोटा होता है कोई वडा होता है कोई दुवला और कोई मोटा, इन सव को एक प्रमाण ( मिकदार वजन ) मे मात्रा कैसे दी जा सकती है इस लिये रोगी की अवस्था, शरीर, देश, काल, ग्रंथ-प्रमाण, गुरु उपदेश के अनुसार औषधि की मात्रा देनी चाहिये। यह ऊपर की जो "मान-परिभाषा" वताई है वह 'मागध' (मगध देश की) है, इस के आगे मैं कलियुग के प्राणियों के हेतु 'कालिग' (कलिंग देश की) मानपरि-भाषा कहता हूँ।

नोट—प्राचीन काल मे वजन करने के लिये दो प्रकार के तोल प्रमाण माने जाते थे, एक कलिंग देश का दूसरा मगध देश का, जैसे आजकल भी कच्चा सेर ( ३२ तोले का ) पक्का सेर ( ८० तोले का ) पिशावरी सेर (१०० तोले का) वरतने मे आता है, उसी प्रकार यह दोनो मान प्रसिद्ध थे, आयुर्वैदिक योगो ( नुस्खो ) मे आजकल भी इनके अनुसार दवाईयाँ अकसर वनती हैं।

अव मागध मान के पश्चात् 'कालिग' मान का वर्णन करते है। हम पहले ही वता चुके हैं कि मात्रा का कोई अन्दाजा नही है कि हर एक आदमी को एक जैसी दवाई दी जावे, देश, काल, आयु, वल, अग्नि,

प्रकृति, रोगी की अवस्था को देख कर मात्रा का अन्दाजा लग सकता है। क्योंकि कलयुग के प्राणी अकसर दुबले, कमजोर और मन्द अग्निवाले होते हैं, इस लिये उनके शरीर के अनुसार ही दवाई की मात्रा बताई जाती है—

## अथ कालिंग मान परिभाषा

१२ सफेद सरसों का एक जौ, दो जौ की एक रत्ती, ३ रत्ती का एक वल्ल होता है, आठ रत्ती का एक माशा, ४ माशे का एक शाण, शाण को टंक और निष्क भी कहते हैं, छः माशे का एक गद्याणक होता है, दस माशे का एक कर्ष होता है, चार कर्ष का एक पल होता है, चार पल का एक कुड़व होता है, यह कालिंग मान है, श्री मेघ मुनि कहते हैं कि शार्ङ्ग-धर ने यह दो ही प्रकार का मान बताया है।

## नक्षत्र कष्टावली

रोहणी नक्षत्र मे यदि कोई बीमार पडे तो पॉच दिन रहता है, मृग-शिरा नक्षत्र मे यदि कोई बीमार पड़े तो एक मास तक कष्ट रहता है, आर्द्रा नक्षत्र मे सात दिन तक, पुनर्वसु नक्षत्र मे दस दिन तक कष्ट रहेगा, पुष्य नक्षत्र मे सात दिन, आश्लेषा नक्षत्र मे एक महीना, मघा नक्षत्र मे सात दिन तक कष्ट रहता है। पूर्वाफाल्गुणी मे १५ दिन कष्ट होता है, उत्तरा-फाल्गुणी मे तीन दिन कष्ट रहता है। हस्त नक्षत्र मे सात दिन, चित्रा नक्षत्र मे आठ दिन कष्ट रहता है, स्वाति नक्षत्र मे एक महीना भर कष्ट रहता है, विशाखा मे दस दिन, अनुराधा नक्षत्र मे कोई रोगी हो तो आठ महीना तक बीमार रहेगा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र मे सात सात दिन का कष्ट रहता है, पूर्वाषाढ़ा मे पांच दिन तक कष्ट रहता है, उत्तराषाढ़ा मे एक पखवारा ( १५ दिन ) श्रवण नक्षत्र मे दस दिन तक कष्ट रहता है। धनिष्ठा और शतभिषा मे सात सात दिन का कष्ट रहना है, पूर्वाभाद्रपदा मे पन्द्रह दिन, उत्तराभाद्रपदा मे सात दिन, रेवती नक्षत्र मे दस दिन, अश्विनी-नक्षत्र मे सात दिन, भरणी नक्षत्र मे भी सात दिन, कृत्तिका नक्षत्र मे कोई रोगी हो तो नौ दिन तक कष्ट रहता है। इन सब नक्षत्रो की कष्टावली का प्रमाण बता दिया है, इन दिनो मे रोगी बच जाय तो वैद्य को उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

## अथ साध्यासाध्य विचार

आश्लेषा, शतभिषा, स्वाती, मूला, आर्द्रा, भरणी, पूर्वाफाल्गुणी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, इन नक्षत्रों मे और एतवार, मंगलवार, शनिचरवार, और एकम, चतुर्थी, द्वादशी, छठी इन तिथियों मे जिस प्राणी को रोग लगे वह निश्चित मर जाता है।

## वार कष्टावली ( ब्रह्मयामल से )

एतवार मे कोई प्राणी रोगी हो तो नौ दिन तक कष्ट रहता है, सोमवार को हो तो सात दिन, मंगल के दिन हो तो आठ दिन, बुध के दिन रोगी हो तो बारह दिन बृहस्पति ( वीर वार ) को हो तो दस दिन तक, शुक्रवार के दिन हो तो तेरह दिन तक कष्ट रहेगा और यदि शनिचर के दिन रोगी होगा तो ग्यारह दिन कष्ट भोगेगा, इन सब वारकष्टो से जो नर बच जाता है वैद्यवर मेघ जी कहते हैं वह चिर काल तक सुख भोगता है।

## स्वप्न-विचार

यदि सुपने मे कोई नर अपने आपको, नगे सिर, अथवा सिर मुंडवाया हुआ, पगुला, लूला, अंगहीन, लाल काले कपडे पहिरे हुए, शरीर का रंग काला और सिर के बाल सफेद, फासी देता हुआ, शस्त्र लिये हुए हो, मारता हुआ और भैसा, ऊंट, अथवा गधे पर सवार होकर दक्षिण दिशा की तरफ जाता हुआ ऊंचे स्थान से नीचे को गिरता हुआ देखे, अथवा आग मे पडता देखे, पानी मे डूबता देखे, कोई किसी को मारता नजर आवे अथवा मच्छ किसी को निगलता हुआ नजर आवे, स्वप्न मे आखे फूट जावे, स्वप्न मे दिया बुझता हुआ नजर आवे। तेल शहद अथवा शराब पिये, कुए मे उतरे, लोहे का या तिलो का दान ले, पक्वान्न खावे अथवा किसी से दान ले, स्वप्न मे स्नान करता हो, इन उपर के स्वप्नो मे से एक या अधिक स्वप्न देखे तो तन्दुरुस्त नर रोगी हो जावे और रोगी नर मर जाता है।

## बुरे स्वप्न का उपाय

जिस किसी को बुरा स्वप्न हो तो उठ कर किसी से कहना नही चाहिये,

और तीन दिन तक जप, होम, दान और परमात्मा की पूजा करनी चाहिये, रात को देवालय मे निवास करे, सोना, काले तिल, और लोहा दान देवे तो बुरे स्वप्न के फल से मुक्त हो जाता है ।

## शुभ स्वप्न

जो नर रात को स्वप्न मे देवता, राजा,गौ, ब्राह्मण, और जीवित मित्रो को देखे—स्वप्न मे शत्रुओ पर विजय प्राप्त करे, जो जीवित नर को मृत देखे, प्रज्वलित अग्नि को देखे, तीर्थस्थानो के दर्शन करे, तो रोगी सुख प्राप्त करता है ।

जो नर स्वप्न मे गन्दे पानी वाले तालाब अथवा नदी को पार कर ले, युद्ध मे शत्रुओं को जीत ले और महल पर, पहाड़ की चोटी पर चढ़े, अथवा बैल, हाथी, घोड़े की सवारी करे तो सुख प्राप्त करता है । श्वेत फूल, श्वेत कपड़े, मांस, मछली, और फल आदि यदि स्वप्न मे मिले तो रोगी तन्दुरुस्त हो जाता है, और तन्दुरुस्त मनुष्य धन प्राप्त करता है । अथवा अगम्या स्त्री अर्थात् पराई स्त्री से भोग अथवा अनुचित स्थान पर जाना, शरीर मे विष्ठा ( मल ) का लेप, रोना, मरना, कच्चा मांस खाना, कच्चा फल खाना, और स्वप्न में जोंक, भ्रमरी, साप, अथवा मक्खी जिस को काटे जो रोगी हो वह स्वस्थ हो जाता है और स्वस्थ हो तो धन प्राप्त करता है ।

## युक्तायुक्त विचार

शहद, घी, पीपल ( मघ ) और वावडिग, गुड, धनिया ये द्रव्य पुराने ( एक साल अथवा इससे अधिक ) हो तो श्रेष्ठ होते हैं, इन को छोड़ अन्य सब द्रव्य नये ही ग्रहण करने चाहिये, ताजी ( गीली ) दवाई सूखी दवाई से दुगुनी लेनी चाहिये, परन्तु वाँसा ( वहेकड ) पेठा, कुड़ा,शतावर, पिया-वासा, सौंफ, गिलोय, असगंध, सूकना ( प्रसारणी ) यह दवाइया ताजी ( गीली ) ही लेनी चाहिये, और इनको दुगुना न करे ।

अगर दवाई देने का कोई समय न बताया हो कि दवाई किस वक्त देनी है तो वहां प्रभात समय लेना चाहिये,अर्थात् दवाई प्रभात काल देनी है । अगर किसी दवाई का अंग न बताया हो कि जड लेनी है, शाखा लेनी है अथवा पत्ता लेना है तो उस समय केवल जड़ लेनी चाहिये । जहा बहुत सी दवाईयाँ

हो और उनका वजन न लिखा हो तो सब बराबर-बराबर लेनी चाहिये। यदि बर्तन का नाम न लिखा हो तो मिट्टी का बर्तन लेना, और घी तेल आदि बनाना हो तो वहा द्रव पतली चीज अर्थात् काढा डालना है अथवा स्वरस डालना है, अथवा पानी डालना है वहा पानी डालना चाहिये। और घी तेल मे किसी खास घी तेल का नाम न हो तो गौ का घृत और तिल का तेल लेना चाहिये, एक नुस्खे मे यदि कोई चीज दो बार आ गई हो तो दुगुनी लेनी चाहिये। चूर्ण वा घृत मे, कही चन्दन डालना हो तो वहा सफेद चन्दन लेना चाहिये, काढा अथवा लेप मे लाल चन्दन डालना चाहिये, एक वर्ष की पुरानी दवाई गुणहीन हो जाती है, चूर्ण दो मास तक पूरा गुण करता है, गोली और चटनी एक वर्ष तक अपना गुण करती है। घी और तेल सोलह महीने तक गुणकारी होते हैं, लघुपाक अर्थात् छोटी मोटी पाक वाली वस्तुएं एक साल ठीक रहती है। परन्तु रस, अरिष्ट आसव और धातु सोना चादी आदि जितनी पुरानी हो उतनी अच्छी होती है।

नोट—रस, धातु, आसव, अरिष्ट, घृत, चूर्ण अवलेह आदि योगो का वर्णन आगे विस्तारपूर्वक आ जावेगा।

वैद्य को चाहिये कि यदि किसी नुस्खे मे कोई दवाई ऐसी पडी हुई हो, जो रोगी को उचित न बैठती हो, नुकसान करती हो और रोग को बढ़ाती हो तो ऐसी दवाई उस योग (नुस्खे) से निकाल ले, और अगर कोई दवाई जो कि रोगी को हितकारी हो और नुस्खे मे नही आई हो तो वैद्य को चाहिये कि अपनी बुद्धिद्वारा उसे उस योग ( नुस्खे ) मे मिला ले।

## बूटी विचार

विन्ध्याचल पर्वत पर उत्पन्न होने वाली बूटिया गरम स्वभाव की होती हैं, और हिमालय ( उत्तर ) पर्वत पर उत्पन्न होने वाली औषधिया सौम्य अर्थात् शीतल स्वभाव की होती है क्योकि विन्ध्याचल पर्वत भारतवर्ष के दक्षिण मे है जहा कि गरमी अधिक पडती है, और हिमालय भारतवर्ष के उत्तर की तरफ है इस लिये वहा सरदी अधिक होती है, इसी लिये विन्ध्याचल की दवाइया गरम और हिमालय की ठण्डी होती हैं। इन दोनो पर्वतो

के साथ साथ के जो जङ्गल हैं उनकी भी वहाँ जमीन है, साधारण देश की दवाई न गरम होती है और न सर्द ।

## बूटी उखाड़ने का प्रकार

प्रातःकाल पवित्र, शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र पहन सूर्य की ओर मुँह करके भगवान् शङ्कर का ध्यान कर उत्तर दिशा में होने वाली बूटी उखाड़नी चाहिये, ऐसी औषधी अत्यन्त गुणकारी होती है, गन्दे स्थान की, कब्र की, बाम्बी पर होने वाली अनूप देश, स्मशान (मुर्दघाट) और कब्रस्तान पर पैदा होने वाली बूटी नहीं लेनी चाहिये, और इसी प्रकार पुरानी, कीड़ा लगी हुई, अग्नि से झुलसी हुई, वर्षा से गली हुई भी औषधि गुणकारी नहीं होती ।

शरद् ऋतु ( आश्विन-कार्तिक ) में सारी औषधियां सब कामों पर लेनी चाहिये, शोधन ( वमन और विरेचन ) की दवाई वसन्त ऋतु ( चैत्र-वैशाख ) अथवा ग्रीष्म (ज्येष्ठ आषाढ़) में उखाड़नी चाहिये ।

जिस वृक्ष की जड़ मोटी हो उसकी जड़ की छाल लेनी चाहिये, जैसे बिल्व की छाल, और जिसकी पतली जड़ हो वह सारी लेना चाहिये, जैसे शालपर्णी कंटियारी आदि । ग्रीष्म ऋतु में रस और लकड़ी लेनी चाहिये, वर्षा ऋतु में रस और पत्र लेना चाहिये, हेमन्त ऋतु में रस और छाल लेनी चाहिये, और वसन्त में जड़ मूल समेत लेनी चाहिये । वड़, पीपल आदि की मूल छाल लेनी चाहिये, बीजक, खैर, असन, चन्दन आदि वृक्षों का सार ( अर्थात् बीच की लकड़ी ) पटोल आदि के पत्ते लेने चाहिये, त्रिफला आदि के फल लेने चाहिये, धाय के फूल लेने चाहिये, थोहर आदि का दूध लेना चाहिये ।

१ फल, २ फूल, ३ जड़, ४ पत्र और ५ छाल यह पञ्चांग होता है, इनमें जो भी द्रव्य आवश्यक हो उसको ले लेना चाहिये ।

## दवाई सेवन करने के पाँच समय

१ प्रभात काल, २ भोजन के समय, ३ सन्ध्या समय, ४ थोड़ी थोड़ी देर के बाद और ५ सोते समय, ये दवाई खाने के समय होते हैं इन समयों में दवाई खाई जाती है ।

कौन कौन दवाई किस किस समय खानी चाहिये अब यह बताते हैं, कफ और पित्त के प्रकोप में, वमन और विरेचन के लिये, अथवा लेखन अर्थात् शरीर और दोषों को पतला करने के लिये ( जैसे मोटे शरीर को पतला करने के लिये शहद का शर्वत, वायु के लिये तेल, पित्त के लिये घृत और कफ के लिये शहद इत्यादि ) प्रातःकाल दवाई देनी चाहिये, यह दवाई सेवन करने का प्रथम काल है।

अपानवायु बिगड गया हो तो दवाई भोजन से पहले खानी चाहिये।

नाभिस्थान में रहने वाला समान वायु यदि बिगड़ गया हो और अग्नि मंद पड गई हो तो अग्नि-दीपन करने के लिये भोजन के मध्य अर्थात् ग्रास के साथ औषध देनी चाहिये।

व्यान ( सारे शरीर में व्याप्त ) वायु के प्रकोप में भोजन के बाद दवाई खानी चाहिये। हिचकी, आक्षेप, कंप रोगों में दवाई भोजन के आदि और अन्त में खानी चाहिये यह भेषज का दूसरा काल है।

उदानवायु का कोप हो, स्वरभंग ( आवाज बैठ गई ) हो तो सायंकाल के भोजन के ग्रास-ग्रास के साथ देनी चाहिये, यदि प्राणवायु बिगड गया हो, हृदय में किसी प्रकार का विकार हो तो सायंकाल भोजन के बाद दवाई देनी चाहिये यह तृतीय भेषजकाल है।

तृष्णा हो, उलटी हो, हिचकी हो, श्वास, और विष का अनुबन्ध हो तो बार बार अन्न के साथ मिलाकर दवाई देनी चाहिये। यह चतुर्थ काल है।

गरदन से ऊपर ऊपर जितने रोग हों ( जैसे शिर के रोग, नाक के रोग, मुँह के रोग आदि ) लेखनार्थ अर्थात् शरीर में दोष धातु बहुत बढ़े हुए हों, उनको कम करने के लिये बृंहणार्थ अर्थात् शरीर बहुत कमजोर पड गया हो उसको पुष्ट करने के लिये, पाचन के लिये और दोषों के प्रकोप को शान्त करने के लिये अन्न रहित औषध रात को देनी चाहिये, और यह भेषज का पञ्चम काल है। इस प्रकार आचार्य शार्ङ्गधर का मत है।

## अनुकल्पना ( अभाव में )

चित्रा न मिले तो दन्ती (जमालगोटे की जड) ले लेनी चाहिये, पृष्णिपर्णी

न मिले तो कंडयारी ले ले, धमांह न मिले तो जवाह डाल ले, जवाह न मिले तो तगर डाल ले, तगर न मिले तो कुठ डाल ले, मूर्वा न मिले तो जिगनी की छाल डालना चाहिये, हिंगुपत्री न मिले वहा वंशपत्री डालनी चाहिये, हीस न मिले तो मानकंद ले लेना चाहिये, मौलसिरी न मिले तो नीफरलो ले लेना चाहिये, अथवा कमल के फूल डाल लेने चाहिये, जहा लक्ष्मणा न मिले वहा मोरशिखा डालनी चाहिये, जहा नीले कमल न मिले वहा श्वेत कमल ले लेना चाहिये । जावित्री न मिले तो लौंग मिला ले, आक का दूध न मिले तो आक का रस ले लेना चाहिये, पिप्पलामूल न मिले तो गजपिप्पल, गजपिप्पल न मिले तो चव्क डाल लेनी चाहिये, क्यो कि यह तीनो एक ही गुण के हैं। यदि वावची न मिले तो पंवाड़बीज मिला ले, दारुहलदी न मिले तो हलदी लेनी चाहिये, रसौत न मिले तो दारुहलदी डाल ले, फटकडी न मिले तो खड़िया मिट्टी डाल ले तालीसपत्र न मिले तो तमालपत्र ले लेना चाहिये,

नोट'—गलती से 'तमाखू' के पत्ते न ले लेना, तमालपत्र एक और वृक्ष होता है।

पोहकरमूल न मिले तो कुठ डालना चाहिये, विदारीकंद ( स्याली ) न मिले तो उसके स्थान मे ( भृंगी ) भांगरा मिला लेना चाहिये, कही कही भृंगी का अर्थ अतीस भी किया है। अतीस न मिले तो तालीसपत्र डालना चाहिये, अथवा कंडियारी ( वड़ी ) की जड़ मिलानी चाहिये नागकेसर न मिले तो कमल का केसर डाल लेना चाहिये। कोई नमक न मिले तो सैंधा नमक मिला ले, और मुलट्ठी न मिले तो धावे के फूल डालने चाहिये, अमलवेंत के स्थान पर चूका ले ले, गभारी का फल न मिले तो महुआ के फूल मिला ले, लौंग न मिले तो नख डाल ले, नख न मिले तो लौंग फूल डाल ले, कस्तूरी न मिले तो कवावचीनी ( सरदचीनी ) मिला ले, सरदचीनी न मिले तो जावित्री डाल ले। कपूर न मिले तो मोथा अथवा गाठिवन मिला ले, पिप्पलामूल न मिले तो मर्वा डाल ले, केसर कश्मीरी न मिले तो कुसुंभा मिला ले, जहा सफेद चन्दन न मिले वहा कपूर मिला ले, कपूर भी न मिले

तो रक्तचन्दन डाल लेना चाहिये, रक्त चन्दन भी न मिले तो खस ले लेनी चाहिये। पतीस न मिले तो मोथा मिला ले, यदि हरड न मिले तो आमला मिला ले, मेदा महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि वृद्धि, काकोली क्षीर काकोली (यह अष्टवर्ग होता है) न मिले तो इनके स्थान पर क्रमशः शतावरी, विदारीकद वराहीकद, और असगंध डालनी चाहिये। क्योकि इन सब के एक ही गुण है। अगर वराहीकंद न मिले तो उसके स्थान मे चमार आलू मिला लेना चाहिये, भिलावा न मिले तो रक्तचन्दन डालना चाहिये अथवा चित्रा ले लेना चाहिये, गन्ने की जड न मिले तो नडे की जड ले लेवे, सोना न मिले तो सोनामखी ले, चॉदी न मिले तो रूपामाखी मिला ले, अगर सोनामाखी अथवा रूपामाखी न मिले तो गेरी मिला लेनी चाहिये, स्वर्ण भस्म ( कुश्ता सोना ) न मिले तो लोहभस्म मिला ले, अभ्रक न मिले तो कान्तलोह मिला ले, कान्तलोह न मिले तो तीक्ष्णलोह ( फौलाद ) डाल ले, हीरा न मिले उसके स्थान पर वैक्रान्त ( हीरे का भेद ) डाल ले, मोती न मिले तो मोती का सीप मिला ले। जिस प्राणी का पित्ता न मिले उसका मासरस डाल ले। केले का फूल न मिले तो खभे का रस ले ले। शहद न मिले तो पुराना गुड ले ले, खाड न मिले तो शर्करा डाल ले, मिश्री न मिले तो खाड मिला ले दूध न मिले तो मूंग व मसूर का यूप ( रस ) ले, यदि और कोई चावल न मिले तो साठी चावल मिला ले। हंस न मिले तो उसके स्थान पर मोर ले ले, शशा ( खरगोश ) न मिले तो उसके स्थान पर चूहा ले ले। अन्य भी असख्य द्रव्य हैं जिन के गुण निघण्टु मे बताए हुए हैं, सो बुद्धिमान वैद्य को चाहिये कि जिस द्रव्य का जिस द्रव्य के समान गुण हो उस द्रव्य को इसके अभाव मे डाल ले। इस ग्रथ मे सब के गुण नही आ सकत, यहा तो केवल जरूरत के मुताबिक उतने ही द्रव्यो के गुण दोष बताए हैं। ये सब बाते गुणरत्नमाला से लेकर लिखी है, बुद्धिमान् वैद्य इनको स्वय विचार कर अपने काम मे लावे।

## रोगों की गिनती

ज्वर पचीस प्रकार का, अतिसार ( दस्त ) सात प्रकार का, सग्रहणी

पाच प्रकार की, प्रवाहिका ( मरोड ) चार प्रकार की, अजीर्ण तीन प्रकार का, तीन प्रकार का अलसक ( गुम हैजा ) और विपूचिका ( हैजा ) भी तीन प्रकार की होती है, विलंविका एक प्रकार की होती है, अर्श ( ववासीर ) छः प्रकार का होता है, कृमि वीस प्रकार के होते हैं, तीन चर्मकील होते हैं, पाच प्रकार का पाण्डुरोग होता है, कामला एक प्रकार का होता है, हलीमक एक प्रकार का, खांसी पाच प्रकार की, रक्तपित्त ( नकसीर ) तीन प्रकार का होता है, शोप ( तपदिक ) छ प्रकार का होता है, स्वरभेद छ' प्रकार का होता है, हिचकी पाच प्रकार की, श्वासरोग ( दमा ) पांच प्रकार का, अग्नि चार प्रकार का, अरोचक पाच प्रकार का होता है, छर्दि ( उलटी ) सात प्रकार की, तृष्णारोग छ. प्रकार का, मूर्छारोग चार प्रकार का, निद्रारोग एक प्रकार, उन्मादरोग छ. प्रक.र का, भ्रमरोग एक प्रकार का, भूतोन्माद वीस प्रकार का होता है। आमवात चार प्रकार का है, मृगीरोग चार प्रकार का है। शूल आठ प्रकार का है, उदावर्त तेरह प्रकार के हैं, अफारा दो प्रकार का,उरोग्रह एक, हृद्रोग पाच होते हैं, उदर रोग आठ होते हैं, गुल्म ( वायगोला ) आठ प्रकार का, मूत्राघात तेरह प्रकार का होता हैं, मूत्रकृच्छ्र आठ प्रकार के, पथरी चार प्रकार की, प्रमेह वीस प्रकार का,सोमरोग एक प्रकार का,प्रमेहपिडका दस होती हैं, मेदरोग एक प्रकार का होता है, वृद्धिरोग सात प्रकार का होता है, शोथरोग नौ प्रकार का होता है, अण्डवृद्धि एक प्रकार की होती है, गंडमाला और गलगंड एक एक प्रकार का होता है, ग्रंथिरोग नौ प्रकार का होता है, अर्बुद छः प्रकार का होता है, श्लीपद ( फील पाओ ) तीन प्रकार का होता है, व्रणरोग पंद्रह प्रकार का होता है, विद्रधि छ. प्रकार की होता है, सद्योव्रण आठ प्रकार का, नाडीव्रण पाच प्रकार का होता है, कोष्ठभेद दो प्रकार का होता है। अस्थिभंग आठ प्रकार का, कुष्ठ अठारह प्रकार का, अग्निदग्ध चार प्रकार का, आठ भगंदर होते हैं उपदश पाच प्रकार का होता है, शूकरोग चौवीस प्रकार का, क्षुद्ररोग साठ प्रकार का, विसर्प नौ प्रकार का, विषरोग आठ प्रकार का, उदर्द एक प्रकार का है, वायुरोग चौरासी होते हैं पित्त रोग चालीस होते

हैं कफरोग बीस होते हैं, रक्तरोग दस होते हैं, मुखरोग चौहत्तर होते है, कर्णरोग अठारह होते हैं, कर्ण पालीरोग सात प्रकार के होते हैं। पाच प्रकार का कर्णमूल, अठारह नासारोग होते हैं। मस्तकरोग नौ होते हैं, शिर के रोग दस होते हैं, नेत्र रोग चरानवे होते हैं, पाच प्रकार के नपुंसक होते हैं, वीर्यरोग आठ होते हैं। प्रदर चार प्रकार का होता है, स्त्री बीज के रोग आठ होते हैं, योनिरोग बीस होते हैं, योनिकद चार होते हैं, मूढ गर्भ आठ प्रकार का होता है, स्तन रोग पॉच प्रकार का होता है, बालरोग बाईस होते हैं, बालग्रह के बारह रोग होते हैं,बैतालीस रोग बड़े दुस्तर होते हैं, विषरोग के तीन भेद, मद के चार भेद, वमनादि पञ्चकर्मों के हीनयोग, मिथ्यायोग और अतियोग से पन्द्रह भेद होते हैं।

नोट—पॉच ज्ञान इन्द्रियॉ ( कान, ऑख, नाक, मुख और त्वचा ) होती हैं, इनके विषय पॉच होते है, कान का विषय सुनना (शब्द)। ऑख का देखना ( रूप )। नाक का सूंघना ( गन्ध )। मुख जिह्वा का रस स्वाद-लेना ( रस )। त्वचा का विषय छूना (स्पर्श) है। इनका आपस मे जब अतियोग या हीनयोग या मिथ्यायोग होता है तब भी ये पन्द्रह रोग होते हैं। यह सब रोगभेद मेघ मुनि ने शार्ङ्गधर से लेकर बताए हैं।

## कला और धातुओं का वर्णन

कला सात होती हैं—धातु और आशयो के बीच का क्लेद ( बलगम ) जब पित्त की गरमी से पक जाता है अर्थात् वह परदे की तह की सूरत बन जाता है तो उसे 'कला' कहते हैं, कला धातु और आशयो को आपस में जुदा जुदा करती हैं। १ रक्तधरा कला, २ मासधरा कला, ३ मेदोधरा कला, ४ यकृत्-प्लीहधरा कला, ५ अन्नधरा कला, ६ अग्निधरा कला, ७ शुक्रधरा कला। सात आशय होते हैं—१ छाती मे श्लेष्माशय, उसके नीचे, २आमाशय, आमाशय के नीचे और नाभि के ऊपर, ३ अग्न्याशय होता है, उसके ऊपर तिल अर्थात् क्लोम होता है, उसके नीचे, ४ पक्काशय, उसके नीचे, ५ मलाशय और ६ मूत्राशय जिसे वस्ति भी कहते हैं, छाती के नीचे, ७ जीव रक्ताशय दाहिनी ओर यकृत् ( जिगर) और बाई ओर प्लीहा (तिली) होती है। यह आशय होते हैं। परन्तु स्त्रियो मे तीन आशय

अधिक होते हैं, १ गर्भाशय और दो स्तन ( दुग्धाशय ) होते हैं।

धातु सात होते हैं--१ रस, २ रक्त, ३ मांस, ४ मेद, ५ अस्थि, ६ मज्जा, ७ शुक्र, यह शरीर को धारण करते हैं इस लिये इन्हें धातु कहते हैं। जो वस्तु हम खाते हैं सब से पहले उसका रस बनता है, रस से फिर रक्त बनता है, रक्त जब शरीर की अग्नि से गाढा हो जाता है तो मांस बनता है, मांस का जो स्नेह होता है उसे वसा अथवा मेद कहते हैं, मेद से हड्डी बनती हैं, हड्डियो मे रहने वाला स्नेह जो हड्डियों को तर रखता है उसे मज्जा कहते हैं, इस मज्जा का जो सार है और सब के पीछे जाकर बनता है उसे शुक्र अर्थात् वीर्य कहते हैं, जिससे कि संसार की उत्पत्ति होती है। आचार्यों का मत है कि जो आज रस बना है वह ठीक महीने के बाद वीर्य बनेगा। रस रक्त बनने मे तीन हजार पन्द्रह ( ३०१५ ) कला समय लेता है, जो कि लगभग ५ दिन के बराबर होता है। इसी प्रकार रक्त से मांस बनने मे पाँच दिन लगते हैं। किन्तु कुछ द्रव्य ऐसे होते हैं जिनका सीधा प्रभाव रक्त पर अथवा शुक्र पर होता है, जैसे वाजीकरण, अर्थात् पुरुषेन्द्रिय को शक्ति देने वाली दवाइयाँ उसी दिन अपना असर दिखाती हैं,इस मे और विद्वानो के कई मत हैं विस्तार के भय से यहाँ नहीं लिखे जाते।

इन सात धातुओं के मल भी सात होते हैं, जैसे जिह्वा,नेत्र और कपोल के मल जीभ की मैल और जीभ का पानी, नेत्र का पानी और गाद, कपोल का मल जो कि मुँह पर युवावस्था मे किलियाँ निकल आती है ये सब रस के मल होते हैं। रञ्जक पित्त रक्त का मल होता है, कान और नाक का मल मांसमल होते हैं,दाँत,बगल और इन्द्रिय का मल और पसीना मेदमल होता है, नाखून और केश अस्थिमल होते हैं और मूंछ, दाढ़ी शुक्रमल होते हैं। कई आचार्य सिरफ छः मल मानते हैं। जैसे—१ टट्टी-पेशाब रस का मल, कफ रक्त का मल होता है, पित्त मांस का मल होता है, पसीना आदि मेद का मल होता है, नाखून केश लोम आदि अस्थिमल होते हैं, आँख, त्वचा आदि मे जो चिकनाहट होती है यह मज्जा का मल होता है और शुक्र अत्यन्त शुद्ध वस्तु है इस लिये इसका मल नहीं होता।

अब उपधातु बताते हैं— उपधातु भी सात ही होते हैं, स्तन्य ( दूध )

रस का उपधातु होता है, स्त्रियों का आर्तव मासिकधर्म (महवारी खून) रक्त का उपधातु होता है, वसा चर्बी मास का उपधातु होता है, स्वेद पसीना मेद का उपधातु होता है, दाँत अस्थि के उपधातु होते हैं, केश मज्जा के उपधातु होते हैं, ओज शुक्र का उपधातु होता है। यह सात धातुओं के सात उपधातु माने है।

दोष—१ वात, २ पित्त, ३ कफ यह तीन दोष होते है, ये दोष दो प्रकार के होते हैं, प्रसाद अर्थात् सारभूत शुद्ध, दूसरे मलभूत अशुद्ध, शुद्ध हो तो शरीर बढ़ता रहता है और यदि अशुद्ध हो तो शरीर मे रोग पैदा हो जाते हैं। शुद्ध वायु के लक्षण—शरीर मे वात शुद्ध हो तो मनुष्य मे उत्साह होता है श्वास प्रश्वास ठीक रहता है, चेष्टा (हरकत) ठीक रहती है, धातु ठीक ठीक बनते रहते है, मल-मूत्र भी ठीक समय पर उतरते रहते हैं। २—यदि पित्त शरीर मे ठीक कार्य करता हो तो चेहरे पर रौनक होती है, नजर ठीक रहती है, शरीर की गरमी भी ठीक रहती है, भोजन ठीक पचता है, भूख-प्यास ठीक समय पर लगती हैं, शरीर कोमल रहता है, तबीयत खुश रहती है, बुद्धि भी ठीक काम करती है। ३—कफ शुद्ध हो तो शरीर स्निग्ध रहता है, जोड मजबूत रहते हैं, शरीर भारी होता है, आदमी गम्भीर होता है, बलवान् होता है, धैर्यवान् होता है और लोभरहित होता है।

फिर इन दोषो मे हर एक के पॉच-पॉच भाग हो जाते हैं। जैसे—वायु पॉच होते हैं। १ प्राणवायु हृदय मे रहता है, २ उदानवायु कण्ठ मे ३ समानवायु नाभिमण्डल मे, ४ अपानवायु गुदा और ५ व्यानवायु सारे शरीर मे रहता है।

२—पित्त पॉच प्रकार का होता है। १ पाचक पित्त आमाशय और ग्रहणीकला मे रहता है, २ रञ्जकपित्त जिगर और तिली मे रहता है, ३ साधकपित्त हृदय मे रहता है, ४ आलोचकपित्त ऑखो मे रहता है और ५ भ्राजकपित्त त्वचा मे रहता है।

३—कफ पॉच प्रकार का होता है।

१—क्लेदक—जो कि आमाशय (मेदे) मे रहता है, और भोजन को

गीला कर के पचाने मे सहायता देना है ।

२—अवलम्बक—सारे शरीर को अपनी चिकनाई और शक्ति से धारण करता है ।

३—बोधक जो कि मुख मे रहता है जिससे मधुर आदि सम्पूर्ण रसो का बोध होता है ।

४—तर्पक यह श्लेष्मा मस्तिष्क ( दिमाग ) मे रहता है और दिमाग को तर रखता है ।

५—श्लेषक जो सन्धियो मे रहता है अर्थात् जोडो मे रह कर उनको तर रखता है, अगर जोडो मे तरी न हो तो सारे ही जोड़ अकड जावें और हिलना-जुलना, चलना-फिरना सब मुश्किल हो जावे ।

यह धातुओ और दोषो का विस्तार से वर्णन कर दिया है, जो लोग वैद्य बनना चाहे उनको चाहिये कि दोषो और धातुओ का पूर्ण विवरण अच्छी तरह से समझ ले । क्योकि जब वात, पित और कफ तीनो ही दोष बिगड़ कर कम और ज्यादह हो जाते हैं और इसके साथ ही रस रक्त आदि धातुओ को बिगाड देते हैं तो शरीररूपी कल-यन्त्र का कोई न कोई पुरजा बिगड जाता है तो उसे रोग कहते है, उस पुरजे को ठीक करने के लिये इन दोषो और धातुओ का ज्ञान जरूरी है, इनके ज्ञान के बिना वैद्य कौड़ी के काम का नही और ना ही उसे वैद्य कहना चाहिये । इनके लक्षण आगे बताए जायेंगे ।

स्नायु ( शरीर को बांधने वाली नसे ) नौ सौ होती हैं । उनमे कुछ प्रतानवान् ( फैलने वाली ) कुछ गोल, कुछ चपटी और कुछ पोली होती हैं, यह सारे शरीर मे फैल कर शरीर को बाँधे रहती है ।

सारे शरीर मे सन्धिया ( जोड ) दो सौ दस ( २१० ) होती हैं, अस्थिया पूरी तीन सौ होती हैं, मर्म एक सौ सात ( १०७ ) होते हैं, शिराएँ सात सौ होती हैं जिन मे चौबीस रस वाहक होती हैं । पाँच सौ पेशिया ( मास के लम्बे लम्बे टुकड़े जिनको मछलिया भी कहते हैं ) । परन्तु स्त्रियो मे बीस अधिक होती हैं अर्थात् स्त्री मे ५२० पेशियां होती हैं, जो गर्भाशय और स्तनो को बनाती हैं ।

पुरुष मे ( १ मुख, दो आँखे, दो कान, दो नाक, दो नासिका, एक गुदा, एक इन्द्री, एक ब्रह्मरन्ध्र ( तालु ) यह दस छिद्र अर्थात् मार्ग होते हैं, परन्तु स्त्री मे एक गर्भाशय और दो स्तन मिलाकर तेरह हो जाते हैं।

हमने संक्षेप से शारीरक तत्त्व बता दिया है, विस्तार इसका सुश्रुत शारीरस्थान मे देखें।

## तेल-पाक विधि

तेल अथवा घी सिद्ध करना हो तो तीन चीजें मुख्य होती हैं १ तेल २ काढा, स्वरसपानी दूध आदि पतली चीज इसे द्रव कहते हैं, ३ कल्क ( कुछ दवाइयो को पानी मे पीस पिण्डा सा बना कर डाला जाता है ) यदि तेल १ सेर हो तो द्रव ( स्वरस आदि ) ४ सेर होना चाहिये, और कल्क १ पाओ होना चाहिये। अगर ताजा रस न मिले तो उसके स्थान पर उस दवाई का काढा ले लेना चाहिये।

## ( काढ़ा ) क्वाथ-पाक विधि

४ सेर सूखी चीज लेकर १६ सेर पानी मे काढा करे जब कढ कर चौथा हिस्सा अर्थात् ४ सेर पानी रह जावे तब मलकर छान ले, अगर सूखी चीज कुछ सख्त हो तो उसे आठ गुना पानी मे काढा करे अर्थात् ४ सेर दवाई हो और ३२ सेर पानी हो जब चार सेर बाकी रहे तो उतार कर मल छान ले। और अगर बडी सख्त हो तो १६ गुना पानी मे काढ़े अर्थात् ४ सेर सूखी दवाई हो तो ६४ सेर पानी मे काढा करे जब ४ सेर बाकी रहे तो मल छान ले। इस चार सेर काढ़े मे एक सेर घी अथवा तेल पका ले। सूखी दवाई को कूटकर रात भर उस पानी मे भिगो छोड़ना चाहिये, और सुबह काढना चाहिये। अगर काढे की जगह कहीं दूध, दही, पानी आदि का विधान मिले तो भी घी से चौगुना लेना चाहिये, दूध, दही, स्वरस यह अक्सर गाढ़े होते हैं इनका ठीक पाक नही होता इस लिये इनमे बराबर पानी मिला कर पतला कर लेना चाहिये। जहा कहीं दो द्रव द्रव्यो का विधान हो वहा स्नेह से दुगुना दुगुना लेकर चौगुना करले, जहा चार पॉच हो वहा सब स्नेह के बराबर लेने। घी तेल आदि एक ही दिन मे नहीं पका लेने चाहिये, मीठी मीठी आँच पर

पाँच सात दिन तक पकने देने चाहिये । परन्तु मांसरस अथवा अनाज-आदि का क्वाथ ( काढा ) हो तो एक दिन मे पाक कर लेना चाहिये, क्योंकि फिर उनके सडने का भय रहता है ।

## पाक की पहचान

जब पानी जल जाये स्नेहमात्र रह जावे, और कल्क भी सारहीन हो जावे और उसकी बत्ती सी बनने लग जावे, सुगंध आवे और आग मे डालने से चिड चिड या पानी की आवाज न आवे तो समझो कि घी या तेल पक गया है । घी जब पक जावे जावे तो उस समय झाग बैठ जाता है, परन्तु तेल पाक होने पर उसमे झाग उठते है, यही इनमे भेद हैं ।

## दोषों की उत्पत्ति का वर्णन

वात की उत्पत्ति—ऊंचे बोलने से उपवास रखने से दुःखी रहने से, भयभीत रहने से, चिन्ता अधिक करने से, रूखा चरपरा आहार करने से, रात भर जागने से, कडवी चीजो के अधिक खाने से इसी प्रकार और भी रूखे और ठण्डे पदार्थों के अधिक सेवन करने से वायु उत्पन्न होता है, सायंकाल, रात के अन्तिम पहर, वृद्धावस्था मे, भोजन के पच चुकने के बाद, वर्षा ऋतु ( श्रावण भाद्रो ) मे वायु का प्रकोप होता है अर्थात् वायु के रोग बढ़ते हैं ।

## पित्त की उत्पत्ति

विषम भोजन, थकावट, खटाई अधिक खाने से, खारे, चरपरे, तीक्ष्ण ( मिरच आदि ) पदार्थों के अधिक खाने से, भूख प्यास रोकने से, शराब पीने से, क्रोध करने से, अग्नि तापने से, धूप मे अधिक फिरने से, दोपहर के वक्त, आधीरात, जवानी की उमर मे, शरद् ( आश्विन कार्तिक ) और ग्रीष्म ( ज्येष्ठ आषाढ ) ऋतु मे, भोजन के पचने के काल मे पित्त उत्पन्न होकर विकार पैदा करता है । अर्थात् इन समयो मे पित्त के रोग उत्पन्न होते और बढ़ते हैं ।

## कफ की उत्पत्ति

अत्यन्त मीठे पदार्थ, दूध, दही, घी, मक्खन, तिल आदि स्निग्ध पदार्थो

के अति सेवन करने से, नमक, खटाई, मछली, मास तथा अति भारी और शीतल पदार्थों के अधिक खाने से, दिन मे सोने से और आलस्यादि कारणो से शरीर मे कफ की उत्पत्ति होती है। कफ—वसन्त ( फाल्गुन चैत्र ) ऋतु मे प्रात' और रात के पहले पहर, दोनो काल भोजन करते समय और बाल्यावस्था मे कुपित होता है। मेघ कवि ने योगशतक से यह लिखा है।

## वात-प्रकोप के लक्षण

शरीर दुखता है,तालु सूखता है,आलस रहता है, शीत लगता है, बार बार हृदय मे वेग से उठते हैं, अग्नि विषम हो जाती है, नीद नही आती, शरीर मे ज्वर सा रहता है, रोगी गरम पदार्थों की अभिलाषा करता है, मुख का जायका फीका होता है, शरीर खुश्क पड जाता है, ये लक्षण हो तो वायु का प्रकोप समझो।

## पित्त-प्रकोप के लक्षण

मुँह का जायका कडवा, चेहरा व्याकुल, रोगी बकवास करे, होठ सूखे प्यास अधिक लगे, मूर्च्छा बार बार आवे, शरीर कमजोर पडे, बुखार तेज हो, पसीना अधिक आवे, ठण्डे पदार्थों पर रुचि चले, दाह आधिक हो तो पित्त का प्रकोप जानो।

## कफ-प्रकोप के लक्षण

खाँसी, गले मे बलगम अडी हुई मालूम होती है, आलस्य, श्वास, मुँह का जायका मीठा होता है, भूख बन्द हो जाती है, हृदय भारी होता है, अरुचि होती है, मुँह मे बार-बार पानी भरता है। यह कफ कोप के लक्षण होते हैं।

## वात की शान्ति का उपाय

गरम हवा, मीठे तेल की मालिश, नित्य गरम जल से स्नान करना, और गरम पानी पीना, उचित मद्य पीना, स्निग्ध और उष्ण भोजन करना इन उपायो से वायु के विकार शान्त हो जाते हैं।

## पित्त का उपाय

ठण्डे जल से स्नान करना, ठण्डा जल पीना, रसदार और सुगंधित

भोजन करना, चन्द्रमा की चाँदनी मे बैठना सोना, और विशेषकर शरद् ( असूज-कार्तिक ) ऋतु की चाँदनी यह सब पित्त को शान्त करते है।

## कफ का उपाय

वमन ( कै ) विरेचन ( दस्त ) कड़वी, खारी, चरपरी वस्तुओं का खाना. उपवास ( फाका रखना ) गरम पानी, पसीना, नसवार, इन उपायो से कफरोग दूर होते है।

## वात-प्रकृति नर के लक्षण

जिस का मन अति चञ्चल हो, दुवला पतला हो, शरीर रूखा हो, जो गरम वस्तुओ की चाह रखता हो, सोते समय स्वप्न मे आकाश पर उडे, वहुत वाते करने वाला हो, एक जगह टिकने वाला न हो, ऐसा नर वात प्रकृति का होता है।

## पित्त-प्रकृति नर के लक्षण

जवानी मे वाल पक जावे, वुद्धिमान् हो, विचारशील हो, जिसे पसीना अधिक आता हो, स्वप्न मे ग्रहो को पृथ्वी पर देखे, क्रोध करने वाला पित्त-प्रकृति का पुरुष होता है।

## कफ-प्रकृति नर के लक्षण

जिस के वाल घने काले और चिकने हो जिसका शरीर मोटा हो, कफ की खासी हो, स्वप्न मे दरिया, सागर, तालाव तैर कर पार करने वाला हो वह कफ प्रकृति का पुरुष होता है।

## द्वन्द्वज प्रकृति निदान

ऋतु उलट जावे अर्थात् गरमी मे सरदी और सरदी मे गरमी, गरमी मे वरसात, वरसात मे पानी न वरसे, कफ की ऋतु मे पित्त वढ़े तो द्वन्द्वज प्रकृति होती है।

## वात-पित्त निदान

वायु के मौसिम मे गरमी अधिक हो और उस समय जो नर वहुत गरम और तीक्ष्ण पदार्थो को खाता है, उसके वात और पित्त कुपित हो जाते हैं।

## वात-कफ निदान

वात की ऋतु मे कफ कारक शीत ऋतु उलट आवे, और नर कफ कारक वस्तुओ को अधिक खावे तो वात और कफ कुपित हो जाते हैं।

## कफ-पित्त का निदान

कफ के राज्य मे ऋतु उलट कर गरमी हो जावे और नर गरम चीजें अधिक खावे तो निश्चय पित्त और कफ का प्रकोप हो जावेगा। श्री मेघ मुनि कहते हैं शास्त्रानुसार इन को समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये। इति॥

मेघविनोद् सौदामिनीभाषाभाष्य प्रथम अध्याय समाप्त।

---

# अथ दूसरा अध्याय।

## ज्वरचिकित्सा

ज्वर की उत्पत्ति—दक्ष प्रजापति ने यज्ञ किया उस यज्ञ मे सब देवताओ के लिये भाग रखा परन्तु शङ्कर महादेव के लिये उस मे कोई भाग न रखा और उलटा उनका अपमान किया, दक्ष प्रजापति की कन्या सती माता जो कि शङ्कर महादेव की स्त्री थी इस अपमान को न सह सकी और वही योगाग्नि मे भस्म हो गई। सती के दाह को सुनकर शङ्कर महादेव को महान् क्रोध हुआ, उस क्रोध मे आकर अग्नि समान जो श्वास लिया उस श्वास से आठ प्रकार का (१ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ वातपित्त, ५ वातकफ, ६ पित्तकफ, ७ सन्निपात, ८ आगन्तुज) ज्वर उत्पन्न हुआ। वह ज्वर कैसा था?—तीन उसके सिर थे, तीन पाओं वाला, छ: भुजाओ वाला, नौ नेत्रो वाला, बघंबर ओढ़े हुए, छोटी छोटी टागो वाला और बडे पेट वाला, भस्म रूपी शस्त्र को हाथो मे लिये प्रकट हुआ। प्रकट होकर इसने दक्ष प्रजापति के यज्ञ को नष्ट करके उस यज्ञ का सारा चरु (हवन सामग्री) जीर्णकर (पचा) लिया था इस लिये उसे ज्वर कहते हैं।

## ज्वरनिदान तथा सम्प्राप्ति

मिथ्या आहार और विहार ( बदपरहेजी ) करने से बिगड़े हुए वातादि दोष जब उदर की पाचक अग्नि को अपने स्थान से निकाल कर सारे शरीर मे फैला देते हैं उस समय ज्वर हो जाता है। ज्वर के समय सारा शरीर तो गरम होता है किन्तु पाचक अग्नि बिलकुल मन्द हो जाती है। इस प्रकार सम्पूर्ण रोगो का कारण यही है कि शरीर मे जो मल आदि जमा हो जाते हैं अथवा पूर्वजन्म के पाप कर्म भी होते हैं, जिनका फल भोगने के लिये ये रोग हो जाते हैं।

## मिथ्याहार के लक्षण

विना समय ( बे वक़्त ) अधिक मात्रा ( मिक़दार ) मे अथवा बहुत कम मात्रा मे भोजन करना, अथवा अहित तथा विरुद्ध पदार्थों का सेवन करना मिथ्याहार कहलाता है।

## मिथ्या विहार के लक्षण

जो दुबला पतला कमजोर मनुष्य अपनी शक्ति से अधिक काम करे, एवं मोटा ताजा मनुष्य कुछ भी काम न करे। अथवा अकेले ही बेवक्त श्मशान भूमि उजाड गाँव ( खडरात ) वन भूमि आदि मे घूमना मिथ्या विहार कहाता है।

## आम (कच्चे) ज्वर के लक्षण

मुख लाल, हृदय भारी, उबकाई आना, मदाग्नि होना, मुख फीका होना, नींद अधिक आना, शरीर भारी प्रतीत होना, अरुचि होना, मुख मे पानी भरा रहना, तन्द्रा होना, शरीर जकडा हुआ होना, मूत्र अधिक उतरना, ज्वर बलवान् होना ये आम ज्वर के लक्षण होते हैं। ऐसी अवस्था मे रोगी को कोई दवाई आदि नहीं देनी चाहिये, क्योंकि दवाई कच्चे बुखार मे जहर का काम करती है, साप के मुख मे अगुली देने का जो फल होता है, वही कच्चे ज्वर मे दवाई देने का फल होता है। अर्थात् बुखार बहुत भड़क उठता है, कारण यह होता है कि उदर की अग्नि इतनी मद होती है कि काढा आदि दवाई को पचा नहीं सकती।

नोट.--रस चिकित्सा मे कच्चे बुखार मे दवाई देने का निषेध नही क्योकि रसो मे पारा, गन्धक, वच्छनाग विष, आदि वस्तुए पडती हैं जो अपने तेज असर से बुखार को शीघ्र पकाकर दूर कर देती हैं और मन्दाग्नि आदि उपद्रव भी नष्ट हो जाते हैं ।

## पक्क ज्वर लक्षण

ज्वर वेग कम हो जाता है, शरीर हलका हो जाता है, वातादि दोप पक जाते है, मल मूत्र ठीक उतरने लगते हैं, भूख खुल जाती है, शरीर कमजोर पड जाता है ऐसी अवस्था मे पक्क ज्वर समझ कर औपधी देनी चाहिये ।

रोगी के शरीर मे पाक दो प्रकार का होता है एक धातुपाक, दूसरा मलपाक । धातु पाक से रोगी मर जाता है और मलपाक से रोगी स्वस्थ हो जाता है । इस लिये 'माधव' कहते हैं कि धातुपाक और मलपाक का अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिये ।

## धातु-पाक लक्षण

धातु पाक ज्वर मे तृपा अधिक होती है, शरीर जकडा हुआ तथा भारी होता है, अरुचि होती है बेचैनी होती है, अत्यन्त कब्ज होती है, दुर्वलता अधिक होती है और निद्रा भी नष्ट हो जाती है ।

अन्यच्च—ज्वर का वेग अधिक हो, श्वासवेग बढ जावे, हृदय और नाभि मे पीडा हो बेचैनी हो, अतिसार लग जावे, तृष्णा, भ्रम और अरोचक हो तो धातुपाकी ज्वर जानो ।

## मल-पाक लक्षण

दोपपाक मे वात आदि दोप अपनी अपनी दशा पर आ जाते है । तथा च तबीयत हलकी हो जाय,ज्वर, तृष्णा, हृदय नाभि मे पीडा,अतिसार आदि उपद्रव शान्त हो जावे, इन्द्रिये स्वस्थ हो जावे तो दोषपाक जानिये ।

## दोप-पाक मर्यादा

वात वृद्धि मे सात दिन, पित्त वृद्धि मे दस दिन और कफ वृद्धि मे बारह दिन की ज्वर मर्यादा होती है, वात पित्त मे नौ दिन, वात कफ मे दस दिन और पित्त कफ मे पॉच दिन की मर्यादा होती है । त्रिदोष की

१० दिन और सन्निपात की पन्द्रह दिन की मर्यादा होती है ( इस मर्यादा मे धातुपाकी रोगी मर जायगा और मलपाकी बच जायगा ) यह मर्यादा सार-संग्रह से लिखी है। मेघ कवि कहते है कि इन मर्यादालक्षणो को भली प्रकार सोच विचार कर चिकित्सा करने से वैद्य को किसी प्रकार का दोष नही लगता ।

## अन्तर्वेग ज्वर के लक्षण

अन्तर्वेग ज्वर मे शरीर के अन्दर दाह होता है, रोगी प्रलाप अधिक करता है,श्वास, तृष्णा,भ्रम अधिक हो जाते हैं,सन्धि (जोड़) और अस्थियो मे शूल, पसीना अधिक ( कही कहीं पसीने का रुक जाना भी माना है ) और मल-मूत्रादि की रुकावट हो जाती है ।

## बहिर्वेग ज्वर के लक्षण

ज्वर का सन्ताप अधिक, तृषा आदि उपद्रव अधिक नहीं होते, अन्न मे अरुचि होती है ये बहिर्वेग ज्वर के लक्षण जानिए ।

## ज्वर के पूर्वरूप

थकावट होती है, बेचैनी होती है, चेहरे की रङ्गत बदल जाती है, मुख विरस हो जाता है, आँखो मे आँसू भर आते है, कभी सरदी और कभी गरमी प्रतीत होती है, जम्भाई आती हैं, अङ्गड़ाइयाँ आती है शरीर भारी होता है, शरीर मे रोमाञ्च होता है, अरुचि होती है, आँखो के सामने अन्धेरा हो जाता है, उदासी छा जाती है और बहुत सरदी लगती है, ये ज्वर के पूर्वरूप होते है ।

## दोष-विशेष से ज्वर के पूर्वरूप

विशेषकर वातज्वर मे जंभाइयाँ अधिक आती हैं, पित्तज्वर मे आँखो मे जलन अधिक होती है और कफज्वर मे अन्न की इच्छा नहीं होती है ।

## ज्वर के लक्षण

पसीना ना आवे, सारे शरीर मे सन्ताप हो, शरीर जकड़ जावे जिस रोग मे यह सारे लक्षण एक समय मे हो उस रोग को ज्वर ( बुखार ) कहते हैं । यह माधवादि आचार्यों का मत है ।

नोट—यह सामान्य ज्वर के लक्षण हैं, ज्वर की पहली अवस्था मे पसीना प्रायः नहीं आता, किन्तु पित्तज्वर हो तो रोगी को बहुत पसीना आता है।

## ज्वर-मुक्त लक्षण

ज्वर के हटने पर पसीना आता है, सारा शरीर हलका प्रतीत होता है, सिर मे खुजली होती है, मुँह पक जाता है, भोजन की इच्छा होती है।

## ज्वर के दस उपद्रव

१ प्यास अधिक, २ अतिसार, ३ श्वास रोग अर्थात् श्वास उखडने लगता है, ४ मूर्च्छा आती है, ५ भोजन आदि मे रुचि नहीं रहती है, ६ उलटियाँ आती हैं, ७ हिचकी, ८ कब्जी, ९ खाँसी और १० अङ्गभङ्ग ये ज्वर के दस उपद्रव होते हैं।

## वात-ज्वर लक्षण

वातज्वर मे कम्प अधिक होता है, ज्वर कभी कम और कभी अधिक, गला, मुख, होठ वारवार सूखते हैं, निद्रा नष्ट हो जाती है, छींक नहीं आती, शरीर जकड जाता है, खुरकी अधिक हो जाती है, सिर, हृदय और सम्पूर्ण अंगो मे पीडा, मुख का स्वाद फीका वेरस होता है, जंभाई अधिक आती है, कब्ज, अफारा और शूल होता है।

## वात-ज्वर चिकित्सा

मिर्च, पीपल ( मघा ) चित्रा, लौंग, लाहोरी नमक,कौड ये सव समान भाग लेकर चूर्ण करे, चूर्ण की एक माशा से तीन माशा तक की मात्रा है, गरम पानी के साथ दिन मे तीन चार वार वल और आयु के अनुसार देने से वातज्वर दूर होता है।

## (क्वाथ) काढ़ा

सौंफ ३ माशा पिप्पला मूल ३ माशा, गिलोय २ तोला ( गिलोय का ऊपर से छिलका उतार लेना चाहिये ) सवको कूट कर ३२ तोले जल मे काढ़ा करे, ८ तोले वाकी वचने पर उतार मल छान कर रोगी को पिलाने से वात ज्वर दूर हो जाता है।

नोटः—सब प्रकार के क्वाथ ( काढ़े ) बनाने का यही तरीका है, अर्थात् दो तोले द्रव्य ३२ तोले जल मे क्वाथ कर ८ तोले बाकी रहे तो उतार मल छान कर रोगी को दे, जहा कहीं भेद होगा वहा सूचित कर दिया जायगा ।

## पुनः काढ़ा

नागरमोथां, धमासा, सोठ गिलोय यह सब मिलाकर दो तोले ले पूर्व विधि से क्वाथ कर रोगी को पिलाने से वातज्वर नष्ट होता है ।

## पुनः क्वाथ

अनन्त मूल, शालपर्णी, गिलोय, मुनक्का और वला के वीज सब मिलाकर दो तोले, पानी ३२ तोले, शेष काढ़ा ८ तोले, मल छान कर पीने से तीव्र वातज्वर शान्त होता है ।

## पुनः काढ़ा

कायफल, पाठा, कौड, नगरमोथा, और इन्द्रजौ, सब २ तोले जल ३२ तोले, शेष काढा ८ तोले मल छान कर पीने से वातज्वर शान्त होता है, मेघ कहते हैं कि शार्ङ्गधर मे ऐसा लिखा है ।

## पुनः चूर्ण

सोठ, हरड, कालीमिरच, सौंचर नमक, मघा, चिरायता और कौड़ इन सबका चूर्ण कर ३-४ माशे गरम जल से दे तो वातज्वर शान्त होता है, शरीर स्वस्थ हो जाता है, मेघविनोद में मेघ इस प्रकार कहते हैं ।

## दूसरा चूर्ण

सोठ ४ टंक ले सैंधा नमक २ माशे, दोनो का चूर्ण कर १ माशा से तीन माशे तक गरम जल से दे तो तीव्र वातज्वर नष्ट हो जाता है ।

## पित्त-ज्वर के लक्षण

पित्तज्वर में ज्वर का वेग अधिक होता है, अतिसार हो जाता है, नींद कम आती है, पित्त की वमन होती है, गला, होठ, मुख, नासिका आदि पक जाती हैं, पसीना अधिक आता है रोगी बकवास करता है, मुँह

कडवा हो जाता है, मूर्छा हो जाती है, दाह (जलन) होता है, प्यास वहुत लगती है, गरमी का नशा सा चढा रहता है, नेत्र और मल-मूत्र की रङ्गत पीली पड जाती है, चक्कर आने लगते हैं।

## पित्त-ज्वर की चिकित्सा

वॉसा ( वहेकड ) की जड का छिलका, वमाह, चिरायता, पित्त पापडा फूल प्रियगु सव द्रव्य दो तोले ३२ तोले जल मे क्काथ कर ८ तोले रहने पर मल छान मिश्री मिला पिलाने से पित्तज्वर तृष्णा, दाह, आदि सव उपद्रव शान्त हो जाते हैं। मेघ कवि कहते हैं कि शार्ङ्गधर मे ऐसा लिखा है।

## पुनः

नागर मोथा, हरड, कौड, मुनक्का, पापडा, इनका पूर्वविधि से क्काथ वना ले पश्चात् इस क्काथ मे अम्लतास का गूदा ६ माशा से १ तोले तक मिलाकर रोगी को पिलाने से पित्तज्वर तृष्णा, दाह, भ्रम, प्रलाप, मूर्छा मुखशोप, रक्तपित्त आदि उपद्रव दूर होते हैं कवज दूर होती है, भोजन मे रुचि उत्पन्न हो जाती है।

## अन्य उपाय

आठ माशे पापडा रात को एक छटाक पानी मे भिगो छोडे, सुवह मल छानकर रोगी को पिलाने से पित्तज्वर, दाह, तृपा आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

चन्दन, मुश्कवाला, पित्तपापडा, नागरमोथा, सोठ, खस इनका पूर्वोक्त विधि से काढ़ा पीने से पित्तज्वर शान्त हो जाता है। मेघ कहते हैं कि वहुत विचार कर ऐसे लिखा है। यह काढा दाह, तृष्णा आदि विकारो को भी दूर करता है।

## पुनः उपाय

कौड़, चिरायता, पापडा, कण्डयारी इनका काढ़ा पीने से भी पित्त-ज्वर दूर रोता है।

## अन्य उपाय (वंगसेन से)

रक्तचन्दन, पापड़ा, नीलोफर, खस, चिरायता, गिलोय, धनिया इनका

काढा पीने से पित्तज्वर नष्ट होता है।

### अन्य उपाय

कड़वे पण्डोल ( परवल ) के पत्तो का काढा बनाकर उस मे ६ माशा शहद मिलाकर पिलाने से पित्तज्वर, दाह, तृष्णा आदि दूर होते है, ऐसे वंगसेन मे लिखा है।

### अन्य उपाय

मुलट्ठी, धनिया, पण्डोल के पत्ते इन तीनो का पूर्व विधि से काढ़ा बना शहद मिला पीने से पित्तज्वर दूर होता है।

### धनियां का पाक (शर्वत)

धनिये का पूर्वोक्त विधि से काढ़ा कर ले, उस काढे मे उतना ही केले का रस मिला ले, दोनो से चार गुना मिश्री मिलाकर एक तार की चाशनी का शर्वत बना ले, इस शर्वत के पीने से पित्तज्वर, दाह, तृष्णा आदि उपद्रव शान्त होते हैं।

### चूर्ण

३ माशे सफेद जीरा, ६ माशे मिश्री दोनो का चूर्ण कर ठण्डे जल से फाँकने पर पित्तज्वर शान्त होता है। अथवा ६ माशे जीरा पानी मे घोट मिश्री मिला पीने से भी पित्तज्वर शान्त होता है।

### चूर्ण

हरड़, कौड़, चिरायता, कड़वीतोरी के फूल सब बराबर ले चूर्ण कर मिश्री मिला जल से फाँकने पर पितज्वर दूर होता है।

### कफ-ज्वर लक्षण

कफज्वर मे शरीर भारी होता है, सरदी लगती है, रोमाञ्च ( रोंगटे खड़े ) होते हैं, नीद और घूर अधिक अधिक होती है, मुख मीठा होता है, और कफ भरा रहता है, भूख बन्द हो जाती है, रोमकूप बन्द हो जाते है, ज्वर का वेग हलका होता है, आलस्य होता है, कफ की वमन होती है, शरीर ढीला पड जाता है, खासी जुकाम, मल-मूत्र और नेत्रो की रङ्गत सफेद पड़ जाती है।

## कफ-ज्वर चिकित्सा

सोंठ, मघा, अडूसा (वहेकड) की जड का छिलका, हरड भंडिगी सब सममाग लेकर पूर्वोक्त विधि से काढा कर पीने से तत्काल कफज्वर और उसके उपद्रव शान्त होते हैं।

## अन्य क्काथ

६ माशा पीपल ( मघा ) कूट कर पूर्वोक्त विधि से काढा वना रोगी को पिलाने से कफज्वर, अरुचि, खासी आदि सव उपद्रव दूर होते हैं।

## अन्य काढ़ा

आमला, हरड, चित्रा, मघा इन का काढा पीने से भी कफज्वर और उसके उपद्रव तत्काल शान्त हो जाते हैं।

## पुनः काढ़ा

कौड़, हलदी, नागरमोथा, सोंठ, काली मिरच, पीपल ( मघा ) इन का क्काथ पीने से कफज्वर दूर होता है।

## अन्य काढ़ा (वंगसेन से)

सम्भालू के पत्तों का काढ़ा वना कर उसमे ४ रत्ती पीपल ( मघां ) का चूर्ण मिलाकर पीने से कफज्वर दूर होता है।

## पुनः चटनी

कायफल, पोहकर मूल, काकड़ासिगी और पीपल ( मघा ) सव का चूर्ण कर शहद मे मिला चटनी चटाने से कफज्वर, खासी, वलगम सव दूर होते हैं।

## अन्य काढ़ा

छोटी कंडयारी, सोंठ, हरड, गिलोय इन का काढा पिलाने से कफ-ज्वर दूर होता है।

## पुनः चटनी (वंगसेन से)

हरड़, वहेडा, आमला और पीपल ( मघ ) सव को बराबर लेकर चूर्ण कर शहद मे मिला कर चटाने से कफज्वर, श्वास, खांसी, बलगम आदि दूर होते हैं।

## पुनः चटनी

नागरमोथां, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, कौड़, कायफल, कचूर सब का चूर्ण कर शहद और अदरक का रस मिला कर चटाने से कफज्वर, वायु-रोग, श्वास, कास, क्षयरोग, बलगम आदि सब प्रकार के कफरोग दूर होते हैं।

## पुनः क्वाथ ( वीरसिंहावलोकन से )

चित्रा, हरड, वहेडा, आमला, नागरमोथां, सुपारी, इन्द्रजौ, कौड़, पंडोलपत्र, पतीस इनका काढ़ा बना कर छान लें, फिर उसमें १ तोला अमलतास का गूदा, ६ माशे शहद मिलाकर रोगी को दोनों वक्त पिलाने से कफज्वर, श्वास, कास, गले के सब रोग दूर होते हैं। मेघ कवि कहते हैं कि यह बिलकुल ठीक उपयोगी है।

## नस्य (नसवार)

सोंठ, काली मिरच, मघ ( पीपल ), कायफल इन सब को बारीक पीस कर नसवार देने से कफज्वर, श्वास, कास, जुकाम आदि दूर होते हैं।

## वात-पित्तज्वर लक्षण

प्यास अधिक लगना, चक्कर आना, मूर्छा आना, नींद न आना, शरीर में दाह होना, सिर दर्द, गला और मुख का बारबार सूखना, सूखी अथवा पित्तयुक्त उलटी आना, आँखो के सामने अन्धेरा छा जाना, अंग अंग दुखने लग जाना ये वात-पित्तज्वर के लक्षण हैं।

## वात-पित्तज्वर चिकित्सा

हरड़, बहेड़ा, आमला, सेमल की जड़, रायसन, अडूसा ( बहेकड़ ) इनके काढ़े मे अमलतास का गूदा मिलाकर पीने से वात-पितज्वर दूर होता है।

## पुनः काढ़ा

चित्रा, मुनक्का, आमला, कौड़, कचूर, चिरायता इनका काढ़ा बनाकर १ तोला गुड़ मिला पीने से वात-पित्तज्वर शान्त होता है।

## पुनः काढ़ा ( बंगसेन से )

खरैंटी, भंडिगी, गिलोय, रक्तचन्दन, एरण्ड की जड, खस, पीपल

( मघ ), पापडा इनका काढा पीने से पक्षाघात, शिर पीडा, कम्पवाय, और वात-पित्तज्वर दूर होते हैं।

## पुनः ( पञ्चभद्र ) काढ़ा

गिलोय, पापडा, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता इनका काढा बना कर पीने से वात-पित्तज्वर दूर होता है, इस का नाम 'पञ्चभद्र' काढा है।

## अन्य काढ़ा ( वंगसेन से )

खरैंटी, नीलोफर, फालसा की जड, मुनक्का, खस, पद्माख, गम्भारी का फल ( न मिले तो उसकी छाल ), गुलखैरा के फूल इनका काढा पीने से वात-पित्तज्वर नष्ट होता है।

## वात-कफज्वर लक्षण

शरीर गीले वस्त्र से लिपटा हुआ प्रतीत होना, हडफूटना, नींद बहुत आना, शरीर भारी होना, सिर भारी और जकडा हुआ होना, जुकाम होना, खासी, पसीना न आना, ज्वरवेग मध्यम होना ये वात-कफज्वर के लक्षण हैं।

## वात-कफज्वर चिकित्सा

सोंठ, पोहकरमूल, चित्रा, गिलोय, कंडियारी इनका काढा पीने से वात-कफज्वर दूर होता है।

## पुनः क्वाथ

नीलोफर, कंडियारी, रक्तचन्दन, नागरमोथा, गिलोय, चिरायता, पित्तपापडा, अड्रूसा ( वहेकड ), पोहकरमूल, इन्द्रजौ, कौड इनका काढ़ा पीने से मन्दज्वर नष्ट होता है। अथवा इसी मे सोंठ, धनिया पराडोलपत्र मिलाकर काढा बना पीने से वात-कफज्वर, मूर्छा, तृष्णा, अरुचि, श्वास, शूल, अफारा, उलटी, खांसी, हिचकी, सन्निपात, गलग्रह ( गले का बन्द हो जाना ) सिर दर्द आदि सब रोग दूर होते हैं।

## पुनः क्वाथ

नागरमोथा, सोंठ, पित्तपापडा, गिलोय, धमांह इनका काढ़ा बनाकर

पीने से वात-कफज्वर, दाह, मुँह का बारबार सूखना, उलटी आदि विकार दूर होते हैं ।

## पुनः काढ़ा (बंगसेन से)

हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, काली मिरच, पीपल, कौड, गिलोय, नीम के पत्ते, चिरायता, अड़ूसा, नागरमोथा, पण्डोलपत्र ( कड़वे ) सब मिलाकर २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढा पीने से वात-कफ-ज्वर तथा अन्य भी सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं, मेघ कवि ने बंगसेन का मत लेकर यह लिखा है।

## पुनः काढ़ा

पिप्पलामूल, नागरमोथा, कौड, हरड़ सब दो तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढ़ा बनाकर इसमे १ तोला अमलतास का गूदा मिलाकर पीने से कफज्वर दूर होता है, यह काढ़ा अग्नि को दीपन करता है, हाजमा को ठीक करता है, कफ के शूल तथा आमवात को दूर करता है ।

## अन्य काढ़ा

चवक, चित्रा, पिपलामूल, सोंठ, पीपल सब २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढा पीने से वात-कफज्वर नष्ट होता है ।

## अन्य चूर्ण ( बंगसेन से )

१ माशा पीपल (मघ) का चूर्ण गरम पानी के साथ खाने से वात-कफज्वर, खांसी, श्वास, वादी, पीड़ा तथा कफरोग दूर होते हैं ।

## अन्य काढ़ा

नीम, गिलोय, कायफल, देवदार, कौड़, सोंठ सब २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढ़ा बनाकर पीने से वात-कफज्वर दूर होता है ।

## पित्त-कफज्वर के लक्षण

मुँह कड़वा होना, कफ से भरा रहना, तन्द्रा ( घूर ) होना, मूर्छा होना, खांसी होना, अरुचि होना, प्यास बहुत लगना, कभी गरमी और कभी सरदी लगना, शरीर जकड़ा हुआ होना, पसीना आना, कफ और पित्त की उलटी आना ये पित्त-कफज्वर के लक्षण होते हैं

## पित्त-कफज्वर चिकित्सा

धनिया, नीम के पत्ते, गिलोय, नीलोफर, चन्दन इनका क्वाथ पीने से पित्त-कफज्वर दूर होता है।

### अन्य काढ़ा

कौड, गिलोय, धनियां, नीम के पत्ते, चन्दन, कौड इनका काढा पीने से पित्त-कफज्वर, दाह, प्यास, उलटी, अरुचि आदि प्रवल उपद्रव भी नष्ट हो जाते हैं, मेघ जी ऐसा कहते हैं।

### अन्य काढ़ा

रक्तचन्दन, मुलट्ठी, गिलोय, नीम के पत्ते, धनिया इन का काढा पीने से पित्त-कफज्वर नष्ट होता है।

### पुनः काढ़ा ( वंगसेन से )

हरड, बहेडा, आमला, नीम के पत्ते, मुलट्ठी, कडवे पण्डोल के पत्ते, खरैंटी सब मिलाकर २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढ़ा पीने से अरुचि, प्यास, दाह और कफ-पित्तज्वर दूर होता है।

### पुनः काढ़ा

रक्तचन्दन, कौड, चिरायता मूर्वा, कड़वे पण्डोल के पत्र सब मिलाकर २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले कोसा कोसा क्वाथ पीने से कफ-पित्तज्वर दूर होता है। उलटी,अरुचि,दाह,प्यास आदि उपद्रव भी दूर होते हैं।

### अन्य चूर्ण

कौड और मिश्री दोनो को वरावर चूर्ण कर ६ माशे गरम पानी के साथ पीने से कफ-पित्तज्वर दूर होता है।

### पुनः काढ़ा (वंगसेन से)

हरड, बहेड़ा, आमला, कौड़, मुनक्का, त्रायमाणा सब मिलाकर २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढ़ा पीने से कफ-पित्तज्वर दूर होता है।

### पुनः काढ़ा

पापडा, धनिया, इन्द्रजौ, पण्डोलपत्र सब मिलाकर २ तोले, पानी ३२

तोले, शेष ८ तोले काढा शहद मिलाकर पीने से पित्त-कफज्वर, दाह, शूल प्यास और हाथ-पाओं की जलन दूर होती है।

## पुनः काढ़ा

कौड़, पण्डोलपत्र, गिलोय, सोंठ, रक्तचन्दन, नीम के पत्ते, नागरमोथा, इन्द्रजौ सब मिलाकर २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढ़ा बना छानकर उसमें ४ रत्ती पीपल (मघ) का चूर्ण मिलाकर पीने से, प्यास, दाह, अरुचि, वमन दूर होते हैं, भूख खुलती है, कफ-पित्तज्वर नष्ट होता है, इस काढ़े का नाम 'अमृताष्टक' है।

## चटनी

अडूसे (वहेकड) का पञ्चाङ्ग (जड़, टहनी, पत्ते, फूल और फल इसे पञ्चाङ्ग कहते हैं) लेकर चूर्ण कर लें, फिर ३ मासा चूर्ण लेकर थोडी खांड और शहद मिलाकर चाटने से कफ के साथ खून का आना, खांसी, रक्तपित्त (नकसीर) और कफ-पित्त का ज्वर दूर होता है।

## पुनः क्काथ

वच, हरड़, वहेड़ा, आमला, पण्डोलपत्र,, नीम के पत्र, मुलट्ठी सब द्रव्य २ तोले, पानी ३२ तोले, क्काथ कर ८ तोले शेष रहने पर पिलाने से कफ-पित्त का ज्वर दूर होता है।

## पुनः क्काथ (वंगसेन से)

कण्डियारी, गिलोय, सोंठ, चिरायता, इन्द्रजौ, बिजौरा की जड़, वहेकड़ (अडूसा), कौड़, पण्डोलपत्र सब द्रव्य २ तोले, पानी ३२ तोले काढ़ा कर ८ तोले शेष रहने पर पीने से पित्त-कफज्वर, प्यास, दाह, अरुचि, वमन, खांसी, हृदय रोग, सब प्रकार के शूल आदि विकार दूर होते हैं, वंगसेन में इसका नाम 'क्षुद्रादि क्काथ' है। मेघ कवि ने उसमें से लेकर मेघविनोद में लिखा है।

## त्रिदोष (सन्निपात) ज्वर लक्षण

गले में कफ का सूख जाना, जिह्वा का कठोर हो जाना, तन्द्रा (घूर) होना, श्वास का बढ़ जाना, पीठ और सिर में अत्यन्त पीड़ा होना, पसीना बहुत

आना, नीद वहुत आना, भूख नही लगना, गरदन का पीछे को मुड जाना, शरीर मे सन्ताप कम हो जाना ये त्रिदोष के लक्षण कहे गये हैं।

## अन्य लक्षण ( माधवनिदान से )

क्षण मे दाह, क्षण मे शीत, अस्थि-सन्धियो मे पीडा, सिर मे दर्द, नेत्र मलीन, आँसुओ से पूर्ण, रक्तवर्ण और सिकुडे हुए, कानो मे साँ साँ शब्द होना, गले मे काँटे से चुभना, कफ अटका रहना, तन्द्रा, मोह, वकवास, खासी,श्वास,अरुचि,चक्कर आना,जवान का काली जली हुई खुरदरी होजाना, शरीर का बिलकुल ढीला होना, थूक और वलगम के साथ खून आना, रोगी का वारवार सिर पटकना, प्यास अधिक लगना, नींद नहीं आना, हृदय मे पीडा होना,कभी कभी थोड़ा पसीना अथवा थोड़े थोड़े मल-मूत्र का उतरना, अङ्गो का कोई अधिक कमजोर न होना, गले मे घुर घुर की आवाज आते रहना,शरीर मे छोटे छोटे चकत्ते अथवा वडे बड़े गोल चकत्ते पड जाना, रोगी का वोल न सकना, मुख, नाक, गुदा आदि स्थानो का पक जाना, उदर का भारी रहना, दोषपाक चिरकाल मे होना, ये सन्निपात (त्रिदोष) ज्वर के लक्षण होते हैं।

## त्रिदोषज्वर की चिकित्सा

क्काथ—मघ पीपर और चिरायता दोनो का चूर्ण कर अदरक रस के साथ देने से त्रिदोषज्वर दूर होता है।

## अञ्जन

काली मिरच, जियापोता की गिरी दोनो तुलसीरस मे पीसकर आँखो मे अंजन करने से त्रिदोषज्वर नष्ट होता है।

## पुनः

छोटी कण्डियारी, गिलोय, सोठ इनका क्काथ कर ४ रत्ती पीपल का चूर्ण डाल कर पिलाने से सन्निपातज्वर दूर होता है।

## चिन्तामणि-रस ( गोली )

शुद्ध पारा १ टङ्क, शुद्ध गन्धक २ टङ्क, ( दोनो की कज्जली कर ले ) शुद्ध वच्छनाग विष, सोठ, काली मिरच, मघपीपल, सैंधानमक, सौंचलनमक,

विडनमक, समुद्रनमक, सांभरनमक, सज्जीखार, सुहागा भुना हुआ, दोनो जीरे, शुद्ध गुग्गुल सब चीजे दो २ टङ्क, अदरक रस मे पीसकर २-२ रत्ती की गोली बना ले, १ गोली मे ४ रत्ती मघपीपल का चूर्ण और ४ रत्ती लौंग का चूर्ण मिलाकर दो तोला तुलसीरस से खिलाएं तो सन्निपातज्वर दूर होता है, इस रस को पान के अथवा अदरक के रस के साथ भी दे सकते हैं, इस का नाम चिन्तामणि रस है, सन्निपात को नाश करने मे यह विख्यात दवाई है।

नोट—ऊपर के चिन्तामणि रस मे शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और शुद्ध वच्छनाग विष लिखा है, सो इनके शुद्ध करने की विधि लिखते है—प्रथम पारा शोधन की विधि—रूमी शिगरफ १ पाव लेकर निम्बू के रस मे खरल करे, बाद मे टिकिया बनाकर एक हाडी मे रख हांडी के मुख पर उसी प्रकार की दूसरी हांडी का मुख जोड कर कपड-मिट्टी कर दोनो के मुँह बन्द कर दे, पश्चात् चूल्हे पर रख ४ पहर की आँच दे और ऊपर की हंडिया को गीले कपड़े से ठंडा करते रहे, इस प्रकार शिगरफ का सारा पारा उड़ कर ऊपर की हाडी मे जा लगेगा, हाडी बिलकुल ठडी हो जावे तो दोनो के मुँह खोल ले और ऊपर की हाडी मे लगे हुए पारे को रुई, ऊन अथवा कपड़े से सम्भाल कर इकट्ठा कर ले। दूसरी विधि—शुद्ध शिगरफ ५-५ तोले की टिकिया बना ले और एक एक टिकिया को पाव भर पुराने कपड़े के टुकडो ( लीरो ) मे लपेट कर गोला बना ले, फिर उस गोले को लोहे की परात मे रख दे और उस गोले के नीचे ऊपर सुलगते हुए कोयले रख दे, जब धुआ निकलने लगे तो उस गोले पर चौड़े मुँह वाला मिट्टी का घड़ा ( चाटी ) औधा टिका दे, ध्यान रहे कि घड़े का मुँह परात से १-१ अंगुल ऊंचा रहे ताकि उसमे से धुआ निकलता रहे, इसके लिये घडे के मुँह के नीचे छोटे छोटे पक्की मिट्टी के टुकड़े अथवा कोयले टिका सकते हैं, यह ऐसे स्थान मे रखे जहा हवा न पड़ती हो, जब जल कर बिलकुल ठंडा हो जावे तो आहिस्ता से उठा कर घडे मे से पूर्व विधि से पारे को खुर्च ले, और उस जली हुई राख को भी अच्छी तरह से झाड कर सारा पारा निकाल ले, इस विधि को कंदुकयन्त्र कहते हैं। इस विधि से लगभग

१ पाव मे से १६-१७ तोले पारा निकल आता है। यह पारा शुद्ध होता है, पर तो भी इसे अच्छी तरह शुद्ध करने के लिये १ महीना भर लहसन के रस मे खरल कर लेना चाहिये, इस प्रकार यह पारा अत्यन्त फलदायक हो जाता है ।

२—अथ गंधक-शोधन विधि—आमलासार गन्धक १ पाव भर ले कर दरडा कर लें, फिर एक हाडी मे सेर भर दूध और छटांक भर घी डाल मुख पर कपडा बाध दें और उस पर गधक बिछा कर ऊपर से एक प्याला हाडी के मुख के बराबर अथवा हाडी का ढकना उलटा कर टिका दें, दोनों के जोड़ को मिट्टी से बंद कर दे, पश्चात् हाडी को गले तक जमीन मे गाड़ दें, और ऊपर से १५-२० पाथियो की आग दे दें, इस प्रकार गंधक पिघल कर हांडी में पहुँच जायगा, ठंडा होने पर गंधक को निकाल गरम जल से खूब धो ले, यह शुद्ध गन्धक है। दूसरी विधि-एक लोहे के कडछे मे पाव भर गन्धक और छटाक भर घी डाल आग पर पिघलाएँ जब पिघल जावे तो सेर भर दूध मे छान ले, इसी प्रकार १ वार-३ वार-७ वार भी शुद्ध कर सकते हैं।

३—अथ वच्छनाग-विष-शोधन विधि-बाजार मे वच्छनाग विष दो प्रकार का मिलता है, १ मिट्ठा तेलिया जो वनाया हुआ होता है, दूसरा कोरा जो भी मिले उसे लेकर छोटे छोटे टुकड़े कर गोमूत्र मे भिगो दें, रोज नया गोमूत्र डालें तीन दिन वा सात दिन के बाद निकाल ले और दूध मे उबाल कर सुखा ले और जरूरत पर काम लावे। इसको वत्सनाभ, सिंगिया, तेलिया, लुग, और मोहरा भी कहते हैं।

४—कज्जली—जिस नुसखे मे पारा और गन्धक दोनो पड़ें तो पहले दोनो को खूब खरल करना चाहिये, जब काजल के समान काली और अत्यन्त बारीक हो जावे, पारे की चमक जरा भी मालूम न हो तो समझो कि कज्जली बन गई, सब नुसखो मे प्रथम कज्जली बना कर अन्य द्रव्य मिलावें, जहाँ केवल पारा ही हो गन्धक न हो वहा पारे के स्थान पर 'रस सिन्दूर' डालना चाहिये, उसकी विधि आगे बताएँगे।

## अजीर्ण-ज्वर लक्षण

उदर मे पीड़ा होना, उलटी होना, दस्त होना, ज्वर होना, ये अजीर्ण

ज्वर के लक्षण हैं ।

## अजीर्ण-ज्वर चिकित्सा

हरड़, अजवायन, सौंचर नमक समभाग चूर्ण कर गरम पानी से ६ माशा खावे तो अजीर्णज्वर दूर होता है ।

## अजीर्ण-ज्वर में अञ्जन

सिरस के बीज, सैंधा नमक, काली मिरच, हलदी, मघपीपर, सब को गोमूत्र मे पीस कर आँखों मे अंजन करने से अजीर्ज्वर, तन्द्रा, वेहोशी, त्रिदोषज्वर दूर होते हैं ।

## गुटिका

सौंचर नमक, लाहौरी नमक, हरड़, पिप्पला मूल, मघ, मिरच, सोठ सब का चूर्ण कर छाछ मे भिगोवे, पीछे धूप मे सुखा कर घोट कर ३-३ माशे की गुटिका वना ले, वल के अनुसार एक या दो गुटिका गरम पानी से खाने पर अजीर्ण ज्वर, खांसी, श्वास, वलगम सब नष्ट हो जाते हैं, भूख वहुत लगती है, यह अत्यन्त सुखदाई गुटिका है ।

## पुनः

सोठ, मिरच, पीपल, सौंचल नमक, हरड़, नीम के पत्र, अजवायन और लौंग सब समभाग ले, और सब को पीस कर दुगुने निम्बु के रस मे खरल करे, १ माशे से ३ माशे तक गरम पानी से खावे तो सब प्रकार का अजीर्ण-ज्वर तत्काल दूर हो, और भूख वहुत लगे ।

## पुनः

सोठ, मघपीपल, हरड़, त्रिवि इनके चूर्ण को निम्बु के रस मे खरल कर सुखा ले, ३ माशे से ६ माशे तक गरम पानी से दे तो तत्काल अजीर्ण ज्वर दूर होता है । भूख अधिक लगती है ।

## पुनः

सौंचर नमक, हरड़, कचूर, अजमोद, सब का चूर्ण कर ४ माशे गरम पानी से ले तो अजीर्ण ज्वर दूर होता है ।

### अन्य

आमला, हरड, मघपीपल, सोंचलनमक, चित्रा सब को चूर्ण कर ४-५ माशे गरम पानी से फाकने पर अजीर्णज्वर दूर होता है।

### अन्य

४ माशे हलदी को तवे पर भूनकर गोमूत्र के साथ लेने से सब प्रकार का अजीर्णज्वर दूर होता है।

### मर्दन

सरसो के तेल को गरम कर शरीर पर मालिश करने से सब प्रकार का अजीर्णज्वर दूर होता है। इसमें यह विशेष गुण है।

### मल-ज्वर लक्षण

गला सूखना, भ्रम होना, दाह होना, रोगी का बकवास करना, सिर में दर्द होना, ऐसे लक्षण हो तो मलज्वर जानना चाहिये और सोच-समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये।

### मल-ज्वर उपाय

त्रिवि और हरड इन का क्वाथ कर इसमे १ तोला अमलतास का गूदा और ३ माशे मुसब्बर एलुआ मिलाकर पिलाने से दस्त साफ आता है और मलज्वर दूर होता है। यह बात भेडसंहिता मे लिखी है।

### अन्य

दोनो जीरा, चित्रा, हरड, अजवाइन, निम्बू के रस में खरल कर के ३ माशे गरम जल से दे तो क्षण मे मलज्वर दूर होता है।

### लेप

हरड, मुसब्बर एलुआ, चिरायता, मघपीपल और कौड़ इन सब को पानी अथवा गोमूत्र मे पीसकर गरम कर पेट पर लेप करे तो मलज्वर दूर होत है। इस के लेप से या तो मल अन्दर ही भस्म हो जाता है अथवा दस्त आकर बाहर निकल जाता है। यह विधि महर्षि हारीत ने अपनी हारीत संहिता मे लिखी है और उसी को मेघ कवि ने यहाँ लिखा है।

### पुनः

पिप्पलामूल, नागरमोथा, कौड़, हरड़, इनका क्वाथ कर उसमे १ तोला अमलतास का गूदा मिला कर पिलाने से सब प्रकार का अजीर्णज्वर दूर होता है ।

### दृष्टि-ज्वर लक्षण

शरीर की रङ्गत का पीला पड जाना,नेत्रो का नीले हो जाना,पेट मे दर्द होना, वारवार मूर्छा आना, जम्भाइयाँ आना, आँखो मे जलन होना, ये दृष्टिज्वर ( नजर लग जाने ) के लक्षण हैं ।

### दृष्टि-ज्वर चिकित्सा

हींग, काली मिर्च, सोठ और चिरायता सब को पीस कर चूर्ण करे, २-३ माशा चूर्ण पानी के साथ खाने से दृष्टिज्वर दूर होता है ।

### अन्य उपाय

सोठ, सौंचर नमक, पिप्पलामूल, लाहौरी नमक, अजवायन, अजमोद, चित्रा, आमला,पोहकरमूल, शतावरी, छोटी इलायची इन सब का चूर्ण कर ६ माशा गरम पानी के साथ खाने से पेट दर्द तथा दृष्टिज्वर आदि दूर होते हैं ।

### काल-ज्वर लक्षण

वायु का अत्यन्त वलवान् हो जाना, शरीर से ठण्डा पसीना वहुत छूटना, हाथ-पाओ ठण्डे पड़ जाना, रोगी का वेहोश हो जाना, दाँतो का काले पड़ जाना और नाक से ठण्डी साँस आना ये कालज्वर के लक्षण होते हैं । मेघ कवि कहते हैं कि रोगो के तो इलाज वहुत होते हैं, परन्तु काल का कोई इलाज नहीं, तो भी जब तक शरीर मे श्वास हो तव तक चिकित्सा करनी चाहिये ।

### काल-ज्वर का उपाय

राम नाम की दवाई जो साधु महात्मा वैद्य रोगी को देता है तो रोग घट जाता है और रोगी चेतन हो जाता है । यदि रोगी मर भी जावे तो स्वर्ग को जाता है ।

### अथवा

सोंठ और भाग दोनो को पीसकर हाथ-पाओं की तलियों को मलना चाहिये, इससे जिस रोगी मे श्वास होगा वह रोगी अवश्य होश मे आ जायगा और वच जायगा।

## लघु सूचिकाभरण रस

शुद्ध विष (मीठा तेलिया) १ पल, शुद्ध पारा १ टङ्क दोनो को अच्छी तरह खरल करे, फिर चीनी के प्यालो मे बन्द कर दोपहर मीठी मीठी आँच पर जौहर उड़ा ले, स्वयं ठण्डा होने पर उतार ले और ऊपर के प्याले मे धुएँ के रङ्ग के लगे हुए जौहर को खुरच ले और सम्भाल कर शीशी मे रख ले, एक चावल प्रमाण पान के रस मे मिला रोगी को खिला दे और नश्तर से तालू अथवा मस्तक को खुरच (पछना लगा) कर चावल प्रमाण दवाई अंगुली से मसल दे, इस प्रकार करने से यदि प्रभु की कृपा हो तो कालज्वर तत्काल नष्ट हो जाता है। शार्ङ्गधर कहते हैं कि इस योग से तेरह सन्निपात दूर होते हैं। यह दवाई सन्निपात दूर करने मे अत्यन्त फलदाई है।

## शीत-ज्वर लक्षण

अग्नि का मंद पड़ जाना, मुख मे झाग होना, बुखार होना, उलटी होना, पसीना आना, नींद आना, वकवास करना, शीत लगना, और कप होना ये शीतज्वर के लक्षण हैं।

## शीत-ज्वर की चिकित्सा

१ माशा नसादर लेकर पान के पत्ते मे रख कर खा ले तो चढ़ता हुआ शीतज्वर रुक जाता है।

### अथवा

गूमा (द्रोणपुष्पी) एक बरसाती बूटी होती है उसे भेडा भी कहते हैं उस के सिर पर एक छत्र सा लगता है जिस पर सफेद सफेद फूल लगते हैं, उनको बिस्तर पर विखेर कर सोने से शीतज्वर रुक जाता है।

## गुलाबी ज्वरांकुश

दूध मे शुद्ध श्वेत शंखिया, शुद्ध शिगरफ दोनो सम भाग ले पानी से पीस टिकिया बना तवे पर रख धीमी धीमी आँच पर पकाएँ, जब टिकिया फूलने लगे तो उठा ले और पीस कर शीशी मे भर रखे, इसकी एक चावल मात्रा बताशे मे रख रोगी को खिला दे, दूध भात पथ्य, इस के सेवन से शीतज्वर दूर हो जाता है, और इस प्रकार अन्य भी सम्पूर्ण ज्वरो को दूर करता है। मेघ कहते हैं कि यह ज्वराकुश बहुत गुणकारी है।

## शीत-ज्वर में अञ्जन

काली मिर्च १ भाग, सैधा नमक २ भाग, धमाहा ३ भाग, सब को पानी मे पीस कर आख मे अंजन करने से शीतज्वर नष्ट हो जाता है, मेघ कवि ने मेघविनोद मे विचार कर ऐसा लिखा है।

## शीतारि रस ( वैद्यकुतूहल से )

सुहागा फूला हुआ १ टंक, शुद्ध गन्धक १ टंक, मघ पीपल १ टंक, जमालगोटा शुद्ध १ टंक सब को जम्भीरी के रस मे खरल कर दो दो रत्ती की गोलियां बना निम्बु के शर्बत ( शिकञ्जवीन ) के साथ खाने से शीतज्वर दूर होता है। इस दवाई से दो तीन दस्त आजायेगे, यदि कुछ गरमी मालूम हो तो गुलाब का अर्क पीना चाहिये। पथ्य दही का पनीर और चावल। वैद्यकुतूहल मे इसका वर्णन किया है।

नोट—इस औषध मे शुद्ध जमालगोटा भी पड़ता है इस लिये इसको शुद्ध करने का तरीका लिखते हैं, जमालगोटे के बीज लाकर उनका छिलका उतार ले, और गिरी की पोटली बाधे, भैस के गोबर को पानी मे घोल हंडिया मे पोटली को लकडी मे फंसाकर उसमे लटका दे और एक पहर तक उबाले, बाद पोटली को निकाल गरम पानी से धोकर गिरियो के दो दो दल कर अन्दर की पत्ती निकाल दूर करे, फिर पोटली बाध एक पहर दूध मे उबाले पश्चात् गरम पानी से धोकर खरल मे पीसे, बारीक करके नये खपरैल अथवा स्याहीचूस कागज पर बिछा कर धूप मे पहर भर रखे जब तेल सोखता हो जाय तो उठा कर निम्बु के रस मे खरल कर सुखा कर रख छोड़े, जरूरत

के समय काम मे लावे।

## रक्त-ज्वर लक्षण

रोगी का ऊँचे श्वास लेना, वमन होना, शरीर दुखना, नेत्र लाल होना, मुख और नाक द्वारा खून आना, सारा सरीर लाल वर्ण का होना, ज्वर तेज होना, तृष्णा, मूर्छा और अफारा होना ये रक्तज्वर के लक्षण हैं।

## रक्त-ज्वर चिकित्सा

सोंठ ३ माशे, करीर की कोपल १ तोला दोनो को पीस शहद मिला कर चटाने से रक्तज्वर मिट जाता है।

## अन्य उपाय

पट्टी घास की जड, (खस) पद्माख, नेत्रवाला, अथवा हलदी, फूल प्रियंगू, चन्दन, कायफल, तज, धावे के फूल सब को बारीक पीस कर सोलह गुणा मिश्री मिला ( गुलाब )जल से दो टङ्क देने पर रक्तज्वर दूर होता है।

## अन्य उपाय

मुनक्का, अरूसा, हरड, बहेडा, आमला, नेत्रवाला, अनारदाना, इनका चूर्ण कर एक टंक प्रमाण बकरी के दूध के साथ पीने से प्रभु की कृपा हो तो रक्तज्वर,पित्तज्वर और दाहज्वर शान्त होते हैं।

## अवलेह ( चटनी )

खाड १६ टङ्क, इलायची १ टङ्क, जीरा सफेद आठ माशे, मुलट्ठी आठ माशे, सफेद चन्दन चार टङ्क सब कूट कर गोघृत और मधु मिला कर चाटने से रक्तज्वर दूर होता है।श्वास, खासी, पित्तरोग, क्षयज्वर, दाह, शूल आदि सब रोग नष्ट हो जाते हैं, सूखी जिह्वा सरस हो जाती है, भूख लगती है, यह योगचिन्तामणि का योग अत्यन्त गुणकारी है।

नोट—शहद और घी को बराबर भाग मे नहीं लेना चाहिये, घी से शहद आधा लेना चाहिये, बराबर लेने से विष का असर करते हैं।

## श्रीखण्डादि चूर्ण

सोंठ, रक्त चन्दन, तमालपत्र, श्वेत चन्दन, नेत्रवाला, काली मिर्च,

लौंग, मघ पीपल, तज, नागकेसर, हलदी, मुलट्ठी, मुनक्का, छुहारा, सफेद जीरा धनिया, जायफल, खसखास, पिप्पलामूल सब समान ले कूट छान कर इस मे मुलतानी मिश्री सोलह गुणा मिला १ टङ्क परिमाण मे खाकर ऊपर से ताजा पानी पीना चाहिये, इसके सेवन से रक्तज्वर, श्वास, कास, क्षय, विषमज्वर, अतिसार प्रमेह, वीर्य-नाश, भगंदर, शोप रोग, नक्सीर, ववासीर, दाह आदि रोग दूर होते हैं, वल-पुष्टि होती है, यह योगचिंतामणि मे लिखा है।

## खेद-ज्वर के लक्षण

जंभाइया वहुत आना, जोड़ो मे पीडा होना, नींद, आलस्य और थकावट अधिक होना, हड्डियो मे पीड़ा होना, ये खेदज्वर के लक्षण हैं।

## खेद-ज्वर चिकित्सा

कायफल को वारीक पीस कर मीठे तेल मे मिला कर सारे शरीर मे मालिश करने से खेदज्वर दूर होता है। वृंद कवि ऐसा कहते हैं।

अथवा—मीठे तेल की मालिश कर पश्चात् गरम पानी से स्नान कर लेने पर खेदज्वर मिट जाता है, काल-ज्ञानियो के ये वचन हैं।

## लाक्षादि तैल

सुगंधवाला मुलट्ठी, नागरमोथा, चंदन, खस, पद्माख, चीड, कचूर, इलायची, देवदार, धावे के फूल, नागकेशर, हलदी, कोड, लौंग, मजीठ, कंकोल, अनन्तमूल काला, अगर, तज, नागकेशर, तमालपत्र, नीलोफर, पापडा, राल, छार छरीला, सब बराबर लेकर पानी मे पीस गोला बना ले, इन दवाओं से चौगुना तिल का तेल, तेल से चौगुणा लाख का रस सब को इकट्ठा कर मंद आच पर पकाएं, जब तेलमात्र वाकी रहे तो उतार छान ले, यह लाक्षादि तैल है इसकी मालिश करने से सब प्रकार के ज्वर खेद, अंगभंग, विषमज्वर, मिरगी, वात, पित्त, श्वास, कास, क्षय रोग सब दूर होते हैं, यह लाक्षादि तैल अत्यन्त गुणकारी है।

नोट—जब कोई तेल या घृत बनाना हो तो वहा तीन ही चीजे मुख्य होती हैं और उनका ही विशेष ध्यान रखना चाहिये, १—तैल या घृत, २—पानी, रस, काढ़ा अथवा और कोई पतली चीज, ३—दवाइया जिनको कूट कर

मिलाया जाता है। पहली वस्तु को स्नेह कहते है, दूसरी को द्रव कहते हैं और तीसरी वस्तु को कल्क कहते है, इनकी परिभाषा नीचे लिखे अनुसार होती है, यदि एक सेर स्नेह (घी तेल) हो तो चार सेर द्रव (काढा या स्वरस आदि) होता है और १ पाव कल्क (कुटी हुई दवाइया) होती हैं। यदि काढा बनाना हो तो १ भाग चीज को यदि कठिन हो (जैसे हरड) तो १६ गुना पानी मे, यदि मध्य हो तो ८ गुना पानी मे, यदि मृदु हो तो चार गुना पानी मे काढा करे, जब एक भाग रह जावे तो उतार कर मल छान ले। लाक्षादि तैल मे ४ सेर कची लाख लेकर १६ सेर पानी मे उबाले, (उबालते समय इसमे थोड़े बेरी के पत्ते भी डाल लें) जब ४ सेर रह जावे तो उतार ले, और छान कर इसमे एक सेर तिल तेल मिलाएं और एक पाव भर ऊपर की चीजों का कल्क मिला कर पकाएं, तैल-पाक की यह पहचान है कि तेल मे पानी न रहे, कल्क की बत्ती सी बन जावे, आग मे डालने से चिड-चिड की आवाज न आए, और झाग आ जावे तो जानो तैल सिद्ध हो गया, घृत मे झाग नही आती यही भेद है।

नोट—अन्य ग्रंथो मे लाक्षादि तैल की विधि अन्य प्रकार से लिखी है।

## मानस-ज्वर लक्षण

जिस ज्वर मे क्रोध होजाए, लोभ होजाए, विषाद (गम-अफसोस) होजाए, उस ज्वर को शार्ङ्गधर मानसज्वर कहते हैं।

## मानस-ज्वर का उपाय

मीठी-मीठी बातो से रोगी के मन को संतोष देना चाहिये, प्रसन्न रखना चाहिये ताम्बूल (पान) और इत्र तेल फुलैल, दान मानादि से रोगी को प्रफुल्ल रखना चाहिये।

## अन्य औषध

चन्दन, खस, धनिया, नागरमोथा, नेत्रवाला इनका काढा कर मिश्री मिला पिलाने से मानसज्वर शान्त होता है।

## भूत-ज्वर लक्षण

भूतज्वर मे बेचैनी अधिक होती है, मुँह सूखता है, प्यास अधिक

होती है, कंप होता है, डकार आते हैं, हृदय मे पीड़ा होती है, पेट मे शूल होता है,मूर्छा,ताप,दाह,आदि होते हैं, मुख बेरस होता है,अंग टूटते हैं,रोगी बेबस होकर बकवास करता है, ये सब भूतज्वर के लक्षण हैं ।

## भूत-ज्वर की धूप

मोर के पंख, बंसलोचन कंडियारी, बिलगिरि, थोहर, गुग्गल, साप की केचुली, भिलावे, नील, चूहा की मेगनी, केश, जौ के तुष (कीस), हींग, देवदार, चंडाल के केश, संभालू के पत्ते, कपास के बीज सबको कूट पीस कर अग्नि पर रख कर रोगी को धूप देना चाहिये। इस धूप से भूतज्वर नष्ट होता है। शरीर सुखी होता है, जिन्न, भूत, प्रेत, खवीस, डायन, चुडैल, आदि सब भाग जाते हैं। मेघ कवि ने अपने अनुभव से ऐसा लिखा है।

## काढ़ा ( सारोद्धार से)

बिजोरे ( किब ) की जड़, अडूसे की जड़, लहसन, नीम के पत्ते, अजवायन, खस, इसायची, कंकोल, मुश्कवाला इनका काढ़ा (आठवा हिस्सा बाकी ) पीने से नेतकी, पूजा और तिजारी आदि सब ज्वर दूर होते है, सारोद्धार मे ऐसा लिखा है।

## काम-ज्वर लक्षण

मुंह कडवा होना, चक्कर आना, सरदी लगना, कंप होना, रोमाच होना, सिर दर्द होना, गला सूखना, कास होना, दाह होना, निद्रा, बुद्धि, और लज्जा इनका नाश होना, हृदय मे पीडा होना, अफारा होना, और लम्बे लम्बे श्वास लेना और चित्त का स्थिर न रहना,ये कामज्वर के लक्षण हैं।

## काम-ज्वर का उपाय ( वैद्यजीवन से )

श्यामा स्त्री से मैथुन करे, शरीर पर चन्दन का लेप करे, केले की सेज पर विश्राम करे तो कामज्वर शान्त होता है ।

नोट—श्यामा स्त्री का लक्षण-शीतकाल मे जिसका शरीरस्पर्श उष्ण हो, और उष्णकाल मे जिसका शरीरस्पर्श शीतल हो, और जो स्त्री स ऋतुओं मे सुभग और सुखदायिनी हो उसे श्यामा कहते हैं।

## पांच विषम ज्वरों के निदान

कच्चे ज्वर मे दवाई देने से अथवा वमन-विरेचन देने से अथवा ज्वरमुक्त रोगी के कुपथ्यादि करने से विषमज्वर हो जाता है, यह माधव का मत है ।

## विषम-ज्वर के लक्षण

जो ज्वर अनियत समय मे हो, कभी सरदी से और कभी गरमी से कभी अधिक और कभी कम हो उसे विषमज्वर कहते हैं ।

## पांच विषम-ज्वरों के नाम

१ सन्तत ज्वर, २ सतत ज्वर, ३ अन्येद्युष्क ज्वर, ४ तृतीयक ज्वर, ५ चतुर्थक ज्वर । जो रोगी ज्वर की हालत मे कुपथ्य करे उसे विषमज्वर हो जाता है ।

## सन्तत ज्वर लक्षण

जो ज्वर लगातार सात दिन दस दिन अथवा बारह दिन तक रस धातु मे रहे उसे सन्ततज्वर कहते हैं, यह ज्वर मर्यादा पर एक बार उतर कर फिर भी हो जाता है इसलिये इसे विषमज्वरो मे माना है ।

इस ज्वर मे सात, दस, और बारह दिन की मर्यादा दोष ( वात, पित्त कफ ) मर्यादा क्रमानुसार रखी है, इस की १२ दिन की मर्यादा मे तीन दोष, सात धातु और तीन ( मल, मूत्र, पसीना ) मल, ये १३ भी विकृत हो जाते हैं,अत. ज्वर एक दिन एक स्थान मे रहता है और तेरहवे दिन उतर जाता है, यह ज्वर आरम्भ से ही कष्टसाध्य सा होता है, अत. दोबारा आक्रमण भी कर देता है जो कि बडा भयानक होता है, इसमे धातुपाक का प्रतिक्षण सशय रहता है, धातुपाक होने से रोगी कष्टसाध्य हो जाता है, यह रसगत होता है इसलिये इसमे आतें खराब हो जाती हैं, और सन्निपात के लक्षण प्रकट हो जाते हैं, और अन्त मे रोगी को काले दस्त लग जाते हैं, अन्य सन्निपात-लक्षणो से युक्त होकर रोगी मर जाता है । इस ज्वर को कोई चिकित्सक मियादी बुखार, तप मुहरका, मोतीझरा, टाइफाइड और तोरकी भी कहते हैं ।

दोबारा आक्रमण करने पर इसकी अवस्था बडी भयानक हो जाती है और उस समय यदि ज्वर सात दिन का हो तो चौदह दिन लेता है, दस दिन का बीस दिन और बारह दिन का तेइस चौबीस दिन लेता है, यदि उस समय भी रोगी की औषध पथ्यादि द्वारा विशेष व्यवस्था न की जावे तो यह ज्वर दीर्घकाल ( ४२, ५२, ६२, ८२ अथवा इससे भी अधिक दिन ) तक चलता रहता है, और अन्त मे आन्त्रक्षय हो जाने पर रोगी यक्ष्मा से मर जाता है ।

## सन्तत-ज्वर चिकित्सा ( वीरसिंहावलोकन से )

मुलट्ठी, पंडोल पत्र, कौड, आम की गुठली, हरड़ सब दो तोले, जल ३२ तोले, शेष ८ तोले, काढ़ा पीने से सन्ततज्वर दूर होता है ।

## अथवा

फटकरी का फूल ३ रत्ती, ३ नग लौंग के साथ मिलाकर खाने से प्रभु की कृपा हो तो सन्ततज्वर दूर होता है ।

## सतत ज्वर लक्षण

जो ज्वर सुबह चढ़ कर शाम को उतर जावे और रात को चढ़ कर सुबह उतर जावे, इस प्रकार दिनरात मे दो वार चढ़े और रक्त धातु मे रहने वाला हो, उसे सततज्वर कहते हैं ।

## सतत-ज्वर चिकित्सा

पाढ, कौड, पण्डोल के पत्ते, सारिवा, नागरमोथा, सब मिलाकर दो तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले, काढ़ा पीने से सततज्वर नष्ट होता है ।

## अन्येद्यु-ज्वर लक्षण (माधव से)

जो ज्वर मास धातु मे वास करे, दिनरात मे एक वार चढ़े उसे अन्येद्यु अथवा 'नेतकी' ज्वर कहते हैं ।

## उपाय

गिलोय, नागरमोथा, आमला, सब २ तोले, जल ३२ तोले, शेष ८

तोले काढ़ा पीने से अन्येद्युज्वर दूर होता है।

## तृतीयक-ज्वर लक्षण

तृतीयकज्वर मेद धातु मे रहता है, और तीसरे दिन आता है। यह ज्वर तीन प्रकार का होता है, १ यदि तृतीयकज्वर मे कमर मे अधिक पीडा हो तो कफ-पित्त का कोप जानना, यदि पीठ मे अधिक पीडा हो तो वात-कफ का कोप जानना, यदि शिर मे अधिक पीड़ा हो तो वात-पित्त का प्रकोप जानना चाहिये। मेघ कवि ने माधव के मतानुसार ऐसा लिखा है। इस ज्वर को तिजारी, तैया, तरयानक आदि नाम से भी पुकारते हैं।

## तृतीयक ज्वर चिकित्सा (शार्ङ्गधर से)

पापड़ा, धनिया, गिलोय, विलगिर, खस, कुडा छाल, नागरमोथा, रक्तचन्दन, पतीस, नेत्रबाला, सोठ, इन्द्रजौ, चिरायता, इनका काढा बना-कर प्रातः-सायं शहद मिला पीने से तृतीयकज्वर शान्त होता है। रक्त-पित्तज्वर, प्यास, अतिसार, दाह आदि उपद्रव भी दूर होते हैं।

### अन्य

रक्तचन्दन, नागरमोथा, गिलोय, खस, धनिया, सोठ, नेत्रबाला, इनका काढ़ा बना कर पीने से तृतीयकज्वर दूर होता है।

### अन्य उपाय

सोठ, नागरमोथा, मुनक्का, चिरायता, गिलोय, हरड़, बहेडा, आमला, नीम के पत्ते, इन्द्रजौ, पटोलपत्र, इनका काढा पीने से तृतीयकज्वर दूर होता है।

### अन्य उपाय

हरड, बहेड़ा, आमला, मघ, काली मिर्च, नीम के पत्ते, मुनक्का, नागर-मोथा, पण्डोलपत्र, इनका काढा बना कर मिश्री मिला पीने से तृतीयकज्वर दूर होता है।

### अन्य काढ़ा

रक्तचन्दन, मघपीपल, धनिया, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोठ, इनका

काढा खाड मिला पीने से तृतीयकज्वर दूर होता है ।

## चतुर्थक-ज्वर लक्षण

चतुर्थकज्वर ( चौथिया ) अस्थि ( हड्डी ) और मज्जा में रहता है, और चौथे दिन ज्वर चढ़ता है, यह दो प्रकार का होता है, १ चतुर्थक, २ चतुर्थक-विपर्यय । चतुर्थकविपर्यय मे ज्वर बीच के दो दिन चढ़ा रहता है और पहले और चौथे दिन उतरा रहता है । अर्थात् ४ दिन मे २ दिन ज्वर रहता है और दो दिन नहीं रहता । ज्वर के समय यदि टाँगों में बहुत पीड़ा हो तो श्लैष्मिक (बलगमी) जानना, यदि सिर दर्द अधिक हो तो वायु का जानना और यदि पीठ कमर आदि में पीड़ा हो तो पित्त का जानना चाहिये । जिस मे वात-पित्त तो सम हो और कफ कमजोर हो उसे दिन के समय ही ज्वर चढ़ता है और जिस रोगी मे वात-कफ सम हो और पित्त क्षीण ( कमजोर ) हो जावे उस रोगी को रात के समय ज्वर चढ़ता है ।

## चतुर्थक-ज्वर चिकित्सा

चूना १ पल, हरताल वर्की ( शुद्ध ) दो कर्ष, दोनों को घीकुआर के रस में पीसकर चने बराबर गोली बना कर रोगी को जल के साथ खिला दें, पथ्य घी के साथ रोटी खावे, इस दवाई के खाने से तृतीयक और चतुर्थक ज्वर अवश्य दूर हो जाते हैं, मेघ कवि का यह अनुभूत योग है ।

## अन्य उपाय

सोंठ, नागरमोथा, कौड़, चिरायता, रक्त चन्दन, गिलोय, आमला, इनका क्वाथ कर पीने से चतुर्थकज्वर दूर होता है ।

## पुनः काढ़ा

देवदारु, हरड़, शालपर्णी, सोंठ, पंटोल पत्र, नेत्रवाला कुड़ा की छाल इनका विधिपूर्वक क्वाथ कर मिश्री मिला पीने से चौथिया बुखार दूर होता है । भूख लगती है, श्वास रोग दूर होता है ।

## अन्य ( वैद्यजीवन से )

बहुत बढ़िया (हीरा) हींग को पुराने घी मे मिलाकर नसवार देने से

चौथिया बुखार दूर होकर सारा शरीर सुखी होता है।

### धूप

नीला कपडा, उल्लू का पंख, गुग्गुल इन सब को मिला कर धूप देने से प्रभु की कृपा हो तो चौथिया ज्वर दूर होता है।

### पुनः नसवार ( वैद्यजीवन से )

अगस्तिया के पत्र का रस निचोड कर नसवार देने से चौथिया ज्वर दूर होता है, जैसे प्रभु का स्मरण करने से पाप दूर होते हैं।

### सब ज्वरों पर सुदर्शन चूर्ण

हलदी, दारु हलदी, छोटी कंडियारी, बडी कंडियारी, हरड, बहेड़ा, आमला, मघ, मिर्च, सोंठ, गिलोय, कोड, कचूर, पापड़ा, मूर्वा, पिपलामूल, अडूसा ( बहेकड ), नागरमोथा, खरैटी, त्रायमाण, नीम के पत्ते, पोहकरमूल, कुडासक, वच, मुलट्ठी, भडिंगी, इन्द्रजौ, तज, सफेद चन्दन, सुहाजने के बीज, अजवायन, फटकरी फूल, अतीस, चव, पद्माख, तगर, पृष्टपर्णी शालपर्णी, खस, वायविडंग, देवदारु, तेजपत्र, पंडोल पत्र, चित्रा, कौलडोडा ( कमल गट्टा ), जीवक, ऋषभक, काकोली, जावित्री, तालीस पत्र, नेत्रवाला, वंशलोचन, लौंग सब बराबर बराबर ले और सब दवाइयो से आधा चिरायता, सब को कूट छान कर चूर्ण बना ले, इस का नाम सुदर्शन चूर्ण है, २-३ माशे तक गरम पानी के साथ इस चूर्ण को खाने से सब प्रकार के ज्वर, सन्निपात, त्रिदोष, भ्रम, जीर्ण ज्वर, ( पुराना तप ) तन्द्रा, प्यास, खासी, हृदय में पीडा, कामला, हिचकी, श्वास रोग, वायु के रोग दूर होते हैं। इसी प्रकार यह सुदर्शनचूर्ण अन्य भी कई प्रकार के रोगो को दूर करता है।

### बत्तीसाचूर्ण सर्व-ज्वर पर ( वैद्यकुतूहल से )

सोठ, कंडियारी, पोहरमूल, कोड, कचूर, काकडासिंगी, शालपर्णी, मुलट्ठी, गिलोय, मघ, कालीमिर्च, कलौंजी, पापड़ा, तेजपत्र, अगर, धमासा, कुडासक, नेत्रवाला, नागरमोथा, अच्छे बढ़िया आमले, देवदार, पंडोलपत्र, पतीस, मूर्वा, चित्रा, हरड़, पिप्पलामूल, अजवायन, सब बराबर और सब से आधा चिरायता, लेकर बारीक कपड़छान चूर्ण कर ३ माशे

से ६ माशे तक गरम पानी से सेवन कराने पर सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं, मोह, तंद्रा, पाण्डु-रोग, हृदय-रोग, दाह, कामला, प्यास, सन्निपात, भ्रमरोग, श्वास, कास, चौरासी वायुरोग, क्षण मे दूर होते हैं।

## सब ज्वरों पर षोडशाङ्ग चूर्ण ( वैद्यकुतूहल से )

नागरमोथां, दन्ती जड, हरड, सैंधा नमक, पिप्पला मूल, कौड, कंडियारी छोटी, कंडियारी वडी, सोंठ, मघां, कचूर, पित्त पापड़ा, पंडोल पत्र, गिलोय, पोहकर मूल, चिरायता, इन सोलह चीजो को लेकर चूर्ण बना कर ३ माशे से ६ माशे तक गरम पानी से सेवन करने पर नेतकी, तैया, चौथिया, अथवा पाचवे, छठे, आठवें दिन आने वाला, महीने पीछे आने वाला ज्वर, पांच प्रकार के विषम ज्वर, जीर्ण ( पुराना ) ज्वर, ग्रहणी, शोथ, अतिसार, शूल, सिर दर्द, कास, श्वास, आदि और भी सब प्रकार के रोग नष्ट होते हैं ।

## सब ज्वरों पर निम्बादि चूर्ण

नीम के पत्ते १२ टङ्क, सोंठ, मघा, काली मिर्च, हरड, बहेड़ा, आमला सब एक एक टङ्क, सैंधा नमक, सौंचल नमक, बिड नमक, सज्जीखार, सब दो-दो टङ्क, अजवायन ४ टङ्क, सब को बारीक कपड छान कर ३ माशे से ६ माशे तक गरम पानी से दे तो नेतकी तैया चौथिया आदि विषमज्वर दूर होते हैं, यह निम्बादि चूर्ण अति गुणकारी है।

## सब ज्वरों पर रस

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग ( कज्जली ), शुद्ध विष ( मीठा तेलिया ) ३ भाग, काली मिर्च ३ भाग, अभ्रक भस्म ( कुश्ता अभरक ) ४ भाग, ताम्र भस्म ( तामेश्वर ) ३ भाग, वालछड़ १ भाग, पारे गन्धक की कज्जली बना कर पीछे सब वस्तुएँ मिला निम्बु के रस मे दो पहर तक मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोली बना लें, १ गोली शहद के साथ खाने से सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

नोट—यहां अभ्रक भस्म, और ताम्र भस्म का नाम आया है, भस्मो के लिये ( रसेन्द्रसारसंग्रह ) पुस्तक देखना चाहिये, हम भी इस पुस्तक

के अन्त मे भस्मविधिया संक्षेप से लिख देगे।

## नित्य-ज्वर पर ज्वरांकुश ( बिंदुसार से )

कली चूना १० टङ्क, हरताल वर्की शुद्ध १० टङ्क दोनो को घीकुआर के रस मे ४ पहर खरल करे, सूखने पर दो प्यालो मे बंद कर गजपुट की आग दे, ठंडा होने पर निकाले पीस कर शीशी मे भर ले, २ रत्ती दवा को खांड मिला गरम पानी के साथ देने से नेतकी, तैया, चौथिया तथा अन्य सब प्रकार के ज्वर शान्त होते हैं।

## पुनः सब ज्वरों पर ज्वरांकुश

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक (कज्जली) मघ, पतीस, धतूरे के बीज, सब चार चार तोले, शुद्ध विष (मीठा तेलिया) ६ माशा, सब को अदरक रस मे खरल कर १-१ रत्ती की गोली बना ले, मात्रा १ से दो गोली तक अदरक के रस के साथ खाने से सब प्रकार की बादी दूर होती है, बड़ी इलायची के साथ खाने से ज्वर दूर होता है, पताशे के शर्बत के साथ देने से पित्तज्वर दूर होता है, पान के रस के साथ देने से कफज्वर दूर होता है, चार रत्ती मघ और ३ माशे खाड दोनो को मिला कर इनके साथ १ गोली खाने से भूख बढ़ती है, हरड के साथ खाने से अजीर्ण ( अपच ) दूर होता है।

## पुनः सम्पूर्ण ज्वरों पर ज्वरांकुश

मनसिल २ तोले, चूना ४ तोले, नीलाथोथा ८ माशे, सब को पानी के साथ पीस कर टिकिया बना सुखा लें, प्यालो मे रख कर कपड़ मिट्टी कर मुँह बद करे और एक पहर भर आग दे ठंडा होने पर प्यालो को खोल कर दवाई निकाल पीस कर रखे। पश्चात् ज्वर के रोगी को २ रत्ती दवाई लेकर ३ माशे खाड मे मिला पानी के साथ प्रातःकाल खिला दे, दूध चावल पथ्य दे इसके सेवन से सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं, रुद्रमणि वैद्य ने अपने पुत्र के लिये यह योग तैयार किया था।

## कालरस शीत-ज्वर के लिये

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक दो भाग, मघ, शुद्ध विष, लौंग, सुहागा

फूल, जायफल, जावित्री, मिर्च, शुद्ध धत्तूरे के बीज, सब दो-दो भाग, प्रथम पारा-गन्धक की कज्जली कर ले, पीछे सब दवाइयों को कूट कर अदरक के रस में तीन दिन तक खरल करे, पश्चात् शीशी में भर छोड़े, एक अथवा २ रत्ती पान अथवा अदरक के रस के साथ खाने से शीतज्वर तथा अन्य सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं और सब प्रकार के वात-रोग भी नष्ट होते हैं।

## महाज्वरांकुश ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष ( मीठा तेलिया ) सब एक एक भाग, शुद्ध धतूरे के बीज ३ भाग, मघा ४ भाग, मिर्च ४ भाग, सोंठ ४ भाग, प्रथम पारा गन्धक की कज्जली करे, पीछे सब चीजों को कूट कर अदरक रस में खरल कर संभाल रखे, एक रत्ती मात्रा अदरक रस के साथ रोगी को दे, सब प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

## विषम ज्वर में विश्वतापहरण रस ( वैद्यजीवन से )

ताम्रभस्म, शुद्ध विष, शुद्ध जमालगोटा, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, त्रिवि, कौड़, मघपीपल, हरड, सुमाकदाना, सब बराबर ले, प्रथम पारा-गन्धक की कज्जली करे, पश्चात् अन्य औषध मिलाकर धत्तूरे के रस से खरल करे। मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती तक बल के अनुसार अदरक रस के साथ दें। पथ्य—मूग की दाल और भात, इसके सेवन से सब प्रकार के विषमज्वर, तथा अन्य ज्वर भी दूर हो जाते हैं।

यदि विषमज्वर में श्वास, मूर्छा, अतिसार, पेशाब का रुकना, अथवा अचेतन ही पेशाब निकल जाना इत्यादि उपद्रव हो जावे तो बुद्धिमान् वैद्य ऐसे रोगी की चिकित्सा न करे।

## रोगी-शय्या विधि

यदि रोगी की शय्या (खाट बिस्तर) का सिरहाना पूर्व दिशा की ओर हो तो आयु बढ़ती है, दक्षिण दिशा की ओर हो तो सुख-सम्पत्ति बढ़ती है, पश्चिम दिशा की ओर हो तो दुःख और चिन्ता होती है, और उत्तर दिशा की ओर हो तो मृत्यु का भय होता है।

## ठण्डे पानी के गुण

ठण्डा पानी दाह, मूर्छा ( वेहोशी ) पित्तरोग, पित्त की उलटी, आँखो के आगे अन्धेरा, मदात्यय (शराव की वीमारी), विप-विकार, भ्रम (चक्कर), क्रिमि ( पेट के कीडे ) खून की वीमारी, इन रोगो को दूर करता है।

## गरम पानी के गुण

पसवाड़े की दर्द, जुकाम, वात-कफ के रोग, गले की खरावी, अफरा, कच्चा वुखार, गरम पानी पीने से दूर होते हैं।

## मन्दोष्ण ( कोसे ) पानी के गुण

अरोचक, जुकाम, मन्दाग्नि, शोथ, वुखार, नेत्ररोग, इन रोगो को मन्दोष्ण (कोसा) पानी दूर करता है।

## अत्युष्ण ( वहुत गरम ) जल के गुण

रात को गरम पानी पीने से कफरोग, अजीर्ण, और वातरोग, नष्ट होते है, जिस जल पर झाग न हो वह जल शुद्ध होता है, रोग को देख जल का विधान करना चाहिये।

चोथा हिस्सा उवला हुआ पानी वात को शान्त करता है, आधा जला हुआ पानी पित्त को शान्त करता है, तीन हिस्से जल कर एक हिस्सा वचा हुआ जल कफ को दूर करता है। यदि रोगी को जल देना हो तो दिन का कढा हुआ दिन को और रात का कढा हुआ रात को देना चाहिये, वासी पानी नहीं देना चाहिये।

## उष्ण-शीत जल के गुण

उष्ण-शीत अर्थात् उवाल कर ठण्डे किए हुए जल को पीने से वात, पित्त, कफ, उलटी, प्यास, धातुक्षय, सव प्रकार के श्वासरोग, पित्तज्वर, सन्निपात आदि रोग दूर होते हैं।

अधिक उष्ण जल को थोडा थोडा कर के वारवार देना चाहिये, इस से त्रिदोपज्वर दूर होता है, एक वार ही अधिक पानी देने से विकार करता है, पानी प्राणिमात्र का आधार है, सव संसार की उत्पत्ति जल से ही हुई है,

जल हरि का रूप है, और मित्र के समान होता है जिसके मिलते ही सब प्रकार के दुःख दूर हो जाते हैं।

क्योंकि जल के विना अन्न पचता नहीं, अग्नि ठीक नहीं रहती, किन्तु समय पर जल पीने से अग्नि बढ़ती है, बुद्धि बढ़ती है, चेहरे की शोभा बढ़ती है, और शरीर के अनेक दुःख दूर होते हैं।

गरम जल आधा पहर में पचता है और शीतल जल एक पहर में पचता है। जहाँ जहाँ ताजे जल की आवश्यकता हो तो कुएं का ताजा पानी विना उबाले ही पीना चाहिये।

## जल शुद्ध करने की विधि

पत्थर, ईंट, मिट्टी का डला, लोहा, सोना, चाँदी, आदि को अग्नि में तपा तपा कर जल में बुझाने से सब प्रकार का जल शुद्ध हो जाता है और सब रोगों को दूर करता है।

## दोबारा गरम करने का निषेध

घी, तेल, पानी, पाक, व्यञ्जन, ( शाक भाजी ) काढ़ा, तथा और इसी प्रकार की पकी हुई वस्तुओं को दूसरी बार पकाने अथवा गरम करने से उनमें विष जैसा प्रभाव हो जाता है, अर्थात् एक बार उबाल कर ठंडी की हुई वस्तु को दूसरी बार गरम नहीं करना चाहिये, कई लोग भूल से एक बार किए हुए काढ़े को दिन रात बार बार गरम करके रोगी को देते रहते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिये, उसमे विरुद्ध (उलटे) गुण पैदा हो जाते हैं।

## क्वाथ कल्पना ( काढ़ा बनाने की विधि)

१ तोला चीज को सोलह तोला पानी मे काढ़े जब ४ तोले बचे तो उतार कर छान ले, उस मे शहद वा खांड चौथा हिस्सा पांचवां हिस्सा अथवा सोलहवां हिस्सा डालना चाहिये। जीरा, गुग्गुल, नमक, हींग, शिलाजीत, त्रिकुटा, जौखार, यदि काढ़े मे डालना हो तो एक एक टङ्क मिलाना चाहिये।

नोट—यह पुराने जमाने की मात्रा है हर एक चीज की एक जैसी मात्रा (मिकदार) नहीं हो सकती। जीरा तो भला ३ माशे तक खाया भी जा सकता

है परन्तु गुग्गुल हीग, शिलाजीत आदि टङ्क मात्रा मे कौन पचायेगा, इस लिये इन चीजो को नीचे लिखे अनुसार मिलाना चाहिये, जीरा १ माशा से ३ माशा तक, गुग्गुल शुद्ध ४ रत्ती से १ माशा तक, नमक एक से ३ माशा तक, हीग आधी रत्ती से २ रत्ती तक, शिलाजीत १ रत्ती से ३ या ४ रत्ती तक, त्रिकुटा ४ रत्ती से १ माशा अधिक से अधिक २ माशा तक, सोठ ३ माशा तक भी वढा सकते हैं।

तेल, घी, मूत्र, गुड, और दूध, इसी प्रकार के और द्रव्य एक तोला से तीन तोला तक यथाशक्ति मिला सकते हैं। इस प्रकार वैद्य को अपनी वुद्धि द्वारा दवाईयो की कल्पना करनी चाहिये, बुद्धिमान् वैद्य वुद्धिपूर्वक चिकित्सा करे तो वात पित्त कफ के सब विकार दूर हो जाते हैं।

## काढ़ा देने का निषेध

कच्चे बुखार मे काढा नही देना चाहिये, वमन नही देना चाहिये, दस्त भी नही देना चाहिये, इनके देने से रोगी का वल घट जाता है, ज्वर तेज हो जाता है, अथवा विपमज्वर हो जाता है।

नोट—नये बुखार मे अग्नि पहले ही मन्द होती है, वह किसी वस्तु को पचा नही सकती, यदि काढा देगे तो अग्नि बिलकुल क्षीण हो जायगी और बुखार वडा तेज हो जायगा, इस लिये काढ़ा नहीं देना चाहिये।

वमन (कै) और विरेचन (दस्त) भी नही देने चाहिये, क्योकि शोधन करने से दोप कच्चे ही वाहर निकल जाते हैं परिपाक नही होता और फिर समय पाकर विपमज्वर को कर देते हैं।

नये बुखार मे भोजन, स्त्री-सग, पूर्व दिशा और सामने का वायु, दिन मे सोना, परिश्रम करना, नहाना, काढा पीना, क्रोध करना, मालिश करना, ये सब काम त्याग देने चाहिये।

## लंघन (फाका) के गुण

आखो के रोग मे, शिर के रोग मे, व्रण (जख्म) रोग मे और बुखार मे लंघन करने से सब प्रकार के कष्ट दूर होते हैं।

## अतिलंघन के दोप

अतिलंघन (फाका) करने से जोड टूटने लगते हैं, मुँह सूखता है,

प्यास अधिक लगती है, कमजोरी बढ़ती है, अग्नि मंद पड जाती है, चक्कर आते हैं, खासी होती है, नेत्र, कान, वाणी की शक्ति नष्ट हो जाती है, इस लिये बहुत निरन्तर अधिक समय तक लंघन नहीं करना चाहिये ।

## हीन-लंघन के दोष

यदि लंघन ठीक न किया जाय तो कफ की उलटी, खासी, तन्द्रा, बेचैनी और शरीर भारी हो जाता है, इस लिये लंघन ठीक ठीक करना चाहिये ।

## लंघन किन को नहीं करना चाहिये ?

बूढ़े, बच्चे, गर्भिणी स्त्री, थके हुए, कमजोर, दुबले-पतले मनुष्य को लंघन नहीं करना चाहिये ।

## शुद्ध लंघन के गुण

मल-मूत्र और वायु ठीक उतरे, शरीर हलका मालूम हो, भूख लगे, पसीना आवे, प्यास लगे, साफ डकार आवें तो जानो कि लंघन ठीक हुआ है।

## लंघन के भेद

लंघन छः प्रकार का होता है, १ लंघन ( फाका), २ वमन (उलटी), ३ विरेचन ( दस्त), ४ गरम पानी पीना, ५ स्वेदन (पसीना आना), ६ रक्त-मोक्षण ( फसद खोलना, खून निकालना ) यह छ प्रकार का लंघन हर एक आदमी को नहीं करना चाहिये, सोच विचार रोगी का बल आयु देख कर जो जिसके माफिक बैठे उसे वैसा ही लंघन कराना चाहिये ।

## वस्त्र के गुण ( रत्नमाला से )

सफेद रंग के कपड़े पित्त को शान्त करते है, प्यास, दाह को हरते हैं, पेट बढ़ता है, कफ बढ़ता है, और वीर्य भी बढ़ता है, यह श्वेत वस्त्र के गुण हैं ।

मंजीठिया रंग का कपड़ा उष्ण होता है, दाह पैदा करता है, वात और श्लेष्म ( बलगम ) के रोगो को दूर करता है । रेशमी वस्त्र सन्निपात को दूर करता है, पश्मीने का कपड़ा वादी को दूर करता है ।

## व्यजन ( पंखे ) के गुण

पंखे की हवा पसीना, मूर्छा, दाह, प्यास को दूर करती है मन को

प्रसन्न करने वाली है, ताड-पत्र की हवा दुःख को दूर करती है, वास के छिलके का पंखा गरमी करता है। साफ चमर (चौरी) की हवा सुखदाई होती है, मक्खियाँ दूर करती है, वेत, कपडे और मोरपख के पखे की हवा तीनो दोषो को दूर करती है।

## ज्वर मे पथ्य

कुलथी, मूंग, मसर, मोठ, चना, करेला, अनार दाना, वैगन, मुनक्का सुहाजने की फली, ककोडा, छोटी मूली, कपित्थ, चौलाई, वथुआ, पालक, ये चीजे ज्वर मे पथ्य हैं, इसी प्रकार जो वस्तु कफ और वात को दूर करे वह ज्वर मे पथ्य कही है।

## शुभ दृष्टि विचार

पाठक, ( विद्यार्थी ) घोडा, वैद्य, चकोर, माता, पिता, रसोइया, मोर, अपनी स्त्री इनकी दृष्टि काढा आदि दवाई, अथवा पथ्य भोजन आदि पर पड़े तो शुभ होती है, अर्थात् इनकी नजर ( दवाई भोजन आदि पर ) अच्छी होती है।

## अशुभ ( बुरी ) दृष्टि विचार

योगी, शिकारी, विल्ली, साप, डायन, नायन, न्योला, गीदड़, नीच पुरुष और दूसरे की स्त्री इनकी दृष्टि दवाई और भोजन पर पडे तो हानिकारक होती है।

नोट—यह वात मशहूर है कि वच्चा जव दूध पीने लगता है तो माता दूध मे छोटा सा कोयला डाल देती है कि दूध मे किसी की बुरी नजर न पड जाय और दूध नजरा न जावे, यदि किसी की बुरी नजर पडे भी तो कोयले पर पड कर रह जावे, वच्चे पर या दूध पर उसका कोई बुरा असर न हो। इसी प्रकार रोगी पर भी जानना, इसी वात पर ऊपर शुभ दृष्टि और अशुभ दृष्टि का पूरा पूरा वर्णन कर दिया है।

## कुपथ्य

असात्म्य भोजन अर्थात् जो चीज अपनी तवीयत को माफिक न वैठे उसे खाना, वहुत खा लेना, उलटी, टट्टी, पेशाव आदि के वेग (हाजत ) को

रोकना, विरुद्ध आहार (बद परहेजी) करना, गरम, बादी, और भारी अन्न खाना सरसों आदि का साग, तिलका भुगा ( तिलकुट ) आदि, गदला और खारी पानी, कटहर बडहर, तरबूज, पाठी मच्छी, आदि नहीं खानी चाहिये, यह मैंने संक्षेप से वर्णन किया है, बुद्धिमान् वैद्य को बुद्धि द्वारा विचार कर चिकित्सा करनी चाहिये।

### ज्वर छूटने के बाद परहेज

स्नान, थकावट का काम, स्त्री-सग, घूमना, वरजिश, चिकना और भारी भोजन, और भी यदि ऐसा कोई कार्य हो जिसे ज्वरमुक्त आदमी को तब तक नहीं करना चाहिये जब तक बलवान् न हो जाये।

अनेक पथ्य-कुपथ्यों का कहाँ तक वर्णन करूं, वैद्यकशास्त्र तो अथाह समुद्र है उसका पार कौन पा सकता है। ऐसा मेघ कवि का कथन है।

इति सौदामिनीभाषाभाष्य ज्वराधिकार दूसरा अध्याय समाप्त।

---

## अथ तीसरा अध्याय।

श्री मेघ कवि सब कवियों के चरणों में नमस्कार कर उनकी कृपा से सन्निपातज्वर चिकित्सा विधि बताते हैं।

### सन्निपात-ज्वर का निदान

जो मनुष्य बहुत गरम, खट्टे, चिकने, चरपरे, तीक्ष्ण, कड़वे, कसैले, और मीठे पदार्थों का अतिसेवन करता है, शराब अधिक पीता है, अत्यन्त स्त्री-सग करता है, बहुत क्रोध करता है, अत्यन्त रूखे अथवा भारी मांसादि, तथा अत्यन्त शीत पदार्थों का सेवन करता है, अथवा अपनी सामर्थ्य से अधिक अन्न खाता है, अतिशोक, अतिव्यायाम ( कसरत ) और अति-चिन्ता करता है, अथवा जिस पर नीच ग्रह, भूत, पिशाच और राक्षसों की दृष्टि पड़ गई हो, ऐसे मनुष्य को वसन्त ऋतु ( चैत्र, वैसाख ), शरद्-ऋतु (असूज, कार्तिक), वर्षा ऋतु ( श्रावण, भाद्रो ) में अकसर सन्निपात-ज्वर का प्रकोप हो जाता है।

अथवा—गुरु, ब्राह्मण, देवी-देवता, माता-पिता, पूज्य, वृद्ध, सिद्ध, सन्त, महात्मा, मुनि, इनकी पूजा तथा सेवा न करने से, राक्षस, भूत, प्रेत, वेताल आदि पाप-ग्रहों की दृष्टि पड जाने से, अथवा माता-पिता, साधु-महात्मा, गुरुजनो को कष्ट देने से जब वे क्रोध मे आकर शाप आदि देवें तो भी सन्निपातज्वर हो जाता है। अथवा शत्रुओं द्वारा जादू-टोना आदि किये जाने पर, सिर आदि पर सख्त चोट लग जाने से मनुष्यो को सन्निपात-ज्वर हो जाता है।

## सन्निपात के नाम भेद

१ सन्धिक, २ अन्तक, ३ रुग्दाह, ४ चित्तविभ्रम, ५ शीताङ्ग, ६ तन्द्रिक, ७ कण्ठकुब्ज, ८ कर्णक, ९ भुग्ननेत्र, १० रक्तष्ठीवी, ११ प्रलापक, १२ जिह्वक, १३ अभिन्यास, यह तेरह प्रकार का सन्निपातज्वर होता है और कही 'हारिद्रक' सन्निपात भी माना है।

## सन्निपात में 'जिह्वा' का लक्षण

सन्धिक सन्निपात मे जीभ ( जिह्वा ) का रङ्ग लाल होता है, अन्तक सन्निपात मे जीभ खुरदरी होती है, रुग्दाह मे जीभ पर मल का लेप सा होता है, तन्द्रिक सन्निपात मे जीभ पर लाल-लाल छाले होते हैं, चित्तविभ्रम मे जीभ गाँठो वाली होती है, कण्ठकुब्ज मे जिह्वा काली पड़ जाती है, कर्णक मे लाल, रक्तष्ठीवी मे श्वेत, प्रलापी की शून्य, जिह्वक मे जीभ पर काँटे होते हैं, अभिन्यास मे जिह्वा पर चक्र पड जाते हैं और रोगी बोल नही सकता। शीताङ्ग मे जिह्वा शिथिल एव शून्य हो जाती है।

सन्निपातरूपी समुद्र मे डूबने वाले मनुष्य को बाहर निकालना अति-कठिन है, जो वैद्य ऐसे रोगी को बचाता है, उससे बढकर संसार मे कौन पुण्यात्मा हो सकता है, वह तो भगवान् का स्वरूप होता है, जितनी भी उसकी सेवा हो सके करनी चाहिये और मुँह माँगी वस्तु उसको भेट करनी चाहिये।

सन्निपातरूपी अजगर ( साप ) से ग्रसे हुए मनुष्य को जो बचा सके उसके मुकाबले मे धन-दौलत क्या चीज है, अर्थात् जिस प्रकार भी हो सके

बड़े चतुर वैद्य से सन्निपात रोगी का इलाज कराना चाहिये, धन-दौलत के लोभ मे पड कर जान नहीं गवानी चाहिये, जान वचेगी तो धन-दौलत फिर भी हो सकते हैं, इस लिये सव तरह से रोगी की रक्षा करनी चाहिये।

सन्निपात रोगी को जो नर ठंडा पानी पिलाता है, अथवा ठंडे जल का स्नान आदि कराता है वह वैद्य जीवन का रक्षक नहीं, वह तो रोगी के प्राणो का हरने वाला है । इसलिये सन्निपात मे शीतल जल नहीं देना चाहिये ।

सन्निपात काल स्वरूप होता है, इसके साथ युद्ध करके जो वैद्य इसको जीत ले ऐसे वैद्य को वार वार हमारा नमस्कार है। वही वैद्य हमारा मित्र है।

सन्निपात मे वात-पित्त कफ यह तीनो दोष प्रकुपित होते हैं, इस लिये इस ज्वर को त्रिदोषज्वर भी कहते हैं, इसमे वायु कुपित होकर कफ को सुखा देता है, वैद्य को चाहिये कि सन्निपात में पहले कफ को दूर करने का उपाय करे, पीछे पित्त को ठीक करे, इस प्रकार का वैद्य यश प्राप्त करता है।

नोट—सन्निपात ज्वर मे कच्ची वलगम का सव से अधिक खतरा होता है, क्योंकि यह अतिपिच्छिल (लिसदार चिपकने वाली ) होती है। इस लिये शरीर के स्रोतो मे रुक कर सारे शरीर को जकड लेती है, शीतल और भारी होने से अग्नि को अत्यन्त मंद कर देती है, तमरूप होने से सज्ञा और चेतन शक्ति को मूर्च्छित अथवा नष्ट कर देती है, अत रोगी की जीवन शक्ति वहुत कमजोर हो जाती है, जव तक इसका पाक न हो तव तक हर समय रोगी के प्राणो का खतरा लगा रहता है ।

दूसरा मत—कई आचार्यो का मत है कि सन्निपात ज्वर मे प्रथम पित्त की चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि वुखार, गर्मा (पित्त) के विना नही हो सकता क्योंकि पित्त शरीर मे अग्नि का कार्य करता है, जव पित्त अत्यन्त वढ़ जाता है तभी ज्वर होता है, इस लिये पित्त जीतने से वाकी वात और कफ भी जीते जा सकते हैं ।

तीसरा मत यह है कि सन्निपात ज्वर मे प्रथम वायु की चिकित्सा करनी चाहिये, क्योकि वायु अत्यन्त शीघ्रकारी है और चल है, अधिक वलवान् है, पित्त और कफ दोनो ही दोष पंगु अर्थात् लंगड़े होते हैं, वायु के विना यह दोनो न तो शरीर मे फैल सकते हैं और न कुछ विकार पैदा कर

सकते हैं, और वायु ही यम स्वरूप है जीवन को बाधने वाला है, वायु से ही जीवन-मरण का ज्ञान होता है, इस लिये सन्निपातज्वर मे प्रथम वायु की चिकित्सा करनी चाहिये।

ऊपर के जो तीन पक्ष बताए हैं तीनो ही शास्त्र के अनुकूल सत्य हैं, कारण कि सन्निपात मे तीनो ही दोषो का प्रकोप होता है, और तीनो ही दोष भयङ्कर रूप धारण कर लेते हैं, जिनसे कि जीवन बचाना कठिन हो जाता है, इस लिये शास्त्र मे इन तीनो की भयंकर अवस्थाओ का वर्णन कर दिया है, और अन्त मे यह भी कह दिया है जो दोष सब से अधिक उत्कट ( विगडा हुआ ) हो सब से पहले उसकी ही चिकित्सा करनी चाहिये, उसके बाद इसी क्रम से दूसरे दोषो की चिकित्सा करे। वैद्य को सन्निपात चिकित्सा मे कभी ढील नही करनी चाहिये, रोग और दोष का निश्चय करके तत्काल इलाज शुरू कर दे, अन्यथा मस्तिष्क (दिमाग) पर जरा भी असर हो जाने से रोगी का ठीक होना अत्यन्त कठिन हो जाता है। आगे तेरह प्रकार के सन्निपातो का वर्णन किया जावेगा, उनमे कुछ वात की अधिकता से और कुछ पित्त की अधिकता से और कुछ कफ की अधिकता से होते हैं, उनको सोच विचार कर चिकित्सा-कार्य मे कुशलता प्राप्त करनी चाहिये। क्योंकि वैद्यो की प्रतिष्ठा और प्रशसा तो सन्निपात आदि भयानक रोगो की चिकित्सा मे सफलता प्राप्त करने से होती है।

## सन्निपात की चिकित्सा ( लंघन )

सन्निपात मे कफ को दूर करने के लिये तीन दिन, पाच दिन, अथवा सात दिन रोगी का बल देख कर ( इससे अधिक दिन तक भी ) लंघन (उपवास, फाका) करावे, और थोडा थोडा गरम पानी पीने को देता रहे।

## सन्धिक सन्निपात लक्षण

सन्धिक सन्निपात मे जोडो मे दर्द, सोज, सारे शरीर मे अत्यन्त पीडा, बुखार और दाह होता है, बल का नाश हो जाता है, नीद नही आती, रात को श्लेष्मा का प्रकोप हो जाता है, यह सन्धिक सन्निपात के लक्षण है।

सन्धिक सन्निपात मे सब से पहले तीन रात्रि तक लंघन कराना चाहिये,

क्योंकि सन्धिया कफ का स्थान होती हैं वायु उन सन्धियों में कफ को प्रकुपित कर देता है इस लिये कफ और वात को ठीक करने के लिये लघन जरूरी है ।

## सन्धिक-सन्निपात चिकित्सा

पञ्चमूल ( विल्व अरणी, अरलू, गम्भारी, पाडल, इनकी जड़ की छाल ) २ तोला, जल ३२ तोला, शेष क्वाथ ८ तोला छान कर, १ माशा पिप्पली चूर्ण ( मघ ) मिला पिलाने से सन्धिक सन्निपात दूर होता है ।

अथवा—५ तोला कुलथी को लेकर ८० तोला पानी में काढ़ा कर १० तोला शेष रहने पर उसमें ३ माशे सोंठ और थोडा सा सैंधा नमक मिला कर पिलाने से सन्धिक सन्निपात तथा सब प्रकार की पीडा शान्त हो जाती है।

## काढा

देवदारु, सोंठ, गिलोय, रायसन, विधारा, शतावर, कचूर, इनके काढ़े में १ माशा शुद्ध गुग्गुल मिलाकर पिलाने से सन्धिक सन्निपात दूर होता है । और भी वायु के रोग तथा शरीर की पीडाएँ परमात्मा की कृपा से दूर होती हैं।

## अन्य क्वाथ

हरड, बहेड़ा, आमला, जमालगोटे की जड, विल की जड, इनका काढ़ा करके इसमें एक तोला अमलतास का गूदा घोल ले, पश्चात् ३ माशे नील चूर्ण ( वसमा ) अथवा काला दाना का चूर्ण मिला कर पिलाने से दस्त आ जाते हैं और ज्वर एवं पीडा नष्ट हो जाती है ।

## अन्य क्वाथ

सोंठ, रास्ना, गिलोय, देवदारु, एरण्ड के बीज, इनका काढा बना पीने से सन्धिक सन्निपात नष्ट होता है, एरण्डबीज के स्थान पर जब काढा तयार हो जावे तो उसमें आमतौर पर १ तोला शुद्ध एरण्डतेल भी मिला सकते हैं, और जब जुलाब के लिये देना हो तो २ तोले से ४ तोले तक मिलाना चाहिये मेघ मुनि कहते हैं कि इस क्वाथ के पीने से अस्सी प्रकार के वायुरोग नष्ट हो जाते हैं, सन्धिक सन्निपात और उसके उपद्रव भी नष्ट हो जाते हैं।

## धूप

नीम की छाल, भाग, कुठ, सरसो, पिप्पलामूल, कपासबीज, सम्भालू-पत्र, गुग्गुल, तगर, इन्द्रजौ, आक की जड, देवदारु, लाख, छाडछडीला, सॉप की कुञ्ज, शराब, शहद, इन सब चीजो को बारीक कूट कर शराब और शहद मिला धूप ( धूनी ) बनावे, इस धूप के देने से सन्धिक सन्निपात दूर होता है।

## क्वाथ

पिप्पलामूल, हरड, जंगहरड, देवदारु, आमला, बॉसा ( बहेकड़ ), गिलोय, इनका काढा पूर्वविधि से एरण्डतेल मिला समय विचार कर पीने से चौरासी वातरोग तथा उपद्रवयुक्त सन्धिक सन्निपात नष्ट होता है।

## पुनः क्वाथ

रायसन, सोठ, पिया बॉसा, गिलोय, नेत्रवाला, शतावरी, उत्तम हरड, देवदारु, विदारीकन्द, कौड, कचूर, बॉसा, शालपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, भखडे, बिल्वमूल, अरणी, अरलू , गम्भारी, पाडल, इन द्रव्यो का पूर्वविधि से काढा प्रात' साय पीने से मन्यास्तम्भ ( गरदन का अकडना ) अन्त्रवृद्धि ( आत उतरना ), बुखार, कमर-दर्द, जोडो की पीडा, सारे शरीर की पीडा, तथा सन्धिक सन्निपात दूर होता है।

## चिन्तामणिरस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, हरड़, बहेडा, अमला, सोठ, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध जमालगोटा, सब बराबर-बराबर ले, सब से पहले पारा गन्धक को इकट्ठा घोट कज्जली करे, पश्चात् अन्य त्रिफला, त्रिकुटा आदि द्रव्यों को कूट छान कर मिला ले और द्रोणपुष्पी ( गूमा, भेडे ) के रस मे खरल कर एक-एक रत्ती की गोलियॉ बना कर एक वा दो गोलियॉ पूर्वोक्त किसी काढे के साथ अथवा सौंफ के अर्क के साथ देने से दस्त आजाते हैं और सब प्रकार की पीड़ाए, गठिया, जोड़ो की दर्दें और सन्धिक सन्निपात दूर होता है।

## रामबाणरस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लौंग, शुद्ध विष ( मीठा तेलिया ), सब एक-एक तोला, काली मिर्च दो तोला, जायफल ६ माशा, पहले पारा गन्धक की कज्जली करे, पीछे अन्य वस्तुओं का चूर्ण बना खरल मे मिला इमली अथवा सुमाकदाना के रस के साथ घोटे और एक-एक रत्ती की गोली वना कर सौंफ के अर्क अथवा काथ के साथ एक अथवा दो गोली देने से ग्रहणी, आमवात और अजीर्ण आदि अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं, जैसे भगवान् श्रीराम के बाण से खर-दूषण, त्रिशरा, रावण आदि दुष्ट राक्षस नष्ट हुए थे।

## द्वितीय चिन्तामणिरस

दोनो जीरे, सोठ, शुद्ध पारा, सैंधा नमक, सौंचर नमक, विड् नमक, सामुद्र नमक, साम्भर नामक, काली मिर्च, जौखार, सज्जीखार, सोहागा फूल, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, शुद्ध विष, सब समभाग ले, पारा गन्धक की कज्जली करे, पश्चात् और चीजो को मिला कर पान के और अदरक के रस से गोली बना कर दो-दो रत्ती की गोली बना कर एक या दो गोली यथाशक्ति गरम जल के साथ खाने से सन्निपातज्वर,आमवात, आमाजीर्ण, मोह, उदावर्त तथा सन्धिकज्वर दूर होता है। यह चिन्तामणिरस अत्यन्त गुणकारी है।

## अन्तक-सन्निपात के लक्षण

अत्यन्त दाह होना, सारे शरीर मे ताप होना, मोह होना, सिर कॉपना, हिचकी होना तथा खांसी आदि लक्षण हो तो अन्तक सन्निपात जानो। यह अन्तक सन्निपात मृत्युरूप होता है, इसमे "रामनाम" ही औषधि है अर्थात् रोगी बचता नही।

## अन्तक-सन्निपात चिकित्सा

सोठ, पोहकरमूल, भडिगी, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, कण्डियारी छोटी, कण्डियारी बड़ी, भखड़े, बिलमूल, अरणी, अरलू, गम्भारी, पाडल, इनका चतुर्थांश काढ़ा ( चौथा हिस्सा पानी रहे तो ) पिलाने से अन्तक सन्निपात दूर होता है।

## कालांकुशरस

शुद्ध गन्धक, काली मिर्च, सुहागा फूल, चित्रा, जायफल, इन पॉचो चीजो को एक-एक तोला ले, इन मे ४ तोला लौंग, तीन तोला शुद्ध धत्तूरे के बीज और पीपल ( मघ ) १० तोले मिलावे, इन सब को बारीक कर अदरक रस अथवा पान के रस मे तीन दिन तक खरल करे, एक-एक रत्ती की गोली बना कर शक्ति अनुसार एक या दो गोली अदरक अथवा पान के रस के साथ रोगी को दे तो मूर्छा तथा महाघोर सन्निपात नष्ट होता है। मिर्गी, पागलपन, शीताग सन्निपात, हिचकी, अरुचि, जुकाम, हनुस्तम्भ, क्षय, श्वास, सिर के सब रोग, वायु के रोग, गलग्रह, यह सब रोग नष्ट हो जाते हैं, वैद्यकुतूहल मे ये सब गुण लिखे है।

## सञ्जीवनी गुटिका

सोठ, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, बावडिग, मीठा तेलिया, शुद्ध, भिलावे, गिलोय, वच, इन दस वस्तुओ को बारीक कर गोमूत्र मे खरल कर दो-दो रत्ती की गोली बना ले, मन्दाग्नि मे एक गोली, साप के काटे को दो गोली, सूतिका रोग मे दो-दो गोली, और सन्निपात रोगी को ४ गोली देनी चाहिये, इस गोली के असख्य गुण हैं। अन्तक सन्निपात असाध्य है परन्तु जब तक शरीर मे प्राण हैं तब तक चिकित्सा करनी चाहिये।

## रुग्दाह-सन्निपात लक्षण

ज्वर अधिक होता है, रोगी बकता है, बार बार मूर्छित होता है, कमजोर पड जाता है, नशा सा चढा रहता है, कण्ठ, गर्दन और जाबडो मे पीडा होती है, श्वास, शूल, खासी, हिचकी, थकावट और लगातार प्यास रहती है, ऐसे सन्निपात को रुग्दाह सन्निपात कहते है, वैद्य लोग इसकी चिकित्सा कठिन ही मानते हैं।

सन्निपातकलिका ग्रथ मे इसे कष्टसाध्य माना है, इस सन्निपात मे पित्त बहुत प्रकुपित होता है इसलिये पित्त की चिकित्सा के अनुकूल अन्य चिकित्सा करनी चाहिये।

## रुग्दाह-सन्निपात चिकित्सा

रुग्दाह सन्निपात मे अत्यन्त प्रकुपित्त पित्त को शान्त करने के लिये मोतियो की माला पहरावे, सारे शरीर पर श्वेत चन्दन का लेप करे, श्वेत वस्त्र तथा मोतियो के फूलो का हार पहरावे,चन्द्रकान्त मणि से जड़े हुए भूषण तथा सुन्दर स्वच्छ वस्त्र पहरे हुए चञ्चल नेत्रोवाली अत्यन्त मनोहर रूप-वाली नवयौवना स्त्री आलिंगन करे तो रुग्दाह सन्निपात दूर होता है ।

नोट--आलिंगन करने का अर्थ स्पर्श करना तक ही है, यदि रोगी स्त्री-संग करेगा तो अवश्य मृत्यु के मुँह मे पहुँच जावेगा ।

## पुनः उपाय

केले के नरम नरम पत्तो की सेज ( बिछौना ) हो, सारे शरीर मे चन्दन और कपूर का लेप किया हो, नाभि पर केले के रस से गीला वस्त्र बार बार रखे, श्यामा स्त्री का संगम अर्थात् सुख स्पर्श हो, इन उपायो से रुग्दाह सन्निपात नष्ट होता है ।

नोट -श्यामा स्त्री के लक्षण ५५ पृष्ठ कह आए हैं ।

सुन्दर शीतल बगीचे मे केले की सुन्दर सेज पर, फुहारे की बूंदे पड़ रही हो, कान और मन को सुख देने वाला राग-रंग हो रहा हो तो अवश्य रुग्दाह सन्निपात और उसके उपद्रव शान्त हो जाते हैं ।

## अन्य उपाय

मूंग और आमला का यूप ठण्डा करके पिलाना चाहिये, यह यूप दीपन है, पाचन है, शीतल है, कफ पित्त को शान्त करने वाला है और रुग्दाह सन्निपात को नष्ट करता है ।

नोट--मूंग की दाल बनाते समय उसमें थोडे आमले डाल दे, जब दाल बन जावे तो उसे छान कर पतला-पतला पानी मिलाना चाहिये ।

## ब्राह्मी आदि काढ़ा

ब्राह्मी, नागरमोथा, मुनक्का, शतावर, हरड़, कौड़, कड़वी तोरी, आमले, वच, अमलतास, नीम की छाल, चिरायता, अरणी, अरलू, गंभारी, पाडल इनका काढ़ा करके पीने से रुग्दाह सन्निपात और उसके सब उपद्रव

शान्त होते हैं ।

## अन्य काढ़ा

देवदारु, चन्दन, बाँसा (वहेकड़), कायफल, कौड, हरड, वहेडा, आमला, कमल, इनका काढा पीने से रुग्दाह सन्निपात नष्ट होता है, अन्य भी सव प्रकार के विषमज्वर इस काढ़े के पीने से दूर होते हैं।

## लेप

रीठा, वेरी के पत्ते दोनो को खूब घोटे, झाग निकलने लगे तो इसमे सफेद चन्दन घिस कर मिला ले, इस झाग का शारे शरीर पर लेप करने से रुग्दाह सन्निपात दूर होता है। कही-कहीं शास्त्र मे केवल पाओ की तलियो पर ही लेप करना लिखा है, परन्तु मेघ जी सारे शरीर मे ही मानते हैं।

## अन्य उपाय

यदि देह मे दाह भी हो तो भी रुग्दाह सन्निपात रोगी को ठण्डा पानी पीने को नही देना चाहिये, और तृष्णा को शान्त करने के लिये उस के मुख मे थोडा कपूर अथवा लौंग, इलायची, छुहारे की गुठली आदि रखवाने चाहिये ।

## धूप

नागरमोथा, चन्दन, अगर, कपूर, विजयसार, छिलारा, नख, नेत्रवाला, इनको वारीक कर शहद मिला कर धूनी देने से रुग्दाह सन्निपात दूर होता है।

## षडंग पानी

नागरमोथा, पापडा, खस, रक्त चन्दन, नेत्रवाला, सोठ, इन वस्तुओ को डाल कर काढ़ा हुआ पानी ठंडा कर पीने से वढती प्यास, रुग्दाह, दाह, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, श्वास, कास, पीड़ा, सन्निपात आदि रोग शान्त होते हैं, 'सन्निपातकलिका ग्रंथ' मे इसके ये गुण लिखे हैं।

## अन्य उपाय

मुनक्का, सोठ, काकड़ासिंगी, कचूर, कौड, नागरमोथा, गिलोय, लाल-चन्दन, अनन्तमूल, अथवा धमांहा, चिरायता, इनका काढ़ा करके पीने से

रुदाह सन्निपात, विषमज्वर, श्वास, कास और सारे शरीर का दाह, आदि रोग दूर होते हैं ।

## चित्तभ्रम-सन्निपात लक्षण

शरीर मे अत्यन्त पीड़ा हो, मनुष्य भ्रम (चक्कर आने) से व्याकुल हो रहा हो, नशा सा चढ़ा रहे, मूर्छा भी हो जावे, कुछ पागलपन भी प्रतीत हो, नेत्र भयानक मालूम हो, रोगी गावे, हंसे, गाली दे, नाचे, बकवास करे, ये चित्तभ्रम के लक्षण संताप देने वाले होते हैं, अर्थात् रोगी का बचना मुश्किल होता है, इस लिये हर एक को सन्ताप होता है ।

## चित्तभ्रम-सन्निपात चिकित्सा

हरड़, पापड़ा, कौड़, मुनक्का, देवदारु, नागरमोथा, चिरायता, अमलतास, पंडोलपत्र, आमले, इनका काढ़ा कर पीने से चित्तभ्रम सन्निपात दूर होता है, और रोगी सुखी होकर बहुत चिर तक जीवित रहता है ।

## अन्य काढ़ा

हरड़, पापड़ा, गुलदुपहरिया, (अथवा-मुनक्का), कौड, शंखपुष्पी, नागरमोथा, अमलतास, देवदारु, ब्राह्मी, इनका काढ़ा करके पीने से चित्तभ्रम-सन्निपात, श्वास, कास, आदि अन्य उपद्रव भी दूर होते हैं ।

## अवलेह (चटनी)

मघ और चिरायता दोनो को कूट कर बारीक करे और शहद मिला कर चाटने से चित्तभ्रम सन्निपात दूर होता है ।

## नसवार

मुलट्ठी के रस मे मघ पीस कर नसवार देने से क्षण मे चित्तभ्रम सन्निपात दूर होता है ।

## अंजन

मघ, मिर्च, वच इन तीनो को गोमूत्र मे पीस कर आंखो मे अंजन करने से चित्तभ्रम सन्निपात दूर होता है ।

## काढ़ा

कौड़, मघां, मिर्च, सोंठ, वच, भडिंगी, चिरायता, इन्द्रायण, (तुमे की

जड ), हरड, बहेडा, आमला, रायसन, अनंतमूल अथवा जवासा, दारुहलदी, नागरमोथा, हलदी, देवदारु, त्रायमाण, बाँसा, कडियारी, संभालू के बीज, नीम के पत्र, काली त्रिवी, पतीस, पंडोल पत्र, पोहकरमूल, काकडा सिंगी, गिलोय, इटसिट, पाडल या गुलाब के फूल, इन्द्रजौ, इन सबको बराबर लेकर काढा करे, इस काढ़े के पीने से चित्तभ्रम सन्निपात उन्माद, भ्रम, बेचैनी, शरीर की पीडा, बकवास आदि सब उपद्रव नष्ट होते हैं। जैसे रामनाम का स्मरण करने से सारे पाप नष्ट होते हैं वैसे ही इस काढे के पीने से चित्तभ्रम सन्निपात के सारे विकार दूर होते हैं।

## शीताङ्ग-सन्निपात लक्षण

शीताङ्ग सन्निपात में रोगी का शरीर बर्फ के समान शीतल हो जाता है, रोगी कापता है, हिचकी, श्वास होते हैं, सारा शरीर शिथिल पड जाता है, आवाज बैठ जाती है, अन्दर तेज बुखार होता है, दाह होता है, खासी, उलटी, अतिसार, (दस्त) आदि उपद्रव भी होते हैं, रोगी को प्यास अधिक लगती है, मूर्छा हो जाती है।

## शीताङ्ग-सन्निपात चिकित्सा

शुद्ध मीठा तेलिया १ भाग, बग भस्म ( कली का कुश्ता ) दो भाग, काली मिर्च छः भाग, फटकरी खिल १२ भाग, सब को पीस कर ४ रत्ती खुराक अदरक के रस के साथ खिलाने से शीताङ्ग सन्निपात, मूर्छा, विकलता, शीत, वात आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

## वटिका

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक दो भाग, शुद्ध विष ( मीठा तेलिया ) दो भाग, गुड सब के बराबर, प्रथम पारा गन्धक की कज्जली करे, फिर विष को बारीक कर मिलावे और पश्चात् सबको गुड़ मे रगड कर छोटे बेर समान गोली बना ले, सुबह शाम इस गोली को खाने से शीताङ्ग सन्निपात दूर होता है और रोगी होश मे आजाता है।

## पश्चानन गोली

शुद्ध गन्धक २ टङ्क, शुद्ध पारा १ टङ्क, शुद्ध मीठा तेलिया १ टङ्क, नागर-

मोथा, चित्रे की छाल, मघां, मिर्च, सोंठ, बावडिंग, यह एक-एक टंक, त्रिफला, ( हरड, वहेड़ा, आमला, ) सब को बराबर ले, प्रथम पारा-गन्धक की कज्जली करे, पीछे सब दवाइयों को कूट कपडछान कर मिलावे. सब से दुगना पुराना गुड मिला कर एक एक रत्ती की गोली बना ले, एक या दो गोली तुलसी के रस और लौंग के साथ खाने से अतिसार, कोढ़, वायुगोला, शूल, कफ, खासी, पेट के क्रिमि ( कीड़े ) और शीताङ्ग सन्निपात दूर होता है।

## ब्राह्मी गोली

ब्राह्मी बूटी, तज, लौंग, केसर, मघ, पिप्पलामूल, सोंठ, शतावर, जायफल, जावित्री, काली मिर्च, पोहकरमूल, शखाहुली, वच, चिरायता, इलायची, नागकेसर, अजमोद, चित्रा, अजवायन, पान की जड़, तमालपत्र, सौंफ, लोह भस्म (फौलाद), अकरकरा, अभरक भस्म, तेज बल, सब बराबर और सब से दुगुना मुनक्का ले, प्रथम अन्य वस्तुओ को बारीक कपड़छान करे फिर लोहभस्म, अभरक भस्म मिलावे, जब सब एक जान हो जावे तो मुनक्का मिलाकर १-१ माशे की गोली बना कर प्रातःकाल खाने से शीताग सन्निपात, श्वास, कास, वायुरोग, मूर्छा, आदि सब उपद्रव दूर होते हैं।

## धूड़ा

सौंफ, कौंड, वच, चिरायता, कायफल सबको बारीक कर रोगी के शरीर पर मालिश करने से शीताङ्ग सन्निपात, दूर हो जाता है, अंगो मे गरमी तथा चेतनता आजाती है।

## अन्य धूड़ा

सोंठ, पीपल, काली मिर्च, चिरायता, कुठ, कौड, लोध पठानी, इन्द्रजौ हरड, कचूर, सब को बारीक पीस कर शरीर पर धूड़ा करने से शीताङ्ग सन्निपात दूर होता है, और शरीर मे चेतनता आती है। ठण्डा पसीना दूर होता है, आवाज खुलती है।

## अन्य धूड़ा

चने की खील, गोहे की राख, कायफल, वच, चिरायता, हाथी की लीद इन सबको बारीक पीस कर धूडा देने से शीताङ्ग सन्निपात दूर होता है।

## कुङ्कुमादि गोली

केसर कश्मीरी, पीपल, अकरकरा, हींग, लौंग, इन सबको अदरक के रस मे खरल कर दो-दो रत्ती की गोली बनावे, इसके सेवन करने से शीताङ्ग सन्निपात, मूर्छा, तन्द्रा, कफवादी के रोग, उन्माद आदि सब रोग दूर होते हैं।

## लवंगादि चूर्ण

लौंग, अकरकरा, मघ, मिर्च, सोठ, शुद्ध धत्तूरे के बीज, सब को सम-भाग लेकर खरल करे, एक-एक रत्ती की मात्रा पान अथवा अदरक के रस के साथ देने से शीताङ्ग सन्निपात दूर होता है।

## वटिका

केसर कश्मीरी, पिप्पलामूल, मघा, अकरकरा, लौंग, सब बराबर लेकर चूर्ण करे, सब से दुगुना मुनक्का, लेकर १-१ माशा की गोली बना ले, और शीताङ्ग रोगी को सुबह शाम अथवा जितनी बार उचित समझे, दे, इस से अतिशीत, शीतज्वर, सन्निपात, चौरासी वातरोग दूर होते हैं, इसका नाम लघुब्राह्मीगुटिका है, यह अतिलाभदायक हैं।

## रोटी

अकरकरा, कुठ, राई, धत्तूरे के बीज, कायफल, मीठा तेलिया, मेथी, पोहकरमूल, लहसन, सब वस्तुएँ एक-एक पल, उडद का आटा पाच पल, सब को कपडछान करके गोमूत्र से रोटी बनावे, और बिना सेके सिर पर बाधे, इसके बांधने से सिर के रोग, मिरगी, पागलपन, शीताङ्ग सन्निपात, मूर्छा, मूकता (गूँगापन), सिर मे होने वाले सम्पूर्ण वातरोग नष्ट हो जाते हैं।

## दशमूल क्वाथ

बिल, अरणी, अरलू, गंभारी, पाडल, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, भखडा इन दश द्रव्यो को दशमूल कहते हैं, पहले पांच द्रव्यो को बृहत् ( बड़ा ) पञ्चमूल कहते हैं, इन वृक्षो के मूल की छाल लेनी चाहिये, दूसरे पांच द्रव्यो को लघु ( छोटा ) पंचमूल कहते हैं, ये पांचो जड

समेत लेने चाहिये। इन दस द्रव्यों का काढ़ा बना कर उसमें १ माशा पिप्पली (मघ) का चूर्ण बुरक कर पिलाने से शीतांग सन्निपात, मूर्छा, तन्द्रा, श्वास, कास, उलटी आदि सब रोग दूर होते हैं. यह काढ़ा सूतिका रोग को दूर करता है ।

## अन्य धूड़ा

कुलथी, फटकरी, मघा, जीरा, कोड, चिरायता, वच, कडुवी तुंबी के बीज, पुराने गोहूं की राख. सबको बारीक पीस कर कपड़छान कर धूड़ा मलने से शरीर की पीड़ा ठण्डा पसीना, शीताङ्ग सन्निपात नष्ट होता है ।

## अन्य धूड़ा

कायफल. सैंधा नमक. मघा. मिर्च, सोंठ. चिरायता, काला जीरा. सब को पीस कर धूड़ा बना ले. इस धूड़े को सारे शरीर पर मलने से पसीना, सरदी, शीताङ्ग सन्निपात, तन्द्रा आदि सब रोग दूर होते हैं ।

## पुनः धूड़ा

धतूरे के फल की राख आठ भाग. काली मिर्च ४ भाग, मीठा तेलिया १ भाग. सब को बारीक पीस कपड़छान कर शरीर पर मलने से शीताङ्ग सन्निपात, ठण्डा पसीना. कफ. बादी सब रोग नष्ट हो जाते हैं. जिस प्रकार राम का नाम लेने से सब पाप मिट जाते हैं ।

## महाजीरकादि गुटिका

काला जीरा. सफेद जीरा. अजवायन, कलौंजी. शुद्ध सिलाजित. लौंग, पिप्पली, कालीमिर्च, इलायची. अकरकरा, सब एक-एक पल, खश-खाश और सोंठ, दोनों तीन-तीन पल, पिप्पलामूल एक पल, पुराना गुड़ बीस पल, गौ का घी १६ तोले. ऊपर के द्रव्यों को कूट कपड़छान कर गुड़ और घी मिला कर ३ माशे की गोली बना कर एक-एक गोली दोनों समय खाने से शीताङ्ग सन्निपात, गूंगापन. हड्डियों का शूल, शीतज्वर, अरुचि आदि सब रोग दूर होते हैं ।

## वृहद्भैरव रस

शुद्ध मीठा तेलिया एक टङ्क, सुहागा खील तीन टंक. कालीमिर्च

४ टंक, सोंठ चार टंक, सब का चूर्ण कर अदरक के रस मे खरल कर एक-एक रत्ती की गोली बना ले, एक-एक गोली निम्बू रस के साथ खाने से चौरासी वात रोग दूर होते हैं, वीस कफ के रोग, पचीस ज्वर, शीताङ्ग सन्निपात ये सब रोग दूर होते हैं।

## कनकसुन्दरी रस

काली मिर्च, मिट्ठा तेलिया, अकरकरा, शुद्ध धत्तूरे के बीज, सबको बारीक पीस कर भृंगराज ( भागरा ) के रस मे खरल कर तीन सरसो के दाने ( मूंग ) के बराबर गोली बनाकर अदरक के रस के साथ गोली खाने से कफ-वात के रोग, शीताङ्ग सन्निपात दूर होता है, यह औषध सन्निपात रूप सर्प को दूर करने का महामन्त्र है। इस औषध को संभाल कर रखना चाहिये।

## तन्द्रिक-सन्निपात के लक्षण

तन्द्रिक सन्निपात मे नीद बहुत आती है, तन्द्रा ( घूक ), ज्वर, प्यास अधिक, कफ का जोर भी अधिक होता है, जिह्वा का रग काला पड जाता है, जीभ कठिन और चिपटी सी हो जाती है और जीभ पर काटे काटे हो जाते हैं, अतिसार होता है, श्वास रोग, थकावट, दाह, कान मे पीड़ा, गले मे पीडा, और खारिश और रात दिन निद्रा अर्थात् रोगी घूक मे पड़ा रहता है, आखो के आगे अधेरा छा जाता है। ये तन्द्रिक सन्निपात के लक्षण होते है।

## तन्द्रिक-सन्निपात चिकित्सा

पोहकरमूल, हरड, भडिंगी, कंडियारी, सोठ, गिलोय, इन सबका काथ कर पीने से तुरन्त तन्द्रिक ज्वर दूर होता है।

## अञ्जन

कुठ, इन्द्रायण, सोठ, मनसिल, बच, कुडा, कालीमिर्च, पीपल, सब औषधे नवीन ताजी लेकर बारीक कूट कपडछान कर आखो मे अञ्जन करने से तन्द्रा तथा तन्द्रिक सन्निपात दूर होता है।

## पुनः अञ्जन

मघ, पीपल, मनसिल, वर्कीहरताल, कनेर के पत्तो के रस मे पीस कर अञ्जन करने से तत्काल तन्द्रिक सन्निपात दूर होता है।

## गुडूच्यादि क्वाथ

रक्त चन्दन, गिलोय, कमल, ( नीलोफर ) इन्द्रजौ, जवाहा, हरड, अमलतास, खस, पाढ़, धनियां, नागरमोथा, शतावर, कौड़, इनका काढ़ा बनावे, और १ माशा मघ का चूर्ण इसमे बुरक कर पीने से तन्द्रिक सन्निपात, खासी, दाह, ताप, श्वास, त्रिदोष, मूत्ररोग, वातरोग दूर होते हैं, यह काढ़ा दीपन है, पाचक है, अत्यन्त गुणयुक्त है, इसका नाम गुडूच्यादि क्वाथ है।

## नसवार

सफेद मिर्च, सैंधा नमक, कुठ, सरसो, सब को गोमूत्र में पीस कर नाक मे टपकाने से तन्द्रिक सन्निपात दूर होता है।

## अञ्जन

कुक्कड़ की बीठ पीस कर शहद मिला आँखो मे अंजन लगाने से तत्काल तन्द्रा आदि उपद्रवो से युक्त तन्द्रिक सन्निपात दूर होता है।

## अन्य काढ़ा

काकड़ासिंगी, देवदारु, हरड़, भांडिगी, चिरायता, जीरा, मघ, पापड़ा, वच. कुठ, वॉसा, कायफल, सोंठ, विदारीकन्द, कौड़, इन्द्रजौ, कचूर, पाढ (जलजमनी), रेणुका, गजपिप्पल, हलदी, चवक, चित्रा, मवां, काला जीरा, धनियां, इन्द्रायण ( तुमे की जड ), बावची, दारुहलदी, सोहांजने के पत्ते, बियारा, धमासा, गिलोय, वायविडंग, राई, इनका काढ़ा बना कर हींग और अदरक का रस निचोड़ कर पीने से तन्द्रिक सन्निपात, अभिन्यास सन्निपात तथा तेरह प्रकार का सन्निपात, कर्णमूल, दाह, हिचकी, मूर्छा, प्यास, सरदी, ज्वर, जीभ का सूखना, वायुरोग, पीठ का टूटना, सिर-दर्द और धनुष-वाय ये सब रोग दूर होते हैं।

## शठ्यादि काढ़ा

कचूर, कण्डियारी, पोहकरमूल, सोठ, पाढ़, ककड़ासिंगी, कौड, चिरायता, धमाह, गिलोय, इन का काढ़ा कर पीने से तन्द्रिक सन्निपात तुरन्त दूर होता है, यह काढ़ा खांसी, हृदय के शूल, ग्रहपीड़ा, तन्द्रा, पसली का शूल ( जातलजम), श्वास आदि रोगो को दूर करता है।

## नसवार

मालकंगुणी के तेल मे पिडारक की जड को पीस कर नसवार देने से तन्द्रिक सन्निपात दूर होता है।

## अञ्जन

सिरस के बीज, सैंधा नमक, मघपीपल, कालीमिर्च, लहसन, इनको बारीक पीस कर नेत्रो मे अञ्जन करे। अथवा लहसन, मनसिल, बच, इनको एकत्र कर गोमूत्र मे पीस कर ऑखो मे अञ्जन करे तो तन्द्रिक सन्निपात दूर होता है।

## चटनी

मघपीपल ६ मारो, शहद १ तोला, अदरक का रस दो तोला, इन तीनो को एकत्र मिला कर चाटने से तन्द्रिक तथा अन्य भी तेरह प्रकार के सन्निपात दूर होते है।

## कण्ठकुब्ज-सन्निपात लक्षण

सिर मे अत्यन्त पीडा होना, गला रुक जाना, शरीर मे अत्यन्त शीत और दाह(जलन) होना,ज्वर अधिक होना,मोह अर्थात् वार वार मूर्छा आना, शरीर कॉपना, शरीर मे रक्त और वायु की पीडा होना, मुँह के दोनो जावडे मिल जाना, रोगी को ताप अधिक होना, रोगी का विलाप करना, ये कण्ठकुब्ज के लक्षण होते हैं, इस प्रकार का कण्ठकुब्ज सन्निपात कष्ट-साध्य होता है।

## कण्ठकुब्ज-सन्निपात चिकित्सा

मच, कालीमिर्च, सोठ, कुडालफ,कोड, हरड, वहेडा, आमला, बॉसा, हलदी,दारुहलदी, इन सब का काढा वना कर पीने से कण्ठकुब्ज सन्निपात दूर होता है।

## दंतमर्दन ( मञ्जन )

कालीमिर्च, सैंधा नमक, चिरायता, इन तीनो को अच्छी तरह पीस कर दॉतो पर मलने से कण्ठकुब्ज सन्निपात दूर होता है।

## अष्टादशांग क्वाथ ( काढ़ा )

दशमूल, (शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कंटेरी, बड़ी कटेरी, भखडे, बिल्व की जड़, अरणी की जड, अरलू की जड़, गम्भारी की जड, पाडल की जड़), कचूर, काकडासिंगी, पोहकरमूल, भंडिगी, धमाहा, इन्द्रजौ, पण्डोलपत्र, कौड, इन अठारह चीजों का काढा बना कर पिलाने से कण्ठकुब्ज तथा अन्य भी सब प्रकार के सन्निपात दूर होते हैं, श्वास, खांसी, पार्श्वशूल ( पसली का दर्द ), वमन आदि दूर होते हैं, छाती साफ हो जाती है ।

## क्षुद्रादि क्वाथ ( काढ़ा )

छोटी कण्डियारी, रक्तचन्दन, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख, चिरायता, पापड़ा, कौड, पोहकरमूल, पण्डोलपत्र, डिगी, सोंठ, निम्बपत्र, वसूटी के पत्र, इन्द्रजौ, धनिया, इनका क्वाथ पीने से तेरह प्रकार के सन्निपात, वमन, खांसी, अफारा, हिचकी, प्यास, सिरशूल, तिजारी बुखार और खासकर कण्ठकुब्ज सन्निपात दूर होता है ।

## मुस्तादि क्वाथ ( काढ़ा )

नागरमोथा, सोंठ, पापडा, देवदारु, हरड, बहेड़ा,आमला, धमाहा, खस, त्रिवी, कमीला, कौंड, चिरायता, नेत्रवाला, मुलट्ठी, पिप्पलामूल, इनका काढा बना कर पीने से सन्निपात, शिर के रोग और खासकर कण्ठकुब्ज की पीड़ा दूर होती है ।

## अमृतादि क्वाथ (काढ़ा)

गिलोय, शालपर्णी, पृष्टिपर्णी, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, भखडे, बिल, अरणी, अरलू, गंभारी, पाडल, इन सबका काढा कर पिलाने से सब प्रकार के विशेष कर कंठकुब्ज सन्निपात दूर होता है एवं और भी सम्पूर्ण ज्वर नष्ट होते हैं ।

## भृंग्यादि क्वाथ (काढ़ा)

काकड़ासिगी, कुड़ासक, हरड, नागरमोथा, कचूर, वहेकड, भडिगी, पोहकरमूल, चिरायता, कौड़, हलदी, चित्रा, चव्य, मघ, कायफल, आमला,

कालीमिर्च, कंडियारी, देवदारु, वहेडा, इन सब को मिला कर काढा वना १ माशा मघ का चूर्ण बुरक कर पीने से कण्ठकुब्ज सन्निपात दूर होता है, यदि औषध अपना गुण न करे तो समझो भगवान् का कोई कोप है रोग नहीं ।

## नसवार

पुठकंडा के वीज पानी के साथ पीस कर नसवार लेने से कण्ठकुब्ज दूर होता है ।

अथवा—मघ, मिर्च, सोंठ को कडवी तुंबी के रस मे पीस कर नसवार देने से कण्ठकुब्ज सन्निपात दूर होता है ।

## कर्णिक-सन्निपात लक्षण

शरीर मे रक्त का अत्यन्त प्रकोप होता है, रोगी वकवास करता है, ज्वर वडा होता है, रोगी वहरा हो जाता है, गला रुक जाता है, सारे शरीर मे पीडा होती है, श्वास, खासी, मुख मे कफ भर जाता है, अतिसार होता है, कान के पीछे सोजा हो जाता है, पीडा अधिक होती है, इसे कर्णिक सन्निपात कहते हैं, ये सन्निपात भी कष्टसाध्य है ।

## कर्णिक-सन्निपात के साध्य असाध्य लक्षण

कर्णिक ज्वर के आरम्भ मे ही अगर कान की जड मे शोथ हो तो असाध्य होता है, यदि ज्वर होने के पॉच चार दिन वाद शोथ उत्पन्न हो तो कष्टसाध्य और यदि ज्वर हट जाने के वाद कर्णमूल मे शोथ हो जावे तो सुखसाध्य मानते हैं ।

## कर्णिक-सन्निपात चिकित्सा

दशमूल ( शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, वड़ी कटेरी, भखडे, विल, अरणी, अरलू , पाडल, गंभारी,) हरड़, देवदारु, इनका काढ़ा करके उसमे १ तोला अदरक का रस मिला कर पीने से कर्णिक सन्निपात दूर होता है ।

## अन्य काढ़ा

पोहकरमूल, कौड़, हरड, रायसन, मघ, मिर्च, सोंठ, वडी कंडियारी,

गिलोय, असन, भडिंगी, वच, इनका काढा कर पीने से कर्णिक सन्निपात तत्काल दूर होता है।

## अन्य उपाय

कर्णिक सन्निपात मे जोके लगवा कर कान का रक्त निकलवाना चाहिये, घी और कालीमिर्चे पिलानी चाहिये, इस प्रकार करने से कर्णिक सन्निपात दूर होता है।

## लेप

सैधा नमक, शिगरफ, हलदी, इन्द्रायण, देवदारु, कुठ सबको बारीक पीस कर आक के दूध मे मिला कर कर्णिक की सोज पर लेप लगाने से कर्णिक सन्निपात दूर होता है ।

## पुनः लेप

गुग्गुल, कुठ, कुडासक, चित्रे की जड़ की छाल, कालीजीरी, कसीस सब को पीस कर आक और थूहर के दूध मे मिलाकर कान की गाठ ( सोज ) पर लेप लगाने से कर्णिक सन्निपात तत्काल दूर होता है।

## अन्य लेप

पोहकरमूल, दन्ती, कुडासक, कसीस, चित्रे की जड की छाल इन सब को काजी मे पीस आक का दूध मिला कर कर्णमूल पर लेप लगाने से तत्काल कर्णिक सन्निपात की सोज मिट जाती है।

## पुनः लेप

त्रिजोरा ( किञ ) की जड़, अरणी की छाल दोनो को गोमूत्र मे पीस कर लेप करने से कर्णिक सन्निपात दूर होता है। और भी रक्त-विकार से कोई फोडा गाठ हो तो नष्ट हो जाता है।

## अन्य लेप

चित्रे की जड़ का छिलका, हलदी, धमाह, सरसो, सोठ, सैधा नमक, वच इन सबको गोमूत्र से पीस कर कर्णिक ग्रंथि पर लेप करने से कर्णिक सन्निपात दूर होता है ।

## पुनः लेप

सोठ, सरसो, सुहांजना की जड, इटसिट इन सबको कांजी के साथ पीस कर लेप करने से सब तरह के शोफ ( सोज ) मिट जाते है, और कर्णिक सन्निपात भी दूर होता है।

## अन्य लेप

धव ( धौं ) वृक्ष की छाल, अर्जुन वृक्ष की छाल, और कदम्ब वृक्ष की छाल इन तीनो को पीस कर लेप करने से पका हुआ भी कर्णिक-ग्रथि-रोग दूर होता है, अर्थात् ऊपर के लेपो के साथ कर्ण-ग्रंथि ( कनपेडे ) पक गये हो और पाक वगैरह उसमे से निकलती हो तो इस लेप से जखम सूखने लग जाता है और भरने लग जाता है, तथा पीडा वगैरह भी दूर होजाती है।

नोट—कुछ लोगो का मत है कि आजकल जो एक बीमारी जिसको कनपेडे, कनेडू अथवा 'भब्बू' कहते हैं, वह कर्णिक-सन्निपात ही है, परन्तु हमारे विचार मे यह मत ठीक नहीं मालूम होता, यद्यपि कनेडू रोग से भी कानो के पीछे जड़ मे सख्त और कठोर शोथ ( सोज ) हो जाता है, तो भी इस रोग मे कर्णिक-सन्निपात के और जो लक्षण हमने ऊपर बताए हैं वे नही मिलते, कनेडू रोग तो चलते फिरते मामूली लेप और सेक देने से सात दिन के करीब करीब ठीक हो जाता है, उसमे केवल २-३ दिन तेज बुखार होता है, अगर कोई खास इलाज न भी किया जाय तो भी हट जाता है, परन्तु कर्णिक सन्निपात को तो शास्त्र मे तीन महीने तक की मर्यादा लिखी है, हा यदि यही'कनेडू' रोग बिगड जावे तो कर्णिक सन्निपात का रूप धारण कर सकता है, इसमे कुछ सन्देह नही।

## कर्णिक अपथ्य ( परहेज )

कर्णिक सन्निपात मे ( जब नई अवस्था मे हो और रोगी अपने आपको बलवान् समझ कर स्त्री-संग करे तो रोग बहुत बिगड़ जाता जाता है, इस लिये रोग का पता लग जाने पर) स्त्री-संग बिलकुल त्याग देना चाहिये, दिन को सोना नही चाहिये, बहुत जल नही पीना चाहिये, ठण्डा जल भी नही पीना चाहिये, रात को जागना नहीं चाहिये, व्यायाम नही करना

चाहिये. सर्दी से बचना चाहिये, उड़द, गेहूं, तिल, तिलकुट, मसर, मटर, जौ और तेल इन का त्याग कर देना चाहिये, क्योंकि ये वस्तुएं कर्णिक रोगी को अत्यन्त दु:खदाई हैं। और रोग बढ़ाने वाली हैं। बैंगन, जमीकंद, लसन इस प्रकार के अन्य भी जितने कंद होते हैं वे नहीं खाने चाहिये, मास तथा सूखा साग ये भी नही खाने चाहिये।

## कर्णिक रोगी को पथ्य

पेठा. घिया तोरी, सियालियां, इनका व्यंजन ( साग भाजी ) अदरक डाल कर रोगी को देना चाहिये।

जो मनुष्य हर रोज सवेरे उठ कर नाक के रास्ते ठण्डा जल पीता है, उसे कभी कर्णिक रोग नहीं हो सकता।

## अन्य कट्फलादि क्वाथ

कायफल, मोथा. धावे के फूल, जायफल, पोहकरमूल, वच, चिरायता, पापडा, दारुहलदी, हरड़, काकड़ासिंगी, सोंठ पिप्पली, कौड़, कचूर, इन्द्रजौ, भडिंगी, धनियां इन सबका काढ़ा करके उसमे १ तोला अदरक का रस मिलाकर और २रत्ती असली हींग मिला कर पिलाने से कर्णिक सन्निपात, मन्यास्तम्भ ( गर्दन का अकड जाना ) कंठ का कफ, श्वासरोग, कफज्वर गंडमाला ( हंजीरा ), गलगंड ( गिल्हड़ ) सिर के रोग, बावरापन, गूँगापन खासी, हिचकी, स्वरभंग ( गला बैठना ), अभिन्यास ये सब रोग तथा अन्य भी कफ के जितने रोग होते हैं सब दूर होते हैं, यदि इस काढ़े मे दशमूल ( शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, भखड़े, बिल, अरणी, अरलू, गंभारी, पाडल ) मिला लिया जाय तो अस्सी किसम के वातरोग भी नष्ट हो जाते हैं।

## लेप

कुलथी, कायफल, सोंठ, पहाड़ी सौंफ, इन सब को पानी मे पीस कर गरम गरम लेप करने से कर्णिक सन्निपात की सोज दूर होती है।

## अन्य लेप

बिजौरे ( किंब ) की जड, अरणी, देवदारु, सोंठ, सैंधा नमक, रायसन,

इनका काढा पीने से और इन्हीं वस्तुओं का लेप बना कर कोसा कोसा बाँधने से कर्णिक सन्निपात दूर होता है।

## भुग्ननेत्र ( भुग्नदृग् ) सन्निपात लक्षण

ज्वर का वेग बहुत होना, रोगी का बकवास करना, चेतनता नष्ट हो जाना, श्वास का वेग भी अधिक हो जाना, नेत्र मुड जाना और सिकुड जाना, भ्रम होना, रोगी का विलाप करना, कॉपना, रोगी का शरीर सूना ( शून्य ) पड जाना, गले मे पीडा होना,सोज होना, इत्यादि लक्षण हो तो 'भुग्ननेत्र' अथवा 'भुग्नदृक्' सन्निपात होता है।

## भुग्ननेत्र सन्निपात चिकित्सा

निम्बपत्र, पण्डोलपत्र, कौड, हलदी, दारुहलदी, हरड, बहेडा, आमला, छोटी कटेरी, नागरमोथा, सौंफ, इनका काढा बना कर पीने से भुग्ननेत्र सन्निपात की पीड़ा नष्ट होती है।

## अन्य काढ़ा

धनिया, निम्बपत्र, पण्डोलपत्र, देवदारु, कौड, हरड, नागरमोथा, इन का काढा पीने से पित्त और वात के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर तथा भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है।

## अवलेह ( चटनी )

सोनामाखी की भस्म एक भाग, मघा दो भाग, चिरायता चार भाग, इन को शहद मे मिला कर एक या डेढ माशा चटनी चाटता जावे तो भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है।

नोट—सोनामखी की भस्म करने का तरीका पुस्तक के अन्त मे देखो। इस चटनी की एक बार खुराक मे दो रत्ती तक भस्म वेशक हो जावे, इसको इस तरह भी बना सकते हैं कि दो रत्ती सोनामखी भस्म, चार रत्ती मघ का चूर्ण और एक माशा चिरायते का चूर्ण, तीनो को शहद के साथ मिला कर चाटने को दे तो भुग्ननेत्र सन्निपात दूर हो जाता।

## अञ्जन

मघा, मनसिल, कालीमिर्च, इनको जल के साथ पीस कर नेत्रो मे

अञ्जन करने से भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है ।

### अन्य अञ्जन

वच, कालीमिर्च, हींग, मघा, महुआ, सैंधानमक, इन सब को पानी मे पीस कर आँखो मे अञ्जन करने से भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है ।

### नसवार

कालीमिर्च, वच, समुद्रभाग, मघा, हींग, इन को लहसनरस अथवा नागरमोथा के काढ़े से पीस कर नसवार बना ले, इस नसवार के सुंघाने से रोगी को चेतनता आती है, मूर्छा, तन्द्रा और भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है ।

### लेप

मघा, चिरायता, दोनों को पीस कर शहद के साथ मिला आँखो पर लेप करने से भुग्नदृग सन्निपात दूर होता है ।

### अन्य लेप

कालीमिर्च, मनसिल, हरताल वर्की, सैंधानमक, मघा, इन सब को अच्छी तरह पीस कर लहसन के पानी मे रगड़ कर आँखो मे अञ्जन करने से भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है ।

### नसवार ( सन्निपात-कलिका से )

सोंठ, दुपहरिया फूल, वच, इन को बारीक पीस कर नसवार देने से सिर का शूल और भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है ।

### पुनः नसवार

लहसन, दुपहरिया फूल, कालीमिर्च, असगन्ध, मघा, कड़वी तुम्बी के बीज, अदरक, वच, इन सब को गरम पानी से पीस नाक मे टपकाने से से भुग्ननेत्र सन्निपात, मोह, मूर्छा, कफज्वर, सिरशूल आदि दूर होते हैं ।

### अन्य काढ़ा

दशमूल, (शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, भखड़े, बिल, अरणी, अरलू, गम्भारी, पाडल), इन का काढा बना कर एक माशा मघां

और एक माशा पोहकरमूल का चूर्ण बुरक कर पीने से भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है और कफ के रोग श्वास,कास,ज्वर आदि दूर होते हैं ।

## अन्य काढ़ा

दशमूल ( शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, भखडे, बिल, अरणी, अरलू , गम्भारी, पाडल ), कालीमिर्च, कचूर, गिलोय, भंडिगी, इन का काढ़ा बना कर पीने से भुग्ननेत्र सन्निपात नष्ट होता है ।

## पुनः अष्टादशांग क्वाथ (काढ़ा)

निम्बपत्र,पोहकरमूल,काकडासिंगी,धनियां,कचूर, गिलोय, सोंठ, नागरमोथा, कौड, पाढ, चिरायता, नेत्रबाला, धमाह,पद्माख, लाल चन्दन, खस, कण्डियारी, मुनक्का, इन अठारह वस्तुओं का काढ़ा पीने से भुग्ननेत्र सन्निपात, जीर्ण (पुराना) ज्वर,मन्दाग्नि, श्वास, कास आदि रोग दूर होते हैं।

## दशांग काढ़ा

कौड़, इन्द्रजौ, सोंठ, चिरायता, धनिया, गज पिप्पली, देवदारु, नागरमोथा, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कंडियारी, बडी कंडियारी, भखड़े, बिल, अरणी, अरलू , गंभारी, पाडल इन सबका काढा बना कर पीने से भुग्ननेत्र सन्निपात दूर होता है, खासी, छाती का जकड जाना, दमा, उलटी, पसली की दर्द ( जातलजम ) यह रोग दूर होते हैं, रोगी सुखी हो जाता है।

## रक्तष्ठीवी-सन्निपात लक्षण

मुँह और नाक से खून निकले अथवा खून की उलटी हो, प्यास बहुत लगती हो, बुखार तेज हो, पेट मे दर्द हो, दस्त हो, अरुचि हो, रोगी बकवास करता हो, हिचकी हो, जीभ काली पड जावे और उस पर लाल लाल चकत्ते पड़ जावें, रोगी बेहोश हो, चक्कर आते हो, तो जानो कि रक्तष्ठीवी सन्निपात के लक्षण हैं ।

## रक्तष्ठीवी-सन्निपात चिकित्सा

पापड़ा, धनिया, पियावाँसा, बाँसा ( वहेकड ) कौड, चिरायता इनका काढा कर मिश्री मिला पिलाने से रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होता है ।

## अन्य काढ़ा

नेत्रवाला, पित्तपापडा, नख, श्वेत चन्दन, गिलोय, शतावरी, पीपल की लाख, इन्द्रजौ, महुआ, मुलट्ठी, नागरमोथा, रक्त चन्दन, इन सबका काढ़ा बना कर पिलाने से रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होता है, नाक, मुँह और भी किसी अंग से रक्त निकलता हो तो दूर होता है। भगवान् के नामस्मरण करने से जैसे पाप मिट जाते हैं।

## कुंकुमादि अवलेह ( चटनी )

केसर कश्मीरी, सोंठ, मिर्च, पीपल, काकड़ासिगी, पोहकरमूल, कायफल, इलायची, तोखाखीर इसे 'दूधपत्थर' भी कहते हैं, तमालपत्र, कस्तूरी, नागकेसर, दालचीनी, सब बराबर ले कर शहद में मिला चाटने से रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होता है, वात, पित्त, कफ, प्यास, जीभ का फूलना, हिचकी, दमा, खांसी, क्षयज्वर (तपदिक) दूर होते हैं, दग्ध अर्थात् जली हुई खुश्क बलगम हरी होती है और जले हुए पित्त भी हरे हो जाते हैं।

नोट—इस चटनी में केसर कस्तूरी पड़े हुए हैं, इसलिये इसकी मात्रा दो रत्ती से लेकर ३ माशा मधु से चटावे। अथवा रोगी को देख कर कुछ कम अधिक भी कर सकते हैं।

## अन्य काढ़ा

बाँसा ( बहेकड़-बसूटी ) का काढ़ा बना कर उसमें शहद मिला कर चाटने से दमा, खासी, नकसीर, रक्तष्ठीवी सन्निपात तथा शरीर के किसी भी अंग से निकलता हुआ रक्त बंद हो जाता है, इस औषध से रक्त का प्रवाह रुक जाता है।

## अन्य काढ़ा

बाँसा ( बहेकड़ ), पापड़ा, निम्ब, देवदारु, पृष्टपर्णी, नागरमोथां, सोंठ, इन्द्रजौ, वच, पिप्पलामूल, भखड़े, इन सबका काढ़ा करके पिलाने से रक्तष्ठीवी सन्निपात, श्वास, खासी, अतिसार ( दमा ) मन्दाग्नि, देह की पीड़ा ये सब रोग नष्ट होते हैं।

## नसवार

अनार की कली का रस, और दूब घास का रस निकाल दोनो को मिला नाक के रास्ते चढाने से रक्तष्ठीवी सन्निपात तथा रक्तपित्त (नकसीर) दूर होते हैं।

## अथवा

पखान भेद ( पत्थर फोडी ) के रस को घी मिला कर नाक के रास्ते चढाने से नाक मुँह का रक्त निकलना वंद हो जाता है, और रक्तष्ठीवी सन्निपात भी दूर होजाता है।

## अथवा

तुम्मे ( इन्द्रायण ) की जड ४ तोले, पोस्त की जड़ ४ तोले दोनो को गौ के दूध मे घोट कर पिलाने से रक्तष्ठीवी-सन्निपात दूर होता है।

## प्रलाप-सन्निपात लक्षण

रोगी कांपे, वकवास करे, ताप अधिक हो, शरीर के अन्दर और वाहर दाह हो, सिर मे अत्यन्त पीड़ा हो, रोगी पागल की तरह उठ उठ कर भागे, विना सोचे समझे वोलता जावे, भूतो के समान अगम की वातें करे, जीभ कठोर पड जावे, आखें लाल हों, और जो रोगी कहे कि मुझे छोड दो, मुझे जाने दो, तो जानो कि प्रलापक सन्निपात के लक्षण हैं।

## प्रलापक सन्निपात चिकित्सा

तगर, असगन्ध, पित्तपापडा, संखाहुली, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कंडियारी, वडी कंडियारी, भखडे, विल, अरणी, अरलू, पाडल, गंभारी, ब्राह्मी, भूतकेसी, नागरमोथा, अमलतास, मघ, मिर्चं, सोठ, हरड, मुनक्का, इनका काढा करके पिलाने से प्रलापक सन्निपात दूर होता है।

## अन्य काढ़ा

दशमूल, (शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी और वडी कंडियारी भखडे, विल, अरणी, अरलू, पाडल, गंभारी), पंडोल पत्र, देवदारु, सोठ, चिरायता, गिलोय, पाढ़ इनका काढा करके पिलाने से प्रलाप सन्निपात दूर होता है।

## मुस्तादि काढ़ा

नागरमोथा, दशमूल, ( शालपर्णी आदि दस औषधिया ) सोंठ, नेत्र-वाला, चन्दन, पापड़ा, वांसा ( वसूटी ) खस, ( इसमे कही-कही अमलतास मिलाना भी लिखा है ) इनका काढ़ा कर के पिलाने से प्रलापक सन्निपात दूर होता है, ये वडा गुणकारी काढा है ।

## पिप्पली आदि काढ़ा

मघ पीपल, पिप्पलामूल, चव, चित्रा, वच, जीरा, सोंठ पतीस, कौड़, पाढ़ ( जल जमनी ) कुड़ासक, रेणुका ( न मिले तो सम्मालू , के वीज डाले ) पडोल पत्र, मूर्वा, भड़िंगी, सरसो, काली मिर्च, पोहकरमूल, काक-ड़ासिंगी, आँक की जड, गज पिप्पल, छोटी वड़ी कंडियारी, भड़िगी, अज-वायन देसी, अजवायन खुरासानी, स्योनाक (अरलू-टाट पलागा) धमाहा इनका काढ़ा करके उसमे दो रत्ती भुनी हुई हींग मिलाकर पिलाने से, वात कफ ज्वर अस्सी वातरोग, प्रलापक सन्निपात, तन्द्रा ( घूर ) निद्रा रोमांच (रोंगटे खड़े होना-कंडाकडा खड़ा होना) वेहोशी, शरीर का सुन्न पड़ जाना, वकवास करना ये सब उपद्रव इस अष्टाविंशति नाम वाले काढ़े को पीने से दूर होते हैं ।

नोट—काढ़ा वनाने का तरीका हमने पीछे वता दिया है, पर यह वात भी याद रखनी चाहिये कि जिस स्थान पर काढ़े की चीजे अधिक हो अर्थात् तीन-तीन माशे के हिसाव से हर एक चीज ले लीजावे तो अठाईस चीजे सात तोले तक हो जावेगी तव इन सात तोले चीजो का सोलह गुणा पानी मे काढ़ा वनाकर रोगी को आधा काढा पिला दे, क्योंकि काढ़े के लिये सूखी चीजे मिला कर दो तोले से ४ तोले तक होनी चाहिये ।

## जातीफलादि चूर्ण

जायफल, जावित्री, तेजपत्र, इलायची, वायविडग, चोपचीनी, लौंग, मघ, कालीमिर्च, सोठ, पिप्पलामूल नागकेसर, वहेड़ा, देसी अजवायन, खुरासानी अजवायन, कत्था, अभ्रकभस्म, चिरायता, पोस्त की जड़, लोह भस्म, मीठा तेलिया, सव वस्तुएँ एक समान लेकर वारीक पीस ले जव एक जान हो जावे

तो आधा माशा से एक माशा तक यथाशक्ति शहद के साथ सुबह-शाम चटावे इस दवाई के सेवन करने से प्रलापक सन्निपात, देह की पीडा, ज्वर, दमा, खासी, सब रोग दूर होते हैं।

नोट—मूल पुस्तक मे इस दवा की मात्रा दो टंक ( ८ माशे ) लिखी हैं, पर यह मात्रा बहुत ही ज्यादह है, क्योकि इसमें फोलाद, अभ्रक और मीठा तेलिया ( विष ) भी पडता है, इसलिये इतनी मात्रा कभी नही देनी चाहिये। ऊपर जो हमने बताई है वह ठीक है और यदि शतावरी के रस की भावना दी जावे तो यह बहुत फलदायक हो जाता है।

## शार्दूल गुटिका ( चरक से )

सैंधा नमक, जीरा, वच, मघा, कालीमिर्च, वायविडंग, सोंठ, कुठ, हरड, चिरायता, अजमोदा, भडिंगी, चित्रा सब द्रव्य एक-दो तोला, पुराना गुड सब से दुगना ( २६ तोले ) लेकर कूट पीस कर सुपारी समान गुटिका बना ले, इस गोली को रोगी के मुँह मे रखा कर चूसने को दे, इसके सेवन करने से अस्सी वातरोग, प्रलापक सन्निपात, बवासीर भगंदर, वायुगोला शूल, हैजा, वादी का बुखार, हृदय रोग, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, पिशाच तथा बालग्रह शान्त होते हैं, सब प्रकार के विष ( जहर ) यन्त्र, मन्त्र सब विकार दूर होते हैं।

## जिह्वक सन्निपात लक्षण

जिस रोगी की जीभ कठोर हो गई हो और जीभ पर काटे-कांटे हो गये हो, सूख कर गले और तालु के साथ लग गई हो, रोगी को श्वास हो, खांसी हो, बल नष्ट हो गया हो, बुखार से व्याकुल हो रहा हो तो समझो कि 'जिह्वक सन्निपात' हो गया है।

## जिह्वक-सन्निपात चिकित्सा

कौड़, देवदारु, हलदी, नीम, बहेड़ा, हरड़, सोंठ, वासा ( बहेकड़ ), पोहकरमूल, नागरमोथॉ, पंडोल पत्र, गिलोय सब समान लेकर काढा बना कर रोगी को पिलाये. भगवान् की कृपा हो तो इसके पीने से जिह्वक सन्निपात दूर होता है।

## जीभ पर लेप

कालीमिर्च, सैंधा नमक, अकरकरा, अदरक इन सबको बारीक पीस कर जीभ पर मलने से जीभ के कांटे दूर होते हैं और जीभ हरी हो जाती है और श्वास कास को भी लाभ होता है।

## पाचन काढ़ा

पञ्चमूल ( बिल, अरणी, अरलू , गभारी, पाडल ) पटोलपत्र, पतीस, नागरमोथा, दोनों कंडियारी, नीम, चिरायता इन सब का काढा बना कर पीने से जिह्वक सन्निपात दूर होता है।

## अन्य लेप ( जीभ पर )

मघा, सैंधा नमक, चिरायता इनको पीस कर अदरक के रस से जीभ पर मर्दन करने से जिह्वक सन्निपात दूर होता है।

## अवलेह ( चटनी )

कस्तूरी, पिप्पलामूल, मघां, केसर, लौंग सबको पीस कर अदरक के रस से चटावे तो जिह्वक सन्निपात दूर हो।

## अन्य लेप

कालीमिर्च, तुलसी के बीज, सोंठ, अकरकरा, इन्द्रजौ, चिरायता सब को बारीक पीस कर बिजौरे के रस में मिला कर जिह्वा पर मलने से जीभ तर और हरी हो जाती है।

## अन्य लेप

कालीमिर्च, सैंधानमक, दोनों को बिजौरे के रस मे पीस कर जीभ पर लेप करने से जिह्वक सन्निपात दूर होता है, जीभ हरी और तर हो जाती है, रोगी स्वस्थ हो जाता है।

## अन्य गोली

सब, मिर्च, सोठ, कश्मीरी केसर, लौंग, जावित्री, इन सब को समान भाग लेकर पीस ले, पीछे खैर के काढ़े में भावना देकर गोली बना ले, अथवा समान भाग कत्था लेकर पानी के साथ या गुलाब जल के साथ खरल कर

दो-दो रत्ती की गोलिया बना ले,एक गोली रोगी के मुँह मे रखावे तो जिह्वक सन्निपात तथा अन्य भी मुखरोग दूर हो जाते हैं।

## गण्डूष ( गरारा, कुरला )

सोठ, चित्रा, चत्र, छोटी इलायची, मघ, चम्बेली के पत्ते, धनियां, नीम के पत्ते, पिप्पलामूल, हरड, बहेडा, आमला, तिलतेल, बिजेसार, मुश्कबाला, सब को पीस कल्क बना ले, पीछे से कण्डियारी का काढा बना कर उसमे ऊपर की चीजो के कल्क को घोल कर गरारे करावे।

अथवा—ऊपर की चीजो का काढा कर ले और उस काढ़े मे कण्डियारी का रस मिला कर गरारे कराए, इस प्रकार गरारे करने से जिह्वक सन्निपात बहुत शीघ्र नष्ट हो जाता है, जिह्वा के काँटे दूर हो जाते हैं, शरीर शुद्ध हो जाता है।

## अभिन्यास-सन्निपात लक्षण

तीनो दोषो का प्रकोप होता है, मुख चिकना हो, नींद बहुत आती है, किसी समय रोगी बडी मुश्किल से कुछ बोल पाता है, रोगी व्याकुल होता है और बेहोश पडा रहता है, न कुछ देख सकता है, न कुछ सुन सकता है, न कुछ कर सकता है, न कुछ समझ सकता है, गले मे कफ खड़खड़ करता है बलक्षीण हो जाता है, श्वास का वेग बढ़ जाता है, इस काल-समान ज्वर को अभिन्यास सन्निपात कहते हैं, इसका रोगी कठिनता से कोई बचता है, प्राय: सब मर ही जाते हैं।

## अभिन्यास-सन्निपात चिकित्सा

सोठ, हीग, दोनो को भागरे के रस मे हल कर के मुख मे रखावे, यह दोनो चीजे कड़वी और तीखी होती हैं, इस लिये मुँह मे रखने से सारी चिकनाहट और बलगम दूर हो जाती है, बेहोशी दूर हो जाती और चेतनता आ जाती है।

## नसवार

कालीमिर्च, सैंधा नमक, मघपिप्पली, भूतकेसी, महुआ, कायफल इनको गरम पानी मे पीस कर कोसी-कोसी नसवार लेने से रोगी को चेतन

आती है और अभिन्यास ज्वर दूर होता है।

### अंजन

लहसन, कालीमिर्च, मघ पीपल, वच, सैंधा नमक, सोंठ, सिरस के बीज इन सबको गोमूत्र में पीस आंखों में अञ्जन करने से अभिन्यास सन्निपात दूर होता है।

### काढ़ा

दारु हलदी, नागरमोथा, कौड़, हरड, बहेडा, आमला, कंडियारी, पंडोल पत्र, हलदी, नीम इनका काढ़ा बना कर पिलाने से अभिन्यास सन्निपात दूर होता है।

### लेप

१-केसर को बिजोरे निम्बु के रस के साथ अथवा २-सैंधा नमक, मघ, मिर्च सोंठ इनको अदरक के रस में मिला कर मुंह में रखने से वात और कफ के विकार दूर होते हैं, गले से कफ निकलता है, मुंह साफ हो जाता है, जीभ भी ठीक हो जाती है, दमा, खांसी और अभिन्यास दूर होते हैं। इस औषध से गले की रगों में और छाती में अड़ा हुआ कफ पतला होकर बाहिर निकलता जाता है, हृदय शुद्ध हो जाता है, इस जरूरत पर एक बार या दो तीन बार अथवा बार बार भी प्रयुक्त कर सकते हैं।

### अन्य

कालीमिर्च, हरड, चव, सैंधा नमक इनको पीस मुंह के अंदर मलने से अथवा मुंह में रखने से छाती, गले की रगों और मुंह का सारा कफ निकल जाता है, मुख शुद्ध हो जाता है, और अभिन्यास ज्वर दूर हो जाता है।

### दाहकर्म ( दागना )

अभिन्यास ज्वर में यदि रोगी को दिन रात ठंडा पसीना ही पसीना आवे, शरीर ठंडा पड़ जावे और बेहोशी होवे तो बिच्छू बूटी के पत्ते अथवा कौंच ( गजूली ) की फलियां शरीर पर रगडें, इससे जब खाज होगी तो रोगी को चेतन आवेगी बेहोशी दूर होगी, और गरम गरम रेत की पोटली से

सारे शरीर को सेके और सिर पर गरम गरम हलवा ( कडाह ) बना कर बांधे, अगर रोगी को इससे भी चेतनता न हो तो पाओ की तलिया अथवा टखनो के नीचे दोनो ओर गरम-गरम लोहे की सलाई से दाग दें, और माथे पर पैसा अथवा और कोई गोल वस्तु बहुत गरम करके दाग दे, इस प्रकार करने से रोगी को होश आजायगी, सब से पहले बाएं पाओ के अँगूठे अथवा हाथ का गुट्ट ( कलाई ) दागना चाहिये, यदि इनके दागने पर भी होश न हो तो पहला तरीका अर्थात् दोनो पाओ और सिर वाला बरतना चाहिये।

संसार मे मृत्यु का कोई इलाज नही, इलाज तो बीमारियो के होते हैं, इसलिये मृत्यु के मुँह मे पहुँचने वाला कोई असाध्य रोगी मर जाता है तो वैद्य को कोई दोष नही होता, जो वैद्य को दोष दे वह मूर्ख और गंवार होता है,जो पैदा होता है वह अवश्य ही मरता है, क्यो कि सँसार मे सब के आदि अन्त लगे हुए है, तभी तो भगवान् रामचन्द्र और रावण आदि भी काल-वश हुए, यदि इस काल का यत्न होता तो लुकमान हकीम क्यो मरते और आदिवैद्य धन्वन्तरि महाराज भी जीते रहते ? इस लिये काल का सोच नहीं करना चाहिये, होनहार अवश्य होकर रहती है।

## काढ़ा

काकडासिगी, धनिया,जवाहा, कचूर, पोहकरमूल, भडिंगी, बसूटी, इनका काढा करके पिलाने से अभिन्यास सन्निपात दूर होता है।

## पसीने का उपाय

कुलथी को भूनकर पीसले और सारे शरीर पर मर्दन करने से सारे शरीर का पसीना दूर होता है, इस का बार-बार शरीर पर धूड़ा करना चाहिये, जैसे-जैसे जहा पसीना निकले वहा-वहा इसका धूडा करते जावे तो बहुत लाभ होता है।

## काढ़ा

मजीठ, मूली, बिलगिर, कचूर, करञुआ, हलदी, सोठ, कंडियारी, त्रायमाण, बासा ( बसूटी ) कालीमिर्च, मघा, इनका काढ़ा बना कर पिलाने

से अभिन्यास सन्निपात तथा सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

### अन्य वांसा आदि काढ़ा ( सन्निपात-कलिका से )

वांसा, सैंधा नमक, बिल की छाल, एरण्ड की जड़ का छिलका, सोंठ, पखान भेद, पाढ ( बटोड्डु कटोरी, जल जमनी इसके नाम हैं ) इन सब का काढ़ा करे और सैंधा नमक पीछे से मिलावे और इस काढ़े मे २-३ तोले गोमूत्र मिला कर पिलावे तो कफ, खासी, और अभिन्यास-ज्वर दूर होता है।

### अन्य काढ़ा

त्रायमाणा, पोहकरमूल, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी,छोटी कटेरी, बडी कटेरी, भखडे, बिल, अरणी, अरलू, गंभारी, पाडल, सोंठ, भडिंगी, ऐरण्ड की जड, सौंफ गिलोय, वासा (बसूटी) इनका काढा कर उसमे ४तोले गोमूत्र मिला कर प्रभात काल पिलाने से अभिन्यास सन्निपात, कफ, वादी, खासी बुखार बेहोशी दूर होती है, रोगी को चेतनता आ जाती है।

### अन्य काढ़ा

काकडासिंगी, इटसिट, धमाहा इनका काढ़ा कर पीने से कफ, वादी, खांसी, हृदय की पीडा और अभिन्यास-ज्वर दूर होता है।

### अन्य काढ़ा

कंडियारी, सोंठ, कचूर, धमाहा, भडिंगी, काकडासिंगी, पोहकरमूल इन का काढ़ा कर पीने से अभिन्यास-ज्वर, हृदय रोग, कफ ज्वर दूर होते हैं।

### अन्य काढ़ा

रायसन, नागरमोथा, सोंठ, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कंडियारी, बडी कंडियारी, भखडे, बिल, अरणी अरलू, गंभारी, पाडल, मर्वा, भडिंगी और बिल इनका काढा कर उसमे दो रत्ती हींग, १ तोला अदरक का रस और ३ माशा मघ का चूर्ण मिला कर पिलाने से, अभिन्यास सन्निपात दूर होता है। शूल, पार्श्वशूल ( जातलजम, न्युमोनिया ) अफारा और वादी कफ के रोग दूर होते हैं।

### नसवार

सैंधा नमक, बिड़ नमक, सोंचल नमक, अदरक का रस और बिजौर

निम्बु का रस सब को घोल कर गरम कर नाक मे टपकाने से अभिन्यास-ज्वर तन्द्रा आदि रोग नष्ट होते है।

## अन्य उपाय

३ रत्ती अच्छी हींग, तीन माशे सोंठ, दोनो को बारीक कर अदरक रस तोला भर मे मिला कर रोगी को पिलावे तो तत्काल अभिन्यास सन्निपात दूर होता है। जैसे राम नाम जपे पाप मिट जाते हैं।

नोट—असली हींग को हीरा हींग भी कहते हैं, असली हींग की चमकदार डली होती है, उसकी १-३ रत्ती खूराक काफी होती है, बाजार मे जो आम तौर पर हींग मिलती है वह नकली पत्थर और आटे की मिलावट वाली हींग होती है जो घुल कर सफेद पानी की तरह हो जाती है।

## वृद्ध कुंकुमादि वटी

मैनफल (राडा) कश्मीरी केसर, जायफल, छड, उटंगण के बीज, चिरायता, जावित्री, दालचीनी, शंखपुष्पी, भखडा, ब्राह्मी (भडिगी), लौंग, अजवायन, तेजबल, पोहकरमूल, सब समान भाग ले, मुनक्का सब से दुगना लेकर कूट कर दो-दो माशे की गोली बना ले, इस गोली को मुँह मे रखने से तेरह प्रकार के सन्निपात, कफ के रोग, शिर की पीडा, हाथ-पाओ, पीठ आदि सब स्थानो की पीडा दूर होती है, पाण्डु रोग, मूर्छा, वार-बार पसीना आना कफ की खासी और दमा यह सब दूर होते हैं।

## नासकेत रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष ( मीठा तेलिया ) मघ, कालीमिर्च, सोंठ, प्रथम पारा, गन्धक की कज्जली करे पीछे अन्य वस्तुओ को बारीक कर मिलाएँ जब एक जान हो जावे शीशी मे रखले, और इसमे से १ रत्ती दवाई लेकर रोगी को नसवार देने से अभिन्यास-ज्वर, मूर्छा, तन्द्रा आदि उपद्रव नष्ट होते हैं।

## हारिद्र-सन्निपात कारण-संप्राप्ति

जब वायु कफ को सुखा दे तो पित्त बढ कर बाहर निकल आता है और पित्त के प्रकोप से हारिद्रक सन्निपात उत्पन्न होता है।

## हारिद्रक-सन्निपात लक्षण

जिस रोगी के नाखून, आंखे, पेशाब, टट्टी, थूक, मुंह, हाथ, चमड़ी और सारा शरीर ही पीला हो, और जिसे अत्यन्त असाध्य दाह हो, ये लक्षण हो तो हारिद्रक सन्निपात होता है।

## हारिद्रक-सन्निपात चिकित्सा

हारिद्रक सन्निपात मे रोगी को विरेचन ( जुलाब ) ही देने चाहिये, इस रोग की यही दवाई है, वैद्य को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि पित्त के रोग जुलाब देने से दूर हो जाते हैं, यह पित्त का सन्निपात है इस-लिये इस सन्निपात मे बढे हुए पित्त को शान्त करने के लिये जुलाब ही देते जाना चाहिये और रोगी को कच्चा पानी नहीं पिलाना चाहिये, रोगी को हर हालत मे गुलाब का अर्क अथवा मकोय का अर्क पीने को देते रहना चाहिये।

## हारिद्रक-सन्निपात में काढ़ा

मुनक्का, पित्त पापड़ा, खस, धनिया, गिलोय, चिरायता, कौड, नेत्रबाला इनका काढ़ा कर पिलाने से हारिद्रक सन्निपात नष्ट होता है।

## अन्य काढ़ा ( सन्निपातकलिका से )

त्रायमाण ( शिमला और सोलन की पहाडियों पर मिलती है, लोग इसे त्रामण कहते हैं, इसके नीले-नीले फूल होते हैं ) महुआ, गिलोय, पिप्पलामूल, बासा (बहेकड) नागरमोथां, नीम, चिरायता, कौड इनका काढ़ा बना शहद मिला ठण्डा कर पिलाने से हारिद्रक-सन्निपात दूर होता है, प्यास दूर होती है, पीलापन दूर होता है।

## अन्य काढ़ा

हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, नीम, चिरायता, बासा, दारु हलदी इनका काढ़ा बना पीने से हारिद्रक सन्निपात पाण्डु रोग, पित्त की बवासीर, ये रोग दूर होते हैं।

## अन्य काढ़ा

त्रिवी, इन्द्रायण ( तुम्मा ) की जड, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, कौड, मच, कालीमिर्च, सोठ, पित्त पापड़ा इनका काढ़ा बना उसमे तोला

भर अमलतास का गूदा मिला कर कुछ दिन पिलाने से रोगी को नित्य दो-चार दस्त हो जाते हैं और हारिद्रक-सन्निपात दूर हो जाता है।

## हारिद्रक-सन्निपात तथा पित्त-ज्वर-हर ज्वराङ्कुश

सीसा ( इसे पञ्जाबी मे सिक्का भी कहते हैं, ) लेकर आग पर पिघला कर सौ वार मीठे तेल मे बुझावे फिर गरम पानी मे उबाल ले, फिर उसमें से ५ तोले सिक्का लेकर आग पर पिघलावे, जब पिघल जावे तो उसमे ५ तोले शुद्ध पारा मिला कर खरल मे रगड़े,जब एक जान हो जावे तो घड़े के ठीकरे मे डाल आग पर चढावे और वांसा की मोटी लकड़ी से रगड़ता जावे, भस्म हो जावे तो उतार कर फिर वाँसा का रस देकर टिकिया वनाले और प्यालो मे वँद कर १० सेर उपलो की आग दे, इस प्रकार ३ आग दे, पीछे उसे पानी से धोले, नितरे हुए पानी को निकाल दे और भस्म को सुखा ले, इस मे से ६ माशे ले और ६ माशे रस सिन्दूर दोनो को खूब खरल कर, वड़ी इलायची, लौंग, मच, भाग, सोंठ, इन सब का एक-एक तोला चूर्ण मिला कर तीन दिन तक गुलाब, केवडे के अर्क मे खरल करे, फिर २-३ रत्ती दवा लेकर उसमे थोड़ी खाड मिला कर ठण्डे पानी के साथ खावे तो हरिद्रक सन्निपात दूर होता है।

## अनुपान तथा सहपान

जैसे खाली कटोरी मे तेल की बूँद पानी विना नहीं फैल सकती इसी प्रकार विना अनुपान के औषधी शरीर मे नहीं फैलती अर्थात् अनुपान के विना औषधी शीघ्र अपना पूरा-पूरा प्रभाव नहीं दिखाती इस लिये प्रत्येक औषधी के साथ अनुपान अवश्य लेना चाहिये। अनुपान वह होता है जो दवाई के पीछे पिया जाता है, जैसे वदहजमी मे हिंग्वादि चूर्ण खाकर ऊपर से गरम पानी पिया जाता है। दूसरा 'सहपान' होता है, जो दवाई के साथ खाया जाता है, जैसे कोई दवाई शहद से मिला कर खाई जाती है तो कोई काढ़े अथवा शर्बत आदि मे मिलाकर खाई जाती है।

## सन्निपात में जल-विधान

सन्धिक, शीताङ्ग, कण्ठकुब्ज, अभिन्यास, कर्णिक सन्निपात मे रोगी को गरम पानी देना चाहिये, अन्य सन्निपातो मे पानी को ठण्डा करके

रोगी को पीने के लिये दे।

## सन्निपात आयु

१—सन्धिक सन्निपात की ७ दिन, २—अन्तक की १० दिन तक, ३-रुग्दाह सन्निपात की २०दिन,४—चित्त भ्रम, की ३वर्ष,५—शीताङ्ग की एक पक्ष (१५ दिन), ६—तन्द्रिक की२५ दिन, ७—कण्ठकुब्ज की १३ दिन, ८—कर्णिक की ३महीना, ९—भुग्ननेत्र की आठ दिन तक, १०—रक्तष्ठीवी की १० दिन, ११—प्रलापक की १४ दिन, १२—जिह्वक की सोलह दिन, और अभिन्यास सन्निपात की १५ दिन तक परम-आयु बतलाई है, इस काल मे रोगी जी सकता है अथवा मर सकता है। अर्थात्—सन्धिक सन्निपात की जितनी परम आयु ( ७ दिन ) कही है, इन ७ दिनो मे यदि दोषो का प्रकोप अधिक होगा तो सन्धिक सन्निपात का रोगी ७ दिन के अन्दर-अन्दर मर जायगा, और अगर दोषों का प्रकोप अधिक न हो रोग के लक्षण भी सारे प्रकट न हों, रोगी मे रोग सहने की शक्ति हो, मलपाक हो जावे पर धातुपाक न होवे, तो सात दिन मे सन्धिक सन्निपात दूर हो जावेगा और रोगी राजी और तन्दुरुस्त हो जावेगा। इसी तरह बाकी १२ सन्निपातो मे भी जानना। परम आयु का अर्थ यह है कि जिस सन्निपात की जितनी मर्यादा कही है वह सन्निपात उस मर्यादा तक रोगी पर अपना असर दिखा चुकता है अगर अभिन्यास की १५ दिन मर्यादा है, तो अभिन्यासरोगी पंद्रहवीं रात को या तो अवश्य मर जायगा, या बच जायगा, सोलहवे दिन अभिन्यास का खतरा नहीं रहेगा, पर यह जरूरी नहीं कि पंद्रहवीं रात को ही रोगी मरेगा, अथवा स्वस्थ हो जावेगा, यह तो दोषो के प्रकोप पर है, अगर दोषो का प्रकोप अधिक होगा, रोग बिगड़ जाय तो अभिन्यास रोगी दूसरे, तीसरे, चौथे अथवा किसी भी दिन में मर सकता है, यदि रोग हलका हो तो दूसरे, तीसरे, चौथे अथवा किसी भी दिन तक तन्दुरुस्त हो सकता है परन्तु अपनी जो उसकी मर्यादा है उससे अधिक नहीं जा सकता, इसी लिये इस मर्यादा को परमायु कहा है।

## साध्यासाध्य लक्षण

१ सन्धिक, २ तन्द्रिक, ३ कर्णिक, ४ कण्ठ कुब्ज, ५ जिह्वक, ६ चित्त-

विभ्रम ये छः सन्निपात साध्य होते हैं, बाकी सात १—अन्तक, २—रुग्दाह ३—शीताङ्ग, ४—भुग्ननेत्र, ५—रक्तष्ठीवी, ६—प्रलापक, ७—अभिन्यास, ये सात सन्निपात असाध्य होते हैं ।

## सन्निपात मे पथ्य

खाने को पुराने गेहूँ और पुराने बासमती के चावल, गौ का दूध, घी चौलाई का साग, परवडोल, घिया, मूंग और मोठ का यूप, सैंधा नमक, नारियल का पानी, अनार, मुनक्का ( अंगूर ) और मालिश के लिये लाक्षादि तैल और नारायण तेल, और भी यथायोग्य उपचार करना चाहिये, वात और कफ अधिक हो तो गरम चिकित्सा करनी चाहिये, इसी प्रकार हंसोदक ( हंसोदक उसे कहते हैं जो दिन भर तो सूर्य की किरणो से तप्त होता रहे, और रात भर चन्द्रमा की किरणो से शीत होता रहे, शरद् ऋतु [ असौज, कार्तिक] मे ऐसा शुद्ध जल मिलता है ) खजूर तथा मस्तक पर ठण्डे जल का लिरड़ा अथवा कपडा तर कर के बार बार रखना चाहिये, आजकल तो बड़े बड़े नगरो मे बरफ की थैली सिर पर रखते हैं, उससे पूर्ण लाभ नही होता, सब से अच्छा तरीका यह है कि अर्क गुलाब और सिरका दोनों बराबर एक बर्तन मे मिला कर बरफ अथवा ठण्डे पानी मे उस बर्तन को रख छोड़े और बार बार उसमे कपड़ा तर कर के रोगी के सिर पर रखता जावे, जब कपड़ा गरम हो जावे तो दूसरा कपड़ा रखे, इस प्रकार से रोगी के दिमाग़ मे गरमी खुश्की नहीं चढ़ती और भी जो उचित समझे करे ।

## सन्निपात में कुपथ्य

बेगन, पेठा, माष ( उड़द ), मटर, मसूर, सरसो, तिल, स्नान, काजी, इनका त्याग कर देना चाहिये, विष्टम्भी अर्थात् कब्ज करने वाला भोजन नहीं करना चाहिये, स्त्री का संग न करे, केले का फल न खावे ।

## मधुरज्वर लक्षण

मधोरा अथवा मधुरज्वर को मन्थर ज्वर, तोरकी, मुबारकी, फूलमाता मोती भरा, तप मुहरका भी कहते हैं, इस ज्वर मे दाह होता है, भ्रम चक्कर

आते हैं, उलटिया आती हैं, प्यास अधिक होती है, नींद,तन्द्रा ( गनूदगी ) भी अधिक होती है, दस्त लग जाते हैं, दांत और जीभ काले पड जाते हैं, गला पक जाता है, मुँह भी रक्त वर्ण का हो जाता है, अथवा मुँह से वार-वार रक्त निकलता है, थोडा-थोडा मूत्र उतरता है, पित्त का अधिक प्रकोप होता है, रोगी अति व्याकुल हो जाता है, गले और छाती पर छोटी-छोटी श्वेत-सरसो के समान श्वेत-श्वेत चमकदार फिंसियां निकल आती हैं। जिह्वा वीच से मैली और किनारो से लाल होती है।

## मधुर-ज्वर के भेद

मधुर-ज्वर तीन प्रकार का होता है, १ वात दोष से काले रङ्ग की फिंसियो वाला,२ पित्त दोष से पीले रङ्ग की फिंसियो वाला और ३ कफ दोष से श्वेत वर्ण की फिंसियो वाला होता है।

## कृष्ण-मधुरज्वर के लक्षण

खांसी,श्वास,ताप हो,नेत्रो से आँसू वहे,रोगी का लस्सी और राख पर वार-वार जी चलता है, अर्थात् रोगी लस्सी और राख को मांगता है, होंठ, दांत जीभ सब काले पड़ जाते हैं, छाती गले पर निकलने वाली फिंसियो का रंग भी काला पड़ जाता है। ये वातज कृष्ण-मधुरज्वर के लक्षण हैं।

## कृष्ण-मधुरज्वर चिकित्सा

खैर कत्था,अनार के फूल,दोनो चार-चार टंक, कपूर १ माशा सब को पान के रस मे खरल कर चने वरावर गोली वना रोगी के मुख मे रखावे, इस गोली को चूसने से श्वास, कास युक्त कृष्ण-मधुरज्वर दूर होता है।

## पीत-मधुरज्वर के लक्षण

जिह्वा फट जाती है और उस पर पीले रङ्ग की धारियां पड़ जाती हैं, फुंसियों का रङ्ग भी पीला पड़ जाता है, शरीर मे दाह होता है, ताप अधिक होता है, प्यास होती है, मूर्च्छा होती है, रोगी का मन वार-वार स्त्री-संग करने को चाहता है। इसी प्रकार पित्त के अन्य विकार भी प्रकट हो जाते हैं, यह पित्त का मधुरज्वर होता है।

## पीत-मधुरज्वर चिकित्सा

रक्त चन्दन, नागरमोथा, सफैद चन्दन, पापडा, नेत्रवाला, हलदी अथवा प्रियंगु, सोठ, चिरायता इनका काढा बना शीतल कर पीने से, पीत-मधुरज्वर, दाह, तृष्णा, मूर्च्छा तथा अन्य भी पित्त के विकार नष्ट होते हैं।

## पुनः काढ़ा

रक्त चन्दन, नेत्रवाला, काला जीरा, सफेद जीरा, पोहकरमूल, पापड़ा नागरमोथा, मुलठी, नीलोफर, मुनक्का, इन का काढा करे, आठवा हिस्सा बाकी रहे तो उतार मल छान शीतल कर उसमे चार माशे खालिस शहद मिला कर रोगी को पिलाने से पित्त का मधुरज्वर तत्काल दूर होता है, मूर्च्छा, दाह, वमन (उलटी) आदि सब विकार दूर होते हैं, मुनियों ने यह सिद्ध योग बताया है।

## श्वेत-मधुरज्वर के लक्षण

होठ, जीभ सफेद हो, शरीर पर की फुंसिया मोतियों के समान स्वच्छ और सफेद हो, रोगी को निद्रा तथा तन्द्रा अधिक हो, अन्य भी कफ के विकार हो तो जानो कफ का मधुरज्वर है।

## कफ-मधुरज्वर चिकित्सा

कालीमिर्चे ३ अथवा ७ दाने, सफेद जीरा ३ माशे, इन दोनो को तुलसी के रस के साथ पीस कर पिलाने से कफ का मधुरज्वर नष्ट होता है।

## सब प्रकार के मधुरज्वर की चिकित्सा

नारियल की जटा, खस ( मूल पुस्तक मे खस खास लिखा है, परन्तु खसखास डालते कोई देखा नही, ये नुसखा बहुत प्रसिद्ध है, अनपढ देहाती लोग भी इस बुखार मे इसी नुसखे को पिलाया करते हैं, वे सब लोग खस ही डालते हैं, खस एक प्रसिद्ध घास की खुशबूदार जडें होती हैं, नारियल फल के भी ऊपर की जटा लेनी चाहिये, अन्दर का खोपरा नहीं, खसखास और खोपरा दोनो तेल वाली चीजें हैं, इनको नुसखे मे मिलाने से खासी का अधिक भय रहेगा, कछुए की खोपरी, (पीठ की हड्डी), इलायची छोटी, तुलसी के पत्ते, लौंग इन सब को गोबर के रस मे घोट कर प्रातःकाल

पिलाने से सब प्रकार का मधुरज्वर दूर होता है रोगी बहुत शीघ्र स्वस्थ होकर दीर्घायु प्राप्त करता है । इस नुसखे को इस हिसाब से बनावे—नारियल की जटा ३ माशे, खस ३ माशे, तुलसी पत्र ३ अथवा ५, लौंग ३ नग, इलायची अच्छी ३ अथवा ५, इन सब वस्तुओं को बारीक कर ३ तोले गोबर के रस मे घोट कर छान ले फिर इस छने हुए रस मे थोड़ी सी कछुए की खोपरी घिस ले और रोगी को पिलादे इस नुसखे को रोगी का बल देख कर कम अथवा अधिक मिकदार मे दे सकते हैं, कोई-कोई वैद्य इसको गोबर की बजाए गंगाजल में रगड़ कर पिलाते हैं, और मुनक्के के बीज निकाल कर उसमें एक छोटा सा असली मोती मिला रोगी को खिलाते हैं,इस से फिसियां जो शरीर के अन्दर हों बाहिर निकल आती हैं, और बुखार आदि दूर हो जाता है । मुनक्के के दाने मे १ रत्ती असली केसर मिला कर देने से भी दाने निकल आते हैं और रोगी स्वस्थ हो जाता है ।

### अन्य दवाई

मरी हुई मखी १, जीरा सफेद ३ माशे दोनों को गोबर के रस में पीस कर रोगी को पिलाने से मधुर-ज्वर दूर होता है ।

### अन्य दवाई

श्वेत जीरा ३ माशे, श्वेत चन्दन ३ माशे दोनों को गंगाजल अथवा सादे पानी मे पीस कर छान ले और उसमे बारहसिंगा घिस कर रोगी को पिलाने से मधुर-ज्वर दूर होता है ।

### अन्य दवाई

सफेद जीरा, गिलोय, पद्माख, इन्द्रजौ, चिरायता, इलायची इन सब को पानी मे पीस कर पिलाने से मधुर-ज्वर दूर होता है ।

### अन्य दवाई

३ तोले गधे के लेडने के रस मे ६ माशा सफेद जीरा पीस कर रोगी को पिलाने से मधुर-ज्वर दूर होता है ।

### अन्य दवाई

कीकर के फूल पाँच टङ्क, भंगरा पाँच टङ्क, दारु हलदी, सुहागा भुना

हुआ, फटकरी भुनी हुई सब तीन-तीन टङ्क सब को वारीक कपडछान कर शहद मे मिला कर चटनी के समान थोडा-थोडा चटाने से सात दिन मे सफेद, पीला, काला सभी प्रकार का मधुर-ज्वर दूर होता है।

इति सौदामिनीभापाभाष्य सन्निपात-चिकित्सा तीसरा अध्याय समाप्त।

---

# अथ चौथा अध्याय।

## अतिसार निदान

वहुत भारी, चिकनी और रूखी वस्तुओ को अधिक खाने से, वहुत ज्यादह भोजन करने से, शराव पीने से, गन्दा पानी पीने से, ऋतु विकार से, वहुत देर तक पानी मे नहाने से, तैरने से, मलमूत्र के वेगों को रोकने से वद परहेजी करने से, विष के खाने से, भय से, शोक से मनुष्यो को अतिसार रोग हो जाता है। अतिसार दस्तो को कहते हैं, रोगी को वार-वार दस्त आते हैं।

## असाध्य अतिसार लक्षण

श्वास हो, मूर्च्छा हो, दाह हो, उलटियां आती हों, प्यास अधिक हो, पेट मे शूल अधिक हो, दस्त अधिक आते हों, पाओं मे सोज पड गई हो, हिचकी हो, दस्त अधिक आने से गुदा दुखने लग (अंव) गई हो, वुखार भी साथ हो तो अतिसार असाध्य जानना चाहिये।

## वात अतिसार के लक्षण

पेट वंद हो, अनपच हो, आम पडती हो, पेट मे गुड़-गुड़ का शब्द हो, मल भागदार और कुछ लाल हो, पेट की वाई तरफ पीडा हो और वार-वार पाखाने वैठे तो वात का अतिसार जानो।

## शूलातिसार को तालीसादि चूर्ण

इलायची, काकडासिंगी, हरड, कचूर, मुनक्का, तालीसपत्र, तमाल पत्र, खजूर, मघा, मिर्च, सोठ, अनारदाना, तेजपत्र, काला जीरा, सफैद जीरा,

नागकेसर, जायफल, कंडियारी, तवाशीर, लौंग सब समान भाग पीस कर कपडछान करले और सब के बराबर मिश्री पीस कर मिलाले, इस ताली-सादि चूर्ण को ३-४ माशे खाने से श्वास, कास, पुराना बुखार, बवासीर, अतिसार, शूल, मंदाग्नि, बदहजमी, नकसीर, चक्कर आना, मद, पाण्डु रोग, अम्लपित्त, अरोचक, पेट के रोग, सब प्रकार के बुखार तथा अन्य इसी प्रकार के रोग दूर होते हैं।

## अन्य दवाई

मघ, मिर्च, सोंठ, नागरमोथा, कौड़, पतीस, सोंठ, सैंधा नमक, हींग, नागरमोथां, सब समान ले चूर्ण कर ३ माशे गरम पानी से दे तो वात का अतिसार, जोड़ो की पीडा, गठिया, पेट दर्द आदि सब रोग दूर होते हैं।

नोट—जिस नुसखे मे एक वस्तु दो बार कही हो वह दुगनी लेनी चाहिये, जैसे इस नुसखे मे सोंठ दो वार आई है, नागरमोथां भी दो वार, अगर हर चीज एक-एक तोला ले तो सोंठ और नागरमोथा दो-दो तोला ले, इसी तरह सब जगह जानना।

## अन्य दवाई

कोड, पिप्पलामूल, खुरासानी वच, हरड़, सोंठ, चित्रा, इन्द्रजौ, पाठा इन सब का चूर्ण कर ३ माशे गरम पानी के साथ पीने से वात अतिसार, अफारा और पेट दर्द दूर होते हैं।

## अन्य दवाई

इन्द्रजौ, सोंचर नमक, भुनी हुई हींग, अतीस, हरड़, सोंठ सब का चूर्ण बना कर ३ माशे पानी से खाने पर अतिसार और संग्रहणी दूर होती है।

## अन्य दवाई ( हारीत से )

वच, पतीस, सोंठ, नेत्रवाला, नागरमोथां, पापड़ा, इनका काढ़ा बना कर पीने से बुखार, प्यास, अतिसार रोग दूर होते हैं।

## अन्य दवाई

बिलगिर, जंगी हरड़, भखडे, मुलट्ठी, इन्द्रजौ, इन सब को बराबर-बराबर ले एरण्ड के रस से पीस कर काजी के साथ पीने से पेट का शूल और

अतिसार दूर होते हैं। मरोड़ (पेचिश) के लिये भी यह दवाई अत्युत्तम है।

## अन्य दवाई ( वृंद माधव से )

गज पीपल, मघ, पिप्पलामूल, राल, चव, शिलाजीत, बिलगिर, सोठ, चित्रा, सब को पीस कपडछान करके १ माशा चूर्ण गरम पानी के साथ खाने से आमातिसार, पक्कातिसार, दूर होते हैं, कफ और वादी को पाचन करता है।

## अन्य दवाई

बिलगिर, कैथ, चंगेरी ( खट्टी चूटी ) लघु पञ्चमूल इन सब को पीस लस्सी मे घोल कर पीने से अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, भखडे, धनियां, नीलोफर, बिलगिर इन सब को तक्र के साथ पीने से वात का अतिसार दूर होता है।

## आनन्द भैरव रस ( शार्ङ्गधर से )

शुद्ध शिगरफ, शुद्ध विप ( मीठा तेलिया ), कालीमिर्च, सुहागा भुना हुआ, सब इनको बारीक कर अदरक रस के साथ खरल कर एक-एक रत्ती की गोली बना कर कुडा छाल के काढ़े के साथ अथवा शहद के साथ रोगी का बल देख एक या दो गोली देने से सब प्रकार के अतिसार, संग्रहणी, बादी, मरोड़ पेचिश आदि दूर होते हैं।

## पित्त-अतिसार के लक्षण

पित्त के अतिसार मे पीले रंग के पानी समान, अथवा लाल, नीले रंग के दस्त आते हैं, दाह अधिक होता है, मूर्च्छा, प्यास, पेट मे जलन होती अन्न पचता नहीं, और गुदा मे जलन होती रहती है।

## पित्त-अतिसार की चिकित्सा (गोली)

धावे के फूल, बिलगिर, इन्द्रजो, लोध पठानी, मोचरस, नागरमोथा इन सब को बराबर-बराबर ले कूट छान कर गुड मे तीन-तीन माशे की गोली बना कर सुखा ले एक वा दो गोली चावलो के पानी के साथ देने से पित्त का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

धावे के फूल, सौंचर नमक विलगिर, कंडियारी, मंजीठ, अनारदाना इन को चावलों के पानी मे पीस कपड़े मे निचोड कर रोगी को पिलाने से पित्त का अतिसार दूर होता है, भूख खुल कर लगती है, दाह प्यास आदि पित्त के उपद्रव भी शान्त होते हैं ।

## लघु गंगाधर चूर्ण

जामन की गुठली, विलगिर, सिंवाड़े के पत्र, कचूर, नेत्रवाला, अनार की कली, सोंठ, नागरमोथा सब का चूर्ण बनाले और रोगी को ठण्डे पानी के साथ खाने को दे तो गंगा के समान प्रवाह वाला भी पित्त का अतिसार दूर होता है ।

## वृद्ध गंगाधर चूर्ण

नागरमोथा,, कौड़, पाठा, लोध पठानी, इन्द्रजौ, धावे के फूल, सोंठ, हरड़, बहेड़ा, आमला विलगिर, मुलट्ठी, आम की गुठली, जामन की गुठली पतीस सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर कूट कपड़छान कर चावलो के पानी के साथ रोगी को सेवन करावे, इस के सेवन करने पर निश्चय से पित्त का अतिसार दूर होता है ।

## अन्य दवाई

इन्द्रजौ, पतीस, नागरमोथा, सोठ, कायफल इन का काढ़ा कर के पीने से तत्काल पित्त का अतिसार दूर होता है ।

## अन्य दवाई

विलगिर, पतीस, इन्द्रजौ, धावे के फूल, सोठ और रसौंत इन को बारीक कर चावलो के पानी के साथ पीने से पित्त का अतिसार दूर होता है ।

## अन्य काढ़ा ( वृंद से )

विलगिर, मजीठ, अनार दाना, समाक दाना, धावे के फूल इन को लेकर मिट्टी के वर्तन में काढ़ा करे पीछे से इस मे ४ तोले चावलों का पानी मिला कर पिलाने से पित्त का अतिसार, अनपच, शूल रोग, खून के दस्त,

और वादी के दस्त सब दूर होते हैं।

## अन्य दवाई

कुडासक ६ मारो, पतीस दोनो को ३ मारो चावलो के ८ तोले पानी में पीस शहद मिला पीने से पित्त का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

मंजीठ ३ मारो, सैंधानमक १ माशा, धावे के फूल ३ मारो, विड नमक १ माशा सब को १० तोले चावलो के पानी मे पीस पीने से पित्त का अतिसार दूर होता है ।

## अन्य दवाई ( काढ़ा )

रक्तचन्दन, चिरायता, नेत्रबाला, नागरमोथा, धमाहा इन का काढा बना ले और उसमे २ तोले पुराने चावल भिगोदे, दो घडी के बाद चावलो को मल छान ले, ३ मारो मधु मिला कर प्रभात काल पीने से पित्त का अतिसार नष्ट होता है।

## अन्य दवाई ( कल्क, वंगसेन से )

रक्त चन्दन, लोधपठानी, सोठ, खस, बिलगिर, कोल डोडा ( कमल गट्टा ) इन का १ तोला चूर्ण कर ८ तोले चावलो के पानी के साथ घोट कर पीने से पित्त का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई ( कल्क )

दारु हलदी, धमाहा, नेत्रवाला, लाल चन्दन, इनका चूर्ण कर चावलो के पानी के साथ घोट कर पीने से पित्त का अतिसार नष्ट होता है।

## कफ-अतिसार के लक्षण

आम अर्थात् कच्चे, सफेद रंग के, पानी के समान, बहुत झागदार और बार-बार दस्त आवे तो कफ का अतिसार जानना।

## कफ-अतिसार की चिकित्सा

सौंचर नमक, सैंधानमक, भुनी हुई हींग, बच, हरड़, पतीस सब का चूर्ण कर ३ मारो गरम पानी से पीने पर कफ का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

सोंचर नमक, सैंधा नमक, हींग भुनी हुई, पतीस, मघ, मिर्च, सोंठ, हरड, वच, समान-समान लेकर चूर्ण करे, ३ माशे गरम जल के साथ देने से कफ का अतिसार दूर होता है ।

## अन्य चूर्ण-( क्षारपाणि संहिता से )

कौड़, कुठ, पाठा, वच, मघ, मिर्च, सोंठ, सब को चूर्ण कर गरम पानी के साथ खाने से कफ का अतिसार दूर होता है। मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक

## अन्य दवाई

बिलगिर, इन्द्रजों, सोंठ, अतीस ये सब वस्तुएँ एक-एक तोला ले धावे के फूल २ तोले सब को बारीक कपडछान कर शीतोष्ण अर्थात् कोसे-कोसे पानी के साथ दे तो कफ का अतिसार दूर होता है, मात्रा ३ माशे ।

## पुनः चित्रक आदि गोली

चित्रे की जड का छिलका, वच, पिप्पलामूल, मघ, मिर्च, सोंठ, सैंधा-नमक, सौंचर नमक, विड नमक, समुद्र नमक, काच नमक, अजमोद, भुनी हुई हींग, जौ खार, सज्जी खार, इन सब को बराबर-बराबर लेकर बारीक चूर्ण कर अनार के रस अथवा बिजौरा निम्बू के रस मे खरल कर एक-एक माशे की गोली बना ले गरम जल से खाने से कफ का अतिसार, त्रिदोष की संग्रहणी दूर होती है । मात्रा २ गोली से ६ गोली तक ।

## अन्य दवाई

सोंठ १ भाग, सौंफ २ भाग दोनों के समान खाड मिला कर ५-६ माशे के लग भग गरम पानी के साथ खाने से कफ का अतिसार दूर होता है ।

## वात-पित्त अतिसार के लक्षण

लहू और झाग युक्त पीले रग के बड़े बदबूदार दस्त आवें तो वात-पित्त का अतिसार जानिये ।

## वात-पित्त अतिसार की चिकित्सा

मुलट्ठी, नसपाल, लोध पठानी, कायफल इन सब को समान भाग ले

कर चूर्ण कर ६ माशा को ८ तोले चावलो के पानी से खावे तो वात-पित्त का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई ( वृंद से )

नागरमोथा, कायफल, इन्द्रजौ, अतीस, हरड, नसपाल इन को बारीक कर चावलो के पानी मे पीस खाने से वात-पित्त का अतिसार दूर होता है। अथवा इन का चूर्ण चावलो के पानी के साथ पीने से भी यही लाभ होता है।

## अन्य दवाई ( वंगसेन से )

कुडासक, देवदारु, नागरमोथा, वच, पतीस, इन सब को चावलो के पानी मे पीस कर रोगी को खाने को दे तो वात-पित्त का अतिसार दूर हो।

## पित्त-श्लेष्म अतिसार लक्षण

दस्त के साथ नीले और सफेद रंग की बहुत ज्यादह आँव गिरे, लहू भी आवे, अनपच हो, पेट भारी, दस्त भी कुछ अपच हो तो 'वृंद' कहते है कि पित्त-कफ का अतिसार जानना।

## पित्त-श्लेष्म अतिसार की दवाई

पृष्टपर्णी, नागरमोथा, हलदी, मुलट्टी, कुडासक सब का चूर्ण कर ३ माशे शहद मे मिला चाटे तो कफपित्त का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

नागरमोथा, वच, सोठ, कुडासक, पतीस, दारु हलदी, इनका चूर्ण बना कर शहद के साथ खाने से कफ पित्त का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई ( वंगसेन से )

मूर्वा ( मोडया ), कुडासक, नागरमोथा, पतीस, वच इन का काढा बना कर शहद मिला प्रभात काल और सायंकाल पीने से कफ पित्त का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई (वंगसेन से)

लाजवन्ती के बीज, बिलगिर, धावे के फूल, आम की गुठली, कमल केसर ( कमल फूल के अन्दर जो तुरिया होती हैं ) मोच रस, कुड़ासक,

इन्द्रजौ, सब समान भाग लेकर कपड़छान चूर्ण कर ले, ३ माशे से ६ माशे तक दो वा तीन वार दिन मे चावलो के पानी के साथ खाने से पित्तकफ का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

लोध पठानी, चन्दन, मुलहठी, दारुहलदी, पाठा, सफैद कमल (नीलोफर) सब समान २ ले चूर्ण कर प्रभात समय निहार मुँह चावलो के पानी के साथ सेवन करने से पित्तकफ का अतिसार दूर होता है।

## अन्य वात श्लेष्म अतिसार के लक्षण

मल के साथ आम बहुत आवे, दस्त वार-वार उतरे, पेट मे ऐंठन और शूल हो तो कफवात का अतिसार जानना चाहिये।

## कफ वात अतिसार की दवाई

पाठा ( जल जमनी ), हींग भुनी हुई, हरड, विलगिर, इन्द्रजौ, सब बराबर लेकर चूर्ण करे, ३ माशे चावलो के पानी के साथ खाने से कफ वात का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

विलगिर, धावे के फूल, मघा, समाक दाना, अजवायन, अनारदाना, हर एक वस्तु तीन-तीन टंक, कैथ का गूदा ८ टंक, मिश्री ६ टंक सब का चूर्ण कर ६ माशे चावलों के पानी के साथ खाने से कफ वात का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

सोंठ, नागरमोथा, पतीस, चित्रे की जड़ का छिलका, विलगिर कायफल हरड, कुड़ासक, इन्द्रजौ, सब का चूर्ण कर ६ माशा प्रमाण चावलो के पानी के साथ सेवन करने से कफवात का अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

देवदारु, लोध पठानी, कुड़ासक, सोंठ, अनारदाना इनका चूर्ण कर तक्र (लस्सी) के साथ पीने से कफवात अतिसार दूर होता है। अथवा इन चीजो का काढ़ा वना कर खाड और शहद मिला पीने से भी कफ वात का अतिसार दूर होता है।

## छर्दि-अतिसार की चिकित्सा

पंडोल पत्र, इन्द्रजौ, धनियां, इन का काढा बना, शीतल कर मिश्री और शहद मिला कर पीने दस्त और उलटिया बंद हो जाती है।

## अन्य उपाय

नागरमोथा, फूल प्रियंगु, कमलगट्टा (कौलडोडे) इन का काढा करे इस काढ़े मे उतना चावलो का पानी मिलावे और फिर शहद मिला कर पिलाने से वमन और अतिसार दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

आम के पत्ते, जामुन के पत्ते, वट के अकुर ( वरोह ) काकडासिगी, गिलोय, खस इन का काढा कर खाड और शहद मिला कर रोगी को पिलाने से अतिसार, वमन, मूर्च्छा दूर हो, बार-बार प्यास दूर हो, रोगी को बहुत जल्दी आराम हो जाता है।

## शोथ-अतिसार की चिकित्सा

अतीस, वावडिग, इन्द्रजौ, देवदारु, नागरमोथा, पाठा, कालीमिर्च इन का काढा कर पीने से अतिसार और शोथ दूर हो जाता है।

## अन्य उपाय

गिलोय, कालीमिर्च, चिरायता, रक्तचन्दन, धनिया, नागरमोथा, इन का काढा कर पीने से शोथ ( सोज ) और अतिसार दूर होता है।

## आम-अतिसार के लक्षण

कमर, पेडू, और ग्रीवा ( गर्दन ) मे दर्द हो, दस्त बहुत आवे उसे आमातिसार कहते है। आमातिसार मे कई रग के अनपच दस्त आते है। और उन दस्तो के साथ रक्त आदि धातु भी आने लगते है, पेट मे दर्द अधिक होता है।

## आमातिसार की चिकित्सा

नागरमोथा, धनियां, नेत्रवाला, बिलगिर, पतीस, सोठ, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे और चावलो के धोवन के साथ ३ मारो से ६ मारो तक

सेवन करने से आमातिसार और शूल दूर होते हैं ।

## अन्य चिकित्सा

सोंठ, मंजीठ, पाठा ( जल जमनी ) कुडासक, अजमोद सब समान भाग पीस चूर्ण कर शीत जल के साथ खाने से आमातिसार दूर होता है, आम और वादी भी नष्ट होती है ।

## अन्य औषधि

शुद्ध शिलाजीत, बिलगिरि, विड़ नमक, लोध पठानी सब समान भाग लेकर चूर्ण कर ४ रत्ती एक तोला तेल में मिला कर चाटने से निवाही अर्थात् मरोड़ (पेचिश) और आमातिसार दूर होता है ।

## अन्य दवाई ( सिद्धसार से )

मघ, मिर्च, सोंठ, तीनो को बराबर ले पीस कर शहद के साथ खाने से आम अतिसार और मरोड, पेचिश सब दूर होते हैं, परन्तु रोगी को मैदे की कोई चीज खाने को नही देनी चाहिये ।

## रक्त-अतिसार निदान

गर्म और तेज ( लाल मिर्च आदि ) वस्तुओं के खाने से खास कर पित्त अतिसार वाले रोगी को रक्त अतिसार हो जाता है, क्योंकि पित्त बढ़ कर रक्त को भी प्रकुपित कर देता है तो टट्टी के साथ रक्त आता है, इस को रक्तातिसार कहते हैं ।

## रक्त-अतिसार के लक्षण

गुदा ( टट्टी की जगह ) पक जाती है, टट्टी के साथ लहू आता है, प्यास बहुत ज्यादह लगती है, सिर मे चक्कर आते हैं, रोगी का रंग पीला पड़ जाता है,ये रक्तातिसार के लक्षण हैं ।

## रक्त-अतिसार की चिकित्सा

कुड़ासक, पतीस, रसौत, इन्द्रजौ, सोंठ सब का चूर्ण कर चावलों के पानी के साथ शहद मिला कर खाने से रक्तातिसार दूर होता है ।

## अन्य उपाय

दो तोला बेरी की जड़ को दूध से पीस कर शहद मिला कर पीने से,

अथवा काले तिल २ तोला बारीक पीस दूध के साथ शहद मिला कर पीने से रक्त-अतिसार दूर होता है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

मुलट्ठी छिली हुई, काले तिल, पद्म केसर ( कमल फूल के बीच की तरिया अथवा पद्म और केसर दो चीजे लेनी, पद्म से कमल, और केसर से नागकेसर), कौल डोडे, सब को बारीक पीस चूर्ण करके खाड और शहद मिला कर चाटने से रक्तातिसार और संग्रहणी भी दूर होती है, इस के अतिरिक्त खूनी बवासीर नकसीर आदि भी दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

फूल प्रियंगु का काढा बना कर उसमे उतना ही चावलो का पानी मिलावे पीछे से थोड़ा शहद मिला कर रोगी को पिलाने से रक्त अतिसार दूर होता है।

## अन्य उपाय

कुडा सक, इन्द्रजो, अतीस, धावे के फूल, नागरमोथा, रसौत सब को समान भाग ले चूर्ण कर तोलाभर, चावलो के पानी के साथ खाने से शूल-सहित रक्त अतिसार दूर होता है।

## अन्य उपाय ( चूर्ण )

वॉसा पत्र, कुडासक, शतावर, मगज-कद्दू, हरमल, शंखाहुली, अनार की कली, यह सब समान भाग, मिश्री सब से दूनी सब का चूर्ण कर ६ माशे, चावलो के पानी के साथ सात दिन प्रात. साय रोगी को दे तो रक्तातिसार, और संग्रहणी रोग दूर होता है।

## अन्य उपाय ( चूर्ण )

राल सफेद, सुपारी, हरड, बहेडा, आमला, कत्था सफेद, लौंग, सब समान भाग पीस चावलो के साथ ३ माशे की मात्रा मे देने से सब प्रकार का रक्तातिसार दूर होता है।

## प्रवाहिका की उत्पत्ति और लक्षण

कुपथ्य करने वाले ( बद परहेज ) मनुष्य के पेट का ( समान और

अपान ) वायु जब बिगड़ जाता है, तो आँतों के अन्दर रहने वाली बलगम ( जो कि आँतों को नरम तर और चिकना रखती है ) को नीचे की ओर अर्थात् मल के रास्ते बाहर की तरफ धकेलता है तो उस समय पेट में मरोड़ ( पेचिश ) उठता है और बार-बार पाखाने की हाजत होती है मगर पाखाना बहुत थोड़ा-थोडा आता है, उस के साथ झाग और लेसदार आँव निकलती है, इस रोग को प्रवाहिका ( निवाही, मरोड़, पेचिश ) कहते हैं ।

## प्रवाहिका के भेद

प्रवाहिका चार प्रकार की होती है, १ वात से, २ पित्त से, ३ कफ से, ४ रक्त से, वात की प्रवाहिका हो तो पेट में शूल बहुत उठता है, पित्त की प्रवाहिका हो तो दाह अधिक होता है, कफ की प्रवाहिका हो तो आँव बहुत पड़ती है, और रक्त की प्रवाहिका हो तो उस में मल के साथ खून आता है । इन के विस्तार पूर्वक लक्षण, आम और पक्वावस्था सब कुछ अतिसार के समान ही होते हैं ।

## वात-प्रवाहिका चिकित्सा [ चटनी ]

बिलगिर, धावे के फूल, मोचरस, पुराने आम की गुठली सब दवाइयां ८-८ माशे, अफीम पक्की (शुद्ध) ४ माशे, सब को बारीक कर शहद मिला चटनी बनाले, १ माशे से डेढ़ माशा ( १२ रत्ती ) चाटने से वायु की निवाही दूर होती है तथा सब प्रकार के अतिसार दूर होते हैं ।

नोट—इस चटनी में अफीम पडी हुई है इस लिये मिकदार से अधिक नहीं खानी चाहिये ।

## अन्य उपाय

कचनार की कलियां और फूल घी मे भून ले और बराबर की खाड मिला कर चावलों के पानी के साथ खाने से सब प्रकार की वातप्रवाहिका दूर होती है ।

## अन्य उपाय

करीर के फल सुखाकर पीस छान ले और उनके बराबर खांड मिला कर गौ के मट्ठे के साथ रोगी को देवे तो वात प्रवाहिका दूर होती है ।

## पित्त-प्रवाहिका चिकित्सा

धावे के फूल, मोच रस, नसपाल, तीनों समान भाग लेकर पीस कपड़ छान कर शहद से मिला कर ६ माशे साभ्क सवेरे रोगी को चटाने से पित्त प्रवाहिका दूर होती है ।

### अन्य उपाय

गाजनी ( मुलतानी ) मिट्टी, कच्चे वेर, मोच रस, सब समान भाग लेकर वारीक चूर्ण करे और डोडा पोस्त के पानी से दवाई को खरल कर ४-४ माशे की गोली वनाले और चावलों के पानी के साथ एक २ गोली खाने को दे तो पित्त प्रवाहिका, अतिसार, रक्तातिसार सब दूर होते हैं ।

### अन्य उपाय [ वंगसेन से ]

वेरी के पत्ते, धावे के फूल, कैथफल का गूदा, रसौंत, लोध पठानी, सब का चूर्ण कर ६ माशे शहद के साथ चाटने से पित्त प्रवाहिका दूर होती है ।

## कफ-प्रवाहिका की चिकित्सा-[ वंगसेन से ]

कालीमिर्चे १ माशा, मघ १ नग ( दोनों को दरड़ा कूट कर ) पाव भर दूध, पाव भर पानी सब मिला कर आग पर धरे जब पानी जल जावे और दूध वाकी रह जावे तो उतार मीठा मिला रोगी को पिलावे इस से कफ के मरोड़ वंद होते हैं ।

### अन्य चिकित्सा

लोध पठानी, विलगिर, तिलतेल, गुड, कालीमिर्चे, सब को मिला चटनी वना कर चाटने से कफ प्रवाहिका ( पेचिश ) दूर होती है ।

## रक्त-प्रवाहिका की चिकित्सा [ वंगसेन से ]

सोंठ, विलगिरि, अतीस, मुश्कवाला, नागरमोथा, धनियां, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे और रोगी के वलानुसार ६माशे से १तोला तक गरम पानी से सेवन करावे तो कफ प्रवाहिका दूर होती है। इस के अतिरिक्त दाह, सोजा, लाल पीली आँव, खूनी मरोड़ सब दूर हो हाते हैं ।

### अन्य उपाय

मोचरस, मवां, सोंठ, सौंफ देसी सब वरावर-वरावर और खांड सब

के बराबर सब का चूर्ण कर १ तोला गोतक्र ( मट्ठा ) के साथ खाने से खूनी मरोड शीघ्र दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय

६ माशे सोया बीज, सोंठ ३ माशे, दही १० तोला, घी १ तोला, खांड २ तोला, तेल ६ माशे, सोया बीज, और सोंठ का बारीक चूर्ण कर सब इकट्ठी मिला कर मथ ले और रोगी को पिलावे तो आम प्रवाहिका तत्काल दूर होती है । रक्त अतिसार और रक्त प्रवाहिका के लिये भी यह दवाई अच्छी है ।

## ज्वर-अतिसार के लक्षण

जिस रोगी में अतिसार के सारे लक्षण मिले और ज्वर भी हो तो उस रोगी को ज्वरातिसार रोग होता है, चतुर वैद्य को चाहिये कि ऐसे रोगों की चिकित्सा गुरुमुख से पढ़ कर करनी चाहिये । इस बात का मतलब यह है कि ऐसे मिश्रित रोगों में जहां कि साधारण मनुष्य की बुद्धि चकरा जावे अर्थात् मनुष्य निश्चय न कर सके कि ज्वर प्रधान है कि अतिसार, अथवा पहले ज्वर की चिकित्सा करे और पीछे से अतिसार की, अथवा ज्वर की चिकित्सा करने पर अतिसार स्वयं दूर हो जावेगा, अथवा अतिसार की चिकित्सा करने पर ज्वर स्वयं दूर हो जायगा अथवा पित्तज्वर का अतिसार है इत्यादि, ये सब बातें गुरुमुख से विद्या पढ़े बिना नहीं प्राप्त हो सकतीं और साधारण मनुष्य रोगी को देख कर घबरा जाते हैं ।

## अन्य उपाय-[ लोलिंबराज से ]

नागरमोथां, चिरायता, सोंठ, गिलोय, इन्द्रजौ, पतीस इन का काढ़ा बना कर शहद मिला पीने से ज्वरातिसार नष्ट होता है ।

## अन्य उपाय

रक्तचन्दन, खस, इन्द्रजौ, कुड़ा सक, पाठा, धनियां, पद्माख, नागरमोथां, गिलोय, पतीस, नेत्रवाला, सोंठ, चिरायता इनका काढ़ा बना शहद मिला कर पीने से ज्वरातिसार, प्यास, हृदय की पीड़ा, वमन, अरुचि, सब रोग दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय

पाठा, नागरमोथा, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी और बड़ी कंडियारी, भखड़े, और बिल, अरणी, अरलू, गभारी, पाढल इनकी जड़ का छिलका, कौड, गिलोय, खरैटी, खस, अगर, इन्द्रजौ, सोंठ, बिलगिर, इनका काढ़ा कर पीने से अतिसार, ज्वर, शूल रोग, श्वास रोग, खासी, प्यास आदि रोग प्रभु की कृपा से दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

सोठ, इन्द्रजौ, चिरायता, कुड़ासक, अतीस, जवाहा, नागरमोथा सब समान भाग लेकर चूर्ण कर ले और जल के साथ खाने से ज्वर तथा अतिसार दूर होता है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

देवदारु, कौड, गज पिप्पल, पाठा, मघ, धनिया, बिलगिर, अजवायन, भखड़े इन का काढा बना कर कुछ दिन विधिपूर्वक पीने से ज्वर अतिसार दाह, प्यास, आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

कमल का केसर, कमल फूल, नसपाल, तीनो का १ तोला चूर्ण कर ८ तोले चावलो के पानी के साथ पीने से ज्वर अतिसार दूर होता है।

## अन्य उपाय

नागरमोथां, खस, नेत्रवाला, धनिया, बिलगिर, धावे के फूल, लोध पठानी, मजीठ, सोठ इनका काढ़ा बना कर पीने से ज्वर अतिसार, सारे शरीर की पीडा, कब्ज ये सब दूर होते हैं।

## त्रिदोषज अतिसार के लक्षण

जिस अतिसार मे वात के पित्त के और कफ के लक्षण इकट्ठे पाए जावे वह अतिसार तीनों दोषो ( सन्निपात ) से होता है।

## सर्व-अतिसार की चिकित्सा ( वंगसेन से )

अतीस, नागरमोथां, सोठ, धावे के फूल, मजीठ, मुश्कवाला, बिलगिर,

कुडासक, इन्द्रजौ इन सब का काढ़ा बना कर रोगी को कुछ दिन पिलाने से वात, पित्त, कफ, सन्निपात के अतिसार दूर होते हैं, सोज, शूल, प्यास तथा ज्वरातिसार आदि भी नष्ट होते हैं।

## अन्य उपाय

हरड़,सोठ,नागरमोथां तीनो को वारीक कर गुड़ मिला ६ माशे की गोली बनावे इस के खाने से वात, पित्त, कफ, त्रिदोष अतिसार दूर होता है।

## अन्य दवाई

कालीमिर्च, चित्रे की जड़ का छिलका, कौड़, पतीस, इन्द्रजौ, चिरायता, नीम, भांगरा, पाठा, दारूहलदी, खरैटी सब वस्तुएँ बराबर-बराबर लेवे और जितनी मिला कर वजन मे हो उतना ही कुड़ासक मिला कर चूर्ण करे, इस चूर्ण को ३ माशे से ६ माशे तक शहद के साथ चाटे अथवा चावलो के पानी के साथ खावे अथवा शहद के साथ चाट कर ऊपर से चावलो का पानी पीवे तो सब प्रकार के अतिसार दूर होते हैं, यह चूर्ण पाचन है तृष्णा और ज्वर को दूर करता है, कामला ( पीलिया ) संग्रहणी वायुगोला, अफारा, पाण्डु ( धड़का ), प्रमेह, श्वास, खांसी आदि सब रोगो को नष्ट करता है।

## अन्य चिकित्सा

वेरी के पत्ते, गेरी, पुरानी गरी ( नारियल का गोला ), जायफल, आम की गुठली, सब बराबर ले वारीक कर डोडा पोस्त के पानी के साथ खरल कर १-१ माशे की गोली बना ले १-२ गोली चावलो के पानी के साथ खाने से सब प्रकार का अतिसार दूर होता है।

## सब प्रकार के अतिसार पर गङ्गाधर रस

शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, छड़, पतीस,कीकर के फूल, अफीम, बिलगिर, लोध पठानी, नागरमोथां, धावे के फूल, इन्द्रजौ, आम की गुठली, नेत्रबाला मोचरस, जायफल, सब वस्तुओं को वारीक कपड़छान करले, पहले पारा और गन्धक दोनो को खरल मे डाल खूब रगड़े जब कज्जल के समान काली और अत्यन्त वारीक हो जावे और चमक दूर हो जावे तो अन्य

वस्तुओ को भी मिला कर पोस्त डोडे के पानी की चार भावना दे (भावना का अर्थ यह है कि एक वार जितने पानी से दवाई खूब तर हो जावे और खरल मे रगड-रगड कर पानी सूख जावे, जितनी भावना देनी हो इसी प्रकार देनी चाहिये ) और तीन दिन तक खूब खरल कर ३-३ रत्ती की गोली वना ले एक-एक गोली चावलो के पानी के साथ देवे तो सव प्रकार के अतिसार और संग्रहणी आदि रोग जड से मिट जाते हैं ।

## सव प्रकार के अतिसार पर लीलावती गोली

कालीमिर्च, रूमी मस्तगी, लोध पठानी, वंशलोचन, आम की गुठली अनार की कली, माजू, माई, धावे के फूल, कत्था, इन्द्रजौ सव औषधिया ४-४ मासे, शुद्ध अफीम १ तोला सव को वारीक कर पोस्त के पानी में खरल कर एक-एक रत्ती की गोली वना ले रोगी का वल देख कर एक या दो गोली चावलों के पानी के साथ दे तो सव प्रकार का अतिसार दूर होता है।

## आनंदभैरव रस

शुद्ध शिंगरफ, कालीमिर्च, मघा, सुहागा खील, शुद्ध मिठा तेलिया सव को तीन दिन तक लगातार अदरक रस, निम्बु रस अथवा पानी से वरावर-वरावर खरल करे और एक-एक रत्ती की गोलिया वना ले, रोगी का वल विचार कर एक या दो गोली कुडासक के काढ़े के साथ अथवा चावलों के पानी के साथ दे तो सव प्रकार के अतिसार दूर होते हैं ।

## अतिसार-रोगी के लिये पानी

जो पानी उवाल कर आधा हिस्सा रह जावे, चौथा हिस्सा रह जावे, अथवा आठवां हिस्सा रह जावे वह पानी अतिसार रोगी को पीने के लिये देना चाहिये, इसी प्रकार गेहूं उवाल ( घुंगनी ) कर उसका पानी, मसूर का पानी अथवा चावल ( भीगे हुए ) का पानी अतिसार रोगी को पथ्य होता है, यह पानी दस्तो को रोकता है और प्यास को भी दूर करता है ।

## अतिसार को पथ्य

मूँग का पानी, पुराने चावल, मट्ठा, मसूर का पानी, विलगिरि, जीरा, पनीर, सैंधा नमक, चावलो का माड ( पिच्छ ) तक्र ( लस्सी ) वमन देना,

लंघन ( उपवास फाका ) जामुन, पुराने सट्ठी के चावल, हलके और पुराने अनाज, अनार, चंगेरी, रात को सोना यह सब अतिसार रोगी के लिये पथ्य कहे हैं ।

### अतिसार के अपथ्य

उड़द की पीठी, शराब, भारी अन्न, इन वस्तुओ का रोगी बिलकुल सेवन न करे, थकावट का काम, यात्रा ( सफर ), खून निकालना, चिकना भोजन करना, आग तापना, स्त्री का संग करना, मालिश करना, पानी मे तैरना, नहाना, लड़ाई करना, क्रोध करना, वरजिश करना, रात को जागना यह सब बाते अतिसार रोगी के लिये हानिकारक हैं, इस लिये इनका सेवन नहीं करना चाहिये ।

इति अतिसार अधिकार समाप्त ।

# अथ संग्रहणी रोगाधिकार

अतिसार रोग के हटने के बाद जो मन्द अग्निवाला मनुष्य कडवे, कसैले,चरपरे, ठण्डे, अतिरूखे चिकने पदार्थों का सेवन करे अथवा मात्रा से अधिक भोजन करे तो ऐसे मनुष्य की पाचन शक्ति अति दुर्बल होने से आहार पचाने वाली ग्रहणीकला बिगड जाती है, इस से पाँच प्रकार का संग्रहणी रोग हो जाता है। इस रोग में खाया पिया अकसर कच्चा ही मल के रास्ते निकल जाता है, कभी दस्त की शकल मे और कभी बंधा हुआ मल उतरता है और दिन मे पॉच छः बार अथवा इस से कम ज्यादह दस्त आ जाते हैं, पेट मे गुड़गुड़ाहट, जलन, कच्चे पक्के डकार आते हैं, शरीर आलसी हो जाता है, बल क्षीण हो जाता है, प्यास लगती है, और खाया पिया बड़ी देर से पचता है ।

### वात-संग्रहणी के लक्षण

मल ( टट्टी ) कभी सूखा हुआ और कभी पतला उतरे, टट्टी के समय रोगी को कष्ट हो, टट्टी झागदार हो, पेट मे गुड़-गुड शब्द हो टट्टी बार-बार आवे, अन्न पचता नहीं इस लिये कच्चा ही मल उतरता है, रोगी का सब प्रकार के पदार्थ खाने को जी चलता रहता है, पेट में शूल होता है,

भोजन पचने के समय अथवा पच जाने के बाद पेट मे अफारा हो जाता है, जब भोजन कर लिया जाय तो आराम मालूम होता है।ये वातज-संग्रहणी के लक्षण हैं।

## वात-संग्रहणी की चिकित्सा ( वंगसेन से )

मघ, कंडियारी, बडी कंडियारी, पाठा, इन्द्रजौ, कुडासक, कचूर, अनन्तमूल, चित्रे की जड का छिलका, सैधा नमक, सौचर नमक, विड नमक, सामुद्र नमक, शीशा नमक, सबका चूर्ण कर तक्र ( मट्ठा ) के साथ खाने से वात-सग्रहणी दूर होती है। खाया पिया पच जाता है, इस दवाई को 'पिप्पल्यादि चूर्ण' कहते हैं। मात्रा ६ माशे तक।

## अन्य उपाय

धनिया, मुश्कबाला, पतीस, अजवायन, सोठ, खरैटी, नागरमोथा, बिलगिरि, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, इनका काढा बना कर पिलाएँ, यह काढा पाचन है और वातज संग्रहणी रोग को हितकारी है।

## अन्य उपाय

भुनी हुई हीग, कुड़ासक, पतीस, वच, सौंचर नमक, हरड, सब समान भाग ले चूर्ण बना कर गरम पानी से खाने से उलटी और वात की संग्रहणी दूर होती है। मात्रा १-२ माशे तक।

## अन्य उपाय

इन्द्रजौ, मघ, सोठ, जौखार, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, अनन्तमूल, पॉचो नमक, पाठा, चित्रे की जड का छिलका, इन सब का चूर्ण कर दही के तोड, सुरामण्ड ( नितरी हुई शराब ) अथवा काजी के साथ पीने से वायु की संग्रहणी दूर होती है। मात्रा ६ माशे तक।

## हिङ्ग्वष्टक चूर्ण

मघ, मिर्च, सोठ, हीग, काला जीरा, सफेद जीरा, सैधा नमक, अजवायन, इन का चूर्ण बना कर गरम पानी से पिलावे तो अपच और वायु की संग्रहणी दूर हो। मात्रा १-३ माशे तक।

## अन्य उपाय ( गोली )

मघां, १ भाग, भाग ( घी में भुनी हुई ) २ भाग, गुड ३ भाग, तीनो को मिला एक-एक माशा भर गोली बना कर घी के साथ रोगी को सेवन करावे तो वायु की संग्रहणी दूर होती है।

## पुनः चित्रकादि गोली

सैंधा, समुद्र, सौंचर, विड़, शीशा ये पाचों नमक, जोखार, सज्जीखार चित्रे की जड़ का छिलका, मघ, मिर्च, सोंठ, हींग भुनी हुई, अजमोद, पिप्पलामूल, वच, इन सब का बारीक चूर्ण बना कर बिजौरे निम्बू के रस और अनार के रस मे खरल कर तीन-तीन माशे की गोली बना ले, एक या दो गोली रोगी को यथाशक्ति दिन में दो बार सेवन कराने से आम, संग्रहणी, अपच, अतिसार यह सब दूर हो जाते हैं।

## पञ्च-लवण चूर्ण

सैंधा नमक, सौंचर नमक, विड़ नमक, सामुद्र नमक, साभर नमक, इन सब को पीस हाडी मे बंद कर गज पुट की आग दे पक जाने पर पीस कर १ या २ माशे तक्र (लस्सी) के साथ सेवन करने से वायु की संग्रहणी दूर होती है।

## अन्य दवाई

शालपर्णी, सोंठ, धनियां, बिलगिर, खरैंटी, इनका काढ़ा कर पीने से वात संग्रहणी दूर होती है।

## पित्त-ग्रहणी निदान-लक्षण

उष्ण, तीक्ष्ण, चरपरे, जलन पैदा करने वाले पदार्थों के सेवन करने से तथा पीछे कहे हुए कारणों से पित्त संग्रहणी होती है, यहां यह सवाल पैदा होता है कि उष्ण, तीक्ष्ण पदार्थ तो अग्नि को तेज करते हैं, और जब अग्नि तेज हो जावेगी तो खाया पिया पच जायगा, जब खाया पिया पच जायगा तो संग्रहणी रोग कैसे हो सकता है ?

उत्तर—इस सवाल का जवाब यह है कि जैसे एक पाचक ( रसोइया ) रोटी पका रहा है, परन्तु चूल्हे में इतनी तेज आच है कि रोटी पड़ते-पड़ते

ही ऊपर से जल जाती है और अन्दर से अच्छी तरह पकती नही है,इसी तरह पित्त की ग्रहणी मे गरम और चरपरे पदार्थों के अति सेवन से पित्त इतना बढ जाता है कि खाए हुए भोजन का ठीक परिपाक नहीं होता, और वह कचपका ( अध जला ) हो कर बाहर निकल जाता है।

२—दूसरा उत्तर यह है कि पित्त पतला होता है, तीक्ष्ण होता है, अम्ल (खट्टा तेजाबी) होता है, और उष्ण होता है, वह ग्रहणी कला (भोजन पचने का स्थान) मे इतना अधिक टपकता है कि अन्न अधिक देर ठहर ही नहीं सकता और पित्त की चिकनाहट से फिसल कर बाहर निकल जाता है। पित्त-ग्रहणी मे रोगी के शरीर मे दाह होता है हृदय और कण्ठ मे जलन अधिक होती है, मल ( टट्टी ) की रङ्गत नीली-पीली, हरी होती है, खट्टे कडवे जले हुए डकार आते हैं, प्यास अधिक होती है, चेहरे की रंगत भी पीली पड जाती है।

## पित्त-संग्रहणी चिकित्सा

सोठ, नागरमोथा, धावे के फूल, रसौंत, अतीस, कुड़ासक, इन्द्रजौ, बिलगिरि, कौड, सब का चूर्ण बना कर चावलो के पानी मे शहद मिला कर उस के साथ इस दवाई का सेवन करने से पित्त की ग्रहणी दूर होती है।

## भूनिम्बादि चूर्ण ( वंगसेन से )

चिरायता, कौड, नागरमोथा, मघा, कालीमिर्च, सोठ, कुडासक, इन्द्रजौ सब एक-एक तोला चित्रे की जड़ का छिलका दो तोला, इन सब का चूर्ण कर ६ माशे गुड के शर्बत के साथ रोगी को पिलाएँ,इस औषध से वाय गोला, कामला (पीलिया), प्रमेह, अतिसार, संग्रहणी आदि रोग दूर होते हैं।

## पाठादि चूर्ण ( वंगसेन से )

पाठा, मघ, मिर्च, सोठ, पतीस, चित्रा, दारुहलदी, जामन की गुठली, अनारदाना, नागरमोथा, धाय के फूल, कौड, चिरायता, इन सब का चूर्ण बना कर कुडा क्वाथ मे शहद मिला कर उसके साथ इस चूर्ण को खाने से, अथवा कुडासक के काढ़े मे चावल भिगो छोड़े जब चावल अच्छी तरह भीग जावे ( लगभग दो घंटे ) तो उस पानी को लेकर उस मे शहद

मिला कर ६ माशे इस चूर्ण को सेवन करावे तो पित्त की संग्रहणी, बुखार, उलटी, शूल, अतिसार, हृदय रोग, अरोचक आदि सब रोग दूर होते हैं। चावलों का पानी अथवा काढा ८ तोले होना चाहिये।

## कफ-संग्रहणी लक्षण

कफ की संग्रहणी मे उलटी आती है, अरुचि और बार-बार उबकाइया आती हैं, खासी होती है, मुख मीठा और मुख के अन्दर बलगम लिपी हुई प्रतीत होती है, रोगी बार-बार थूकता है। हृदय मे पीडा हो, नाक बंद रहे, पेट में अफारा रहे, आँखें भारी हो, मीठे डकार आवें, अंग शीतल रहे, टट्टी के साथ कफ आवे, शरीर दुर्बल हो गया हो, शरीर में अधिक आलस हो तो कफ की संग्रहणी जानो।

## कफ-संग्रहणी चिकित्सा

चित्रे की जड का छिलका, सोंठ, पतीस, पिप्पलामूल, हरड, कुठ, वच, नागरमोथां, बावडिंग, इन सब वस्तुओं को पीस, चूर्ण कर ले और रोगी के बल के अनुसार ५-६ माशे इस चूर्ण को शराब, तक्र ( लस्सी ), अथवा पानी के साथ सेवन करने से कफ की संग्रहणी दूर होती है, भूख खुल कर लगती है, पाचन शक्ति बढ़ती है, अरोचक दूर होता है।

## अन्य दवाई

कौड़, चिरायता, पडोल पत्र, नीम, पापडा, इन सब का चूर्ण बना कर, ५ तोले भैंस के मूत्र के साथ रोगी को खिलावे तो कफ की संग्रहणी और अरुचि दूर होती है। मात्रा ६ माशे तक।

## अन्य दवाई ( पिप्पल्यादि चूर्ण )

पिप्पलामूल, मघां, जोखार, सज्जीखार, पाँचो नमक बिजौरे की जड, हरड, कचूर, कालीमिर्च, सोंठ, रायसन सब का चूर्ण कर ६ माशे तक ठण्डे पानी के साथ सेवन करने से कफ की संग्रहणी दूर होती है।

## काढ़ा

पलाश, ( ढाक, पलाही, छिछरा ) की जड का छिलका, चित्रे की जड

का छिलका, चव, बिजौरे की जड का छिलका, मघा, हरड़, पिप्पलामूल, बरने की छाल, सोठ, सब समान भाग लेकर काढा बना कर पीने से कफ की संग्रहणी दूर होती है, भूख खुल कर लगती है, अपच, अरोचक, आदि सब विकार दूर होते हैं।

## आम-संग्रहणी लक्षण ( वंगसेन से )

कच्चा और पिच्छ के समान चिकना और लेसदार, हरा, पीला, और सफेद मल उतरे, पेट मे गुड-गुड शब्द हो, पेट और कमर मे पीडा हो तो आम संग्रहणी जानो।

## आम-संग्रहणी चिकित्सा ( वंगसेन से )

बिलगिरि, सोठ, अंकोल ( ढेरा ) की छाल, धावे के फूल इन का काढ़ा बना कर पीने से पेट के रोग और आम संग्रहणी दूर होती है।

## अन्य काढ़ा

कच्ची बिलगिरि, धनिया, खरैटी, धावे के फूल, सोठ, नागरमोथा, इन का काढा करके पीने से आम संग्रहणी दूर होती है।

## अन्य काढ़ा

जामन के पत्ते, अनार के पत्ते, सिंघाड़े के पत्ते, पाठा के पत्ते, कंचट, ( काचडा, जल पीपल, जल चौलाई इस के नाम हैं ) के पत्ते इन का काढ़ा बना कर पीने से आम सग्रहणी और अतिसार का नाश होता है, कही इसी योग मे सुहाजने के पत्ते भी लिये गये है और कही-कहीं वड के पत्ते भी मिलाने लिखे हैं।

## त्रिदोष-संग्रहणी लक्षण

जिस संग्रहणी रोग मे वायु, पित्त और कफ अर्थात् तीनो दोषो के लक्षण एकत्र मिलते हो वह त्रिदोष अथवा सन्निपात की संग्रहणी होती है।

## त्रिदोष संग्रहणी चिकित्सा

सैंधा नमक, घोंगे ( छोटा शंख ) की भस्म दोनो को बराबर-बराबर इकट्ठा पीस कर लगभग चार माशे ले और शहद के साथ मिला कर चटनी बना प्रात. सायं चाटने से सब प्रकार की संग्रहणी दूर होती है। यदि ४ माशे

की मात्रा अधिक प्रतीत हो तो इस की दो मात्रा कर सकते हैं ।

## त्रिदोष-संग्रहणी में कनकसुन्दरी रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध गन्धक, कालीमिर्च, सुहागा भूना हुआ, शुद्ध मीठा तेलिया, मघां, शुद्ध धतूरे के बीज, सब चीजे बराबर-बराबर लेकर बारीक कपडछान कर भांग के रस मे खरल कर चने बराबर गोली बनावे, फिर मुनासिब अनुपान अथवा पीछे कहे हुए किसी काढ़े के साथ रोगी को सेवन कराए तो अतिसार और संग्रहणी दूर होते हैं ।

## अन्य दवाई ( रस रत्नाकर से )

मघां, मिर्च, सोठ, सुहागा भुना हुआ, कौडी की भस्म, शुद्ध विष (मीठा तेलिया) शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, प्रथम पारा और गन्धक की कज्जली करे, और कूटने वाली वस्तुओ को कूट कपडछान कर सब इकट्ठी मिला ले और जंभीरी ( खट्टी ) के रस मे खरल करे । इस मे से ३ रत्ती दवाई लेकर घी १ तोला, कालीमिर्च ७दाने के साथ खाने से सब प्रकार की संग्रहणी अतिसार दूर होते हैं, भूख खुल कर लगती है, अदरक के रस के साथ दे तो ज्वर दूर हो, उदर रोग सब दूर होवे ।

## विजयभैरवीरस गोली ( रसमञ्जरी से )

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, चित्रे की जड का छिलका, लोह भस्म, शुद्ध मीठा तेलिया, बावडिंग, नागरमोथा, इलायची, नागकेसर, तेजपत्र, दालचीनी, हरड, बहेडा आमला, मघ, मिर्च, सोठ, रेणुका ( सम्भालु के बीज ), ताम्र भस्म (ताम्बे का कुश्ता तामेश्वर), सब बराबर-बराबर लेले, प्रथम कूटने वाली वस्तुओ को कूट कपडछान करले, पश्चात् पारे गन्धक की कज्जली बना कुटी हुई वस्तुओ को मिला ले सब से दुगुना पुराना गुड मिला कर ४-४ रत्ती की गोली बना रखे और नित्य दो गोली ताजा जल के साथ खा लेवे तो श्वास, कास क्षय, प्रमेह, तपदिक, विषम ज्वर, भूत दोष, संग्रहणी, मन्दाग्नि, शूल रोग, पाण्डु रोग, हाथ पाँओ के सब रोग दूर होते हैं ।

## लघु गंगाधर रस ( वैद्यकुतूहल से )

शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, अभ्रक भस्म, शुद्ध भांग, सज्जीखार, सुहागा

भुना हुआ, जौखार, वच, मोचरस, यह वस्तुएँ दो-दो तोला, पहले कूटने वाली वस्तुओं को कूट कपडछान करले फिर पारा गन्धक की कज्जली करे और कुटी हुई वस्तुओ को मिला कर भाग के रस और जम्वीरी के रस मे खरल करे दवा तयार हो जाने पर सँभाल कर रख छोडे और इसमे से ४रत्ती दवा लेकर शहद के साथ सुवह शाम सात दिन अथवा चौदह दिन तक सेवन करावे और दवाई के ऊपर तक्र ( लस्सी ) पिलावे तो सब प्रकार का अतिसार संग्रहणी और भी पेट के रोग एव ज्वर आदि दूर हो जाते हैं।

## शंखोदर रस

शुद्ध पारा ४ माशे, शुद्ध गन्धक ८ माशे,मघा ४ माशे, मिर्च ४ माशे, सोठ ४ माशे, जीरा ८ माशे, उटंगन बीज ४ माशे, मीठा तेलिया ४ माशे, हीग भुनी हुई ४ माशे धनिया ४ माशे, अजवायन ४ माशे, सोंचर नमक ४ माशे, शंख भस्म ४ तोले, कौडी भस्म ४ तोले कूटने वाली वस्तुओ को कूट कपडछान करले, पीछे पारा गन्धक की कज्जली करे और सब को मिला कर सात दिन लगातार सूखा ही खरल करे, सात दिन के पश्चात् निकाल कर इस मे से १ माशा से २ माशा तक चावलो के पानी के साथ दोनो समय सात दिन तक खावे तो सब प्रकार की संग्रहणी, बुखार सब प्रकार के उदर रोग ( पेट की बिमारिया), अतिसार आदि रोग दूर होते हैं। भूख खुल कर लगती है।

## संग्रहणी रोग पर पथ्य ( वंगसेन से )

पुराने चावल, सोठ, पुरानी मूग, गौ की लस्सी ( तक्र, मट्ठा ) मसूर तथा और भी जो हलके और पुराने अनाज होते हैं उनका यूप रोगी को पथ्य होता है ।

## संग्रहणी मे अपथ्य

शराव, मास, उडद, कब्ज करने वाले और भारी पदार्थ संग्रहणी रोग मे कुपथ्य है, इस के सिवाय और जो अतिसार रोग मे पथ्य, अपथ्य कहे हैं वे संग्रहणी रोग के भी जानना।

## असाध्य-संग्रहणी लक्षण

जो संग्रहणी दस दिन के वाद, पन्द्रह दिन के वाद, महीने के वाद हट

कर फिर हो जावे और इसी प्रकार वार-वार होती रहे, ऑन्तो मे गुड-गुड़ शब्द होता रहे, आलस्य रहे, शरीर ढीला पड़ जावे, दिन के समय दस्त आवे और रात को आराम रहे, पेट मे दर्द रहे, हाथ पाँव सूज जावे, कमर मे दर्द रहे, मल पतला, लेसदार, ठण्डा उतरे, रोग चिरकाल तक पीछा न छोड़े उसे संग्रहग्रहणी कहते हैं, यह रोग अकसर आमवात ( गठिया ) से होता है इसका पहचानना कठिन होता है, क्यो कि कभी यह रोग महीने के वाद हो जाता है और कभी दस दिन और कभी पन्द्रह दिन के वाद हो जाता है, रोगी इस वात को पहचान नहीं सकता कि मुझे कोई वीमारी है, इस लिये इस की चिकित्सा भी कठिन ही होती है ।

### घटी-यन्त्र लक्षण

सोते समय पसवाड़ो मे शूल हो, पानी मे घड़ा भरने के समान पेट मे गडगड़ का शब्द हो तो उसे घटीयन्त्र कहते हैं, यह घटीयन्त्र रोग असाध्य होता है । वैद्य को सोच समझ कर इसकी चिकित्सा करनी चाहिये ।

इति संग्रहणी रोगाधिकार समाप्त ॥

## अथ अर्श-रोगाधिकार ( ववासीर )

### वायु की ववासीर निदान

जो मनुष्य अत्यन्त कड़वे, तीखे, रूखे, कसैले, ठण्डे पदार्थों का अत्यन्त सेवन करे और वहुत थोड़ा खावे, शराव वहुत पीवे, अत्यन्त मैथुन करे, देश और काल के अनुगुण पदार्थों का सेवन करे, अर्थात् शीतकाल मे ठण्डे पदार्थ खावे, गरमी के दिनो मे अत्यन्त गरम पदार्थ खावे, इसी प्रकार रूखे देश ( मारवाड आदि ) मे रूखे पदार्थ खावे और अनूप देश ( वादी पैदा करने वाले देश, जहा पानी वहुत हो ) मे वादी वस्तुएँ अधिक खावे तथा लंघन (फाका) करने से, शीतल पदार्थों के अतिसेवन करने से, अत्यन्त व्यायाम करने से, तेज हवा और धूप मे फिरते र[illegible]ने से वायु की ववासीर हो जाती है ।

### पित्त की ववासीर का निदान

वहुत चरपरे, खट्टे, नमकीन, गरम पदार्थों के अत्यन्त सेवन करने से

अग्नि के अधिक तापने से, शराब अधिक पीने से, अत्यन्त क्रोध करने से, गरम देश, गरमी का मौसम, दूसरे की वस्तु को देख चिढ़ते रहने से और विदाही ( जलन पैदा करने वाले ) तथा उष्ण पदार्थों के सेवन करने से पित्त प्रकुपित होकर ( बिगड कर ) बवासीर रोग को उत्पन्न कर देता है।

## कफ की बवासीर का निदान

अत्यन्त मीठे, चिकने एवं शीतल पदार्थ,नमक, खटाई और भारी पदार्थों के अति सेवन से,व्यायाम न करने से,दिन मे सोने से,दिन भर तकिया लगा कर बैठे रहने से पूर्व ( सामने ) की हवा, ठण्डे देश और शीतल काल मे चिरकाल तक रहने से, चिन्ता सोच बिलकुल न करने से शरीर का कफ (बलगम) बिगड कर बवासीर पैदा कर देता है।

बवासीर छः प्रकार की होती है, १ वात से, २ पित्त से, ३ कफ से, ४ सन्निपात से, ५ रक्त से ( खूनी बवासीर ), ६ सहज ( पैदायशी, माता पिता को भी हो ) ।

## वात की बवासीर के लक्षण

जो मस्से सरसो और राई के समान छोटे भी हो, और बेर, कन्दूरी, खजूर और कपास फल के समान बडे भी हो, मस्सो और गुदा मे चुमचुमाहट सी लगी रहे, हृदय मे पीडा हो, मस्से सख्त और अकडे हुए हो, ( साथल चूतड और पट्ट ) मे पीडा हो, वंक्षण (कूलहे) कमर और सिर मे भी पीड़ा हो तो जानो कि वात की बवासीर है।

## वात-बवासीर की चिकित्सा ( रसरत्नाकर से )

बच, हींग भुनी हुई, बावडिग, सैधा नमक, जीरा, सोठ, कालीमिर्च, सध, कुठ कड़वी, हरड, चित्रे की जड का छिलका, अजमोद यह सब उत्तरोत्तर अधिक भाग, अर्थात् बच ६ माशे, हींग १ तोला, बावडिग १॥ तोला इसी प्रकार सब को बढ़ाते जाओ, और गुड़ सब से दूना, सब को कूट छान गुडमे गोली बना ६ माशे से १ तोला तक यथाशक्ति गरम पानी से सेवन करे तो वायु की बवासीर बहुत शीघ्र दूर हो जाती है।

## पित्त की बवासीर का लक्षण

पित्त की बवासीर में मस्से नीले, लाल, पीले अथवा काली रंगत के होते हैं, इन मे गरम और पतला सा खून जारी रहता है, ये मस्से तोते की जबान, जिगर के टुकड़े अथवा जोंक के मुख के समान नोकदार पतले ढीले से होते हैं, ये कभी कभी पक जाते हैं, इनमें जलन होती रहती है, ज्वर, पसीना, प्यास, अरुचि और मूर्च्छा आदि उपद्रव हो जाते हैं, मल पतला, हरा, पीला, गरम रक्त युक्त, और आव युक्त उतरता है, ये जौ की तरह बीच से मोटे और किनारो से पतले होते हैं। रोगी के हाथ, पाँओ, नाखून, आखे, मल, मूत्र, त्वचा की रंगत अकसर पीली हो जाती है।

## पित्त की बवासीर की चिकित्सा ( रसरत्नाकर से )

### तीक्ष्ण-मुख रस

रस सिन्दूर, अभ्रकभस्म, स्वर्ण ( सोने की ) भस्म, ताम्र भस्म (तामेश्वर ) फौलाद भस्म, मंडूर भस्म, मुंड ( मुंड एक किस्म का फौलाद होता है, तीक्ष्ण भी एक किस्म का फौलाद होता है ) सोना माखी भस्म, शुद्ध गन्धक, सब वस्तुओ को घीकुआर के रस में खरल कर टिकिया बना कर प्यालो में बन्द कर हलकी सी पुट ( आग ) दे, ठंडा होने पर निकाल ले और फिर घीकुआर के रस मे खरल कर दो पुटें और दे और बारीक पीस कर बिल ( शीशी ) मे भर छोड़े, ( पुराने जमाने मे दवाई बिलो से रखने का रिवाज थी अब शीशिया आम मिल जाती हैं, इस लिये बिलो का रिवाज उड़ गया है, हमारे विचार मे धातु भस्मे बजाय शीशियों के बिलो मे ही रखनी चाहिये क्यो कि बिलो मे पड़ी जितनी पुरानी होती जावे उतनी गुणकारक होती हैं, हा, चूर्ण वगैरह जरूर शीशियो मे बंद रखने चाहिये क्यो कि वह जलदी गुणहीन हो जाते हैं ) फिर एक या दो रत्ती दवाई लेकर मिश्री मिला दोनो समय २१ दिन खाने से पित्त की बवासीर दूर होती है, इसी प्रकार शहद के साथ इस दवा को खाने से भी सब पित्त के रोग दूर होते हैं, इसे तीक्ष्णमुख रस कहते हैं।

## कफ की बवासीर के लक्षण

मस्से बड़े-बड़े हो, पीड़ा कम हो, मस्सो मे खारिश हो, मस्सो मे चिप-

चिपाहट और मीठी-मीठी पीड़ा हो, और हाथ से खुजाने पर सुख मालूम हो, शरीर की रंगत सफेद पड जावे, मस्से करीर के फल समान, पनस (कटहर) के बीज के समान अथवा गो के थन अथवा मुनक्का के समान बड़े-बड़े हो तो कफ की बवासीर जानो।

## कफ अर्श (बवासीर) की चिकित्सा

### आनन्द भैरवरस (रसरत्नाकर से)

मघा, कालीमिर्च, शुद्ध शिंगरफ, सुहागा भूना हुआ, शुद्ध मीठा तेलिया, सब को बराबर-बराबर लेकर पीस निम्बू अथवा अदरक रस के साथ अथवा पानी के साथ खरल करे, इस के बराबर तमेश्वर (ताम्रभस्म) मिला पीस रखे और कफ बवासीर रोगी को १रत्ती तक पान के पत्ते में रख कर खिलावे तो बहुत जलदी फायदा होता है।

## रक्तार्श (खूनी बवासीर) के लक्षण

रक्त (खूनी) बवासीर में भी पित्त की अधिकता होती है, मस्से मूंगे के समान, रत्तियो के समान, अथवा बड के अंकुर (बरोह) के समान होते हैं, उनसे लहू की धार फूट निकला करती है, खून निकल जाने से शरीर की रंगत सफेद पड जाती है और मनुष्य बहुत कमजोर पड़ जाता है।

## रक्तार्श (खूनी बवासीर) की चिकित्सा (रसरत्नाकर से)

शुद्ध भिलावे और एरण्ड के बीज दोनो समान भाग लेकर पीस ले और रत्तियों की जड़ का काढा बना कर उस मे खरल करे, फिर मुंडी के काढ़े मे खरल करे, फिर भंगरे के रस मे खरल करे, फिर केवड़े के अर्क मे खरल करे, गिलोय के रस मे खरल करे, इन सब मे ६-६ बार खरल कर दो माशे के करीब रोज गुलाब के जल के साथ खावे तो खूनी बवासीर दूर हो जाती है।

### अन्य उपाय

दो तोले काले तिल और दो तोले मक्खन दोनो को मिला कर नित्य प्रभात समय खाने से खूनी बवासीर मिट जाती है।

## अन्य उपाय ( वृंदमाधव से )

नागकेसर ४ माशे, मक्खन दो तोले, मिश्री ६ माशे तीनो को मिला कर नित्य खाने से खूनी बवासीर दूर होती है।

## अन्य उपाय

सफेद चन्दन, काले तिल, मोचरस, नीलोफर, मजीठ, पित्तपापड़ा इन सब का बारीक चूर्ण कर ६ माशे से १ तोला तक नित्य दोनों समय बकरी के दूध के साथ खाने से खूनी बवासीर दूर होती है।

## अन्य उपाय

राई तीन पैसे भर ले बारीक चूर्ण कर गो की लस्सी के साथ खाने से खूनी बवासीर दूर होती है।

नोट—राई बडी तेज चीज होती है इस लिये इसका पहले थोड़ा-थोड़ा सेवन करना चाहिये अर्थात् पहले दो-तीन माशे से शुरू करे, पीछे धीरे-धीरे बढाता जावे।

## अन्य उपाय

गोभी को घी में पका कर कनक ( गेहू ) की रोटी के साथ खाने से खूनी बवासीर दूर होती है।

## अन्य उपाय

कीकर की कच्ची फली छाया में सुखा कर चूर्ण कर ले, ६ माशे से एक तोला तक शीतल जल से नित्य खावे तो खूनी बवासीर दूर हो जाती है।

## अन्य उपाय

८ माशे कच्ची हलदी मे गुड़ मिला कर २१ दिन खाने से खूनी बवासीर दूर हो जाती है।

## अन्य उपाय

जंगहरड़, रसौंत, गेरी, कुडासक, छिलका इसबगोल इन सब को बराबर लेकर बारीक चूर्ण करे और तक्र (अधरिडके) के साथ दो माशाभर रोगी को खिलावे तो खूनी बवासीर दूर हो जाती है।

## अन्य उपाय

शुद्ध जमीकंद १६ टङ्क,गुड़ आठ टङ्क,दोनो को मिला कर सात टङ्क नित्य खाने से बवासीर दूर होती है,जमीकंद शुद्ध करने की विधि–देसी जिमीकद के ऊपर १-१अगुल मिट्टी का लेप कर भूवल मे दवा दे, जब मिट्टी लाल हो जावे तो निकाल ठंडा कर मिट्टी उतार ले और जिमीकंद के टुकड़े कर घी मे भून ले, कराची की तरफ से जो जिमीकंद आता है वह इतना तेज नही होता इस लिये उसे छील कर घी मे भून लेना ही काफी है, कच्चा जिमीकंद खाने से गला पकड लेता है, मुंह मे खुजली पैदा कर देता है, कभी-कभी गला घुटने लगता है इस लिये इसे शुद्ध कर लेना चाहिये।

## सब प्रकार की बवासीर की चिकित्सा

शुद्ध नीलाथोथा, फटकरी भुनी हुई,सोहागा भुना हुआ, जौखार, शुद्ध संखिया, नसादर,सब समान भाग ले निम्बु के रस मे खरल कर आधी रत्ती के बराबर गोली बना ले, सुबह शाम १-१ गोली मखन के साथ अथवा हलवे के साथ मिला कर नित्य खाने से बवासीर दूर होती है। इस दवाई मे संखिया पडा हुआ है इसलिये इसे मात्रा से अधिक नही खाना चाहिये।

## लशुनादि वटी

निबोली की गिरी, सज्जीखार, हींग भुनी हुई, लहसन की पोथी सब दवाइया पाँच-पाँच टङ्क और गुड बीस टङ्क सब को पीस कर एक-एक माशे की गोली बना ले शक्ति अनुसार एक से तीन गोली तक प्रातः सायं खाने ६ प्रकार की बवासीर दूर होती है, भूख लगती है।

## बवासीर के मस्सों पर धूनी

पुठकंडे के बीज बीस टङ्क लेकर उन मे पाँच टङ्क लौंग मिलावे दोनो को कूट कर २१ दिन तक गुदा मे ( मस्सो पर ) धूनी दे तो सब प्रकार की बवासीर दूर हो।

## अन्य धूनी

जंगली गोहे ( उपले ) को जलावे और उस पर मुंडी बूटी बुरके और धुएँ को गुदा मे ( मस्सो पर ) लेने से सब मस्से झड जाते है। जब मस्से

दूर हो जावे तो उन की जड़ पर एरने उपले का तेल लगाना चाहिये इस से खूनी ववासीर भी दूर हो जाती है ।

उपले का तेल निकालने की विधि—जंगली उपलो को आग लगावे जब धुआँ निकलने लगे तो उन पर एक मिट्टी का चिकना वर्तन औंधा रख दे, जब धुआँ निकलना वंद हो जावे तो वर्तन हटाले वर्तन के अन्दर लगी हुई पतली चीज को तेल कहते हैं, इसी तरह पाताल यन्त्र से भी निकाल सकते हैं और इस तेल को मस्सो पर लगाना चाहिये ।

## अन्य धूनी

हाथीदांत का चूरा आग पर रख कर गुदा मे धूनी देनी चाहिये, इस से सब प्रकार की ववासीर दूर होती है ।

## अन्य धूनी

ककड़ तमाखू २ भाग, शिगरफ १ भाग, नीलाथोथा आधा भाग सब को कूट कर आग पर रख गुदा मे धूनी देवे तो सब प्रकार के मस्से सूख कर झड़ जाते हैं ।

## गोली

शुद्ध गन्धक ४ भाग, सोठ ६ भाग, मर्घा ८ भाग, कालीमिर्च ८ भाग, चित्रे की जड का छिलका १० भाग, सैधा नमक ७ भाग, सब वारीक पीस कर निम्बु के रस मे खरल करे और वेर बराबर गोली बना कर प्रात सायं खानी चाहिये इस के सेवन करने से अग्नि वढ़ती है, भूख खुलती है, और ववासीर दूर होती है ।

## लेप

कड़वी तोरी, हलदी, दोनो को सरसो के तेल मे पीस कर मस्सो पर लेप करने से मस्से कट जाते हैं।

## अन्य लेप

करंजुए ( मेचके ) के पत्रो को गोमूत्र के साथ पीस कर मस्सो पर लेप करने से मस्से सूख जाते हैं ।

## अन्य उपाय-गोली

काले तिल, पुराना गुड, हरड, शुद्ध भिलावे सब समान भाग लेकर दो-दो माशे की गोली बना कर रोगी को एक-दो गोली जल के साथ अथवा दूध के साथ सेवन करावे तो बवासीर, श्वास, बुखार, पाण्डु रोग, तिली आदि सब रोग दूर होते है।

## सूरण वटक ( गोली )

कालीमिर्च १ भाग, सोठ २ भाग, चित्रे की जड का छिलका आठ भाग, शुद्ध जिमीकद १६ भाग, गुड पुराना सब से दुगुना, सब वस्तुओ को कूट छान कर गुड मे दो-दो माशे की गोली बना ले यथाशक्ति दो या तीन गोली नित्य जल अथवा दूध के साथ खावे तो वायगोला, अफारा, बवासीर सब प्रकार की मंदाग्नि आदि रोग दूर हो जाते हैं।

## विजय चूर्ण ( वंगसेन से )

दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, हरड, बहेडा, आमला, मवा, मिर्च, सोठ, चब, सौंफ, हलदी, दारुहलदी, वावडिंग, पाठा, सामुद्र नमक, सैधा-नमक, विड नमक, सोंचल नमक, शीशा नमक, कौड, विलगिरि, अजमोद पिप्पलामूल, रायसन, जौखार, सज्जीखार, वच इन सब का कपडछान चूर्ण बना कर रख ले, फिर इस मे से यथाशक्ति ३ माशे से ६ माशे अथवा तोला भर चूर्ण लेकर खावे और ऊपर से १ तोला एरण्ड तैल गरम पानी मे मिला कर पिए। इस दवाई से सब प्रकार की बवासीर पसली का दर्द श्वास रोग, प्रमेह ( पेशाब की बीमारिया ) धडका, पेट के कीड़े, बुखार, कामला ( यरकान, पीलिया ) हृदय रोग, उदावर्त, गठिया, वस्ति शूल, ( मसाने की दर्द ) सग्रहणी रोग, अस्सी प्रकार के वातरोग, भगन्दर, पेट के रोग, भूतरोग, यह सब रोग दूर होते हैं, भूख खुल कर लगती है, शरीर के सारे दोष दूर होते हैं।

## बवासीर में पथ्य

जुलाब, मस्सो पर लेप, रक्त-मोक्षण, (लहू निकालना, फसद खोलना) क्षार लगाना ( सखिया, नीलाथोथा, आदि बडे तीक्ष्ण क्षार है मस्सो

को झाड़ने के लिये साधु संन्यासी अथवा और चतुर चिकित्सक थोडी-थोड़ी मिकदार मे इन का मस्सो पर लेप लगाते हैं, इससे मस्से झड़ जाते हैं, पीछे से कोई जखम भरने वाला मरहम लगा देते हैं, वैद्यक-शास्त्र मे और कई प्रकार के क्षार बनाने के तरीके दिये हुए हैं। अग्नि चिकित्सा गरम-गरम सलाई से मस्सो को जला देना, तीक्ष्ण शस्त्र ( चाकू, नश्तर ) से मस्सो को काट देना, अर्थात् बवासीर के चार इलाज होते है, १—खाने को दवाई देना, २—क्षार लगा कर मस्से झाड़ देना, ३—सलाई आदि गरम करके मस्सो को जला देना ४—चाकू नश्तर आदि शस्त्र से मस्सो को काटना ( ऑपरेशन करना ) यह चार प्रकार की अर्श की चिकित्सा होती है। खाने को सट्ठी चावल, कुलथी, पंडोल पत्र, जमीकंद, पालक, इटसिट, सरसो का तेल, कांजी, मट्ठा आदि एवं अन्य सब अग्नि बढाने वाले द्रव्य तथा गन्ना, चित्रा, हरड़ इन सब वस्तुओ का भी सेवन करना चाहिये।

### बवासीर में कुपथ्य [ परहेज़ ]

रोगी को पॉओ के भार बैठना नही चाहिये, नदी का पानी नहीं पीना चाहिये, मल मूत्र आदि वेगो (हाजत) को नही रोकना चाहिये। गाडी घोड़े आदि की अधिक सवारी नही नरनी चाहिये, मास, मछली, तिलकुट, शराब, उड़द आदि कब्ज करने वाली और भारी चीजे नही खानी चाहिये। और भी अपनी प्रकृति के प्रतिकूल वस्तुओ का सेवन कभी नहीं करना चाहिये। यहा प्रकृति के प्रतिकूल वस्तुओ का मतलब यह है कि जिस मनुष्य का स्वभाव वायुप्रधान है उसे कब्ज करनेवाली तथा खुश्क चीजो का सेवन नही करना चरना चाहिये, पित्त रक्त स्वभाव वाले को गरम और तीक्ष्ण चीजो का सेवन त्याग देना चाहिये और कफ प्रकृति वाले को बलगमी, वादी, ठण्डी और अतिचिकनी वस्तुओ का त्याग कर देना चाहिये।

इति अर्श रोगाधिकार।

## अथ अजीर्ण मन्दाग्नि रोगाधिकार

### मन्दाग्नि निदान

वात, पित्त, कफ इनके अधिक प्रकोप से अथवा केवल कफकारक

पदार्थों के अधिक खाने से, अध्यशन करने से (एक बार खाकर थोडी देर बाद फिर खा लेना), नित्य कब्ज आदि के रहने से, पेट मे मैल जमा रहने से, बहुत खाने पीने से, विषमाशन से (विषमाशन उसे कहते हैं- कभी बहुत खा लिया और कभी बहुत ही थोडा खाना और कभी भोजन सुबह, कभी दोपहर और कभी शाम को, कभी दोनो समय, कभी एक समय भी नही अर्थात् भोजन करने का कोई नियम न हो और कोई नियत समय भी न हो, नरम और सख्त चीजो को इकट्ठा मिला कर खाना, क्योंकि इस प्रकार करने से पेट मे गडबडी पड जाती है) रात को जागते रहने से, मल और मूत्र के वेगो का रोकने से लोगो को मन्दाग्नि और अजीर्णादि रोग हो जाते हैं।

## मन्दाग्नि रोग के लक्षण

वमन, प्यास, पेट मे शूल, मूर्छा, भ्रम, कंप, दस्त, जंभाइया, दाह, कच्चे पक्के डकार, रात को नीद ना आना, श्वास भारी हो जावे तो मन्दाग्नि रोग जानो।

नोट—यह अग्नि ४ प्रकार की होती है, १ मन्दाग्नि, यह कफ से होती है, २ तीक्ष्णाग्नि पित्त के प्रकोप से होती है, ३ विषमाग्नि वायु के प्रकोप से और ४ समाग्नि, जब सारे दोष सम अर्थात् बराबर और अपनी-अपनी अवस्था मे ही हो, न बढ़े हुए हो और न कम हो तो समाग्नि होती है। इन चारो मे से पहले के तीन १ मन्दाग्नि, २ तीक्ष्णाग्नि और ३ विषमाग्नि रोग के कारण होते हैं, अर्थात् इन तीन प्रकार के अग्निरोगो से अजीर्ण (बद हजमी) रोग हो जाता है। जैसे, जिस नर को मन्दाग्नि होगी उस को आम अजीर्ण होता है। आम अजीर्ण उसे कहते हैं जिसमे खाया पिया न पचे, कच्चे डकार आते हो, मुँह मे पानी भरा रहे, भूख लगे नही, खाने मे रुचि न हो, उबकाई आती हो और भी कफ के लक्षण पाए जावे।

तीक्ष्णाग्नि पित्त से होती है—इस मे आदमी को विदग्धाजीर्ण हो जाता है, विदग्धाजीर्ण मे रोगी जितना भी खाले पच (जल) जाता है, जैसे रोटी पकाते समय चूल्हे मे बडी तेज आँच दी जावे तो रोटी बजाए पकने के जल

जाती है, इसी प्रकार विदग्धाजीर्ण में भोजन का क्रमपाक नहीं होता, रोगी को खट्टे जले डकार आते हैं, शरीर मे दाह होता है, रस ठीक नहीं बनता और शरीर मे बल भी नहीं आता अन्य भी पित्त के रोग हो जाते हैं। विषमाग्नि वायु के प्रकोप से होती है, इस से विष्टब्ध अजीर्ण होता है, विष्टब्ध अजीर्ण में कभी भूख लग आती है और कभी भूख बिलकुल नहीं लगती, कब्ज हो जाती है, शरीर रूखा और फीकी रंगत का पड़ जाता है, इस के अतिरिक्त और भी वायु के रोग हो जाते हैं। ४-वात, पित्त, कफ इन की समानता से अग्नि सम रहती है, समाग्नि मनुष्य का खाया-पिया ठीक समय पर हजम हो जाता है, ठीक रस बनता है, शरीर पुष्ट और बलवान् होता जाता है, मुख की कान्ति बढ़ती जाती है, समाग्नि मनुष्य सब में श्रेष्ठ माना है।

## विषूचिका के लक्षण

उलटी हो, प्यास अधिक हो, पेट मे शूल हो, भ्रम हो, कंप हो, दस्त हो, जंभाई आवें, शरीर मे दाह हो, कच्चे डकार आवें, रोगी को नींद न आवे, श्वास भारा हो जावे, ये 'विषूचिका' (हैजा) के लक्षण हैं।

## विषूचिका के असाध्य लक्षण

नींद बहुत आवे, रोगी बकवास करे, कंप-कंपी बहुत बढ़ जावे, पेशाब रुक जावे और रोगी बिलकुल चेष्टाहीन हो जावे ये विषूचिका ( हैजा ) और अलसक ( बंद हैजा ) के असाध्य लक्षण होते हैं।

## मंदाग्नि चिकित्सा

सौंचल नमक, सोंठ, हरड़, मघा, त्रिवी, इन पांच वस्तुओं को कूट कपड़ छान कर ६ माशे के लगभग गरम पानी के साथ खावे इस चूर्ण को पञ्चसमचूर्ण कहते हैं, इसके खाने से शूल, बवासीर, अफारा और मंदाग्नि अजीर्ण आदि रोग दूर हो जाते हैं।

## अग्निमुख चूर्ण विषूचिका पर

शुद्ध हींग १ भाग, वच २ भाग, मघ ३ भाग, सोंठ ४ भाग, अजवायन ५ भाग, चित्रे की जड़ की छाल छः भाग, हरड़ ७ भाग, कुठ ८ भाग, इन सब को पीस चूर्ण कर गरम पानी अथवा दही के साथ ३-४ माशे खाने

से वायु के रोग, मंदाग्नि, विपूचिका ( हैजा ) ववासीर, हिचकी, दमा, खासी, क्षय, अजीर्ण, तिली और सब प्रकार के शूल दूर होते है ।

## अन्य उपाय

मघ, हरड, अजवायन, सोठ, सैधा नमक, छिलका, इन का चूर्ण कर गरम पानी के साथ खाने से सब प्रकार की मंदाग्नि और अजीर्ण दूर होते हैं, भूख खूब लगती है, पाचन शक्ति बढती है । मात्रा ३ से ६ माशे तक ।

## अन्य चिकित्सा

हरड, मघ, सैधा नमक, चित्रे की जड का छिलका, इन चार चीजो को कूट कपडछान कर गरम पानी के साथ खाने से मंदाग्नि दूर होती है भूख खुलती है ।

## अन्य पाचन चूर्ण ( योगचिंतामणि से )

शुद्ध हीग १ भाग, वच २ भाग, बिड नमक ३ भाग, सोठ ४ भाग, जीरा ५ भाग, हरड ६ भाग, पोहकरमूल ७ भाग, कुठ ८ भाग सबको चूर्ण कर ५-६ माशे गरम पानी से खावे तो सब प्रकार का अजीर्ण दूर हो जाता है, भूख खूब लगती है । वायुगोला, हैजा, शूल तथा अन्य भी वायु के सब रोग दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय

हरड, मघा, सौंचल नमक, इन तीनो का चूर्ण कर गरम जल के साथ तीन माशे लगभग खाने से विपूचिका, अजीर्ण आदि रोग तत्काल मिट जाते हैं ।

## अमृत वटी

जौखार, सज्जीखार, भुना हुआ सुहागा, लौग, कालीमिर्च, हरड, अनार दाना, पिप्पलामूल, सैधा नमक, चित्रे की जड का छिलका, धनिया, बिल-गिरि, समाक दाना, अजमोद, जीरा, सोठ, मघा, सब बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर ले, पीछे से जंभीरी के रस की एक भावना देकर एक दो माशे की गोली बना कर एक अथवा दो गोली रोज सवेरे खाने से मन्दाग्नि, उलटी शूल आदि सब रोग दूर हो जाते है, खूब भूख लगती है ।

## वृद्ध-अग्निमुख चूर्ण

चित्रे का छिलका, पाठा, जौखार, सज्जी खार, वच, पाँचों नमक करंजुए का छिलका, भंडिगी, वड़ी इलायची, पोहकरमूल, त्रिवी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, भुनी हुई हींग, कचूर, कमीला, दारु हलदी, तेजपत्र, समाकदाना, नेत्रवाला, हरड़, जीरा, आमला, अनार दाना, चोवचीनी, इमली, तिल, मघां, कालीमिर्चे, अम्लवेद, अजवायन, अजमोद, शुद्ध भिलावा, देवदारु, सफेद जीरा, छोटी इलायची, अम्लतास का गूदा, हाऊवेर, पतीस, सुहाजने के वीज, काली त्रिवी, पलास पापडा, तालमखाना (प्राचीन शास्त्रों में लिखा है कि—तिल, पलाश सुहाजने के बीज, कालामोखा, तालमखाना इन सब के खार वना कर मिलाने चाहिये) इन सब का चूर्ण वना कर गोमूत्र की तीन भावना, अदरक रस की तीन भावना और जभीरी के रस की तीन भावना देकर सुखा कर सभाल कर रख छोड़े, दो-तीन माशे चूर्ण गरम पानी से खावे तो मन्दाग्नि, विपूचिका, शूल, कफ की ववासीर, वायु गोला, तिली वमन आदि रोग दूर होते हैं, भूख खुल जाती है, सब प्रकार के ज्वर भी दूर होते हैं।

## रविलवण भास्कर-लवण ( वृंद से )

काला जीरा, मघा, धनिया, पिप्पलामूल, वावड़िंग, सैंधा नमक, विड नमक, तालीसपत्र, नागकेसर, यह सब ८-८ तोले, कालीमिर्चे, सफेद जीरा, सोंचर नमक, सोंठ, सब ४-४ तोला, तेज पत्र दो तोले, इलायची दो तोले, दालचीनी दो तोले, अनारदाना ५ तोले, अम्लवेद ८ तोला, सामुद्र नमक ३२ तोला इन सब को वारीक चूर्ण कर ३-४ माशे गरम जल के साथ, लस्सी के साथ दही के तोड़ के साथ, शराव के साथ, सीधु के साथ, सिरके के साथ अथवा काञ्जी के साथ खाने से वायु के रोग, वलगम के रोग, वात कफ के रोग, वायु गोला, वायु का शूल, मन्दाग्नि, ववासीर, कोढ़, भगन्दर, हृदय रोग, आमवात (गंठिया) कब्जी, तिली, पथरी, श्वास रोग, कास रोग, उदर रोग, क्रिमि रोग, अजीर्ण, पाण्डु रोग, तथा और अनेक प्रकार के रोगों को दूर करता है, इसे रवि-लवण अथवा भास्कर-लवण कहते हैं।

## पुदीनादि चूर्ण

पुदीना पहाडी खुश्क ५ पल, खुरासानी अजवायन तीन सरसाही भर, अनारदाना पॉच सरसाही भर, सुहागा भुना हुआ १तोला, नौसादर १तोला, लौंग ६ माशे, हरड, अजवायन ४-४ तोले, सौंचर नमक, चित्रे का छिलका राई, मघा, मूली के बीज, पलास पापडा, त्रिवी, इलायची, कोल डोडा, हाऊवेर, वायविडंग, कल्लर नमक, सौंचर नमक, चित्रा, मोरशिखा, ये सब वस्तुऍ ६-६ माशे सब को कूट कर चूर्ण करे। प्रात काल ६माशे गरम पानी अथवा ऊपर के नुसखे मे लिखे हुए अनुपान के साथ सेवन करने से अजीर्ण, अफारा, मन्दाग्नि, हैजा, सब प्रकार का शूल, कब्जी, पेट की गुड-गुड़ अथवा और भी सब प्रकार के रोग इस के सेवन करने से दूर होते हैं।

## अजीर्ण-कंटकरस (रसरत्नाकर से)

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा तेलिया, सब बराबर कालीमिर्च सब के बराबर, पहले पारा गन्धक की कज्जली कर ले पीछे मीठा तेलिया बारीक कर मिला ले और कण्डियारी के फलो का रस निकाल कर २१ भावना दे और तीन-तीन रत्ती की गोलिया बना लेवे, इस के सेवन करने से मन्दाग्नि और अजीर्ण दूर होता है।

## वृद्ध-तालीसादि चूर्ण [ वंगसेन से ]

तालीसपत्र, काकडासिगी, मघा, कालीमिर्च, सोठ, हरड, मुनक्का, लौग, छुहारा, अनारदाना, दालचीनी, नागकेसर, सफेदजीरा, कालाजीरा, इलायची, नेत्रबाला, तोखाखीर, तमालपत्र, वंशलोचन, कचूर सब दवाई बराबर, मिश्री सब के बराबर, कपड छान चूर्ण कर के ३-४ माशे रोगी को सेवन करावे तो बवासीर, श्वासकास, उदर के रोग, पाण्डु, धडका, बुखार, पेट दर्द, मदाग्नि, अरुचि, नकसीर, अजीर्ण, ये सब रोग दूर होते हैं।

## लघु-तालीसादि चूर्ण [शार्ङ्गधर से]

तालीसपत्र एक तोला, सोठ दो तोला, कालीमिर्च ३ तोला, मघा ४ तोला, वंशलोचन ५ तोला, दालचीनी ६ माशे, इलायची ६ माशे, मिश्री ३२ तोले, सब का कपड़छान चूर्ण कर के २-३ माशे की मात्रा रोगी को

खाने को देवे, यह चूर्ण रुचिकारक,अग्नि को बढाने वाला और भूख लगाने वाला है।

अथवा—मिश्री की चाशनी बना कर अन्य वस्तुओ को उसमे मिला कर गोली बना ले, इस गोली को मुँह मे रख कर चूसने से श्वास कास, बुखार,उलटी,दस्त,कफ,खासी, अफारा तथा और भी सब प्रकार की पीडाएं दूर होती हैं, यह चूर्ण (या गोली), संग्रहणी, वायगोला, धड़का, तपदिक, नकसीर आदि रोगो को भी दूर करता है। महापुष्टिकारक एवं सुखदायक है।

## पञ्चकोल चूर्ण

सोंठ, मघां, चव, पिप्पलामूल, चित्रे की जड़ का छिलका इनका चूर्ण करके गरम पानी के साथ ३-४ माशे खाने से वायगोला, मन्दाग्नि, कफ, अरुचि, संग्रहणी आदि रोग नष्ट होते हैं, यह चूर्ण दीपन और पाचन है।

## त्रिफलादि चूर्ण

हरड़, बहेड़ा आमला, चव, मघां ये बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर ३-४ माशे शहद से चाटे तो ज्वर, श्वास, कास, मन्दाग्नि दूर होती है।

## अग्नि-कुठार रस ( शार्ङ्गधर से )

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक (कज्जली), शुद्ध वच्छनाग विष,हरड़, बहेड़ा, आमला, चित्रा, जौखार, सज्जीखार, सैधा नमक, जीरा, मघां, मरचा, सोंठ, सौचलनमक, सामुद्रनमक, बावडिंग सब का बारीक चूर्ण कर जंबीरी के रस मे खरल कर एक-एक रत्ती की गोली करे,एक या दो गोलिया गरम पानी के साथ प्रात सायं भोजन से पहले खावे तो भूख खूब लगे, रुचि बढ़े, पेट का शूल, मन्दाग्नि, वायगोला, अफारा आदि अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं, जैसे अग्नि लकड़ियो को भस्म करती है इसी प्रकार यह दवाई भोजन को पचा देती है।

## भस्मक रोग निदान

पित्त के बढ़ जाने से पाचक अग्नि विदग्ध हो जाती है और तीक्ष्ण पित्त वायु के साथ मिल कर कफ को क्षीण करता है। इसे भस्मक कहते हैं।

पित्त के बढ़ जाने से पाचक अग्नि विदग्ध हो जाती है और वही बढ़ा

हुआ पित्त वायु के साथ मिल कर कफ को क्षीण कर देता है इस से खाया-पिया सब भस्म हो जाता है, इसे भस्मक रोग कहते हैं।

विशेष—इस रोग को यूँ समझना चाहिये कि जैसे तेज आंच जला कर उस पर तवा आदि धर दिया जावे, और आँच इतनी तेज हो कि रोटी पड़ते-पडते ही जल कर कोइला हो जावे, इसी प्रकार भस्मक रोग मे भी आहार पित्त वात द्वारा प्रचण्ड की हुई अग्नि से भस्म हो जाता है, उस की ठीक-ठीक रस क्रिया नहीं होती, जिस प्रकार ढेर लकडिया जलाने से मुट्ठी भर राख शेष रह जाती है, इसी प्रकार इस रोग मे रस सत्ता जल जाती है और शेष कुछ मल रह जाता है। अतएव मनुष्य को भूख तो बार-बार लगती है किन्तु उस के परिपाक के अनन्तर शक्ति और सत्ता नहीं रहती।

## भस्मक रोग लक्षण

प्यास बहुत लगती है, अग्नि तीक्ष्ण हो जाती है, पसीना अधिक आता है शरीर मे अत्यन्त दाह होता है, रस रक्तादि सात धातुओ मे ज्वर रहता है, मूर्च्छा होती है, अग्नि तीक्ष्ण होने से खाया हुआ अन्न क्षण भर मे भस्म हो जाता है ।

## भस्मक रोग चिकित्सा

गूलर की छाल का चूर्ण १ तोला, स्त्री के दूध के साथ पिलाने से भस्मक रोग दूर होता है।

## अन्य चिकित्सा

श्वेत कमल, वासमती के चावल दोनों की बकरी के दूध मे खीर बना घी खाड मिला कर खाने से भस्मक रोग दूर होता है।

## अन्य चिकित्सा

ताजे विदारीकंद ( सिआलियां ) के रस को दूध मे पकावे, जब दूध मात्र रह आवे उस मे आठवा भाग घी मिला कर पिलाने से भस्मक रोग दूर हो जाता है।

## अजीर्णादि रोगों पर पथ्यापथ्य

साधारण रूप मे—कफ की मन्दाग्नि मे वमन (उलटी) कराना चाहिये

और पित्त में विरेचन ( दस्त ) कराना चाहिये, और वायु में स्वेद (पसीना) देना चाहिये। इस के अतिरिक्त व्यायाम कराना चाहिये, हलका और दीपन आहार देना चाहिये, मूंग, सट्ठी के चावल, लाजमंड, विलेपी, किशमिश, मुनक्का, लहसन, मूली, केला, पेठा, आमला, बैंगन, अनार, नारंगी, परवल अदरक, ककोडा, करेला, कैंथ, गलगल मिर्च, मेथी, जीरा, तक्र, हींग, मक्खन, कांजी, घी, निंबू, इमली, ये सब पथ्य हैं, अर्थात् ऊपर जो पथ्य बताए हैं ये वात, पित्त, कफ, इनकी अवस्था देखकर जो वस्तु जिसमें पथ्य हो वह सोच विचार कर देनी चाहिये।

### कुपथ्य

टट्टी, पेशाब का रोकना, वक्त बेवक्त नरम गरम भोजन करना, मछली, मांस, पीठी के बने पदार्थ, जामन, कूर्चिका ( दूध, दही, अथवा दूध और तक्र एकत्र मिला कर अग्नि पर पका कर गाढा हो जाने पर जो वस्तु बन जाती है उसे दधिकूर्चिका वा तक्रकूर्चिका कहते हैं ) मोरट ( छाना, फटा हुआ दूध ), कब्ज करने वाले भारी पदार्थ, रक्त का निकालना, ताल फल की गिरी, किलाट ( खोया ), गंदा पानी, नदी का पानी, ये पदार्थ संक्षेप से कुपथ्य कहे हैं, इनके अतिरिक्त और भी जो अपनी रुचि के अनुकूल न हों, वादी, भारी, तीखे, रूखे पदार्थ हों मन्दाग्नि वाले रोगी को छोड़ देने चाहिये।

इति सौदामिनीभाषाभाष्य मन्दाग्नि-चिकित्सा चौथा अध्याय समाप्त।

---

# अथ पाँचवाँ अध्याय।

## क्रिमि-रोग निदान

मीठे, खट्टे, द्रव ( पतले ), पीठी वाले पदार्थ और गुड़ अधिक खाने से, दिन में सोने से, विरुद्ध आहार (दूध और मछली, दूध और मांस दूध और खटाई, दूध और उड़द, दूध और मूली, इकट्ठी खाने को विरुद्ध

आहार कहते हैं, इस लिये यह नही खाने चाहिये) करने से कृमिरोग ( पेट मे कीडे पैदा हो जाते हैं ) उत्पन्न हो जाता है।

## क्रिमि-रोग लक्षण

क्रिमि रोग मे अग्निमन्द पड जाती है, भ्रमरोग हो जाता है, ज्वर-अतिसार हो जाता है, चेहरे का रंग पीला पड जाता है, हृदय मे पीड़ा होती है, भोजन करने पर शरीर मे पीड़ा होती है, गुदा मे खाज होती है, मुँह मे वार-वार पानी भरता है, कलेजे मे खोह पडती है, कुछ खा लेने पर शान्ति मिलती है, यह लक्षण हो तो क्रिमिरोग जानो।

## क्रिमि रोग चिकित्सा

### कीटमर्द रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा, इन्द्रजौ, अजवायन, मनसिल शुद्ध, इलायची, ये सब समान भाग लेकर देवदाली के रस मे भावना देकर दो-दो रत्ती की गोलियां बना ले, एक या दो गोली खाकर ऊपर मूसाकरनी बूटी का काढ़ा मिश्री मिला कर पीने से अथवा मधु के साथ चाटने से पेट के कीड़े दूर होते हैं।

नोट—शुद्ध पारे के स्थान मे रससिन्दूर मिलाना चाहिये, मूल पुस्तक मे इस दवाई की मात्रा १ टङ्क लिखी है सो वहुत अधिक है।

### क्वाथ [ योगशत ग्रंथ से ]

खैर, इन्द्रजो, नीम की छाल, वच, मघ, मिर्च, सोठ, हरड़, वहेड़ा, आमला, त्रिवी सब मिला कर दो तोला पानी ३२ तोला काढ़ा करे जब पानी ८ तोले रह जावे उतार कर छान ले, उसमे उतना ही गोमूत्र मिला रोज शाम सवेरे पीना चाहिये।

### अथवा

इन्हीं चीजो को कूट छान कर चूर्ण बना ५-६ माशा रोज साझ सवेरे गोमूत्र के साथ पिए तो सब प्रकार के उदर क्रिमि दूर होते हैं।

### काढ़ा (योगशत ग्रंथ से)

नागरमोथा, मूसाकरनी, देवदार अथवा दारुहलदी, हरड़, वहेड़ा,

आमला, सुहांजने का छिलका इन का काढ़ा बना कर उस मे ४ रत्ती मघ और ३ माशे वायविडिंग ( चूर्ण कर ) बुरक कर रोगी को पिलावे। इस से पेट के अन्दर के सब प्रकार के कीड़े मर जाते हैं।

### अन्य काढ़ा [ वीरसिंहावलोकन से ]

अनार के छिलके के काढ़े मे १ तोला तिल तेल मिला कर पीने से पेट के सब प्रकार के कीड़े मर जाते हैं।

### चूर्ण [ योगचिंतामणि से ]

वच, अजमोद, पलास पापडा ( ढाक के बीज ), हींग, त्रिवी, कमीला सब बराबर ले चूर्ण कर ३-४माशे नित्य गरम जल से खावे तो पेट के सब प्रकार के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

### अन्य चूर्ण

हरड़, वहेड़ा, आमला, दन्ती, वच, कमीला सब द्रव्य समान भाग ले चूर्ण कर नित्य गोमूत्र के साथ ६माशे खाने से सब प्रकार के उदर क्रिमि दूर हो जाते हैं

### अन्य दवाई [ रामविनोद से ]

रात को तोला १॥ तोला गुड़ खाकर सो रहे, प्रातःकाल अच्छा कमीला छ.माशे भर कपड़े मे छान कर छटाक भर दही मे मिला कर खावे, इससे पेट के सब क्रिमि मर कर बाहर निकल जाते हैं।

### अन्य दवाई [ वृंदमाधव से ]

सैंधा नमक, हरड़, वायविडिंग, कमीला, जौखार सब को बारीक चूर्ण कर ६ माशे ले गाय के मट्ठे से पीवे तो सब प्रकार के क्रिमि दूर होते हैं।

### पिप्पल्यादि चूर्ण [ वंगसेन से ]

मघां, पिप्पलामूल, सैधा नमक, काला जीरा, तालीस पत्र, चव, चित्रा, नागकेसर सब दो-दो पल, सौंचल नमक, पाँच पल, सोंठ, सफेद जीरा एक-एक पल, अनार दाना ३२ तोले, अमलवेत २ पल, सब दवाई कूट कर चूर्ण करले। इस को नित्य प्रात.काल उठ कर बासी पानी के साथ अथवा तक्र के साथ ६ माशे खावे अथवा गरम पानी या गोमूत्र, के साथ खावे तो सब

प्रकार के उदर क्रिमि, वाय गोला, पेट दर्द, ववासीर संग्रहणी, कंडू, भगंदर आदि सब रोग दूर होते हैं।

### क्रिमि-रोग पर पथ्य

सट्ठी के चावल, लहसन, परवल, पालक का साग, सरसो का साग, केला, कंडियारी, हरड ( या चिभड ), तिल तेल, काजी, इलायची, दस्त लेना, गोमूत्र, घी, दूध, खार, अजमोद, वासी पानी, ऊँट का पेशाव, दूध, खैर, वेर, और इन्द्रजौ ये क्रिमि रोग मे पथ्य हैं।

### अपथ्य

वमन को रोकना, विरुद्धाहार-विहार,(पिछले अध्याय के अन्त मे लिख आए हैं ) आग तापना, दिन मे सोना, पीठी के पदार्थ खाना, उडद, दही, मास, घी मे पकाए हुए पत्तो वाले साग, खट्टा-मीठा भोजन, खीर आदि पदार्थ क्रिमि रोग मे कुपथ्य हैं।

इति क्रिमि-रोगाधिकार।

# अथ अरुचि-रोगाधिकारः।

### अरुचि-निदान

वहुत खाने से, भारी पदार्थ खाने से, भोजन के ऊपर भोजन करने से नरम सख्त और समय कुसमय भोजन करने से अरुचि रोग होता है।

### अरुचि के लक्षण

शरीर मे दाह ( जलन ) होता है, शरीर सूखता है, प्यास, खाने मे बिलकुल रुचि नही होती, शरीर मे पीड़ा होती है, हृदय मे भी पीडा होती है, ये अरुचि के लक्षण हैं।

### अरुचि की चिकित्सा

मघ, मिर्च, सोठ, हरड, वहेडा, आमला और हलदी सब को पीस चूर्ण कर ३ माशे शहद के साथ सात दिन तक चाटने से अजीर्ण और अरुचि दूर होते है।

## अन्य दवाई

मघा १००, मिर्चा २००, मिश्री ४ तोले सब को बारीक कर २-३ माशे प्रभात समय खाने से बहुत शीघ्र अरुचि दूर होती है।

## अन्य दवाई 'गोली'

कालीमिर्च, कलौंजी, मुनक्का, अनारदाना, सोंचर नमक, जीरा, समाकदाना सब बराबर ले कूट छान कर शहद के साथ बेर प्रमाण गोली बना ले और एक-एक गोली मुँह मे रख कर चूसे इस से अरुचि, अजीर्ण मन्दाग्नि दूर होती है, भूख खुल कर लगती है।

## अन्य गोली [ वैद्यकुतूहल से ]

सैंधा नमक, सोंठ और शुद्ध गन्धक सब समान भाग लेकर चूर्ण कर निम्बू के रस में खरल कर एक-एक माशा की गोलियां बना ले और एक-एक गोली खाने से मन्दाग्नि, अरोचक, अजीर्ण दूर होते हैं।

## क्षुधोदर रस [ वैद्यकुतूहल से ]

सुहागा भुना हुआ, शुद्ध शिगरफ, सैंधा नमक, चित्रा, सब एक-एक भाग, सोंठ १२ भाग, कालीमिर्च १० भाग सब को बारीक पीस एक दिन निम्बू के रस मे खरल कर ४-४ रत्ती की गोली बना ले, एक गोली पान मे रख कर खावे तो श्वास, कास, संग्रहणी, अरुचि, हैजा, अजीर्ण, मंदाग्नि उदर रोग, तिली, वायुगोला, हिचकी शूल, बुखार आदि सब रोग दूर होते हैं, भूख खुल कर लगती है, बल बढ़ता है।

## दूसरा क्षुधोदर रस

शुद्ध शिगरफ, शुद्ध वच्छ नाग विष ४-४ तोले, सुहागा भुना हुआ ८ तोले, कालीमिर्च १६ तोले सब को बारीक कर निम्बू के रस मे सात बार और पान के रस मे सात बार खरल कर एक-एक रत्ती की गोली बनाले। एक-एक गोली नित्य खाने से अरुचि दूर होती है, भूख खूब लगती है, श्वास, कास, क्षयरोग दूर होते हैं।

## अरोचक रोग में पथ्य

अनार का रस, हलका भोजन, पुराने चावल, मूँग, कालीमिर्च और

मघा मिला कर चावलो की माड पीवे।

### कुपथ्य

उडद की पीठी, कब्जी करने वाले पदार्थ, मछली, मास, दही इनको नहीं खाना चाहिये और क्रोध त्याग देना चाहिये।

इति अरोचक-रोगाधिकारः।

# अथ पाण्डुरोगाधिकारः।

## पाण्डु-रोग निदान

मिट्टी खाने से, दिन मे सोने से,लालमिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थों के खाने से वहुत कसरत करने से,वहुत शराव पीने से, टट्टी पेशाव के वेग को रोकने से, गरम सरद हो जाने से, धूप या अग्नि सेवन करने से पाण्डु रोग हो जाता है।

## पाण्डु-रोग लक्षण

पाण्डु रोग पाँच प्रकार का होता है, १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ मिट्टी खाने से।

### वात-पाण्डु-रोग के लक्षण

वायु के पाण्डु रोग में त्वचा मे खुश्की अधिक हो जाती है, नेत्रो मे रूखापन, मूत्र कुछ काला और लाल होता है,शरीर की रंगत भी कुछ लाल काली सी होती है, चक्कर आते हैं, पेट मे अफारा होता है, शरीर मे पीड़ा रहती है।

### पित्त-पाण्डु-रोग के लक्षण

टट्टी, पेशाव, त्वचा, आंखे, नाखून सब पीले पड जाते हैं, प्यास अधिक लगती है, शरीर मे जलन होती है, वुखार हो जाता है, टट्टी पतली आती है, पसीना भी आता है, मुँह का स्वाद कड़वा रहता है।

### कफ-पाण्डु-रोग के लक्षण

कफ के पाण्डु मे शरीर मे कफ वढ जाता है, मुँह मे लार वहती है,

तन्द्रा ( झपकी ), आलस और श्वास वढ जाता है, टट्टी, पेशाव, नेत्र, त्वचा और नाखून का रंग सफेद हो जाता है, शरीर भारी-भारी रहता है ।

## सन्निपात-पाण्डु-रोग के लक्षण

जिस पाण्डु रोग के रोगी मे वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषो के मिले हुए लक्षण पाए जावें वह सन्निपात का पाण्डु रोग होता है ।

## मिट्टी खाने से होने वाले पाण्डु रोग के लक्षण

हाथ, पाँओ, नाभि, आँख, मुँह, भौंहे, सूज जाती हैं खून मिली हुई पतली टट्टी आती है, ऐसी अवस्था मे यह पाण्डु रोग असाध्य होता है ।

विशेष—छाती के निचले भाग मे दाहिनी ओर जिगर और वाईं ओर तिल्ली होती है, जिगर और तिल्ली दोनो शरीर में रक्त वनाने का काम करते हैं, खाने पीने मे वदपरहेजी करने से अथवा मौसमी वुखार या इसी प्रकार के और वुखार हो जाने से तिल्ली और जिगर दोनो ही वढ़ जाते हैं, उस समय पसलियों के सिरे दवाने से दोनों ही साफ-साफ प्रतीत हो जाते हैं, ऐसी अवस्था मे यह दोनो अपना काम ठीक-ठीक नहीं कर पाते इस लिये शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उतना रक्त नहीं वनता जितनी कि शरीर को रक्त की आवश्यकता होती है, उतना रक्त न वनने से शरीर कमजोर, वोदा और भुसिया सा हो जाता है, शरीर में पतला और पीला सा पानी दौड़ता है, इस लिये धड़का वढ़ जाता है, दिल भी कमजोर पड़ जाता है । गुरदे भी अपना काम ठीक नहीं करते, जिगर और गुरदों की कमजोरी या खरावी से सारे शरीर में सूजन हो जाती है । शरीर में जन्म से ही जो दोष अधिक हो उसी दोष का पाण्डु रोग हो जाता है । इसी प्रकार मिट्टी खाने से भी पाण्डु रोग हो जाता है शरीर में रक्त पहुँचाने वाली नालिया मिट्टी से भर जाती हैं, और मिट्टी रक्त को चूसती रहती है, और शरीर मे वहुत कम पतला सा पानी घूमता रहता है, जिससे कि शरीर की जीवन यात्रा शेष रहती है । इस में भी दोषों का कोप हो जाता है, जैसे कि मीठी मिट्टी खाने से कफ वढ़ता रहता है, खारी नमकीन मिट्टी खाने से

पित्त वढता रहता है, और कसैली मिट्टी खाने से वायु वढता रहता है, चूँकि सब प्रकार की मिट्टी आखिर खुश्क ही होती है इस लिये रसादि धातुओं और आहार को भी खुश्क कर देती है। इस रोग को पाण्डु, धक्का, धडका वा यरकान कहते हैं।

## कामला लक्षण

पित्त स्वभाव वाला जब पित्तकारक पदार्थों का अधिक सेवन करता है तो उसके टट्टी, पेशाब आखे, नाखून अत्यन्त पीले और लाल हो जाते हैं और त्वचा भी पीले रङ्ग की हो जाती है, शरीर मे जलन अधिक हो जाती है, कमजोरी वढ जाती है, और कभी-कभी थूक भी पीले रग का आता है, हर-एक चीज पीली दिखाई पडती है। सारा शरीर मेडक की तरह पीला पड जाता है, इसे कामला कहते हैं।

## कुम्भ-कामला के लक्षण

यही कामला जब पुराना हो जाता है, और वायु के अंश जब इस पित्त के साथ मिल जाते हैं तो कुम्भ-कामला हो जाता है। कुम्भ-कामला मे उलटी, अरोचक, बुखार, खासी, खूनी मरोड, पतली टट्टी, श्वास रोग हो जावे तो रोगी का जीना असम्भव हो जाता है, इस लिये वैद्य को सोच समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये।

## हलीमक लक्षण

जिस पाण्डु रोग मे शरीर पीला पड जावे, चेहरा लाल और स्याही-मायल हो जावे, थोड़ा-थोडा बुखार रहे, अग्नि मन्द पड जावे, स्त्री के पास जाने की इच्छा ही उत्पन्न न (नपुसकता) हो, नींद वहुत आवे, श्वास अधिक हो, अरुचि, भ्रम, हड्ड-फूटन और प्यास अधिक हो तो वातपित्त की अधिकता से हलीमक रोग होता है।

## पाण्डु-रोग चिकित्सा

### मण्डूरादि वटी (शार्ङ्गधर से)

मघा, कालीमिर्च, सोठ, हरड, वहेड़ा, आमला, पिप्पलामूल, चित्रा,

देवदारु, सोनामाखी भस्म, नागरमोथा, तज, दारु हलदी, चव, वार्वडिंग, ये सब एक-एक तोला, लोहचून ( मण्डूर भस्म ) सब से दुगुना, सब दवाईयो को कूट कपडछान करले, सोना मक्खी भस्म और मंडूर भस्म भी मिला ले, सब को आठ गुणा गोमूत्र मे लोहे की कड़ाही में पकावे, जब गोली बनाने योग्य हो जावे तो खूब खरल करके ४-४ रत्ती की गोली बना ले, नित्य एक वा दो गोली गो के मट्ठे से नित्य खाने से बवासीर, पांडु-रोग, कामला रोग, अजीर्ण प्रमेह, उरुस्तम्भ, कलेजे की जलन, प्यास, वायु गोला आदि सब रोग दूर हो जाते हैं ।

### क्वाथ ( काढ़ा ) ( वीरसिंहावलोकन से )

हरड़, बहेड़ा, आमला, कौड़, गिलोय, चिरायता, इन सब का काढ़ा बना कर मधु मिला कर पीने से पाण्डुरोग, कामला आदि रोग दूर होते हैं।

### अन्य काढ़ा ( वीरसिंहावलोकन से )

इटसिट की जड़, निम्ब की छाल, पटोलपत्र, गिलोय, कौड़, सोठ, हरड दारुहलदी इन सबको बराबर-बराबर लेकर काढा करे इसके पीने से पाण्डु कामला दूर होता है, श्वास, कास, रक्तरोग, उदररोग, शोफरोग, सूजन आदि सब रोग दूर हो जाते हैं ।

### चटनी ( वीरसिंहावलोकन से )

मंडूर भस्म, चित्रा, वार्वडिंग, हरड, मघा, कालीमिर्च, सोंठ, इन्द्रजौ सब समान भाग ले, सब के समान सोना मक्खी,की भस्म ले,सब को ८गुना गोमूत्र मे पकावे जब गाढ़ी सी हो जावे तो शहद मिला कर रख छोडे, और नित्य प्रातः और सायंकाल ३-४ माशे इस चटनी को चाटने से पाण्डु रोग सोजा और हृद्रोग दूर होते हैं, शरीर बिलकुल स्वस्थ हो जाता है ।

### चूर्ण [ वंगसेन से ]

चित्रा, अजमोद, सैंधा नमक,सोंठ, कालीमिर्च सब का चूर्ण कर गौ के मट्ठे के साथ पीने से पाण्डु रोग, बवासीर,मन्दाग्नि, सब रोग दूर हो जाते हैं।

### मण्डूर भस्म

शुद्ध मण्डूर जो कि लग-भग सौ वर्ष का पुराना हो, उसे गोमूत्र में

खरल करके सात पुटें दे, जब भस्म हो जावे तो उस मे से ४ रत्ती लेकर नित्य गौ के दूध से पिये तो पाण्डु रोग और प्रतिश्याय ( जुकाम ) रोग दूर होता है ।

## अन्य वटक [ वंगसेन से ]

मघा, कालीमिर्च, सोठ, गज पीपल, दारुहलदी, चित्रा, मुनक्का, हरड, वहेड़ा, आमला, कौलडोडा, मंजीठ, इन्द्रजौ, नागरमोथां, शतावरी, सुहाजने के वीज, कौड, शालपर्णी, छोटी कंडियारी, वडी कंडियारी, पृष्ठपर्णी, पाठा हरड, जौखार सब समान भाग चूर्ण कर गोमूत्र मे खरल कर तीन-तीन माशे के वटक (गोली) वना लेवे चावलो के पानी के साथ एक या दो वटक खावे तो पाण्डु रोग क्रिमि, कुष्ठ, प्रमेह, संग्रहणी, ववासीर आदि रोग दूर होते हैं ।

नोट—मूलग्रंथ मे इस की एक तोले की मात्रा लिखी है हमने ऊपर ३ माशे से ६ माशे तक दी है, यदि उचित समझे तो वलवान् रोगी को १ तोले की मात्रा भी दे सकते हैं ।

## कामला रोग चिकित्सा

मघा, कालीमिर्च, सोठ, आमला, लोह भस्म, हलदी और खाड सव समान भाग चूर्ण कर शहद के साथ नित्य प्रति प्रातःकाल खाने से कामला रोग दूर होता है ।

## अन्य चूर्ण

लोह भस्म, हलदी, दारुहलदी, हरड, वहेडा, आमला, मघा, काली-मिर्च, सोठ, सव समान भाग चूर्ण कर एक माशा भर मधु ( ३ माशे ) और घी ( ६ माशे ) के साथ खाने से कामला रोग दूर होता है ।

## अन्य दवाई [ वीरसिंहावलोकन से ]

हरड, वहेडा, आमला, दारुहलदी, निम्व छाल, गिलोय, सव को दरडा चूर्ण कर रात भर पानी मे भिगो दे, सवेरे मल छान कर शहद मिला कर पिये तो कामला रोग वहुत शीघ्र दूर होता है ।

## कामला रोग पर अञ्जन ( वीरसिंहावलोकन से )

द्रोण पुष्पी के रस को नित्य प्रति आँखो मे टपकाने से कामला रोग दूर होता है।

## अन्य अञ्जन

गेरु और हलदी दोनो को आमले के रस मे घिस कर नेत्रो मे अंजन करने से कामला रोग दूर होता है।

## कामलाहर नस्य ( वैद्यजीवन से )

देवदाली जिसे घघरबेल कहते हैं, उसके फल का छिलका उतार कर अन्दर के बीज भी निकाल दे, बाकी जो जाला बचे उसे कूट कर बारीक चूर्ण कर ले, उस चूर्ण की नसवार लेने से कामला दूर होता है।

छिलका और बीज निकाल कर जाले को दरडा कूट कर पानी मे दो पहर तक भिगो छोड़े, पीछे अच्छी तरह मल कर तीन-चार बूँदे दोनो नथनो मे टपकावे और आँखो मे भी टपकावे, इस से तीन दिन तक लगातार नाक से पीला सा पानी निकलता रहेगा और ऐसा मालूम होगा कि बड़ा भारी जुकाम होगया है, तीन दिन के पश्चात् सब अपने आप ठीक हो जावेगा, इस से गला पका हुआ सा मालूम होता है, इस के लिये अम्लतास के गूदे को पानी मे घोल कर गरारे करने चाहिये। इस प्रकार करने से कामला रोग दूर हो जाता है, यह हमारा अपना अनुभव है।

## अन्य अञ्जन

गेरी, त्रिफले की गिरी, हलदी इन सब को पानी मे पीस कर आँखो मे अञ्जन करे, इस से कामला रोग दूर होता है।

## अन्य चूर्ण

अच्छी सोठ को पीस गो दुग्ध से खावे तो कामला रोग दूर होता है।

## अन्य दवाई

दारुहलदी, नीम का रस, शहद मिला कर चाटने से पाण्डु और कामला रोग दूर होता है।

## नस्य

कडवी तूंबी का रस लेकर सात दिन तक नसवार देने से कामला रोग दूर होता है, इस मे चने की दाल का पथ्य देना चाहिये ।

## अन्य उपाय

गधे की ताजी लीद का रस निकाल कर पिलाए और ऊपर से सफेद जीरा मिला कर गौ की लस्सी पिलाए तो कामला रोग दूर होता है। अथवा तीनो को इकट्ठा मिला कर पीना चाहिये ।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

असली शुद्ध शिलाजीत १ रत्ती से ४ रत्ती तक गोमूत्र के साथ नित्य खाने से कुंभकामला रोग दूर होता है ।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

शुद्ध सोना माखी, सोने की मैल और शुद्धमण्डूर तीनो को गोमूत्र मे पीस कर आठ बार जंगली उपलो की आग मे फूके, पश्चात् गोमूत्र की आठ भावना देवे, पीछे २ रत्ती लेकर मधु के साथ चाटने से कुंभकामला और पाण्डु रोग दूर होता है।

नोट—सोने की मैल, सोने की कान से सोना निकालते समय जो मैल निकलती है उसे लेना चाहिये। कई लोग सोना माखी को ही मान लेते हैं, मूल पाठ मे 'हिरण्ज बीठ' है, इस का अर्थ हिरण की विष्ठा भी हो सकता है परन्तु ऊपर का अर्थ अधिक संगत है ।

## हलीमक चिकित्सा ( वंगसेन से )

## अन्य उपाय

हरड, बहेड़ा, आमला, हलदी, दारु हलदी, रक्त चन्दन सब को कूट पीस कर चूर्ण कर शहद और घी से चटावे तो कुंभ कामला दूर होता है ।

## अन्य उपाय

खैर के स्वरस अथवा काढ़े के साथ लोह भस्म, (१ रत्ती) और नागर-मोथा चूर्ण १ माशा मिला कर पीने से हलीमक रोग दूर होता है, कहीं

'मद्य' ऐसा भी पाठ है, वहां नागरमोथा के स्थान पर उत्तम मद्य ( शराब २ तोले ) लेना चाहिये।

## अमृत घृत

ताजी गिलोय १ पाव, खूब बारीक कर कल्क बना ले, गौ का घी एक सेर, गौ का दूध ४ सेर इस मे २ सेर पानी भी मिला लेना चाहिये फिर इस को धीमी-धीमी आँच पर पकाना चाहिये जब घी मात्र शेष रहे उतार कर छान ले इस घृत को तोला भर नित्य पीने से हलीमक रोग दूर होता है।

## त्रिदोष तथा मिट्टी खाने से होने वाले पाण्डु-रोग पर

## अभयादि वटी (रामविनोद से)

हरड़, पिप्पलामूल, कालीमिर्च, सोंठ तमालपत्र, तेजपत्र, नागरमोथा, आमले, वायविडंग सब एक-एक टंक, दंतीमूल २ टङ्क, खांड छः टङ्क, त्रिवि दो पल सब का चूर्ण कर शहद के साथ ६-६ माशे की गोली बना ले, प्रातः सायं दो-दो गोली शीतल जल के साथ खाने से पाण्डु रोग, कुष्ट रोग, भगन्दर, क्रिमिरोग, सूजन, दाह, हड्डु-फूटन, सिरशूल, पेट का शूल, मृगी, मूत्रकृच्छ्र आदि रोग दूर होते हैं; ये वटी रुचिकर एवं सुखकारी है।

## नवरसादि गुटिका (रसचिन्तामणि से)

चित्रा, हरड, वहेड़ा, आमला, नागरमोथा, वायविडंग, मघां, कालीमिर्च सोंठ, सब बराबर लेकर ६ माशे मधु और घृत से चटावे अथवा गुड मे गोली बनावे और गोमूत्र अथवा गौ के मट्ठे के साथ खिलावे तो पाण्डु रोग, भगन्दर रोग, खासी, हृदय रोग, कोढ़, संग्रहणी, बवासीर, मन्दाग्नि, श्वास रोग, क्रिमि रोग आदि अनेक रोग दूर होते हैं।

## वृद्ध नवरसादि गुटिका (योगचिन्तामणि से)

हरड़, वहेडा, आमला, मघा, कालीमिर्च, सोंठ, तज, नागरमोथा, वायविडंग, वंशलोचन, तेजपत्र, तमालपत्र, नागकेसर, छोटी इलायची, सोनामाखी भस्म, लोह भस्म, तोखा खीर, मुलतानी मिश्री सब समान भाग लेकर बारीक कपड़छान कर शहद मिला कर एक-एक टङ्क की मात्रा खावे, ( मूल मे तीन टङ्क लिखा है, ये मात्रा अधिक है )। इस के सेवन से प्रमेह

सोज, पाण्डु रोग, हलीमक,कामला, वायु गोला, श्वास रोग, कोढ़, खासी, विषम-ज्वर आदि सब रोग दूर होते हैं।

## विद्याधर रस ( वैद्यकुतूहल से )

शुद्ध गंधक, तामेश्वर,मघा, कालीमिर्चे, सोठ, दंती की जड, शुद्ध वच्छ-नाग विष, हरड, बहेडा, आमला, धत्तूरे की जड़ का छिलका, आक की जड का छिलका, कोड, त्रिवी, शुद्ध पारा, सुहागा फूल, सब बराबर लेवे, शुद्ध जमालगोटा सब के बराबर, पहले शुद्ध पारा और गंधक दोनो को खरल मे डाल कर खूब रगड़े जब काजल के समान ( कज्जली ) बन जावे और पारे की चमक दूर हो जावे तो विष सुहागा तथा अन्य वस्तुओं को मिला कर थोहर के दूध मे खरल करे और एक-एक रत्ती की गोलियां बना कर एक गोली दंती के काढ़े के साथ खावे तो पाण्डु रोग, वायु गोला, बवा-सीर, पेट दर्द, उदर रोग, संग्रहणी, आम वात गठिया, क्रिमि रोग, कोढ़, मन्दाग्नि आदि अनेक रोग दूर होते हैं और भूख खुल कर लगती है।

## सर्व पाण्डु-रोग पर मण्डूर

हरड, बहेडा, आमला, मघा, कालीमिर्चे, सोठ, हलदी, दारुहलदी, वावडिंग, देवदारु, पिप्पलामूल वच, कोड, नागरमोथा, सोना माखी की भस्म और गिलोय, ये सब बराबर लेकर चूर्ण कर कपडछान कर ले पश्चात् सब के बराबर मंडूर भस्म मिलावे और दो माशे दवाई लेकर गौ के मट्ठे के साथ नित्य खावे।

पथ्य—अलूनी रोटी घी के साथ खावे।

## पाण्डु-रोग पर पथ्य ( वीरसिंहावलोकन से )

वमन, विरेचन, पुराने जौ, गेहूँ, सठी के चावल, मसूर,मूँग,मटर आदि पथ्य हैं।

## पाण्डु-रोग पर कुपथ्य

धूम्रपान ( तम्बाकू पीना ) स्त्री-सग करना, शराब पीना, भारी पदार्थों का सेवन करना, गरिष्ठ भोजन करना, घोड़े की सवारी, क्रोध करना, धूप

मे चलना, दही खाना ये सब पांडु रोग में हानि करने वाले कुपथ्य हैं।

इति पाण्डुरोगाधिकार.।

# अथ रक्तपित्त-रोगाधिकारः।

## रक्त-पित्त निदान चिकित्सा

अधिक समय तक घाम मे घूमने से, अत्यन्त शोक और अति मैथुन से, नमकीन, खारी, गरम, चरपरे और खट्टे पदार्थों का अधिक सेवन करने से, अधिक व्यायाम करने से, रास्ते की थकावट से रक्तपित्त अर्थात् नकसीर का रोग हो जाता है, यह दो प्रकार का होता है, १—उर्ध्व रक्तपित्त, अर्थात् नाक, मुख, कान, आंख, आदि शरीर के ऊपर के भाग से खून फूट निकले तो उसे ऊर्ध्व रक्तपित्त कहते हैं, इस मे कफ का योग होता हैं, २—अधोगत अर्थात् गुदा, इन्द्रिय, आदि शरीर के नीचे के भागो में खून फूट निकले तो अधोगत रक्तपित्त कहते हैं। इस रक्तपित्त में वायु की अधिक प्रबलता होती है।

## असाध्य रक्त-पित्त के लक्षण

रोगी क्षीण हो, दुर्बल हो,देह मे पीड़ा हो, जलन हो,ज्वर, खांसी, प्यास अधिक हो, अग्निमन्द हो,अरुचि हो,श्वास मे रक्त की गंध आती हो, मुख, नासिका गुदा, इन्द्री द्वारा रक्त निकले तो वह रक्तपित्त असाध्य होता है।

## रक्त-पित्त के उपद्रव

शरीर क्षीण और पीला हो गया हो, ज्वर, श्वास, खांसी, उलटी, मद, दाह और मूर्च्छा हो, शरीर में अत्यन्त पीड़ा हो,प्यास हो, शिरपीड़ा हो, थूक मे बदबू आवे, भोजन में अरुचि हो और रक्त अधिक निकले ये रक्त पित्त के उपद्रव हैं।

## रक्त-पित्त का उपाय ( रसरत्नाकर से )

धान की फुलियां, मिसरी और मुनक्का इनको मखन के साथ खाने से और सिर पर घी की मालिश करने से रक्त-पित्त दूर होता है।

## अन्य उपाय

मुनक्के का काढ़ा मिश्री मिला कर नित्य प्रातःकाल पीने से रक्त-पित्त दूर होता है।

## अन्य उपाय

वासा का रस, शहद, मिश्री और धानो की फुलिया सब को मिला कर चटनी बना चाटने से रक्त-पित्त, प्यास और ज्वर दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से )

आमले का कपड़छान चूर्ण बराबर मिश्री मिला कर दो टंक प्रमाण ठण्डे जल के साथ पीने से रक्त-पित्त दूर होता है। तृष्णा, ज्वर, दाह, मूर्च्छा आदि सब दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( रामविनोद से )

हरड, बहेडा, आमला, मघा, त्रिवी, मिश्री, पतीस, सब को सम भाग लेकर कपडछान चूर्ण करे और ६ माशा शहद से चाटने से रक्त-पित्त दूर होता है।

## अन्य उपाय

तालीस पत्र का चूर्ण कर शहद के साथ चाटने से रक्त-पित्त, ज्वर और तपदिक दूर होता है।

## अन्य उपाय

शतावर और भखड़े दोनो कूट कपडछान कर १ तोला लेकर बकरी के दूध मे रोगी को देने से रक्त-पित्त दूर होता है।

## अन्य उपाय

वासा के पत्र और हरड दोनो का चूर्ण कर मधु के साथ चाटने से रक्त-पित्त, दाह, प्यास आदि दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

दो रत्ती मघ का चूर्ण शहद मे मिला कर १४ दिन तक चाटने से रक्त-पित्त, दाह, विषम-ज्वर दूर होते हैं।

## रक्त-वमन की चिकित्सा

हरड़, वसूटी के पत्र, मुनक्का इनका काढ़ा कर इसमें खांड और शहद मिलाकर पीने से सब प्रकार के रक्तपित्त दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय

हरड़चूर्ण १६ माशे शहद के साथ केवल चार दिन तक खा लेने से रक्तपित्त, ज्वर, दाह आदि शान्त होते हैं ।

## अन्य उपाय

हरड़, मिश्री, अनार की कली, सब को दूब ( घास ) के रस में पीस कर नसवार देने से तीन दिन में मुख और नासा से निकलने वाला रुधिर बन्द हो जाता है ।

## अन्य उपाय

हरमजी ( एक प्रकार की लाल मिट्टी ) सुरमा, फूल प्रियंगु, लोध-पठानी, इनका चूर्ण कर वांसा का रस और शहद मिला कर चाटने से मुख एवं नासा द्वारा निकलने वाला रुधिर बन्द हो जाता है, स्त्रियों का रक्तप्रदर ( योनि द्वारा खून का निकलना ) इन्द्री और गुदा के मार्ग से रक्त निकलना, घाव, चोट एवं अन्य किसी शरीर भाग में से रक्त फूटना तत्काल बन्द हो जाता है । मात्रा १ माशा ।

नोट—मूल पुस्तक में सुरमा और रस दो शब्दों का प्रयोग आया है । खाने के लिये सुरमा बहुत कम प्रयुक्त होता है । काले सुरमे को गुलाब और केले के रस में सात-सात बार बुझाकर गुलाब के फूलों की लुगदी में रख कर १० सेर उपलों की आग दे दें, इसी प्रकार ३ आंच से भस्म हो जायगी । सफेद सुरमा भी रक्त बन्द करने की बहुत अच्छी दवाई है, इसको भी केले और गुलाब के अर्क में सात-सात बार बुझा कर दही के पानी में रगड़ टिकिया बना १० सेर उपलों की आंच दे, इस प्रकार तीन बार करे । मिकदार खुराक दोनों की १-१ रत्ती है । कई वैद्यों के मत में वांसा रस के स्थान पर वांसा के सूखे पत्ते और रस के स्थान पर रसाञ्जन अर्थात् रसौत मिलाना लिखा है। रक्त रोगों के लिये रसौत भी अच्छी है ।

## अन्य उपाय ( लेप )

आमले पानी मे पीस मस्तक और भरवटो पर लेप करने से नाक और मुख से वहने वाला लहू वन्द हो जाता है ।

## अन्य नसवार

फटकरी का फूल सात रत्ती लेकर नसवार लेने से नाक, मुंह से जाने वाला रक्त वन्द हो जाता है ।

## अन्य उपाय

लाल दरयाई ( एक प्रकार का रेशमी कपडा ) को जलाकर राख करले और थोडी-थोड़ी देर के वाद नसवार देता जावे इससे नाक और मुख का रुधिर वन्द हो जाता है ।

## ह्रीवेरादि क्वाथ ( वैद्यकुतूहल से )

सुरकवाला, कमलफूल, धनियां, लाल चन्दन, मुलट्ठी, खस, गिलोय, इन सव का काढा वनाकर शहद और खाड ( आजकल इसके स्थान पर कूजे की मिश्री अथवा मुलतानी मिश्री मिलानी चाहिये ) डाल पीने से नकसीर, प्यास, दाह, ज्वर आदि रोग वहुत शीघ्र दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय ( वैद्यकुतूहल से )

वासा के पत्ते, सोठ, अतीस चिरायता, इन्द्रजौ, गिलोय, नागरमोथा, लोधपठानी, वेलगिरी इन सव का काढा वना शहद मिला पीने से पित्तज्वर, तृष्णा, श्वास, दाह और खासी आदि रोग दूर होते है ।

## चूर्ण ( वंगसेन से )

नीलोफर, मघा, तमालपत्र, रक्तचन्दन, आमले, सोठ, वालछड़, इलायची, तज सव वरावर वरावर ले चूर्ण वना कपडछान कर मिश्री और मधु मिला के खाने से रक्तपित्त, श्वास, कास और मूत्रकृच्छ्र दूर होते है।

## चन्दनादि चूर्ण ( वंगसेन से )

चन्दन, सुगन्धवाला, खस, लोधपठानी, कमल केसर ( कमल की तरिया ), विलगिर, नागरमुथा, नागकेसर, इन्द्रजौ, सुरकवाला, पाढ़, सोठ,

अतीस, धावे के फूल, दारुहलदी, आम की गुठली, जामन की गुठली, मोचरस, गिलोय, लाजवन्ती के वीज, नीलोफर, छोटी इलायची, नसपाल और मिश्री यह चौवीस दवाइयां वरावर वरावर लेकर कूट छानकर चूर्ण कर ले, फिर यथाशक्ति ३ माशे से ६ माशे तक लेकर छटाकभर चावलों के पानी मे ६ माशे शहद मिलाकर दिन में २-३ वार खावे, इसके खाने से, नकसीर, ववासीर, वुखार, मूर्च्छा, प्यास, दाह, दस्त और उलटिया शीघ्र दूर होती हैं ।

## अन्य चूर्ण ( कालज्ञान से )

हरड़, वहेड़ा, आमला, कत्था, सुपारी, राल, लौंग सव वरावर वरावर लेकर पीस छान चूर्ण करे, पश्चात् ३-४ माशे दवाई चावलो के पानी से दिन मे २-३ वार खाने से रक्तपित्त और विशेषकर मुख से निकलने वाला खून वन्द हो जाता है।

## अन्य चूर्ण

कौड़, वांसा, इसवन्द, काकड़ासिगी सव वरावर वरावर लेकर चूर्ण कर ले, पीछे इन सव से दुगनी खाड मिला ले और १ तोलाभर चावलो के पानी के साथ अथवा वासे पानी के साथ पीने से क्षय, खांसी, वुखार, वलगम, जलन, प्यास, दमा, मुँह, नाक से खून का गिरना यह रोग दूर होते हैं ।

## अन्य चूर्ण

कचूर, छोटी इलायची, मुश्कवाला, पीपल के पत्र, नीम की छाल, वंशलोचन सव को वरावर वरावर ले, कूट कपड़छान कर चूर्ण करे और सव से दुगनी मिश्री मिला कर १ तोलाभर दवाई १ छटाक चावलो के पानी के साथ दिन मे दो तीनवार खाने से रक्तपित्त का नाश होता है ।

## अन्य चूर्ण

विल के पत्ते, नीम की छाल, हरसल, कौड़, विलगिर, कैंथफल, नेत्रवाला, पीपल के पत्ते सव पीसकर दुगनी मिश्री मिला ले, १ तोला

लेकर १ छटाकभर चावलो के पानी के साथ खावे तो नकसीर, शरीर की जलन आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य चूर्ण

बिलगिरी, पुठकण्डा, नेत्रबाला, बावची, सोंठ, कमलपत्र, नागकेसर अथवा कमल का केसर (तरिया), लौंग, इलायची सब बराबर पीस और सब से दुगनी खाड मिला कर एक तोलाभर चावलो के पानी के साथ खाने से नकसीर, शरीर की जलन और मुँह से खून का बहना बन्द हो जाता है।

## अन्य चूर्ण

घियाकदू की जड, हरमल, वासा, कुटकी, अनार के फूल, संखाहुली, सतावर सब बराबर बराबर लेकर चूर्ण करले और सब से दुगनी खाड मिला कर चावलो के पानी के साथ खाने से नकसीर, जलन, प्यास आदि सब रोग दूर होते हैं।

## अन्य चूर्ण

बासापत्र, कौड, हरमल, ककडासिंगी, सुगन्धवाला, बिलगिर, नागरमोथा, चन्दन, कैथफल, बड़ी इलायची, दौनामरुवा (नियाजबो) के फूल, मरोडफली, जीरा सफेद, नारंगी के फूल, सदवर्ग के फूल, सरदचीनी सब बराबर लेकर चूर्ण कर सब से दुगनी मिश्री मिला कर १ तोलाभर दवाई, १ छटाक चावलो का पानी और ६ माशे शहद मिला कर खाने से, रक्तपित्त, क्षय, श्वासरोग, खासी, बुखार, प्यास, शरीर की जलन यह सब रोग दूर होते हैं।

## अन्य चूर्ण

इलायची, मुनक्का, खजूर, केले की जड़ का कन्द अथवा केले का फल लेवे, कौलडोडे, सुगन्धवाला, कचूर और बावची यह सब बराबर लेकर कूट पीस ले और दुगनी खांड मिला कर १ तोला दवाई पानी के साथ पीने से नकसीर, प्यास, जलन आदि सब रोग दूर होते हैं।

## रक्तपित्त पर नसवार ( कालज्ञान से )

अनार के फूल, लोधपठानी, मुश्कवाला लौंग, मोतियों की भस्म, मुंगे की भस्म, इलायची सब बराबर लेकर कूट छान कर नसवार लेने से रक्तपित्त, जलन, तृष्णा, नकसीर आदि सब रोग शान्त हो जाते हैं।

## अन्य नसवार

सुगन्धवाला, बिलपत्र, नीम के पत्ते, सरफोंका, सरदचीनी, तवाशीर, कचूर, कर्पूर, नागकेसर इन दवाइयो को बराबर बराबर ले कूट कपड़छान कर चूर्ण बना ले और नसवार दे तो रक्तपित्त शान्त हो जाता है।

## अन्य नसवार

मुश्कवाला, बेलपत्र, वसमा, शरपुंखा, सरदचीनी, तवाशीर, कचूर, कर्पूर सब बराबर लेकर बारीक पीस कर नसवार बना ले, जल अथवा गुलाब के जल के साथ मिला कर नसवार लेने से नकसीर दूर होती है।

## अन्य नसवार

हरमल, अनारदाना, शंखाहुली, लोधपठानी, अन्धाहुली, इलायची, पीपल के पत्ते और वच सब बराबर ले बारीक चूर्ण करे और सब से दुगुनी मिश्री मिला कर पानी के साथ अथवा गुलाब के अर्क के साथ मिला नसवार लेने से नाक, मुख से निकलने वाला खून बन्द हो जाता है।

## अन्य नसवार

बेरी की जड़, मुश्कवाला, लौंग, सरदचीनी, इलायची, थ्रेक की जड़, पीलावासा सब बराबर लेकर बारीक पीस ले और सब से दुगनी खाण्ड मिला कर पानी से नसवार लेने से नाक, और मुख से बहता हुआ रुधिर बन्द हो जाता है।

## अन्य नसवार

बिजौरा, मौलसिरी का छिलका, बिलगिर, सदाफल नारियल की जटा, कैंथ का फल, चूका, मोचरस, अजमोद सब बराबर लेवे और सब से दुगनी मिश्री मिला कर कूट, पीस -चूर्ण कर ले, इसकी नसवार लेने से

रक्तपित्त अर्थात् नाक और मुख से निकलने वाला रुधिर बन्द हो जाता है।

### अन्य नसवार

बिलगिरी, काकडासिंगी, हरमल, कौड, सेवती के फूल, वासे की कोपले सब बराबर और मिश्री सब से दुगनी मिला कर नसवार ले, इससे नाक और मुख का रुधिर दूर होता है।

### रक्त-पित्त पर पथ्य

सठी के चावल, पुराने जौ, कंगुनी के चावल, मूंग, मसूर, चना, कोदो, चिभड, सवाक के चावल, घृत मिला कर रोगी को पथ्य देना चाहिये। बकरी का दूध, गाय का दूध, पेठा, अनार, मधु इनका सेवन करना चाहिये। मोतियो की माला, मणियो के हार, सफेद वस्त्र, कुएं का पानी, यह सब रक्तपित्त के रोगी के लिये पथ्य हैं।

### रक्त-पित्त पर कुपथ्य

वरजिश करना, ज्यादा सफर करना, धूप मे चलना फिरना बैठना, घोडे हाथी की सवारी करना, पसीना, खून निकलवाना, क्रोध करना, मैथुन करना, तम्बाखू पीना, कुलथी, गुड, तिल, सरसो, दही, खारी पदार्थ, बैगन, उडद, शराब, लसन और भी गरम, चरपरी चीजे रक्तपित्त के रोगी को हानि करने वाली होती हैं। इसलिये इन चीजो का सेवन नहीं करना चाहिये।

इति सौदामिनीभाषाभाष्य रक्त-पित्त लक्षण चिकित्सा समाप्त।

---

# अथ क्षयरोगाधिकार

## राजयक्ष्मा निदान

१—मल,मूत्र आदि वेगो को रोकने से, २—साहस—अपनी ताकत से वाहिर काम करने से अर्थात् भारी बोझ का उठाना, बलवान् से लड़ना, दूर से छलांग लगाना, घोड़े, बैल आदि पशुओ को जोर से रोकना,

जोर से चिल्लाना आदि ३—विषमाशन—अर्थात् वक्त वेवक्त,सरद गरम,नरम सख्त पदार्थों का खाना। ४—अत्यन्त मैथुन करना, इन चार कारणों से (शरीर के १ रस, २ रक्त, ३ मास, ४ मेद. ५ अस्थि, ६ मज्जा, ७ वीर्य, इन सात धातुओं के क्षीण होने से, वात, पित्त कफ इन दोषों के कुपित हो जाने से,मार्ग आदि के परिश्रम पश्चात् तुरन्त भोग करने से,अत्यन्त शोक करने से, अत्यन्त कसरत करने से, बुढ़ापे में धातुओं के क्षीण होने से, छाती में जखम हो जाने से) क्षय अर्थात् "राजयक्ष्मा" हो जाता है।

## राजयक्ष्मा के लक्षण

बुखार, शरीर में जलन, शरीर सूखने लग जाता है खासी बढ़ जाती है, नकसीर और रक्त की उलटी, कफ अधिक हो जाता है, श्वास फूलने लग जाता है, शरीर दुवला पड़ जाता है, पाडु ( धड़का ) हो जाता है, भूख मिट जाती है,शरीर कांपने लगजाता है,बल नहीं रहता,रोगी स्वप्न में कौआ, सल्ल, तोता, गरुड, गीध, बन्दर इनकी सवारी करता है, नदी-नाले सूखे दिखाई देते हैं, जंगलो के वृक्ष सूखे हुए और जलते हुए दिखाई देते हैं, यह लक्षण हो तो समझो कि रोगी का राजयक्ष्मा रोग हो गया है। राजयक्ष्मा को तपदिक, राजरोग और महाजनी बुखार भी कहते हैं।

## राजयक्ष्मा का असाध्यलक्षण

अतिसार, खांसी, पेट मे शूल, बुखार, किसी वस्तु मे रुचि न हो, आवाज बैठ गई हो, त्रिदोष ज्वर के लक्षण हो, मुख से रुधिर निकले, शरीर सूखता जावे, श्वास लेते समय कष्ट और छाती मे पीड़ा हो, बल घटता जावे, और मांस भी कम होता जावे, ऐसे लक्षण हो तो यश चाहने वाले वैद्य को दवाई नहीं देनी चाहिये, अर्थात् इन लक्षणो वाला रोगी बचता नहीं।

## राजयक्ष्मा की चिकित्सा

खुरसानी वच १० तोले, अनारदाना १२ तोले, वल्लजवायन ६ तोले, इनको कूट कपड़छान कर ले, इन सब से दूने वजन मे आक के ताजे पत्ते मंगा ले और सैंधानमक ६ तोले वरीक पीस ले, पहले पत्तो पर नमक

चुपड ले और ऊपर की दवाई बुरकता जावे और सब पत्तो को नीचे ऊपर रख एक कोरी हाडी मे बन्द कर चूल्हे पर चार घडी आच दे, शीतल होने पर उतार ले और काली मिर्च, लौंग, मघा तीनो २-२ तोले फिर सब को इकट्ठा कूट कपडछान कर चूर्ण कर ले, तीन माशे से ६ माशे तक बल और शक्ति के अनुसार सवेरे शाम खाने से क्षय, क्षत (तपदिक और सिल ) और कफ का नाश करता है, तिली, खासी, श्वास, अफारा, वायुगोला, पेट की सम्पूर्ण व्याधिया दूर होती हैं।

## अन्य

मघा, खाड और मुनक्का इन तीनो को समान भाग मे लेकर नित्य २-३ माशे दूध के साथ खावे तो तपदिक, खासी, श्वास और कफ दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

पान की जड़ ( जिसे कुलजन कहते हैं ) कूट छान कर १-२ माशा मधु ६ माशे, घी गोका १ तोला, तीनो को मिला कर खाने से क्षयरोग, खासी और राजजखम दूर होता है।

## अन्य उपाय

मिश्री, असगन्ध, मघा, सब बराबर लेकर शहद के साथ नित्य खाने से क्षय, श्वासरोग, बलगम और खासी को तुरन्त दूर करता है।

## अन्य उपाय

मुलट्ठी छिली हुई, सौंफ देसी, देवदारु, जवाहा, मिश्री सब बराबर लेकर शहद और घी मिला कर चाटने से राजयक्ष्मा रोग दूर होता है।

## अन्य उपाय

असगन्ध, भखड़े दोनो को कपड छान चूर्ण कर के १ तोला लेकर शहद मे मिला कर चाटे और ऊपर से बकरी का दूध पीले तो राजयक्ष्मा का निश्चय ही नाश होता है।

नोट—शहद और घी बराबर वजन मे मिला कर खाने से जहर का काम करते हैं, इस लिये दोनो को बराबर न लेकर कम ज्यादः लेना

चाहिये अर्थात् यदि ३ मासे शहद हो तो उसमे ५ या ६ मासे घी मिला कर खाना चाहिये, जिस जिस दवाई मे यह दोनो इकट्ठे पडते हैं, वहा वहां इनको इसी परिमाण ( वजन ) के अनुसार लेना चाहिये।

## अन्य उपाय

आक के फूल, असगन्ध दोनो बराबर बराबर लेकर ४-५ मासे शहद के साथ खाकर ऊपर से भेड़ का दूध पीने से राजयक्ष्मा, खांसी, दमा आदि दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

आक के फूल दो तोले, मर्वा दो तोले, मिर्च काली दो तोले, सोठ दो तोले और पुराना गुड़ सब के बराबर, ऊपर की दवाइयां कूट कर गुड़ मे २-२ मासे की गोली बना कर सुबह, शाम बकरी के दूध के साथ खाने से, राजयक्ष्मा, शोष, पुराना बुखार, खासी यह सब रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

असगन्ध, बिल की जड़, अग्निमन्थ ( अरणी ) की जड़, श्योनाक, पाटल, गम्भारी इनकी जड़ की छाल, शालपर्णी, पृष्णिपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, अतीस, वासा, पोहकरमूल, सतावर, गिलोय सब समानभाग लेकर कूट कपड़छान चूर्ण कर १ तोलाभर नित्य सुबह शाम बकरी के दूध के साथ ३१ दिन खाने से राजयक्ष्मा, पुराना बुखार, नाक और मुँह से खून गिरना दूर होता है।

## अन्य उपाय

तुम्मा ( इन्द्रायण ) के पॉच फल, घीकुआर के पॉच पट्ठे, तीन हाथ-भर लम्बा थोहर का डण्डा, पॉच बैंगन ( बताऊं ) कण्डयारी के ५० फल, आक के १० पत्र, पाँचों नमक डेढ़सेर, अजवायन डेढ़सेर सब को कूट-कतर कर एक हाडी मे भर कर मुँह बन्द करे चार हाथ गहरे-चौडे गढ़े मे नीचे-ऊपर जंगली उपले रख कर आग देवे। ठण्डा होने पर निकाल ले और कूट कपड़छान कर १ टङ्क ( ४ मासे ) दवाई बराबर अजवायन मिला कर बासी पानी के साथ ३२ दिन खाने से राजयक्ष्मा, तिली, वायुगोला,

क्षय और खांसी दूर होती है और इसके अतिरिक्त संग्रहणी, पेटदर्द, अजीर्ण, गलाघुटना, श्वास, शीताग सन्निपात ( सरदी ), हृदयरोग, बलगमी खासी ये सब रोग दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय ( रस )

बडा शंख दो टङ्क, सिपिया दो टङ्क, शुद्ध पारा १ टङ्क, शुद्ध गन्धक ४ टङ्क, प्रथम पारा और गन्धक दोनो को खरल मे डाल कर कज्जली करे, जब बिलकुल बारीक हो जावे और चमक मिट जावे तो शंख और शुक्ति को भी मिला ले और कूट कर आक के दूध मे खरलकर टिकियां बना ले और प्यालो मे बन्द कर कपड मिट्टी करे और दोपहर तक आग दे । ठण्डा होने पर निकाल ले और एक-एक रत्ती की मात्रा प्रातःकाल ७ दाने काली मिर्च मिला कर घृत के साथ खिलावे तो अवश्य राजयक्ष्मा, क्षय और श्वासरोग दूर होता है

नोट—मूल पुस्तक मे ४० काली मिर्च एक खुराक मे मिलाना लिखा है, वैद्य अपनी इच्छानुसार घटा-बढ़ा सकता है ।

## क्षयघ्नवटी ( वैद्यकुतूहल से )

आक के फूल और लौंग दोनो बराबर लेकर तीन तीन रत्ती की गोली बनावे, इस गोली को मुख मे रखकर चूसने से क्षय, श्वास, राजयक्ष्मा और खासी दूर होती है ।

## मृगाङ्क रस

शुद्ध पारा १ तोला, सोने की भस्म १ तोला, मोतीभस्म २ तोला, शुद्ध गन्धक तीनो के बराबर अर्थात् ४ तोले और सब का चौथा भाग शुद्ध सुहागा मिला कर काजी मे खरल कर टिकिया बना धूप मे सुखा ले, फिर एक मिट्टी की हाडी मे नीचे ऊपर नमक ( पिसा हुआ ) बिछा ले बीच टिकिया रख मुँह बन्द करे सात कपड़ मिट्टी करके धूप मे सुखा ले, फिर गजपुट मे ( ४ पहर जङ्गली उपलो की आच मे ) फूंक दे, स्वागशीतल होने पर निकाल ले और बारीक पीसकर शीशी मे भर रख छोड़े, इसमे से एक रत्ती खुराक बल, अवस्था देख कर पान के साथ दोनो

समय ४० दिन तक खावे तो धातुक्षय ( पेशाव के आगे-पीछे धात का गिरना ) श्वास, राजयक्ष्मा, क्षय, खांसी सब प्रकार के रोग दूर होते हैं और साथ ही पाण्डुरोग, हृदय रोग, मुख नाक छाती से खून गिरना आदि सब रोग दूर हो जाते हैं।

## अन्य राजमृगाङ्क रस ( रसरत्नाकर से )

तीन तोले रससिन्दूर, स्वर्णभस्म १ तोला, शुद्ध हरिताल १ तोला, ताम्रभस्म ( तमेश्वर ) १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, शुद्ध मनशिला १ तोला, सब को एकत्र पीस कर कपड़छान चूर्ण करे और मोटी कौडियां लेकर उनमे भर दे और सुहागे को वकरी के दूध मे पीसकर कौड़ियो का मुँह वन्द करे और सुखा कर प्यालो मे कौडिया को रख कर प्यालो का मुँह वन्द कर कपड मिट्टी कर धूप मे सुखा ले और गजपुट की आच देवे स्वांगशीतल होने पर निकाल ले और वारीक पीस शीशी मे भर छोड़े। इसमे से आधी से एक रत्ती तक दवाई लेकर ७ काली मिर्च और आध टुकडा पिप्पली ( मघ ) मिला कर शहद के साथ अथवा घी के साथ खाने से राजयक्ष्मा निश्चय दूर हो जाता है।

मूलग्रंथ में ४ रत्ती दवाई, २० काली मिर्चें और १० मघां मिला कर खाना लिखा है, जो कि आजकल के रोगियो को वहुत अधिक मात्रा मे है, इसलिये वैद्य अपनी वुद्धि के अनुसार कम ज्यादा दे सकते हैं।

## महातालीसादि चूर्ण ( वंगसेन से )

तालीसपत्र, चित्रा, मघां, मिर्चा, सोठ, अनारदाना, समाकदाना, सब चार तोले, अजमोद, गजपीपल, चव, अजवायन, वायवडिग, पिप्पलामूल, नागकेसर, तज, हाऊवेर, जीरा, धनियां, जायफल, तेजपत्र, इलायची, दालचीनी, लौग, मघा यह सब एक एक तोला, सब दवाइयो को कूट कपड़ छान कर ले और सब के वरावर मुलतानी मिश्री कूट छान कर मिला ले, इस चूर्ण को ३-४ माशे लेकर दूध के साथ, शहद के साथ अथवा शहद घी के साथ, अथवा केवल पानी के साथ खाने से राजयक्ष्मा, मूत्रकृच्छ्र ( पेशाव जलकर थोडा-थोड़ा आना ) पीनस ( पुराना जुकाम,

नजला ) और शरीरपीडा ( शरीर मे हडफूटन अथवा अङ्ग-अङ्ग टूटना अथवा जोडो मे दर्द होना ) सब रोग दूर होते हैं।

नोट—बच्चो की खासी के लिये यह बडी अच्छी दवाई है, मीठी है, पाचन शक्ति को बढाती है, इस लिये छोटे बच्चे बडी खुशी से खाते हैं बच्चो के लिये मात्रा ४ रत्ती तक। हृदयरोग, अपतन्त्र, नेत्ररोग, चालीस पित्त के रोग और बीस कफ के रोग, बीस प्रकार के प्रमेह ( देखो आगे प्रमेह रोग ), बुखार, बवासीर, शूल, गले की खराबी ( गले पड़ जाना अथवा गलरोहिणी खुनाक अथवा गले मे कुछ चीज अटकती हुई मालूम दे ) सूखा, हनुग्रह ( जबडो का अकड जाना ), पाण्डु, कामला, हलीमक, उरुस्तम्भ ( देखो आगे उरुस्तम्भ रोग ) और सब प्रकार के वायुरोग दूर होते हैं।

## कर्पूरादि चूर्ण

मुश्क काफूर, सरदचीनी, कायफल, लौंग, सोंठ, मघां, काली मिर्च, तेजपत्र, सब दवाइया बराबर ले और सब के बराबर मुलतानीमिश्री मिला ले, कूट कपडछान चूर्ण कर ले, मात्रा ३ माशे तक दूध के साथ दे, इसके खाने से हृदय के रोग, तपदिक, खासी, वायगोला, उलटी, गले के रोग, सब दूर होते हैं।

## यवान्यादि चूर्ण

अजवायन, अमलवेद, समाकदाना, सोंठ, अनारदाना, बेर, अमली, सब दवाईया १-१ तोला, धनिया, सौचरनमक, जीरा, दालचीनी ये चीजे ६-६ माशा, मघा १०० नग, काली मिर्चा २०० दाने, मुलतानी मिश्री १६ तोले सब को कूट छान कर चूर्ण कर ले, मात्रा ३ माशे से ५ माशे तक, दूध के साथ, शहद के साथ, पानी के साथ दे। सूखी खासी मे अदरक के रस के साथ खावे तो जिह्वा शुद्ध हो जाती है अर्थात् जीभ पर गले में और छाती मे बलगम अडी हुई हो तो वह निकल जाती है, जिह्वा, मुख और गला साफ हो जाता है। हृदयरोग दूर होता है पार्श्वशूल ( पसली का दर्द न्युमोनिया आदि ), दाह, श्वासरोग, अरुचि, तिली, उलटी, खासी,

संग्रहणी, ववासीर, कब्ज, ये सव रोग दूर होते हैं, भूख खुलकर लगती है, क्षयरोग दूर होता है । यह यवान्यादि चूर्ण राजयक्ष्मा को नाश करने के लिये कहा है ।

## अन्य चूर्ण ( बङ्गसेन से )

बन्दर की विष्ठा ( टट्टी-पाखाना ) सुखा कर पीस ले और ६ माशे बकरी के दूध के साथ खाये तो तपदिक दूर होता है ।

## अन्य उपाय

हिरण का मास और बकरे का मास दोनो सुखा कर चूर्ण कर ले, बकरी के दूध के साथ १ तोलाभर नित्य खाने से तपदिक दूर होता है ।

## राजयक्ष्मा के पथ्य

सठी के पुराने चावल, मूंग, मांस, गेहूँ, शराव, दही की मठडी, घी, बकरी का दूध, सुहांजने की फलियां, दाख मुनक्का, ये वस्तुएं खानी चाहिये, हीरे जवाहरात, मोतियों से जड़े हुए सोने के हार । सूर्य की किरणें (रोगी को नित्य अपनी वल शक्ति के अनुसार धूप से वैठना चाहिये, सूर्य की किरणें सव प्रकार के रोगों को नष्ट करती हैं ) कस्तूरी, चन्दन का लेप, ये सब राजयक्ष्मा रोगी के लिये हितकारक पथ्य है ।

## राजयक्ष्मा में कुपथ्य

जुलाब लेना, टट्टी पेशाब के वेग ( हाजत ) को रोकना, थकावट, स्वेद ( पसीना लेना ), रात को जागना, साहस ( अपनी शक्ति से वाहर काम करना ), मैथुन करना, समय कुसमय भोजन करना, पेठा, उड़द, कुलथी, लहसन, कन्दूरी, ककोड़े, करेले, अमली, पत्तो वाले साग, ये सब राजयक्ष्मा रोगी के लिये कुपथ्य हैं ।

वक्तव्य—राजयक्ष्मा,को तपदिक शोष और क्षय भी कहते हैं, आजकल यह कई प्रकार का हो गया है, यह शरीर के एक अङ्ग मे भी हो सकता है और सारे शरीर मे भी, जैसे किसी का वाहु सूख गया हो, अथवा टाग सूख गई हो, अथवा हाथ पाओ सूख गये हो, इसे एकाङ्ग शोष कहते हैं,

अर्थात् किसी एक अङ्ग का सूख जाना, इसमे जरूरी नहीं कि बुखार हो जाय, प्राय. वायु की अधिकता से होता है। इसके अतिरिक्त आतो मे जखम या सोजिश हो जाने को "अन्त्रशोप" कहते हैं, यह रोग आजकल आम हो गया है, इसका मूल कारण है, "सन्ततज्वर" जिसे तपेमुह्रका, मियादी बुखार या टाइफाइड भी कहते हैं, यह बुखार प्राय २१ दिन तक रहता है और इसमे पेट और आते खराब हो जाती हैं, इसकी चिकित्सा मे गलती कर जाने से अथवा रोगी के वद परहेजी करने से आन्त्रो मे सोजिश और जखम हो जाते हैं, यदि इसमे ज्वर भी तीव्र हो जावे तो रोगी २१ दिन के अन्दर अन्दर मर जाता है और कई वार यह ज्वर ३२, ४२, ६२ दिन तक चलता रहता है और योग्य अनुभवी चिकित्सक की चिकित्सा कुशलता से रोगी स्वस्थ हो जाता है, नही तो यह तपदिक "आन्त्रशोप" वन जाता है और रोगी को दस्त, कभी कब्ज, अफरा, पेट मे गुड-गुग, शूल और ज्वर लगातार रहते हैं और पीछे से फेफड़े भी खराव हो जाते हैं और खासी भी वढ जाती है और राजयक्ष्मा के पीछे कहे सारे लक्षण प्रकट हो जाते हैं और रोगी मर जाता है। ऐसी दशा मे रोगी को ऐसा पथ्य देना चाहिये जो कि शीघ्र पच सके और आन्त्रो को कष्ट देने वाला न हो, इसके लिये मासरस सब से उत्तम है, अथवा दूध भी दे सकते हैं और निम्नलिखित औषधी भी आवश्य देनी चाहिये।

## आन्त्रशोपान्तक रस (रसतरङ्गिणी)

नागभस्म जो मनसिल के योग से वनी हुई हो (देखो रसेन्द्रसार-संग्रह धातुप्रकरण,) २ तोले, कान्तपाषाणभस्म २ तोले, स्वर्णभस्म १ तोला, खर्पर ( खपरिया ) भस्म १ तोला, अभ्रकभस्म ( कम से कम १०० पुट वाला हो ) १ तोला, ताम्रभस्म ( अमृतीकरण किया हुआ हो ) १ तोला, शुद्ध गन्धक सब से आधा अर्थात् ४ तोले, सब को घीकुआर मे रगड़कर टिकिया वना प्यालो मे वन्द कर वारह पुट मे भस्म करे। इस प्रकार तीनवार करे, पीछे निकाल कर वारीक पीस कर शीशी मे भर छोड़े, इसकी मात्रा आधी रत्ती से एक रत्ती तक है, मधु अथवा अन्य उपयुक्त

शर्बत, अर्क वा दूध, मक्खन के साथ ( जो वैद्य उचित समझे ) देसकते हैं, इसके सेवन करने से, अन्त्रशोष, संग्रहणी, पुराना अजीर्ण, पुराने दस्त, तपदिक, अफारा, वायगोला, तिल्ली और पुराना बुखार इत्यादि दूर होते हैं, शरीर मे वल और शक्ति आ जाती है।

## अस्थिशोष

इस रोग मे हड्डी खराब हो जाती है और सब से प्रथम कमरदर्द आरम्भ होती है, अधिक परिश्रम और मेहनत करने वाले अर्थात् मेहनत तो ज्यादा करते हैं और खाते कम हैं अथवा भोग अधिक करते हैं और खाते कम हैं, ऐसे मनुष्यो की त्रिक अस्थि ( कमर की हड्डी ) कमजोर पड़ जाती है और पहले थोडी थोड़ी शुरु होती है और फिर अधिक हो जाती है और हड्डी सूखने लग जाती है और इसके साथ साथ सारा शरीर सूखने लग जाता है और तदनन्तर रीढ़ की हड्डी के अन्दर रहने वाली सुषुम्ना नाडी जो सारे शरीर को संज्ञा और चेष्टा अर्थात् ज्ञान और काम करने की शक्ति ( हिस व हरकत ) देती है उसमे भी जहर फैल जाता है और धीरे धीरे हाथ पाओ और टागे निष्कर्म वेजान और वेहिस व हरकत हो जाती हैं, रोगी उनको उठा नहीं सकता, हिला नहीं सकता, शरीर मे रक्त नहीं पहुँचता और सारा शरीर सूख जाता है, गला वैठ जाता है और खाया पिया पचता नहीं और राजयक्ष्मा के सारे लक्षण प्रकट हो जाते हैं और रोगी मर जाता है।

बुद्धिमान् वैद्य को चाहिये इस रोग के आरम्भ होते इसे साधारण रोग समझ कर छोड न दे, किन्तु इसकी ऊपर वर्णन की गई भयंकर अवस्था का ध्यान करता हुआ चिकित्सा आरम्भ करे। इसमे भी पहले रसायन और वाजीकरण मे वताई जाने वाली योगराजगुग्गुल, असगन्ध, शतावरी आदि रसायन दवाइयो का सेवन कराए, मालिश के लिये महा-नारायण तैल, लाक्षादि तैल अथवा अन्य वातव्याधि मे कहे हुए तैलो की मालिश, एवं वस्ति करनी चाहिये और शक्तिदायक आहार देने चाहिये, रोगी को कभी कमजोर नहीं होने देना चाहिये। वल और वीर्य की पूर्ण-रूप से रक्षा करनी चाहिये।

## व्रणशोष

जिन लोगो को मधुमेह आदि मूत्ररोग हो (मूत्र अधिक आए अथवा मूत्र मे शकर आए) चिन्ता,शोक आदि अधिक हो ऐसे मनुष्यों को रीढ़ की हड्डी के किसी भाग मे और यदि सारा शरीर विकृत हो गया हो तो शरीर के किसी भी भाग मे व्रण हो जाता है, यह व्रण अस्थि तक फैला हुआ होता है, आरम्भ मे यदि शरीर प्रमेह आदि रोग से अधिक विकृत न हो तो रोगी यत्न से स्वस्थ हो सकता है, किन्तु यदि शरीर अधिक विकृत हो चुका हो तो रोगी का ठीक होना असम्भव हो जाता है और यक्ष्मा के अन्य लक्षण भी उत्पन्न हो जाते हैं और रोगी मर जाता है।

## जराशोष

वृद्धावस्था मे चिन्ता आदि अधिक करने वाले मनुष्यों की पाचन-शक्ति जब अत्यन्त दुर्बल पड़ जाती है तो रक्त कम बनता है, फेफड़े कमजोर पड़ जाते हैं। एकबार ज्वर हुआ, खासी और दस्त लग गये और रोगी गया।

इन ऊपर के दो रोगो मे भी पोषण चिकित्सा करनी चाहिये, रोगी को कमजोर नहीं होने देना चाहिये राजयक्ष्मा की सारी चिकित्सा का यही सिद्धान्त है कि रोगी के बल और वीर्य की रक्षा करनी चाहिये। क्षय का अर्थ नाश है, किसी धातु का शरीर से कम हो जाने से अवश्य नाश हो जाता है। जैसे तालाब का पानी सूख जाने से जलचर प्राणियो का जल के बिना नाश हो जाता है, इसी प्रकार रस आदि धातुओ के सूख जाने से शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्गो का नाश हो जाता है। चिकित्सक रोगी दोनो को इस बात का ध्यान रखना चाहिये।

दूसरी बात यह भी ध्यान रखने योग्य है कि वैद्य को चाहिये यदि उसे इस बात का सन्देह हो जाय तो तत्काल रोग निर्णय का यत्न करे कारण कि यक्ष्मा की प्रथमावस्था तो इतनी सूक्ष्म होती है कि रोगी प्रतीत ही नहीं कर सकता कि मुझे कुछ रोग भी है, केवल सायंकाल के समय कुछ हाथ पाओं गरम हो जाते हैं, आँखों मे जलन हो जाती है,

छाती मे भी कुछ गरमी प्रतीत होती है, कन्धे भारी और थके हुए से मालूम होते हैं और थोड़ी थोडी खासी भी हो जाती है और कमजोरी भी बढ जाती है। ऐसी अवस्था मे रोगी अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान ही नहीं देता और अपने कार्य मे लीन रहता है। जब अधिक कार्य करने पर दूसरे चौथे दिन ज्वर का अधिक जोर हो जाता है तो वह रोग की दूसरी अवस्था होती है और उस समय रोगी की विशेष चिकित्सा की ओर ध्यान दिया जाता है, ऐसी अवस्था में रोगी का बचना अत्यन्त कठिन हो जाता है, सो पीछे एक आध रोगी बच सकता है, तीसरी अवस्था तो ऐसी होती है जिसमे फेफड़े गल जाते हैं और आन्ते भी गलने लग जाती हैं, ऐसी अवस्था मे रोगी मृत्यु के मुख मे पहुँचा हुआ होता है।

प्रथमावस्था में यदि वैद्य बुद्धिमान्, दूरदर्शी और दयावान् मिल जावे और रोगी भी आज्ञानुकारी, वशवर्ती, आशावान्, उत्साहयुक्त हो और घर की आर्थिक अवस्था भी अच्छी हो तो घर मे रह कर ही रोगी स्वस्थ हो सकता है।

दूसरी अवस्था मे रोगी का घर पर ठीक होना असम्भव है, इस लिये रोगी चाहे किसी अवस्था मे हो अपना धैर्य न छोड़े और मरती गिरती अवस्था मे भी घर से अकेला निकल जावे और यति महात्माओं की तरह जहाँ जो मिले खाता पीता जावे। सब से उत्तम स्थान तो हिमालय पर्वत है, आठ-नौ हजार फुट की ऊँचाई पर किसी ग्राम मे जाकर रहे, पीछे घर वालो की मोह-ममता बिलकुल छोड दे। शीतकाल मे ऊँचाई पर रहना तो कठिन होता है, देश मे ही स्थान स्थान पर साधु वृत्ति मे प्रसन्नचित्त और निर्भय होकर रहे, रोग का बिलकुल ध्यान छोड दे और सब से उत्तम बकरियों के साथ रहना, सोना, बकरी का दूध पीना, होसके तो बकरे का ही मासरस भी लेना सर्वोत्तम है। इसके अतिरिक्त अन्य भी कई कारण राजयक्ष्मा उत्पन्न करने के लिये हो सकते है और जिनके लिये स्वतन्त्र पुस्तक लिखी जा सकती है, यहाँ बुद्धिमान् पाठको के आगे केवल दिङ्मात्र रखा है। अन्त मे फिर वैद्यबन्धुओं से निवेदन है कि इस रोग की चिकित्सा मे जरा ढील न करें, फेफड़े और आन्तें अत्यन्त कोमल होती

हैं और उनमे प्रतिक्षण हरकत होती रहती है। अतः जिस समय फेफड़े मे जखम हुआ तो समझो उसका ठीक होना कठिन है, क्योंकि फेफड़े मे प्रतिक्षण श्वास प्रश्वास चलता रहता है और जखम वाला भाग श्वास के जोर से अधिक से अधिक फटता जाता है एवं आन्तो मे अन्नमल प्रतिक्षण गति करता रहता है और उसकी रगड से आन्तो का जखम भी बढ़ता रहता है और रोगी ठीक नही हो सकता है।

इति सौदामिनीभाषाभाष्य क्षयरोग चिकित्सा समाप्त।

---

# अथ कासरोगाधिकारः।

## कासरोग निदान

धुआँ लग जाने से, गर्द गुवार से, अत्यन्त व्यायाम करके रूखा अन्न खाने से, मार्ग की थकावट से, छींक, डकार आदि के वेग रोकने से, अत्यन्त चिकने भोजन करने से तथा अन्य इसी प्रकार के कारणों से पाँच प्रकार की ( वात, पित्त, कफ, क्षत, क्षय ) खासी हो जाती है।

वक्तव्य—खासी गले और छाती का रोग है, जब गले मे अथवा फेफडे मे वलगम अड जाती है अथवा सूजन हो जाती है, श्वास प्रश्वास लेने मे कष्ट होता है एवं श्वास प्रणाली मे रगड लगती है तथा वायु इस वेग से बाहिर निकलता है कि श्वासमार्ग उसे अपने वश मे नही रख सकता और मुँह द्वारा बलपूर्वक निकल जाता है, तव उस निकलने वाली आवाज को "कास" या खासी कहते हैं।

प्रकृति की लीला बडी विचित्र है—उसने शारीरक बाह्याभ्यन्तर अङ्ग-प्रत्यङ्ग की रक्षार्थ प्रत्येक पूर्ण साधन बना रखे हैं, जब नासा द्वारा श्वास लेते हैं ( क्योंकि श्वास प्रश्वास का ठीक मार्ग तो नासा है अत. मुख द्वारा कभी श्वासप्रश्वास नही लेना चाहिये, मुख तो खाने पीने और बातचीत करने का साधन है ) तो बाहिर से आने वाला गर्द गुवार नासा के अन्दर रोमो द्वारा छन जाता है, तदनन्तर श्वास प्रणाली के अन्दर

जो सूक्ष्मतम अङ्कुर होते हैं वे वाहिर से आने वाले मल को मार्ग में रोक लेते हैं और फेफड़े तक नहीं पहुँचने देते, किन्तु जब मल श्वासप्रणाली में चिपक जाता है, अथवा वातपित्त कफ आदि के स्वतन्त्र प्रकोप से श्वास प्रणाली में सूजन आदि हो जाती है तब श्वासप्रश्वास में कठिनता आ जाती है, श्वास का वायु श्वासप्रणाली से रगड़ खाकर वाहिर निकलता है, उस समय एक प्रकार की खराश होती है जिससे खांसी का वेग उठता है और टूटे हुए कांसी के वरतन के समान शब्द होता है, वारवार झाग सी थूक निकलती है और वारवार खासी उठती है।

हृदय में गले और छाती में शूल, ज्वर, रोगी अत्यन्त दुर्वल और क्षीण हो जाता है, वारवार मूर्च्छा उठती है, शरीर में दाह होता है, थूक में सडाद ( दुर्गन्ध ) आती है, मलिन, नीले, पीले, लाल रंग की ( रक्त मिली ) वलगम निकलती है, शरीर नित्यप्रति सूखता जाता है, श्वास और कास के वेग से अङ्ग अङ्ग में पीड़ा होती है, ऐसा रोगी निश्चय असाध्य है। यश की इच्छा रखने वाले वैद्य को चाहिये कि ऐसे रोगी की चिकित्सा न करे।

## वात-कास लक्षण

पसवाडे, छाती, हृदय और सिर में शूल हो, आवाज वैठ जावे, सूखी खासी हो और वोलने से खासी अधिक जोर से उठे तो वात की खासी जानो।

## वात-कास चिकित्सा

शुद्ध गुग्गुल ४ माशे, शुद्ध अफीम ४ रत्ती, कालाजीरा ८ माशे, मुनक्का १६ माशे, सव को वारीक खरल कर १-१ रत्ती की गोली वनाकर मुँह में रख चूसते रहने से नई और पुरानी खासी दूर होती है।

नोट—गुग्गुल और अफीम को शुद्ध करने की विधि लिखते हैं, वढ़िया भैंसिया गुग्गुल लेकर कूडा करकट साफ कर लेवे, फिर वारीक कर पोटली वान्ध गोमूत्र में अथवा दूध में, अथवा त्रिफले के काढ़े में उवाले, गुग्गुल पोटली में से निचुड कर दूध में आ जावेगा, फिर उसे गाढ़ा कर ले।

अफीम पक्की को अदरक के रस अथवा अर्क गुलाब में घोल कपड़-छान कर आग पर गाढा कर ले तो शुद्ध हो जाता है।

### अन्य उपाय

पञ्चमूल ( बिल, अग्निमन्थ, स्योनाक, पाढल, गम्भारी, इनकी जड का छिलका ) के काढ़े मे ४ रत्ती पिसी हुई मघ मिला कर पिलाने से वायु की खासी दूर होती है।

### अन्य उपाय

भडिंगी, मघां, काकड़ासिंगी, वांसा, कचूर, गिलोय, इनका चूर्ण बनाकर पुराना गुड, शहद और तेल ( वादाम रोगन मिलाया जाय तो बहुत अच्छा हो ) मिला कर चाटने से वायु की खासी दूर होती है।

### अन्य उपाय

मुनक्का, भाडंगी, मघा, सोठ, काकडासिंगी, कचूर, इनका चूर्ण कर पुराना गुड और तेल ( वादाम रोगन ) मिला कर चाटने से वायु की खासी दूर होती है।

### अन्य उपाय

काकड़ासिंगी, जवाहा, सोठ, मुलतानी मिश्री, कचूर, मुनक्का, सब को कूट कर वादाम रोगन मे मिला कर चाटे तो वायु की खासी नष्ट होती है।

### अन्य उपाय

पञ्चकोल ( मघा, पिप्पलामूल, चव, चित्रा और सोठ पॉचो नमक (सैधा, सौचल, विड, सामुद्र, साभर ), सोठ, जौखार, सज्जीखार, कचूर, कालीमिर्च, सब बराबर बरावर लेकर कपड़ छान चूर्ण कर ले, पश्चात् घी मे मिला कर प्रातःकाल चाटने से वायु की खासी दूर होती है, कफ और हिचकी रोग भी दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

सोठ, धमासा, मुनक्का, कचूर, तोखाखीर इनका चूर्ण कर तेल (वादाम रोगन) के साथ मिला कर चाटने से वायु की खासी दूर होती है।

## अन्य उपाय

मघा, कालीमिर्च, सोंठ, जीरा, जायफल सब बराबर पीस कर शहद से चाटे, ऊर्ध्वश्वास, तमकश्वास, वायु की खांसी तथा अन्य वायु के रोग शान्त हो जाते हैं।

नोट—ऊपर के कई योगों मे तेल का अनुपान आया है, जिन लोगों को तेल खाने का अभ्यास हो वे ही तिल का तेल मिला ले, जिनको अभ्यास नहीं वे लोग तेल के स्थान पर बादाम रोगन मिला लें, क्योंकि बादाम रोगन वायु को भी शान्त करता है और खाने के काम भी आता है।

## पित्त-कास के लक्षण

छाती में जलन, प्यास अधिक, पित्तकफ की उलटी अथवा सूखी कै, भ्रम, थोड़ा थोड़ा पीली बलगम का आना, चेहरे की रङ्गत पीली पड़ जाय, सिर में अधिक शूल हो तो पित्त की खासी जानो।

## पित्त-कास की चिकित्सा

वंशलोचन, तोपाखीर मघां, सब समान भाग लेकर शहद और घी मिला कर चाटने से पित्त की खांसी नष्ट होती है।

## अन्य उपाय

मुलट्ठी ( छिली हुई ), पिप्पलामूल, मुनक्का, दूब घास, मघां, इनका चूर्ण करके शहद और घी मे चटनी बना चाटने से पित्त की खासी दूर होती है।

## अन्य उपाय

मातुलुङ्ग, ( बिजौरा, किंब ) के रस में शहद मिला ले, फिर भुनी हुई हींग, हरड़, बहेडा, आमला और सैंधानमक, सब को पीस मिला कर चटनी बनाले, इस चटनी के चाटने से पित्त की खासी दूर होती है।

## अन्य उपाय

मघां, मुनक्का, साफ की हुई कच्ची लाख (पीपल या बेरी की) आमले,

धानो की फुलिया, कूजे की मिश्री सब समभाग लेकर कूट कपडछान कर शहद से चाटे तो पित्त की खासी दूर होती है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

काकोली ( यदि काकोली असली न मिले तो उसके स्थान पर शकाकुल मिश्री मिला ले ), कण्डियारी, वासा, सोठ, मेदा, महामेदा ( यदि दोनो असली न मिले तो शतावरी मिलानी चाहिये ), सब बराबर ले चूर्ण कर ले और बकरी के दूध से पीवे तो पित्त की खांसी दूर होती है।

## अन्य उपाय ( काढ़ा )

वासा, कण्डियारी, मुनक्का, नागरमोथा, खरैटी इनके काढ़े मे शहद और खाड मिला कर पीने से पित्त की खासी दूर होती है।

## अन्य उपाय

कचूर, सुगन्धवाला, कण्डियारी, सोठ, इनका काढ़ा बनाकर मुलतानी मिश्री, शहद और घी मिला कर पीने से पित्त की खासी दूर होती है।

## अन्य चटनी

मघां, मुनक्का, छुहारे, जटामासी, मुलतानी मिश्री, धानो की फुलियाँ, सब को कूट पीस शहद मिला कर चटावे तो पित्त की खासी दूर होती है।

## अन्य चटनी

मघा, कालीमिर्च, मुनक्का, मुलट्ठी, खजूर, इनको कूट पीस शहद और घी मिला कर चाटने से पित्त की खासी दूर होती है।

## कफ-कास के लक्षण

कफ से मुख लिपा रहे, सिर दर्द रहे, सारा शरीर कफ के लक्षणो से युक्त रहे, भूख कम हो जाय, शरीर भारी रहे, अङ्ग प्रत्यङ्ग ढीले पड़ जाय तो कफ की खांसी जानो।

## कफ-कास की चिकित्सा

नागरमोथा, हरड, काकडासिंगी, अतीस, सोठ, कचूर, इनको चार-चार माशे ले, १० तोले पानी मे घोट छानकर गरम करे पश्चात् उसमे

१ रत्ती भुनी हुई हींग और दो माशे सैंधव नमक मिला कर पिलाए तो कफ की खांसी दूर हो जाती है। इन चीजो का काढ़ा भी कर सकते हैं काढ़े मे सब से १६ गुना जल (३२ तोले) डाले, जब ८ तोले शेष रहे तो उस मे १-२ रत्ती भुनी हुई हींग और १ माशा सैंधानमक मिला कर पिला दे। इससे कफ की खासी, पसली का शूल और कफ का ज्वर दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

कचूर, रायसन, देवदारु, वांसा, काकड़ासिंगी, धनियां सब बराबर लेकर कूट कपड़छान कर शहद और तैल (वादाम रोगन) मिला कर चाटने से वलगमी खांसी दूर होती है।

### अन्य उपाय

मघां, कालीमिर्चे, सोठ, पोहकरमूल, मुनक्का, कचूर, हरड़, वहेड़ा, आमला, चित्रा, सब का चूर्ण कर शहद और तैल (वादाम रोगन) मिला चाटने से कफ की खांसी नष्ट होती है।

### अन्य उपाय

मघां, गजपीपल, चित्रा, पिप्पलामूल, सब को पीस कर चूर्ण करे, शहद मिला चाटने से कफ की खांसी दूर होती है।

### अन्य उपाय

दालचीनी, इलायची, पोहकरमूल, मुनक्का, पिप्पलामूल, मघां, काली-मिर्च, सोठ, इनका चूर्ण ३ माशे गरम पानी के साथ खाने से कफ की खासी दूर होती है।

### अन्य उपाय

कचूर, रायसन, आमले, वहेड़ा, इन सब का चूर्ण वना कर घी, शहद और मिश्री मिला कर चाटने से कफ की खासी जाती है।

### वात कफ की खांसी की चिकित्सा

कायफल, कत्तृण (एक प्रकार का घास होता है), भारंगी, पापड़ा,

सोठ, धनियां, हरड, काकडासिगी, देवदारु, इनका काढ़ा बना कर शहद और हीग मिला कर पीने से वात कफ की खासी दूर होती है, गले और मुख की पीडा, कफ बन्धन ( बलगम का खुश्क हो जाना ) हृदय और पसलियो की पीडा, हिचकी, बुखार और श्वासरोग दूर होते हैं।

नोट—वात कफ रोगो मे वायु कफ को सुखा देता है, तीक्ष्ण और उष्ण पदार्थों से वायु शान्त हो जाता है और कफ पिघल कर बाहिर निकल जाता है।

## लघु लवङ्गादि चूर्ण

लौंग, जायफल, मघा, एक एक तोला, काली मिर्च ४ तोले, सोठ १६ तोले, मुलतानी मिश्री सब के बराबर, चूर्ण बना कर रख छोड़े, बल शक्ति के अनुसार ३-४ माशे शहद के साथ खाने से श्वास, कास, कफ के १० प्रमेह, वायगोला, बुखार, मन्दाग्नि, संग्रहणी, तपदिक, अथवा विषमज्वर और अरुचि आदि रोग दूर होते हैं।

## पित्त-कफ-कास की चिकित्सा

हींस ( हींगरना ), गिलोय, वासा ( अथवा कण्डियारी) इनका काढ़ा बना शहद मिला पीने से पित्त कफ की खासी, क्षय और ज्वर दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

वासा के जड़ की छाल दो तोले लेकर ३२ तोले पानी मे काढ़ा करे और ८ तोले बचने पर मलछान ६ माशे मधु मिला पीने से श्वासरोग, खासी, कफ और पित्त का ज्वर, क्षय और रक्त के रोग दूर हो जाते हैं।

## क्षत-कास के लक्षण

पर्वभेद ( हड फूटन ) ज्वर, श्वास, तृष्णा, हृदय और छाती मे शूल अथवा छाती आदि शरीर के किसी मुख्य अङ्ग मे चोट लग जाने से जो खासी टिक जाती है कबूतर के शब्द के समान खासते समय शब्द निकलता है उसे क्षतकास कहते हैं।

वक्तव्य—क्षत और क्षय की खासी राजयक्ष्मा से सम्बन्ध रखती हैं, जब कमजोर मनुष्य साहस और अधिक बल का काम करे अथवा अपने

से अधिक बल वाले से कुश्ती व लड़ाई करे अथवा अन्य किसी कारण से छाती में चोट लग जाने से फेफड़े में जखम हो जाता है और छाती से रक्त आने लगता है और खांसी टिक जाती है, उसे क्षतकास कहते हैं ।

## क्षतकास चिकित्सा ( वंगसेन से )

मुलहठी ( छिली हुई ), मवां, पीपल अथवा वेरी की साफ की हुई कच्ची लाख, मुनक्का, काकड़ासिंगी, शतावरी, सब बराबर ले सब से दुगना वंशलोचन ले और इन सब के बराबर मुलतानी मिश्री, सब का चूर्ण कर शहद और घी मिला कर चाटने से क्षतकास तथा शरीर में चोट आदि की पीड़ा सब दूर होती हैं ।

## अन्य उपाय

पद्मकाष्ट, मवां, मुनक्का, कण्टकारी के पके हुए फल, सब का चूर्ण बनाकर शहद और घी से चाटने से क्षतकास दूर हो जाता है ।

## अन्य उपाय

पाठा, मवां, काला सुरमा ( गुलाब और केला के रस में सात सात बार बुझा हुआ ), हलदी, नीम की जड़ की छाल, मरोडफली, मजीठ, इनका चूर्ण कर मधु से चाटे तो क्षतकास नष्ट हो जाता है ।

## कास-श्वास का उपाय

सोंठ, भारंगी, गिलोय, कण्डियारी, शालपर्णी, इनका काढ़ा बना कर ४ रत्ती मव का चूर्ण बुरक कर पीने से खांसी और श्वासरोग दूर होता है ।

## अन्य उपाय

सोंठ, भंडिगी, कण्डियारी, कुलथी, पोहकरमूल, इन सब का काढ़ा बना कर ४ रत्ती मव का चूर्ण बुरक कर पीने से खासी और श्वासरोग दूर होता है ।

## अन्य उपाय (वंगसेन से )

अदरक के रस में मधु मिला कर चाटने से श्वासकास दूर हो जाते हैं, साधारण और बहुत उत्तम योग है ।

## अन्य गुटिका

हरड, सोठ, नागरमोथा, इनको कूट पीस पुराने गुड में मिला गुटका बनावे और एक एक गुटिका मुँह मे रख चूसने से श्वासकास मिट जाते हैं।

## अन्य गुटिका ( बंगसेन से )

मघा, पोहकरमूल, हरड, कचूर, सोठ, नागरमोथा, सब का चूर्ण कर पुराना गुड मिला गोली बनावे और एक एक गोली मुँह मे रख चूसने से श्वासकास रोग दूर हो जाता है।

## पुनः पञ्चकोल चूर्ण

सोठ, पिप्पलामूल, चित्रा, मघा, चव्य, इनका काढ़ा बना कर दूध मिला ( चाय की तरह ) पीने से श्वासकास मिट जाते हैं

## अन्य उपाय ( बंगसेन से )

बहेडे को ( आटा लपेट कर भूभल मे भून ले ) मुँह मे रख कर चूसने से श्वासकास दूर हो जाते हैं।

अथवा—हरड को भूभल मे भून कर उसके साथ सोठ मिला कर चूसने से खासी दूर होते हैं।

## क्षय-कास लक्षण

जो नर खासी से बहुत दुर्बल हो चुका हो, जिसके शरीर का मास सूख गया हो, जिसको बलगम के साथ पक लहू और पीप आवे और त्रिदोष के सारे लक्षण प्रकट हो जावे, उसको "क्षयकास" अर्थात् तपदिक की खासी जानो, यह खासी रोगी के प्राण हरने वाली होती है।

## क्षयकास का उपाय

काली मिर्च, मघा, पोहकरमूल, कण्डियारी के बीज, बासा और अगर इनका चूर्ण बना कर शहद से चाटे तो क्षय की खासी दूर होती है।

नोट—क्षत और क्षय की खांसी का राजयक्ष्मा के साथ सम्बन्ध होता है, इस लिये यहाँ पर इनकी लम्बी चौडी चिकित्सा नही लिखी। देखा जाय तो खासी ही बहुत से बड़े बड़े रोगो की जड़ है, जिसे कि हम

साधारण रोग समझते है वही एक तपदिक जैसे भयानक रोग को जन्म देने वाली है। जरासी हवा लग जाने से जुकाम हुआ और जुकाम के साथ खासी और खांसी की चिकित्सा न करने पर क्षय अर्थात् राजयक्ष्मा हो जाता है। इसी प्रकार पहले वायु की खासी हुई तो उसका उपचार न करने पर पित्त भी बल पकड़ जाता है और पित्त का उपचार न करने पर कफ जड पकड़ जाता है, जब कफ की खासी को दूर करने का विधिवत् उपाय न किया जायगा तो फेफड़े कमजोर पड़ जाते हैं, थोडीसी भी छाती पर बोझ पडने पर फेफडो मे अथवा श्वास प्रणाली मे व्रण हो जाते हैं और फिर जब हम क्षत का भी ध्यानपूर्वक उपचार न करेंगे तो फेफड़े गलने सड़ने लग जायेंगे, जैसे क्षय मे हो जाता है। इसी लिये शास्त्र मे लिखा है कि वात से पित्त की, पित्त से कफ की, कफ से क्षत की और क्षत से क्षय की खांसी भयानक होती है, यदि आरम्भ से इनका उपचार न किया जायगा तो क्षय ( तपदिक ) अवश्य हो जायगा। अतः खासी होते ही उसके उपचार मे ढील न करनी चाहिये।

## सर्व कास उपाय

### जीवन्त्यादि चूर्ण ( वंगसेन से )

जीवन्ती, पाठा, हरड़, वहेडा, आमला, तवाशीर, भारंगी, मुलट्ठी, कचूर, नागरमोथां, मवां, मुनक्का, वहेड़ा, छोटी कण्डियारी, वड़ी कण्डियारी, त्रायमाणा, अजवायन, तमालपत्र, वासा, जवाहा, हींग, वायविडंग, यवक्षार, चित्रक, अम्लवेत, मघा, काली मिर्च, सोठ, देवदारु, सव द्रव्य समान भाग लेकर चूर्ण करे। ३ माशे चूर्ण प्रतिदिन प्रात. वकरी के दूध के साथ अथवा शहद और वनफशे के शरवत के साथ खावे तो पाँच प्रकार की खासी दूर होवी है। विषमज्वर और संग्रहणी रोग दूर होता है, भूख खुलकर लगती है।

### पद्मकादि चूर्ण

पद्माख ( यह एक पहाड़ी वृक्ष है, जो ८-६ हजार फुट की ऊँचाई के पहाड़ो पर होता है, शिमला, मसूरी, काश्मीर आदि के वाजारो में इसके

सोटे, छड़ियाँ विकने आती हैं, इसकी लकडी लाल रङ्ग की और उस पर पतले पतले छिलके उतरने के दाग से प्रतीत होते हैं, उसकी लकडी के अन्दर से लाल कमल के फूल की सी सुगन्ध आती है ) हरड, वहेडा, अमला, मघा, काली मिर्च, सोठ, वायविडङ्ग, देवदारु ( यह वढिया दरजे के दयार का नाम है ), सब दवाइया बराबर लेकर कूट कपड़छान करके चूर्ण कर ले, यदि एक तोला दवाई हो तो दो तोले शहद और ४ तोले घृत अथवा बादाम रोगन मिला कर दिन रात में दो दो अंगुल पाँच सात वार चाटनी चाहिये, इससे खासी और कोढ दूर होते हैं।

## रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म, सुहागा (आग मे फूला किया हुआ), रायसन, वावडिङ्ग, हरड़, वहेडा, आमला, मघां, काली मिर्च, सोठ, गिलोय, पद्माख, शुद्ध मीठा तेलिया ( जहर ), सब को एक एक तोला ले, पहले पारा गन्धक को खरल मे डाल कर कज्जली ( पीसते पीसते सुरमे की तरह काला हो जाने को कज्जली कहते हैं, जहाँ पारा और गन्धक आए वहाँ पर पहले इन दोनो की कज्जली कर लेनी चाहिये ) करे, पीछे मीठा तेलिया वारीक करके मिला के रगड़े और पीछे से अन्य दवाइयो का वारीक चूर्ण कर इकट्ठा मिला ले और कण्डियारी के रस मे तीन दिन तक खूब खरल करे पीछे से एक एक रत्ती की गोलियाँ वना ले और एक गोली से तीन गोली तक लगे हुए पान के पत्ते मे रख कर खावे तो हर प्रकार की खासी दूर होती है।

## कासवटी ( वैद्यकुतूहल से )

काकडासिंगी, भडिंगी, वच ( इसे वर्च वा वरया भी कहते हैं ), नसपाल, मघा, सब दवाइयाँ बराबर लेकर चूर्ण करे, वासे के पत्तो का रस लेकर उसमे वारीक खरल कर एक एक माशे की गोली वना कर मुँह मे रख चूसे तो कफ की खासी दूर होती है। एक गोली सवेरे, एक गोली शाम के समय और एक गोली रात के समय। वड़ी तीव्र खासी मे दिन मे ४-५ गोलियाँ खा सकते हैं।

## अन्य उपाय ( वैद्यकुतूहल से )

कण्डियारी ८ तोले, निरमली के फल ८ तोले, अफीम पक्की २ तोले सोनामाखी भस्म ४ तोले, सोठ ४ तोले, सुहागा ( फूला हुआ ) ४ तोले, सब कूटने वाली वस्तुएं कूट कर अदरक के रस के साथ पाँच दिन तक खरल कर एक एक रत्ती की गोली बना रख छोडे, सुबह, शाम और रात को एक एक गोली अदरक के रस के साथ अथवा दूध के साथ खाने से विषमज्वर, कफज्वर, राजयक्ष्मा और खासी दूर हो जाती है।

## वांसा प्रयोग

वांसा को वसूटी व वहेकड भी कहते हैं, यह वड़ी प्रसिद्ध बूटी है, इसके ताजे पत्तो का दो तोले रस निकाल कर उसमे ६ माशे मधु मिला कर कुछ दिन पीने से क्षय, श्वासकास दूर होते हैं, और इस की जड भी इसी काम आती है, जड का छिलका उतार कर धोले और दो तोले छिलका ३२ तोले पानी मे काढ़ा बनावे, जब पानी ८ तोले रह जावे तो कपड़े मे छान कर ६ माशे शहद मिला कर रोगी को दिन मे तीन वार पिलावे। शास्त्र मे वांसा की वडी प्रशसा की है, लिखा है कि जब तक संसार मे वासा विद्यमान् है तब तक रक्तपित्त, क्षय, खांसी और श्वास के रोगियो को निराश नहीं होना चाहिये।

## खांसी में पथ्य ( पथ्यापथ्य से )

पसीना, जुलाब, वमन, धूमपान, ( तम्बाकू नहीं खासी को दूर करने वाली दवाइयो की बत्ती बनाकर सिगरट की तरह पीना चाहिये ), सठी के चावल, पुराने जौ, घी, धानो की फुलियां, सवांक, कोदो, गेहू, बकरी का दूध, पालक, वैगन, मुनक्का, अंगूर, बिजौरा, गरम पानी, दिन मे न सोना ये कासरोगी के लिये पथ्य बताये हैं।

## खांसी में कुपथ्य

खासी का रोगी वस्ति ( अनीमा, हुकना, गुदा की पिचकारी ) न करे, नसवार न लेवे, फसद ( खून ) न छुडावे, दातुन न करे, व्यायाम न

करे, तेज धूप, तेज हवा, गरद गवार मे न बैठे न चले, बहुत रास्ता न चले, कब्ज न होने दे, मलमूत्र के वेगो को न रोके, सरसो, तुंबी न खावे, गन्दा और ठंडा पानी न पीवे, इसी प्रकार ठंडे और भारी पदार्थ न खावे, मछली न खावे, कन्दा और सब प्रकार के मास न खावे, ये खासी के रोगी को कुपथ्य बताए है।

इति सौदामिनीभाषाभाष्य कासरोग चिकित्सा समाप्त।

---

# अथ हिक्कारोगाधिकारः।

## हिक्कारोग निदान

हिक्का को हिडकी अथवा हिचकी कहते है, असल बात यह है कि प्राणवायु ( जिससे हम श्वासप्रश्वास लेते है ) और उदानवायु जो कण्ठदेश (गले) मे रहता है, दोनो गरमी खुश्की अथवा सरदी खुश्की से बिगड जाते हैं तो गले मे एक ऐसी एंठन और हरकत पैदा हो जाती है जिससे विवश होकर 'हिकप्' 'हिकप्' ऐसी आवाज निकलती है उसे हिक्का कहते है।

दाहकारक, ठोस, भारी और कब्ज करने वाले पदार्थो के खाने से, मलमूत्र के वेगो को रोकने से, अभिष्यन्दी ( शरीर के स्थूल तथा सूक्ष्म-रोमकूप आदि मार्गों को रोकने वाले 'दही' आदि ) भोजन करने से, शीतल जल एवं शीतल भोजन करने से, धुआँ, धूप, गरद गवार, तीव्र-वायु, अधिक स्नान, अधिक व्यायाम, अधिक भार, अधिक मार्ग तथा थकावट से हिचकी खासी और श्वासरोग हो जाते हैं।

## हिक्का के भेद

हिचकी पॉच प्रकार की होती है, १ अन्नजा, २ यमला, ३ क्षुद्रा, ४ गम्भीरा, ५ महती। वायु जब कफ के साथ मिलकर बिगड जाता है तो पॉच प्रकार की हिक्का हो जाती है।

## अन्नजा के लक्षण

अति भोजन से और तीक्ष्ण भोजन से पेट का वायु पीड़ित होकर जब प्रतिलोम अर्थात् ऊपर की ओर जोर से निकलता है तो रोगी को हिचकी हो जाती है। रोगी को प्यास अधिक होती है और हिचकी के वेग से बात करनी कठिन हो जाती है उसे अन्नजा कहते हैं। अर्थात् पेट अधिक भर लेने से वायु के लिये स्थान नहीं रहता इस लिये जोर से ऊपर को उठता है, अत: इसे अन्नजा हिक्का कहते हैं।

## यमला के लक्षण

चिरकाल से जो यमलवेग अर्थात् 'हिक्-हिक्' इस प्रकार जोड़ा आवाज देकर रुक जाती है और फिर हिक्-हिक् करके जोड़ा आवाज निकलती है और हिचकी के समय सिर और ग्रीवा भी कांप जाती है उसे 'यमला' हिक्का कहते हैं। यमला का अर्थ होता है, जोड़ा अर्थात् दोहरी हिचकी।

## क्षुद्रा हिक्का के लक्षण

क्षुद्रा हिक्का देर से थोड़ी थोड़ी करके उठती है, इसका वेग गले तक ही रहता है अर्थात् अधिक कष्ट नहीं देता, अतएव इसे क्षुद्रा (छोटी) हिक्का कहते हैं।

## गम्भीरा हिक्का के लक्षण

जो हिक्का नाभिस्थान से उठती है, जिसमें बड़ा ऊँचा शब्द होता है और तृष्णा, ज्वर, शूल आदि अनेक कष्टदायी उपद्रव होते हैं, उसे गंभीरा कहते हैं।

## महती हिक्का के लक्षण

वस्ति (पेट और कमर का भाग), हृदय, छाती और सिर आदि मर्म स्थानों में अत्यन्त पीड़ा हो, हिचकी के साथ सारा शरीर कांप उठे और जो लगातार रहती है उसे महाहिक्का कहते हैं।

## हिक्का के असाध्य लक्षण

हिक्का के जोर से सारा शरीर अकड गया हो, आँखे और भवे ऊपर को तन गई हो, खाना पीना छूट गया हो, रोगी अत्यन्त क्षीण हो गया हो, छींके अधिक आती हो तो जानो रोग असाध्य है और रोगी अवश्य मर जायगा।

## हिक्का रोग की चिकित्सा

### नसवारें (वंगसेन से)

१—मुलट्ठीचूर्ण थोडा शहद मिला कर नसवारदे अथवा तीन तीन माशे मुलट्ठी का चूर्ण शहद मिला कर दिन रात मे तीन चार वार चाटने से हिचकी दूर होती है, ऊपर से गरम गरम दूध पीवे।

२—मघचूर्ण और खाड बराबर लेकर नसवार दे अथवा मघचूर्ण ४ रत्ती खाड मिला कर खावे ऊपर से दूध घृत मिला कर पीवे तो भी हिचकी दूर होती है।

३—सोठ और गुड थोडे पानी मे घिस कर नसवार दे अथवा सोठ ३ माशे गुड १ तोला, मिला कर खावे तो भी हिक्का दूर होती है। ये ऊपर के तीनो योग नसवार के हैं, दिन मे तीन चारवार नसवार लेने से हिचकी दूर होती है, किन्तु जैसे ऊपर बताया गया है इनके खाने मे भी लाभ होता है।

### अन्य नसवार

१—मखी की वीठ नारी के दूध मे घिसकर नसवार ले।

२—लाख को नारी के दूध मे घिसकर नसवार ले।

३—गुड नारी के दूध मे घिसकर नसवार ले।

### अन्य चटनी

६ माशे शहद, १ माशा सैंधानमक, २ तोले किम्ब या चकोतरे का रस, इनको मिलाकर चाटे तो हिचकी दूर हो। यह चटनी दिन मे तीन चार वार चाटनी चाहिये।

### अन्य चटनी

१—सोठ १ माशा, शहद ६ माशे चाटे तो हिचकी दूर हो।

### अन्य उपाय

उड़द और बूरा चिलम में रख कर पीने से हिचकी दूर होती है।

### अन्य उपाय

मनसिल १ माशा, पनीस ३ माशे राल २ माशा, तीनों मिला हुक्के में रख कर पीने से हिचकी दूर होती है।

### अन्य उपाय

एक दो घूंट बढ़िया शराब पीने से हिचकी दूर होती है।

अथवा—मोरपंख को हुक्के में रख कर पीने से हिचकी दूर होती है।

अथवा—चन्दन को नारी के दूध में घिस कर नसवार देने से हिचकी दूर होती है।

अथवा—मखी की बीठ, और पीपल की लाख दोनों को पीस कर नसवार लेने से हिचकी दूर होती है।

### अन्य उपाय

काकड़ासिंगी, हरड, बहेड़ा, आमला, मर्वा, मरचा, सोंठ, सैंधा नमक, काला नमक, विड नमक, साभर नमक, समुद्र नमक, भाडिंगी, कडियारी, पोहकरमूल, सब दवाइया बराबर लेकर कूट कपडछान चूर्ण करले, इस चूर्ण को यथाशक्ति ३ माशे से ६ माशे तक गरम पानी के साथ पीने से हिचकी, श्वास, क्षय, कफ, खांसी, जुकाम, नजला आदि रोग दूर होते हैं

### अन्य उपाय (काढ़ा)

पान की जड जिसे कुलंजन कहते हैं ६ माशे लेकर कूट दरड़ा कर १५ तोले पानी में काढ़ा करें, जब पाच तोले रह जावे तो छान कर रोगी को पिला दें, यदि रोगी को खुश्की अधिक प्रतीत होती हो तो उसमें एक चमच घी मिला दें, इससे पांच प्रकार की हिचकी दूर होजाती है।

### अन्य उपाय

इलायची मुंह में रखने से भी हिचकी दूर होती है। अथवा एक तोला तुलसी रस में १ माशा इलायची के बीज पीसकर पीने से भी हिचकी दूर होती है।

## अन्य उपाय गोली

इलायची, चंदन, नागरमोथा, मघा, नागकेसर, लौंग, कपास के फूल, धानो की खील, खांड, बिलगिर सब को कूट छानकर शहद से सुपारी समान गोली बनाकर मुंह मे रखे और रस चूसता जावे, इस प्रकार दिन रात मे चार पाच गोली चूसते रहने से हिचकी दूर होती है।

## अथ हिक्का रोग में पथ्य

धूमपान, ( तम्बाकू अथवा अन्य दवाई ) पसीना, उलटी, दस्त, लेने चाहिये, सठी के चावल पुराने वासमती के चावल, कुलथी, जीरा, गेहूं, तुलसी के पत्र, गरम पानी, मदिरा ( शराब ), शहद, इनके सिवाय कफवात को दूर करने वाले द्रव्य सेवन करने चाहिये। रोगी को अचानक त्रास अर्थात् भय देना, अथवा और कोई झूठा इलजाम लगा देना जिससे कि रोगी का ध्यान दूसरी तरफ हो जावे। पानी की धार के नीचे खड़ा करना, रात दिन सोना हिक्का रोगी के लिये पथ्य हैं।

## अथ कुपथ्य

मल मूत्र आदि के वेगों को रोकना, चना, उड़द, मछली आदि जलचर प्राणियो का मांस, कवज करने वाले, रूखे, मीठे, खट्टे पदार्थ, तेल, ठण्डे और भारी अन्नपान, तिल की तिलकुट, विदाही पदार्थ, और तेल मे तले हुए पदार्थ न खावे।

इति हिक्कारोगाधिकार समाप्त।

---

# अथ श्वासरोगाधिकारः

## निदान और सम्प्राप्ति

वायु कुपित होकर फेफडो मे रहने वाले कफ को सुखा देता है तो श्वास की गति उखड़ जाती है उसको 'श्वास रोग' कहते हैं ( हम अपने जीवन के लिये श्वास-प्रश्वास द्वारा अमृतमय प्राणवायु ( आक्सिजन ) को प्रतिक्षण ग्रहण करते रहते हैं, वह प्राणवायु फेफडो मे पहुंच कर छोटी २

नालियों मे हृदय से आनेवाले अशुद्ध रक्त को शुद्ध करता हुआ और निश्वास द्वारा अपद्रव्यो को लेता हुआ वाहर निकल जाता है। फेफड़ो मे शुद्ध होकर रक्त फिर हृदय के वाएं कोष्ठ मे पहुंच जाता है और वहां से सारे शरीर मे जीवन सत्ता पहुँचाने के लिये धकेला जाता है, सारे शरीर का चक्र लगाकर शरीर के अपद्रव्यो को साथ लेता हुआ और स्वयं भी अशुद्ध और अशक्त होकर महाशिरा द्वारा हृदय के दक्षिण प्रकोष्ठ मे पहुंचता है, दक्षिण प्रकोष्ठ से शुद्धि के लिये फिर फेफडो मे जाता है, और फेफड़ो मे विष्णुपदामृत प्राणवायु ( Oxigen ) द्वारा शुद्ध होकर फिर हृदय के वाएं प्रकोष्ठ मे पहुँचता है, वहा से फिर पूर्ववत् सारे शरीर मे सत्ता और शक्ति पहुँचाने के लिये धकेला जाता है, यह एक क्रम है इसे रक्तसञ्चार ( Circulation of blood ) कहते हैं, यही रक्तसञ्चार जीवन का चिह्न है, इसके समाप्त होते ही हृदय का कार्य भी समाप्त हो जाता है, और फेफड़ो का भी, अर्थात् उस समय नाड़ी भी वंद हो जाती है और श्वास भी और मनुष्य मर जाता है। फेफड़ो मे छोटी २ असंख्य नालियां हैं, जहां यह रक्त शुद्ध होता है, वे नालियां श्वास की वायु से फूलती हैं, अर्थात् जब हम श्वास लेते हैं तो छाती फूल जाती है, और जब हम श्वास वाहिर छोड़ते हैं तो छाती वैठ जाती है, इन नालियो मे पतला सा कफ होता है जो इनको तर रखता है, और इनमे लचक वनाए रखता है ताकि श्वासप्रश्वास के जोर से ये फट न जावें किन्तु जब वायुदुष्ट होकर इस कफ को सुखा देता है तो नालियो के छिद्र वंद हो जाते हैं और उनमे लचक नहीं रहती, उस समय नालियो के मुँह वंद होने और लचक न रहने के कारण श्वास वायु द्वारा फैल नही सकता, इसलिये श्वास अन्त तक न पहुच कर बीच मे ही पीछे को धकेला जाता है, और श्वास उखड जाता है, इसी को श्वास रोग अथवा दमा कहते हैं। हिक्का और श्वास रोग अन्य रोगो की निसवत अधिक कष्टदायी और शीघ्र प्राणनाशक होते हैं, इसीलिये हिक्का के अनन्तर श्वास रोग का वर्णन किया है।

श्वास रोग भी पाच प्रकार का होता है, १ महाश्वास, २ ऊर्ध्वश्वास, ३ छिन्नश्वास, ४ तमकश्वास, ५ क्षुद्रश्वास।

## १—महाश्वास लक्षण

महाश्वास मे श्वास ऊपर को खिंच सा जाता है, श्वास लेते समय लगातार घर्र घर्र की आवाज निकलती है, कष्ट अधिक होता है, होशहवास गुम हो जाते है, आखे चढ जाती हैं, मल-मूत्र रुक जाते हैं, रोगी बोल नहीं सकता, और दीन होजाता है, श्वास की आवाज दूर से ही सुनाई पड जाती है, ऐसा रोगी बचता नही।

## २—ऊर्ध्वश्वास लक्षण

उर्ध्वश्वास मे रोगी श्वास को ऊपर खीच तो लेता है, पर लौटाने की शक्ति नही रहती और श्वास देर तक अन्दर रुका रहता है, मुख आदि सब स्रोतो मे कफ भरा रहता है, आखे चढ जाती हैं, रोगी किसी वस्तु को अच्छी तरह देख नहीं सकता, पीडा अधिक होती है, बार २ बेहोशी होती है, चेहरे की रंगत सफेद पड़ जाती है, बेचैनी अधिक होजाती है, कफ के साथ २ वायु का भी प्रकोप अधिक होजाता है, मुंह बार २ सूखता है, ऊर्ध्वश्वास के प्रकोप से जब अध.श्वास रुक जाता है, तो श्वास के रुक जाने से रोगी मर जाता है।

## ३—छिन्नश्वास लक्षण

छिन्नश्वास मे श्वास टूट २ कर आता है, हृदय आदि मर्म स्थानो मे अत्यन्त पीडा होती है, बीच २ मे श्वास रुक भी जाता है, अफारा होता है, पसीना आता है, मूर्छा होती है, मूत्राशय मे अत्यन्त जलन होती है, आखो मे आसू भरे रहते हैं, और रोगी की एक आंख मे लाली रहती है, रोगी कमजोर पड जाता है, मुह सूखता है, चेतना नष्ट हो जाती है, चेहरे की रंगत बदल जाती है, रोगी प्रलाप करता है, और अचानक श्वास के उखड़ जाने से रोगी मर जाता है।

## तमकश्वास लक्षण

जब वायु ग्रीवा शिर तथा प्राणवाहि स्रोतो मे प्रति लोम होकर पहुंचता है, और कफ भी बहुत बढ़ जाता है तब ग्रीवा और सिर जकड़ जाते है, पीनस अर्थात् जकाम हो जाता है, गले मे कफ रुक कर घुरघुर की आवाज

कर देता है, श्वास बहुत तेज हो जाता है, छाती और हृदय मे अत्यन्त पीड़ा होती है। श्वस का जब दौरा होता है तो रोगी बेहोश सा हो जाता है, श्वास रुक जाता है, प्यास लगती है, बार २ इतनी तेज खाँसी उठती है कि रोगी चेतनाहीन हो जाता है, विशेषकर जब कफ खुश्क होकर गले मे अड़ जाता है तब रोगी को अत्यन्त कष्ट हो जाता है और जब कफ पतला होकर निकल जाता है तब कुछ आराम प्रतीत होता है, आवाज बैठ जाती है, सोते और लेटते समय खांसी और श्वास वेग अधिक हो जाता है, अतएव रोगी लेट कर नहीं सो सकता, बैठने से कुछ आराम प्रतीत होता है, रोगी गरम पदार्थों को अधिक चाहता है, आँखें चढ जाती हैं, मस्तक पर पसीना आता रहता है. और पीड़ा भी होती है, मुख बार २ सूखता है, सारा शरीर उथल जाता है, बरसात, सरदी, सामने की वायु (अथवा पुरा बहने पर) सेवन करने से, शीतल और कफकारक पदार्थों के सेवन करने से श्वास का दौरा बढ़ जाता है। नया २ रोग साध्य होता है, और पुराना हो जाने पर याप्य हो जाता है, याप्य का अर्थ है कि जब तक चिकित्सा करते रहो तब तक आराम, चिकित्सा छोड़ने पर फिर रोग आरम्भ हो जाता है। इसे तमकश्वास कहते हैं, इसमे वात और कफ का अधिक प्रकोप होता है, परन्तु जब इस मे पित्त का भी संयोग हो जावे तो रोगी को ज्वर और मूर्छा भी हो जाते हैं, तब इस को प्रतमकश्वास कहते हैं। इसमे और भी पित्तलक्षण पाये जाते हैं, और शीतल पदार्थों से आराम हो जाता है।

## ५ क्षुद्र-श्वास लक्षण

रूखा सूखा भोजन करने से और परिश्रम अधिक करने से, निर्बल मनुष्य को क्षुद्रश्वास हो जाता है, इसमें अधिक कष्ट नहीं होता, यह साध्य होता है।

## सर्वश्वासचिकित्सा

मघ, काली मिर्च, सोंठ, हरड, बहेड़ा, आमला, तेजपत्र, रेणुका, पिप्पलामूल, तज, चित्रा, लोहभस्म, नागकेसर, इलायची, बालछड, नागभस्म, शुद्ध पारा, शुद्धगन्धक, सब बराबर २ ले और सब से पहले पारा-गन्धक

की कज्जली करे, लौहभस्म, नागभस्म तथा अन्य द्रव्यो का बारीक चूर्ण मिलालें और खरल करे, जब एक जान हो जावे तो पुराना गुड़ मिलाकर बेर समान गोली बनाले। इस गोली को गरम जल अथवा अदरक के रस के साथ खावे तो श्वास रोग तत्काल दूर होता है, एवं वायगोला, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, पाण्डुरोग, सन्निपात, शूल, बादी, क्षय, हिचकी आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय (वंगसेन से)

कचूर, रायसन, दशमूल, मवा, सोठ, पिप्पलामूल, ककड़सिंगी, भुई आमला, भाडिंगी, गिलोय, सोठ ये बीस द्रव्य बराबर २ लें और सोलह गुना पानी मे काथ करे, जब आधा पानी रह जावे तो मल छान कर रोगी को पिलावे तो श्वास कास हिचकी और हृद्रोग दूर हो जाता है।

## अन्य उपाय

कुलथी १ छटांक, कंडियारी १ तोला, वासा १ तोला, सोठ ६ माशे सब का १ सेर पानी मे काथ करे, जब २० तोला रह जावे तो उतार छानले और उस मे १ माशा पोहकर मूल का चूर्ण मिला कर पीने से श्वास, कास हिचकी आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य काथ

दशमूल ( बिल, अरणी, स्योनाक, पाढल, गंभारी इनकी जड़, दोनो कंडियारी, भखडे, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी इनका पञ्चाग ) लेकर काढ़ा करे और उसमे १माशा पोहकर मूल का मूल चूर्ण मिला कर पीने से श्वास, कास और पसली का दर्द ( जातलजम ) दूर होता है।

## अन्य उपाय

केला के फूल, कुंद (चांदनी) के फूल, सिरस के फूल और मघां इनको चावलो के पानी के साथ पीने से श्वास रोग मिट जाता है, यह योग पित्त-प्रधान श्वास रोग के लिये अधिक लाभदायक है।

## अन्य उपाय

कंडयारी, वच, देवदारु, सोठ, कायफल, पोहकरमूल, इनका काथ पीने से श्वास रोग, कास और ज्वर भी दूर होता है।

## अन्य काढ़ा

ककड़सिगी, सोंठ, मघां, नागरमोथा, कचूर, पोहकरमूल, कालीमिर्च, खांड इनका चूर्ण करे, फिर पञ्चमूल, वांसा, और गिलोय इनका काढ़ा बना कर उस काढ़े मे ऊपर का चूर्ण ६ माशे तक मिला कर पीने से श्वास कास और हिक्का रोग मिट जाते है ।

## अन्य उपाय

पेठे के रस मे देशी खांड मिला कर पीने से श्वास रोग दूर होता है अथवा पेठा और खांड का चूर्ण कर गरम पानी से खाने पर श्वास कास दूर होते हैं ।

## काढ़ा

भडिगी, धमाहा, ककड़सिंगी, बिलगिर, भखड़े, इनका काढ़ा लेकर ठंडा करके दिन प्रति प्रातः पीने से श्वास कास मिट जाते हैं ।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

मुनक्का, हरड़, मघां, ककड़सिंगी, धमाहा इनका चूर्ण कर शहद और घी मिला कर चाटने से श्वास, कास दूर होते है ।

## अन्य उपाय

कड़वा तेल १ तोला, पुराना गुड़ १ तोला दोनो को मिलाकर चाटने से ईश्वर कृपा करे तो श्वास, कास और हिचकी दूर होती है ।

## मुक्तादिचूर्ण ( वंगसेन से )

मोती भस्म, मूंगा भस्म, नीलम भस्म, असली बिलौर की भस्म, शंख भस्म, काला सुरमा, पन्ने की भस्म, कॉच ( शीशा ) भस्म, पद्मराग ( लाल मानक ) की भस्म, छोटी इलायची, सैंधा नमक, सौंचल नमक, रायसन, लोहभस्म, चांदी भस्म, शुद्ध गंधक, जावित्री, जायफल, सन के बीज, पुठकंडे के चावल ( बीज ) कसेरु सब एक २ टंक बारीक चूर्ण कर वांसा के रस के साथ खरल कर १—१ रत्ती की गोली बना ले और एक गोली शहद ६ माशा मिला कर चाटने से श्वास, कास और हिचकी एवं क्षय आदि महारोग दूर होते हैं, यह महारसायन है । यदि बहुत

ही बारीक ( सुरमा ) कर आंखो मे लगावे तो तिमिर, कांच, नील, पिष्टक अभिष्यन्द, पित्त के रोग, नेत्रो की खुजली, मोतिया, आदि सम्पूर्ण नेत्र रोग भी दूर होते है।

## धूमपानविधि ( वंगसेन से )

हलदी, लाख, मनसिल, एरंड की जड़ और पत्ते, देवदारु नागरमोथा, जटामासी, सब को बारीक कर के घी मे बत्ती बनाकर हुक्के मे रख कर धुआ पिए, इस के पीने से हिचकी, श्वास, कास रोग मिट जाते हैं।

## चूर्ण

ककडसिगी, मघा, कालीमिर्च, सोठ, हरड़, बहेडा, आमला, भडिगी, छोटी कंडियारी, पोहकरमूल, सैंधा, सौंचल, सामुद्र, बिड, साभर, ये पाच नमक, सब बराबर ले चूर्ण करे ३—४ माशे चूर्ण गरम पानी के साथ खाने से हिचकी, श्वास, कास दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

छोटी कंडियारी का चूर्ण ४ माशे, घी मे भुनी हुई हींग २ रत्ति अदरक रस ६ माशे, शहद ६ माशे सब मिला कर बार २ चाटने से हिचकी और श्वास रोग मिट जाते हैं।

## तमक श्वास चिकित्सा

शुद्ध भिलावे, गिलोय, हरड, दशमूल, सोठ इनका काढ़ा कर पीने से तमक श्वास मिट जाता है।

## अन्य उपाय

१—हरड़ २ तोले काढा कर १ माशा मघ चूर्ण बुरक कर पीवे।

२—भागरा और कुडासक दोनों का काढ़ा मघचूर्ण १ माशा बुरक कर पीवे।

३—पोहकरमूल, बांसा, सोठ इनका काढा जौखार १ माशा मिला कर पीवे तो श्वास रोग दूर होता है। यह तीन योग हैं।

## सटयादि चूर्ण

कचूर, पोहकरमूल, तज, नागरमोथा, कुठ, देवदारु, तालीसपत्र,

इलायची, मघां, तुलसी, भुई आमला, सोंठ, अगर, सुगंधवाला सब १—१ तोला, इन सब से आठ गुनी देशी खांड मिला कर चूर्ण करे इस चूर्ण के खाने से हिचकी, आदि रोग दूर होते हैं।

## सर्वश्वास पर सूर्यावर्त रस ( वंगसेन से)

शुद्ध पारा ४ तोले, शुद्ध गंधक २ तोले, दोनो की कज्जली कर घीकुआर के रस मे खरल करें, फिर शुद्ध तावे के ६ तोले पत्र लेकर उनके दोनो तरफ लेप करे हांडी मे रख नीचे ऊपर नमक भरे और चार पहर आग दे। शीतल होने पर निकाल वारीक चूर्ण करे, आधी रत्ती से एक रती तक शहद मे मिला कर खाने से, श्वास, कास मिट जाते हैं। अथवा, मघां, मिर्च, सोंठ इन्द्रायण, देवदारु इनके काढ़े के साथ १ रत्ती दवाई खाने से भी श्वास, कास दूर होते हैं।

## श्वासकुठार रस ( वैद्यकुतूहल से )

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध विप ( मीठा तेलिया ) मघां, १-१ तोला सोंठ २ तोले, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे फिर वाकी चीजे मिलाकर पान के रस मे और अदरक के रस मे एक २ दिन खरल करे, एक २ रत्ती की गोली वना कर पान के रस अथवा अदरक के रस के साथ खाने से श्वास, कास एवं कफ के रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

जो दवाई हिक्का रोग मे कही हैं, और वायु को दूर करने वाली हो वही श्वास मे भी देनी चाहिये।

## श्वास रोग में पथ्य

पसीना, दस्त, धूमपान, दिन को सोना, वमन, पुराने चावल, गेहूं, सठी चावल, जौ, वकरी का दूध, घी कुलथी, मद्य, चौलाई का साग, मुनक्का पंडोलपत्र, लसन, वैगन, विजौरा, वाथू का साग, तर, नारंगी, गरम जल, गोमूत्र, जंभीरी, पुराना घी, और भी कफ को हरने वाले द्रव्य श्वास मे पथ्य है।

### कुपथ्य

मल, मूत्र, डकार, उलटी, प्यास इनका रोकना, स्नान करना, नस्वार लेना, दातुन करना, रक्त निकालना, पूर्व का वायु, भैस का दूध और घी, दुष्ट जल, मछली, सरसो, श्रम, तथा शीत पदार्थ एवं अन्य कफ को करने वाले पदार्थ श्वासरोग मे कुपथ्य हैं।

इति श्वासरोगाधिकार समाप्त

---

# अथ स्वरभंगरोगाधिकारः

## स्वरभंग निदान

बहुत ऊंचा बोलने से, विष खा लेने से, ऊंचे २ पढ़ने से चोट लगने से उदान वायु कुपित होजाता है और स्वरभंग होजाता है, अर्थात् गला बैठ जाता है, और आवाज नही निकलती।

स्वरभंग ६ प्रकार का होता है, १-वात, २-पित्त ३-कफ, ४-सन्नि-पात, ५-मेद, ६-क्षय।

### वातज स्वरभंग के लक्षण

वातजस्वरभंग मे नेत्र, मुख, मल, मूत्र का रंग काला पड जाता है, और आवाज गधे की आवाज के समान होजाती है।

### पित्तज स्वरभंग के लक्षण

पित्तज स्वरभंग मे आंख, मुख, मूत्र और मल का रंग पीला पड़ जाता है, गले मे दाह होता है।

### कफज स्वरभंग के लक्षण

कफज स्वरभंग मे गला कफ से रुका रहता है, और रोगी ऊंचे नहीं बोल सकता, दिन के समय आवाज कुछ साफ होती है।

### सन्निपातज स्वरभंग के लक्षण

सन्निपातज स्वरभंग मे तीनों दोष बिगड जाते हैं, और इस लिये तीनों दोषो के लक्षण पाए जाते हैं, यह स्वरभेद असाध्य होता है।

## क्षयज स्वरभंग के लक्षण

क्षयज स्वर भंग मे गला धुए से जलता हुआ प्रतीत होता है,, आवाज बिलकुल बैठ जाती है (क्योंकि गले मे आवाज देने वाले तंतु नष्ट होजाते हैं ) यह भी असाध्य है।

## मेदज स्वरभंग के लक्षण

मेदज स्वरभंग में आवाज गले के अन्दर ही रहती है, गले मे कफ और मेद चिपके रहते हैं, और रोगी को बार २ प्यास लगती है।

## असाध्य स्वरभंग

क्षीण, बूढ़े और अतिकृश मनुष्य का, बहुत पुराना, जन्म का, मेद का और सन्निपात का स्वरभंग असाध्य होता है।

# स्वरभंग-चिकित्सा

तज, बहेड़ा, सोठ, मघ, और सैंधा नमक, सब बराबर ले चूर्ण कर ४ मासे गोकी लस्सी के साथ रोज खावे तो स्वरभंग दूर होता है।

## अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से )

६ माशे असगंध चूर्ण १ तोले बिजौरे के रस में मिलाकर खावे और ऊपर से ४ तोले गोमूत्र पीवे तो स्वरभंग दूर होता है।

## अन्य उपाय

जावित्री, मघ, बिजौरे के पत्र, धानो की फुलियां, बकरे का सुखा मांस मिला कर चाटने से स्वरभंग दूर होता है।

अथवा—जावित्री और मघ १-१ माशा, धानों की फुलियां ४ तोले बिजौरे के फल की तरियां २ तोला शहद ६ माशे मिला कर खाने से स्वरभंग दूर होता है।

## अन्य उपाय (रसरत्नाकर से)

काला जीरा, मघ, मिर्च, सोंठ, सौंफ, तेजपत्र, देवदारु, वच, हलदी सैंधा नमक, ककड़सिंगी, सब का चूर्ण करे, १ मास तक ६-६ माशा चूर्ण ६ माशा मधु और १ तोला घी मिलाकर खाने से स्वरभंग दूर होता है।

कफ का विकार दूर होता है, स्वर साफ होजाता है और आवाज कोयल सी सुरीली वन जाती है।

## अन्य चूर्ण

संभालू का चूर्ण ८ मासे १ तोला तिलतैल मे मिलाकर नित्य चाटने से स्वरभग दूर होता है।

## अन्य उपाय

आमलों का चूर्ण ८ माशा नित्य वकरी के दूध के साथ खाने से सात अथवा १४ दिन मे स्वरभंग दूर होता है।

## अन्य उपाय

अदरक, पियावांसा, भृंगराज अथवा पतीस, वच, वावची, ब्राह्मी ४-४ तोले, सब का चूर्ण कर ६ मासे से १ तोला तक शराव के साथ माघ महीने की कृष्ण चतुर्दशी से खाना आरम्भ करे और १४ दिन तक नित्य खाता रहे तो स्वरभंग दूर होजाता है, और आवाज कोयल के समान होजाती है।

## अन्य उपाय ( कविविनोद से )

अम्लवेद, मघ, मिर्च, सोठ, चव, समाकदाना, तालीसपत्र, तवाशीर, दालचीनी, जीरा, नागकेसर सब को वरावर ले वारीक पीस पुराने गुड के साथ १-१ माशे की गोली वनावे और मुंह में रख कर चूसता जावे इस से स्वरभंग, श्वास, कास, पीनस, जुकाम, तथा अन्य कफ के रोग दूर होते हैं, और भूख खुल कर लगती है।

## स्वरभंग में पथ्य

पसीना, वस्ति, दस्त, शिरावेध ( फस्द खोलना, खून निकालना ) नसवार धूम्रपान, कवलग्रह अर्थात् अदरक गुड़, आदि की गोली वनाकर चूसना, इससे सम्पूर्ण वलगम खिच कर वाहिर निकल जाती है। ताजी छोटी और पतली मूली, मुनक्का, लसन, अदरक, बिडौरा, पान, मघ, और मिर्च, आदि तीक्ष्ण पदार्थ स्वरभंग मे पथ्य हैं।

## कुपथ्य

उलटी, दिन में सोना, ऊंचे बोलना, विरोधी अन्नपान खाने, आम, मौलसिरी, जामन, कमलकंद, तिन्दुक, समुंदरफल इनका स्वरभंग रोगी को परहेज रखना चाहिये ।

रोग और दोष को समझ कर चिकित्सा करने से वैद्य को सफलता और यश मिलता है

इति मेघविनोद सौदामिनीभाषाभाष्य अरुचि, पाण्डु, रक्तपित्त, राजयक्ष्म, कास, हिक्का, श्वास, स्वरभंगाधिकार नामक पांचवां अध्याय समाप्त ।

---

# अथ छठा अध्याय

## अथ छर्दिरोगाधिकार

### छर्दिनिदान

अति चिकने, पतले, अति नमकीन पदार्थ खाने से, बहुत भोजन करने से, वेवक्त भोजन करने से, भय से, थकावट से, पेटमें कृमि पड़ जाने से, अजीर्ण से, गन्दी और बदबूदार वस्तुओं को देखने और सूंघने से, मन को न भाने वाले भोजन से, उद्वेग से, बहुत जल्दी २ खाने से, गर्भिणी स्त्री को गर्भ पीड़ा से, और भी घृणा और नफरत पैदा करने वाले पदार्थों को देखने से खाने से सूंघने से बलपूर्वक उत्क्लेशित दोष जोर से जब मुंह की ओर आता है और खाए अन्नादि को उलट कर मुंह भर देता है, और जिस में अंगभंग होता है उस रोग को छर्दि या उलटी, कै या वमन कहते हैं ।

छर्दि रोग पांच प्रकार का होता है, १ वात से, २ पित्त से, ३ कफ से, ४ सन्निपात से और ५ बीभत्स अर्थात् घृणा उत्पन्न करनेवाले पदार्थों के योग से ।

### छर्दि के उपद्रव

श्वास, कास बेचैनी वा बेहोशी, बुखार प्यास, आंखो के आगे अंधकार आजाना यह छर्दि रोग के उपद्रव होते हैं ।

## वातछर्दि लक्षण

हृदय, और पमलियो मे पीडा मुंह वार २ सूखता है, सिर और नाभि मे भी पीड़ा होती है, खांसी होती है, स्वरभेद होता है, शरीर मे चुभके पडती हैं, ऊचे डकार आते हैं, मुह मे वार २ थूक और झाग आते हैं, रुक २ कर उलटी आती है और उलटी के साथ थोडा २ पतला और कसैला सा पानी निकलता है, वड़े जोर की उवकाइया आती हैं, वेग वार २ उठते हैं और मनुष्य वेचैन होजाता है।

## वातछर्दि की चिकित्सा

घृत के साथ सैधा नमक मिलाकर थोड़ा २ चाटे, अथवा तीनो नमक ( सैधा, सौंचल, विड ) और त्र्यूषण ( मघ, मिर्च सोंठ, ) सव का चूर्ण वना ३-४ माशे गरम पानी के साथ खाने से भी वात छर्दि दूर होती है।

## अन्य उपाय

शुद्ध मनसिल १ रत्ति, मघ, ४ रत्ति, मिर्च ४ रत्ति सव को वारीक कर २ तोले कैथ के रस के साथ खाने से वातछर्दि दूर होती है।

अथवा—धानो की फुलिया शहद से चाटने पर भी छर्दि रोग दूर होता है।

## पित्तछर्दि के लक्षण

पित्तज छर्दि मे मूर्च्छा होती है, प्यास अधिक होती है, मुख सूखता है, मस्तक, तालु और आखो मे जलन होती है, आखो के आगे अंधेरा छा जाता है, चक्कर आते हैं। उलटी हरी, पीली, धुमैली, गरम, कड़वी आती है, गले मे धुए की सी कड़वाहट और जलन, सारे शरीर मे भी जलन होजाती है।

## पित्तछर्दि चिकित्सा

६ माशे चंदनवुरादा, २ तोले आमले का रस ६ माशा शहद मिला कर चाटने से पित्तछर्दि दूर होती है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

कमलनाल ( विस ), श्वेतचंदन, तगर, वासा, सुगंधवाला, सब का

चूर्ण कर ६ माशे प्रमाण, चावलों का पानी १ छटांक, शहद ६ माशे मिला कर खाने से पित्तछर्दि दूर होती है ।

### अन्य उपाय

२ तोले पित्तपापड़ा, पानी ३२ तोले में काढ़ा करे, जब ८ तोले रह जावे उतार छानकर शहद मिला पीने से पित्तछर्दि दूर होती है ।

### अन्य उपाय

२ तोले हरड़ ३२ तोले पानी मे काढ़ा करे ८ तोले रहने पर छान ले और शहद मिला कर पीवे । अथवा ६ माशे हरड़ का चूर्ण शहद मिलाकर चाटे तो पित्त की छर्दि दूर होती है ।

### अन्य उपाय

हरड़, बहेड़ा, आमला, पटोलपत्र, गिलोय इनका काढ़ा बनाकर शहद १ तोला मिलाकर पीने से पित्त की छर्दि दूर होती है ।

### अन्य उपाय

चूल्हे की जली हुई मिट्टी को पानी में घोल ले और नितार कर पीवे तो पित्त की उलटी बंद हो जाती है ।

### अन्य उपाय

भ्रमरी ( एक प्रकार का कीडा होता है रग और शकल में भिड़ या डेमू से मिलता है उसे घुमेली या घरीणी भी कहते हैं, छतों के साथ गोल २ लंबे २ मिट्टी के घर बनाती है, इसके लिये प्रसिद्ध है कि वह और कीड़ों के मरे बच्चों को लाकर घर में रखती है और कुछ चिर में उन्हे जिंदा और अपनी शकल सूरत का बना लेती है ) के घर को चावलो को पानी के साथ खाने से पित्त की उलटी बंद होती है ।

### कफछर्दि के लक्षण

कफ की उलटी में ऊंघ अधिक रहती है, मुंह से कफ की लारें टपकती हैं और मुंह मीठा सा रहता है, जी भरा रहता है, निद्रा अधिक रहती है, अरोचक होता है, शरीर भारी रहता है, उलटी गाढ़ी, चिकनी, कफयुक्त सफेद रंग की और मीठी होती है, और पीड़ा कम होती है ।

## कफछर्दि चिकित्सा

कफ की उलटी मे हरड़, वहेड़ा, आमला, सोठ, वायविडंग, सब समान भाग चूर्ण बना कर ६ माशे लगभग शहद के साथ चाटने से कफ की उलटी दूर होती है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

वायविडंग, पिलखन और सोठ, तीनो का चूर्ण कर ४-५ माशे मधु के साथ खाने से कफ की उलटी दूर होती है।

## अन्य उपाय

वेल की गिरि माशा दो माशे लेकर शहद के साथ दें तो भी उलटी दूर होती है अथवा नागरमोथा और काकडासिगी दोनो को शहद के साथ खावे, अथवा धमाहा ६ माशे चूर्ण शहद के साथ खावे तो कफ की उलटी दूर होती है।

## अन्य उपाय

सफेद सरसो, सैंधानमक मघां, नागरमोथा, सब का चूर्ण कर शहद से चाटने से कफ की उलटी वंद होती है।

## अन्य उपाय

जीरा, खाड, सैंधानमक, मिर्च काली, सब को वारीक कर ६ माशे जल के साथ खावे तो कफ की उलटी दूर होती है।

## त्रिदोषछर्दि लक्षण

पेट और हृदय मे शूल, अन्न पचता नहीं, अरोचक होता है, शरीर मे दाह होता है, प्यास अधिक हो जाती है, रोमाच होता है, श्वास का वेग वढ़ जाता है, रोगी वेहोश होजाता है, उलटी क्षण २ मे आती है, खट्टी, नमकीन, नीली, गाढ़ी, गरम और लाल ( रक्तयुक्त ) होती है।

## त्रिदोषछर्दि चिकित्सा

### एलादिचूर्ण ( शार्ङ्गधर से )

छोटी इलायची, लौंग, मद्य, नागरमोथा, श्वेतचदन, वेर की गिरी,

फूल प्रियंगु, धानों की फुलियां, मुलतानी मिश्री, सब का चूर्ण कर ६ माशे शहद के साथ खाने से वात, पित्त, कफ और त्रिदोष की उलटी बंद होजाती है। अथवा—सोंठचूर्ण २ माशे, मधु के साथ खाने से त्रिदोष की उलटी बंद होजाती है।

### अन्य उपाय

पीपल की लाख, आमला, खांड, इनका चूर्ण कर चावलों के पानी के साथ शहद मिलाकर ६ माशे चाटने से त्रिदोष की उलटी बंद होती है।

### अन्य उपाय

बांसा का काढ़ा बना कर शहद मिला कर पीने से त्रिदोष की उलटी दूर होती है।

### अन्य उपाय

सत्तू अनार के रस मे घोल कर मिश्री और शहद मिला कर पीने से त्रिदोष की उलटी बंद होती है।

### अन्य उपाय

गिलोय का काढ़ा बना कर उसमे शहद मिला कर पीने से सन्निपात की उलटी बंद होती है।

### अन्य उपाय

बेर की गिरी, आमले, मिश्री और पीपलमघ सब का चूर्ण कर शहद के साथ चाटने से त्रिदोष की उलटी दूर होती है।

### अन्य उपाय

शुद्ध मनसिल २ रत्ति, मघचूर्ण १ माशा, मिर्चचूर्ण १ माशा, धानो की फुलियां ४ तोला, कैथ का रस २ तोला, इमली का रस ४ तोला, शहद १ तोला सब मिला कर चाटने से सब प्रकार की उलटी दूर होती है।

### अन्य उपाय

पीपल के छिलके को जला कर राख करले फिर पानी मे घोल कर नितरने दे, फिर नितरा हुआ पानी पीने से सब प्रकार की उलटी दूर होती है।

### अन्य उपाय

विल की जड का छिलका लेकर छोटे २ टुकड़े करके काढ़ा कर ले, १ तोला शहद मिला कर पीने से उलटी दूर होती है।

### अथ छर्दिरोग में क्वाथविधि

२ तोले दवाई, ३२ तोले पानी, मिट्टी के वरतन मे मीठी २ आंच पर काढा करे जब चौथा वा आठवा भाग रह जावे तो उतार कर उस मे दवाई से चौथा भाग अर्थात् ६ माशे शहद अथवा मिश्री मिलानी चाहिये। यह सब प्रकार के काढ़ो के बनाने का तरीका है, अर्थात् जो भी काढ़ा बनाना हो इसी प्रकार बना सकते हैं।

### अन्य उपाय

कौंच के बीज, तेज पत्र ८ माशे, मखी की बीठ १ रत्ति, अथवा बिल के पत्ते और बोल गूंद बराबर २ ले पानी मे पीस कर पीने से उलटी रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय ( कालज्ञान से )

सठी के चावल, दूब घास, इलायची, बडी दूब, (अथवा खस) इमली के पत्ते अथवा बीज सब ४—४ माशे लेकर बारीक चूर्ण का वासी जल के साथ खाने से सब प्रकार की उलटी दूर होती हे।

### अन्य उपाय

मघ, कुठ, इमली और जामन की छाल, नीम की छाल, सब का चूर्ण ३-४ माशे पानी के साथ दे तो सब प्रकार की उलटियां बंद होती है।

### अन्य उपाय

मनसिल और हलदी दोनो बराबर ले पुडियां बाध रोगी के मुंह पर धूनी दे तो सब प्रकार की उलटिया बंद हो जाती है।

### अन्य उपाय—

कालीमिर्च सवा तोला, नमक डेढ़ माशा, दोनो को पीस पानी के साथ खाने से उलटी बंद हो जाती है। इसमे मिर्च अधिक है, अतः ३ माशे तक ले सकते हैं।

## अन्य उपाय

कोलडोडा पान की जड़, धानो की फुलियाँ, विलगिर, मोरपंख की भस्म, छोटी इलायची, आमला, नारियल की जटा की भस्म, सब बराबर ले चूर्ण करे और शहद मे मिला कर ३-३ माशे प्रातः सायं चाटने से सब प्रकार की उलटी दूर होती है।

## तृष्णाछर्दि का उपाय

आम के पत्ते, जामन के पत्ते, वड़ की दाढ़ी, खस इनका फांट बना कर पीने से तृष्णा-छर्दि (अधिक प्यास को रोकने से जो उलटी होती है,) दूर होती है।

## फांटविधि ( शार्ङ्गधर से )

४ तोले दवाई लेकर कूट ले और ३२ तोले उबलते २ पानी में (चाय की तरह ) डाल कर उतार ले, और ठंडा होने पर मल कर छान ले, ऐसे काढे को फांट कहते हैं इस मे से ८ तोले लेकर शहद मिला अथवा गुड़ मिला कर रोगी को पिलाना चाहिये।

## अन्य उपाय

खरैटी, नीम की कोपले, कालीमिर्च, मुलट्ठी, नीलोफर सब द्रव्य २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष काढ़ा ८ तोले पीने से तृष्णाछर्दि दूर होती है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

आम की छाल, जामन की छाल, दोनो का काढ़ा कर तोला भर शहद मिला कर पीने से सब प्रकार की उलटी, और प्यास बंद हो जाती है।

## अन्य उपाय

मनसिल, वड़ की कोंपले, लोधपठानी, मुलट्ठी, अनारदाना, सब को चावलो के पानी से पीस कर शहद मिला पीने से तृष्णाछर्दि दूर होती है। अथवा इनका चूर्ण चावलो के पानी मे शहद मिला खाने से तृष्णाछर्दि दूर हो जाती है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

सठी के चावल रीध कर शहद मिला खाने से तृष्णावमन दूर होती है।

## अन्य उपाय (रसरत्नाकर से )

धनिया, सुगंधबाला, श्वेतचन्दन, मुनक्का, अनन्तमूल सब ६-६ माशे, सब के बराबर धानो की फुलिया, और सब से चौगुने ( २० तोले ) पानी में उबाले, पांच तोले बाकी रहने पर उतार ठंडा कर शहद मिला रोगी को पिलाने से तृष्णाछर्दि, ज्वर और सब प्रकार के अतिसार दूर होते हैं।

## अन्य उपाय (रसरत्नाकर से )

मुनक्का, अनन्तमूल, श्वेतचन्दन, नागरमोथा, बेर की गिरी, सब ६-६ माशे, धानो की खीलें सब के बराबर, सब को सोलह गुना पानी मे काढ़ा करे आधा रहने पर उतार ले, मल छान कर उस मे मिश्री और शहद मिला कर रोगी को पिलाने से सब प्रकार की तृष्णाछर्दि दूर होती है।

## ज्वर-तृष्णाछर्दि उपाय (वंगसेन से)

नागरमोथा, धानो की फुलियां, मघ, कौलडोडा, सब बराबर ले बारीक कर शहद मिला कर प्रातः साय चाटने से ज्वर, तृष्णा, वमन आदि दूर होते हैं।

## छर्दि रोग पर पथ्य

वमन, विरेचन, धानो की फुलिया, माड, व्रत, स्नान, शालिचावल, सठी के चावल, मूंग, मटर, गेहूँ, जौ, बिजौरा, अनारदाना, मुनक्का, यूष मिश्री, बेर, आम, बड, पीपल, जामन आदि कषाय वृक्षो की छाल फल आदि वमन मे पथ्य हैं।

## कुपथ्य

पसीना, नसवार, वस्ति ( अनीमा हुकना ), स्नेह ( घृत तैल ) पिलाना, खून निकालना, दातुन, अंजन, व्यायाम आदि वमन मे कुपथ्य है।

इति छर्दिरोगाधिकार समाप्त

## तृष्णा के उपद्रव

शोष, ज्वर, क्षय, मोह, कास, श्वास, अरुचि और वमन। यदि तृष्णा रोग मे यह उपद्रव हो तो तृष्णा असाध्य होती है।

## वातज तृष्णा के लक्षण

वात तृष्णा मे मुँह बार २ सूखता हैं, शंख ( कनपटी ) शिर एवं सारे शरीर मे तोद अर्थात् चुभकें पडती हैं। चक्कर आते हैं, निद्रा नहीं आती, मूर्छा होती है, मुख वेरस होता है, जलवाही स्रोत रुक जाते हैं, प्यास बहुत लगती है और शीतल जल पीने से बढ़ती जाती है।

## पित्तज तृष्णा के लक्षण

पित्त तृष्णा मे रोगी को बार २ मूर्च्छा होती है, भोजन में रुचि नहीं होती, रोगी बकवास करता रहता है, शरीर मे दाह होता है, आखे लाल हो जाती हैं, मुंह बार २ सूखता है, शीतल पदार्थों से प्रसन्नता होती है, मुंह कड़वा होता है, सारे शरीर मे संताप होता है।

## कफ तृष्णा के लक्षण

कफज तृष्णा मे मुख का स्वाद मीठा, निद्रा अधिक, पेट भारी, और मुख अधिक सूखता जाता है। यहां एक शंका पैदा होती है कि कफ तो पहले पानी का स्वरूप है, फिर कफ से तृष्णा क्यो मानी है ?

इसका उत्तर इस प्रकार देते हैं कि जैसे पानी की नाली मे गाद कीचड़ फँस जाने से पानी आगे नहीं पहुँचता इस प्रकार पित्त और वात जलवाही स्रोतो मे जब कफ को सुखा देते हैं। उस समय जलवाही स्रोतो के रुक जाने से कफ मे भी बार २ प्यास लगती है।

## क्षतज तृष्णा के लक्षण

शस्त्र आदि से शरीर का रक्त जब अधिक निकल जाता है तब उस कमी को पूरा करने के लिये बार २ प्यास उठती है, और रोगी पानी मांगता है।

## क्षयज तृष्णा के लक्षण

शरीर का जो रसधातु है उसके सूख जाने से अर्थात् रसशोष से

क्षयज तृष्णा मानी है, इस मे रोगी प्रतिक्षण पानी ही पानी पीता है पर उसे चैन नहीं आता इसे विद्वान् सन्निपात की भी मानते हैं, इसमे रसक्षय के सम्पूर्ण लक्षण पाए जाते हैं ।

## आमज तृष्णा के लक्षण

आम अर्थात् पेट में अजीर्ण से आम विष हो जाया करता है, उससे तीन भयानक रोग हो जाते हैं, १—विषूचिका ( हैजा ) जिस मे वमन विरेचन हो जाया करते हैं, २—अलस ( गुम हैजा ) पेट तन जाता है, मल-मूत्र नहीं उतरता । ३—विलम्बिका, जिस में पेट पत्थर की तरह निष्क्रिय हो जाता है, अर्थात् आन्त्रो की क्रियाशक्ति नष्ट हो जाती है । और मल को नीचे ऊपर हरकत नहीं दे सकती, वायु प्रधान होता है अतः वार २ प्यास लगती है ।

## आहारज तृष्णा के लक्षण

स्निग्ध, खट्टे, बहुत नमक वाले, तथा भारी पदार्थ खाने से यह तृष्णा हो जाती है ।

## वातज तृष्णा की चिकित्सा

वातज तृष्णा में सोना, चांदी और लोहे आदि की डलियां गरम कर के पानी में बुझावे, और वह पीने को देना चाहिये ।

## अन्य उपाय

एक सेर पानी को आग पर धरे, जब तीन पाव रह जावे तो रोगी को पीने को दे, जब प्यास लगे बेखटके देता जावे तो वातज तृष्णा दूर होती है ।

## अन्य उपाय

मघ, मरिच, सोंठ, धानो की फुलियां और आमले सब समान भाग ले चूर्ण करे और मधु मे मिला कर चाटने से वात की तृष्णा दूर होती है ।

## पित्तज तृष्णा की चिकित्सा ( वंगसेन से )

मीठे, कड़वे, शीतल और तर जितने भी संसार में पदार्थ हैं सब पित्ततृष्णा को दूर करते हैं । पित्त की तृष्णा स्वाभाविक है, इसलिये

मीठे फल तथा शर्बत आदि पीने से पित्त की तृष्णा अवश्य दूर होती है।

## अन्य उपाय

गंभारी के फल ठण्डे पानी मे रगड़ कर मिश्री मिला कर पीने से पित्तज तृष्णा दूर होती है। गभारी के स्थान पर कई विद्वान् जरिश्क डाल लेते हैं।

अथवा—चन्दनश्वेत, धनिया और खस इनको पानी मे रगड़ कर पीने से अथवा मुनक्का और गुलदुपहरिया ठण्डे पानी मे घोट कर पीने से पित्तज तृष्णा दूर होती है। ऊपर के तीन योग है, इनको सरदाई की तरह शीतल पानी मे घोट मिश्री मिला कर पीना चाहिये, अथवा इनका शर्बत बना कर ठण्डे पानी मे पीने से भी पित्त की तृष्णा दूर होती है।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

श्वेत चन्दन, खस, मुनक्का, इनको चावलो के पानी के साथ घोट कर सरदाई की तरह शहद मिला कर पीने से पित्त की तृष्णा दूर होती है।

## कफज तृष्णा की चिकित्सा ( वंगसेन से )

मघ, पिप्लामूल, चव, चित्रा, सोठ, बिल गिरि, अरहर और कुशा, सब ३-३ माशे लेकर ३२ तोले पानी मे काढ़ा करे, जब आठ तोले रह जावे तो रोगी को पिलाने से कफ की तृष्णा दूर होती है।

## अन्य उपाय

नीम के पत्ते २ तोले लेकर ३२ तोले पानी मे काढा करे, जब ८ तोले रह जावे तो उतार छान कर उस मे ३ माशे जीरा पीस कर एक तोला अदरक का रस और १ माशा सौंचल नमक मिला कर पिलाने से कफज तृष्णा दूर होती है।

## अन्य उपाय

नागकेसर, मिश्री, जीरा श्वेत, अनारदाना, मघ सब का चूर्ण कर शहद और घी मिलाकर चाटने से कफ की प्यास दूर होती है।

### अन्य उपाय

मुनका, मुलट्ठी, नीलोफर, तोखाखीर, गुलदुपहरिया इनको कूट कर गन्ने के रस के साथ खाने से कफ की तृष्णा दूर होती है ।

### सब तृष्णाओं की चिकित्सा

अच्छा आमला हरा मिले तो बहुत ही अच्छा है मुंह मे रख चूसने से सब प्रकार की तृष्णा दूर होती है ।

### आमलकादि गुटिका ( शार्ङ्गधर से )

आमले, कौलडोडे, कुठ, वड़ की कोंपले, धानो की फुलिया सब बराबर २ पीस कर शहद मिला गुटिका बनाले और मुंह में रख कर चूसे तो सब प्रकार की तृष्णा, दाह, मुखशोष आदि रोग अवश्य दूर होते ह ।

### अन्य उपाय

मुनके को मुंह मे रखने से, अथवा छुहारे की गुठली मुंह मे रख चूसने से, अथवा मघ का टुकड़ा मुह में रख चूसने से तृष्णा दूर होती है ।

### मुखशोष अन्य उपाय

इटसिट, पुठकंडा, श्वेतजीरा, कालाजीरा इनका चूर्ण कर लस्सी के साथ खाने से मुखशोष और तृष्णा दूर होती है ।

### अन्य उपाय

नेपाली धनिया, पिप्पलामूल, निम्ब की छाल, सोंठ अथवा अद्रक, इनकी गोली बना मुंह में रखे तो मुखशोष तृष्णा आदि रोग दूर होते हैं ।

### तृष्णारोग पर पथ्य

वमन, विरेचन, कवल ( मुंह मे गोली आदि रखना ) सोना, स्नान करना, चावलो का माड, विलेपी, दूव, सत्तू , लाजा, मिश्री, जो, जंभीरी गलगल, चने, मूंग, मसूर मुनक्का, केले का फल, चांदकी चादनी, आमले, शीतल जल, मधु, श्वेतचंदन, इलायची, कपूर, ठडे लेप, अनारदाना, पान, कुएं का जल, कैथ, पेठा, मूंगा, ( प्रवालभस्म ) यह तृष्णा और मुखशोष मे पथ्य हैं ।

### अन्य कुपथ्य

स्वेदन, अंजन, नसवार, धूमपान, स्नेहन, धूप मे बैठना, व्यायाम, नमक, भारी अन्न, कसैले पदार्थ, दातुन करना, तीक्ष्ण पदार्थ, गन्दा पानी यह तृष्णा मे कुपथ्य हैं।

इति तृष्णा-रोगाधिकार समाप्त

---

# अथ मन्दाग्नि-चिकित्सा

### महादाडिमाष्टक चूर्ण ( शार्ङ्गधर से )

अनारदाना ८ तोले, मिश्री ३२ तोले, तेजपत्र, इलायची, तमालपत्र एक २ पल, सोंठ १ पल, मिर्च १ पल, मघ १ पल, सब का चूर्ण कर ४—४ माशे खाने से अग्नि दीपन करता है, स्वर मधुर होता है, कफ खासी, क्षय, गुल्म, ग्रहणी, अतिसार आदि रोग दूर होते हैं, भूख खूब खुलकर लगती है, भोजन समय पर पच जाता है। यह महादाडि-माष्टक चूर्ण अत्यन्त फलदायक है।

### लघुदाडिमाष्टक चूर्ण

अनारदाना ३२ तोले, मिश्री ३२ तोले, मघ, मिर्च, सोंठ, हलदी, अजवायन, जीरा पिप्पलामूल, और धनिया, सब चार २ तोले, सब का चूर्ण कर चार पाच माशे खाने से भूख खुल कर लगती है, और अतिसार संग्रहणी, क्षय आदि रोग दूर होते हैं, मिश्री की चासनी करके अन्य दवाइया मिला कर गोलिया भी बना लेते हैं तब इसे दाडिमाष्टक मोदक कहते हैं।

### महाखांडव चूर्ण

नागकेसर, मिर्च, सैधा, सौंचर, विड, समुद्र और शीशा यह पाचो नमक, तालीसपत्र, प्रत्येक चार २ माशे, पिप्पलामूल, चित्रा, तज, मघ, जीरा, समाकदाना, सब आठ २ माशे, धनिया, सोंठ अमलबेद, बेरी की जड़ का छिलका, नागरमोथा, अजवायन, बड़ी इलायची, सब एक २ तोला, सब

दवाइयों का चौथा भाग अनारदाना और इन सब से आधी मिश्री सब को कूट कर चूर्ण कर ले, यह महाखांडव चूर्ण अत्यन्त रोचक है, अग्निदीपन करने वाला है, हृदय को बल देने वाला है। खांसी, अतिसार, हृद्रोग, गले के रोग, उदर के रोग, विषूचिका, अफारा, अर्श, गुल्म, कृमि, और पांच प्रकार की उलटी, और श्वास को दूर करता है। मात्रा ६ माशे से १ तोला तक गरम जल अथवा किसी अर्क आदि के साथ। दही के मट्ठे के साथ खाने से वायु के रोग, दूध के साथ खाने से शूल, गो की लस्सी के खाने से कब्ज दूर होती है।

### आमलकादि चूर्ण

आमले, मघ, चित्रा, हरड़, सैंधानमक, सब बराबर लेकर चूर्ण कर लें और छः माशे से १ तोला तक यह चूर्ण ताजे पानी के साथ दोनों समय सेवन करने से कफ, अरुचि, ज्वर, और कब्ज को दूर करता है, और इसके सेवन करने से भूख खूब खुल कर लगती है।

इति मन्दाग्नि-चिकित्सा समाप्त

---

# अथ दाहरोगाधिकार

## दाहरोग-निदान

अत्यन्त तीक्ष्ण और उष्ण पदार्थों के अधिक खाते रहने से, ग्रीष्म-काल ( गरमी के मौसिम ) में धूप मे अधिक चलने से, लू लग जाने से, शराब पीने से इसी प्रकार के अन्य कई कारणों से शरीर का पित्त दोष जब अत्यन्त प्रकुपित हो जाता है तो उसकी गरमी रक्त में भी एक प्रकार का उबाल पैदा कर देती है, दोनों बिगड़े हुए जब त्वचा के नीचे रस धातु और लसीका में भी अग्नि समान गरमी और उबाल पैदा कर देते हैं तो सारे शरीर मे आग सी लग जाती है, इस रोग को 'दाह' कहते हैं।

### दाह के भेद

दाह सात प्रकार का होता है—१ मद्यज, २ रक्तज, ३ पित्तज, ४ तृष्णानिरोधज, ५ कोष्ठभेदज, ६ धातुक्षयज, ७ मर्माभिघातज।

## १ मद्यज दाह के लक्षण

मद्य अर्थात् शराब अधिक पीने से शराब की आग जब पित्त को प्रकुपित कर देती है तो घोर दाह हो जाता है, इसके अन्य लक्षण पित्त के लक्षणों के समान होते हैं।

## २ रक्तज दाह के लक्षण

प्यास अधिक होती है, शरीर मे दाह अधिक होता है, सारा शरीर तावे का सा लाल हो जाता है आखो का रंग भी लाल हो जाता है, सारे अंगो से आग की लपटे सी निकलती है, मुख तथा सारे शरीर से रक्त की गंध (खून की बू) आती है।

## ३ पित्तज दाह के लक्षण

पितज दाह में पित्त ज्वर के सारे लक्षण होते हैं और दाह अधिक होता है।

## ४ तृष्णानिरोधज दाह के लक्षण

तृष्णा-निरोध अर्थात् गरमी की ऋतु मे प्यास को अधिक काल तक रोके रखने से शरीर की अन्तरग्नि पानी न मिलने से भडक उठती है, उससे शरीर के अन्दर वाहर दाह ही दाह होता है, रोगी का मन अत्यन्त व्याकुल हो जाता है, होठ, तालु, गल, सूख जाते हैं, जीभ बाहिर निकल आती हो और रोगी कापता है।

## ५ कोष्ठभेदज दाह के लक्षण

छुरा, चाकू, वरछी आदि से छाती अथवा पेट के अन्दर जखम हो जाने से जव खून अन्दर रुक जाता है तो भी अत्यन्त दाह होता है।

## ६ धातुक्षयज दाह के लक्षण

रस, रक्त आदि धातुओ के क्षय से जो दाह होता है, उसमे मूर्च्छा, और प्यास अधिक होती है, आवाज बंद हो जाती है, रोगी को अत्यन्त कष्ट होता है।

## ७ मर्माभिघातज दाह के लक्षण

मर्म अर्थात् सिर, हृदय और वस्ति इनमे से कही पर भी चोट

लग जाने से रोगी को दाह हो जाता है। इस प्रकार से दाह के सात भेद होते हैं।

## दाह के असाध्य लक्षण

तालु, गल, होठ सूख जावें, जीभ भी काठ की तरह सूख जावे, और बाहिर आ निकले, रोगी कांपने लग जावे, कोष्ठ ( कोष्ठ आठ होते हैं १ आमाशय, २ अग्न्याशय, ३ पक्वाशय, ४ मूत्राशय, ५ रक्ताशय, ६ हृदय, ७ उण्डुक अर्थात् मलाशय, और ८ फुप्फुस ) में कहीं रक्त भर जावे, तृष्णा अधिक हो जाये, रोगी को बार २ मूर्छा आवे तो रोगी का जीना असम्भव है, अर्थात् रोगी अवश्य मर जाता है।

## अथ दाह-चिकित्सा ( वंगसेन से )

### शतधौत घृत लेप

ठण्डे जल से सौ बार धोए हुए घी को हाथ पाओं की तलियों अथवा सारे शरीर पर लेप करने से सब प्रकार का दाह दूर होता है।

### अन्य उपाय

रोगी के लिये केले के और कमल के पत्ते की शीतल सेज हो और उस पर शीतल पानी का छिड़काव किया हो, ताड़पत्र का जल से शीतल किया हुआ पंखा हो, किसी ठण्डे और हरे भरे बाग में शीतल घर हो, पीने के लिये बहुत ठण्डे सुगन्ध शर्बत हो, शरीर पर चन्दन और कपूर का लेप किया जाय तो दाह शान्त हो जाता है।

### अन्य उपाय

काञ्जी से कपड़ा तर करके छाती और सारे शरीर पर रखे, अथवा खस, चन्दन को सिरके में रगड़ कर सारे शरीर पर लेप करे तो दाह शान्त हो जाता है।

### अन्य उपाय

एरने उपले की भस्म कांसी के कटोरे में घोल कर छाती पर रखे तो दाह दूर होता है।

## अन्य उपाय

पानी की मश्क धार बांध कर सिर पर डालने से भी दाह दूर होता है। अथवा श्वेतचन्दन को गुलाब और केवड़े के अर्क मे घिस कर शरीर पर लेप करने से दाह दूर होता है।

## अन्य उपाय

श्वेतचन्दन मुश्ककपूर दोनों को अर्क गुलाब और केवड़े मे घिस कर लेप करने से दाह दूर होगा।

## चूर्ण

चन्दन, कौलडोडे, मुश्कवाला इनका चूर्ण अर्क गुलाब केवड़े के साथ खावे, एवं मिश्री का ठण्डा शरबत पीने से भी दाह दूर हो जाता है। अथवा—चन्दन को गुलाब जल मे घिस कर मिश्री मिला ठण्डा २ पीने से भी दाह दूर होता है।

नोट—आज कल शरबतो का आम रिवाज हो गया है, इस लिये श्वेतचन्दन को गुलाब के अर्क मे घिस कर मिश्री मिला चाशनी करके शर्बत बना ले, अथवा-बादाम गिरि, चारो मगज (खीरा, खरबूजा, कद्दू, और तरबूज, इनके मगज) गुलाब के अर्क मे रगड़ कर मिश्री मिला चाशनी करे और चाशनी पकते समय चन्दन को रूह केवड़े मे घिस कर मिला दे। अथवा-केले के रस मे श्वेतचन्दन घिस ले और मिश्री मिला शर्बत पका ले, यह सारे शर्बत दाह और तृष्णा को दूर करते हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई ठण्डे शरबत हैं जो दाह और प्यास को बंद करते हैं यह सारे शरबत अपने हाथ से अथवा आपने सामने बनवाने चाहिये, क्योकि बाजार मे हर एक चीज नकली आ रही है इसी लिये लाभ नही करती। शर्बत बनाने की विधि अत मे देखो।

## अन्य उपाय ( वैद्यजीवन से )

अत्यन्त रूपवती, मन और आंखो को लुभानेवाली, सुन्दर वस्त्राभूषण से सजी हुई, मृगनयनी श्यामा सुन्दरी स्त्री का संग, चन्दन, गुलाब छिडकी हुई केले और कमलपत्र की सेज, चन्दन और और कपूर

का लेप, यह सब उपाय दाह को शान्त करने वाले है।

### अन्य उपाय

नीम की कोपलो को पानी मे पीस के लेप करने से दाह मिट जाता है।

### अन्य उपाय

गिलोय का रस निकाल कर मिश्री मिला सात दिन तक प्रात सायं निरन्तर पीने से दाह मिट जाता है।

### अन्य उपाय ( वीरसिंहावलोक से )

पित्त रोगी का जो उपचार है, वही दाह का है, और जो पित्त के रोगो की चिकित्सा है वही दाह की चिकित्सा है, अत: वह चिकित्सा भी कर लेनी चाहिये।

### अथ गलदाह चिकित्सा ( रसरत्नाकर से )

सैंधा नमक, हलदी, वच, कालीमिर्च, सब का चूर्ण कर ३—४ माशे गरम पानी के साथ खाने से तत्काल गलदाह को दूर करता है।

### अन्य उपाय

करञ्जुए ( मेचके ) की गिरी ३-४ माशे गरम पानी के साथ खाने से गलदाह दूर होता है।

अथवा—६ माशे हरड़ का चूर्ण शहद मिला खाने से गलदाह दूर होना है।

### अन्य उपाय

शुद्धगंधक, हरड़, नीम की गिरी, इनका चूर्ण कर ३ माशे शहद मिलाकर खाने से गलदाह दूर होता है। अथवा—पापड़े के रस को शहद मिलाकर पीने से भी गलदाह दूर होता है।

### अन्य उपाय

सुगंध, घने वृक्षो के ठण्डे बाग बगीचे, जिनमे ठण्डी बूंदे बरसाने वाले जलयन्त्र फुहारे लगे हुए हो, राग रंग हो रहा हो, वहां [illegible] और

केले की शय्या पर पड़े हुए रोगी का दाहरोग नष्ट होता है।

### दाहरोग में पथ्य

वासमती के पुराने चावल, सठी के चावल, मूंग, मसूर, चना सावत, जौ, पनसफल, केला, ककडी, दूध, मिश्री, सत्तू, सौंफ, धनिया, कमल, श्वेत वस्त्र, जंगली मास रस, लाजमण्ड ( धानो की फुलियो को शरबत मे भिगोकर बनता है ) सौ बार धोया हुआ घी, दूध का मक्खन, पेठा, मीठा अनार, धारागृह ( धारागृह वह होता है जिसके चारो ओर फुहारो का छिडकाव होना रहता है, और जिसमे छोटी २ नालियों द्वारा जल वहता रहता है वह मकान प्रतिक्षण ठण्डा रहता है, प्राचीन काल का ऐसा धारागृह लाहौर के शालामार बाग मे आज तक विद्यमान है ) चाद की चादनी, ठण्डे शर्बत, शीतल वायु, चन्दन, कमल खस गुलाब, केवड़ा आदि की सुगधि, प्रेम की बातचीत, श्यामा स्त्रियो के कोमल २ अङ्गो का स्पर्श, श्वेत और गीले वस्त्रो का स्पर्श, शङ्खभस्म, लोहभस्म, और चांदी की भस्म, तथा इसी प्रकार के अन्य शीतल द्रव्य दाह को दूर कर देते हैं।

### दाह में कुपथ्य

क्रोध, पित्तकारक द्रव्य, मल मूत्र के वेगो को रोकना, हाथी, घोड़े की सवारी, सफर करना, क्षार पदार्थ खाना, व्यायाम करना, धूप मे चलना, लस्सी, पान, शहद, हींग, कटु, तीक्ष्ण और उष्ण, एव दाह पैदा करनेवाले विरोधी अन्नपान करना और मैथुन करना दाह रोगी छोड दे।

इति दाहरोगाधिकार समाप्त

---

## अथ मूर्च्छा-रोगाधिकार

### मूर्च्छा निदान

दुर्बल शरीर वाले, बहुत दोषो वाले, विरुद्ध आहार करने वाले, वेगो को रोकने वाले, जिसके सिर आदि पर चोट लग जावे, अथवा कमजोर मन वाले मनुष्य के आभ्यन्तर मानसिक केन्द्र, अर्थात् हृदय और

मस्तिष्क ( दिमाग ) और वाह्य केन्द्र अर्थात् पाच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रियो पर वढ़े हुए दोषो का निवेश अधिकार अथवा प्रभाव, ( दौरा ) हो जाता है उस समय मनुष्य मूर्च्छित (वेहोश ) होजाता है।

## मूर्च्छा के भेद

मूर्च्छा छः प्रकार की होती है, १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ रक्त, ५ मद्य और ६ विष से। इन सव मे पित्त की ही प्रधानता होती है। अर्थात् मूर्च्छा पित्त और तम के विना नहीं होती, चाहे वायु की मूर्च्छा हो, कफ वा रक्त की हो सव मे पित्त और तम की प्रधानता अवश्य होगी।

## मूर्च्छा के पूर्व रूप

हृदय मे पीड़ा होती है, जभाइया आती हैं, होश ठीक नही रहते, सव मूर्च्छाओ के ये पूर्वरूप हैं।

## वात-मूर्च्छा के लक्षण

वायु की मूर्च्छा में—रोगी जव मूर्च्छित ( वेहोश ) होने लगता है तो उसकी आखो के सामने का आकाश नीले, काले वा लाल रंग का प्रतीत होता है, और रोगी शीघ्र होश मे आ जाता है। रोगी कांपता है और उसका अंग २ टूटते है, हृदय मे पीडा होती है, रोगी कमजोर पड जाता है, मुख छाया ( चेहरे की रंगत ) श्याव ( स्याही मायल ) और कुछ २ लाल और निस्तेज ( वेरौनक ) हो जाती है।

## पित्तज मूर्च्छा के लक्षण

पित्त की मूर्च्छा में—जव रोगी को दौरा उठता है तो उसको आंखो के सामने का आकाश लाल, हरे, अथवा पीले रंग का प्रतीत होता है, और जव रोगी को होश आती है तो पसीना ही पसीना होता है, होश वहुत जलदी आ जाती है, रोगी को प्यास अधिक लगती है, दाह अधिक होता है, मुख और नेत्रो की रगत लाल-पीली रहती है, आंखे व्याकुल सी रहती हैं, टट्टी पतली और पीली उतरती है।

## कफ की मूर्च्छा के लक्षण

कफ की मूर्च्छा मे—जव रोगी को वेहोशी का दौरा आने लगता है

तो उसको आखों के सामने का आकाश बादलों से घिरा हुआ प्रतीत होता है, रोगी देर तक वेहोश रहता है, और रोगी का शरीर गीला, भारी और गीले चमडे से लिपटा हुआ प्रतीत होता है। मुंह में थूक अधिक आता है, और उबकाइया भी अधिक आती हैं और आलस्य भी अधिक होता है।

## सन्निपातज मूर्च्छा के लक्षण

सन्निपात की मूर्च्छा मे—तीनो दोषो के लक्षण पाए जाते हैं, जैसे अपस्मार ( मिर्गी ) का दौरा उठता है वैसे ही इसका होता है, परन्तु अपस्मार मे वेहोश होते समय रोगी अनेक प्रकार की वेढंगी चेष्टाएं करता है, मूर्च्छा मे ये चेष्टाएं नहीं होतीं और रोगी वहुत शीघ्र मूर्च्छित हो जाता है।

## रक्तज मूर्च्छा के लक्षणसम्प्राप्ति

पृथ्वी और जल तम के रूप होते हैं, रक्त और गन्ध भी तम के रूप होते हैं, इसलिये रक्त के गन्ध से तमोगुणवाले मनुष्य को मूर्च्छा हो जाती है। अर्थात् कई ऐसे मनुष्य होते हैं जो रक्त अर्थात् खून को देखते ही वेहोश हो जाते हैं, श्वास प्रश्वास भी गूढ अर्थात् नामालूम सा हो जाता है।

## मद्यज मूर्च्छा के लक्षण

मद्य लघु, गुरु, शीघ्रकारी, फैलनेवाला, अङ्गों को ढीला करने वाला, तीक्ष्ण, विकाशी, सूक्ष्म, उष्ण, अवर्णनीय रसवाला होता है, मद्य अधिक पीने से रोगी पृथ्वी पर लोटता है, वकवास करता है, हाथ-पाओ पटकता है, जव तक शराव पचती नहीं तव तक इसी प्रकार की दशा मे पड़ा रहता है, और रोगी के मुह से शराव की गध आती है।

## विषज मूर्च्छा के लक्षण

विष मे भी ऊपर के लघु गुरु आदि दश गुण होते हैं, विष की मूर्च्छा मे रोगी कापता है, सोता रहता है और आंखो के आगे अंधेरा सा रहता है, क्योकि विष कई प्रकार के होते हैं, इसलिये जैसा २ विष होता है वैसा २ उसका भारी वा हलका प्रभाव होता है।

## भ्रम-निद्रा रोग निदान लक्षण

रजोगुण, पित्त और वायु जब अधिक बढ़ जाते है तो भ्रम रोग हो जाता है, इसमे रोगी को चक्कर आते हैं, और प्रत्येक वस्तु घूमती दिखाई देती है।

तमोगुण और श्लेष्मा अर्थात् कफ के अधिक बढ़ जाने से निद्रारोग हो जाता है। इसमे रोगी प्रतिक्षण सोना ही चाहता है।

## अथ मूर्च्छा चिकित्सा

काली मिर्च, खस, बेर की गिरी, नागकेसर सब समान भाग लेकर चूर्ण करे, २-३ माशे शीतल जल अथवा गुलाब केवड़े के अर्क के साथ सायं प्रातः खावे तो सब प्रकार की मूर्च्छा दूर होती है।

### अन्य उपाय

पिप्पलामूल १ माशा, सोठ १ माशा, मुनक्का १ तोला, गिलोय ६ माशे, पोहकर मूल १ माशा, मघ १ माशा, सबको दो छटांक गुलाब-जल मे रगड़ कर पिलाने से मूर्च्छा रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय

सोठ २ माशा, मुनक्का १ तोला, आमले ६ माशा, सब को पीस कर शहद के साथ चाटने मूर्च्छा रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय

शालपर्णी, पृष्टपर्णी, गोखरू, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, सब २ तोले, पानी ३२ तोले, शेष ८ तोले काढ़ा, १ तोला मिश्री और ६ माशा शहद मिला कर पीने से मूर्च्छा रोग दूर होता है।

## मूर्च्छारोग पर पथ्य

अवगाहन ( अर्थात् नदी सरोवर आदि मे नहाना ) मोतियो की मालाएं पहनना, खस आदि के पंखे की हवा, शीतल और सुगंध धारागृह, धूम, अंजन, नस्य, रक्तमोक्षण, सूई चुभोना, वमन, विरेचन, लंघन, भय, क्रोध, मीठी कहानियां, हंसी ठट्ठा, खाने के लिये दूध भात, कालीमिर्च,

मूंग, लाल चावल, चावलों की माड, पुराने जौ, बकरी का दूध, मधु, केला, लाजा, बरफ आदि। मधुर २ गीत, बाजे, रागरंग, अनार, चौलाई, कपूर, चंदनलेप, मिश्री, अन्य सुगन्ध पुष्पों के हार केले की सेज, कई प्रकार के शरबत मूर्च्छा रोग मे पथ्य कहे हैं।

## मूर्च्छा में कुपथ्य

ताबूल ( पान ) शोक, दातुन, धूप मे चलना, विरुद्ध आहार विहार, पसीना लेना, कड़वे और चरपरे पदार्थ सेवन करना, प्यास को रोकना, नीद को रोकना तथा अन्य भी मन को दुःख देने वाली बातो का त्याग कर देना चाहिये।

इति मूर्च्छारोगाधिकार समाप्त।

# अथ मदात्ययरोगाधिकार

जो विष मे अवगुण होते हैं वे ही मद्य अर्थात् शराब मे होते हैं, अधिक शराब पीने से मदात्यय रोग हो जाता है। विष मे नीचे लिखे १० अवगुण होते हैं, १ लघु ( हल्का ) २ रूक्ष ( रूखा ) ३ आशु ( शीघ्रकारी अथवा जल्दी असर करने वाला ) ४ विशद ( शरीर को खोखला करने वला ) ५ व्यवायी ( पहले सारे शरीर मे फैल कर असर करने वाला ) ६ विकाशी ( सन्धियों को ढीला करने वाला ) ७ सूक्ष्म ( शरीर के सूक्ष्म छिद्रो मे प्रवेश करने वाला ) ८ मदावह मदकारक, ९ अग्नि के समान और १० प्राणहर। यह दश गुण या अवगुण विष मे होते हैं और यही मद्य मे भी होते हैं, इसके अतिरिक्त विष और मद्य योगवाही अर्थात् जिस पदार्थ के साथ यह मिल जावेगे वैसा ही इनमे गुण आजायगा, विष के योग आप रसशास्त्र मे देखे, मद्य के योग आप विलायती दवाइयो मे देखे हर प्रकार की औषधियो मे मद्य का अंश अवश्य होता है, दूसरा इसे अमृत भी कहते हैं, अर्थात् विधिपूर्वक इसका सेवन करने से यह अमृत के समान गुण रखता है। अर्थात् शरीर मे बल और स्फूर्ति पैदा करता है, किन्तु जो लोग अपनी शक्ति से अधिक मद्य पीते हैं उनको अन्त मे जाकर मदात्यय रोग हो जाता है।

## मदात्यय लक्षण

रोगी बकवास करे उलटी आवे, बेहोश होजावे । माता, बहिन और स्त्री मे के कुछ भेद नहीं समझना, अपने दिल की गुप्त बातो को प्रकट कर देना है, पागलपन में ही गाता-नाचता और बदतमीजी के काम करता है ।

## मदात्यय की चिकित्सा ( रसरत्नाकर से )

जल ३२ पल और सुगंधवाला १ पल, काढ़ा करे जब आठ पल शेष रहे तो उसे स्वच्छ वस्त्र मे छान कर लाजा के सत्तू और शहद मिला कर चटनी बनाले, इसके चाटने से दाहतृष्णा और मदात्यय रोग दूर होजाता है ।

## अन्य चिकित्सा

सेंधा नमक ४ माशे शराब १६ तोले में मिलाकर पीने से मदात्यय रोग, तृष्णा और दाह दूर होते हैं ।

## अन्य चिकित्सा

दही, मट्ठा, गुड़, शहद, आमले का रस, कांजी, घी, सत्तू इनको शराब के साथ खाये तो मदात्यय रोग दूर होता है ।

## अन्य उपाय

जौ के सत्तू, लाजा के सत्तू, सैंधा नमक, सोंचर नमक, जीरा इन सब को पानी में मिला कर खाने से मदात्यय रोग दूर होता है ।

## अन्य चिकित्सा

चव्य, बिजोरा का छिलका, सांभर नमक, घी मे भुनी हुई हींग, सोंठ, जीरा, इन सब का चूर्ण कर ३ माशे, शराब ५ तोले के साथ पीने से मदात्यय रोग दूर होता है ।

## अन्य उपाय

प्रातःकाल गुड़ के साथ अदरक, अथवा मधु के साथ त्रिफला चूर्ण ३ माशे खाने से मदात्यय, मूर्च्छा, कामला आदि रोग दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय

पेठे का रस १० तोला गुड़ १ तोला मिला कर प्रतिदिन पीने से

मदात्यय रोग दूर होता है, अथवा मिश्री मिलाकर दूध पीने से भी मदात्यय रोग दूर होजाता है।

### अन्य उपाय

धनिया, मुनका, कैंथ फल, अनारदाना, इमली इनका प्रयोग करने से मदात्यय रोग दूर होता है।

### अथ मदात्यय रोग पर पथ्य

वमन, विरेचन, नींद भरकर सोना, लंघन, परिश्रम, पुराने चावल, सट्ठी चावल, जौ, मूंग, उड़द, गेहूं, मटर, अनार, खजूर, फालसा, बिजौरा, अंगूर, नारियल, चौलाई, आमले, पुराना घी, शीतल पवन, कपूर, मोतियों की माला, फूलों के हार, प्रियतम का संग, नरम रेशमी कपड़े, गाना बजाना, चांदनी, धारागृह, (आबशार या फुव्वारे, झरने, प्राचीन काल में गरमी से बचने के लिये राजा महाराजाओं के यहां झरनोंवाले तहखाने बने होते थे) इनके अतिरिक्त अन्य भी जो सुन्दर एवं मन को लुभाने वाली वस्तुएँ हों मदात्यय रोगी के लिये पथ्य कही गई हैं।

### अथ कुपथ्य

पसीना, तीक्ष्ण अञ्जन, हुक्का तम्बाकू, नसवार, दातुन, पान, इनके अतिरिक्त अन्य गरम और तेज चीजें मदात्यय रोगी को कुपथ्य कही हैं।

इति मदात्यय रोगाधिकार समाप्त।

## अथ उन्माद रोगाधिकार

विरुद्ध अन्न जल, अपवित्र भोजन, देवी, देवता, गुरु, द्विज, माता पिता तथा अन्य वृद्ध जनों का निरादर करने से, गुरुओं का धन स्वयं हड़प करने से, एवं अन्य भी इसी प्रकार के उपद्रव एवं नीच कार्य करने से उन्माद ( पागलपन ) रोग हो जाता है।

### उन्माद के भेद

उन्माद सात होते हैं—१ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ रुधिर, ६ विष, एवं ७ शराब अधिक पीने से।

## असाध्य उन्माद के लक्षण

जो पागल हर वक्त नीचे या ऊपर की ओर देखता रहे, जिसका बल और मांस क्षीण हो चुका हो, जिसे रात दिन नींद न आवे, और शरीर मे हर समय दाह रहे ऐसा रोगी अवश्य मर जाता है ।

## वातज उन्माद के लक्षण

जो पागल हर वक्त हंसता रहे, नाचता रहे, गाता रहे, हाथ पाओ या सारे शरीर को एंठना मरोड़ता रहे, रोता रहे, जिसका शरीर रूखा और कठोर पड़ जाय, और शरीर की रंगत काली पड जाय, रोग का दौरा कम होने पर शरीर अत्यन्त कमजोर हो तो वायु का उन्माद जाने ।

## पित्त के उन्माद के लक्षण

कड़वे, चरपरे, खट्टे, दाह पैदा करने वाले, और गरम भोजन करने से, अत्यन्त चिन्ता, और अजीर्ण से पित्त बढ़ जाता है, पित्त के पागल को शीतल जल, शीतल छाया, एवं अन्य शीतल पदार्थों की प्रतिक्षण इच्छा रहती है, हाथ-पाओ, नख, नेत्र, एवं सारे शरीर की रंगत पीली पड़ जाती है, प्यास अधिक लगती है, मुह का स्वाद कडवा, क्रोध अधिक और नींद कम आती है ।

## कफ उन्माद के लक्षण

कफ के पागलपन मे रोगी की पाचन शक्ति बिलकुल कमजोर पड जाती है, स्त्री की इच्छा, एकान्त मे बैठने की इच्छा, नींद अधिक आना, वमन होना, मुंह से लार टपकना। भूख कम लगती है, रोगी बिलकुल कम बोलता है और हाथ, पाओ, मलमूत्र, नेत्र नख की रंगत सफेद पड जाती है।

## त्रिदोषज उन्माद के लक्षण

वात, पित्त, कफ, इन तीनो दोषो के लक्षण इकठे पाए जावे तो सन्निपात का उन्माद जानो, यह सन्निपात असाध्य होता है ।

## शोकज उन्माद के लक्षण

चोर, डाकू, अथवा राजपुरुष ( पुलिस के सिपाही ) तथा अन्य

अधिक शक्तिशाली लोगो के धमकाने से, धन और बंधुओ के नाश होजाने से, स्त्रीवियोग से तथा अन्य इसी प्रकार के कारणो से मन पर एक सख्त चोट पहुंचती है जो मनुष्य पागल बन जाता है, पागल बन कर वह मनुष्य अपने दुःख के अनुसार (अर्थात् यदि स्त्रीवियोग हो तो उसके गीत, यदि धन बंधु नाश होगया हो तो धन बंधुनाश के) गीत अथवा अन्य चित्र विचित्र बातें करता, संज्ञाहीन होकर कभी हंसता है, कभी रोता है और कभी गाता है।

## विषज उन्माद के लक्षण

विष के खाने से जो पागल हो जावे तो उसके नेत्र लाल रहते हैं और वह कभी हंसता है, कभी रोता है, कभी गाता है। चेहरे की रंगत काली सावी पड जाती है, और कभी २ बेहोश हो जाया करता है।

## मद्यज उन्माद के लक्षण

बहुत शराब पीने से मनुष्य पागल हो जाता है तो वह भी कभी हंसता है, रोता है, चिल्लाया करता है, बार २ बेहोश हो जाता है, उसकी चित्तवृत्तिया अतिचञ्चल होजाती है।

## भूतोन्माद के लक्षण

जिस पागल की बाते मनुष्य की समझ मे न आवे, जिसमे अपार बल, वीर्य शक्ति हो, जो अकथनीय ज्ञान-विज्ञान का भण्डार हो, जिसके पागलपन (दौरे) का कोई नियत समय न हो, उसे भूतजन्य उन्माद समझो।

## देवोन्माद के लक्षण

जो बिना भोजन किये ही तृप्त रहे, पवित्र रहे, अत्यन्त सुन्दर पुष्पहार और सुगन्धियुक्त हो, तन्द्रा रहित अर्थात् निद्रालस्यादि दोषो से रहित हो, लगातार संस्कृत बोलने वाला हो, तेजस्वी हो, स्थिर नेत्र अर्थात् बार २ आख न झपके, वर देने वाला हो, ब्राह्मणो मे श्रद्धा रखनेवाला हो ऐसा पागल मनुष्य देवग्रह से पीड़ित होता है।

## दैत्योन्माद के लक्षण

जिसे बहुत पसीना आवे, ब्राह्मण, गुरु और देवताओं की निंदा करने वाला हो, जिसकी आखे टेढी हो, निडर हो, इधर उधर देखने वाला हो, खान पान से जो कभी तृप्त न हो, दुष्ट स्वभाववाला होजावे तो दैत्यग्रह से पीड़ित समझो।

## गन्धर्वोन्माद के लक्षण

सदा प्रसन्न रहनेवाला हो, नदी के किनारे और बागबगीचों मे फिरने वाला हो, स्वेच्छाचारी हो, गाने बजाने मे अधिक प्रेम रखने वाला हो, सुगन्धित पुष्पमालाएं पहनने वाला हो, इत्र, तेल फुलेल लगाने वाला हो, नाचने गाने वाला हो, और जो मीठी हंसी हंसने वाला, और बहुत मधुर बोलनेवाला हो तो गन्धर्वग्रह पीड़ित समझो।

## यक्षोन्माद के लक्षण

जिसकी आंखे लाल हो, बारीक और लाल रंग के कपड़े पहननेवाला हो, गम्भीर हो, जल्दी २ चलने वाला हो, थोड़ा बोलनेवाला हो, सहनशील हो, तेजस्वी हो, वर देनेवाला हो तो यक्षग्रह पीडित जानो।

## पितृ-उन्माद के लक्षण

जो प्रेतो को पिंड देवे, अपसव्य होकर जल भी देवे, शान्त चित्त हो, मास, तिल और खीर गुड़ खाने की इच्छा रखता हो, और पितरो मे श्रद्धा रखने वाला हो तो पितृग्रह पीड़ित जानो।

## नागोन्माद के लक्षण

जो पृथ्वी पर सर्प की तरह रींग कर चलने वाला हो, जो सांप की तरह जीभ निकाल कर होठ चाटता फिरे, अत्यन्त क्रोधी हो, गुड़, शहद खीर खाने की इच्छा रखता हो तो सर्पग्रह पीड़ित पागल जानो।

## राक्षसोन्माद के लक्षण

जो पागल मांस, रक्त और अनेक प्रकार के शराब पीने वाला हो,

निर्लज्ज और अत्यन्त निष्ठुर ( जालिम ) हो, अत्यन्त शूरवीर हो, अत्यन्त क्रोधी और बलवान् हो, रात के समय घूमने वाला हो, और अपवित्र रहने वाला हो तो राक्षसग्रह पीड़ित पागल जानो।

## पिशाचोन्माद के लक्षण

नंगा और हाथ उठाए हुए फिरने वाला हो, बकवास करनेवाला हो, रूखे सूखे शरीर वाला हो, जिसके शरीर से दुर्गन्धि आवे, अपवित्र रहने वाला हो, खाने का लोभी हो, और बहुत खावे, रोता हुआ सुनसान और उजाड स्थानो मे घूमनेवाला हो तो पिशाचग्रह पीड़ित पागल जानो।

## प्रहारोन्माद के लक्षण

जो मनुष्य पर्वत, हाथी, वृक्ष तथा अन्य ऊंचे स्थान से गिरकर पागल होजावे तो उसकी आंखे भारी और अधिकतर खुली रहे, जल्दी २ भागने वाला हो, मुंह की झाग चाटनेवाला हो, जिसे नींद अधिक आती हो, जो गिरता और कांपता हो, वह असाध्य होता है इसे प्रहारोन्माद कहते हैं। इसके अतिरिक्त जो १३ वर्ष तक पागल रहे वह भी असाध्य होता है।

भावार्थ—प्रहारोन्माद का अभिप्राय यह है कि देवादिग्रह तीन कारणों से मनुष्य को पागल करते हैं, १ हिंसा अर्थात् मारने के लिये, विहार के लिये और पूजा के लिये हिंसा के लिये जिस प्राणी को उन्मत्त करते हैं वह कुए मे, तालाब में वा नदी में, अग्नि में कूदकर, अथवा वृक्ष पर्वत, हाथी, ऊंची छत आदि से गिर कर प्राण त्याग देता है और तेरहवें वर्ष जाकर तो सारे पागल असाध्य होजाते हैं।

## देवादिग्रहों के आक्रमण (दौरा) का समय

देवग्रह पौर्णमासी को, असुर सन्ध्याकाल में, गंधर्व अष्टमी को, यक्ष प्रतिपदा को, पितृग्रह अमावस्या को, नागग्रह पञ्चमी को, राक्षसग्रह रात को, और पिशाच ग्रह चतुर्दशी के दिन आक्रमण ( रोगी पर दौरा ) करते हैं, अर्थात् इन ग्रहों से ऐसे समयों में रोगी पर पागलपन का दौरा हो सकता है।

जैसे शीशे में मनुष्य का चेहरा नजर आता है, अथवा शरीर मे वाहर की सरदी गरमी, और सूर्यकान्तमणि ( आतशी शीशे ) मे सूर्य की किरण प्रवेश कर जाती हैं इसी प्रकार देवादि ग्रहो की छाया शरीर मे प्रवेश तो कर जाती है परन्तु वे अत्यन्त सूक्ष्म होने से नजर नहीं आते।

वात पित्तादि दोष और देवादिग्रहो के आवेश से सोलह और चार मदात्यय इस प्रकार से उन्माद रोग ( पागलपन ) वीस प्रकार का होता है।

असल में देवता जिनकी कृपा से मनुष्य भवसागर से तर जाता हो वे कभी मनुष्य को पागल नहीं करते, किन्तु उनके परिचारक अर्थात् गलत उपासना करने से पागल होकर मर चुके हैं उनकी आत्मा अशान्त होकर घूमती रहती हैं। वे आत्मा ऐसे प्राणियो मे जिनके लक्षण पीछे दिये गये हैं प्रवेश करके उनको पागल वना देती हैं।

## उन्माद की चिकित्सा

सफेद सरसों, हरड़, वहेड़ा आमला, सिरस के वीज, करञ्ज के वीज, मालकंगनी, हलदी, दारुहलदी, मघा, कालीमिर्च, सोंठ, वर्च, मजीठ, देवदार, हालो, त्रिवी, हींग, इन सब को वारीक कर वकरी के मूत्र मे पीस कर पीवे तो भूत प्रेत, राक्षस, डाकिनी, शाकिनी, यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र और सब प्रकार के पागलपन दूर होते हैं। चूर्ण की मात्रा १तोला, वकरी का मूत्र ६ तोला।

## अञ्जन

मघा, काली मिर्च, सोठ, कौड, हींग, वर्च, नमक, सिरस के वीज, सफेद सरसों सब को गोमूत्र में पीस कर गोली वनाले और गोमूत्र मे घिस कर नेत्रों मे आंजने से सब प्रकार का उन्माद मिर्गी, चौथिया वुखार तथा प्रलाप मिट जाते हैं।

## धूप

गुग्गुल, हरमल, पिप्पलामूल, और नीला कपड़ा इनको मिलाकर धूनी देने से सब प्रकार के उन्माद दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

गधे की हड्डियो का तेल और मरी हुई छछूंदर सुखा कर पीस कर, दोनो को जुदा २ रखे और समय पर वैद्य दोनो का तिलक लगा कर रोगी के घर जावे तो वैद्य को देखते ही सब भूत प्रेत दूर हो जाते हैं और रोगी स्वस्थ होजाता है।

## अन्य उपाय

काले गधे का मूत्र, और मरी हुई छछूंदर दोनो को पीस कर वैद्य तिलक लगावे तो तिलक देखते ही भूत प्रेत भाग जाते हैं।

## अन्य उपाय

गधे का लिंग आदमी के पेशाब में घिस कर घी मिलाकर नसवार दे तो रोगी की भूत प्रेत बाधाएं दूर होती हैं।

अथवा गधे की इन्द्री अथवा कुत्ते की इन्द्री धूप में सुखा रखे और आदमी के पेशाब में घिस कर नसवार दे तो भूत प्रेत की बाधाए दूर होती हैं।

## अन्य उपाय

नारसिंह मन्त्र से २१ वार रोगी को झाड़ा देने से भूत प्रेत, डाकिनी शाकिनी, जिन्न, मिरगी आदि दूर होते हैं।

अथ नरसिंह मन्त्र—ओ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुबलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेत-पिशाच-शाकिनी-कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषं हन हन विसर विसर चल चल कंप कप मंथ मंथ, हु हुं हुं फट्, हः हः, एहि रुद्राज्ञयेति स्वाहा:"

## रामठाद्यघृत (रसरत्नाकर से)

हींग २० तोले सौंचर नमक २० तोले मर्वा २० तोले, कालीमिर्च २० तोले, सोठ २० तोले, सब को जल में पीसे, फिर ६४ पल (२५६ तोले) गौ का घृत और घृत से चौगुना गोमूत्र इन सब को एक वर्तन मे मिलाकर पकावे जब घी पक जावे तो छान कर रख छोड़े और प्रतिदिन प्रात. सायं रोगी को ६ माशे की मात्रा में खिलाने से भूत, प्रेत, यक्ष, गंधर्व, डाकिनी, शाकिनी, जिन, सब दूर होजाते हैं।

## भूतांकुश रस (रसरत्नाकर से)

शुद्ध पारा, शुद्धगंधक, तमेश्वर, शुद्ध मनसिल, कांतलोह भस्म, स्वर्णभस्म, हीरे की भस्म. शुद्ध हरताल, काला सुरमा, शुद्ध नीलाथोथा। पहले खरल में पारा गंधक की कज्जली करे पीछे अन्य चीजो को मिला कर एक दिन ( घीकुवार मे ) खरल करे फिर दो प्यालियो में बद कर गजपुट में फूंकदे ठंडा होने पर निकाले और पीस कर रख छोड़े, इसमे से एक रत्ती भस्म लेकर अदरक के ६ मासे रस में मिलाकर चाटने से राक्षस, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि सब दूर हो जाते हैं।

### अन्य उपाय

रोगी को बांध रखे, डरावे, धमकावे, साप आदि का भय दिखावे और उसको राजपुरुष ( सिपाही ) के सामने लेजावे। साधारण मारे, पीटे, रोगी के माता पिता, भाई, बंधु की मृत्यु का सम्वाद सुनावे, राजा का भय दिखावे इस प्रकार करने से भूतोन्माद दूर होता है।

### अन्य धूप

गीदड़ के बाल, रीछ के बाल, सलियारा, कचूर, हींग और वर्च सब को बारीक पीस आदमी का पेशाब मिलाकर धूप बनावे इसकी धूनी देने से सब प्रकार के भूत पिशाच जन्य उन्माद दूर होजाते हैं।

इन ऊपर की चीजो की १-१ रत्ति की गोली बनाले और गोमूत्र मे घिस कर आंखों मे आंजने से भी उन्माद दूर होता है।

### अन्य धूप

मोर के पंख, कपास के बीज, सांप की कुंज, जटामांसी, दालचीनी, चीते अथवा हाथी का दांत, बडी कटेरी, कुत्ते का मल, मनुष्य के बाल, धानो के तुप, इन्द्रजौ, हींग, वच, गौ का सींग, छरीला, काली मिर्च, इन सब को कूट शहद मिलाकर धूनी बनावे इसके धुखाने से सब प्रकार के उन्माद भूत, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, पितर, राक्षस, पिशाच, यन्त्र, मन्त्र, जादू, टोना, मिर्गी आदि रोग दूर होते हैं।

## अमरसुन्दरी गोली

हरड, बहेडा, आमला, मघ, मिर्च, सोंठ, रेणुका, चित्रा, पिप्पलामूल दारचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, लोहभस्म, अकरकरा, शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, शुद्ध सिंगिया विष, नागरमोथा, वायविडंग, सब बराबर और सब से दूना गुड ले, पहले पारा गंधक की कज्जली करे फिर अन्य सब वस्तुओं को कूट छान मिलाले और गुड मिला कर चने के बराबर गोली बनाले और रोगी के बलानुसार १-२ गोली जल से दे तो, मिर्गी, पागलपन, सन्निपात, शीतवात, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच आदि के सब रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

वात प्रधान उन्माद हो तो रोगी को स्नेह पान कराना चाहिये, पित्त अधिक हो तो विरेचन देने चाहिये, यदि कफ अधिक हो तो नस्य देनी चाहिये।

## लटपटी और बाहर निकली हुई जिह्वा का उपाय

बड़ी इलायची, मघ, अकरकरा तीनों को तुलसी के रस में पीस कर जिह्वा पर रगडे इससे बाहिर निकली हुई जिह्वा मुख के अंदर चली जाती है। बोलने की और रसज्ञान की शक्ति आजाती है।

## अन्य उपाय

शहद, मघ का चूर्ण, वृद्धि का चूर्ण, और मुनक्का इन सब को मिला-कर जीभ पर मलने से जिह्वा अन्दर चली जाती है।

## उन्माद पर पथ्य

पसीना, वमन, विरेचन, वस्ति, नस्य, ताडन, अञ्जन, त्रास, बांधना, दाग देना, भय दिखाना, शिराबेधन, धूम्रपान नींद देना, स्निग्धशीतलेप, मूंग, गेहू, सठी के चावल, लाल चावल, धारोष्ण दूध, घृत, मक्खन, ब्राह्मी का रस, वर्षा का जल, चौलाई, अंगूर, कटहल, कैंथ, विचित्र बातें, धैर्य दिलासा इत्यादि आहार-विहार उन्माद रोगी को हितकर हैं।

### अथ कुपथ्य

काम, भय, क्रोध, हर्ष से होने वाले उन्माद में अनुकूल क्रिया, अर्थात् कामोन्माद में कामजनक बातें इत्यादि । करेला, पत्रों वाले साग, शराब, टट्टी, पेशाब आदि वेगों का रोकना आदि कुपथ्य हैं, भूतोन्माद में जप, पूजा, बलिदान, पुण्य, तन्त्र मन्त्र चिकित्सा करनी चाहिये ।

इति उन्माद-रोगाधिकार समाप्त ।

## अथ अपस्मार-रोगाधिकार

अपस्मार अर्थात् मृगीरोग चार प्रकार का होता है, १ वात से २ पित्त से ३ कफ से ४ सन्निपात से ।

### अपस्मार के पूर्व रूप

आंखों के आगे अंधेरा आना, दौरा पड़ना, स्मृति का नाश होना, दिल कांपना, अरुचि होना, पसीना आना, ध्यान में मग्न रहना, मूर्च्छा, नींद का न आना, अपस्मार के पूर्व रूप होते हैं ।

### वातज अपस्मार के लक्षण

वायु के अपस्मार में रोगी दौरा पड़ने के समय दान्तों को किटकिटाता है, मुंह में झाग आती है, श्वास रुक जाता है, रोगी कांपता है, सारा शरीर अकड़ जाता है, भवें कुटिल पड़ जाती हैं, आंखें लाल, काली रहती हैं और लाल काली सूरतें भागती हुई प्रतीत होती हैं ।

### पित्तज मृगी के लक्षण

पित्त के अपस्मार में मुंह से पीले झाग निकलते हैं, पीली और लाल सूरतें नज़र आती हैं, मुख, नेत्र और सारा शरीर पीला पड़ जाता है, रोगी को प्यास अधिक लगती है, शरीर उष्ण रहता है, चारों ओर उसे आग की लपटें उठती हुई नज़र आती हैं ।

### कफज अपस्मार के लक्षण

कफ के अपस्मार में—मुंह से श्वेत रंग के झाग निकलते हैं, मुख, नेत्र, और सारा शरीर श्वेत पड़ जाता है, रोगी का शरीर भारी और

शीतल रहता है, वार २ रोमाच होता है, सफेद सूरते नजर आती हैं, और दौरा देर से टूटता है।

## सन्निपातज अपस्मार के लक्षण

जब वात, पित्त कफ तीनो के लक्षण एकत्र मिल जावे तो सन्निपात का अपस्मार जाने, यह असाध्य होता है, क्षीण रोगी का भी असाध्य होता है और पुराना भी असाध्य होता है।

## अन्य असाध्य लक्षण

जो रोगी हर समय कापता रहे, अत्यन्त क्षीण हो गया हो, जिसकी भवें टेढी होगई हो, नेत्र विकृत होगये हो उसे असाध्य जानो। कुपित हुए दोष— १२ दिन १५ दिन और कभी २ एक मास के बाद तथा कभी २ इसके बाद भी दौरा करते हैं। जैसे बरसात के दिनो मे शीतकाल के बीज उत्पन्न नहीं होते और अपना समय ( शीतकाल ) आने पर ही उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार रोग भी अपना समय पूरा होने पर ही दौरा करते हैं।

## पाठान्तर मृगी लक्षण ( रसरत्नाकर से )

चेहरा काला पड जावे, पसीना अधिक आवे, सिर मे कृमि ( जूं लीख आदि ) बहुत बढ़ जावें, जब वे कृमि चलते फिरते रहे तो कुछ आराम जब सारे एक जगह होजावें तो रोगी बेहोश होजाता है, ये लक्षण रसरत्नाकर मे कहे हैं।

## अथ मृगी चिकित्सा वटी ( शार्ङ्गधर से )

मर्वा मिर्चा, सोठ, हरड़, बहेडा, आमला, सैधा नमक, भुनी हुई हींग, कौड, वच, श्वेत सरसो, करञ्जुए की गिरी, निबोली की गिरि, सब को बारीक कर गोमूत्र मे खरल कर ४-४ रत्ति की गोली बनाले १ वा २ गोली प्रतिदिन दोनो समय जल के साथ रोगी को देने से मृगी दूर होती है।

## नसवार ( रसरत्नाकर से )

सफेद कोयल की जड़, भाग के बीज दोनो बराबर पीस आदमी के पेशाब के साथ नसवार देने से मृगी दूर होती है।

## धूप

स्त्री के रज का ( माहवारी खून वाला ) कपडा राई, वच, कुत्ते की विष्ठा, वछनाग विष, हींग, लहसन, गुग्गुल, भैंस की हड्डी सब समान भाग लेकर वारीक कर धूनी देवे तो, उन्माद मृगी आदि रोग दूर हो जाते हैं।

## अन्य नसवार

इन्द्रायण ( कौडतुम्मा ) की जड़ को काजी मे पीस कर नसवार देने से उन्माद, अपस्मार, भूत प्रेत आदि के रोग दूर होते हैं।

## अन्य नसवार

बिलपत्र के रस मे तुम्मे की जड घिस कर नसवार देने से भूत, प्रेत, ग्रह, ज्वर, उन्माद, अपस्मार दूर होते हैं।

## ब्राह्मीवटी

अभ्रक भस्म, रससिंदूर, लोहभस्म, चांदीभस्म, सोनामाखी भस्म, सब बराबर २ ले कमल के केसर ( तरिया ) मे, थोहर के दूध मे, भांग के रस मे, चित्रा, जमीकंद, वच, संभालू, एरण्ड, इनके रस वा काढ़े मे एक २ दिन जुदा २ भावना देकर हलकी सी पुट देवे, फिर निकाल कर पीस थोड़ा मालकंगनी का तैल मिलाकर चूल्हे पर पकावे इसी तरह सरसों का तेल मिला कर एक पहर पकावे। फिर चने बराबर गोली बनाले और और एक २ गोली दशमूल के काढ़े मे ४ रत्ति मघ का चूर्ण मिला कर देने से, उन्माद अपस्मार, प्रलाप आदि क्षण मे दूर होते हैं।

## कल्याणचूर्ण ( वंगसेन से )

हरड़, बहेड़ा, आमला, सैंधानमक, कालीमिर्च, जीरा, पिप्पलामूल, चव्य, चित्रा, सोंठ, अजवायन, कौड, धनिया, बिडनमक, वायविडंग सब समान भाग लेकर चूर्ण कर गरम पानी से खावे तो अपस्मार, वातजग्रहणी, बवासीर आदि सब रोग दूर होते हैं।

## ब्राह्मी काथ ( वैद्यकुतूहल से )

सोंठ, पिप्पलामूल, ब्राह्मी, वच, दारुहलदी, देवदारु, हरड़, पुहकरमूल,

इन्द्रजौ, नागरमोथा, चिरायता, कचूर, सिरस की जड सब को बराबर ले काढा करके पीवे तो उन्माद, अपस्मार, सन्निपात, कफवात ग्रहणी विषूची आदि रोग दूर होते हैं।

## नसवार

काली मिर्चों को २१ दिन तक डडा थोहर मे रखे, पश्चात् निकाल पानी मे रगड कर नसवार दे तो मिरगी दूर होती है।

## अन्य नसवार

समुद्रफल और कंडियारी के फूल शहद मे पीस नसवार लेने से सब प्रकार की मिरगी दूर होती है।

## अन्य नसवार

कीकर की छाल हाथी के पेशाब मे घिस कर नसवार देने से मृगी दूर होती है।

अन्य—हींग, मैनफल दोनो को गधे के पेशाब मे रगड कर नसवार देने से मृगी दूर होती है।

अन्य—समुद्रफल, समुद्रझाग, समुद्रशोष, मुश्ककपूर सबको मिलाकर नसवार लेने से मृगी रोग दूर होता है।

## अन्य उपाय

मृगशिरा नक्षत्र और ऐतवार हो उस दिन शेर की विष्ठा और हड्डी मंगाकर पीस कर मृदग पर लेप कर बजावे, मृदग का शब्द सुनकर मृगी रोग दूर होता है। सारोद्धार मे ऐसे लिखा है।

## अन्य उपाय

समुद्रफल, कालीमिर्च, आक के फल, बदालडोडा, सब को बारीक कर हाथी के पेशाब मे रगड कर नसवार देने से मृगी दूर होती है।

## अन्य उपाय

काली मिर्च को हाथी के पेशाब मे रगड़ कर कपडे पर लेप करे २१ बार, फिर उसमे से थोड़ी टाकी लेकर मृगी वाले रोगी को दौरे के समय

धूनी देवे और थोडी बत्ती बनाकर नाक मे देवे तो सब प्रकार की मृगी दूर हो ।

अन्य—कबूतर की बीठ, सैंधानमक, मैनसिल तीनो को पीस नेत्रो मे आंजने से सब प्रकार के अपस्मार दूर होते हैं ।

नसवार—एक टिड्डी जो आक पर होती है उसे मार उसकी भस्म कर नसवार देने से अपस्मार दूर होता है ।

अन्य—काली मिर्च, आदमी की खोपरी, सट्ठी के चावल तीनो को पीस कर नसवार देने से मृगी रोग दूर होता है ।

अन्य—मिर्च, मघ, सोंठ, वंदालडोडा, सोसन के बीज सब एक २ टंक, सबको हाथी के पेशाब मे २१ बार भावना देकर सात दिन रख छोडे, पश्चात् जब रोगी को मृगी का दौरा पडे तो तत्काल नसवार देवे सब प्रकार की मृगी दूर होती है ।

अन्य—हाथी का मद कालीमिर्च, दोनो को मिलाकर नसवार दे तो मृगी रोग दूर होता है ।

अन्य—दशमूल का काढ़ा मधु डालकर पिलाने से मृगी रोग दूर होता है । अथवा दशमूल का चूर्ण बनाकर शहद से चाटने पर मृगी दूर होती है ।

अन्य—हींग, मिर्च, वच, लहसुन, मुलहट्ठी, सिरस के बीज, इन सब को बकरी के पेशाब मे पीस अंजन करने से मृगी दूर होती है ।

## अपस्मार में पथ्य

वातप्रधान अपस्मार मे वस्ति, पित्तप्रधान मे विरेचन, कफ प्रधान मे वमन, नसवार, धूप, अजन, शिरावेध, दान, बंधन, त्रास, भय, हर्ष, धूमपान, अभ्यग, स्नान, जावित्री, गेहू, चावल, मूंग, पटोल, पेठा, पालक, अनार, दूध, अगूर मीठा, फालसा, सुहाजना, तैल, गधे घोड़े का पेशाब, वर्षा का जल, यह अपस्मार मे पथ्य कहे हैं ।

## कुपथ्य

शोक, चिन्ता, क्रोध, भय, शराब, मांस, अन्य विरोधी अन्न, पान,

गरम पानी, अपवित्र और घृणित वस्तुओ का देखना, पत्तों वाले शाक, कंदूरी, उड़द, अरहर, तथा प्यास नींदआदि वेगो का रोकना, और व्यायाम यह अपस्मार रोगी को त्याग देने चाहिये।

इति अपस्मार रोगाधिकार समाप्त।

# अथ बद्धकोष्ठाधिकार

## बद्धकोष्ठ निदान

वात से, पित्त से, कफ से, वेगो को रोकने से और विरुद्ध अन्न पान करने से बद्धकोष्ठ अर्थात् 'कवज' की बीमारी हो जाती है।

## बद्ध कोष्ठ के लक्षण

पेट मे जब वायु बढ जाता है, तो टट्टी की बार २ हाजत होती है, पर टट्टी आती नही, अन्न पचता नहीं, रात दिन पेट भारी, कब्जी और कभी पेट मे दर्द भी होजाती है इसे बद्धकोष्ठ कहते हैं।

## चिकित्सा ( योगचिन्तामणि से )

हरड़, वहेड़ा, आमला, प्रत्येक ३-३ पल, वावची पांच पल, वावडिंग ४ पल, शुद्ध भिलावे ४ पल, लोहभस्म ४ पल, गुग्गुल १ पल, त्रिवी ४ पल, शिलाजीत एक पल, पोहकरमूल २ तोले, चित्रा २ तोले, सोठ पीपल इन्द्रायण, नागकेसर, नागरमोथा, छोटी इलायची, तेजपत्र प्रत्येक एक २ टंक सब का चूर्ण करे। और सब के बराबर खाड लेकर चाशनी करे, और चूर्ण को चाशनी मे मिला कर ६-६ माशे के लड्डू बनाले, शक्ति के अनुसार एक या दो लड्डू प्रात. सायं दूध या गरम जल के साथ नित्य खाने से कोष्ठवन्ध ( कब्ज ) सीहा, गुल्म, भगन्दर तथा जीभ, कंठ, तालु के रोग दूर होते हैं।

अन्य—मघां, त्रिवी, मिश्री सब को पीस कर शहद मे कोकन वेर के समान गोली बनावे रात को दूध वा गरम जल के साथ खावे तो कब्जदूर हो।

अन्य—सौंफ, जंगहरड, बड़ी हरड़ का छिलका ४-४ तोले, मुनक्का १० तोले, सनाय १० तोले, गुलकन्द ३२ तोले, सब को मिला कर

रख छोड़े, रात को एक तोला दूध वा गरम जल के साथ खावे कब्ज दूर हो ।

अन्य—त्रिकुटा २० माशे, त्रिवि ७ माशे, वंशलोचन ३ माशे, सौंफ १४ माशे, सनाय १४ माशे. सब को मिलाकर ५ माशे रात को गरम जल से खावे तो कब्ज दूर हो ।

पथ्या पथ्य—विष्टम्भी पदार्थ, दही, उडद, मसर तिल, तथा भारी पदार्थ न खावे, कब्जकुशा, दस्तावर और दीपन पदार्थ पथ्य हैं ।

इति सौदामिनी भाषाभाष्ये छर्दि-विपूची-तृष्णा-मुखशोप-दाह-मूर्च्छा-मदात्य-उन्माद-अपस्मार-बद्धकोष्ठचिकित्सा नाम षष्ठोऽध्याय. ।

# अथ सातवां अध्याय

## अथ वातव्याधिरोगाधिकार

श्री गुरु के चरण कमल को नमस्कार कर माता सरस्वती का ध्यान करके श्रीमेघमुनि चौरासी वात रोगो का वर्णन करते हैं ।

### वातरोग निदान

रूखे एवं ठण्डे पदार्थ खाने से, थोड़ा आहार करने से, उपवास करने से, खून निकालने से, रात को जागने से, अत्यन्त व्यायाम करने से, मार्ग शोक, चिन्ता करने से, मर्म स्थान मे चोट लगजाने से वादो के रोग होजाने से, वेगो को रोकने से और धातुक्षय होजाने से, ८० प्रकार के वात रोग होजाते हैं । अथवा ऊंट, हाथी, घोड़ा आदि बलवान् जन्तुओ को रोकने से एवं अपने से बलवान प्राणियो के साथ कुश्ती युद्ध आदि करने से भी वातरोग होजाते हैं ।

### वातरोग के सामान्य लक्षण

ग्रीवा, मस्तक, कान, नाक, आंख दांत, जीभ, कंठ, मुख, पेट, छाती पसली, कमर, नाभि, अंडकोष, गुदा, लिंग, योनि, पीठ, जंघा, घुटने, पाओ अंगुली आदि अंग प्रत्यङ्ग में पीडा होवे, सारा शरीर पीड़ा युक्त होवे तो वायु के रोग समझें, क्यो कि वायु के विना पीड़ा नहीं होती

पित्त के विना शरीर मे दाह नहीं होता और कफ के विना वमन ( उलटी ) नहीं होती।

## असाध्य वातरोग के लक्षण

विसर्प होजावे, सारे शरीर में पीडा हो, तृषा हो, सारा शरीर जकड जावे, अरुचि हो, अग्नि मद पड जावे, शरीर का बल नष्ट होजावे, शरीर कृश होजावे, पक्षाघात ( अधरंग वात ) होजावे, सारे शरीर की चमडी फटने लग जावे, कंप हो, अफारा हो, सारा शरीर सूज जावे, शरीर में सुई चुभाने की सी पीडा होवे, यह सारे लक्षण असाध्य वातरोग के होते हैं।

## पांच वायुओं के लक्षण

१ प्राण, २ उदान, ३ समान, ४ अपान, ५ व्यान शरीर मे ये पाच वायु कहे हैं।

१ प्राणवायु—यह वायु हृदय मे रहता है, हृदय की गति एव श्वास-प्रश्वास की गति इसी प्राणवायु द्वारा होती है, प्राणी श्वास प्रश्वास द्वारा जो वायु खेचते हैं उससे फेफडो मे आने वाला सारे शरीर का अशुद्ध रक्त शुद्ध होजाता है, और शुद्ध होकर फिर शारे शरीर मे सञ्चार करने लग जाता है, यह सब क्रिया प्राणवायु द्वारा होती है, इसी से हम जीवित रह सकते हैं। २ उदान वायु, ३ समानवायु, ४ अपानवायु ये तीनो वायु एक धारा (लाइन) मे रहते हैं। २ उदानवायु का अर्थ ऊपर का वायु, अपान का अर्थ नीचे का वायु और समान का अर्थ दोनो के मध्य रहने वाला वायु, ऐसा समझिए कि मुख से लेकर गुदा तक एक लम्बे मार्ग को महास्रोत कहते हैं, इसके तीन भाग होते हैं, ऊपर का भाग, जो मुख कठ से लेकर आमाशय तक का माना गया है, इसमे उदान वायु रहता है, खाना, पीना, बोलना आदि सब क्रियाए उदान वायु की शक्ति से होती हैं। इसके विकृत होजाने से हिचकी, श्वास, छर्दि आदि रोग होजाते हैं।

३ समानवायु--इसका स्थान नाभि मण्डल है, इसका कार्य है कि पाचक अग्नि को ठीक रख कर आहार को विधिवत् पचाने मे सहायता देना, समान वायु ठीक रहे तो आहार ठीक समय पर पचता है, भूख खूब लगती है और

मल मूत्र भी ठीक समय पर उतरते हैं, अर्थात् समानवायु, के ठीक रहने पर उदान और अपानवायु के कार्य भी ठीक रहते हैं, समानवायु उदान और अपानवायु के मध्य मे रहता है इसीलिये इसे समानवायु कहते हैं। इसके बिगड़ जाने से पाचक अग्नि विकृत होजाती है और आहार ठीक समय पर नहीं पचता। ४ अपानवायु अर्थात् सबसे नीचे का वायु, इसके द्वारा मलमूत्र ठीक समय पर उतरते हैं, इसके बिगड़ जाने से मलाशय एवं मूत्राशय के रोग होजाते हैं। ५ व्यानवायु—यह वायु सारे शरीर मे सञ्चार करता है, पीछे के चार वायु तो शरीर के प्रधान २ स्थानो मे रहते हैं, किन्तु यह वायु सारे शरीर में व्याप्त रहता है, त्वचा, नस-नाडी, एवं अङ्गप्रत्यङ्ग में व्यानवायु की शक्ति विद्यमान है, इसके विकृत होजाने से अगो का सकोच, तोद, स्फुरण, शून्यता आदि वायुरोग होजाते हैं। इस प्रकार यह पाच प्रकार के वायु का सक्षेप से वर्णन कर दिया है।

## वातरोग चिकित्सा

### रसोन पिण्ड

लहसुन साफ किया हुआ ६ तोले, सौंचर नमक, सैंधा नमक, जीरा, हींग, मघ, मिर्च, सोठ, सब एक २ माशा मिला कर ३ माशे दवाई लेकर एरण्ड के काढ़े के साथ अथवा दूध में या दशमूल के काढ़े मे १ तोला एरण्ड तैल मिला कर नित्य प्रति खावे, लकवा, झोला, अपतंत्रक, पक्षाघात, गृध्रसी, उरुस्तभ, कमरदर्द, पेटदर्द, सारे शरीर की पीडा, कृमि तथा सारे शरीर के वातरोग शान्त होते हैं।

अन्य— नित्य प्रति लहसुन को घी मे भूनकर खावे, दूध, घी तथा स्निग्ध आहार करे तो कभी वायुरोग न हो।

अन्य—वच, देवदारु, सोठ, इनका चूर्ण कर गर्म जल से ३ माशे दोनो समय खावे तो हृदय की पीड़ा एवं अन्य वायु के रोग दूर हों।

### कुक्षिवात उपाय

सोठ, चित्रा दोनो का चूर्ण बनाकर ३ माशे गर्म जल से ले तो भी

कुक्षि पीडा ( पेट दर्द ) दूर हो। अथवा इन्द्रजौ ३ माशे गर्म जल से ले तो कुक्षिवायु दूर हो।

## सर्व वात उपाय

सोठ, चित्रा, चव, असगंध, मघ, अजवायन, कलौंजी, पिप्पलामूल, अकरकरा, वावडिग सव समान भाग लेकर सबके बराबर गुड मिलाकर ३-३ माशे की गोली बनाले १-१ गोली गरम जल या दूध के साथ खावे तो ८० प्रकार के वातरोग, शूल रोग, और कृमि रोग दूर होते हैं।

## झोला वायु की चिकित्सा

मज्जफल, वहेडा, मिर्च, वावडिग, सोठ, वच, शुद्ध विष, शुद्ध भिलावे सब बराबर लेकर गोमूत्र मे सात दिन तक खरल करे। और एक २ रत्ति प्रमाण गोली बनाले गरम जल अथवा दशमूल के काथ के साथ खावे तो सब वातरोग दूर हो।

## सर्व वातहर चूर्ण

असगंध, सुगंधवाला, हरड़ वहेडा, आमला, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, गोखरू, छोटीकटेरी, वडी कटेरी, विल छाल, अरणी, स्योनाक, पाढल, गंभारी इनकी छाल, सोठ, लौंग, रासना, नख, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे और ३ माशे गरम जल के साथ प्रातः साय खावे तो सब प्रकार के वातरोग दूर होते हैं।

## सर्व वातहर कल्याण अवलेह

कुठ, जीरा, मघ, हलदी, अजवायन, मुलट्ठी, सेधानमक, काली मिर्च सब को कूट छानले, सब से दुगना घी मिला ले २१ दिन तक ८-९ माशे दोनो समय दूध के साथ खावे तो सब प्रकार के वायु रोग दूर होते हैं।

## उदर पीड़ा पर

१ तोला नीम की छाल पानी मे घिस कर सात दिन पीवे तो पेट, पसली, नाभि और कमर की पीड़ा दूर होती है।

## आकड़ शूल उपाय

सोठचूर्ण ३ माशे १ तोला एरण्ड के तेल के साथ मिलाकर खावे

ऊपर से दशमूल का काढ़ा वा एरण्डमूल का काढ़ा, दूध वा गर्म जल पीवे तो जोड़ों की अकड़न ( एंठन ) और पीड़ा दूर होती है।

## ऊर्ध्व वात का उपाय

तगरमूल को लस्सी के साथ घिसकर सात दिन तक पीवे तो पेट में नीचे ऊपर फिरने वाली वायुपीडा दूर हो।

क्वाथ —असगध, रायसन, शतावरी, रुहेड़े के फूल इन सब का चूर्ण बनाकर एरण्डतैल से मिला कर खावे ऊपर से दूध वा गर्म जल वा काढ़ा पीवे तो सब प्रकार के वातशूल दूर होते हैं।

## कंप वात की चिकित्सा

शुद्ध पारा ८ माशे, शुद्ध हरताल १६ माशे, मनसिल २४ माशे, शुद्ध गन्धक ३२ माशे, पारागंधक की कज्जली कर अन्य वस्तुएं मिला कर खूब बारीक करे सब के बराबर शहद मिला ले और सब को आक के दूध मे मिला कर गज भर कपड़े के एक तरफ लेप कर वत्ती बनाले, और ऊपर धागा लपेट कर किसी तार से लटकादे, फिर उस पर ११। तोले तिल तेल चुवावे नीचे थाली या शीशे का चौड़ा वर्तन रख वत्ती को आग लगादे, थाली मे जो तेल टपके उसे संभाल कर शीशी में भरले, इस तेल को दूध मे मिला कर मालिश करे, और १०—१५ बूंद दूध मे मिला कर दोनों समय रोगी को ३१ दिन तक पिलावे तो कपवाय, सिर, टाग तथा सारे शरीर की पीडा दूर हो।

## पुनः सर्ववात उपाय ( योगशत )

गिलोय, वासा इनका काढ़ा बनाकर उसमें १ तोले अमलतास का गूदा और २ तोले एरण्ड तेल मिलाकर रोगी को पिलादे तो सब वातरोग दूर हो।

## कंपवात पर अवलेह

सोठ, हलदी, भुनी हुई हींग, मिर्च, वच, पोहकर मूल, अजमोद, अजवायन, सौंफ सब सम भाग लेकर चूर्ण करे और ६ माशे चूर्ण दो तोले गाय के घी के साथ मिला कर चाटे तो सब प्रकार के कम्पवात तथा अन्य पीड़ाएं दूर होती हैं।

अन्य—लहसुन आध सेर गुग्गुल भैंसिया शुद्ध आध सेर, गाय का घी आध सेर सब को कूट कर मिट्टी के वर्तन मे डाल मुख बंद कर सात दिन तक धान के ढेर मे रखे, पीछे निकाल कर १—२ माशे गर्म जल दूध वा दशमूल के काढे के साथ खावे तो एक महीने में सब प्रकार के वातरोग वा कंपवात दूर होते हैं।

## रींघनवाय की चिकित्सा

सघ, असगंध, मुसली, सोंठ, सिंघाडे, छुहारे का गूद, बिलगिर, सब सम भाग पीस बराबर खाड मिला कर तोला भर नित्य प्रातः सायं २॥ तोले गायके घी के साथ खावे तो कमरदर्द रींघनवाय, कनपटी की पीडा दूर होवे।

अन्य—१२ तोले आमले आठ पहर तक पानी मे भिगो छोडे प्रातः काल छान कर १४दिन तक पीवे और अलूणी मूग की दाल खावे तो कुबडापन रक्तविकार और संधिवात दूर हो ( यह योग गरमी के मौसिम मे गरमी की प्रकृति वाले मनुष्य को अनुकूल रहता है )।

## सन्धि वात की चोट का इलाज

लहसन, शुद्धपारा, भुनी हुई हींग, मिर्च, मघ, शुद्ध जमालगोटा, शुद्ध नीलाथोथा, शुद्ध मिठातेलिया, नौसादर सब दो २ टंक शुद्ध रत्तिया ७ टंक सब को वारीक कर गीदड के पेशाब मे पीस कर चोट की जगह पर कोसार लेप करे तो सब प्रकार की चोट की दर्द वा सूखो पीड़ा दूर होवे।

अन्य उपाय – सोंठ, १ तोला, एरण्ड बीज की गिरी १ तोला दोनो को वारीक पीस कर गाय के दूध से पिये तो रींघनवाय दूर हो।

अन्य—करञ्जुए की गिरी १ तोला पानी मे पीस टिकिया बनाले और चूल्हे पर सुखाले और गो के घी के साथ खावे तो रींघन दूर हो।

## दशमूल क्वाथ

दशमूल २ तोले पानी ३२ तोला काढा करे आठ तोले रहे छान कर उसमे १ माशा पोहकरमूल का चूर्ण मिला कर पिलावे तो रींघन दूर हो।

अन्य—सोये, मेथे, मालकगनी इनका काढा बनाकर उसमे २ रत्ति भुनी हुई हींग मिला कर पिलावे तो रींघन वात दूर हो।

## रास्नापञ्चक

रायसन, गिलो, देवदारु, सोठ, एरण्ड की जड इन पांच का काढ़ा बनाकर नित्य प्रातः सायं पोवे तो सब वात रोग दूर हो।

## सर्ववातहर वटी

लौंग ४ तोले, सम्भालू की कोपले ८ तोले दोनो को पीसकर पाचर रत्ती की गोली बनाले, इसको गर्म जल के साथ प्रतिदिन खाने से उदरशूल ऊर्ध्वांगवात, एकागवात दूर होते हैं।

## शीतांग गोली, प्रसूत एवं ८० वायु पर

कुचले ८ तोले लेकर भट्टी मे भुनाले, फिर ऊपर से छिलके उतार ले और बीच की गिरी भी निकाल ले और बारीक चूर्ण कर रख ले, उसमे से १ या २ रत्ति लेकर खावे और ऊपर से ५ नग लौंग चबावे, कुछ दिन मे ८० प्रकार के वातरोग दूर होते हैं, तथा सूतिकावाय, शीताङ्गसन्निपात आदि भी दूर होते हैं।

## बाहुपीड़ा पर लेप

सोठ, ब्रह्मी, मघां, अजवायन इन सब को बराबर लेकर गोमूत्र मे पीस कर गर्म २ लेप करे तो बांह की पीड़ा दूर होवे।

## सब वातरोगों पर चूर्ण

बबूल की जड, अजमोद, सोठ, रासना, हाऊवेर, अजवायन, शतावरी विधारा असगंध सब समान भाग ले चूर्ण कर १ तोला दवाई ५ तोले शराब या २ तोला घी मिलाकर खावे वा गरम जल से खावे, अथवा ५ तोले शराब मे मे एक कच्चा अंडा फेट कर दवाई खावे, अथवा घी के साथ दवाई चाटकर ऊपर से गरम पानी पीवे तो सधियों की पीड़ा कंपवाय, गोडे की पीड़ा, रीघनवाय, पेट और हड्डियों की पीड़ा कमरदर्द, प्रसूतरोग, नाड़ी और कज्जा के रोग हृद्रोग, वायगोला तथा सारे शरीर की पीडा दूर होती है।

## अजमोदादि चूर्ण ( वैद्यकुतूहल से )

अजमोद, मिर्च, वावडिङ्ग, मघां, चित्रा, पिप्पलामूल, पुठकंडा, सैधा-

नमक, देवदारु सब २-२ तोले, हरड १० तोले, विधारा २० तोले, सोंठ २० तोले सब का चूर्ण बनाले नित्य १ तोला चूर्ण गर्म जल वा शराव के साथ खाने से सोजा, कमर, गुदा, सन्धिवात को दूर करता है, यह चूर्ण आम पाचन है, कफवात, आमवात, पट्ट (रान) पीठ के शूल, पेट के कीड़े, श्वास, कास, ज्वर, रीघनवाय, तूनी, प्रतितूनी (जो दर्द गुर्दे से उठकर पेशाब की नालियों में होती हुई इन्द्री तक पहुँचे और गुदा तथा इन्द्रिय में चीरने की सी पीडा हो उसे तूनी कहते हैं, जो दर्द इन्द्रिय से शुरू होकर ऊपर को गुर्दे तक उठे उसे प्रतितूनी कहते हैं) मदाग्नि एवं ८० वायु के रोग दूर होते हैं।

## सन्धिवात का उपाय

एरण्ड की जड, देवदारु, गिलो और सोंठ इनका काढा बना कर पीने से सब प्रकार के वायुरोग एव सन्धि पीडा दूर होती है।

अन्य—सौंफ, देवदारु, वच, रायसन, हरड, सोंठ, एरण्ड की जड़, नागरमोथा, पतीस, शतावरी, वासा, गिलोय, धमासा इनका काढा करके खाड मिलाकर पीवे तो सन्धिवात, कंपवात, कफ, अस्थि तथा मज्जा तक के वातरोग दूर होते हैं।

## अन्य (रत्नसारसंग्रह से)

मच, रक्तचन्दन, रायसन, नागरमोथा, सुगंधवाला, असगंध, विधारा, सोंठ, गिलोय, कुठ, जटामांसी, कचूर, देवदारु, कलिहारी, शतावरी, सैंधानमक, मोथां शालपर्णी, सौंफ, मजीठ, काली त्रिवी, इलायची, पाठा, [illegible] इनको पीस कर चूर्ण बनाकर ६ माशे से १ तोला तक घी के साथ अथवा गर्म जल के साथ प्रभातकाल खाने से त्रिकपीड़ा, सन्धिपीड़ा आदि सब प्रकार के वातरोग दूर होते हैं।

## शीर्षवात मरिचादि नस्य

काली मिर्च, सुहाजने के बीज, वायविडिंग, इनको एकत्र पीसकर नसवार बनाओ, इसके लेने से सम्पूर्ण सिरदर्द आदि वायुरोग दूर होते हैं।

## अपतन्त्र वात उपाय

हरड़, रायसन, सैंधानमक, अम्लवेद, वर्च, सरसों इनको दूध में

पीसकर लेप करने से अपतन्त्रक रोग दूर होता है।

### अपतानकवात उपाय ( वंगसेन से )

नागरमोथां, मघां, पतीस, भार्गी, बहेड़ा इनका चूर्ण बनाकर शराब वा गर्म जल के साथ खाने से अपतानक, श्वास, कास, हिचकी आदि रोग दूर होते हैं।

### अंडकोश ( पतालु ) के वात का उपाय

प्रातःकाल शक्ति के अनुसार २-५ तोले तक मीठा तेल पीवे तो अंडकोषो की पीड़ा व अन्य वातरोग दूर होते हैं।

### ऊर्ध्ववात का उपाय

पिप्पलामूल १ भाग, वांसापत्र २ भाग और तिल ४ भाग इनको पीस कर दूध के साथ पीवे तो सम्पूर्ण ऊर्ध्ववात दूर हो।

### सुप्तिवात का उपाय

सुप्तिवात अर्थात् शरीर का कोई भाग सो जावे, वहां पर स्पर्श मालूम न हो उसे सुप्तिवात कहते हैं—सुप्तिवात मे जो अंग सो गया हो वहा पच्छने या जोके लगा के लहू निकाले, ऐसा करने से वहा जमा हुआ काला खून निकल जायगा और नया खून आजायगा, और सारे शरीर मे नये खून का दौरा शुरू हो जायगा, और तेल मे थोड़ा सेधा नमक और घर का धुआ मिला कर पीवे तो सुप्तिवात दूर हो।

### हृदयवात की चिकित्सा

काली मिर्च ७ दाने, सतगिलोय १ माशा गरम जल के साथ खावे तो हृदय का वायु दूर हो।

अथवा गुड, बहेड़ा, असगंध इनको गरम पानी से खावे तो हृदय की पीड़ा दूर हो।

### अर्धाङ्ग वात की चिकित्सा

आक, ध्रेक, सुहांजना, संभालू, एरण्ड, इन सब के पत्ते लेकर रस निकाले और रस के बराबर तिल तेल मिलाकर पकावे जब पानी जल जावे

तो उतार कर छान ले और शीशी मे भर कर रख छोड़ें, इस तेल की मालिश करने से अर्धांगवात ( अधरंग ) और पक्षाघात दूर होवे।

## सब वातरोगों पर महारास्नादि क्काथ ( शार्ङ्गधर से )

रास्ना २ भाग, धमाह, एरण्डजड, ककड़सिंगी, जवाह, देवदारु, कचूर वच, सोठ, वासा, हरड, इटसिट, गिलोय, नागरमोथा, सौंफ, गोखरू, असगंध विधारा, मघ, अम्लतास का गूदा, धनिया, शतावरी, अतीस, पीयावासा, छोटी कटेरी, वडी कटेरी सब एक २ भाग, सब का काढा बना कर उसमे १ माशा सोठ चूर्ण अथवा मवचूर्ण बुरकलें और एरण्डतेल १ तोला मिलाकर योगराज गुग्गुल ४ रत्ति के साथ अथवा ३ माशे अज-मोद चूर्ण के साथ पीवे तो अस्सी प्रकार के वात रोग दूर होते हैं, कप, पक्षाघात, अडवृद्धि, सोजा, फीलपाव टाग, गोड़ा ( घुटना ) की पीडा, वीर्य एवं इन्द्रिय के रोग, झोला, शूल हृद्रोग दूर होते हैं।

## एरण्ड सप्तक ( छाती वात पर )

एरण्ड की गिरी, छोटी कटेरी, वडी कटेरी, पाषाणभेद, गोखरू, बिलछाल इनका काढा करे पश्चात् एक तोले एरण्डतेल, भुनी हुई हींग २ रत्ती, यवक्षार, १ माशा, सौंफ व नमक दो २ माशे मिलाले यदि सारी न मिले तो जितनी मिले मिला कर रोगी को पिलावे, कुच ( छतिया ), लिंग, कमर तथा हृदय की पीड़ा दूर होती है।

## रास्ना सप्तक

रायसन, गोखरू, एरण्ड जड, देवदारु, इटसिट, अमलतास का गूदा पहली पाच चीजो का काढा करके पीछे अमलतास का गूदा उसमे घोल ले फिर उसमे ३ माशे चूर्ण बुरक कर १ महीना भर रोगी को पिलावे तो कमर, पेट, पीठ, टाग आदि पीडा दूर होती है। इसके सेवन से खट्टे, खारे पदार्थ छोड देने चाहिये।

## चौरासी वात की गोली

रायसन, असगंध, विधारा, वर्च, वावडिग, भडिगी, कडियारी के बीज, सम्हालू, सोठ, ककड़ासिंगी, चित्रा, त्रिवी, कलौंजी, मेदा, पिप्पला-

मूल, कुठ, कायफल, सोठ, शतावर, मघपीपर, मिर्च, अकरकरा, अजवायन, तेजफल, कौंच बीज, मालकंगनी, लौंग तमेश्वर सब बराबर २, प्रथम ऊपर की सब दवाइयो को बारीक कपड़छान चूर्ण करले पीछे तमेश्वर मिला कर खूब रगडाई करे और तीन साल का पुराना गुड सब दवाइयो से दुगुना मिलाकर सब की कुटाई करे सब एक जान जब होजावे तो ३-३ माशे की गोलिया बनाले, एक गोली प्रात. और एक रात को रूखी चबा २ कर खावे, माथे की, सिर की और सिर के पिछले भाग की पीडा और कान की पीड़ा दूर हो जाती है, इसी प्रकार हडफूटनी, धनुषवाय, हनुस्तंभ, पीनस, शोपरोग, शरीर का घुटे कसे रहना, पसवाडे, मगज, पसली, फेफड़े, तिली, जिगर आठ किसम के शूल, पेडू का दर्द, नाभी का दर्द, डुढरी निकल आना,, कमर दर्द, पीठ दर्द, पट्ठ, गोडे, कुच की पीड़ा दूर होती है । तथा दिल की कमजोरी, आठो अगो की पीडा, मज्जा की पीडा, अपानवायु की तकलीफ, गुदा, इन्द्री, नल की पीड़ा, प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान इन पाच वायुओ की पीड़ा दूर होती है, हाथ, पाओ आते, अंगूठा, साथल, चपनी की पीड़ा, चुक पड़ जाना, पाओ की गिट्टिया, गर्दन की पीडा, अर्थात् नख से लेकर शिखा तक सम्पूर्ण वायु के विकार दूर होजाते हैं। गुरुगोरखनाथ कहते हैं हे भर्तृराजा! यह दवाई महादेव ने कही है। भगवान् धन्वन्तरि ने सुखसेन और हजरत सुलेमान ने लुकमान को यह योग बताया था ।

## मुख छांई की चिकित्सा

वट के अङ्कुर, कुठ, लोध, मसूर की दाल, मजीठ, हलदी, रक्तचन्दन इन सब को बराबर २ लेकर चूर्ण कर रखे, और रात को सोते समय गाय के दूध मे पीस कर मुंह पर लेप करे और प्रात.काल गरम पानी से मुह धोवे कुछ दिन लगातार ऐसा करने से मुख के व्यंग, छांईं मुहासे दूर होते हैं।

## लकवे का पथ्य

उड़द की पीठी नमक लाल मिर्च, अदरक मसाला मिलाकर मीठे तेल मे वड़े पकावे, और लकवे के रोगी को खाने के लिये दे, और आतशी

शीशे मे रोगी वार २ मुंह देखे और मुंह मे लौंग और जायफल चबाता रहे तो लकवा दूर होजाता है। लकवे के लिये एक खास किसम का शीशा बना होता है, जिसमे मुंह देखने से धीरे २ सीधा हो जाता है।

## अन्य उपाय

जायफल और जावित्री दोनो को गरम पानी मे पीस कर लेप करने से व्यंग और लकवा दूर होता है।

## अन्य उपाय

सेंधा नमक, तिल, काला जीरा सब को दूध के साथ पीस कर कोसा २ मुंह पर लेप करे तो व्यंग दूर होता है।

अन्य—बेर की गुठली की मींग निकाल कर पीस कर शहद के साथ लेप करे, अथवा गुड मिला लेप करे, अथवा मक्खन से लेप करे, तो मुख व्यंग दूर हो जाता हैं।

अन्य—काले तिल, काला जीरा दोनो को बारीक कर खरगोश के खून मे पीस कर लेप करने से व्यंग दूर होता है।

## सर्ववात पर वड़वानल रस

शुद्ध पारा, स्वर्णभस्म, हीराभस्म, ताम्रभस्म, वैक्रान्तभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध हरिताल, खपरियाभस्म, समुद्रझाग, काला सुरमा, पाचो नमक सब बराबर २ लेकर, थूहर के दूध मे खरल करे और टिकिया बनाकर प्यालो मे बद कर गजपुट की आग दे, स्वागशीत होने पर निकाल ले, और बारीक पीस कर रख छोडे, इसमे से दो रत्ति दवाई अदरक के पानी के साथ अथवा पिप्पलामूल के काढे के साथ खावे तो धनुषवाय, कंपवाय, लकवा, दण्डापतानक, तथा अन्य सब प्रकार के वायुरोगो को दूर करता है।

## स्वच्छन्द भैरव रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा, शुद्धगंधक, लोहभस्म, सोनामाखी भस्म, शुद्ध हरिताल, हरड, अरनी, सम्भालू पत्र, शुद्ध मिठातेलिया, सोहागा फूला हुआ, सोठ मरिच, पीपल। प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे और कूटने वाली चीजो का बारीक कपड़छान चूर्ण करे, फिर सबको खरल मे डाल सम्भालू के

रस मे या मुंडी रस मे खरल कर दो २ रत्ती की गोलियां वनाले, और अदरक रस एवं संभालू के रस वा पिप्पलामूल के काढ़े के साथ देने से सब प्रकार के वातरोग, धनुपवाय, पक्षाघात, झोला, कंप, आदि रोग दूर हो।

## वातगजांकुश रस

लोहभस्म, शुद्धगंधक, खर्परभस्म, मरिच, अभ्रकभस्म, शुद्ध मिट्ठा तेलिया, हरताल, स्वर्णमाक्षिकभस्म, रूपामाखी भस्म, इन सब को अरणी के रस मे और मुंडी के क्वाथ मे तीन दिन तक खरल कर दो २ रत्ति की गोली वना कर मुंडी के काढ़े से अथवा अदरक के रस के साथ खावे तो सब प्रकार के वायुरोग दूर हो, जोडो की दर्द, पक्षाघात, धनुषवाय कुब्रडपन, कमर, और इन्द्री की पीड़ा, हनुस्तंभ, सूखा, झोला तथा सात धातुओ के रोग दूर होते हैं।

## आनन्दभैरव रस

शुद्धशिंगरफ, काली मिर्च, मघा, शुद्धमिट्ठा तेलिया, सोहागाफूल, सब वरावर २ लेकर अदरक के रस के साथ खरल करे और एक २ रत्ति की गोलियां वनाले, अदरक के रस के साथ खाने से सब प्रकार के सन्निपात-ज्वर, जोड़ो की पीड़ा, शीतांगसन्निपात, वायु के रोग, कफ के रोग, शूल तथा तंद्रा, मोह, अतिसार आदि रोग दूर होते हैं।

## गठियावात की चिकित्सा

सोठ, मवां, हलदी, एरण्ड की जड, एलुआ, सबको वारीक कर गोमूत्र मे पीस एरण्ड का तेल मिला कर कोसा २ लेप करे ऊपर से एरण्ड का पत्ता वांधे तो जोड़ो की पीड़ा तथा वात की पीड़ा दूर होती है।

अन्य उपाय—कुचला दो सिरसाही भर, काली मिर्च एक सिरसाही दोनो को वारीक कर अदरक के रस मे खरल कर एक २ रत्ति की गोली वनावे तो इसकी १ या २ गोली गरम जल वा सोठ के काढ़े के साथ खाने से वातपीडा दूर हो, शीताङ्ग सन्निपात, गठिया झोला आदि वायुरोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( झोले का )

मीठा तेलिया ४ तोले, कौड, जायफल, कुचला, मालकंगनी, शतावरी सब चार २ तोले, सबको कूटकर धतूरे के रस मे रात भर तर कर छोड़े, प्रातःकाल ८० तोले तिल तेल लेकर कडाही मे डाल पकावे, जब पकते २ तेल की झाग बैठ जावे और सब वस्तुएं जल जावें तो तेल को छान कर रख छोड़े और उसकी मालिश करने से गठिया, झोला, प्रसूतज्वर, लकवा, ८० प्रकार के वायुरोग दूर होते हैं।

## टांग और बांह की पीड़ा का उपाय (दूध)

दूध ७२ तोले, उडद की धोई हुई दाल १० तोले, दोनो को खीर की तरह पकाओ और मीठा मिला कर खाओ, इस प्रकार सात दिन खाने से बाह तथा टाग की पीडा दूर होती है तथा अन्य वातरोग भी दूर होते है।

## झोले की औषध

मघ, हरमल, अकरकरा, अजवायन, गिलोय, असगंध, मालकंगुनी, हलदी, आमले, लौंग, कलौंजी, सब दवाइया बराबर लेकर सबके बराबर गुड लेकर ३-३ माशे की गोली बनाले, एक गोली गरम पानी के साथ खाने से झोला, कम्पवायु, धनुषवाय, दण्डक रोग, मुख, हाथ, पांओ और टाग का वायु दूर होता है।

## गठिया का उपाय

विधारा, असगध, दोनो समान भाग कूटकर चूर्ण करले, नित्य ६ माशे गरम २ दूध के साथ खावे तो गठिया दूर हो।

## अर्दित ( लकवा ) का उपाय

८ तोले लहसन को कूट कर काढ़ा करे, उसमे तिल तेल मिला कर प्रातःकाल पीने से अर्दित अर्थात् लकवा दूर हो।

## प्रसूत वाय का उपाय ( चटनी )

लौंग २ तोले, मघ ४ तोले, बडी इलायची ६ तोले, मुनक्का ८ तोले, चिरायता ३ तोले, खांड ८ तोले, शहद २० तोले सब चीजो को कूट कर

शहद मे मिलाकर चटनी बनावे, ३-३ माशे दिन रात मे ३-४ वार चाटने से प्रसूतज्वर, सरदी, वादी दूर होती है, भूख अधिक लगती है वायु के रोग दूर होते हैं।

## अन्य ( लाल घासा )

लौंग, पान, शिगरफ, केसर, जायफल, दालचीनी, मिर्च, मिट्टा तेलिया, मघा, अकरकरा, चोवचीनी, जावित्री, पिप्पलामूल, चित्रा, सब समान लेकर कूट छानकर लोहे की कड़ाही मे डाल लोहे के डंडे के साथ पाच दिन तक रगड़े, पश्चात् इसमे से ५ रत्ति दवाई पान के साथ खाने से वात, भोला, सन्निपात, प्रसूत आदि रोग दूर होते हैं, भूख लगती है, रुचि बढ़ती है।

## अन्य प्रसूत वाय पर

मघ, मिर्च, सोठ, पिप्पलामूल, वच, चित्रा, देवदारु, हलदी, जीरा, सेंधा नमक, सामुद्र नमक, विड नमक, हाऊवेर, यवक्षार, इन सब का चूर्ण बना कर गरम पानी के साथ खावे तो प्रासूतवायु दूर हो।

## अन्य उपाय

महत्पञ्चमूल का काढ़ा बनावे और लोहे का टुकडा गरम २ उसमे बुझावे इसके पीने से प्रसूत रोग मिट जाता है जैसे राम नाम से पाप मिट जाते हैं।

## प्रसूतवात के असाध्य लक्षण

अंगमर्द ज्वर, कंप तृषा, अगो का भारी रहना, अतिसार, खासी, सोजा, दर्द, यह प्रसूतवायु के लक्षण होते हैं। शोथ, शूल, अतिसार, ज्वर, कमजोरी, तन्द्रा, अरुचि, प्रसेक, अफारा और भ्रम यह प्रसूति ज्वर के उपद्रव होते हैं।

## प्रसूत वाय के उपाय

शुद्ध पारा १ तोला, ताम्रभस्म १ तोला, शुद्धगंधक १ तोला, मघ, मिर्च, सोठ १-१ तोला, कुठ, चित्रक १-१ तोला, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे कलिहारी के रस मे घोटकर १-१ रत्ति के समान गोली बनाले गुड, शहद, वा घी के साथ खावे तो प्रसूतिरोग दूर हो।

अन्य—गरम पानी मे सात बार जलता हुआ लोहा बुझावे और रोगिणी को पिलावे तो प्रसूतिज्वर दूर हो।

### अन्य उपाय

देवदारु, वच, कुठ, सोंठ, मघ, कायफल, नागरमोथा, चिरायता, कौड, हरड, धनिया, गजपीपल, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, गोखरू, धमांह, गिलोय, कालाजीरा, अतीस, वंशलोचन, ककडासिंगी, इन का काढ़ा बनाकर दो रत्ति हींग और दो माशा सैंधा नमक मिलाकर पिलाने से सूतिकाज्वर शूल, श्वास, मोह, कप, मूर्च्छा, प्यास, दाह, सन्निपात, अंगस्फुरण, भ्रमरोग, गौरव, ८० वायु रोग तथा सिरदर्द आदि विकार दूर होते हैं।

### पञ्चजीरक मोदक

जीरा, हाऊबेर, धनिया, सौंफ, कच्चे बेर, बहेडा, चित्रा, हींगुपत्री, मघा, अजवायन, मैनफल, बासा, पिप्पलामूल, अजमोद सब एक २ तोला, चित्रा ४ तोले, सोंठ, कुठ, अजवायन, कसेरु यह चार द्रव्य १६-१६ तोले, गुड़ २८ तोले, गाय का घी ६४ तोले, दूध १२८ तोले, पहले दूध का खोवा करले, पश्चात् अन्य वस्तुओ का चूर्ण और गुड बारीक करके उसमे मिलाले और घी मे भून कर १-१ तोले के लड्डू बनाले, और प्रात सायं एक २ लड्डू नित्य खावे तो प्रसूतज्वर, कास, श्वास, ज्वर, क्षय, योनिदोष, हलीमक, पाडु और ८० वात रोग दूर होते हैं।

### भैरवरस ( धन्वन्तरि प्रोक्त )

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक ( कज्जली ), कुठ, मघ, मिर्चे, सब समान भाग लेकर अदरक के रस मे खरल कर चने प्रमाण गोली करे, इसके सेवन से अस्सी वायुरोग, एवं शीतांग, पक्षाघात, ज्वर आदि रोग दूर होते हैं

### अन्य वात रोग में पथ्य

शरीर पर मालिश करना, वस्ति, पसीना, धूप तापना, अवगाहन ( एक चौड़े टब मे वातहर दवाइयो का काढ़ा डाल उसमे रोगी को बिठाना अवगाहन होता है) मुट्ठी चापी करना, संतर्पण, स्नान, बलदायक औषधियां, उष्ण और भारी वस्त्र, आग तापना, गरम सेक, या टकोर करना, शिरोवस्ति,

नसवार, मीठे तेल की मालिश, घी, तेल, चरबी, मज्जा, लवणयुक्त मांसरस, मक्खन, दही, पनीर, खोया, रसगुल्ला, तिल, गेहू, शहद, सट्ठी के चावल, कुलथी, बैंगन, लसन, अनारदाना, पका हुआ ताड़फल, आम, सुहांजना, छुहारा, दूध, पिट्ठी के बने हुए पदार्थ, एरण्डतेल, गोमूत्र, ताम्बूल (पान) जंभीर, बेर, फालसा, मुनक्का-अंगूर, मोठ आदि, तथा अन्य स्निग्ध और उष्ण पदार्थ भोजन के लिये, गरम २ लेप, पंडोलपत्र, गरम जल आदि प्रक्रियाएं वातव्याधि में पथ्य कही हैं।

## वात व्याधि में कुपथ्य

मलमूत्र आदि वेगो का रोकना, रात को जागना, उलटी, चिन्ता, शोक, जंगली अनाज, ( कंगुनी, चीना, मटर, चना, सुआंक, राजमांह, मूंग, नदी और तालाब का पानी, करीर, शहद, कसैले, कड़वे, चरपरे पदार्थ, मैथुन, हाथी, घोडे पालकी की सवारी, जामन, कसेरु, खस, सुपारी, कमलनाल विष में सौवीर, ठण्डाजल, विरुद्ध अन्नपान, सूखा मांस, अफारा और ( अर्दित रोगी को ठण्डे जल से खास परहेज करना चाहिये ) व्यायाम, ठण्डे शाक, दातुन करना, तथा अन्य भी विरुद्ध शीत रूक्ष पदार्थ कुपथ्य हैं।

इति वातरोगाधिकार समाप्त।

---

# अथ वातरक्तरोगाधिकार

## वातरक्त निदान

अत्यन्त नमकीन, खट्टे, खारे, स्निग्ध और गरम भोजन करने से, अजीर्ण भोजन करने से, जलचर एवं आनूप प्राणियो के गले सड़े वा सूखे मांस, तिलकुट, मूली, कुलथी, उड़द, मटर, शाक, मांस, गुड, शक्कर, दही, कांजी, सौवीर, सिरका, शराब, आसन इनका अत्यधिक सेवन करने से, विरुद्ध भोजन, अध्यशन ( खाए पर खाना ) क्रोध, अधिक सोने और अधिक जागने से, प्रायः मिथ्या आहार विहार करने वाले कोमल स्वभाव वाले, मोटे एवं आरामतलब मनुष्यो को वातरक्त का प्रकोप हो जाता है।

## वातरक्त सम्प्राप्ति

हाथी, घोडे, ऊंट आदि की सवारी करने से और साथ ही अत्यन्त रूक्ष एवं अन्य वातकारक आहार व्यवहार से शरीरगत वायु तथा अत्यन्त उष्ण, तीक्ष्ण, खारे, खट्टे, और विदाही पदार्थों के खाने से, अधिक धूप एव अग्नि तापने से शरीरगत रक्त जब उबाल खा जाता है तो उबला हुआ रक्त उस वायु के मार्गों को रोक लेता है, रुका हुआ दुष्ट वायु बढे हुए दुष्ट रक्त के साथ मिलकर जब किसी अंग द्वारा बाहिर फूट आता है तो उस रोग को वातरक्त कहते हैं। विशेषकर शाखाओं मे इस रोग का प्रभाव होता है, अर्थात् हाथ की उगलियो से कुहनी तक पाओ की उगलियो से घुटनो तक रक्त के चट्टे पड जाते हैं।

## वातरक्त लक्षण

क्रुद्ध वायु, और रक्त से पहले हाथ पाओ में लाल २ चट्टे, दाग और फोडे उत्पन्न हो जाते हैं जो पक कर फूट भी जाया करते हैं, और फिर धीरे २ विष की तरह सारे शरीर मे फैल जाते हैं, छूने से अत्यन्त कष्ट होता है, सुई समान चुभके पडती हैं, हाथ पाओ वा शरीर शिथिल और सूना पड जाता है, यदि मनुष्य की प्रकृति पित्त प्रधान हो तो अत्यन्त दाह होता है, और यदि कफ प्रधान हो तो उसमे खारिश अधिक होती है।

## वातरक्त चिकित्सा

गिलोय वातरक्त की खास दवाई है, इस लिये रोगी को नित्यप्रति प्रातः साय ४ माशे गिलोय का चूर्ण, वा १-१ माशा गिलोय का सत्व अथवा काढा पिलाना चाहिये इससे, वातरक्त शान्त हो जाता है।

## अन्य काढ़ा

गिलोय, धनियां, सोठ सब ८—८ माशा लेकर काढा बना कर पीवे तो वातरक्त दूर होता है।

## अन्य काढ़ा

हरड, बहेडा, आमला, नीम, मंजीठ, दारुहलदी, बच, कौड़, तुम्मे की जड़, सब ३-३ माशे लेकर काढ़ा करे, इसके पीने से १४ दिन मे वातरक्त

शान्त हो जाता है परन्तु खट्टे, खारे, गरम तीक्ष्ण पदार्थ न खावे।

## अन्य चूर्ण

मुलट्ठी, वासापत्र, राल, सारिवा, इनका चूर्ण बनाले, ६ मारो चूर्ण २॥ तोले एरण्डतेल और पाव भर दूध मिलाकर पीवे तो वातरक्त दूर हो।

## योगसारामृत

शतावरी, देवदारु, गिलोय, एरण्ड की जड, असगंध, कुलंजन, इटसिट, मघ, सोंठ, पिप्पलामूल, चिरायता, सब दो २ पल, सबसे आधी खाड। दालचीनी, इलायची, तेजपत्र मिलाकर १ पल, शुद्ध गोघृत १ सेर, कूटने वाली वस्तुओं का वारीक चूर्ण करले, पश्चात् घी खाड सब मिलाकर रख छोड़े, इसमे से बल के अनुसार एक वा दो तोले प्रतिदिन प्रातःकाल गिलोय के काढ़े के साथ खाने से सब प्रकार का वातरक्त, कोढ, खुजली, आदि रक्त-विकार दूर होते हैं।

## लघुमञ्जिष्ठादि क्वाथ

मजीठ, हरड़, बहेडा, आमला, कौड, वच, दारुहलदी, गिलोय, नीम की छाल, देवदारु, इनका काढ़ा बनाकर पीने से वातरक्त, मंडल, कोढ़, आतशक एवं अन्य रक्तविकार दूर होते हैं।

## वृद्धमञ्जिष्ठादि क्वाथ

मजीठ, मोथा, गिलोय, हलदी, दारहलदी, सोंठ, निम्ब, हरड़, बहेडा, आमला, कुठ, भडिगी, मूर्वा, त्रिवि, वासा, इन्द्रजौ, मघ, चित्रा, विडंग, कौड़, बीजक, शतावरी, त्रामाणा, कुडा की छाल, भागरा, विधारा, चन्दन, वावची, अनंतमूल, पाठा ( जलजमनी ), खैर, वरना, चिरायता, अमलतास, सिहोड़ा, वकायन, करंजुआ, अतीस, सुगधवाला, इन्द्रायण, कृष्णासारिवा, धमाहा, पापडा, कंटकारी, इन सब को बराबर लेकर काढा करे और चार रत्ति शुद्ध गुग्गुल और २ रत्ति मघचूर्ण मिलाकर पिलाने से ८ कुष्ठ, वात-रक्त, उपदंश, श्लीपद, शरीर का सोजाना, पक्षाघात, चरबी के रोग, और आखो के रोग दूर होते हैं।

नोट—१ जहां काढ़े के द्रव्य बहुत हो वहा सब द्रव्य ३-३ मारो

लेकर आठगुना वा सोलहगुना जल मे काढ़ा करे चतुर्थांश शेष रहने पर उतार छानले और अपने पीने योग्य ८-१० तोले या इससे कम ज्यादह निकाल पीले, बाकी छोडदे। आजकल यह भी तरीका वरता जाता है कि काढ़ो की सब दवाइया इकट्ठी करके अधिक मात्रा मे कूट कर रख छोडते हैं, आवश्यकता पर उसमे से दो तोले लेकर काढ़ा बना रोगी को पिला दिया जाता है, और यह तरीका बहुत अच्छा है क्योकि इससे दवाई फिजूल नहीं जाती।

२—जहां द्रव्यो का मान न लिखा हो वहां सब द्रव्य बराबर ले जहा कोई द्रव्य दो बार लिखा गया हो वह दुगना लेना चाहिये।

## रक्तमण्डल पर लेप

पवाड़ के बीज, बावची, सोनामाखी अथवा स्वर्णचीरी अर्थात् चोक, रत्तियां सब बराबर ले बकरी के मूत्र मे पीस लेप करने से मण्डलकुष्ठ वातरक्त आदि रोग दूर होते हैं।

## सुन्न बहरी का लेप ( अगद काल ज्ञान से )

चोक ५ टंक, सज्जी खार ५ टंक, सुहागा खील दो टंक, पारा चार टंक, नौसादर चार टंक, गंधक दो टक, नीला थोथा दो टंक, खपरिया दो टंक, प्रथम पारा गंधक को खरल मे डाल कज्जली करें, फिर अन्य चीजे बारीक कर मिलाले और धतूरे के पत्तो के रस मे खरल कर दो २ रत्ति की गोलियां बनाले, और सुनबहरी पर पछने लगाकर गोली को आदमी के पेशाब मे घिस कर लगावें पीछे से उस सारे अग पर लेप करदें, इससे सुनबहरी ( अर्थात् किसी अंग का सुन्न होजाना ) दूर होती है।

## अन्य उपाय

चोक एक सेर (८० तोले) भर, लस्सी का घड़ा भर कर उसमे डालदे, जब लस्सी सूख जावे तो गौ के दूध से घड़ा भर उसमे डालदे, जब दूध भी सूख जावे तो चोक निकाल कर पानी से धोकर सुखाले, फिर कूट कपड़छान करउ समे से चार तोले ले और ६ माशे शुद्ध पारा, ६ माशे शुद्ध गंधक, हलदी दो तोले, मिर्च १ तोला, प्रथम पारा-गंधक की कज्जली करे, फिर अन्य सब

दवाइयां मिलाकर खूब खरल करे, और संभाल कर रख छोड़े, इसमे से एक या दो माशे प्रतिदिन प्रातः सायं जल के साथ २१ दिन तक खावे तो सुनबहरी दूर होवे, पथ्य—अलूनी बेसनी रोटी, चने के अलूने यूष के साथ, इससे श्लीपद ( फीलपाओ ) चम्बल, रक्तपित्त, वातरक्त, उपदंश, फिरग आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय कुष्ठारि

गंधक आमलासार ४ छटांक, घी १ छटांक, दूध एक सेर, कड़छे मे घी और गंधक डालकर आग पर रखें, जब गंधक पिघल जावे तो दूध मे छोड़ देवे, कुछ क्षण बाद गंधक दूध के तले जम जायगा, गंधक को निकाल नया दूध और घी ले फिर इसी तरह करे, तीन वार इस प्रकार करने से गंधक शुद्ध होजाता है, यह गंधक १२ तोले पीसले, फिर ३० पल बावची ले सात दिन तक गोमूत्र मे भिगो छोड़े, पीछे से उसका छिलका उतार कर बारीक चूर्ण करले, और दोनो को मिलाकर बारीक खरल करें इस दवाई को प्रतिदिन ६ माशे से १ तोला तक शहद के साथ ४६ दिन तक प्रातःसायं खावे तो सुनबहरी, रक्तमण्डल, वातरक्त, कुष्ट, उपदंश आदि रोग दूर होते हैं।

पथ्य—अलूनी वेसन की रोटी, अलूने चने का यूष, घी मिला कर खाने को दे। यह सिद्ध योग है, इससे अवश्य फायदा होता है।

## वातरक्त में पथ्य

वातरक्त दो प्रकार का होता है, १ उत्तान अर्थात् त्वचा और रक्त मे, २ गंभीर, मांस मेद आदि मे। सो इसमे वार २ रक्त निकाला चाहिये। परिषेक, अभ्यंग, पुलटिस, लेप, अनुवासनवस्ति, निरूहणवस्ति, स्नेहपान, विरेचन, भेड़ या भैंस के दूध का तरेड़ा देना, सूई, जोक, सिंगी, तुम्बी आदि से रक्त निकालना। जौ, सट्ठी के चावल, काले चावल, लाल चावल, जंगली धान, चना, मूंग, गेहूं, मोठ, वकरी का दूध, घी, करेला, पालक, चौलाई, खांड, वासा, मुनक्का, अगूर और भी रक्त सुखाने अर्थात् शांत करने वाले द्रव्य पथ्य कहे हैं।

### वातरक्त में कुपथ्य

दिन को सोना, धूप या अग्नि तापना, व्यायाम, मैथुन, मीठा, कुलथी, मटर और खारे पदार्थ, गन्ना, मूली, तिलकुट, खट्टे पदार्थ, गरम पदार्थ, भारी, नमकीन पदार्थ, सत्तू, मास, तथा अन्य विरुद्ध पदार्थ नहीं खाने चाहिये।

इति वातरक्त रोगाधिकार समाप्त।

## अथ उरुस्तंभरोगाधिकार

### उरुस्तंभ निदान

अत्यन्त गरम, ठण्डे, चिकने, भारी, पतले, रूखे, पदार्थों के अति-सेवन से भोजन के ठीक परिपाक न होने से, क्षोभ से, अत्यन्त सोने से, और बहुत जागने से शरीर मे जब आम दोष बढ जाता है, तो वायु कुपित होकर कफ और मेद के साथ मिल कर उस आम विकार को ऊरु अर्थात् पट्ट या साथल मे जमा कर देता है, तो कमर से लेकर घुटनो तक का भाग जकडा जाता है हिलजुल नही सकता, पट भारी जकड़े हुए, चेतनारहित मानो किसी दूसरे के हों और उनमें पीडा अधिक होती है, इस रोग मे अंगमर्द, ज्वर, तन्द्रा अरुचि, स्तैमित्य अर्थात् शरीर गीले कपडे से ढका हुआ सा प्रतीत होता है, तथा पाओ सो जाते है, बड़ी कठिनता से हिलाए डुलाए जा सकते हैं, ऐसे रोग को उरुस्तम्भ या आढ्यवात कहते हैं।

### उरुस्तंभ की चिकित्सा ( वैद्यजीवन से )

इटसिट, सोंठ, गिलोय, देवदारु, भिलावे शुद्ध, दशमूल, इन सब का काढ़ा बनाकर पीने से उरुस्तम्भ दूर होता है।

### अन्य उपाय

शुद्ध गूगल १ माशे, ८ तोले गोमूत्र के साथ प्रतिदिन खाने से उरुस्तंभ दूर होता है।

### अन्य उपाय ( वंगसेन से )

मघ, शुद्ध भिलावे, पिप्पलामूल, इनका काढ़ा बनाकर शहद मिला

कर पीने से सात दिन में उरुस्तम्भ दूर हो होता है।

### अन्य उपाय

चव, शुद्ध मिलावे, चित्रा सब बराबर ले पीस ६ माशे, तोला भर शहद मिला कर खाने से उरुस्तंभ दूर होता है।

### अन्य उपाय ( वंगसेन से )

हरड़, बहेडा, आमला, पिप्पलामूल, चव, इनका चूर्ण कर शहद के साथ चाटने से उरुस्तंभ दूर होता है।

### अन्य उपाय

हरड़, बहेड़ा, आमला, चव, पिप्पलामूल, कोंड इनका चूर्ण बना शहद के साथ चाटने से उरुस्तंभ दूर होता है।

### अन्य उपाय

शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गुग्गुल, मव, सोंठ, इनको बराबर कूट कर १ माशा भर दशमूल के काढ़े से पीवे तो उरुस्तभ दूर हो।

### वर्धमान पिप्पली ( वंगसेन से )

पहले दिन ३, दूसरे दिन ५, तीसरे ७, चौथे १०, पांचवे ७ छठे ५, और सातवें फिर ३, मर्चे गुड़ और शहद के साथ खावे तो और ऊपर से बकरी का दूध पीवे, इस तरह छोड़ २ कर एक हजार मर्चे खावे तो यह रसायन सब रक्तविकारो को, उरुस्तंभ को, विषमज्वरों को, कास, श्वास, गलग्रह, राजयक्ष्मा, शोथ, पाण्डु, वमन, प्रमेह, ववासीर, तिली, अरुचि, आदि रोगों को दूर करता है।

### लेप

नीम की जड़ की छाल, असगंध की जड़, आक की जड़, देवदार, सरसों, वरमी की मिट्टी, सब को बारीक कर शहद में मिलाकर लेप करने से उरुस्तंभ रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय

शुद्ध भिलावे, पिप्पलामूल, मघ, इनका कल्क बना कर शहद के साथ खावे तो उरुस्तंभ दूर होता है।

## उरुस्तंभ में पथ्य

रूखा पसीना, लाल चावल, जौ, कुलथी, कोदो, सवाक, सुहांजना, लहसन, बैंगन, तिलकुट, करेला, गोमूत्र, पालक, तथा स्नान, गरम जल, खारे पदार्थ यह सब पथ्य है, इनके अतिरिक्त आम और कफ को दूर करने वाले उपाय भी हितकर होते है।

## कुपथ्य

शीतल, तथा भारी, चिकने भोजन, वमन, विरेचन, स्नेहन, रक्तमोक्षण, वस्ति, उडद, मास तथा अन्य भी विरुद्ध आहार विहार उरुस्तंभ रोगी को छोड़ देने चाहिये।

नोट—उरुस्तंभ मे कभी स्निग्ध चिकित्सा नही करनी चाहिये, अर्थात् वातव्याधि या आमवात की तरह उसमे गरम तेलो की मालिश न करे, बल्कि रूखे पदार्थों से उसे पसीना आदि देवे, सब से अच्छी चिकित्सा तो यह है कि रोगी को नदी पर ले जावे वहा उसे तैरावे, इस तरह नदी मे तैरने से कमर एवं टागे खुल जाती हैं और रोगी स्वस्थ हो जाता है। जो लोग गलती से इसमे घी तेल पिलाते हैं अथवा मालिश कराते हैं वे भूल करते हैं, इससे रोग बढ़ता जाता है।

इति उरुस्तम्भ रोगाधिकार समाप्त।

# अथ आमवातरोगाधिकार

## आमवात निदान

अत्यन्त स्निग्ध शीतल एवं विरुद्ध आहार ( जैसे दूध मछली, दूध मूली, आदि विरोधी पदार्थों को इकट्ठे खाना ) करने वाले, मंद अग्नि वाले, व्यायाम करके मिथ्या आहार विहार करने वाले, अथवा ठीक रीति से व्यायाम न करने वाले, एवं एक स्थान पर निश्चल होकर बैठे रहने वाले, माष, दही, गुड, मांस आदि का अधिक प्रयोग करने वाले, मनुष्य का आमरस (कच्ची बलगम) कुपित वायु द्वारा कफ के स्थान अर्थात् संधियो मे जमा हो जाता है, इससे जोड सूज जाते हैं, और जोडो मे पीड़ा अधिक हो जाती है। इसे आमवात या गठिया कहते हैं।

## आमवात लक्षण

शरीर टूटता रहता है, अरुचि, प्यास और ज्वर हो जाते हैं, शरीर भारी २ रहता है, आलस्य होता है. शरीर विशेषकर जोड़ सूज जाते हैं, अन्न पचता नहीं है। वायु अधिक हो तो पेट में अफारा हो जाता है, पित्त अधिक हो तो दाह तृष्णा आदि हो जाते हैं, और यदि कफ अधिक हो तो शरीर भारी और अकड़ा हुआ रहता है, तीनों दोषों में तीनों के लक्षण पाए जाते हैं।

## आमवात चिकित्सा

घी में भुनी हुई हींग १ माशा, चव्य २ माशा, विड़ नमक ३ माशा, सोंठ ४ माशा, मर्चा ५ माशा, पिप्पलामूल ६ माशा, जीरा ७ माशा, इन सब का चूर्ण बनाकर गरम पानी के साथ खाने से आमवात दूर होता है।

## अन्य उपाय ( वीरसिंहावलोक से )

सोंठ, कंडियारी, पाढ़, मव, गजपिप्पली, हरड़, नागरमोथा, जीरा, पिप्पलामूल, चित्रा, सब का चूर्ण बना कर गरम पानी से खावे तो आमवात दूर होता है।

## अन्य चूर्ण

सोंठ, वायविडिंग, देवदारु, हरड़, इनका चूर्ण कर गरम पानी से खावे तो आमवात दूर होता है। और कमर दर्द भी दूर होता है।

## अन्य चूर्ण

मिर्च, इन्द्रजौ, देवदार, वावडिंग, एरण्ड की जड़, त्रिवी, पतीस, दारुहलदी, इनका चूर्ण बना कर गरम पानी से खावे तो आमवात दूर हो।

शुद्ध गुग्गुल १ माशा, हरड़, इटसिट, गिलोय १-१-तोला इनका गोमूत्र में काढ़ा करे, और फिर मल छान कर इसमें ४ रत्ति नौसादर मिला कर रोगी को पिला देवे तो, आमवात, सोजा, वाय की पीड़ा, कमर दर्द आदि सब रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

एरण्ड बीज की गिरी निकाल गोदुग्ध मे खीर के समान पका कर मीठा मिला खावे तो आमवात और कमरदर्द आदि वायु रोग दूर होते है।

## अन्य उपाय

वच, सौंफ, हींग, सैधानमक इनका चूर्ण कर गरम पानी से पीवे तो आमवात, कमरदर्द और वायु के विकार दूर होते हैं।

## अमृताद्य चूर्ण

गिलोय, सोंठ, गोखरु, मुडी, कोड़, वच, वरना, मघ, इनका चूर्ण बनाकर काजी के साथ खावे तो आमवात की पीडा दूर होती है।

## अलम्बुपादि चूर्ण

गोरखमुडी १ भाग, गोखरु २ भाग, त्रिफला ६ भाग, सोठ ४ भाग गिलोय ५ भाग, मघ इन सब के बराबर, सब का चूर्ण बना कर दही के तोड़, तक्र, शराब, काजी अथवा गरम जल के साथ खावे तो आमवात दूर होता है।

## द्वितीयअलंवुपाद्य चूर्ण

मुंडी, गोखरु, गिलोय, विधारा, मघ, नागरमोथा, त्रिवी, वरना, इदसिट, त्रिफला, सोठ, सब का चूर्ण कर काजी, तक्र वा गरम जल से खावे तो आमवात, सधिशूल, खासी शोथ आदि रोग दूर हो।

## वैश्वानर चूर्ण ( वंगसेन से )

सैंधानमक दो भाग, अजवायन दो भाग, अजमोद तीन भाग, सोंठ पाच भाग, हरड़ बीस भाग, सब का चूर्ण कर, तक्र, घी, कांजी अथवा गरम पानी से खावे तो आमवात, सग्रहणी, हृद्रोग, वस्तिरोग गुदा के रोग, ग्रंथि, शूल, अफारा, तिली, बवासीर, उदर के रोग, एवं कब्ज आदि रोग दूर होते हैं, भूख खूब लगती है।

## अन्य ( वैद्यजीवन से )

दशमूल का काढ़ा बना कर उस मे २ तोले एरण्ड तेल मिलाकर

पिया करे तो बहुत ही शीघ्र आम विकार दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

सोठ का काढ़ा करके उस मे दो तोले एरण्ड का तेल मिला कर पीने से आमवात पेट शूल तथा अन्य वात विकार दूर होते हैं।

### अन्य काढ़ा

सोठ, रायसन, गिलोय, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, विलछाल, अरणी, श्योनाक, गंभारी, पाटल इनकी भी छाल, कुडासक, देवदारु, इन सब का काढ़ा करके एरण्ड तैल मिला पीवे तो आमवात दूर हो।

### अन्य उपाय

अकेला एरण्डतैल ही प्रभातकाल दूध, काढ़ा व गरम जल के साथ पीवे तो आमवात दूर होता है।

### अन्य उपाय

गिलोय और सोठ दोनो का काढा वना कर पीने से आमवात दूर होता है

### अन्य उपाय

केवल ३ माशे सोठ का चूर्ण कांजी के साथ खाने से आमवात दूर होता है।

### अन्य उपाय

६ माशे हरड़ का चूर्ण १ तोला भर एरण्डतैल मे मिलाकर गरम जल के साथ पीवे तो आमवात दूर हो।

### अन्य उपाय

कचूर और सोठ वरावर २ लेकर चूर्ण करे, ३ माशे चूर्ण इटसिट के काढ़े के साथ पीवे तो आमवात, कटिपीडा, जोड़ो का दर्द, सोजा आदि रोग क्षण मे दूर होते हैं।

### आमवात में पथ्य

स्वेदन, लंघन, स्नेहपान, निरूहणवस्ति, विरेचन, लेप, वात कफ

को दूर करने वाले पदार्थ, लसन, सुहांजना, परवल, एरण्डतेल, कुलथी, जीरा, इटसिट, पुराने चावल, करेले, बताऊं, गरम जल, एवं अन्य दीपन पाचन पदार्थ पथ्य हैं।

### कुपथ्य

मछली, दही, गुड, दूध, उडद, गन्ना तथा भारी जल, पूर्व की वायु, विरुद्ध पदार्थ, मीठे तथा कब्ज करने वाले पदार्थ त्याज्य हैं।

इति आमवात-रोगाधिकार समाप्त।

# अथ शूलरोगाधिकार

## शूल निदान

बहुत पानी पीने से, अत्यन्त मैथुन करने से, रात को जागने से, दिन को सोने से, वीर्य, मलमूत्र, अपान वायु के रोकने से, शीत लग जाने से, कोदो, अरहर, मटर, मूग तथा अन्य रूक्ष पदार्थों के अतिसेवन करने से दूध और मछली, सूखा मास, इसी प्रकार अन्य मिथ्याहार विहार से आठ प्रकार का शूल रोग हो जाता है।

### वातशूल लक्षण

हृदय, पीठ, त्रिक, मूत्राशय, पसली तथा सारे शरीर मे शूल हो और कभी हट जावे कभी हो जावे तो वातशूल जानो।

### पित्तशूल लक्षण

पित्तशूल मे प्यास, दाह, वेचैनी, मूर्च्छा, नाभि स्थान मे विशेष शूल हो, भ्रम हो, पसीना अधिक आवे, दोपहर या आधी रात को अधिक शूल होवे।

### कफशूल लक्षण

कफ शूल मे खासी होती है, जी मितलाता है, मंदाग्नि अरुचि और सिर भारी रहता है, मुंह मे लार टपकती रहती है, भोजन करने के अनन्तर शूल का अधिक प्रकोप हो जाता है।

## द्वंद्वज तथा सन्निपातज शूल के लक्षण

वातपित्त, वातकफ, पित्तकफ, अथवा तीनो दोषो के मिल जाने से जो शूल होता है, उस मे दो २ दोषो के अथवा तीनो दोषो के लक्षण पाये जाते हैं ।

कफवातज शूल—मूत्राशय, हृदय, कोष्ठ और पसवाड़ो मे शूल होता है ।

पित्तकफ शूल—हृदय नाभि, पसवाड़ो मे शूल होता है ।

वातपित्त शूल—ज्वर, दाह, नाभि और मूत्राशय मे शूल होता है । वायु से मूत्राशय मलाशय मे, पित्त से नाभि स्थान पर और कफ से हृदय, आमाशय, पसलियो और पसवाड़ो मे शूल होता है ।

## आमशूल लक्षण

पेट मे गुड़गुड़ शब्द हो, जी मितलावे, उलटी आवे, पेट भारी, जकड़ा हुआ अफारायुक्त हो, मुंह कफ से भरा रहे, लारे टपके, अन्य भी कफ के समान लक्षण हो तो आमशूल जानो ।

## असाध्य

तीनो दोषो से होने वाला शूल असाध्य होताहै, इसकी चिकित्सा नहीं ।

## वातशूल चिकित्सा

सौंचर नमक, वच, हरड, भुनी हुई हींग, अजवायन, सैधा नमक, सजीखार, जौखार, सब को पीस कपड़छान चूर्ण करले, ३ माशे गरम जल से ले तो कफ वादी और वायु का शूल दूर होता है, भूख खुल कर लगती है ।

## अन्य चूर्ण

अमलवेद, सौंचर नमक, जीरा, मिर्च, सब का चूर्ण बना कर बिजौरे के रस मे भावना दे, सुखा कर ३ माशे गरम पानी के साथ खावे तो वात-शूल दूर हो ।

## अन्य उपाय

सैंधा नमक, भुनी हुई हींग, एरण्ड की जड़, खस, सबका चूर्ण बना

कर गरम जल के साथ खावे तो वातशूल शान्त होता ।

## नाभि शूल की चिकित्सा

मैनफल ( राडा ) को कांजी के साथ पीस कर नाभि पर लेप करे तो नाभिशूल दूर हो जाता है ।

## पार्श्वशूल ( ज्ञातलजम ) की चिकित्सा

जीवन्ती ( डोडी साग ) की जड़ का काढ़ा बना कर इसमे मीठा तेल १ तोला मिला कर पीवे तो पार्श्वशूल दूर होता है ।

## अन्य काढ़ा

पोहकरमूल का काढ़ा बना बना कर ४ रत्ति भुनी हुई हींग मिलाकर पिलाने से पार्श्वशूल दूर होता है ।

## अन्य

एरण्ड की जड और सोठ दोनो का काढा बना कर ४ रत्ति हींग और २ माशा सौंचर नमक मिलाकर पिलाने से पार्श्वशूल दूर होता है ।

## पित्तशूल चिकित्सा

आमले का रस ४ तोले १ तोला खाड मिला कर पीने से पित्तशूल दूर होता है ।

## अवलेह

मुलट्ठी, नीम की छाल, अमलतास का गूदा, हरड, बहेडा, आमला कौड़ इनका चूर्ण बनाकर शहद मे मिला चाटे तो पित्तशूल दूर होता है ।

## अन्य

पेठा का मगज, मुनक्का, खाड, त्रायमाण सब पीस कर आमले के रस के साथ खावे तो पित्तशूल दूर होता है ।

## अन्य उपाय

आमले का चूर्ण शहद के साथ चाटने से पित्तशूल दूर होता है ।

## अन्य उपाय

त्रायमाण, पिप्पलामूल, त्रिवि, मुलट्ठी, आमला, अमलतास, मिश्री,

मुनक्का, श्वेतचंदन, कुशा, पियावांसा, इनका चूर्णकर शहद के साथ खाने से पित्त का शूल, दाह, मोह और तृष्णा आदि दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

कौड़, मुलट्टी, नीम की छाल, त्रिफला, अम्लतास, आमला, इनका काढ़ा करके पीने से पित्तशूल शान्त होता है।

### अन्य

त्रायमाण, नागरमोथा, मुनक्का, विदारीकंद, इनका चूर्ण कर आमले के रस के साथ खावे तो पित्तशूल दूर होता है।

### अन्य उपाय

त्रिफला, अमलतास इनका काढ़ा करके शहद और मिश्री मिलाकर पीने से पित्तशूल शान्त होता है।

### अन्य उपाय

शतावरी का रस शहद मिला कर चाटने से पित्तशूल, और दाह दूर होते हैं।

### अन्य

हरड़ का चूर्ण ६ माशे, गुड और शहद मिला कर खाने से पित्तशूल, ज्वर, दाह, दूर होता है।

### कफशूल उपाय

छोटी कंडियारी, वडी कंडियारी, विल की छाल, गोखरू, एरण्ड की जड, इनका काढ़ा वना कर सैंधानमक और जौखार मिला कर पीने से हृदय शूल और पार्श्वशूल, तथा कफ का शूल दूर होता है।

### अन्य

मघ, पिप्पलामूल, सोंठ, भुनी हुई हींग, चित्रा, चव, सैंधा, सौंचर, विट, तीनों नमक, सबका चूर्ण वना कर ६ माशे गरम जल से खावे तो कफ का शूल दूर होता है।

### अन्य

विल जड़ का छिलका, एरण्ड की जड़, सोंठ, चित्रा, हींग भुनी हुई,

सैधा नमक, सबका चूर्ण गरम जल से खावे तो कफ शूल दूर हो।

### अन्य

वच, हरड, कौड, चित्रा इनका चूर्ण कर गोमूत्र से खावे तो कफ-शूल दूर हो।

### अन्य उपाय (रत्नसारसंग्रह से)

१ छटाक विजौरा का रस, १ तोला पुराना गुड मिलाकर पीवे तो गुल्म, पेटदर्द, हृदय की पीड़ा और कमरदर्द दूर होजाती है।

### अन्य उपाय

छोटी कडियारी, बडी कंडियारी, बिल का छिलका, पाषाणभेद, विजोरे की जड, भखड़े, इनका काढा करके छान कर इसमे १ माशा इलायची का चूर्ण, २ रत्ति हींग भुनी हुई, १ माशा जौखार, २ माशा सैधानमक, १ तोला एरण्ड तेल मिला कर रोगी को पिलावे तो कफ का शूल कमर और पीठ का दर्द, हृदय और नाभि का दर्द मेदरोग, उदररोग, पसवाड़े, सिर और आँखो का दर्द दूर होता है।

### अन्य उपाय (वंगसेन से)

रोज सवेरे उठकर शराब के साथ लहसन खाने से वातकफ की पीड़ा दूर होती है।

### अन्य उपाय

नित्य पानी के साथ जौखार खाने से भी शूल दूर होता है। अथवा - मघ और गुड़ मिला कर खाने से भी शूल दूर होता है।

### पित्तकफ शूल की चिकित्सा

पटोलपत्र, हरड, बहेड़ा, आमला, इनका चूर्ण कर शहद से खावे तो पित्तकफशूल, ज्वर, वमन, दाह दूर हो।

### पित्तवात शूल की चिकित्सा

छोटी बड़ी कंडियारी, कुशा, सरकड़ा, गन्ना, गोखरू, एरण्ड की

जड, इनका काढ़ा बनाकर उसमे खाड और शहद मिला कर पीने से पित्त-वात-शूल दूर हो ।

## आमशूल की चिकित्सा

चित्रा, पिप्पलामूल, सोठ, धनिया, एरण्ड जड, इनका काढ़ा कर इसमे २ रत्ति हींग भुनी हुई, १ माशा विड नमक, और १ माशा सैंधानमक मिला कर पीवे तो, आमशूल और कफशूल दूर होजाता है ।

## एरण्ड सप्तक

एरण्ड की जड़, विल का छिलका, छोटी वड़ी दोनो कंडियारी, विजौरे की जड़, पखानभेद, मघ, मरिच, सोठ और पिप्पलामूल, इनका काढ़ा बनाकर इसमे २ रत्ति शुद्ध हींग, २ माशा सैंधानमक, २ माशा जौखार मिला कर पीवे तो लिंग का शूल, हृदय की पीड़ा और आमशूल को दूर करे ।

## त्रिदोष शूल की चिकित्सा

एरण्ड के वीज की गिरी और जड़ दोनो कंडियारियां, गोखरू, शालपर्णी, दारूहलदी, वच, पृष्ठपर्णी मुश्कवाला, इनका काढ़ा वना कर उसमे २-३ माशे जौखार मिला कर पीवे तो सन्निपात का शूल दूर होवे ।

## अन्य उपाय

शंखभस्म, भुनी हुई हींग, मघ, मरिच, इनको कपड़छान कर १-२ माशा गरम जल से पीवे तो सन्निपात का शूल दूर हो ।

## अन्य उपाय

विदारीकंद का रस, अनार का रस २-२ तोले, त्रिकुटा चूर्ण दो माशा, लहसन पीसा हुआ ६ माशा, शहद ६ माशा, सत्र मिला कर लगातार प्रातः सायं खाने से त्रिदोष का शूल दूर होता है ।

## अन्य उपाय

गोखरू, हरड़, बहेड़ा, आमला, मंडूरभस्म, सत्र वरावर लेकर कपड़छान करले फिर चार रत्ति से एक माशा तक दवाई शहद के साथ खाने से त्रिदोषशूल दूर होता है ।

## तुंबरादि चूर्ण ( वंगसेन से )

नेपाली धनिया, सैंधानमक, पोहकरमूल, हरड, सौंचरनमक, हींग भुनी हुई, विडनमक इनका चूर्ण करले, फिर दशमूल का काढ़ा बना कर उसमे २ माशा जौखार मिलाले और फिर ३—४ माशे चूर्ण उस काढ़े के साथ खावे तो कमरदर्द, पीठ की दर्द, वात कफ वा सन्निपात का शूल दूर होता है।

### अन्य उपाय

सोठ, एरण्ड जड, भुनी हुई हींग, पोहकरमूल, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी वड़ी कंडियारी, गोखरू तथा विल, अरणी, श्योनाक, गंभारी, पाढल इनकी छाछ, जौखार, सैंधानमक सौंचरनमक, विड़नमक, सज्जीखार इनका चूर्ण बनाकर जो के पानी अर्थात् जवाश या आशजौ के साथ खावे तो त्रिदोषशूल, पीठ का दर्द, हृदय का शूल, कटि शूल, गुल्म आदि रोग दूर होते हैं।

### अन्य उपाय ( दीपनी यवागू )

मघ, पिप्पलामूल, चव, चित्रा, सोठ इनका काढ़ा बनाकर उसमे यवागू बना कर खावे तो सब प्रकार के शूल दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

हींग, अजवायन, चित्रा, नेपाली धनिया, हरड, मघ, मिर्च, सोठ, ऊपर नमक या सैंधानमक, और जौखार, इनका चूर्ण कर गरम पानी से खावे तो टट्टी पेशाव के तथा वायु के शूल को दूर करता है, यह दीपन और पाचन है।

### अन्य उपाय

विल की जड़ का छिलका, एरण्ड की जड़, चित्रा, सोठ, सैंधानमक, हींग भुनी हुई, इन सबका चूर्ण बनाकर गरम जल से खावे तो सब प्रकार के शूल दूर हो।

### अन्य उपाय

त्रिफला और त्रिकुटा बराबर २ कूट कर चूर्ण करले, ३ माशे चूर्ण शहद के साथ खावे तो सब प्रकार के शूल दूर होजाते हैं।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

लोहभस्म, हरड़ और गुड़ सब समान भाग लेकर चौगुने गोमूत्र में पकाले और चार रत्ति मात्रा शहद के साथ खावे तो शूल दूर हो। अथवा लोहभस्म १ भाग, हरड़ २ भाग, गुड़ ४ भाग, और गोमूत्र आठ भाग सब का पूर्व विधि से पाक बनाकर २-३ माशा गरम जल अथवा तक्र के साथ खावे तो शूल दूर होवे।

## अन्य उपाय

कुठ, भुनी हुई हींग, जौखार, चित्रा, सैंधानमक इन सब का चूर्ण बनाकर बिजौरे के रस के साथ चाटे तो शूल, तिली, वायगोला दूर हो।

## अन्य उपाय

सौंचर नमक, पाढ, भुनी हुई हींग, सैंधा नमक, सांभर नमक, विड़नमक, जौखार, सज्जीखार, इन सब को समान भाग लेकर चूर्ण करे और ३—४ माशा गरम जल के साथ खावे तो मन्यास्तंभ, ( अर्थात् गरदन का अकड़ जाना ) जातलजम, दिल का दर्द, पेट का दर्द तथा अन्य सब शूल नष्ट होते हैं।

## सर्वशूल का लेप

नौसादर, हलदी, फटकड़ी आक की जड़, मुसब्बर, सुहागा, सब समान भाग लेकर गोमूत्र में पीस गरम २ लेप करे तो उदरशूल, पसली का शूल तथा अन्य शूल दूर होते हैं।

## अन्य लेप

कौड़, धतूरे के फल, दोनो को कांजी के साथ पीस कर कोसा २ लेप करने से सब प्रकार का शूल दूर होता है।

## अन्य उपाय

कुठ, हालों, मैदासक, हींग, राई, मुसब्बर, सोंठ, हलदी, पोहकरमूल, इनका बारीक चूर्ण कर गोमूत्र में पीस लें, फिर बारहसिंगा को गोमूत्र में घिस कर इसमें मिलालें, और थोड़ा मीठा तेल मिला गरम २ लेप करें

तो सब प्रकार के शूल दूर होजाते हैं। यह लेप पेट दर्द या पसली दर्द के लिये अत्युत्तम है।

## परिणाम शूल चिकित्सा

लक्षण—भोजन पचने के समय जो शूल होता है उसे परिणामशूल कहते हैं, इसमें पित्त दोष प्रधान होता है।

## वातज परिणाम शूल के लक्षण

पेट में गुड़गुड़ शब्द, अफारा, कब्ज, मूत्र की रुकावट, यह शूल चिकने और गरम पदार्थों से शान्त होजाता है।

## वातज परिणाम शूल की चिकित्सा

हरड़, मधा लोहभस्म, इनको पीस कर शहद के साथ खावे तो परिणामशूल दूर होवे। ( ३ माशे हरड़, १ माशे मध, और १ रत्ति लोह-भस्म और ६ माशे शहद इस हिसाब से चूर्ण करे )।

## अन्य उपाय

हरड़ चूर्ण २ माशे, सोठचूर्ण १ माशे, लोहभस्म १ रत्ति यह एक खुराक है, इस प्रकार से प्रतिदिन मधु के साथ खाने से परिणामशूल दूर होता है।

## अन्य उपाय

सोठ, तिल, गुड इनको पीस कर दूध के साथ पीवे तो परिणामशूल दूर हो।

## अन्य उपाय

चित्रा, एरण्ड जड, गोखरू, इटसिट इन सब का चूर्ण बनाले, और इसे ३ माशे चूर्ण मे २ रत्ति शखभस्म मिलाकर गर्म जल से खावे तो परिणाम शूल दूर हो।

## अन्य उपाय

सैंधा नमक को तीन चार बार आग मे गरम कर पानी मे बुझावे फिर उस पानी को पिलावे तो परिणामशूल दूर हो।

## अन्य उपाय (वंगसेन से)

सैंधा, सौंचल, विड़, सामुद्र, सांभर यह पांचो नमक, मघ, मरिच, सोठ शंखभस्म, सब बराबर २ लेकर चूर्ण करले, फिर कलमी साग के रस की भावना देकर १-१ माशे की गोली बनाकर गरम पानी के साथ खावे तो परिणामशूल दूर होता है।

## अन्य उपाय

लोनी बूटी की जड़ का कल्क अथवा काढा कर, दूध, घी, मिश्री मिला कर पीवे तो परिणामशूल दूर होता है।

## अन्य उपाय

लोहभस्म १ रत्ति, वचचूर्ण १ माशा दोनो को शहद के साथ चाटने से परिणामशूल दूर होता है।

## शम्बूकाद्यमोदक (वंगसेन से)

शंखभस्म ३ पल, लोहभस्म २ पल, रसौंत १ पल, मिश्री ६ पल, इन सब को मिलाकर शहद के साथ माशा २ की गोलियां बनाले और यथाशक्ति १-२ गोली प्रतिदिन तक्र के साथ प्रातः सायं खावे तो गुल्म, प्रमेह, शूल, गुदा का रोग, पाण्डु रोग, ववासीर, मूत्रकृच्छ्र, अग्निमांद्य, आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय (रसरत्नाकर से)

सैंधानमक, जीरा, हींग, भुनी हुई, सबका चूर्ण करे, ३ माशे प्रमाण यह चूर्ण और १ तोला घी और ६ माशे शहद मिला कर चाटे, तो परिणामशूल दूर हो।

## सर्वशूलहर रस

रससिंदूर, सुहागा भुना हुआ, जौखार तीनो बराबर लेकर बारीक चूर्ण करे, फिर ३ रत्ति चूर्ण शहद के साथ खावे तो परिणामशूल दूर होता है

## अन्य उपाय

बारहसिंगा की भस्म २-३ रत्ति तोला भर घी के साथ खावे तो वात शूल दूर हो।

## शूल केसरी

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गंधक २ तोला, दोनों की कज्जली करले, फिर ३ तोले ताम्र शुद्ध लेकर उसका बारीक पत्रा बना कर उस पर कज्जली का ( निंबू के रसमें घोलकर ) लेप करे, सूखने पर पत्रे के नीचे ऊपर बारीक नमक देकर प्यालो मे बंद कर गजपुट की आग आगं दें, ठंडा होने पर निकाल लें, और बारीक पीसकर शीशी में रख छोड़े, और १ या आधी रत्ती दवाई पान के रस मे मिलाकर खावे तो सब शूल दूर हो।

## अग्निमुख रस

रससिन्दूर, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, शुद्ध मिठ्ठा तेलिया, शुद्धगंधक, हरड़ बहेड़ा, आमला, अम्लवेद, इन सब का बारीक चूर्ण कर नीचे लिखी दवाइयों की भावना दे—कुचला, वासा, अरनी, रत्तियां, थोहर के पत्तो का रस, कंडियारी, कमलपत्र, धतूरे के पत्ते, पान, चौलाई इनके काढ़े की प्रत्येक तीन २ भावना दे, फिर सब दवाई के बराबर पांचो नमक मिलाकर अदरक रस के साथ दिन भर खरल करे—चने बराबर गोलियां बनाले, १-२ गोली गरम पानी के साथ खाने से सब प्रकार के शूल क्षण मे दूर होजाते हैं।

## त्रिनेत्ररस

सोने की भस्म, सोहागा, शुद्ध पारा, बारहसिंगे की भस्म सबको अदरक रसके साथ पीस टिकिया बना, प्यालों मे बंद कर गजपुट मे फूंकदे, शीतल होने पर निकाल ले, १ रत्ति दवाई अदरकरस के साथ अथवा शहद ६ माशे, घी १ तोला, दोनों मिलाकर इनके साथ खावे सब प्रकार का शूल दूर हो।

## अन्य उपाय ( वैद्यकुतूहल से )

त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, वच, मिठ्ठा तेलिया, वायविडिंग, चित्रा, पुठकंडा इन सब का बारीक चूर्ण करले और सब के बराबर गुड़ मिला कर दो २ रत्ति की गोलियां बनाले, इससे वातकफ के शूल दूर होते हैं ज्वर, श्वास, कास, तथा कफ के अन्य रोग नष्ट होजाते हैं।

## सर्वशूलहर रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्धशिंगरफ, शुद्ध मिठ्ठा तेलिया, सुहागा भुना हुआ, शुद्ध जमालगोटा, मघ, मिर्च, सोंठ, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे, पीछे सब द्रव्यों का चूर्ण कर एकत्र मिलाले और पान के रस के साथ सात दिन खरल करे, कत्था, चूना और सुपारी के पानी की भी भावना दे और दो २ रत्ति की गोलियां बनाले और एक गोली पान में रख कर खावे तो सब प्रकार के शूल दूर होते हैं।

## शूलरोग पर पथ्य

लंघन, स्वेदन, वमन, विरेचन, गुदा में वत्ती देना, पाचन, सोना, गरम २ दूध, मुट्ठी चापी करना, सुहांजना, करेला, बैंगन, अंगूर, पुराने वासमती के चावल, गरम पानी, यह शूल रोग पर पथ्य हैं।

## कुपथ्य

विरुद्ध भोजन, रात को जागना, विषमाशन, व्यायाम, मैथुन करना, मलमूत्र के वेगों को रोकना, क्रोध करना, उड़द, तथा ठंडा, रूखा, सूखा भोजन और कफकारक विरुद्ध पदार्थ शूल में कुपथ्य कहे हैं।

इति शूल रोगाधिकार समाप्त।

# अथ उदावर्तरोगाधिकार

## उदावर्त का निदान

अपानवायु, मल, मूत्र, छींक, डकार, आंसू, जंभाई, वमन, वीर्य, प्यास, श्वास, भूख, नींद यह १३ स्वाभविक वेग माने गये हैं, इन वेगों को रोकने से उदावर्त रोग होजाता है।

१—अपानवायु के रोकने से—कमर और पीठ में दर्द और अफारा होता है।

२—टट्टी रोकने से—पेट में काट, गुड़गुड़ शब्द, शूल और पेट भारी होजाता है।

३—पेशाब रोकने से लिंग में शूल, पेशाब रुक २ कर आता है, सिरदर्द और अफारा हो जाता है।

४—जभाई रोकने से—ग्रीवा, पवन की नालिया अर्थात् फेफडे, गला अकड जाते हैं सिरदर्द हो जाता है, जभांइयां आती हैं, नाक, मुख, कान, नेत्र इन मे पीडा होती है।

५—आसू रोकने से—सिर भारी हो जावे, नजला और नेत्र दुखने लग जाते हैं।

६—डकार रोकने से—गले और गर्दन मे अकडाव और पीडा होती है।

७—छींक रोकने से—गर्दन जकड जाती है, शिरशूल, आधे सिर की दर्द, नाक, नेत्र, जिह्वा, कान, आख यह पाचो इन्द्रिया दुर्बल पड जाती हैं।

८—उलटी के रोकने से—खाज (छपाकी आदि) अरुचि, ज्वर कोढ, पाण्डु, फोडा-फिंसी, सोजा तथा जी मितलाता है, मुंह में पानी भरता रहे, वार २ उबकाई आती रहती है।

९—वीर्य रोकने से—पेशाव भी रुक जाता है और पथरी हो जाती है, पेशाव के साथ धात भी गिरने लग जाती है।

१०—भूख का वेग रोकने से—भौं और चक्कर आते, हैं आखो तले अंधेरा, अरुचि और अगमर्द हो जाता है।

११—प्यास रोकने से—शरीर सूखने लग जाता है और दुर्बल हो जाता है, मुख, गला वार २ सूख जाता है, नेत्र, कान, नाक सब कमजोर पड जाते हैं।

१२—श्वास रोकने से—हृद्रोग और गुल्म रोग हो जाते हैं, जभाइयां आती हैं।

१३—नीद रोकने से—अंगडाइया आती हैं, सिर और नेत्र भारी हो जाते हैं।

## असाध्य लक्षण

तंद्रा (गनूदगी), प्यास, और शरीर क्षीण होने लग जावे, विष्टा, मुंह के रास्ते आवे तो रोगी बचता नहीं।

## आध्मान ( अफारा ) के लक्षण

आँव और टट्टी मिली हुई आवें, अथवा यह दोनों गुदा को रोक लें, और पेट फूल जावे, इसका अर्थ यह है—अपान वायु बदहज़मी के कारण कुपित होकर गुदा के मार्ग को रोक लेता है, फिर वही अपान वायु प्रतिलोम अर्थात् उलटा हो जाता है और ऊपर की ओर उलटकर पेट में अफारा कर देता है, पेट में कुछ पीड़ा भी होती है, पेट तबले की तरह आवाज देता है, इसे आध्मान या अफारा कहते हैं।

## उदावर्त चिकित्सा

सब से प्रथम उदावर्त रोग में अपान वायु को अनुलोम अर्थात् नीचे की ओर करने का यत्न करना चाहिये, क्योंकि अपान वायु यदि अपने ठीक मार्ग पर आगया तो मल, मूत्र, और हवा ( अपान वायु, पाद ) ठीक आने शुरू हो जावेंगे और रोगी तंदरुस्त हो जावेगा। यदि मलाशय में विष्ठा का कोई सुद्दा अड़ा हो तो उसे निरूहण या अनुवासन वस्ति ( अनीमा या हुकना ) करानी चाहिये। पेट पर तेल आदि की मालिश और गरम सेक टकोर आदि करनी चाहिये।

### उपाय

हरड़, त्रिवि, जौखार और पीलूफल इन सब का चूर्ण बना कर १ तोला भर प्रतिदिन प्रातःकाल घी के साथ खावे तो उदावर्त रोग दूर हो।

### लेप (वंगसेन से )

बरमी की मिट्टी, करञ्ज के बीज, और करञ्ज की जड़, इन सब को गोमूत्र में पीस कर गरम २ पेट पर लेप करे तो उदावर्त दूर हो।

### अन्य (वंगसेन से)

हींग भुनी हुई २, कुठ ४, वच ८, सज्जी १६, और विड नमक ३२ भाग ले, इनका चूर्ण बना कर १ तोला चूर्ण लेकर शराब के साथ खावे तो उदावर्त रोग दूर हो।

## वत्ती (वंगसेन से)

हींग, सैंधा नमक, दोनों को पीस शहद मिलाकर वत्ती वनाए, इस वत्ती को गुदा में रखने से उदावर्त रोग दूर हो जाता है।

## चूर्ण

त्रिवी २४ तोले, मघ २ तोला दोनो का चूर्ण वना कर भोजन से पहले शहद के साथ खावे तो उदावर्त दूर हो।

## गुडाष्टक चूर्ण

मघ, मरिच, सोठ, त्रिवि, पिप्पलामूल, दन्ती, चित्रा इन का चूर्ण वना कर नित्य प्रातःकाल गुड़ के साथ खावे तो उदावर्त दूर हो, शरीर मे वल, वर्ण और रक्त वढता है, मंदाग्नि, पाण्डु रोग, प्लीहा रोग दूर होते हैं।

## आध्मान ( अफारा ) की चिकित्सा (वंगसेन से)

हरड़, त्रिवी, सनाय, सव को वारीक कर थोहर के दूध मे १-१ माशा की गोली वनावे, वल के अनुसार १-२ गोली गरम जल के साथ खावे तो अफारा दूर हो।

## अन्य उपाय ( वत्ती ) (वंगसेन से)

मैनफल, मघ, वच, कुठ, सफेद सरसों सव को कूट कर गुड और दूध से वत्ती वनावे, इस वत्ती को गुदा मे देने से, कब्ज, आध्मान (अफारा) उदावर्त आदि रोग दूर होते हैं, अपानवायु अनुलोम हो जाता है।

## अन्य उपाय

घर का धुआं, विड़ नमक, मघ, मिर्च, सोठ, गुड़, इनको वारीक कर गोमूत्र मे पीस वत्ती वनावे, गुदा मे देने से कब्ज उदावर्त, अफारा दूर होते हैं।

त्रिवी, २ भाग मघा ४, भाग हरड ५, भाग गुड़ ३ भाग सव को कूट कर ६ माशे प्रमाण दूध व गर्म जल के साथ खावे तो अफारा, कब्ज़, और उदावर्त दूर हो।

## पुनः वर्ति

मघ, मिर्च, सोंठ, सैंधा नमक, श्वेतसरसों, घर का धुआं, कुठ, राड़ा, इन सब को पीस गुड़ शहद मिला कर वत्ती वनावे और गुदा में रखे तो अफारा कब्ज दूर हो ।

## हिंग्वादि चूर्ण

भुनी हुई हींग, वच, मघ, सोंचर नमक, वावडिंग इनका चूर्ण वना कर गरम पानी से खावे तो पेट दर्द, अफारा, कब्ज, गुदा की पीड़ा, गुल्म दूर हो ।

## पुनः हिंग्वादि चूर्ण

भुनी हुई हींग १ भाग, वच २ भाग, विडनमक ३ भाग, सोंठ ४ भाग, जीरा ५ भाग, हरड ६ भाग, पोहकरमूल ७ भाग, कुठ ८ भाग, इन सब का चूर्ण वना कर गरम जल से खावे तो तिली, हैजा शूल दूर हो ।

## वचादि चूर्ण

वच, हरड, चव, जौखार, मघ, अतीस, कुठ सब वरावर लेकर चूर्ण करे, और गर्म पानी के साथ खावे तो अफारा, मूढवात, उदावर्त दूर हो ।

## वत्ती ( वृंद )

घर का धुआ, विड़ नमक, मघ, मिर्च, सोंठ, गुड, हींग इन को गोमूत्र के साथ पीस के वत्ती वनावे तो उदावर्त, आफारा शूल दूर होता है ।

## अन्य वत्ती ( वृंद )

मघ, मिर्च, सोंठ, सैंधानमक, गुड, अजमोद, घर का धुआ, सरसों कुठ, इन सब को गोमूत्र या पानी में पीस कर अंगूठे वरावर वत्ती वनावे और गुदा में देवे क्रिमि आनाह, अफारा, उदावर्त, शूल आदि रोग दूर हों।

## नाराच चूर्ण ( शार्ङ्गधर से )

त्रिवी २ तोले, मघ, १ तोले, मिश्री ४ तोले, १ तोला भर दवाई शहद के साथ खावे तो आनाह शूल उदावर्त दूर हो ।

## अन्य उपाय

भुनी हुई हींग १ माशा, सौंचरनमक १ माशा दोनो को मिला कर गरम पानी से खावे तो अफारा, शूल, उदावर्त दूर होते हैं।

## विषूचिकाहर चूर्ण

सोठ, मघ, त्रिवी, हरड, सौंचरनमक सब का चूर्ण कर गरम पानी से खावे तो पेट दर्द, अफारा, आम विष अर्थात् अलसक, विलम्बिका और हैजा दूर होते हैं।

## उदावर्त आनाह पर पथ्य

स्नेह, पसीना, विरेचन, वस्ति फलवर्ति ( वत्ती ), मालिश, जौ के सत्तू यह मल रोधने से होने वाले अफारे मे पथ्य हैं।

१ अधोवात ( पाद ) के उदावर्त मे स्वेदन, स्नेहन, वस्ति तथा अन्य वात को हरने वाले उपाय करने चाहिये।

२ टट्टी रोकने वाले उदावर्त मे स्वेदन, मालिश, अवगाहन, घी पिलाना, मुट्ठी चापी करना वस्ति और वत्ती देना हितकर है।

३ मूत्र वेग रोकने के उदावर्त पर वस्ति, पसीना, मालिश, आदि पथ्य है।

४ डकार रोकने से होने वाले उदावर्त मे खासी की तरह चिकित्सा करनी चाहिये।

छींक रोकने से होने वाले मे स्वेदन, धूमपान, घृतपान, नसवार, आदि देवे।

४ डकार रोकने से होने वाले मे—ठण्डा पानी पिलाए तथा अन्य वातहर चिकित्सा करे।

७ नीद रोकने से होने वाले उदावर्त मे 'दूध' मलाई, मीठी २ वातें मनोहर कथाएं, मुट्ठी चापी करना और चिन्ता रहित होकर सोना हितकर है।

८ श्वास रोकने के उदावर्त मे वात हर चिकित्सा करनी चाहिये।

९ वीर्य रोकने से होने वाले उदावर्त मे मालिश, अवगाहन, सुन्दर स्त्रियो से वातें, काम-चेष्टाएं तथा मैथुन करना चाहिए।

१० वमन रोकने से होने वाले उदावर्त में—धूम एवं रूखा-सूखा अन्न पथ्य है।

११ प्यास रोकने से होने वाले उदावर्त मे ठण्डा पानी तथा शीत उपचार करना चाहिये।

१२ भूख रोकने पर उसे रुचिकर अन्न देना चाहिये।

१३ आंसू रोकने पर उसे तीक्ष्ण नस्य एवं अञ्जन देने चाहिये।

### कुपथ्य

उलटी, वेगो का रोकना, भारी, और ठण्डे पदार्थों का खाना, विरुद्ध आहार विहार, नाडी शाक, पिठी, करीर, जामन, कोदो, तिलकुट अन्य भी अरुचि और कब्ज करने वाले पदार्थों का परित्याग कर देना चाहिये।

इति उदावर्त रोगाधिकार समाप्त।

# अथ गुल्मरोगाधिकार

## गुल्मनिदान

रूखे रूखे तथा विरोधी आहार विहार करने से वायु कुपित होकर पेट में गुल्म अर्थात् वायगोला पैदा कर देता है। यह गुल्म पांच प्रकार का होता है। अर्थात् १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ रक्त। और यह पेट मे पाच स्थानो पर होता है। दो पसवाडे, ३ हृदय, ४ नाभि, और ५ वस्ति। इस मे वायु ही प्रधान होता है इस लिये इसे वायगोला भी कहते हैं।

### १—वात गुल्म के लक्षण

वात गुल्म मे—टट्टी और हवा बंद हो जाती है, शरीर की रंगत लाल काली सी हो जाती है, शीत ज्वर हो जाता है, हृदय मे पसवाडो मे और सिर मे दर्द होता है और गुल्म स्थान फड़कता रहता है।

### २—पित्त गुल्म के लक्षण

पित्त गुल्म मे—ज्वर, प्यास, शूल, चेहरे की रंग लाल, दाह और पसीना, और सिर मे अत्यन्त शूल हो जाता है, गुल्म स्थान मे दाह होता है और भोजन पचते समय अत्यंत शूल होता है।

## ३—कफ गुल्म के लक्षण

कफ गुल्म मे—अंग जकड़े प्रतीत होते हैं, ज्वर होता है, उबकाइयां आती हैं, सरदी लगती है, अरुचि, खासी और शरीर भारी प्रतीत होता है, अंग शीत और गुल्म स्थान कठोर प्रतीत होता है।

## ४—त्रिदोष गुल्म के लक्षण

त्रिदोषगुल्म मे—दाह, तृष्णा, और सारे शरीर में आग सी लगी हुई प्रतीत होती है, गुल्म स्थान भारी उभरा हुआ और कठोर होता है और उस से अत्यन्त पीड़ा होती है,

## ५—रक्त गुल्म के लक्षण

प्रसवकाल अर्थात् वच्चा होते समय वायु गर्भाशय के अंदर प्रवेश कर जावे, कच्चा गर्भ गिरजावे, अथवा ऋतुकाल का रक्त रुक जावे तो स्त्रियो को रक्त गुल्म हो जाता है। अर्थात् वायु ऋतुवाहिनी नाडियो के मुँह वंद कर देता है तो मासिक धर्म अर्थात् ऋतु खुल कर नहीं आता और योनि का मुंह वंद हो जाता है, रुका हुआ रक्त धीरे २ गर्भ की तरह वढ़ना शुरू हो जाता है, साधारण आदमी नही पहचान सकता कि गर्भ है कि रक्त का गुल्म है, इसी लिये शास्त्रकार ने लिखा है कि यदि इस वात का पता न चले तो दस महीने तक इसका कोई इलाज नहीं करना चाहिये, यदि गर्भ होगा तो दस महीने मे वच्चा पैदा हो जायगा और यदि गुल्म होगा तो वैसे का वैसा रहेगा। फिर सोच समझ कर तेरहवे चौदहवे महीने उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

## गर्भ और रक्तगुल्म में भेद

गर्भ हो तो वच्चा पांचवे छठे महीने गर्भाशय मे हिलने जुलने लग जाता है, और उसकी माता को पेट मे फड़कता हुआ प्रतीत होता है। किन्तु गुल्म तो पेट मे पिण्डाकार अर्थात् गोले का गोला ही वना रहता है, अंग प्रत्यंग से हिलता जुलता नहीं, यही दोनों का खास भेद है।

## असाध्य गुल्म के लक्षण

जो गुल्म कछुए के समान उभरा हुआ हो, रोगी अत्यन्त कमजोर

हो गया हो, कोई चीज पचे नहीं, उबकाइयां आवे, प्यास, ज्वर, तंद्रा, वमन, खांसी, सोजा और अतिसार हो जावे, शरीर जकड़ जावे तो असाध्य लक्षण जानो।

विशेष परिचय—गुल्म झाडी को कहते हैं, झाड़ी का मतलब एक गुच्छा या गोला समझिये, कारण यह होता है कि अत्यन्त रूक्ष शीतल और कब्ज करने वाले पदार्थों के अधिक सेवन करने से अथवा पीछे कहे उदावर्त आदि रोगो से वायु जब आतो मे रुक जाता है तो वहा रुक कर आतों को कमजोर कर देता है, और आतो का जो भाग कमजोर पड जाता है वहीं अपना ठिकाना बना लेता है, और जब वहा जमा होता है तो पेट पर गोले की शकल ऊभरी हुई प्रतीत होती है। उदाहरण के रूप मे जैसे नहर में पानी बहता है, और पानी के जोर से कहीं २ उसमे गड्ढे भी पड जाते हैं, जब नहर का पानी बंद होजावे तो सारी नहर सूख जाती है किन्तु उन गढ़ों में पानी जमा रहता है और सडता रहता है, यही हिसाब गुल्म में है। यदि यह गोला पेट के नीचे भाग मे होगा तो वस्तिस्थान, यदि ऊपर के भाग मे होगा तो हृदय, दोनो पसवाडों मे होगा तो पार्श्वस्थान, और अगर पेट के बीच मे होगा तो नाभिस्थान समझिये, यही इसके पाच स्थान होते हैं। यह केवल वायु ही होता है, पित्त और कफ तो रोगी के स्वभाव के अनुसार जानने, कोई रोगी पित्त प्रकृति वाला और कोई कफ प्रकृति वाला होता है। जब तीनो दोष बढ जाते हैं तो सन्निपात समझिये यह असाध्य होता है।

२—गुल्म पकता नहीं, क्योंकि यह केवल चलने फिरने वाली हवा ही होती है, इसका कोई खास ठिकाना नहीं, यदि गुल्म पक जावे तो इसे विद्रधि कहा जाता है, और विद्रधि की ही चिकित्सा करनी चाहिये।

## वातगुल्म चिकित्सा

बिजौरे का रस ५ तोले, हींग घी मे भुनी हुई २ रत्ति, अनार दाने का चूर्ण ३ मासे, अथवा ताजे अनारो का रस ५ तोले, सैंधा नमक, २ माशा विडनमक २ माशा, बढ़िया शराब २॥ तोले मिलाकर पीवे तो वातगुल्म दूर हो।

## अन्य उपाय (वंगसेन से)

चित्रा २ पल, सोठ ½ पल, तिलकुट १ पल, गुड़ १ पल सब को कूट कर १ तोला भर गरम पानी से खावे तो उदावर्त, वायगोला और शूल दूर हो।

## अन्य उपाय

सौंचल नमक, सोठ, अनार दाना, असलवेद, इन का चूर्ण बनाकर ६ माशा भर, गरम पानी से खावे तो वातगुल्म श्वास, शूल, हृद्रोग दूर हो।

## अन्य उपाय

सज्जी खार, कुठ, जौखार, केवडे की खार, सब को तेल के साथ मिला कर खाने से गुल्म, तथा वातशूल दूर होता है।

## अन्य उपाय

एरण्डतैल दो तोला, वढ़िया शराब ५ तोला दोनो को मिला कर पीवे। अथवा—दो तोले एरण्ड तेल नित्य दूध से खावे तो गुल्म एवं वात शूल दूर हो।

## अन्य उपाय

पञ्चमूल का काढ़ा बनाकर उसमे १ माशा असली जौखार और २ रत्ति शुद्ध शिलाजीत मिला कर नित्य प्रभात काल पीने से वात गुल्म दूर होता है।

## अन्य उपाय

मघ, मिर्च, सोठ, हरड़, बहेडा, आमला, चव, वावडिग, आमला चित्रा इनको वारीक पीस घी मे मिला दूध के साथ खावे तो वात गुल्म दूर हो।

## अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से)

सैधा नमक, अनारदाना, भुनी हुई हींग, वावडिग, इलायची, सौंचर नमक, विजौरे की जड़ अथवा फल का छिलका सूखा हुआ, सब का चूर्ण कर एक तोला चूर्ण तुलसी के रस के साथ खावे तो वात गुल्म दूर हो।

## शिखिवाडव रस

शुद्ध, पारा, शुद्ध गंधक, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, स्वर्णमाक्षिकभस्म और जौखार, प्रथम पारा गधक को एकत्र पीस कज्जली करे, पीछे अन्य दवाइया मिला कर चित्रे के काढ़े मे खरल करे और रत्ति रत्ति की गोलिया बनाले, एक या दो गोली पान मे रख कर खावे तो वात गुल्म दूर होता है।

## पित्तगुल्म की चिकित्सा ( वंगसेन से)

बडी कंडियारी का चूर्ण ३ माशे, त्रिफले के काढ़े के साथ खावे तो पित्तगुल्म दूर हो।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से)

६ माशे हरड चूर्ण अंगूर रस के साथ खावे, अथवा—कमीला और बांसा दोनो को शहद से खावे तो पित्तगुल्म दूर हो ।

## अन्य उपाय

मुलट्ठी, रक्तचन्दन, और मुनक्का इन को कूट कर दूध के साथ खावे तो पित्त गुल्म दूर होता है। अथवा—मुलट्ठी चूर्ण ६ माशे, चावलो के पानी से खावे तो पित्तशूल दूर हो।

## अन्य उपाय

त्रिफला चूर्ण के समान मिश्री मिला कर शहद से खावे तो पित्त-गुल्म दूर हो।

## उदुम्बररस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, ताम्रभस्म, सब बराबर ले, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे फिर ताम्र मिला कर दो दिन बरने के रस मे और दो दिन शरपुंखा बूटी के रस मे खरल करे, पीछे गोला बनां प्यालियो बंद कर लघु पुट मे फूक दे, इस तरह पाच पुट दे, फिर उसके बराबर शुद्ध जमालगोटा मिला कर धत्तूरे के रस में खरल पाच लघु पुट दे और निकाल पीस रखे, इसमे से १ रत्ति दवाई घी मे मिला कर खावे तो पित्तगुल्म दूर होता है। अथवा, हरड़ और मुनक्के का काढ़ा बना कर दो रत्ति भर इसे खावे, इस से जुलाब आजावेगे और पित्त बाहिर निकल जायगा।

नोट—लघुपुट का अर्थ सेर भर पाथियो मे रखना, जिस से कि दवाई को इतना हलका सेक पहुंचे कि तीनो दवाइया मिल कर एक हो जावें, तेज आच से पारा गधक उड न जावे, यहां लघुपुट का यही अभिप्राय है।

## कफगुल्म चिकित्सा

अजवायन ६ माशे, विडनमक २ माशे, दोनो को तक्र के साथ खाने से पित्तगुल्म दूर होता है। इसे तक्र मे घोल कर भी पिलाते हैं।

### अन्य उपाय

दन्ती ( जमालगोटे की जड ) हरड दोनो को गुड से खावे तो कफगुल्म दूर हो। अथवा—सोठ और मघ दोनो का चूर्ण शहद से खावे तो कफगुल्म दूर हो।

### अन्य उपाय ( वंगसेन से )

दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर इनका चूर्ण शहद के साथ खावे तो कफगुल्म दूर होता है।

### विद्याधर रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा, शुद्धगंधक, शुद्ध मनसिल, स्वर्णमाक्षिकभस्म, तांबेश्वर, शुद्ध हरताल, सब समान भाग। प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे। फिर अन्य वस्तुएं मिला कर मघ के काढ़े मे खरल करे, फिर थोहर के दूध की भावना दे, २-२ रत्ती की गोलियां बनाले। एक या दो गोली शहद के साथ खावे, अथवा गोमूत्र अथवा घी और गुड के साथ, अथवा तिल के काढ़े के साथ खावे तो कफ गुल्म दूर हो। अथवा—मघ, मरिच, सोठ, भडिगी इनका काढा बनाकर इसके साथ खावे तो भी सब गुल्म दूर हो।

## त्रिदोषगुल्म चिकित्सा

### हिंग्वादिचूर्ण ( वंगसेन से )

भुनी हुई हींग, हाऊवेर, मघ, मिर्च, सोठ, पाढ़, हरड़, कचूर, अजवायन, इटसिट, दन्तीजड़, चित्रा, पोहकरमूल, कंडियारी, सोठ, त्रिवि, इमली, अमलवेद, अनारदाना, धनिया, जीरा, बच, जौखार, सज्जीखार, पांचों

नमक, चव, इनका चूर्ण बनाकर अन्न भोजन के साथ, गरम पानी के साथ अथवा शराब के साथ खावे तो पसली का दर्द, हृदय की पीड़ा, वस्तिशूल, वायु के रोग, कफरोग, अफारा, मूत्रकृच्छ्र, गुदा का शूल, योनि का शूल, संग्रहणी, अलसक ( गुम हैजा ) तिली, पाण्डुरोग, अरुचि, कब्ज, हिचकी श्वास, कास, गले की पीड़ा, यह रोग दूर होते हैं।

## वज्रक्षार चूर्ण

सैधा, सौंचल, विड़, सामुद्र, सांभर यह पाच नमक, जौखार, सज्जीखार, सुहागा भुना हुआ, इनको थोहर के दूध और आक के दूध मे खरल कर तीन दिन धूप मे रखे। फिर गीला करके आक के पत्तो पर लेप करे और हांडी मे बद कर फूंक दे। शीतल होने पर निकाल कर पीसले। जितना यह चूर्ण हो उसमे उतना ही मघ, मिर्च, सोठ, हरड, बहेडा, आमला, राई, ज़ीरा, चित्रा इनका चूर्ण बनाकर मिलाले। ६ माशे चूर्ण गरम जल के साथ खावे तो वातगुल्म दूर हो, घी के साथ पित्तगुल्म, गोमूत्र के साथ कफगुल्म, कांजी के साथ त्रिदोषगुल्म, दूर होता है। और साथ ही अग्निमाद्य, शोथ और शूल आदि रोग दूर होते हैं।

## रक्तगुल्म चिकित्सा

## कंकायनवटी

इटसिट, पोहकरमूल, दन्ती, चित्रा, बड़ी कंडियारी, त्रिवि, सोठ, बच सब एक १—१ पल, अमलवेद, अजवायन, जौखार, सफेद जीरा, धनियां मिर्च, हरड, मघ, सबका चूर्ण बनाकर, जंबीरी के रस मे खरल कर १-१ माशे की गुटिका बनाले। २-३ गुटिका गोमूत्र के साथ खाने से त्रिदोषगुल्म, रक्तगुल्म, मंदाग्नि, अरोचक आदि रोग दूर होते हैं। गरमजल के साथ स्त्री खावे तो रक्तगुल्म दूर हो।

## नारी रक्तगुल्म उपाय ( रसरत्नाकर से )

मघ, भडिंगी, विलछाल इनका चूर्ण बनाकर तिल के काढ़े के साथ खावे तो स्त्रियो का रक्तगुल्म दूर हो।

### अन्य उपाय (रसरत्नाकर से)

मघ, भंडिगी, सोंठ, देवदारु, करञ्जुए के बीज, मुश्कवाला, इनका चूर्ण बना कर तिलो के काढ़े के साथ खावे तो रक्तगुल्म दूर हो ।

### गुल्म में पथ्य

स्नेह, स्वेदन, विरेचन, फस्द खोलना, वस्ति, मालिश, गुदा मे बत्ती देना, पुराने चावल, लालचावल, खांड, कुलथी, शराब, छोटी मूली, पालक, फालसा, अंगूर, खजूर, अनारदाना, खार, तक्र, लसन, एरण्ड तेल, वृंहण दवाइया, गरम, स्निग्ध एवं दीपन पदार्थ, लंघन तथा वात को दूर करने वाले पदार्थ पथ्य कहे गये हैं।

### गुल्म में कुपथ्य

वायु को बढ़ाने वाले पदार्थ विरुद्धाहार, बडी मूली, सूखा मांस, मछली मिठाई, सूखे साग, हर प्रकार की दाले, कब्ज करने वाले पदार्थ, भारी पदार्थ, थकावट, वमन, बहुत जल पीना, वेगों को रोकना, आदि कुपथ्य कहे गये हैं।

इति गुल्मरोगाधिकार समाप्त।

## अथ हृदयरोगाधिकार

अति गरम, ठण्डे, भारी, कसैले तीक्ष्ण, चरपरे और खट्टे पदार्थों के अधिक सेवन करने से, चोट लगने से, अत्यन्त परिश्रम करने से, लगातार अध्यशन करने से, चिन्ता शोक अधिक करने से, वेगों को रोकने से हृद्रोग हो जाता है। वातादि दोष आहार रस को दूषित करके हृदय मे पहुचते हैं तो हृदय के कार्य मे रुकावट पड जाती है उसे हृद्रोग कहते हैं।

### हृद्रोग के भेद

१ वात २ पित्त ३ कफ ४ सन्निपात, ५ कृमि, इस प्रकार से हृद्रोग पांच प्रकार का होता है।

### वातजहृद्रोग लक्षण

वातज हृद्रोग मे—हृदय फैल जाता है, उसमे तोद होता है, फटने

की सी, काटने की सी और मथने की सी पीडा होती है।

## पित्तजहृद्रोग लक्षण

पित्तज हृद्रोग मे—हृदय मे पीड़ा होती है, दाह होता है, धुएँ जैसा श्वास निकलता है। प्यास अधिक लगती है, मूर्च्छा, पसीना, क्रम और मुंह वार २ सूखता है।

## कफजहृद्रोग के लक्षण

कफज हृद्रोग में—अंग भारी हो, मुंह से लारें टपके, अरुचि, अंगो का जकडना, अग्नि मंद हो जाती है, मुंह का स्वाद मीठा होता है।

## त्रिदोषजहृद्रोग के लक्षण

त्रिदोषज हृद्रोग मे तीनों दोषो के लक्षण पाए जाते हैं।

## क्रिमिजहृद्रोग के लक्षण

त्रिदोषज हृद्रोग मे जो मूर्ख रोगी तिल, गुड, दूध, दही आदि का सेवन करता है, उसके हृदय के किसी भाग मे गांठ सी पैदा हो जाती है, और उसमें धीरे २ सड़ाव पैदा हो जाता है जिसमे कीड़े पड़ जाते हैं। ऐसी अवस्था मे अत्यन्त तीव्र पीड़ा होती है, उत्क्लेद अर्थात् उबकाइयां आती हैं, तोद होता है, शूल होता है, जी मिचलाता है, आंखो के आगे अधेरा छा जाता है, आंखों की रगत सावी पड़ जाती है, अरुचि और शोष रोग हो जाता है।

## हृद्रोग के उपद्रव

शरीर कृश होजाता है, क्लोम साद (क्लोम प्यास का स्थान माना गया है, क्लोम मे अगर कोई खराबी हो तो प्यास बहुत ज्यादह लगती है, मधुमेह मे प्रायः क्लोम खराब हो जाता है। इसे लबलबा भी कहते हैं) भूख बंद और भ्रम होता है, शोष हो जाता है, और कृमि रोग के उपद्रव हो जाते हैं।

## हृद्रोग चिकित्सा

### वातज हृद्रोग उपाय—(वंगसेन से)

मघ, इलायची सैंधानमक, हींग भुनी हुई, जौखार, वच, सोंठ,

सोंचलनमक, अजमोद इनका चूर्ण बना कर कुलथी के काढ़े के साथ, दही अथवा शराब के साथ पीवे तो वातहृद्रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय

पोहकरमूल, बिजौरे की जड, सोठ, हरड, कचूर, जौखार, इनको पीस कर अम्ल, लवण और घी मिला कर खाने से वात हृद्रोग शान्त होजाता है।

### अन्य चूर्ण—( रसरत्नाकर से )

अनारदाना, सोठ, अम्लवेद, सोंचरनमक, इनका चूर्ण बनाकर ५ माशे नित्य खावे तो वातहृद्रोग दूर हो।

### पित्त हृद्रोग उपाय—( पञ्चानन रस )

शुद्ध पारा, शुद्धगंधक, दोनो की कज्जली करे, फिर आमले के रस मे मुलट्ठी, खजूर, मुनक्का के काढ़े मे भावना देकर दो रत्ति की गोलियां बनाले और एक वा दो गोली नित्य प्रातः सायं आमले के रस के साथ खावे तो पित्त हृद्रोग दूर हो।

### अन्य उपाय

लघु पञ्च मूल का काढ़ा बनाकर मिश्री मिलाकर पीवे तो पित्त हृद्रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय

बला पञ्चांग का काढ़ा बना कर उसमे मिश्री मिलाकर पीवे तो पित्त-हृद्रोग दूर हो।

### कफ हृद्रोग चिकित्सा ( वंगसेन से )

कायफल, बच, कचूर, रायसन, सोठ, पुष्करमूल, हरड़ इनका चूर्ण बनाकर आधा तोला लेकर गोमूत्र से खावे तो कफ हृद्रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय

छोटी इलायची, पिप्पलामूल, अतीस इनका चूर्ण बना कर शहद के साथ खावे तो कफ हृद्रोग, गुल्म एवं शूल दूर होते हैं।

### तिक्तक चूर्ण

नागरमोथा, इलायची, रक्तचन्दन, खस, अजवायन, चित्रा, मघ,

मिर्च, सोंठ, बिलछाल, कौड़, देवदारु, दारहलदी, तज, पापड़ा, दालचीनी, पिप्पलामूल, नीम, पटोलपत्र, मुनक्का, चिरायता, ककड़सिंगी, त्रायमाणा, रासना, नागकेसर, पतीस, समानभाग लेकर चूर्ण करे, इसके सेवन करने से कफ हृद्रोग एवं सन्निपात दूर होता है।

## कृमिहृद्रोगचिकित्सा

कृमिहृद्रोग मे लंघन, वमन, पाचन, चिकित्सा करने के अनन्तर कृमि नाश करने के उपाय करने चाहिये।

## अन्य उपाय

बावडिंग और हरड़ दोनो का चूर्ण बनाकर गोमूत्र के साथ खावे तो कृमिहृद्रोग दूर हो।

## अन्य उपाय

विडंगचूर्ण ६ माशे कांजी वा सिरके के साथ खावे तो कृमिहृद्रोग दूर हो।

## त्रिदोष हृद्रोग चिकित्सा

सोठ, सैंधा, भुनी हुई हींग, वच, अनारदाना, अमलवेद, इनका चूर्ण बनाकर गर्म जल के साथ खावे तो श्वास, शूल और हृद्रोग दूर हो।

## अन्य उपाय—( वंगसेन से )

हींग भुनी हुई, कुठ, वच, चित्रा, विड़नमक, सोठ, मघ, सौंचलनमक, पोहकरमूल, जौखार सब बराबर लेकर चूर्ण करे। ३-४ माशे चूर्ण जौ के काढ़े से अथवा अम्लवेद के रस के साथ खावे, तो शूल, हृदोग, श्वास कास मिट जाते हैं।

## अन्य उपाय

दशमूल का काढ़ा बनाकर सैंधानमक और जौखार मिला कर पीवे तो श्वास, कास, हृद्रोग, गुल्म आदि सब वातरोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

पोहकरमूल का चूर्ण बनाकर १ माशा भर शहद के साथ चटावे तो कास, श्वास, हृद्रोग, क्षय, शूल आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय—( वंगसेन से )

हरड, रायसन, मव, वच, कचूर, सोठ, पोहकरमूल, इनका चूर्ण बना कर शहद के साथ खावे तो हृद्रोग दूर हो।

## अन्य उपाय

वारहसिंगे के टुकड़े करके दो प्यालो मे वंद कर गजपुट मे भस्म करे, जब तक रंग सफेद न आवे घीकुआर मे खरल कर पुटे देते जावें। दो तीन पुट मे सीग के टुकड़े जलकर सफेद भस्म वन जाते हैं, इनको वारीक पीस कर रख छोड़े। दो रत्ति भस्म १-२ तोला घी मे मिला कर खावे तो हृद्रोग दूर हो।

## अथ उरोग्रह निदान ( वंगसेन से )

अभिष्यन्दि और भारी अन्न, सूखा मास तथा अन्य विरुद्धाहार करने से, मल मूत्र का वेग रोकने से कब्ज हो जाने से, उरोग्रह रोग होजाता है।

## उरोग्रह लक्षण

उरोग्रह मे तन्द्रा, अरोचक, शूल और मुंह मे से लार गिरती रहती है, यह लक्षण देख कर सोच समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये।

## उरोग्रह चिकित्सा

जौखार, चव, अमलवेद, भुनी हुई हीग, चित्रा, सैंधा, सौंचल इनका चूर्ण बनाकर काजी अथवा तिल तेल के साथ खावे तो उरोग्रह दूर होता है।

## सेवा

नमक की पोटलियां वनाकर तिल वा अलसी के तेल मे डुबोकर तवे पर गरम करके छाती पर टकोर करे तो उरोग्रह दूर होता है।

## उरोग्रह में पथ्य

लंघन, स्वेदन, वमन, छाती पर लेप, वस्ति, लाल चावल, मूग, कुलथी, छोटी मूली, तक्र, अंगूर, लसन, कांजी, सिरका, एरण्डतेल, शहद शराब, वर्षा का पानी, पान, पुराना गुड़ यह हृद्रोग मे पथ्य हैं।

## हृद्रोग में कुपथ्य

प्यास, शुक्र, वात, मुत्र, मल के वेग को रोकना, दांतो को अधिक

रगड़ना, नदी का पानी, भैंस का दूध, थकावट का काम, गंदा पानी, यह कुपथ्य हैं।

इति हृद्रोगाधिकार समाप्त।

# अथ मूत्रकृच्छ्ररोगाधिकार

अति व्यायाम करने से, तीक्ष्ण दवाई खाने से, रूखे सूखे पदार्थ खाने से, अत्यन्त मद्य पीने से, भोजन पर भोजन करने से, अधिक नाचने से, अजीर्ण हो जाने से, हाथी, घोड़े की अधिक सवारी करने से, जलचर प्राणियों का मांस खाने से, आठ प्रकार का मूत्रकृच्छ्र रोग होजाता है।

## वातज मूत्रकृच्छ्र लक्षण

वातज मूत्रकृच्छ्र में मूत्राशय और वंक्षण अर्थात् कूल्हे में अत्यन्त पीडा होती है। पेशाब बार २ कतरा २ उतरता है।

## पित्तज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

लिंग में अत्यन्त दाह हो, पीडा हो, मूत्र पीले रंग का लहू मिला हुआ हो, और बार २ उतरे तो पित्तज मूत्रकृच्छ्र जानो।

## कफज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

मूत्राशय और लिंग में सोज हो, मूत्र लेसदार हो, लिंग स्थूल हो जावे, या सूज जावे तो कफ का मूत्रकृच्छ्र जानो।

## त्रिदोषज हृद्रोग लक्षण

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र में तीनों दोषों के लक्षण पाये जाते हैं। यह मूत्रकृच्छ्र कष्टसाध्य होता है।

## चोट के मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

चोट लगने से मूत्रवाही स्रोत खराब होजाते हैं उसके वायु के समान लक्षण कहे हैं।

## विड्घातज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण

अपानवायु, टट्टी और पेशाब रुक जाते हैं, वायु प्रतिलोम होजाता है, कब्ज, अफारा, और पेट में शूल हो।

## शुक्रदोषज मूत्रकृच्छ्र

वातादि दोषो से जब वीर्य प्रेरित होता है तो मूत्र के मार्ग को रोक लेता है, इससे मूत्र थोडा २ निकलता है, साथ थोडा २ वीर्य भी आता है। वस्ति, इन्द्री और अंडकोशो मे पीड़ा होती है।

## अश्मरी कृच्छ्र के लक्षण

पेशाब मे रेत सी मिली हुई हो, मूत्रेन्द्रिय और अण्डकोशो मे पथरी समान पीडा हो तो अश्मरी अर्थात् पथरी का मूत्रकृच्छ्र जानो। पथरी का विशेष विवरण तो पथरी रोग मे बताएंगे, यहां संक्षेप से पथरी की उत्पत्ति कैसे होती है, यह बताएंगे। उदाहरण के रूप मे देखिये कि जैसे एक घड़े मे निरन्तर स्वच्छ पानी भरते रहने पर भी कुछ चिर के बाद घड़े की तह मे गाद सी जमी हुई पाई जाती है, इसी प्रकार आहार के रस मे से कफ के अंश मूत्राशय मे जमा होते रहते हैं, वे पित्त की गरमी और वायु की रूक्षता से सूखकर पत्थर की आकृति धारण कर लेते हैं तो उसे पथरी कहते हैं। समय पाकर वही पथरी वायु और पित्त की अधिक गरमी खुश्की से सत्व-रहित होकर टुकड़े २ हो जाती है तो रेत के समान बारीक होकर मूत्र के साथ बाहिर निकल आती है। पथरी बडी हो तो शस्त्र द्वारा निकाली जाती है। अगर छोटी हो तो छोटे २ टुकडे होकर बाहिर निकल आती है। और पेशाब तकलीफ से आता है, और इसे ही अश्मरी मूत्रकृच्छ्र अथवा शर्करा मूत्रकृच्छ्र कहते हैं।

## मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा

### वातजमूत्रकृच्छ्र का उपाय

गिलोय, सोठ, असगंध, आमला, भखड़े इनका काढा बना पीवे तो वायु का मूत्रकृच्छ्र और वस्तिशूल दूर होता है।

### अन्य उपाय—( वंगसेन से )

इटसिट, शतावरी, बकम लकड़ी, एरण्ड के बीज, कौंच बीज, बला की जड़, दशमूल सब बराबर लेकर पीसले, कुलथी के काढ़े अथवा जवाश साथ खावे तो वायु का मूत्रकृच्छ्र, विबंध और शूल दूर हो।

## पित्तजमूत्रकृच्छ्र का उपाय

कुशा, काही, गन्ना, सरकड़ा, दभ इन पांचो का काढा पीने से, अथवा इनका चूर्ण बनाकर दूध के साथ पीने से पित्त मूत्रकृच्छ्र और इन्द्री का खून बंद हो जाता है।

## अन्य उपाय

कास (काही जिसकी कलमे बनती हैं) शतावर, भखडे, गन्ना, कसेरु, विदारीकंद, कुशा इनका काढा बना, ठण्डा करके उसमे मिश्री मिला पीने से पित्त का मूत्रकृच्छ्र, इन्द्री का शूल और शर्कराकृच्छ्र दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

ककडी के बीज, मुलट्ठी, हरड, भखड़े, अमलतास, पखानभेद, जवाह, धमाहां इनका काढा बनाकर इसमे २ माशे जौखार, ६ माशे शहद और २ तोले खांड मिलाकर पीने से पित्त का कृच्छ्र, दाह, शूल आदि रोग दूर होते हैं।

## कफज मूत्रकृच्छ्र का उपाय

संभालू के बीज का ३ माशे चूर्णकर तक्र के साथ खाने से कफ का मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

## अन्य उपाय—( वंगसेन से )

मूंगे की भस्म दो रत्ती शहद के साथ चाटकर ऊपर से चावलो का पानी पीवे तो कफ का मूत्रकृच्छ्र दूर हो। भस्म विधि अन्त मे देखो।

## त्रिदोषजमूत्रकृच्छ्र का उपाय ( वीरसिंहावलोक से )

गो की लस्सी जो बहुत खट्टी हो उसमे २-३ माशे जौखार मिलाकर पीवे तो त्रिदोष का मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

## शुक्रकृच्छ्र का उपाय

शुद्ध शिलाजीत दो रत्ति, ६ माशे शहद के साथ सात दिन तक खावे तो शुक्रकृच्छ्र दूर होता है।

### अन्य उपाय

इलायची, पखानभेद, शुद्ध शिलाजीत और मघ, इनका चूर्ण बनाकर चावलों के पानी के साथ खावे तो मूत्रकृच्छ्र दूर हो, अथवा गुड मिला गोली करे चावलों के जल से खावे।

### अन्य उपाय

जोखार ३ माशे, खांड १ तोला दोनो मिला कर दूध की लस्सी के साथ खावे तो सब प्रकार के मूत्रकृच्छ्र दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

कंडियारी का रस वा काढा बना कर शहद मिलाकर पीवे तो सब प्रकार का मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

### अन्य उपाय

तिलछडी, पुठकंडा, केले के पत्ते, ढाक के पत्ते, सब बराबर लेकर अच्छी तरह सुखा ले, और आग लगा कर राख बनाले, उस राख को छः गुना पानी मे खूब घोल ले, और नितरने के लिये रख छोडे, जब पानी स्वच्छ हो जावे और गाद नीचे बैठ जावे तो उस पानी को दूसरे बर्तन मे सभाल कर नितार ले। फिर अग्नि पर धर कर खुश्क करले, और उस खार को खुर्च कर रख छोड़े। इसमे से १-२ माशा खार भेड़ के पेशाब के साथ खावे तो शर्करा दूर होती है।

### अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से )

कंडियारी बडी, पाढ़, मुलट्ठी, इन्द्रजौ, पृष्टपर्णी इनका काढ़ा बनाकर पीने से त्रिदोष का मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

### अभिघातज मूत्रकृच्छ्र का उपाय

आमले का रस दो तोले, गन्ने का रस १ पाओ, शहद १ तोला मिलाकर पीने से अभिघातज ( चोट का ) कृच्छ्र और पेशाब के साथ लहू आना बंद हो जाता है।

### अन्य उपाय

बडी इलायची, मघ, मुलट्ठी, पाषाणभेद, रेणुका, वासा के पत्ते,

गोखरू, एरंड की जड़, इन सब का काढ़ा करे, इसमें दो रत्ती शुद्ध शिलाजीत और मिश्री मिलाकर रोगी पीवे तो मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शर्करा, दाहरोग दूर हो।

## अन्य उपाय

पंढरी, जिसे पुंडरिया घास या आंख की लकडी भी कहते हैं, का चूर्ण करले और पानी के साथ खावे तो मूत्रकृच्छ्र, पथरी शर्करा आदि रोग दूर हो।

## त्रिदोषकृच्छ्र पर लघुलोकेश्वर रस ( रसरत्नाकर से )

रससिंदूर १ भाग, शुद्ध गंधक ४ भाग, दोनो को पीसकर पीली कौड़ियो मे भरे, सुहागा दूध मे पीस कर कौडियो का मुंह बंद करले, इन कौडियों को एक हांडी मे बंद कर चूल्हे पर एक पहर की आग दे, फिर शीतल होने पर निकाल ले और बारीक पीसकर रख ले, और २ से ४ रत्ति तक दवाई घी के साथ खावे और ऊपर से ७ से १६ तक काली मिर्चें चबावे तो आठ प्रकार के मूत्रकृच्छ्र दूर होते हैं।

## साधारण चिकित्सा क्रम

वायु के मूत्रकृच्छ्र मे-मालिश, निरूह और अनुवासनवस्ति, अवगाहन अर्थात् पानी मे गोते लगाना, उत्तर वस्ति अर्थात् इन्द्री जुलाब या इन्द्री के रास्ते पानी चढ़ाना। पित्त मे ठण्डे लेप, उत्तरवस्ति, ठण्डे पानी मे गोते लगाना। कफ मे-वस्ति, विरेचन, उत्तर वस्ति, स्वेदन, वमन, जौखार तथा अन्य तीक्ष्ण द्रव्य। त्रिदोष मूत्रकृच्छ्र मे वस्ति, अभ्यंग तथा मूत्राघात की चिकित्सा करे। शुक्रज मे शिलाजीत और शहद का प्रयोग करे, इनके अतिरिक्त, चूर्ण, स्वेद, अभ्यंग मलमूत्र के लाने के उपाय तथा दोषो को पहचान कर यथादोष चिकित्सा एवं पथ्यापथ्य व्यवस्था करे।

## पथ्य

लालचावल, जंगली मांसरस, लस्सी, दूध, दही, मूंग, परवल, गोखरू, खारा और ठंडा पानी और कपूरजल, नारियल, ताडफल, पुराना पेठा, ककड़ी, चौलाई, आमले, घी, नदी का पानी, कपूर, इलायची ये मूत्रकृच्छ्र मे पथ्य हैं इसके अतिरिक्त जो द्रव्य मल और मूत्र लाने वाले हैं सब पथ्य हैं।

कुपथ्य

परिश्रम, शराब, हाथी घोड़े की सवारी, अधिक नमक, पान, तेल, तिलकुट, हींग, रूखे खट्टे पदार्थ और विरुद्धाहारविहार मूत्रकृच्छ्र मे वर्जित हैं।

इति वातरक्त, ऊरुस्तम्भ, आमवात, शूल, उदावर्त्त, गुल्म, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र प्रमुखनाम सातवां अध्याय समाप्त।

---

# अथ आठवां अध्याय

सम्पूर्ण महात्मा और गुरुमहाराज एवं सरस्वती माता के चरण-कमल मे प्रणाम कर अब आठवे अध्याय का वर्णन आरम्भ करते हैं।

## अथ मूत्राघात रोगाधिकार।

### मूत्राघात निदान

विरुद्ध आहार विहार करने से और खासकर पेशाव रोके रखने से १३ प्रकार के मूत्राघात होते हैं। मूत्राघात का अर्थ है पेशाव का रुक जाना। और मूत्रकृच्छ्र मे मूत्र बनता भी कम है और जो बनता है वह बूंद २ या थोड़ा २ कष्ट के साथ आता रहता है, किन्तु मूत्राघात मे मूत्र बनता तो है और मूत्राशय मे जमा भी रहता है परन्तु बाहर निकलने मे रुकावट होती है, अर्थात् पेशाव रुका रहता है, और तकलीफ नही के बराबर होती है। किन्तु मूत्रकृच्छ्र मे तकलीफ अधिक होती है यही दोनो मे भेद है।

### मूत्राघात के भेद

मूत्राघात १३ प्रकार का होता है, १ वातकुंडलिका, २ अष्ठीला, ३ वातवस्ति, ४ मूत्रातीत, ५ मूत्रजठर, ६ मूत्रोत्संग, ७ मूत्रक्षय, ८ मूत्रग्रंथि, ९ मूत्रशुक्र, १० उष्णवात, ११ मूत्रसाद १२ विड्-विघात, १३ वस्तिकुण्डल।

### १—वातकुण्डलिका के लक्षण

अत्यन्त रूक्ष शीत पदार्थों के खाने से, और मलमूत्रादि के वेग

रोकने से, वस्ति स्थान मे वायु कुपित होकर कुण्डलरूप मे घूमता है, वस्ति मे ऐठन और वायु का शूल होता है, मूत्र शूल के साथ थोड़ा २ उतरता है उसे वातकुण्डलिका कहते हैं।

## २—मूत्राष्ठीला के लक्षण

वायु मूत्राशय और गुदा में छल्ली की तरह उभार करदे, और उसमें पीड़ा हो, अफारा हो, कब्ज हो वह छल्ली कभी छोटी कभी बड़ी होजावे उसे मूत्राष्ठीला कहते हैं।

## ३—वातवस्ति के लक्षण

पेशाब के रोकने से वायु वस्ति के मुह को बंद कर देता है, पेशाब रुक जाता है, वस्ति और पेट वा पसवाड़ों मे शूल होता है, उसे वातवस्ति कहते हैं।

## ४—मूत्रातीत के लक्षण

मूत्रातीत मे—देर तक पेशाब रोके रखने से पेशाब जल्दी नहीं उतरता, देर तक थोड़ा २ आता रहता है।

## ५—मूत्रजठर के लक्षण

देर तक पेशाब रोके रखने से अपानवायु प्रतिलोम होजाता है, पेट फूल जाता है, नाभि के नीचे अफारा और तीव्र शूल होजाता है, टट्टी पेशाब रुक जाते हैं, उसे मूत्रजठर कहते हैं।

## ६—मूत्रोत्संग के लक्षण

वायु के प्रतिलोम होजाने से, पेशाब करते समय पेशाब मूत्र प्रणाली इन्द्री अथवा इन्द्री के अगले भाग ( मणि सुपारी ) में रुकता हुआ प्रतीत हो, पेशाब के साथ कभी खून भी आजावे, पेशाब धीरे २ और थोड़ा २ पीड़ा सहित अथवा बिना पीड़ा के उतरे उसे मूत्रोत्संग कहते हैं।

## ७—मूत्रक्षय के लक्षण

गरमी के मौसिम मे रूखा सूखा दुबला मनुष्य धूप मे चले, अन्य कोई थकावट का काम करे तो पसीना आदि द्वारा शरीर का मूत्र बनने

वाला रस वाहिर निकल जाता है, वायु और पित्त गरमी और खुश्की कर देते हैं जिससे कि पेशाब बनता ही नहीं, इन्द्री में पीडा और दाह होते हैं, उसे मूत्रक्षय कहते हैं।

## ८—मूत्रग्रंथि के लक्षण

वस्ति अर्थात् मूत्राशय के मुंह पर पेशाब की एक गोल एवं कठिन गाठ सी बन जाती है, जिसमें पथरी की तरह पीड़ा होती हैं उसे मूत्रग्रंथि कहते हैं।

## ९—मूत्रशुक्र के लक्षण

मूत्र का वेग रोक कर जो नर स्त्री भोग करता है, उस समय वीर्य अपने स्थान से हिल जाता है, और पेशाब के आगे पीछे भस्म के रंग का पतला स्राव आता है उसे मूत्रशुक्र कहते हैं।

## १०—उष्णवात के लक्षण

अधिक गरमी और धूप मे घूमने और चलने से वात और पित्त बढ़कर मूत्राशय मे अत्यन्त दाह और शूल पैदा कर देते हैं, इससे पेशाब करते समय अथवा विना पेशाब के भी इन्द्री, गुदा, मूत्राशय मे अत्यन्त शूल और दाह होता है, पेशाब अत्यन्त पीला और लाल, खून मिला हुआ अथवा केवल खून ही पेशाब की जगह थोड़ा २ जलन के साथ उतरता है, उसे उष्णवात कहते हैं, कोई २ इसे सूजाक भी कहते हैं।

## ११—मूत्रसाद के लक्षण

वायु कुपित होकर पित्त अथवा पित्त-कफ दोनो को गाढ़ा कर देता है तो पेशाब कठिनता से थोड़ा २ सफेद पीला, लाल और गाढ़ा २ गोरोचन, अथवा शखभस्म के समान कई रगो वाला सूखने पर होजावे उसे मूत्रसाद कहते हैं।

## १२—विड्विघात के लक्षण

रूक्ष एवं अत्यन्त दुर्वल व्यक्ति को वायु के उदावर्त होने पर मल पेशाव मे घुल कर आवे और पेशाव मे टट्टी की वदबू हो और मूत्र कठिनता से उतरे तो उसे विड्विघात कहते हैं।

## वस्ति कुण्डल के लक्षण

जल्दी २ मार्ग चलने से ऊंची २ छलांगे लगाने से, चोट से, अधिक दवाने से, मूत्राशय अपने स्थान से हिलकर ऊपर उभर आता है, और गर्भ के समान प्रतीत होता है, उसमे दाह होता है, स्पन्दन अर्थात् वायु वहां फड़कता है, पेशाव बूंद २ टपकता है, और वस्ति के दवाने से पेशाव धार वंध कर आता है, शरीर ऐठता है, ज्वर होजाता है तीव्र शूल और दाह होता है। उसे वस्तिकुण्डल कहते हैं जो कि घोर शस्त्र और वज्र समान अत्यन्त भयंकर रोग होता है, साधारण बुद्धि वाले इस रोग को नहीं समझ सकते, इसमे वायु ही प्रधान होता है। इसमें यदि कुछ पित्त की भी अधिकता हो तो दाह, शूल, मूत्र विवर्ण हो जाता है और यदि उसमे कफ की अधिकता होजावे तो शरीर भारी सूज जाता है, पेशाव स्निग्ध श्वेत और गाढा होता है

## मूत्राघात के साध्यासाध्य लक्षण

जिसमे वायु की अधिकता हो । इसके साथ पित्त की अधिकता हो, शूल हो और मूत्र का रंग खराव हो, कफ की अधिकता हो और अंग भारी हो जावें, सोजा और पेशाव चिकना और भारी, गाढ़ा, सफेद होवे, लिंग के मुंह पर रुकावट सी मालूम होती हो। यह पित्त और कफ के योग वाले मूत्राघात प्राय. साध्य होते हैं, परन्तु केवल वायु का असाध्य, क्योंकि साधारण बुद्धिवाला वैद्य इसे समझ नहीं सकता।

## मूत्राघात की चिकित्सा

गोखरू का पञ्चांग ( अर्थात् पत्ते फल, फूल, जड़, शाखा ) लेकर काढ़ा कर शहद मिलाकर रोज पीवे तो तेरह प्रकार के मूत्राघात दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

सिर मुंडवा कर उसके ऊपर बढ़िया कपूर पानी में पीस लेप करो तो सजाक मूत्राघात दूर हो।

## अन्य उपाय

चित्रा, शतावर, तालमखाना, कौंचबीज, कौड़, गोखरू, बड़ी

इलायची इनका चूर्ण बनाकर चावलों के पानी के साथ पीवे तो मूत्राघात सुजाक, मूत्रकृच्छ्र आदि दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

मोरशिखा ( एक सिलयारे की किसम की बूटी होती है, इसके फूल चपटे मोटे झालरदार लाल रंग के मोर की कलगी के समान होते हैं, शीतकाल मे इसके फूल खिलते हैं, बड़े २ शहरों में बाग बगीचो मे आम लगाये जाते हैं ) के बीज १ तोला, वच ६ माशे दोनो को पानी के साथ पीस कर पीने से १३ प्रकार के मूत्राघात और सुजाक दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

कंडियारी का रस ३-४ तोले, शहद ६ माशे और मिश्री १ तोला मिला कर पीवे तो मूत्राघात और सुजाक दूर होते हैं।

### खनुगुप्ताद्य चूर्ण

मिश्री, मुनक्का, कौंच बीज, मघ, तालमखाना, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे, १ तोला चूर्ण शहद, घी और थोडे दूध मे मिलाकर चाटे ऊपर से दूध पीवे तो मूत्राघात दूर होता है।

### अन्य उपाय

चिड़िया की बीठ और कलमीशोरा दोनों को जल मे पीस बत्ती बना इन्द्री के मुंह मे रखे, तथा पीस कर इन्द्री पर लेप करे तो इन्द्री की सोज, पीडा, दाह और मूत्राघात ( रुकावट ) दूर होती है।

### अन्य उपाय

सफेद चंदन को गुलाब मे घिस कर इन्द्री पर लेप करने से लिंगदाह दूर होता है।

### अन्य उपाय

आमले और भखड़े दोनो को पानी मे पीस गुड़ मिला कर कोसा २ पीने से मूत्राघात दूर होता है।

### अन्य उपाय

अरणी, सोठ, सुहांजना, भखडा, पखानभेद, हरड़, अमलतास,

वरने की छाल, सब बराबर २ ले और पानी में पीस कर छानले फिर उसमें भुनी हुई हींग दो रत्ति और नमक १ माशा बुरक कर पीवे तो शूल, मूत्रकृच्छ्र पथरी, मूत्राघात दूर हों ।

## सुज़ाक की चिकित्सा

खीरे के बीज दो तोले, पानी में घोट कर छानले, फिर उसमें दो माशा कत्था घोलकर पिलावे तो सूजाक दूर हो ।

### अन्य उपाय

रूमी मस्तगी, सलियारा, शतावर और मुसली इनका चूर्ण बनाकर और सब के बराबर मिश्री मिलाले, १ तोला भर दवाई शीत किये हुए गो दुग्ध के साथ खावे अथवा बकरी के कच्चे दूध के साथ खावे तो सुजाक रोग दूर हो ।

### अन्य उपाय

गेहूं का निशास्ता ७ तोले, कमरकस ७ तोले, कलमी शोरा ३॥ तोले, काठे सुपारी ३॥ तोले, छोटी इलायची ४ तोले, सब को पीस कपड़छान करले, और एक या दो तोले दवाई गोदुग्ध की कच्ची लस्सी के साथ अथवा गोदुग्ध के साथ सुबह शाम खावे तो मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, सुजाक नया अथवा पुरना हो तत्काल दूर होता है, कई वैद्यों का मत है कि रोग पुराना हो तो कच्ची लस्सी के साथ और नया हो तो दूध के साथ लेना चाहिये।

### अन्य उपाय

केसू, कल्मीशोरा, गोखरू, जौखार, इलायची, खस, शंखावली, मुसली, सब समभाग ले चूर्ण करे फिर-सब के बराबर मिश्री मिलाले और १ तोला भर प्रातःकाल कची लस्सी के साथ खावे तो सूजाक, मूत्राघात आदि रोग सात दिन में दूर होते हैं ।

### अन्य उपाय

राल सफेद पीस कर चूर्ण करले, ६ माशे कची लस्सी के साथ प्रति दिन खावे तो सूजाक दूर होजाता है।

## अन्य उपाय

छोटी हजारदानी दोधक १ तोला भर ले और सिरदाई की तरह ५ तोले पानी मे रगड कर छान ले और मिश्री मिला अथवा विना मिश्री के सात दिन पीवे तो सूजाक दूर होता है।

## अन्य उपाय

गाजनी मिट्टी २ तोले, पानी १० तोले मे रात को भिगो छोड़े, सुबह मल छान कर मिश्री मिला सात या चोदह दिन तक पीवे तो सुजाक दूर होता है।

## सुजाक की पिचकारी

त्रिफला को रात भर पानी मे भिगो छोड़े और प्रातःकाल छानकर इन्द्री की पिचकारी करे तो सुजाक दूर होता है। ( इसके साथ ऊपर की कोई दवाई खाने को भी देनी चाहिये )।

## अन्य उपाय

दो तोले धनिया को कूट कर रातभर ८ तोले पानी मे भिगो छोड़े, सुबह मल छान कर मिश्री मिला कर पीवे तो मूत्राघात सुजाक दूर होता है।

## अन्य उपाय

बहुफली को पानी मे घोटकर अथवा रात भर पानी मे भिगो छोड़े और सुबह मल छान कर मिश्री मिला कर पीवे तो सुजाक दूर होता है।

## मूत्राघात में पथ्य

पसीना, मालिश, वस्ति, विरेचन परिषेक (तिरड़े), गोते मारना, उत्तर-वस्ति या इन्द्रीजुलाब, लाल चावल, दूध, दही, तक्र, उडद, पिट्ठी, गन्ना, पेठा, मुनका, खजूर, ताडफल, ताड की मिश्री, परवल, जौखार, मिश्री आदि मूत्राघात सुजाक में पथ्य हैं।

## कुपथ्य

रूखे, गरम चरपरे, और कब्ज करनेवाले पदार्थ, वमन आदि वेगो

को रोकना, व्यायाम करना, करीर और आम यह सुजाक वा मूत्राघात में कुपथ्य हैं।

इति मूत्राघातरोगाधिकार समाप्त।

# अथ अश्मरीरोगाधिकार

## अश्मरी रोग निदान

अश्मरी को साधारण भाषा में पथरी कहते हैं, कफ ही सूखकर छुहारे की गुठली के समान पत्थर का रूप धारण कर लेता है, वृक्क (गुरदे) मूत्रप्रणाली अथवा मूत्राशय जहां भी इसे सचिन होने का कारण प्रतीत होता है वहां ही जमा होकर 'पथरी' बन जाता है, यह रोग जवानों की अपेक्षा बच्चों मे अधिक होता है। जैसे—नदी में निरन्तर पानी बहने से पत्थरों पर काई आदि चिपकते रहते हैं, और सूखकर कठिन होजाते हैं जैसे गाय के पित्त में गोलोचन बनता है, और वहीं सूख कर कठिन होजाता है। अथवा—जैसे घड़े में निरन्तर स्वच्छ पानी भरते रहने पर भी कुछ काल के अनन्तर नीचे तह में मिट्टी सञ्चित हो जाती है इसी प्रकार गुर्दे, मूत्रप्रणाली एवं मूत्राशय में मूत्रक्रिया होती रहती है, और उसमे से कफ के अश गुरदे वा मूत्राशय मे सञ्चित होते रहते हैं, और समय पाकर अश्मरी (पथरी) का रूप धारण कर लेते है। अश्मरी चार प्रकार की होती है—१—वात, २—पित्त, ३—कफ, ४—शुक्र।

## अश्मरी के पूर्व रूप

मूत्राशय में अफारा, पसवाड़ों में पीड़ा, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अरोचक, पेशाब में बकरे की सी बदबू आवे, और पेशाब चीरता हुआ आता है।

## वात की अश्मरी के लक्षण

वायु की पथरी में—नाभि, मस्तक और मूत्राशय में अत्यन्त पीड़ा होती है, रोगी लिंग को मसलता है, होंठों को चबाता है, पेशाब बूंद २ कर उतरता है। पथरी कुछ लाल काले रंग की, और कांटेदार खुरदरी होती है।

## पित्त की अश्मरी के लक्षण

पित्त की पथरी मे—पेशाब जलकर आता है, मूत्राशय मे भी जलन होती है, शरीर मे आग सी लगी हुई प्रतीत होती है, चुभके अधिक पड़ती हैं। पथरी भिलावे की गुठली के समान श्याम, लाल, पीली रंगत की होती है।

## कफ की अश्मरी के लक्षण

कफ की पथरी भारी होता है, अरुचि, तद्रा होती है, पथरी भारी चिकनी, एवं श्यामरंग अथवा श्वेत मधु के समान रंगवाली होती है। प्रायः यह तीनो पथरिया बालको मे होती हैं।

## शुक्र की अश्मरी के लक्षण

शुक्राश्मरी अर्थात् वीर्य की पथरी, यह नौजवानों मे ही होती है, जब एक बार वीर्य अपने स्थान से छूट जावे और सारे का सारा इन्द्री द्वारा बाहर न निकले और शुक्र प्रणाली वा अण्डकोषो मे ही रुक जावे तो वायु उसे सुखा कर शुक्राश्मरी बना देता है इसमे शुक्रप्रणाली शुक्राशय और अंडकोषो मे पीड़ा होती है।

## अश्मरी के असाध्य लक्षण

पसवाडो मे शूल हो, शरीर अत्यन्त कृश पड गया हो, अंग ढीले पड़ गये हो, पेशाव के साथ खून आता हो, प्यास अधिक हो, हृद्रोग, पाण्डु, अरुचि, वमन, अंडकोश तथा नाभि पर सोज पड़ गई हो और पेशाव रुक जावे। यह असाध्य लक्षण हैं, शुक्राश्मरी भी असाध्य है।

नोट—इसमे शस्त्रचिकित्सा अर्थात् चीरफाड़ की चिकित्सा सफल रहती है, शस्त्रचिकित्सा ( चीरा देकर ) बढी से बडी पथरी सुगमता से निकाली जासकती है।

## अश्मरी चिकित्सा

### वात की अश्मरी का उपाय ( वंगसेन से )

सोठ, अरणी, पखानभेद, सुहाजना, वरना, गोखरू, हरड़, फालसा,

अमलतास, इनका काढ़ा बनाकर उसमे २ माशा नमक, १ माशा जौखार और दो रत्ति हीग मिला कर पिलाने से वात की पथरी, मूत्राघात, मूत्र-कृच्छ्र आदि रोग दूर होते हैं, यह दवा दीपन पाचन है।

## एलादि क्वाथ

इलायची बड़ी, मुलट्ठी, मघ, रेणुका, गोखरू, वासा, एरण्डजड, इनका काढा बनाकर उसमे दो रत्ति शुद्ध शिलाजीत मिला कर पीवे तो पथरी, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र आदि रोग दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, वरना की छाल और गोखरू इनका काढ़ा बनाकर उसमे १ तोला पुराना गुड़ और एक माशा जौखार मिलाकर पिलावे तो वायु की पथरी दूर होती है।

## अन्य उपाय

गोखरू, सोठ, वरना की छाल, इनको पानी मे पीस कल्क बना ले और उसमे गुड और जौखार मिलाकर खाने से वायु की पथरी दूर होती है

## अन्य उपाय

वरने की छाल को पानी मे घोटकर उसमे गुड़ मिलाकर पीवे तो वायु की पथरी, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात दूर होते हैं।

## पित्त की पथरी का उपाय

शुद्ध शिलाजीत, पखानभेद, जौखार सब समभाग लेकर चूर्ण कर शहद के साथ खावे तो पित्त की पथरी दूर होती है।

पाषाणभेद का चूर्ण ६ माशे, जौखार २ माशा दोनो को प्रतिदिन एक महीना भर तक्र के साथ सेवन करे तो पित्त की पथरी दूर होती है।

## अन्य उपाय

सब प्रकार की खारे अर्थात् जौखार, सज्जीखार, मूलीखार, केलाखार, पलाशखार इत्यादि जितनी भी खारे हैं तक्र के साथ ४१ दिन तक रोगी को पिलावे, और इन खारो के पानी मे पेया, यवागू, अन्न खिचड़ी आदि सिद्ध करके रोगी को खिलावे तो पित्त की पथरी दूर होती है।

## कफ की पथरी का उपाय

कुठ, हरड, वहेडा, आमला, देवदारु, मिर्च, चित्रा प्रत्येक दो २ माशा इनको बारीक कर १ पाओ वकरी के दूध मे पीसकर पीने से कफ की पथरी दूर होती है।

## शुक्र की पथरी का उपाय

१ तोला पुराना गुड ३ माशे जोखार दोनो को मिला कर पाच तोला पेठे के रस के साथ पीवे तो वीर्य की पथरी और पेशाव की रुकावट दूर होती है।

## अन्य उपाय

गुड, हलदी, दोनो को मिला कर काजी के साथ अथवा जवाश के साथ खावे तो शुक्र अश्मरी और पेशाव की रुकावट दूर होती है ।

## अन्य उपाय

पेठे का रस ५ तोला, जोखार २ माशे हींग भुनी हुई दो रत्ति मिला कर पीने से लिंगशूल, मूत्राशय की पीडा, वीर्य की पथरी दूर होती है।

## अन्य उपाय

इटसिट, गोखरू, हलदी, मूंगे की भस्म, बावची, दर्भ घास के फूल, इनका चूर्ण बना कर गन्ने के रस के साथ खावे तो शुक्राश्मरी दूर हो ।

## सब प्रकार की पथरी का उपाय

सोठ, वरने की छाल, गोखरू, ब्रह्मी, पखानभेद, इनका काढ़ा वना कर दो माशे जवाखार मिला पीवे तो सब प्रकार की पथरी दूर हो ।

## अन्य उपाय

गोखरू का चूर्ण बना कर ६ माशे तक शहद मिलाकर खावे और ऊपर से भेड का मूत्र पीवे तो दो तीन दिन मे सब प्रकार की पथरी दूर होती है।

## अन्य उपाय

वरने की जड का छिलका लेकर उसका काढ़ा पीवे तो सब प्रकार की पथरी दूर होती है।

## अथवा

सुहांजने की छाल का काढा पीने से भी सब प्रकार की पथरी दूर होती है।

## अन्य उपाय

हरड, सोंठ, जौखार, धनिया इनका चूर्ण बनाकर ६ माशे भर दही के तोड के साथ खावे तो पथरी दूर हो।

## अन्य उपाय

गोखरू, एरण्डबीज, सोंठ, बरनेकी छाल इनका काढ़ा बना कर पीवे तो पथरी दूर होती है।

## अन्य उपाय ( वरुणक्षार ) वरुणादिक चूर्ण

बरने की लकड़ी को जला कर राख को १६ गुणा पानी मे घोलकर रात भर रख छोडे, प्रातः पानी के नितरने पर उस नितरे हुए पानी को पृथक् करले और फिर अग्नि पर पानी को सुखाले, इस सूखे नमक को बरने की खार कहते हैं, यह खार ३ माशे गुड एक तोला भर मे मिला कर खावे तो सब प्रकार की पथरी दूर होती है।

## त्रिविक्रम रस

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध ताम्बे का बारीक पत्र अथवा तांबे की पतली तारें १ तोला, शुद्ध गंधक दो तोले, प्रथम पारा गधक की कज्जली करे, फिर तावे को मिला निर्गुण्डी रस मे खरल कर गोली बनाले, और वालुका यन्त्र वा लवण यन्त्र मे एक पहर भर पकावे, फिर निकाल कर बिजौरा के रस में खरल कर १-१ रत्ति की गोलियां बनाले, एक वा दो गोलियां बिजौरे के रस से खावे तो सब प्रकार की पथरी दूर होती है।

## आनन्दभैरव ( रसरत्नाकर से )

तिल पुठकंडा, करेला और जौ इनका पञ्चाग ( अर्थात् जड़मूल समेत ) कूट कर पलाश की लकड़ी मे खड्डा बना कर उसमे रखदे, और ऊपर से उसी का ढकना बना कर बद कर दे, और आग लगा दें, उस राख से बकरी के मूत्र मे १-१ माशे की गोली करे और बकरी के मूत्र

से लगातार ३ गोली तक एक दो सप्ताह खावे तो चार प्रकार की अश्मरी दूर होती है।

नोट—यह पाठ अब रसरत्नाकर मे नही मिलता।

### अन्य उपाय

इलायची, एरण्ड की जड़ पखानभेद, हरड़, भखडे, कुरंड, जवाह, और तर के बीज इनका काढा बनाकर पीवे तो पथरी, मूत्राघात, कृच्छ्र दूर हो।

### अन्य उपाय

नित्य प्रातःकाल देवदारु का काढ़ा बनाकर पीने से दाह, मूत्राघात और पथरी दूर होती है।

### अन्य उपाय

सब १ भाग, मिश्री ४ भाग, तर के बीज २ भाग इनका चूर्ण कर कच्ची लस्सी के साथ खावे तो मूत्रकृच्छ्र, सुजाक, मूत्राघात और पथरी रोग दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

इलायची चूर्ण १ माशा, हींग भुनी हुई २ रत्ति दोनो को दो तोला घी के साथ खावे तो मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और वीर्य की पथरी दूर होती है।

### अन्य उपाय ( रामविनोद )

कौड, हरड, नागरमोथा, पटोलपत्र, केले की जड़, वाँसा, सफेद चंदन, मुनक्का, तिपत्ती बूटी, सब दवाइया दो २ टंक, मिश्री १६ टंक, जौखार, जवाहा एक २ टंक, सब का चूर्ण बनाकर तीन टंक दवाई ठण्डे जल से खावे तो मूत्रकृच्छ्र पथरी आदि रोग दूर हो।

### अन्य उपाय

पित्त पापड़ा एक व दो तोले गौ की लस्सी के साथ ११ दिन तक खावे तो पथरी रोग दूर होता है।

## अन्य उपाय

एरण्ड की जड़ एक तोला भर, २१ दिन तक घी साथ खावे तो अश्मरी रोग दूर होता है ।

## अन्य उपाय

३ माशे खाकसी अथवा खीरे के बीज १ तोला भर, लस्सी के साथ २१ दिन तक पीवे तो पथरी दूर होती है ।

## अन्य उपाय

बाम्फ ककोड़े की जड़ अथवा बिजौरे की जड़ १ तोला भर, दूध के साथ खावे तो पथरी दूर हो ।

## अथ लिंगशूल उपाय

तुम्मे की जड़ को आदमी के पेशाब में पीस कर इन्द्री पर लेप करे तो इन्द्री का दर्द दूर हो ।

## अन्य उपाय

सफेद चंदन को गुलाब मे घिस कर लेप करे, अथवा इसमे कत्था भी मिलाकर लेप करे तो इन्द्री की जलन, शूल पाका फोड़ा आदि दूर होते हैं ।

## अन्य उपाय

रसौत को मक्खन मे मिला कर इन्द्री पर लेप करे तो दाह, शूल, पाका दूर हो ।

## अश्मरी रोग में पथ्य

वस्ति, विरेचन, वमन, लघन, अवगाहन, पसीना, कुलथी, जौ, चावल, शराब, पका हुआ पेठा, गोखरू, वरना, अदरक, पखानभेद, जौखार आदि पथ्य हैं ।

## कुपथ्य

वेगो को रोकना, खट्टे, कब्ज करने वाले, रूखे, भारी पदार्थ और मिथ्या आहार विहार नहीं करने चाहिये ।

इति अश्मरीरोगाधिकार समाप्त

# अथ प्रमेहरोगाधिकार

## प्रमेह निदान

जो मनुष्य अधिक बैठा रहे, अथवा अधिक सोनेवाला हो, अथवा दही दूध, मास, मछली, मीठे पदार्थ, नवीन अनाज तथा गुड के बने हुए पदार्थ तथा अन्य कफ कारक पदार्थों के खाने का अभ्यासी हो और आरामतलब हो उसे प्रायः प्रमेह हो जाता है।

## प्रमेह की संप्राप्ति

बिगड़े हुए दोप वस्ति मे पहुंच कर, चरबी, मास, रस, लसीका आदि धातुओ को मूत्रमार्ग से बाहिर निकाल देते है तो बीस प्रकार का प्रमेह रोग हो जाता है।

## प्रमेह भेद

कफ के दस, पित्त के छः, वायु के चार, इस प्रकार से २० प्रमेह होते है। चूंकि प्रमेह कफ प्रधान होता है इस लिये प्रथम कफ का ही नाम आया है।

## कफ के प्रमेह

१—उदकमेह, २ इक्षुमेह, ३—सान्द्रमेह, ४—सुरामेह, ५—पिष्टमेह, ६—शुक्रमेह, ७—सिकता मेह, ८—शीतमेह, ९—मन्दमेह, १०—लालामेह, ये कफ के दस प्रमेह होते हैं।

## पित्त के प्रमेह

१—क्षारमेह, २—नीलमेह, ३—कालमेह, ४—मंजिष्ठमेह, ५—हारिद्रमेह, ६—रक्तमेह, ये छः पित्त के प्रमेह होते हैं।

## वात के प्रमेह

१—हस्तिमेह, २—वसामेह, ३—मज्जामेह, ४—मधुमेह, ये चार वात के प्रमेह होते हैं।

## प्रमेह के असाध्य लक्षण

हृदय, गुदा, सिर, कंधे, मुख, पीठ तथा अन्य मर्मस्थानो मे पीड़ा

हो, प्रमेह डिकाएं निकल आएं, अग्निमद होजावे, बल नष्ट होजावे और रोगी नित्यप्रति क्षीण होता जावे, अथवा बल भी घटे कभी बढ़े तो असाध्य प्रमेह समझे तथा वायु के प्रमेह भी असाध्य ही होते हैं।

## प्रमेह के पूर्व रूप

दांत मैले पड़ जाते हैं, हाथ पाओं जलते हैं, सिर के बाल जटा के समान होजाते हैं, शरीर भारी और आलस्ययुक्त हो यह प्रमेह के पूर्व रूप हैं।

## १—उदकमेह के लक्षण

जिस रोगी को बार २ पानी के समान निर्मल और शीतल पेशाब उतरे उसे उदकमेह कहते हैं।

## २—इक्षुमेह

गन्ने के रस के समान रंगवाला और मीठा पेशाब उतरे तो इक्षुमेह समझो।

## ३—सांद्रमेह

मूत्र घना हो और और नीचे जम जावे उसे साद्रमेह कहते है।

## ४—सुरामेह

पेशाब शराब के समान गंध और रंगन वाला उसे सुरामेह कहते हैं।

## ५—पिष्टमेह

पेशाब गाढ़ा हो और चावलों की पिट्ठी के समान नीचे जम जावे तो पिष्टमेह जानो।

## ६—शुक्रमेह

पेशाब में वीर्य की गिलावट हो तो शुक्रमेह जानो।

## ७—सिकतामेह

पेशाब मे बालू के समान छोटे २ कण पाए जावे तो सिकतामेह होता है।

## ८—शीतमेह

मीठा और शीतल पेशाब बार २ उतरे तो शीत प्रमेह समझे।

## ९—मन्दमेह

थोडा २ करके धीरे २ पेशाब उतरे तो मंदमेह या शनैमेह समझे।

## १०—लाला मेह

सूत के तार के समान लार के रूप मे पेशाब उतरे तो लालामेह जानो।

## पित्त प्रमेह

१—मूत्र का रंग नीला हो तो नीलप्रमेह समझे।

२—मूत्र का रंग काला हो तो कालमेह समझें।

३—मूत्र का रंग हलदी के समान हो तो हारिद्रमेह जानो।

४—मूत्र का रंग मंजीठ के समान हो तो मंजिष्ठमेह जानो।

५—मूत्र लेसदार हो और स्वाद मे खारा हो तो क्षारमेह समझे।

६—मूत्र मे रक्त मिला हुआ हो अथवा लाल मूत्र हो तो रक्तमेह समझें।

## वातप्रमेह

१—मूत्र मे चरबी हो और चरबी समान रंगत हो तो वसामेह जानिए।

२—मूत्र मे मज्जा हो और मज्जा के समान रंगत हो तो मज्जमेह जानिये।

३—हाथी के मद के समान मूत्र उतरे तो हस्तिमेह समझे।

४—पानी के समान स्वच्छ एवं मधुर हो औरजिस मे ओज मिला हुआ हो उसे मधुमेह समझिये।

विशेष—पीछे बताया गया है कि प्रमेह कुल २० होते है, जिस मे १० कफ के, ६ पित्त के और ४ वात के होते हैं, इन मे कफ के जो दस हैं वे साध्य होते हैं, क्यो कि उनमे चिकित्सा दोप और दूष्य की समान ही है और पीछे यह भी बताया गया है कि प्रमेह कफ और चरबी की

खराबी से होते हैं। कफ दोष और मेद दूष्य यह दोनो ही समान गुण वाले होते हैं इस लिये जो दवाई कफ को दूर करेगी वह मेद को भी दूर करेगी, अर्थात् एक ही दवाई से कफ, और मेद प्रमेह दूर हो जाते हैं, पित्त मे यह बात नहीं क्योकि पित्त गरम होता है और मेद शीत गुण वाली होती है, जो दवाई पित्त को कम करेगी वह जरूर मेद (चरबी) को बढ़ाएगी, जो दवाई चरबी को दूर करेगी वह पित्त को बढ़ायेगी, इस लिये चिकित्सा में कठिनता आजाती है इसीलिये पित्तप्रमेह को याप्य कहा गया है, और संशमनी चिकित्सा करनी चाहिये, याप्य का अर्थ है कि दवाई खाते रहो तो फायदा और दवाई छोड़ने पर फिर रोग हो जाता है। बाकी रहे चार वायु के प्रमेह वे असाध्य होते हैं, क्योंकि शरीर को जीवित रखने वाले सत्वस्वरूप वसा, मज्जा और ओज खुर २ कर मूत्र के साथ निकलते रहते हैं, हड्डिया खोखली पड जाती हैं, शरीर का ओज ( मिठास ) भी निकलता रहता है, ऐसी अवस्था मे पहुंचे रोग की कोई चिकित्सा नहीं है इस लिये मधुमेहादि रोग असाध्य माने गये हैं। मधुमेह को जिया बेतस' या 'डायबैटीज' कहते हैं, इस मे मूत्र अधिक आता है, मूत्र में शक्कर ( ओज ) आती है, और प्यास भी अधिक लगती है। आज कल यह रोग शहरो मे लगभग ५० फी सदी पाया जाता है।

## प्रमेह चिकित्सा

### कफ के १० प्रमेहों का उपाय

१—कायफल, मोथा, लोध, हरड़ इनका काढ़ा शहद मिलाकर उदक-मेह को दूर करता है।

२—पाढ, अर्जुन, धनियां, वायविडंग इनका काढ़ा मधु से पीवे तो इक्षुमेह दूर होता है।

३—तगर, वायविडंग, हलदी, दारु हलदी का काढ़ा मधु से सांद्रमेह को दूर करता है।

४—कदंब और अर्जुन की छाल, और अजवायन इनका काढ़ा मधु मिला पीवे तो सुरामेह दूर होता है।

५—खैर, वावडिंग, दारुहलदी, धावे के फूल, इनका काढ़ा मधु मिला पीवे तो पिष्टमेह दूर होता है।

६—देवदारु, कुठ, श्वेत चंदन, तगर इनका काढ़ा मधु मिला पीवे तो शुक्रमेह दूर होता।

७—दारु हलदी, त्रिफला, अरनी, पाढ़, इनका काढ़ा मधु मिला पीने से सिकतामेह दूर होता है।

८—पाढ़, मूर्वा, गोखरू इनका काढ़ा मधु मिला पीवे तो शीतमेह नष्ट होता है।

९—वच, खस, हरड, गिलोय इनका काढ़ा मधु मिला पीने से मंद मेह दूर होता है।

१०—जामुन की छाल, आमले, चित्रा, सप्तपर्णी इनका काढ़ा मधु मिला पीने से लाला मेह शान्त होता है।

## पित्त के प्रमेहों का उपाय

### पित्त प्रमेह में

१—खस, चंदन, अर्जुन की छाल, लोध पठानी इनका काढ़ा मधु मिला कर पीवे तो पित्तप्रमेह दूर होता है।

२—खस, नागरमोथा, हरड, आमले, इनका काढा मधु मिला कर के पीवे तो पित्तप्रमेह दूर हो।

३—निंव की छाल, आमले, चित्रा, पटोलपत्र इनका काढ़ा मधु मिला कर पीवे तो पित्तप्रमेह शान्त होता है।

४—नागरमोथा, हरड़, कालामोखा इनका काढ़ा बना मधु मिला कर पीवे तो पित्त प्रमेह दूर होता है।

५—लोध पठानी, आमले, धनिया, धावे के फूल इनको मधु मिला कर पीवे तो पित्त प्रमेह दूर हो।

६—सोठ, पतीस, अर्जुन, कमल, धावे के फूल, इनका काढ़ा मधु मिला पीवे तो पित्तमेह दूर होता है।

अर्जुन की छाल, नागकेसर, धनिया इनका काढा मधु मिला कर पीवे तो पित्तप्रमेह शान्त होता है।

८—नीलोफर, प्रियंगु, केसू, लाल कमल इनका काढ़ा मधु मिला कर पीने से पित्तमेह शान्त होता है।

९—पाषाणभेद, पीपल की छाल, जलवेंत इनका काढा मधु मिला पीने से पित्तप्रमेह को शान्त करता है।

१०—दारु हलदी, कमल, नागरमोथा इनका काढ़ा मधु मिला पीवे तो पित्तप्रमेह शान्त होता है।

## वात के प्रमेहों की चिकित्सा

### मधुमेह का उपाय

१—हरड, वहेडा, आमला, अमलतास, मुनक्का इनका काढा करके मधु मिला पीवे से मधुप्रमेह दूर होता है।

### वसामेह का उपाय

१—चित्रा, गिलोय इनका काढ़ा कर के पीवे।

२—पाढ़, कुडासक इनका काढ़ा बना कर पीवे।

३—कौड, कुठ इनका काढ़ा वना कर पीवे, तो वसामेह दूर होता है।

### हस्तिमेह का उपाय

१—पाढ़, सिरस की छाल, जवाहा, मूर्वा, तिंदुक, केसू, कैथ फल इनका काढ़ा कर के प्रतिदिन प्रातःकाल पीवे तो हस्तिमेह दूर होता है।

### मज्जमेह का उपाय

हरड़, वहेडा, आमला, दारु हलदी, देवदारु, नागरमोथां, इनका काढ़ा शहद मिला कर पीने से मज्जामेह दूर होता है।

अथवा—कुड़े की छाल, विजैसार, नागरमोथा दारुहलदी, हरड़, वहेड़ा, आमला इनका काढ़ा वना कर पीने से मज्जमेह दूर होता है।

### शुक्रमेह का उपाय ( वंगसेन से )

नागरमोथां, सवाल ( पानी का जाला ) करञ्ज की छाल, कसेरु, दूब, कायफल इनका काढ़ा वना कर शहद मिला पीवे तो शुक्रमेह और कफपित्त प्रमेह दूर होता है।

## सब प्रमेह का उपाय

१—गिलोय का रस २ तोला शहद मिला कर पीवे। २--कच्ची हलदी और आमले दोनो के रस मे मधु मिला कर पीवे तो सब प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

१—त्रिफला चूर्ण ६ माशे बराबर शहद मिला कर खावे।

२—शिलाजीत २ रत्ती शहद मिला कर खावे, ।

३—हरड़ चूर्ण ३ माशा, लोह भस्म १ रत्ती शहद से खावे तो सब प्रकार के प्रमेह दूर हो ।

## अन्य उपाय

त्रिफला, चित्रा, कंडियारी, मुलट्ठी, इनका काढ़ा मधु मिला पीवे तो सब प्रमेह दूर हो।

## अन्य उपाय

त्रिफला, इन्द्रायणफल, मोथा, देवदारु, हलदी इनका काढा शहद मिला पीवे तो बीस प्रमेह दूर हो।

## न्यग्रोधादि चूर्ण (बंगसेन से)

वड, पीपल, गूलर, अमलतास, सोनापाठा, अनन्तमूल, जामुन, आम अर्जुन इनका छिलका, फल का गूदा कैथ, चिरौंजी, वच, बरना, महुआ का फूल, मुलट्ठी, लोधपठानी, परवल, नीम की छाल, ककड़सिंगी, जमालगोटे की जड (दती), चित्रा, अरहर, त्रिफला, करञ्जबीज, इन्द्रजो, शुद्ध भिलावे, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे, ३-४ माशे चूर्ण शहद से चाटे ऊपर से त्रिफला का काढा पीवे तो बीस प्रकार के प्रमेह पिडका, वीर्यदोष, मूत्रकृच्छ्र आदि रोग दूर हो जाते हैं।

## गोक्षुरादि चूर्ण

गोखरु जड़ पत्ते सहित, मोथा, गिलोय, बावची, गूलर के पत्ते, दर्भ, कुशा, गंडदूर्वा, रोहिततृण, (पन्ही घास) धनिया, इटसिट, त्रिवी, मघ, सोंठ, देवदारु, वावडिंग, सारिवा, मिर्च, कमीला, भंडिगी, एरण्ड

की जड, हलदी, दारुहलदी, कड़ियारी, चित्रा, दन्ती, कौड, सब सम-भाग लेकर चूर्ण करे, चूर्ण से आधी लोहभस्म मिलावे, और खूब रगडाई करे, मात्रा १ माशे दोनो समय गरम पानी से खावे। शास्त्र मे इसकी मात्रा १ तोला लिखी है, जो वहुत अधिक है, उसमे ऐसा करना चाहिये कि यदि सब दवाइयां एक २ तोला हो तो लोह भस्म ६ माशे मिलानी चाहिये, फिर इसकी मात्रा शक्ति अनुसार ६ माशे से १ तोला तक ले सकते हैं। इससे वीस प्रकार के प्रमेह, मद, श्वास, ववासीर, कामला, हलीमक, पाण्डु, उदररोग, गुल्म, तिल्ली आदि रोग दूर होते हैं, गोमूत्र में खरल कर गोली वना कर यह अधिक फायदा करती है।

## रक्तमेह का उपाय

माजूफल, गोखरू, मजीठ, सुपारी के फूल, मोथा, हरड़, वहेड़ा, आमला, इनका चूर्ण वना ६ माशे शहद के साथ खावे तो रक्तमेह दूर होता है और शरीर भी पुष्ट होता है।

## तेलमेह का उपाय

चने की दाल को सात भावना गूलर के दूध की देवे, प्रतिदिन १ तोला भर चबावे तो तेलमेह दूर होता है।

## हरिद्रमेह का उपाय

हलदी कच्ची १० टंक, आमले २० टंक, मिश्री ३० टक, यह चूर्ण १ तोला कच्ची लस्सी से खावे तो हलदिया प्रमेह दूर होता है।

## लालियामेह का उपाय

आमले, कुठ, शतावर, कच्ची हलदी, कौंचवीज, मूसली सफेद सव समान भाग, सव से दुगुनी मिश्री, इनका चूर्ण वना कर १ तोला भर कच्ची लस्सी के साथ प्रभातकाल खावे तो लालियाप्रमेह दूर होता है।

## छाछियाप्रमेह का उपाय

छोटी दोधक (हजार दानी) १ तोला भर रोज सवेरे घोट के पीवे तो सात दिन मे छाछियामेह दूर हो।

## गुहियामेह का उपाय

चावलो की माड मे २ तोले घी और चार तोले खाड मिला कर पीवे तो गुहियाप्रमेह दूर होता है। इस प्रमेह मे मल की दुर्गंध आती है।

## सब प्रमेह पर लवंगादिचूर्ण ( योगाचिन्तामणि से )

लौंग, सोठ, मघ, कंकोल ( सरद चीनी ), श्वेत चंदन, मोथा, खस, इलायची, काला अगर, तवाशीर, असगंध, गोखरू, जायफल, त्रिवी, शतावर, तगर, गिलोय. नागकेसर, कमल, सब समान भाग ले चूर्ण करे, ६ माशे से तोला भर चूर्ण खावे तो बीस प्रकार के प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र आदि रोग दूर होते हैं।

## रसगोली

रससिंदूर, वंगभस्म, लोहभस्म, तीनो १-१ टंक, जायफल, इलायची, लौंग, अकरकरा, जावित्री, मघ, मिर्च, सोठ, नागकेसर, चित्रा, असगंध, सब दो दो टंक, मिश्री ५० टक, ऊपर की दवाइयो का कपड छन चूर्ण करे, फिर मिश्री की चाशनी बना कर उसमे सब दवाइया मिला ले और ३-३ माशे की गोलिया बना ले, साझ सवेरे एक एक गोली खाने से बीस प्रकार के प्रमेह दूर होता है।

## अन्य उपाय ( सिद्धयोग )

लौंग, जावित्री, नागकेसर, मघ, जायफल, दारचीनी, भांग, अकरकरा, मिर्च, समान भाग ले चूर्ण करे, प्रतिदिन एक टंक खावे तो कफ और वादी के प्रमेह दूर होते हैं।

## अन्य उपाय

कुलफे के बीज, बहुफली, मुंडी, श्वेतजीरा, धनिया, कासनी, मुलट्टी, शतावरी, सलियारा, सब बराबर लेकर चूर्ण करे १ तोला चूर्ण रात को पानी मे भिगोवे, प्रातःकाल मिश्री मिला खावे तो ७ दिन मे २० प्रमेह दूर हो।

इति प्रमेहरोगाधिकार समाप्त।

# अथ प्रमेहपिडकाधिकार

जो प्रमेह का निदान है वही प्रमेह पिडका का है, प्रमेह पुराना हो जावे तो प्रमेह पिडका ( फोडे फिंसिया ) निकल आया करतो हैं, आज कल जिसे 'कारवकल' या पीठ का फोडा कहते हैं वह भी प्रमेह पिडका ही का भेद होता है।

पिडका के भेद—१ शराविका, २-कच्छपिका, ३-जालिनी, ४-विनता, ५ अलजी, ६-मसूरिका, ७-सर्पपी, ८-पुत्रिणी, ९-विदारिका, १०-विद्रधि, ये दस प्रकार की पिडिकाएं होती हैं।

**१. शराविका के लक्षण**—जो फोड़ा सन्धियो मे, मर्म मे, मोटे मांस मे प्याले के समान बीच से गहरा हो उसे शराविका कहते हैं।

**२. कच्छपिका के लक्षण**—जो फोडा कछुए की पीठ के समान उठा हुआ हो उसे कच्छपिका कहते हैं।

**३. जालिनी के लक्षण**—जालिनी मांस मे जाले के समान होती है और खासकर पीठ या उदर पर होती है, इसमें पीडा और दाह अधिक होते हैं।

**४. विनता के लक्षण**—जो फोड़ा वड़ा भारी और नीले रंग का हो उसे विनता कहते हैं।

**५. पुत्रिणी के लक्षण**—जिसके चारो ओर छोटी छोटी फिंसियां हो उसे पुत्रिणी कहते हैं।

**६. मसूरिका के लक्षण**—जो फिंसियां मसूर के दाने के समान हो उन्हे मसूरिका कहते हैं।

**७. अलज़ी के लक्षण**—लाल काले फोड़ो वाली अलजी होती है।

**८. विदारी के लक्षण**—जो फोडा विदारीकन्द ( सियाली ) के समान गोल और कठिन हो उसे विदारिका कहते हैं।

**९. सर्षपी**—जो सफेद सरसो के समान श्वेत व छोटी छोटी फिंसियां हो सर्षपी कहते है।

१०. विद्रधि के लक्षण—विद्रधि रोग के जो लक्षण हैं वे ही इसमें होते हैं, परन्तु इसका कारण प्रमेह होता है।

## असाध्य प्रमेह पिडका

जो पिडका गुदा मे, हृदय, सिर, पीठ, तथा मर्मस्थान मे हो, रोगी दुर्वल हो और मंदाग्नि हो तो असाध्य समझो।

## पिडिका के उपद्रव

प्यास, मोह, हिचकी, मद, श्वास, ज्वर, वीसर्प, मांस संकोच, हृदय आदि मर्मस्थान का अवरोध, यह पिडकाओ के उपद्रव होते हैं।

कफ, प्रमेह मे पिडका कफ लक्षणो वाली, पित्तज मे पित्त के और वातज मे वातलक्षणो वाली होती हैं। स्त्रियो को महीने महीने वाद माहवारी खून निकलता रहता है इसलिये स्त्रियो को प्रमेह नहीं होता।

## प्रमेहपिडका की चिकित्सा

नीम, मजीठ, वावची, हलदी, गेरी, इनको कूट कर रात भर भिगो छोड़े, प्रातः मलछान शहद मिला पीवे। वाकी जो फोक वचे उसे वारीक पीसकर शरीर पर मर्दन करे और दो घड़ी वाद नहाले, इससे प्रमेहपिडका दूर होती है।

लेप—गेरी, हलदी, रसौंत इनको मखन मे मिलाकर मलने से प्रमेहपिडका दूर होती हैं।

अन्य लेप—कडवा तेल लगाकर ऊपर से कमीला वुरके तो प्रमेह पिडका दूर होती है।

अन्य उपाय—मजीठ, हलदी, गेरी, गिलोय, मिर्च, कौड इनका चूर्ण शहद से खावें तो सव पिडका दूर हो।

## प्रमेह में पथ्य

लघंन, वमन, विरेचन, दीपन पदार्थ, वाजरा, कोदो, कंगुनी, सवांक, गेहूं, कुलथी, मूंग, अरहर, चना, जौ, यूष, तिल, लाजा, पुरानी शराव, गधे और भैंस का पेशाव, सोहांजना, गूलर, लहसन, करेला, ककोड़ा,

केला, गोखरू, कमल, खजूर, नारियल, कपित्थफल, जामनफल, आमले, हाथी घोड़े की सवारी, कषाय पदार्थ, खैर, इन्द्रजो, पेठा, इनमे भी जो और आमले खास पथ्य हैं ।

### प्रमेह में कुपथ्य

मूत्रादिवेग का रोकना, तंबाकू पीना, पसीना देना, फस्द खोलना, दिन मे सोना, दही, नया अनाज, काजी, सिरका, नयी शराब, नमक, दूध, गुड़, पिट्ठी के पदार्थ, मछली आदि का मास, खारे पदार्थ, तेल, मधुर पदार्थ गन्ने का रस और भी कफ और चरबी को बढाने वाले पदार्थ नहीं खाने चाहिये ।

इति प्रमेह-प्रमेहपिडकारोगाधिकार समाप्त ।

## अथ मेदरोगाधिकार

### मेदरोग निदान

दिन मे सोने से, कसरत न करने से, मधुर, स्निग्ध, वादी, कफ और आमकारक पदार्थ अधिक खाने से, मेदरोग अर्थात् 'मुटापा' हो जाता है ।

### मेद लक्षण

मोटा मनुष्य बे-हिम्मत और अशक्त हो जाता है, थोड़ा काम करने पर दम फूल जाता है, प्यास, भूख, मोह, निद्रा अधिक होती है, दम घुटता है, गले मे घुर २ की आवाज हो, पसीना अधिक और बदबूदार हो, शरीर मे अधिक चरबी बढ़ने से रोग भी अधिक बढ़ जाते हैं, रोग बढकर मनुष्य को मार देते हैं, इसलिये मेद रोग बडा बुरा कहा गया है ।

### अतिस्थूल के लक्षण

अतिस्थूल मनुष्य के हाथ-पाओ मोटे होते हैं, पेट बहुत बढा हुआ होता है, कुच और साथल अर्थात् चूतड चरबी से लटक जाते हैं, सारा शरीर ही भारी होजाता है ।

### मेदरोग की चिकित्सा

चव्र, चित्रा, मघ, मिर्च, सोठ, भुनी हुई हींग, सौंचर नमक, इनका

चूर्ण वना कर छाछ के साथ खावे तो मेद रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय ( वंगसेन से )

त्रिफला, त्रिकुटा, नमक इनका चूर्ण वना कड़वे तेल से ६ मास तक चाटे तो मेद रोग दूर होता है।

### अन्य उपाय

त्रिफला चूर्ण १-२ तोले गोमूत्र ८ तोले के साथ नित्य खावे तो मेद रोग दूर हो जाता है।

### अन्य उपाय

अदरक रस १ तोला, शहद ६ माशे नित्य खावे तो मुटापा दूर होजाता है।

### अन्य उपाय ( वीरसिंहावलोक से )

त्रिफला, त्रिकुटा, लोहभस्म, समान भाग कीकर रस मे खरल करे, १ माशा दवा ६ माशे शहद के साथ खावे तो मेद रोग दूर हो ।

### अन्य उपाय

सोठ, वावडिंग, जौं, आमले, लोहभस्म, जौखार, इनका चूर्ण १ माशा भर नित्य शहद के साथ खावे।

### अन्य उपाय

त्रिकुटा, जीरा, चव, चित्रा, सौंचरनमक, हींग इनका चूर्ण कर गरम जल से नित्य ले तो मेद रोग दूर हो।

### अन्य उपाय

त्रिफला, मोथा, सोठ, चित्रा, शुद्धगुग्गुल, वावडिंग, समान ले गोमूत्र मे १-१ माशे की गोलिया बनावे, १—२ गोली नित्य खाने से मोटापा दूर होता है।

अन्य—मुलट्ठी चूर्ण शहद के साथ ६ मास तक खावे तो मुटापा दूर होता है।

## अन्य उपाय

चित्रा, त्रिफला, त्रिकटु, कौड, सुहांजना, कमल, छोटी कटेरी, वडी कटेरी, हलदी, दारुहलदी, पाढ, अतीस, अरनी, हींग, इमली, मूली के बीज अजवायन, धनिया, चित्रा, सौंचर नमक, सफेद जीरा, हाऊबेर, सब समान भाग ले चूर्ण करे, तेल, घी अथवा शहद के साथ खावे तो मेद, पाण्डु, शोथ, वमन, ववासीर, क्रिमि, सग्रहणी मोटापा आदि रोग दूर होते हैं।

## वडवानल रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल, ताम्र की भस्म चारो वरावर ले, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे फिर अन्य दवाइयां मिला खूब रगड़ाई करे और एक दिन आक के दूध मे खरल कर एक २ रत्ति की गोलिया वनावे और शहद के साथ खावे, फिर दो वा चार तोला शहद वरावर वा दुगुना पानी मिला नित्य पीवे तो मेद रोग मुटापा, प्रमेह, दूर होता है।

## कृश को स्थूल करने का उपाय

## अमृतार्णव रस

रससिन्दूर ३ तोला, स्वर्णभस्म १ तोला, सत गिलोय ४ तोला, मिश्री कूजा ८ तोले, प्रथम रससिन्दूर और स्वर्णभस्म को खरल मे डाल खूब पीसे जब दोनो एक जान होजावे तो सतगिलोय मिलाकर खूब खरल करे जब यह तीनो मिल जावे तो मिश्री मिला कर खरल करे, जब चारो एक जान हो जावे तो शीशी मे सम्हाल कर रख छोड़े, इसमे से चार रत्ति वा एक माशा दवाई ले ३ माशे शहद और एक तोला घी मिला कर खावे ऊपर से दूध पीवे और रात को सोते समय ३ माशे असगंध चूर्ण वरावर की मिश्री मिला गोदुग्ध से खावे तो दुबला पतला शरीर मोटा और स्वस्थ हो जाता है।

## पूर्णचन्द्र रस

अभ्रकभस्म, लोहभस्म, रससिन्दूर, शुद्ध शिलाजीत, वायविडंग, स्वर्णमाक्षिकभस्म, सब समभाग, वायविडंग का चूर्ण करले, फिर सब मिला

कर सम भाग शहद और घी के साथ एक दिन खरल करे, फिर दो रत्ती लेकर ६ माशा सेमल फूल के चूर्ण के साथ शहद मिला एक माशा भर खावे तो मनुष्य मोटा हो।

## गात्रदुर्गंधतानाशक लेप ( वंगसेन से )

वासा अथवा विल के पत्तो का रस निकाल कर उसमे शंखभस्म मिला कर वगल व अन्य सारे शरीर पर मालिश करे तो पसीने से होने वाली शरीर की वदवू दूर होती है।

## अन्य उपाय

मुंडी चूर्ण ३—४ माशे काजी के साथ खावे तो मुखदुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—हरडचूर्ण का उवटन वना कर शरीर पर मालिश करे तो दुर्गंध दूर होती है।

अन्य—हरड़ का चूर्ण शहद और तुलसी का रस मिला कर चाटे तो दुर्गंध दूर हो।

अन्य—चमेली के फूल और हरड़ दोनो को पीस सारे शरीर पर धूप मे वैठ मालिश करे तो दाद पसीना और शरीर दुर्गंध दूर हो।

## उवटन (पञ्चसायक से)

हलदी, गोखरू, सोठ, नख, नागरमोथा, सरसो, केसर, इलायची, कपूर, कचूर सव एक २ टंक, चिरौंजी १० टंक, चन्दन श्वेत ४ टंक, सव का वारीक चूर्ण कर कडवे तेल मे उवटन करले तो शरीर की दुर्गंध दूर होती है, शरीर सुन्दर और सुगध युक्त हो जाता है।

## वगलगंध उपाय

विल के पत्तो के रस मे हरड़ और कचूर का चूर्ण मिलाकर वगल मे खूब मलो तो वगलगंध दूर होती है।

अन्य—वच, वावची, मोथा, खस, कचूर, छड़ीला, वालछड, कपूर, इनको पीस वगल में मले तो वगलगंध दूर हो।

अन्य—मुर्दासंग, कचूर, कपुर तीनो को पानी में पीस कर वगल मे मले तो वगलगंध दूर हो।

अन्य—मोथा, हरड, इमली के वीज, विलगिरी, मेचके इनको पानी मे पीस लेप करो तो वगलगंध दूर हो ।

अन्य—नागकेसर, सफेद चंदन, अगर, विलगिर, तेजपत्र पानी मे पीस सात दिन तक लेप करो तो वगलगंध दूर हो ।

### प्रस्वेद उपाय

भुने हुए चनो का आटा तेल मिला उवटन की तरह शरीर पर मले तो अधिक पसीना आना दूर होता है ।

अन्य—कचूर, लोध, कपूर, खस, नागकेसर भुने चने का आटा सव का चूर्ण कर वटना करे तो प्रस्वेद दूर हो ।

नोट—जिन लोगो को अधिक पसीना आता हो, अथवा सन्निपातादि मे अधिक पसीना आवे तो ये ऊपर के दोनो योग अधिक फलदायी हैं ।

### मेद रोग में पथ्य

सोच करना, परिश्रम करना, वमन विरेचन लेना, जागना, फाका लेना, वटना मलना, धूप मे फिरना, हाथी घोड़े की सवारी, घूमना, मुट्ठी चापी करना, मैथुन करना, सवांक, चना, कोदो, जौ, मसूर, कुलथी, मूग, लाजा, लस्सी, शराव, चिभड़, वैगन, सरसो का तेल रूखे अन्न, चंदन का लेप, गरम जल, और शिलाजीत खाते रहना, ये मेद रोग मे पथ्य हैं।

### कुपथ्य

स्नान, रसायन दवाइयों का सेवन, चावल, गेहूं, दूध, गन्ना, रस, गुड़, उड़द, तथा पेट भर कर खाना, स्वेदन, मछली, मांस, दिन में सोना, घी तथा मीठे एवं वादी करने वाले पदार्थ कुपथ्य हैं ।

इति मेदरोगधिकार समाप्त ।

## अथ उदररोगाधिकार

गले वासे, मलीन आहार करने से, मन्दाग्नि से तथा अजीर्ण रहने से जव मल पेट मे सचित हो जाता है तो आठ प्रकार के उदर रोग १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ स्रीह, ६ वद्ध, ७ क्षत ८ जलोदर दूर होते हैं ।

## उदर रोग के सामान्य लक्षण

दुर्बलता, चलने फिरने की शक्ति न हो, अंगो मे सूजन होजावे, शरीर शिथिल होजावे, अफारा हो, दाह हो, विषाद, सुस्ती, हवा और टट्टी रुक जावे वा कब्ज रहे, अग्नि मंद हो, यह सामान्य लक्षण हैं।

## वात उदर के लक्षण

वातोदर मे पेट कठोर हो, नाभि और पसवाडो मे सोज हो, पसली, पसवाडे, पेट, पीठ, कमर और जोडो मे शूल हो, सूखी खांसी हो, अगड़ाई आवे, शरीर की रंगत कुछ काली सी फिर जावे, चुभके पडें, भरी हुई मशक समान आवाज होती है।

## पित्त उदर के लक्षण

पित्त के उदर मे—ज्वर, मूर्च्छा, प्यास, दाह, भ्रम, अतिसार और पसीना अधिक आता है, मुख का स्वाद कडवा हो जाता है, शरीर विशेष कर पेट की रंगत हरी, पीली होती है, और पेट पर हरे नीले रंग की शिराएं उभरी रहती हैं, मलमूत्र का रंग हरा पीला मुंह से धुआं सा निकलता है, जल्दी पक जाता है।

## कफ उदर के लक्षण

कफ के उदर मे—शरीर सुस्त रहता है, पेट सूज जाता है, नींद अधिक आती है, भोजन मे रुचि नहीं होती, श्वास बढ जाता है, पीड़ा होती है, पेट पर श्वेत धारियां होती हैं, मल सफेद कच्चा और चिकना आता है, खासी, छूने से शरीर ठडा प्रतीत होता है, पेट कठोर सा होता है।

## दूष्योदर ( सन्निपात उदर ) के लक्षण

जादू-टोना करने से तथा नाखुन, केश, स्त्री का माहवारी खून, मल-मूत्र तथा विष आदि अन्न के साथ खिला देने से अथवा शत्रु धोके से जहर दे दे, गन्दा जल तथा दूषीविष के खाने से दूष्योदर या सन्निपातोदर हो जाता है, रोगी का रंग भुसला पड जाता है, रोगी दिन प्रतिदिन घटता ही जाता है, तृषा, मूर्च्छा तथा पाण्डु रोग के लक्षण पाए जाते हैं।

बदमाश स्त्रियां अपने पति को वश करने के लिये ऐसा करती हैं, स्त्री स्त्री को भी करती है, पुरुष भी कर देते हैं ।

## प्लीहोदर के लक्षण

विदाही तथा दुष्ट आहार करने से, दही, मछली आदि अधिक खाने से, दूषित जल के पीने से अनूप देश जहां नदी का जल पिया जाता है, धानो की फसलें होती हैं ऐसे प्रान्तों मे रहने से, कब्ज करने वाले पदार्थ अधिक खाने से विषमज्वर से सीहा अर्थात् तिल्ली बढ़ जाती है, उसे सीहोदर कहते हैं, इसमे पेट के बाईं ओर तिल्ली बढ़ती जाती है, अफारा, मंदाग्नि, तृष्णा, दाह, उदावर्त हो जाते हैं, इसे तापतिली भी कहते हैं ।

## बद्धगुदोदर के लक्षण

जिस की आनो मे अन्नमल सूख कर अड़ जावे, अथवा बाल या और कोई गुच्छेदार वस्तु खाई जावे जो पेट मे मल को रोक रखे, जैसे कूड़ा करकट नाली को बद कर देता है वैसे ही आंतो में मल रुक जाता है, टट्टी यत्न करने पर भी नहीं आती अथवा रुक २ कर थोड़ी २ बड़ी कठिनता और तकलीफ से आती है, पेट नाभि स्थान पर बढता जाता है, उसे बद्ध-गुदोदर कहते हैं ।

## क्षतोदर के लक्षण

यदि कोई मनुष्य भोजन के साथ सुई, पिन, काच वा और तीक्ष्ण काटा आदि गलती से खा जावे उससे पेट की आंते अदर से कट जाती हैं, और मल उस कटे हुए मार्ग से चुडता रहता है यदि पेट की चमड़ी भी कट जावे तो टट्टी उस रास्ते से बाहिर आती रहती है, नाभी के नीचे का भाग बढ़ जाता है, रोगी को बडा कष्ट होता है, उसे क्षतोदर या परिस्रावी उदर कहते हैं ।

## जलोदर के लक्षण

जो मनुष्य पञ्चकर्म अर्थात् वमन, विरेचन, निरूह, अनुवासन करने के बाद ही अथवा घी तेल आदि स्नेह पीने के अनन्तर तत्काल ही ठण्डा पानी भरपेट पी लेता है, उसके जलवाही स्रोत रुक जाते हैं, और पेट

धीरे २ बढना शुरू हो जाता है, जैसे भरी हुई मशक हिलाने से थलकती है वैसे ही पेट को अगुली से हिलाने पर थलकने लगता है, और धीरे २ शरीर का रस भी पेट मे ही सञ्चित होने लगता है, रक्त नहीं बनता, पांडु रोग के लक्षण होजाते हैं, हृदय कमजोर पड जाता है, हाथ, पाओ मुंह, पेट, सूज जाते है, इस रोग को जलोदर कहत हैं। जितने भी उदर रोग हैं समय पर इलाज न करने से जलोदर बन जाते हैं। उस समय चिकित्सा कठिन हो जाती है।

## तीन मल के लक्षण

१—जलोदर मे उदावर्त, अफारा और शूल हो तो वायु का जानो।

२—दाह, ज्वर, तृषा, मोह हो तो पित्त प्रधान जानो।

३—शरीर भारी हो, अरुचि हो, कठोरता हो तो कफ प्रधान समझो।

## असाध्य लक्षण

आखो पर सोज आगई हो, इन्द्री टेढी होगई हो, चमड़ी पतली और लिचपिची होगई हो, वल, रक्त, मास, अग्नि क्षीण होगई हो तो असाध्य उदर जानो।

अन्य—पसलियो मे पीड़ा हो, अन्न पचे नही, शरीर सूज गया हो, अतिसार होगया हो, पेट मे से पानी निकालने पर भरता जावे तो असाध्य उदर जानो।

## आठ महारोग

१—वातव्याधि, २—अश्मरी, ३—कुष्ट, ४—प्रमेह, ५—उदर, ६—भगंदर, ७—बवासीर, ८ संग्रहणी। ये आठ महारोग होते हैं, इनसे घसा हुआ रोगी बड़ी कठिनता से ही स्वस्थ होता है, इसलिये आरम्भ मे ही इनकी चिकित्सा का यत्न करे।

## उदर रोग चिकित्सा

### वातोदर का उपाय ( वंगसेन से )

दशमूल का काढ़ा वना कर उसमे दो तोले एरण्डतैल मिला कर पीवे तो वातोदर दूर हो।

अथवा—गोमूत्र ८ तोले से तोला भर त्रिफला चूर्ण खावे तो वातोदर दूर हो।

अन्य—दशमूल का काढा कर उसमे ४ तोला गोमूत्र मिला पीवे तो वातोदर शूल-सोज आदि दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

सैंधा, सौंचल, विड़ यह तीनो नमक, पाढ़, जौखार, दन्ती, वच, कुठ, जीरा, अजवायन, हींग, सज्जीखार, चव, चित्रा, सोंठ इनका चूर्ण कर गरम जल से खावे तो वात उदर शोथ शूल दूर हो।

## सामुद्रादि चूर्ण (वंगसेन से)

समुद्र नमक, जौखार, सौंचर नमक, सैंधा नमक, सोंठ, अजवायन, मघ, अजमोद, चित्रा, हींग, वायविडंग, सब का चूर्ण कर घी के साथ भोजन के पहले ग्रास के साथ खावे तो वात उदर, गुल्म अजीर्ण, पाण्डु, संग्रहणी, ववासीर, भगंदर आदि रोग दूर होते हैं।

## त्रैलोक्यसुन्दर रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध, पारा १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग इनकी कज्जली करे, अभ्रक भस्म, मिट्ठातेलिया, सैंधा नमक, कालाजीरा, चित्रा, वायविडंग, गिलो सत, जौखार इनका कपडछान चूर्ण कर मिलाले, फिर खरैटी अदरक, निर्गुण्डी और बिजौरा के रस में एक एक दिन खरल करके दो २ रत्ती की गोली बनावे, एक या दो गोली घी के साथ खावे तो वातोदर दूर हो।

## पित्तोदर उपाय ( वृंद से )

पृष्टिपर्णी, कडियारी, खरैटी, पीपल की लाख, सोंठ इनका काढ़ा बना पीवे तो पित्तोदर दूर हो।

अन्य—कालीमिर्च ७ दाने, खांड १ तोला मिला नित सवेरे जल के साथ खावे तो पित्तोदर दूर हो।

## महावाह्निरस ( रसरत्नाकर से )

शुद्धपारा ४ भाग, शुद्धगन्धक ८भाग, हलदी, हरड़, बहेड़ा, आमला, शुद्ध मनसिल, प्रत्येक दो २ भाग, त्रिवि, चित्रा, शुद्ध जमालगोटा प्रत्येक

तीन २ भाग, मघ, मिर्च, सोठ, दन्ती, जीरा सब आठ २ भाग प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे, फिर अन्य चीजो का कपडछन चूर्ण मिलाकर थोहर के दूध, जयंती के रस, भंगरे के रस मे, चित्रे के काढ़े मे और एरण्ड तैल मे सात २ वार भावना देकर खरल करे फिर शास्त्र के अनुसार १ माशे से चार माशे तक गरम जल के साथ खावे तो उदर रोग दूर हो, अथवा तक्र मे थोडा नमक मिला कर उससे खावे तो पित्तोदर दूर हो।

## कफोदर का उपाय

बहेडा और हरड दोनो को पीस गोमूत्र के साथ खावे तो कफोदर दूर हो।

## अन्य उपाय ( वृंद )

मघ, मिर्च, सोठ, अजवायन, जीरा इनका चूर्ण गरम जल से खावे तो कफोदर दूर होता है।

## दूष्योदर ( सन्निपात ) का उपाय

कुठ का चूर्ण कर १-२ माशे गरम जल से खावे तो त्रिदोष का उदर दूर हो।

अन्य—मघ, मिर्च, सोठ, जौखार, सैधानमक इनका चूर्ण तक्र के साथ खावे तो त्रिदोष उदर दूर हो।

अन्य—१-नमक और मघ वातोदर को दूर करते है, २-कालीमिर्च और खाड पित्तोदर को दूर करते हैं।

३—जीरा, हाऊवेर, मघ, मिर्च, सोठ, अजवागन इनका चूर्ण कफोदर को दूर करता है।

## वद्धोदर का उपाय ( वंगसेन से )

हाऊवेर, आजवायन, सैधानमक इनका चूर्ण कर काजी के साथ दे तो वद्धोदर दूर होता है।

अन्य—मघ, मिर्च, सोठ, सैधानमक, जौखार इनका चूर्ण अधरिडके के साथ खावे तो वद्धोदर दूर हो।

छिद्रोदर का उपाय

मघ को शहद के साथ खाकर ऊपर से तक्र पीवे तो छिद्रोदर दूर होता है ।

जलोदर का उपाय

शंख को कांजी मे घिस कर शहद मिला के २१ दिन तक खावे तो जलोदर दूर होता है ।

अन्य उपाय (वंगसेन से)

इन्द्रजौ ४ माशे, हींग भुनी हुई ४ माशे, शंखभस्म ४ माशे, मघ ४ माशे, इनका चूर्ण कर रोज़ सुबह शहद के साथ खाकर ऊपर से गोमूत्र पीवे तो जलोदर दूर होता है ।

शोफ उदर का उपाय

जो रोगी सात दिन तक भैंस वा बकरी का मूत्र पीवे उसका शोफोदर अर्थात् पेट का सोजा दूर हो ।

प्लीहोदर का उपाय वंगेश्वर रस (रसरत्नाकर से)

रससिंदूर ४ तोले, वगभस्म ४ तोले, ताम्रभस्म १६ तोले, शुद्ध गंधक १६ तोले, सब को आक के दूध मे खरल कर गोला बना कर गजपुट मे भस्म करे, दो रत्ती दवाई घी के साथ खावे तो तिल्ली, वायगोला, क्षतोदर की पीडा दूर होती है ।

अन्य उपाय

सैंधानमक, हलदी, राई तीनो पाच २ पल, छाछ ५ सेर सब को एक घडे मे डाल कर तीन दिन तक रख छोड़े, चौथे दिन से रोज पाच पल प्रतिदिन पीवे तो प्लीहोदर दूर हो ।

अन्य उपाय

सैंधानमक १ माशा १ बूंद आक के दूध मे मिला कर खावे तो प्लीहोदर दूर हो ।

अन्य—एरण्ड राख गोमूत्र से पीवे तो प्लीहोदर दूर होता है ।

अर्कलवण

सैंधानमक और आक के पत्ते समान भाग कूट कर गजपुट मे भस्म

करे, फिर समान भाग हलदी मिला ३ माशे प्रमाण गोमूत्र से खावे तो प्लीहोदर एवं अन्य उदर रोग दूर होते हैं ।

### अन्य उपाय

केवड़े की खार गुड के साथ खावे और ऊपर से गोमूत्र पीवे तो २१ दिन में प्लीहोदर दूर होता है ।

### सर्व उदर रोग का उपाय (वंगसेन से)

दन्ती, शंखिनी (थोहर का भेद) त्रिवी, इन्द्रायण, हरड़, वहेड़ा, आमला, कालादाना, हलदी, कमीला, वावडिंग इनका चूर्ण बना कर तोला भर गोमूत्र से पीवे तो सब उदर रोगों को दूर करता है ।

अन्य—चव, चित्रा, दन्ती, हरड़, वहेडा आमला, वावडिंग सब का चूर्ण गोमूत्र से खावे तो उदर रोग दूर हो ।

अन्य—चव, सोंठ इनका दूध में काढा कर पीवे; अथवा चित्रा, देवदार इनका काढ़ा कर पीवे तो उदर रोग दूर हो ।

### पटोलादि चूर्ण

पटोलपत्र १ भाग, हलदी २ भाग, वावडिंग ३ भाग, हरड़ ४ भाग, वहेड़ा ५ भाग, आमला ६ भाग, कमीला ७ भाग, काला दाना ८ भाग, त्रिवी ९ भाग सब का चूर्ण कर १ तोला भर गोमूत्र से खावे तो आठ प्रकार के उदर रोग दूर हो ।

### नारायण चूर्ण (वंगसेन से)

अजवायन, हाऊबेर, धनिया, हरड, वहेडा, आमला, पिप्पलामूल, कलौंजी, असगंध, सौंफ, कचूर, वच, सैंधा, सौंचल, विड, सामुद्र, सांभर यह पांच नमक, जौखार, मघ, मिर्च सोंठ, चोक, वावडिंग, सब सम भाग, दन्ती ३ भाग, इन्द्रायण तीन भाग, त्रिवी ३ भाग, थोहर ४ भाग, सब का चूर्ण कर ले, इसे नारायण चूर्ण कहते हैं, इस चूर्ण को गरम जल, गोमूत्र, तक्र, वा निंबू विजोरे के रस से खावे तो आठों उदर, वायु की रुकावट, भगदर, कब्ज, शूल, पाण्डु, बवासीर, दूर होते हैं, जैसे नारायण का नाम लेने से पाप दूर होते हैं वैसे ही इससे रोग दूर होते हैं ।

## लघुयवान्यादि चूर्ण

अजवायन, चित्रा, जौखार, वच, दन्ती, मघ, सैंधानमक, इनका चूर्ण गरम पानी से पीवे तो उदर रोग दूर हो ।

## भल्लातकादि मोदक

शुद्ध भिलावे, हरड, जीरा, इनका चूर्ण कर गुड मिला १ तोला भर खावे तो ७ दिन मे उदर लीहा दूर हो ।

## अग्निमुखलवण

चित्रा, त्रिवी, दन्ती, हरड, बहेड़ा आमला, पोहकर मूल, समान भाग ले चूर्ण करे, सब के बराबर सैंधानमक मिला ले, फिर सब को थोहर के दूध मे खरल कर प्यालो मे वन्द कर गजपुट दे, फिर भस्मीभूत लवण को निकाल ले, १-२ माशा नित्य तक, गोमूत्र व गरम जल से पीवे तो उदर रोग शूल, ववासीर, पाण्डु, तिली, कफ और वादी के रोग, पेट दर्द आदि रोग दूर हो ।

## वृहद् यमानीचूर्ण

अजवायन, चित्रा, वावडिंग १—१ भाग, सोठ, इटसिट, देवदार दो दो भाग, त्रिफला ४ भाग, इनका चूर्ण कर गरम जल से पीवे तो उदर रोग दूर हो, गोमूत्र मे इसकी गोली बना गरम जल से खावे तो आठो उदर रोग दूर हो ।

## शोफ उदर का उपाय

इटसिट, नीम की छाल, सोठ, पटोलपत्र, कौड, गिलोय, हरड, दारु हलदी इनका काढा पीवे तो शोफोदर दूर हो ।

## जलोदर उपाय (वैद्यकुतूहल से)

ताम्रभस्म, शुद्ध जमालगोटा, मघ, चोक, सब बराबर थोहर दूध के साथ तीन दिन तक पीस २—४ रत्ति तक गोमूत्र के साथ खावे तो जलोदर दूर हो, पानी न पीवे, दूध या गोमूत्र ही पीवे ।

## जलोदर रस

रस सिदूर, शुद्ध नीलाथोथा, मघ, शुद्ध जमालगोटा, अमलतास का गूदा, सब का चूर्ण कर गोदुग्ध से खरल कर १—१ रत्ति की गोली

बना ले निबू के रस के साथ खावे गोमूत्र ही उसे पीने को दे तो जलोदर दूर हो।

### उदर रोग मे पथ्य

विरेचन, लंघन, कुलथी, मूंग, लाल चावल, सर्वशाक, लसन, तक्र एरण्ड तेल, उबाले हुए चने, पान, सुहाजना, दूध, घी, जौ, बकरी, भैस, गधी, ऊँटनी इनका पेशाब पथ्य हैं। नाभि के चार अंगुल नीचे नश्तर लगाकर पानी निकाल दे तो जलोदर दूर होता है।

### उदर रोग में कुपथ्य

स्नेह पीना, धूम पीना, जल, वमन, दिन मे सोना, व्यायाम, गुड़, अनूपमास, सवारी, तिल स्नान, पत्तोवाले साग, फलियो वाले अनाज, गदापानी, भारी अन्न, कब्ज करने वाले पदार्थ तथा अन्य मिथ्याहार विहार उदर रोग मे वर्जित हैं।

इति उदर रोगाधिकार समाप्त।

# अथ शोथरोगाधिकार

### शोथ निदान संप्राप्ति

रोग से, वमन विरेचनादि से, फाका लेते रहने से अत्यन्त कमजोर मनुष्य जब खारे, खट्टे, तीक्ष्ण, गरम और भारी पदार्थ अधिक खाता है, अथवा दही, कच्चे पदार्थ, मिट्टी, अधिक साग, विरोधि पदार्थ, गले सड़े पदार्थ, विषयुक्त अन्न पान खाने से, बवासीर से, आलस्य से, गर्भस्थान पर चोट लगने से, वमन विरेचन आदि न लेने से, अथवा वमन विरेचनादि मे पथ्यादि न रखने से, प्रसूतिकाल मे बदपरेहजी हो जाने या बच्चा ठीक पैदा न होने से जब शरीर मे रक्त, वात, पित्त, कफ, यह चारो प्रकुपित हो जाते हैं तो वायु इनको शिराओ मे धकेल देता है और स्वयं भी इन दोषो से उलझ कर जहां तहां रुक जाता है, फिर सारे शरीर मे या किसी एक अंग मे कठिन उभार हो जाता है, नस नाडिया खिचती हैं, शरीर मे दाह होता है, शरीर भारी हो जाता है। इस रोग को शोथ सोजा, सूजन वा सोज कहते हैं।

### शोथ के भेद

१ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ वातपित्त, ५ वातकफ ६ पित्तकफ, ७ सन्निपात, ८ चोट तथा ६ विप, इन भेदो से शोथ ६ प्रकार का होता है।

### वातज शोथ के लक्षण

वायु मे चलती फिरती सोज होती है, चमडी पतली सी पड़ जाती है, नाडियो का जाल उभरा हुआ प्रतीत होता है, कुछ लाल काली-सी रगत हो जाती है, रोमाच होता है, तोद और पीड़ा होती है, दवाने पर फिर शीघ्र उभर आती है, और दिन के समय सोज अधिक होती है।

### पित्तज शोथ के लक्षण

पित्तशोथ मे स्वेद, तृष्णा, भ्रम, ज्वर और दाह अधिक होते हैं, लाल काली रगत हो जाती है, स्थान गरम रहता है छूने से पीड़ा होती है, और आँखो मे भी लाली आजाती है।

### कफज शोथ के लक्षण

कफ के शोथ मे—शरीर भारी भारी होता है, अरोचक, उबकाई, मंदाग्नि, पाण्डु रोग हो जाते हैं, नीद अधिक आती है, शोथ कठोर भारी होती है, देर से उत्पन्न होती और देर से ही मिटती है। रात को बढ जाती है।

### द्विदोष और त्रिदोषज शोथ के लक्षण

दो दोषो के लक्षण एक जगह मिल जावे तो द्वन्द्वज या दो दोषो से होने वाला शोथ जानो और जब वात-पित्त कफ के लक्षण एकत्र मिल-जावें तो सन्निपात का शोथ समझो।

### अभिघातज शोथ के लक्षण

ईट, रोड़ा, लकडी, पत्थर तथा शस्त्र आदि तथा भिलावे, कौंच आदि की रगड से जो शोथ हो जाता है, उसमे प्रायः पित्त के लक्षण पाए जाते हैं, वह शोथ शरीर मे जल्दी फैल जाता है, दाह होता है, ज्वर होता है और जल्दी पक जाता है।

### विषज शोथ के लक्षण

विप मे बुझाए हुए शस्त्र से, या जहरीले प्राणियो के सीग, दात

आदि के चुभ जाने से लूना आदि जीवों के मल, मूत्र, वीर्य, विष वृक्षो की हवा से या शरीर वा वस्त्रादि पर जहरीली दवा आदि बुरक देने से शरीर में मृदु, चलता फिरता, व लटकने वाला, शीघ्र फैलने वाला शोथ हो जाता है, उसमे दाह और पीडा भी होती है।

## शोथ के उपद्रव

जो सोज आदमी के पैर और स्त्री के मुँह से आरम्भ होती है वह असाध्य है, अथवा विष मे १ वमन, २ श्वास, ३ प्यास, ४ बुखार और ५ दुर्बलता अधिक होवे, ६ अग्नि मन्द हो जावे और ७ अतिसार हो जावे तो रोग असाध्य होता है।

## वातशोथ का उपाय

विल, अरनी, सोनापाठा, पाटल, गम्भारी इन पाचो का छिलका, इटसिट, सोठ, एरण्ड जड, गिलोय, इनका चूर्ण बनाकर नित्य गर्म जल से प्रातःकाल पिया करे तो वातशोथ दूर हो।

## वातशोथ पर लेप

रक्तचंदन, दूव, मुलट्ठी, पद्माख, मूली, नडे की जड, खस, सुगन्धवाला, कमल इनको पानी में पीसकर लेप करने से वायु का शोथ दूर होता है।

## अन्य उपाय

१—नित्य पन्द्रह दिन तक त्रिवी को गर्मजल से खावे तो वायु का शोफ दूर हो।

२ अथवा—दो तोला एरण्ड तैल नित्य पीने से वायु का शोथ दूर होता है।

## काढ़ा

सोठ, इटसिट, विल छाल, अरनी छाल, गंभारी छाल, सोनापाठा की छाल, पाढल छाल, एरण्ड जड इनका काढ़ा बनाकर पीवे तो वायु का शोथ दूर हो जाता है।

## अन्य

इटसिट, हरड़, सोठ, देवदार, सूखी मूली इनको पीसकर घी के साथ खावे तो वातशोथ दूर हो।

### पित्तशोथ का उपाय

१—त्रिफले का काढ़ा गोमूत्र मिलाकर पीवे तो पित्तशोथ दूर हो।

२ अथवा—त्रिफला और पटोलपत्र इनका काढा करके पीवे तो पित्त-शोथ दूर हो।

### अन्य उपाय—(वंगसेन से)

दारुहल्दी के काढ़े मे १ माशा शुद्धगुग्गुल मिलाकर पीवे तो पित्त शोथ, दाह, तृष्णा आदि दूर हो।

### अन्य (वंगसेन से)

निर्गुण्डी और त्रिफला इनका काढा वना पीने से पित्त की सोज मिट जाती है।

### पित्तशोथ मे चूर्ण—(वृद्माधव से)

सोंठ, देवदार, इटसिट इनका चूर्ण बनाकर दूध से पीवे तो पित्तशोथ दूर होता है।

### कफ के शोथ का उपाय—(वृंद से)

हरड, त्रिवि, देवदारु इनका काढा कर उसमे १ माशा शुद्ध गुग्गुल मिला पीवे तो कफशोथ दूर हो।

### अन्य क्वाथ

इटसिट, सोंठ, त्रिवि, देवदारु, गिलो, मौलसिरी इनका काढा कर गोमूत्र मिला पीवे तो कफशोथ दूर हो।

### अन्य चूर्ण

कौड, त्रिवि, मघ, मिर्च, सोंठ, लोहभस्म, सब का चूर्ण कर १ माशा भर त्रिफलाकाथ से खावे तो कफशोथ दूर हो।

अन्य—सोंठ, इन्द्रजौ, देवदार, वच, अतीस, बावची इनका चूर्ण तोलाभर, गर्म जल से ले तो कफशोथ दूर हो।

अन्य—इटसिट चूर्ण को गरम पानी से खावे, २—हरड़चूर्ण को गोमूत्र से खावे, ३ मघ को थोहर के दूध मे भिगो छोड़े फिर चूर्ण करे, और गोमूत्र ३ तोला से १ माशाभर खावे तो कफशोथ दूर हो।

### त्रिदोष शोथ का उपाय

शुद्ध शिलाजीत २-४ रत्ति तक त्रिफला क्वाथ से नित्य प्रातःकाल पीवे तो त्रिदोष शोथ दूर हो।

### अन्य उपाय

मघ, पाढ, गजपीपल, चित्रा, पिप्पलामूल, सोंठ, कंडियारी, हलदी, मोथा, जीरा, इनका चूर्ण बनाकर गरम जल के साथ खावे तो त्रिदोष शोथ दूर हो।

### लेप

असगंध, रायसन, मुलट्ठी, इटसिट, एरण्डबीज, सूखी मूली, इनको पानी मे पीस लेप करे तो त्रिदोष शोथ दूर हो।

### अन्य लेप ( योगचिन्तामणि से )

सरसों, इटसिट, सोंठ, देवदार, सुहांजना इनको पानी मे पीस लेप करे तो त्रिदोष शोथ दूर हो।

### सर्व शोथ का उपाय

दोनों जीरे, त्रिफला, सैंधा नमक, वासा, कुठ, वायविडंग, ऋषभक या असगंध, जौखार, सज्जीखार, सुहागा, मघ, मिर्च, सोंठ, चित्रा, गिलो, वच, मोथा, हींग, पिलखन, मूर्वा, कचूर, जायफल, एरण्डजड, चिरायता, सोए नौसादर, पिप्पलामूल, अजवायन, फटकरी, लौंग, इलायची, अकरकरा अजमोद, मुसव्वर, जावित्री, इन सब का चूर्ण बना कर ६ माशे गरम जल से खावे तो सब प्रकार के शोथ दूर होते हैं।

### अभिघातज ( चोट ) शोथ का उपाय

चोट पर ईंट, लोगड़ अथवा नमक के डले से सेक करे तो चोट की सूजन दूर होती है।

अन्य—इटसिट को उबालकर उसकी गरम २ भाप देने से तीन दिन में चोट की सूजन दूर होती है।

अन्य—जहां चोट का खून जम गया हो और सूजन हो गई हो तो वहां जोंक लगा कर खून चुसाना चाहिये।

हाथ, पैर, मुख के शोथ का उपाय ( रत्नसार से )

इटसिट, दारुहलदी, हरड़, हलदी, भडिगी, सोंठ, गिलो, देवदारु, चित्रा इनका काढ़ा हाथ, पैर, पेट, मुख के सोज को दूर करता है ।

सर्व शरीर शोथ का उपाय

इटसिट, सोंठ, देवदारु, सुहाजना, सरसों, मिर्च, इनको काजी मे पीस लेप करें तो सारे शरीर की सोज दूर हो ।

मच्छर, भिड़, भ्रमरी बिच्छू के शोथ का उपाय

हरताल तवकी असली, पानी मे पीस बिच्छू भिड आदि डंक पर लगावे तो सोज पीड़ा आदि दूर होवे ।

सर्व शोथ का उपाय

त्रिकुटा, बिल की जड, गिलोय या सारिवा, चित्रा इनका काढ़ा दूध मिला पीवे तो सर्वांग शोथ दूर हो ।

अन्य लेप- लाल इटसिट को गोमूत्र मे पीस लेप करो तो सर्वांग शोथ दूर हो।

अन्य काढ़ा

१—सोंठ और मूली का यूप, पिलावे, २—इटसिट, और चित्रे के पत्रो का साग खिलावे, ३—मानकद का यूष पिलावे तो सर्वांग शोथ दूर होता है । मानकद जमीकद की तरह बगाल मे होता है ।

अन्य १—इटसिट का काढा गोमूत्र मे करके, २—नीम के पत्तो का काढ़ा गोमूत्र मे करके, ३—आक के पत्तो का काढा गोमूत्र मे करके सेवन करे तो सर्वांग शोथ दूर हो । सेचन का अर्थ गरम पानी का तिरड़ा देना।

सूतिका शोथ उपाय

एरण्ड, करञ्जुआ, इटसिट, और आक के पत्तो का गोमूत्र मे काढ़ा करके सेवन करे तो सूतिका का शोथ दूर हो ।

लेप—बहेडे की गिरी या छिलका गोमूत्र मे पीस पेट पर लेप करे तो दाह और शोथ दूर हो ।

अथवा—मुलट्ठी, मोथा, विल के पत्ते, चंदन इनको पीस कर लेप

करे तो पिडका शोथ सब मिट जाते हैं।

शोथहर गण ( वंगसेन से )

रायसन, त्रिफला, सुहांजना, वायविडंग, नीम, आक, वाघ नख, मूर्वा, कौड, यह शोथहर गण हैं, एक दवाई या सब मिला कर काढा करके सेचन करे या लेप करे तो सब प्रकार का शोथ दूर हो।

अन्य—गोमूत्र के साथ १ माशा शुद्ध गुग्गुल खावे, अथवा मघ खावे, तो सब शोथ दूर हो।

अन्य सूतिका के लिये

सोंठ का काढ़ा करके उसमें गोमूत्र मिला १ माशा शुद्ध गुग्गुल खावे और गोमूत्र में स्नान करे, गोमूत्र पीने को देवे तो सब प्रकार का शोथ दूर होवे तथा सूतिका रोग दूर हो।

अन्य उपाय

१—गुड और सोंठ मिला कर खावे, अथवा गुड, सोंठ और मघ मिलाकर खावे, ऊपर से गोमूत्र पीवे तो सब शोथ दूर हो।

गुड़ादि चूर्ण (वंगसेन से)

गुड, सोंठ, मघ, हलदी, प्रत्येय १२-१२ तोले, लोहभस्म, तिल, वायविडंग प्रत्येक ४-४ तोले, सबको कूट कर चूर्ण करले, ३ माशे इस चूर्ण को गोमूत्र के साथ खावे तो सब शोथ दूर होते हैं।

पुनर्नवादि चूर्ण

इटसिट, पाढ, गिलोय, देवदार, सोंठ, गोखरू, हलदी, दारुहलदी, छोटी बड़ी कंडियारी, मघ, चित्रा, वासा, इनका चूर्ण बनाकर गोमूत्र के साथ दे तो सारे शोथ और उदर रोग दूर होते हैं।

कौंच फली लगने से जो सोज हो उसका उपाय

भैंस के गोबर को मले, अथवा एलवा ( पंवाड ) का रस मले और ठहर कर नहावे तो खाज और शोथ दूर हो।

जमींकंद के शोथ का उपाय

कच्चा जमीकंद, कचालू, अरवी, चमारगंढा आदि खा लेने से जीभ सूज

जाती है, मीठे व कडवे तेल व घी का जीभ पर लेप करे या गरारे करे तो शोथ खारिश दूर हो ।

### भिलावे के शोथ का उपाय

१-काली मिट्टी और तिल पीस कर लेप करे, २-भैंस का मक्खन और तिल पीस लेप करे, ३-तिल दूध मे पीस लेप करे, ४-मुलट्ठी दूध मे पीस कर लेप करे, ५-मखन ही लगावे, ६-केवल तिल ही पीस कर लगावे, ७-तिल तेल वा गरी का तेल मले तो भिलावे अथवा थोहर आदि किसी भी विषैली चीज से शोथ हो गया हो दूर हो जाता है। खाने को भी तिल और तेल दे ।

### शोथ में पथ्य

विरेचन, लंघन, खून निकालना, पसीना, लेप, सेचन, कुलथी, मूग, पुराने शालि चावल, जौ, घी, तक्र, सेह, गोह, कछुआ तथा जगली जीवो का मास, लसन, सुहाजना, छोटी मूली, शलगम, परवल, एरण्डतेल, शुद्ध भिलावे, शुद्ध गूगल, इटसिट, बकरी, गौ और भैंस का मूत्र, हलदी, जौखार, सज्जीखार, सुहागाखार, उत्तम शराब, मटर, करेला, ककोडा, कस्तूरी, नीम, तथा अन्य दीपन पाचन पदार्थ, वेत्राग्र 'तालमखाने' के पत्ते और देवदारु इनका नित्य सेवन रखना चाहिये यह शोथ रोगी को पथ्य हैं ।

### कुपथ्य

ग्राम्य, अनूप तथा जलचर जीवों के मास, लवण, सूखे साग, नया अनाज, गुड के बने पदार्थ, उडद की पिट्ठी, दही, गन्ना, मैथुन, खट्टे पदार्थ, सूखे मास, दिन मे सोना, भारी पदार्थ, असात्म्य पदार्थ, खिचडी, अति भोजन, झरने का पानी, विदाही पदार्थ, घटिया शराब, मिट्टी, दूध, गुड़, तेल आदि पदार्थ कुपथ्य हैं, शोथ रोगी इनका सेवन न करे ।

इति शोथरोगाधिकार समाप्त ।

---

# अथ वृद्धिरोगाधिकार

## अंडवृद्धि निदान

वृद्धि रोग सात प्रकार का होता है, १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ रक्त, ५ मेद, ६ मूत्र, ७ आन्त्रवृद्धि। इसमे वात ही प्रधान होता है, और वात कुपित होकर अडकोषो मे सोज और शूल पैदा कर देता है।

### वातवृद्धि के लक्षण

१-वातवृद्धि मे अंडकोष मशक समान फूल जाते हैं, शूल होता है। २ मूत्रवृद्धि मे मूत्र अडकोषो मे भर जाता है बाकी लक्षण वातवृद्धि समान जानो। ३-पित्तवृद्धि मे अंडकोषो मे लाली होती है, दाह होता है, पाक होता है अंडकोष पके गूलर के समान हो जाते हैं। ४-कफवृद्धि मे अंडकोश शीतल, भारी, चिकने, कठोर होते हैं, पीडा कम होती है। ५-मेदवृद्धि भी कफवृद्धि के समान होती है। ६—रक्त वृद्धि मे रक्त अंडकोशो मे भरा रहता है।

### ७ अन्त्रवृद्धि के लक्षण

वात को प्रकुपित करने वाले आहार विहार से, अथवा शीतल जल मे अवगाहन करने से, वेगो को रोकने से अथवा बलपूर्वक निकालने से अधिक भार उठाने से, अधिक चलने से, अंगो को टेढ़े मेढ़े करने से, तथा अन्य शरीर को क्षुब्ध करने से क्षुद्रान्त्र का वायु कुपित होकर जब ऊपर से नीचे की ओर धकेलता है तो वह अन्त्र अडधारिणी रज्जुओ के मार्ग से नीचे पहुँच जाती है, वंक्षणसंधि अर्थात् कूल्हे और अडकोश के बीच एक गोला-सा बन जाता है, दबाने से ऊपर चढ जाती है और छोडने से फिर नीचे उतर आती है, इसे आंत उतारना, वा अंग्रेजी मे हर्निया कहते है।

### ब्रध्न ( बध ) के लक्षण

अत्यन्त चिकने, शीतल और भारी पदार्थ खाने से दोष वंक्षणसधि ( कूल्हे ) मे एक गाठदार शोथ पैदा कर देते हैं, इसमे ज्वर होता है, शूल और सुस्ती बढ जाती है इसे बध, व सुडा भी कहते हैं।

### वात वृद्धि के उपाय

१—नित्य सवेरे १ माशा गुग्गुल शुद्ध, दो तोले एरण्ड तेल के साथ

खावे, २—अथवा दो तोले एरण्ड तेल दूध से पीवे तो अण्डवृद्धि रोग दूर हो। अथवा—एक माशा शुद्ध गुग्गुल, दो तोले एरण्डतेल, दो छटांक गोमूत्र मिला कर पीवे तो वात वृद्धि दूर होती है। ५ अथवा नकछिकनी चूर्ण ३ माशे दो तोला घी के साथ खावे तो वातवृद्धि दूर होती है।

### पित्तवृद्धि का उपाय

१—चदन, मुलट्ठी, कमल, खस, इनको दूध मे पीस कर लेप करे। २—तिल, कमल, सफेद जीरा, इनको दूध मे पीस कर लेप करे। अथवा—इन दोनो का काढ़ा बना कर तरेडा दे तो पित्तवृद्धि दूर होती है।

### पंचवल्कल ( वंगसेन से )

१ वड़, पीपल, गूलर, पिलखन, पारस पीपल, इन पाचो के छिलके को पञ्चवल्कल कहते हैं, पञ्चवल्कल चूर्ण को घी के साथ पीस कर लेप करे, अथवा इनका काढ़ा कर तिरड़ा दे तो पित्तवृद्धि दूर हो।

### रक्तवृद्धि उपाय

रक्तवृद्धि के लक्षण पित्तवृद्धि के समान होते हैं, मूत्रवृद्धि और आन्त्रवृद्धि के लक्षण वातवृद्धि के समान होते हैं, इस लिये इनकी वैसी ही चिकित्सा करे। और रक्तवृद्धि मे जोंक लगा कर वार २ रक्त निकालना तथा रक्त शान्त करने वाले ठण्डे लेप लगाने चाहिये।

### कफवृद्धि का उपाय

१—दारुहलदी को गोमूत्र मे घिस कर गरम २ लेप करे, २—दारुहलदी को पीस कर गोमूत्र से खावे कफवृद्धि दूर हो।

### अन्य उपाय

मघ, मिर्च, सोठ, हरड़, वहेडा आमला इनका काढ़ा बनाकर जौखार, सैंधा नमक मिला कर पिलावे तो कफवात की वृद्धि दूर हो।

### अन्य उपाय

त्रिफला का काढ़ा करके उसमे गोमूत्र मिला रोज सवेरे पीवे तो कफ की वृद्धि दूर हो।

### सर्व वृद्धि पर लेप

सरसो, बच दोनो को गोमूत्र मे पीस लेप करे तो सब प्रकार की शोथ वा अंडवृद्धि दूर हो।

### अन्य लेप

चीड की लकडी, अगर, देवदार, कुठ, सोठ, इनका बारीक चूर्ण कर गोमूत्र वा काजी मे पीस गरम २ लेप करे तो कफ वात की अंडवृद्धि, मेद-रोग और शोथ आदि दूर होते है।

### अन्य उपाय

रायसन, मुलट्ठी, गिलोय, खरैटी, गोखरू, एरण्ड की जड़ इनका काढ़ा करे और उसमे दो तोले एरण्ड तेल मिला कर पीवे तो अंडवृद्धि की शोथ दूर हो।

### ब्रध्न ( वध ) का उपाय

मघ और नमक दोनो को पानी से खावे। पियाबासा का चूर्ण भेड़ी के दूध से खावे अथवा गोमूत्र से खावे तो बध रोग दूर हो।

### अन्य उपाय

मरा हुआ कौआ लेकर बध पर बाधे तो वृद्धि और बध की सोज दूर होती है।

### अन्य उपाय

जीरा, हाऊवेर, कुठ, तमालपत्र, बेरी की छाल इनको काजी मे पीस गरम २ लेप करे तो वृद्धि, बध दूर हो।

### अन्य चूर्ण

गोखरू, सोठ, मोथा, देवदार, पखानभेद, बायविडग, लोधपठानी, इनका चूर्ण कर घी के साथ खावे तो बध वृद्धि दूर हो

### बिल्वादि चूर्ण

बिल की जड, कैथफल, मघ, सोना पाठा, चित्रा, सुहाजना, छोटी बडी कटेरी, करंजुआ, सोठ, शुद्ध भिलावा, त्रिवि, पिप्पलामूल, पांचो नमक ( सैधा, सौंचल, विड. सामुद्र, सांभर ) जौखार, अजमोद, इनका चूर्ण बना

कर कांजी के साथ अथवा गर्म पानी के साथ खावे तो वध, वृद्धि रोग दूर हो।

### धरण का उपाय

छकड़े की लीह मे पैदा होने वाली इटसिट की जड को चिड़ी बोलने से पहले ( बहुत सवेरे ) उखाड़ ले, फिर उसे गुग्गुल की धूनी देकर तावीज मढ़ा रोगी की कमर मे बाधे तो धरण मिट जाती है।

### नल धरन का उपाय

१ तोला कौड़ पीस कर घी के साथ, खडा होकर पीवे तो नल धरण ( नल का चढ़ना उतरना ) दूर होता है।

### अन्य उपाय

पलाश की जड़ घोट कर छान मिश्री मिला कर पीवे तो नल चढ जाता है।

### अन्य उपाय ( योगचिन्तामणि से )

हरड़, चित्रा, पोहकरमूल, जीरा, हलदी, तुंबरु, सैंधा, सौंचल, विड़, नमक इनका चूर्ण कर नित्य सवेरे पानी के साथ खावे तो नल धरण दूर हो

अथवा—इस चूर्ण मे, जौखार, वावडिंग, अजवायन मिलाले, और सारे चूर्ण के बराबर त्रिवी मिला कर चूर्ण करे और पूर्व विधि से खावे तो नलधरण दूर हो जाती है।

### अंडवृद्धि पर पथ्य

वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण, पसीना, लेप, लाल चावल, एरण्डतेल, गोमूत्र, पानपत्र, लवण, इटसिट, अरनी, गोखरू, वरना, लहसन, गुग्गुल रक्त निकालना, जोक लगाना यह पथ्य हैं।

### अंडवृद्धि में कुपथ्य

अनूपमास, दही, गले सड़े आहार, उड़द आदि भारी पदार्थ, वेगो का रोकना यह वृद्धि और व्रध्न मे कुपथ्य हैं।

इति वृद्धिरोगाधिकार समाप्त।

# अथ गलगंड-गंडमाला-अपची-ग्रंथि-अर्बुद रोगाधिकार

गलगंड, गडमाला, अपची, ग्रथि अर्बुद, आदि यह एक ही प्रकार के रोग होते है, गले मे, बगल व कूल्हो मे गाठें पड़ जाती हैं, उसके लक्षणों के अनुसार जुदा जुदा नाम रखे गये हैं, मूल करण एक है।

### गलगण्ड का लक्षण

गले में वात कफ और मेद कुपित होकर एक लटकती गाठ पैदा कर देते हैं, वह गाठ छोटी भी हो सकती है, बडी भी, इसे गलगंड, गिल्हड़, था घेघा कहते हैं। १-वातज गलगण्ड मे तोद होता है, काली २ सिराएं उभरी हुई होती हैं, मावे से रंग का होता है, देर से बढ़ता है, पकता नहीं, मुंह, गला तालु सूखते रहते हैं। २-कफ का गलगण्ड स्थिर, एक रंग का भारी और होता है, उस मे खुजली होती है गले और तालु मे कफ लिपा रहता है। ३-मेद का गलगंड, चिकना, भारी, श्वेतरग का, बदबूदार, कण्डु-युक्त, तुम्बी के समान लटका हुआ होता है, मुह में और गले मे चिकनाहट और घुड़घुड होती रहती है। यह रोग पहाडी प्रदेशो मे अधिकतर होता है, अथवा अनूप देश मे जहा नदी जल की अधिकता हो, आप पहाडी प्रान्तो में चले जावे जहा आप को सौन्दर्य की प्रतिमाए देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा, वहा आप को भोले भाले गलगडधारी व्यक्ति भी दृष्टिगोचर होगे, प्रायः नीच जातियों मे अधिकतर होता है। और यह रोग अधिक कष्टदायी नही होता किन्तु असाध्य होता है।

### गण्डमाला लक्षण

गण्डमाला को कण्ठमाला और प्रचलित भाषा मे 'हजीरा' कहते हैं, गले के चारो ओर गिलटियों की माला सी बनी रहती है, इसमे भी कफ और मेद की खराबी होती है। यह गिलटिया गले मे, बगल मे और कूल्हों मे भी होती है। उन्हीं गिलटियों मे से कुछ गिलटियां कोई पकती हैं और फूट जाती हैं, कुछ कच्ची और कुछ नई निकलती रहती हैं, यह

अपची होती है। पहली अवस्था में यह साध्य होती है परन्तु जिसमें पीनस, पार्श्वशूल, बुखार, उलटी और खांसी हो जाए उसे असाध्य कहते हैं। इस अवस्था में पहुंच कर अपची और कंठमाला तपदिक (क्षय) की शकल में बदल जाती हैं, रोगी को तपदिक के सारे लक्षण प्रकट हो जाते हैं, और रोगी असाध्य होजाता है, आजकल पेट के अंदर भी गिलटियां मानी जाती हैं। इसलिये इनकी आरम्भ में ध्यानपूर्वक चिकित्सा कर लेनी चाहिये।

### ग्रंथि रोग लक्षण

अपची की तरह कफ और मेद की खराबी से सारे शरीर में गांठ सी पड जाती हैं उन्हें ग्रंथि कहते हैं। ग्रथिरोग नौ प्रकार का होता है—१ वात २ पित्त, ३ कफ, ४ रक्त, ५ मेद, ६ शिराग्रथि, ७ व्रणग्रथि, ८ अस्थिग्रथि, ९ मांस ग्रंथि।

### वातादिग्रंथि के लक्षण

१—वातजग्रथि में खिंचावट होती है, बिच्छू के काटने सी पीड़ा होती है, कृष्णवर्ण होता है, फूटने पर पतला सा पानी निकलता है।

२—पित्तजग्रथि में दाह और आग की सी जलन होती है लाल पीला रंग, फूटने पर गदा खून निकलता है।

३—कफग्रंथि पत्थर की तरह कठिन, थोड़ी पीड़ा वाली देर से बढ़ती है, फूटने पर गाढ़ी सफेद राध निकलती है।

४—रक्त की पित्त के समान होती है, फूटने पर लाल और गरम और बहुत ज्यादह खून निकलता है।

५—मेदज ग्रथि शरीर के साथ बढती घटती है, अर्थात् शरीर मोटा हो तो यह भी बढती है और अगर दुबला हो तो यह भी हलकी पड़ जाती है, चिकनी होती है, खुजली अधिक पीडा कम, फूटने पर चरबी सी निकलती है।

६—शिराग्रथि—व्यायाम करने वाले पहलवानों को वायु दोष से शिराओं पर गाठें पड जाती हैं, जो कि प्रायः असाध्य होती हैं, यदि गांठ

चलती फिरती और पीडायुक्त हो तो शायद ठीक होजाय।

७—चोट आदि लगने से जो व्रण पर गाठ सी बन जाती है उसे व्रणग्रंथि कहते हैं।

८—वातादि दोप कुपित होकर हड्डी मे जो गाठ पैदा कर देते हैं उसे अस्थिग्रंथि कहते हैं।

६—मास के दुष्ट होने पर जो गाठे पड जाती हैं वह मांसग्रंथि कहाती है।

### अर्बुद लक्षण

अर्बुद को बोलचाल मे रसौली कहते हैं, इसमे भी कफ और मेद की अधिकता होती है यह छः प्रकार का होता है। १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ मांस, ५ रक्त, ६ मेद। इनके लक्षण प्राय' ग्रंथि के लक्षणो के समान होते हैं। इनमे रक्त और मास के अर्बुद कष्टदायी और असाध्य होते हैं। यूं तो रसौली एक प्रसिद्ध रोग है, कई मनुष्यो के शरीर के किसी भी भाग अर्थात् पेट, पीठ, कमर, मुख, बाहु, टाग कहीं भी नारंगी वा खरबूजे जैसा गोल पिड सा उठ आता है, कोई पीडा नहीं, तकलीफ नही, कभी फूट निकले तो स्वयं बैठ जाता है, अथवा शास्त्र द्वारा कटवा लिया जाता है।

### गंडमाला उपाय ( रसरत्नाकर से )

चोक, चित्रा, वच्छनाग इनको पानी के साथ पीस कर सात दिन लेप करो तो गलगंड और गंडमाला दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

मुंडी की जड़ को पीस कर लेप करे, और घोट कर पीवे तो गंडमाला दूर होती है।

### अन्य उपाय

ब्रह्मडण्डी की जड को चावलो के पानी मे पीस कर लेप करो तो गंडमाला दूर हो।

### अन्य उपाय

कचनार की छाल १ तोला चावलो के पानी मे पीस अथवा काढ़ा करके मध मिला पीवे, तो गंडमाला दूर हो।

### अन्य उपाय

पारा, गंधक ( कज्जली ) सैंधा नमक, कचनार की जड इनको आक के दूध मे पीस लेप करे तो गंडमाला दूर हो ।

अन्य—इतवार के दिन सहदेई की जड़ लाकर धागे मे पिरोकर गले मे बांधे तो कर्णग्रंथि दूर हो और गण्डमाला दूर हो ।

### गलगंड पर लेप ( रसरत्नाकर से )

पारा, रूपामाखी भस्म, सोना माखी भस्म, ताम्र भस्म, सैंधा नमक, मघ, मिर्च, सोंठ, इनको गोमूत्र मे पीस गरम कर लेप करे तो तीन लेप मे गलगण्ड, गंडमाला दूर हो ।

### अन्य उपाय

१—सैंधा नमक को आक के दूध मे पीस कर लेप करे तो गले की गण्डमाला की जड़ दूर हो ।

२—अन्य—भिलावे के रस का लेप करने से गण्डमाला अपची दूर हो ।

३—अन्य—चंदन, सुहाजना दोनो का लेप करे तो फोड़े की जड़ दूर हो ।

४—अन्य—लोहचून को भैंस के मूत्र मे अच्छी तरह पीस कर गरम करके ३, ५, ७ लेप करे तो गंडमाला दूर हो ।

### कछराली उपाय ( रसरत्नाकर से )

१—कुठ और जीरा काला, दोनो को पानी मे पीस कछराली मे लेप करो ।

२—कुचले को पानी मे पीस कर लेप करो ( कुचले को दो दिन पानी मे रख कर नरम कर लेना चाहिये । )

३—जियापोता के बीज पानी मे पीस कर लेप करो तो कछराली दूर हो।

४—सुहांजने की जड़ और हलदी इनका लेप करो तो कछराली दूर हो।

५—इटसिट की जड़ और मिट्ठा तेलिया पानी मे पीस लेप करे तो कछराली दूर हो जाती है।

## अर्बुद का उपाय

दन्ती, चित्रे की जड, गुड, भिलावे, चूना अनबुझ, काही ( कसीस ) इनको आक के दूध मे पीस रसौली पर लेप करे तो रसौली और ग्रंथिरोग दूर हो।

## अन्य उपाय ( वंगसेन से )

सज्जीखार, मूलीखार, शंखभस्म, चूना अनबुझ, इनको पानी मे पीस लेप करो तो रसौली दूर हो।

## अन्य उपाय

पीपल के छिलके की राख, छोटी दूर्वी, और केसर इनको गोमूत्र मे पीस लेप करे कछराली दूर हो।

## अन्य उपाय ( कालज्ञान से )

रसौली पर पछने लगा कर चोक घिस कर लगावे तो रसौली दूर हो।

अन्य—प्रथम रसौली पर पछना लगाले, फिर चोक, नसादर, नीला-थोथा इनको बच्चे के पेशाब मे पीस कर लेप करे रसौली दूर हो ( जहा नीला थोथा पडता हो वहा संभल कर डालना चाहिये )

## वध रोग उपाय

पत्थर गरम करके उस पर सेक करे तो वध दूर हो।

अन्य—शिगरफ, चमेली के पत्ते, कौड, पटोलपत्र इनको गोमूत्र मे पीस लेप करे तो वध दूर हो।

## अन्य उपाय—

कमीला, सज्जीखार, कत्था, चूना अनबुझ, नीलाथोथा, सुहागा इनको घी मे पीस लेप करे तो रसौलीवध दूर हो।

अन्य—पुठकंडा, गूलर का दूध, कंडियारी के फल, गोमूत्र मे पीस लेप करे रसौली दूर होती है।

## सर्व ग्रंथि का उपाय

सज्जीखार, चूना दोनो को पानी मे पीस कर लेप करे तो मस्से,

ग्रंथि रसौली दूर हो ।

### गलगंड, गंडमाला, अपची, अर्बुद की सामान्य चिकित्सा

तुलसी के पत्ते, सिरस की छाल, दन्ती, हुलहुल के बीज, वड की कोपले, पीपल के फल, इनको पानी में पीस लेप करे, और ताजे पानी मे घोट कर पीवे तो भी गलगड, गंडमाला, अपची, अर्वुद दूर होते हैं ।

### अन्य उपाय

सोंठ, चमेली की जड़, आमले, बिच्छुआ बूटी के पत्ते, कनेर की जड़ इनका चूर्ण कर, फिर १ तोला लेकर इटसिट के रस से पाच वा सात दिन तक खावे तो सब प्रकार की ग्रंथि दूर होती है ।

### अन्य उपाय

शंखावली, अधाहुली ( फूल होता है ), नेत्रवाला, इलायची, पीपल के फल इनको बकरी के दूध मे पीस कर सातदिन तक खावे तो गंडमाला अपची दूर हो ।

अन्य—भंडिगी, सोंठ, दोनो को काजी मे पीस कर लेप करे तो कंठमाला ग्रंथि अपची दूर हो ।

अन्य—साप की केचुली ( कुंज ) को कड़वे तेल मे जला कर लगावे तो कठमाला दूर हो ।

अन्य—काले साप को मार कर एक हाडी मे रख पातालयन्त्र द्वारा तेल निकाल लेप करे तो कठमाला दूर हो ।

पातालयन्त्रविधि—जिस दवाई का तेल निकालना हो उसे एक हाडी वा घड़े मे बंद कर दो, और घड़े के नीचे पेंदी में छोटे २ दो तीन सुराख कर दो, और उसका मुंह प्याली से मिट्टी लगाकर वंद कर दो, फिर एक गढ़ा खोदो जिसके अंदर घड़ा खुला आजावे, उस गढ़े के वीच एक और छोटा सा गढ़ा खोदो जिसमे गिलास या लोटा आजावे । पहले गिलास या लोटे को छोटे गढ़े में गले तक दबा दो, और उसके मुंह पर घडा या हांडी रख दो, फिर घड़े के ऊपर और चारों ओर उपले देकर आग लगा दो तेल पिघल कर नीचे के प्याले मे जमा होता जायगा, शीतल होने पर निकाल ले ।

### गलगंड, गंडमाला अपची, अर्बुद आदि पर पथ्य

वमन, विरेचन, नसवार, पसीना, धूम्रपान, फाका, क्षारपदार्थ, फस्द-खोलना, जलाना, पुराना घी, लाल चावल पुराने, मूंग, सुहाजना, परवल, शिलाजीत, फालसा तथा अन्य कडवे रूखे पदार्थ पथ्य हैं ।

### कुपथ्य

दूध, गन्ने का रस, अनूप मास, मछली अन्य सब प्रकार के मांस, भारी पदार्थ, मिठाइया, अभिष्यन्दी पदार्थ, खट्टे पदार्थ गंडमाला में कुपथ्य हैं ।

इति गलगंड-गंडमाला-ग्रंथि-अपचि-अर्बुद-रोगाधिकार समाप्त ।

## अथ श्लीपदरोगाधिकार

### श्लीपद निदान

श्लीपद को फीलपाओ, या हाथीपाओ कहते हैं, यह रोग अनूप देश मे जहा कि चारो ओर पानी ही पानी वा दलदली मिट्टी हो, होता है, यद्यपि यह रोग तीनो दोषो से ही होता है किन्तु तो भी इसमे कफ ही प्रधान होता है, पाओ, टांग हाथी के पाओ समान मोटे होजाते हैं, इसी लिये इसे फीलपाओ कहते हैं ।

### श्लीपद लक्षण

प्रथम ज्वर होता है और कूल्हे से पीडा शुरू होकर पाओ तक चली जाती है, पाओ घुटने तक टांग सूजने लग जाती, इसी प्रकार हाथ कान, नेत्र, लिंग, होठ आदि पर भी हो जाता है ।

### वातश्लीपद के लक्षण

ज्वर हो शरीर मे चुभके पडती हो, शरीर काला रूखा हो चमडी फटने लगे, विना कारण पीडा हो तो वातश्लीपद जानो ।

### पित्तश्लीपद के लक्षण

दाह और ज्वर अधिक हो, शरीर कोमल और पीला पड़ जावे, तो पित्तश्लीपद जानो ।

### कफ श्लीपद के लक्षण

कफ का श्लीपद भारी, पाण्डु और सफेद रंग का, चिकना, कठिन और उस पर काटों के समान मांस अंकुर उठ आते हैं। यह लक्षण असाध्य होते हैं। क्योंकि श्लीपद में कफ प्रधान होता है, जो रोगी कफप्रकृति हो और कफ कारक पदार्थ खावे जिस श्लीपद से पानी रिसे, प्यास अधिक लगे उसका भी असाध्य श्लीपद होता है।

### वातश्लीपद का उपाय

१—एरण्ड तेल को गोमूत्र से पीवे तो श्लीपद दूर होता है।

२—करौंदा और सलियारा पीस कर गोमूत्र से खावे तो श्लीपद दूर होता है।

३—सोंठ को गोदुग्ध से पीस कर पीने से श्लीपद दूर होता है।

### पित्त श्लीपद का उपाय

रायसन, हींस, मजीठ, इटसिट, मुलट्ठी, इनको कांजी मे पीस लेप करे तो पित्त श्लीपद दूर हो।

### अन्य उपाय

हरड़ को गोमूत्र मे पीस कर पीवे, अथवा गिलोय, मोथा इनका चूर्ण कडवे तेल से पीवे तो पित्त की श्लीपद दूर हो।

### अन्य उपाय

सफेद सरसों, चित्रा, देवदारु, इनको कड़वे तेल में पीस कर लेप करने से पित्तश्लीपद दूर होता है। अथवा—सोंठ, सुहाजना, सरसों, देवदार इनको, गोमूत्र में पीस कर लेप करने से श्लीपद दूर होता है।

### अन्य उपाय ( वंगसेन से )

इटसिट, सोंठ, सरसों इनको कांजी मे पीस लेप करे तो पित्त श्लीपद दूर होता है।

### अन्य उपाय

इटसिट, सुहांजना, सफेद सरसों, धतूरे के पत्ते, एरण्ड और संभालू के पत्ते कांजी मे पीस दोनो पाओं पर लेप करे तो पित्त श्लीपद दूर हो।

### कफ श्लीपद का उपाय ( वंगसेन से )

वर्धमान पिप्पली की तरह धनूरे के बीज बीस तक बढ़ा घटा कर खावे तो कफ श्लीपद दूर हो।

### अन्य उपाय

पान का पत्ता पीस नमक मिला गरम पानी से पिये तो श्लीपद दूर होता है।

### अन्य उपाय

हलदी और गुड़ गोमूत्र से पीवे। अथवा—इटसिट, त्रिफला, मघ इनका चूर्ण कर शहद से खावे तो कोढ, दद्रु, श्लीपद आदि रोग दूर होते हैं।

### सर्व श्लीपद का उपाय

१—विधारा चूर्ण गोमूत्र के साथ खावे तो श्लीपद दूर हो।

२—दोनो बला ( खरैटी, कघी ) का चूर्ण दूध से पीवे तो श्लीपद दूर होता है।

### कृष्णादि मोदक ( वंगसेन से )

मघ १ तोला, चित्रा २ तोले, दन्ती ४ तोले, हरड की छाल २० तोले, गुड ८ तोले, चूर्ण करके शहद के साथ ६—६ माशे के मोदक बनाले नित्य एक खाने से श्लीपद रोग दूर होता है।

### पिप्पल्यादि चूर्ण ( वंगसेन से )

मघ, त्रिफला, सोंठ, देवदारु, इटसिट, सब दो २ पल, विधारामूल सब के बराबर, सब का चूर्ण करके कांजी के साथ खावे तो श्लीपद, तिली, वायु रोग और मस्तकरोग दूर होते हैं।

### विधारादि चूर्ण

मघ, मिर्च, सोंठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, चव, देवदार, दारुहलदी, गोखरू, गिलोय, मुंडी, सब ४—४ तोले, विधारामूल सब के बराबर चूर्ण करले, कांजी के साथ तोला भर खाता रहे तो श्लीपद, घुटने का दर्द और कुष्ठ, गुल्म, आमवात दूर हो।

### अथ जानुआ रोग उपाय ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध तांबे का बारीक पत्र वा तारें, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, प्रथम

पारा गंधक की कज्जली करे फिर ताम्र मिला कर खूब रगडाई करे, फिर पान का रस, चुलाई रस, पाठा रस और इटसिट का रस देकर तीन दिन तक खूब खरल करे। फिर गोमूत्र मे रगड गोला बना और प्यालो मे बद कर एक पहर भर चक्रयन्त्र मे पकावे आधी रत्ती दवाई शहद से खावे तो जानुआ रोग दूर होता है।

चक्रयन्त्रविधि—चक्रयन्त्र आजकल बड़ा प्रसिद्ध है, कलईगर या लुहार पुराने समय की धोकनी की जगह आजकल आग सुलगाने के लिये चरखी से हवा करते हैं उसको चक्रयन्त्र कहते हैं।

जानुआ रोग—बाएं घुटने मे सोज और दर्द हो तो डमरू रोग कहते हैं, और दाहने मे हो तो जानुआ कहते हैं, पेट भारी, गोडे मे दर्द और सब लक्षण चिकित्सा श्लीपद के समान हैं।

### जानवा मंत्र

ॐ नमो गुरु को आदेश, खकारी सकार कहा गयो, सभा मार पर्वत गयो, सभा मार पर्वत जाइ के कहा करिगो खैर का खूटा काटैगो, खूंटा काटके कहा करैगो, कोइला करैगो, कोइला करिके कहा करैगो, सारका तीर घडावैगो, सार का तीर घडाइकै कहा करोगे, जानुवाई जड़ काटैगो। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरे, ईश्वरो वाच, ।।

विधि—२१ वार तीर के साथ झाडा करे, तो जानु की पीडा दूर हो, और उस तीर को फेक दे, और फिर तीर को ले आवे, तीर को सिंदूर का तिलक लगावे पूजा करे, सात दिन तक इसी प्रकार करे तो जानुआ रोग दूर हो। ( रोगी से मत्र वाले को कुछ नही लेना चाहिये। )

### अथ डमरू मंत्र

"ॐ डमरू डिम डिम हाथ कपाल आखो भाजतो डमरू जाहि। ना भाजे तो पंच वाण अर्जुन के छिन्ने, नारायण को चक्र छिन्ने, छिन्न, छिन्न, भिन्न भिन्न, जाऊ चित्त डमडिया वीर की आज्ञा फुरे।

विधि—२१ वार तीर के साथ झाड़े, तीन दिन मे डमरू रोग दूर होता है। सिंदूर १ टंक तिल तेल १ पाओ इससे तीर को चुपड़े, पहले

झाड़ा करके तीर पर फेंक दे, फिर उठा लावे, और चुपड़ के एकांत रख दे, इस प्रकार तीन दिन से डमरू रोग दूर हो ।

अथ पाओं नरम करने का उपाय ( वैद्यजीवन से )

सैंधा नमक, गुग्गुल, गेरु,राडा, घी, शहद, माजू, सबको पीस पाओं मे मले तो कोमल होजाये ।

अन्य ( रसरत्नाकर से )

गुड, गुग्गुल, सैंधानमक, खम्, गेरू, राडा, इनको घी मे पीस लेप करे तो श्लीपद दूर हो ।

विपादिका ( पावों की विवाई ) का उपाय

राल गरम करके पाओ को लगावे, अथवा गुड़ गरम करके लगावे तो विवाई दूर हो ।

अन्य लेप ( रसरत्नाकर से )

पारा, गंधक, दोनो के बराबर चोक तीनों का वारीक चूर्ण कर चित्रे के रस मे पीस कर लेप करो कडू, चंबल, खुजली, विवाई आदि दूर होते हैं ।

अन्य उपाय

१—गोमूत्र से पाओ धोया करे, २—अथवा पाओ पर आमले पीस कर लेप किया करे तो पाओं की खुजली दाह, पाक, श्लीपद दूर होते हैं ।

अन्य उपाय

इमली के पत्तो की टिकिया बनावे, तथा नीम के पत्तो की टिकियां बनावें, दोनो को घी में पकावे, जब टिकिया जल जावे तो घी को छान ले और उसमे मोम गरम कर मिला ले और मरहम बनाले, इस मरहम को गरम करके मलने से बहुत शीघ्र विवाई दूर होती है ।

श्लीपद पर लेप

पारा, गंधक ( कज्जली ) सुहागा, मनसिल, हुरमची ( मिट्टी ), हरताल, कमीला, धतूरे के बीज, मद, समान भाग ले पानी से पीस कर लेप करे तो श्लीपद, कंडु, विसर्प जानव आदि रोग दूर हो ।

### श्लीपदादि रोगों पर पथ्य

पसीना, लंघन, फस्द खोलना, विरेचन, लेप, परवल, पुराने चावल, सट्ठी चावल, कुलथी, जौ, बैंगन, सुहाजना, करेला, इटसिट, गोमूत्र, एरण्ड-तैल, शिरावेध, यह पथ्य हैं ।

### श्लीपदादि रोगों पर कुपथ्य

कब्ज करनेवाले पदार्थ, गुड, दही, मधुर, नदी का जल, समुद्र का पानी, गुरु, लेसदार अभिष्यन्दी पदार्थ, अनूपमास, उड़द, पिट्ठी, गुड के बने हुए पदार्थ, यह श्लीपद जानुव आदि रोगो पर कुपथ्य हैं ।

प्रत्येक रोग में यथायोग्य पथ्य देने से ही लाभ होता है, अतः पथ्य का विशेष ध्यान रखे ।

इति सौदामिनी भाषा भाष्ये मूत्राघात, अश्मरी, प्रमेह, मेद, उदर, शोष, अण्डवृद्धि, गलगड, गडमाला अपची, अर्बुद, ग्रन्थि, श्लीपद, जानुवा विवायिका, रोगात्मक अष्टम अध्याय समाप्त

---

# अथ नौवां अध्याय

## अथ विद्रधि रोगाधिकार

संसाररूपी सागर को पार करने के लिये सद्गुरु महाराज जहाज के समान हैं, ऐसे पवित्र उपदेश द्वारा सन्मार्ग दिखाने वाले श्री गुरुचरणो मे वार २ नमस्कार हैं ।

### विद्रधि निदान

न माफिक आने वाले, विरोधी, गले, सडे, सूखे पदार्थ खाने से, अत्यन्त मैथुन करने से, वेगो को रोकने से, अत्यन्त व्यायाम करने से, विदाही पदार्थ अधिक खाने से, तीनो दोष कुपित होकर विद्रधि रोग कर देते हैं ।

### विद्रधि के सामान्य लक्षण

वात, पित्त, कफ, तीनो दोष कुपित होकर शरीर के अन्दर उदर,

वस्ति, वृक्क, यकृत् सीहा, आदि अभ्यन्तरीय अंगो मे, तथा बाहिर भी अस्थियो के जोड मे गोले की तरह वा वल्मीक की तरह उभरा हुआ फोड़ा कर देते हैं, उसे विद्रधि कहते हैं, शरीर के अन्दर वाले को अन्तर्विद्रधि और बाहिर वाले को बाह्यविद्रधि कहते हैं। वह विद्रधि, गुदा वस्ति, मुख नाभि, पेट, कूल्हे, गुरदे, जिगर, तिली, हृदय, क्लोम स्थानो मे और बाहिर हड्डी के जोड मे हो सकती है दोनो के सामान्य लक्षण एक हैं भेद—विद्रधि छः प्रकार की होती है, १ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ रक्त, ६ चोट आदि से है।

### वात विद्रधि के लक्षण

जो काला लाली लिये हुए, ऊंचा नीचा हो, जिसमे पीडा अत्यन्त हो, बेढंगा सा पके जिसमे पतला सा मवाद बहे, वह वात विद्रधि होता है।

### पित्त विद्रधि के लक्षण

जिसका रग पके गूलर के समान हो वा पीला हो, ज्वर और दाह युक्त और शीघ्र उठकर पकने वाला हो जिसमे पीला सा मवाद बहे पित्त का विद्रधि होता है।

### कफविद्रधि का लक्षण

प्याले के समान गहरा, श्वेत सा, शीत, स्निग्ध और कम पीडा वाला देर से उठकर देर से पके जिसमे सफेद सा मवाद बहे कफविद्रधि जानो।

### सन्निपात विद्रधि के लक्षण

जिसमे अनेक प्रकार की पीडाए हो, कई रग का मवाद बहे, चारो ओर से उठा हुआ हो, कहीं से कच्चा कही से पक्का, तीनो दोषो के लक्षणो वाला हो सन्निपातिक विद्रधि जानो।

### रक्तविद्रधि के लक्षण

काली २ फोडियो से घिरा हुआ, सावे से रग का, तीव्र दाह और पीड़ायुक्त, पित्त के लक्षणो वाला रक्तविद्रधि होता है।

### अभिघातज ( चोट आदि जन्य ) विद्रधि के लक्षण

किसी प्रकार की चोट से जखम होजाने पर जखम की गरमी वायु

से मिल कर रक्त और पित्त को कुपित कर देता है तब रोगी को ज्वर, दाह तृष्णा आदि तथा अन्य पित्त के लक्षण प्रकट हो जाते हैं उसे क्षतजविद्रधि कहते हैं।

### स्थानभेद से लक्षण

यदि विद्रधि गुदा में हो तो मल और अधोवायु रुक जाते हैं, वस्ति में मूत्र रुक जाता है, नाभि में हो तो हिचकी पैदा कर देती है, पसवाड़ों में हो तो वायु कुपित हो जाता है, कमर या पीठ में हो तो कमर व पीठ जकड़ जाती है और पीडा होती है, गुरदे में हो तो पसलियो में संकोच होता है। तिल्ली में हो तो श्वास रुक जाता है, हृदय में हो तो खांसी और सर्वांग पीड़ा होती है. जिगर में हो तो रस को रोकती है अर्थात् रस से खून नहीं बनता, क्लोम में हो तो प्यास अधिक लगती है।

### विद्रधि-स्राव के मार्ग

१—नाभि से ऊपर २ की अंतर्विद्रधि यदि पक कर फूट जावे तो उनका स्राव (पाक लहू) मुंह के रास्ते होता है। २—नाभि से नीचे की अंतर्विद्रधि यदि फट जावे तो गुदा के रास्ते बहती है, ३—नाभि में होने वाली विद्रधि पक कर नीचे ऊपर अर्थात् गुदा और मुंह-दोनो मार्गों से बहती है।

### साध्यासाध्य विद्रधि के लक्षण

यदि विद्रधि पक कर गुदा के रास्ते फूटे तो रोगी साध्य, यदि ऊपर के मार्ग से फूटे तो असाध्य। इसी प्रकार हृदय, नाभि, और वस्ति की विद्रधि यदि बाहिर के मार्ग अर्थात् त्वचा को फाड़ कर फूट निकले तो शायद कभी रोगी बच भी सकता है, यदि अंदर ही फूटे तो असाध्य, सन्निपात विद्रधि भी असाध्य होती है।

### विद्रधि के उपद्रव

जिसमें अफारा हो, मल रुक जावे, वमन, हिचकी, प्यास, पीड़ा, श्वास आदि उपद्रव हो ऐसी विद्रधि भी असाध्य होती है। मर्मस्थान पर होने वाली विद्रधि भी असाध्य होती है।

## चिद्रधि-चिकित्सा

१—वरने की छाल का काढ़ा करके उसमे भुनी हुई हींग २ रत्ती, शुद्ध कासीस २ रत्ती, शुद्ध शिलाजीत २ रत्ती मिलाकर पीवे तो सब प्रकार की विद्रधि नष्ट होती है।

### अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से )

सुहाजने का काढ़ा कर उसमे हींग और सैंधानमक मिलाकर पीवे तो विद्रधि दूर हो।

### अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से )

पाढ की जड का काढ़ा बना कर उसमे चावलो का पानी मिला पीवे तो विद्रधि दूर हो।

### लोकनाथ रस

कौड़ी की भस्म ४ तोले, शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गधक १ तोला, शुद्ध धतूरे के बीज एक माशा। प्रथम पारा और गंधक की कज्जली करे फिर सब को मिला कर जबीरी के रस मे खरल करे। दो रत्ती भर दवाई चावलो के पानी से खावे तो विद्रधि रक्तपित्त आदि रोग दूर होते हैं।

### अन्य उपाय ( शार्ङ्गधर से )

इटसिट और वरना दोनो का काढ़ा बना कर पीवे तो विद्रधि दूर होती है।

### अन्य उपाय

हरड, सैंधानमक, धाय के फूल, इनका चूर्ण बना कर घी-शहद से चाटे तो विद्रधि दूर हो।

### अन्य उपाय ( वैद्यजीवन से )

वरना, रायसन, हल्दी, मघ, अजवायन, इनका काढा बना कर उसमे २ माशे बोलगूंद मिला कर पीवे तो सात दिन मे विद्रधि दूर होती है।

### अन्य उपाय

सोंठ और सुहांजना, इनका काढ़ा बना कर उसमे दो रत्ती हीग और थोड़ा सैंधानमक मिला कर पीवे तो विद्रधि दूर होती है।

### विद्रधि में पथ्य

विरेचन, लेप, स्वेदन, रक्तमोक्षण, सैंधा०, कलमी चावल, कुलथ, लसन, सेम, सुहांजना, इटसिट, चित्रा और करेला। पक्वावस्था में, पुराने चावल, मूंग, खिचड़ी, घी, तेल, शराब, जमीकंद, केला, गरम पानी, चंदन, परवल, कुठ, शस्त्रकर्म आदि हितकर कहे हैं।

### कुपथ्य

शोफ रोग में जो कुपथ्य कहे हैं वही विद्रधि में भी कुपथ्य हैं।

इति विद्रधि रोगाधिकार।

## अथ व्रणरोगाधिकार

शरीर के किसी एक भाग में शोफ होना व्रण का पूर्व रूप माना गया है, अर्थात् जब कोई फोड़ा किसी होनी हो तो वह स्थान सूज जाता है।

### व्रण के भेद

व्रण छः प्रकार का होता है—१ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ रक्त, ६ आगन्तुज अर्थात् चोट आदि लग जाने से।

व्रण के लक्षण शोथ के लक्षणों के समान होते हैं, किन्तु व्रण के कच्चे पक्के की पहचान के लिए उसके पृथक् लक्षण बताए जाते हैं। वायु का व्रण रुक रुक कर पकता है, और पित्त का शीघ्र, कफ का देर से पकता है, रक्त और आगन्तु के लक्षण पित्त के समान होते हैं।

### आम (कच्चे) व्रण के लक्षण

फोड़े का स्थान कठिन और कुछ २ गरम होता है, रंग भी चमड़ी के समान होता है, सूजन भी कम होती है, और पीड़ा भी कम ही होती है।

### पच्यमान व्रण के लक्षण

फोड़ा जब पकने लगता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने आग रखी हुई है, या कोई नश्तर से काट रहा है, अथवा बिच्छू आदि डंक मार रहे हैं, या कोई छुरे से काट रहा है, आरी से चीर रहा है, तात्पर्य यह कि रोगी को अत्यन्त कष्ट होता है, पीड़ा के कारण खाना, पीना, सोना कठिन हो जाता है। सुइयां सी चुभती रहती हैं। व्रण का रंग लाल

हो जाता है, प्यास अधिक लगती है, ज्वर हो जाता है और बेचैनी के कारण पेट मे अफारा भी हो जाता है।

### पक्क व्रण के लक्षण

व्रण जब पक जाता है तो झुर्रिया पड़ जाती हैं, चुभके पड़ती हैं, खुजली होती है, पीडा कम हो जाती है, व्रण मे मवाद दवाने से छलकता है, उभार कम हो जाता है, चमड़ी फट जाती है, अथवा व्रण भी फूट जाता है। भूख, प्यास आदि यथासमय लग आती है, ज्वरादि उपद्रव दूर हो जाते हैं, और बेचैनी भी दूर हो जाती है।

### दोषों के विशेष लक्षण

वायु के विना पीड़ा नहीं होती, पित्त के विना व्रण नहीं पकता और कफ के विना मवाद पाक आदि नही बन सकती, इस लिये व्रण पकने के समय तीनों दोष मिल कर काम करते हैं। शस्त्रचिकित्सक व्रण की अवस्था को अच्छी तरह पहचाने और पक जाने पर उसे शस्त्र द्वारा चीरा देकर अथवा तीक्ष्ण औषधियों की पुलटिस आदि से उसे फाड़ कर अंदर की पाक राध को निकाल दे, परन्तु कच्चे फोडे को न छेडे। जो मनुष्य कच्चे को पक्का समझ कर फाड़ देता है और पके हुए को कच्चा समझ कर अंदर से पाक आदि निकालने का यत्न नहीं करता वह वैद्य कहाने के लायक नही, वह तो धूर्त और ठग कहा गया है, ऐसे वैद्य से बचना चाहिये।

### व्रण के भेद

व्रण दो प्रकार का होता है, (१) शारीरक अर्थात् दोषो से शरीर के किसी भाग पर फोडा फिंसी हो जाए जिसका ऊपर वर्णन कर चुके हैं, (२) आगंतुक अर्थात् सुई, काटा, चाकू, छुरी, नेजा, तलवार आदि शस्त्रों से ज़खम हो जाना, आगंतु को सद्योव्रण भी कहते हैं, इसका आगे वर्णन करेंगे। अब शारीर व्रण के दोष भेद से लक्षण बताते हैं—

### वातिक व्रण के लक्षण

जिस व्रण से पतला और थोड़ा मवाद निकले, चुभके अधिक पड़ती हो, व्रण कठिन हो, अकड़ाव अधिक हो तो वायु का व्रण जानो।

### पैत्तिक व्रण के लक्षण

जिस व्रण से गरम गरम लाल-पीला मवाद निकले, ज्वर, तृष्णा, दाह, मोह अधिक हो तो पित्त का व्रण जानो।

### श्लैष्मिक व्रण के लक्षण

जिस व्रण से गाढा, लेसदार, चिकना और सफेद-सा मवाद निकले, पीड़ा कम हो, बदबू हो, भारीपन हो, देर से पके तो कफ का व्रण जानो।

### रक्तज और सन्निपातज व्रण के लक्षण

जिसमे से लाल रंग का बहुत स्राव हो वह रक्त का और जिस मे तीनो दोषो के लक्षण हो वह सन्निपात का व्रण होता है।

### व्रण के साध्यासाध्य लक्षण

जो व्रण त्वचा-मास मे हो, उपद्रवरहित हो, मर्मस्थान पर न हो, रोगी नौजवान हो, शरीर शुद्ध हो, श्रेष्ठ अर्थात् हेमन्त आदि ऋतु में हो तो सुखसाध्य जानो।

जो ऊपर के लक्षणो से उलटा हो, जिसमे लाली न हो, काला हो, जिसमे से अत्यन्त बदबूदार गाढ़ी और अनेक रंगो की राध निकले, चिकित्सा करने पर भी ठीक न हो और आगे २ बढता ही जावे, ऐसा दुष्ट व्रण होता है।

### शुद्ध व्रण के लक्षण

जो जीभ के तले के समान लाल, पीड़ा रहित हो और जिसके किनारे उभरे हुए न हो वह शुद्ध व्रण होता है।

### भरते हुए व्रण के लक्षण

जिस व्रण के किनारे कबूतरी रंग के, क्लेद रहित अर्थात् सूखे और साफ हों रिसें नहीं और पिडिका युक्त हों तो जानो जखम भर रहा है।

### रूढ़ व्रण के लक्षण

जो व्रण चमड़ी के साथ मिल जावे, दबाने से पीड़ा न हो, गांठ न हो, समतल और समवर्ण हो जावे तो रूढ़ व्रण जानो अर्थात् उसके फूटने का भय नहीं रहता।

### दुष्ट व्रण के लक्षण

कोढ़ी मनुष्य को फोड़ा हो जावे वह भी मुशकिल से ठीक होता है, इसी प्रकार जहर के रोगी का फोड़ा, तपदिक के रोगी का, मधुमेह के रोगी का और जिसको फोड़े पर फोड़ा या जखम पर जखम हो गया हो ऐसे व्रण दुष्ट माने गये हैं और बड़ी मुश्किल से ठीक होते हैं।

### असाध्य लक्षण

जिनसे चर्बी, मज्जा और भेजा निकले यदि यह आगन्तु हों तो साध्य यदि दोष से हों तो असाध्य, इसका अर्थ यह है कि आगन्तु अर्थात् चोट आदि लगने से जो व्रण हों और उनसे मज्जा आदि चोट से निकल पड़े वे साध्य हैं क्योंकि मज्जा आदि चोट से निकले हैं, वस्तुतः शरीर तंदुरस्त होता है, इस लिये जल्दी भर जाते हैं। दोषों से असाध्य इस लिये कि धीरे २ दोषों के कारण शरीर गलता रहता है, जब अन्त में मज्जा तक बिगड़ जाय तो असाध्य होना ही हुआ, इस लिये दोषज व्रण असाध्य माने हैं। जिनसे शराब, अगर, चमेली, कमल, चंदन, चंपा आदि की सुगंधि निकले, अथवा अन्य दिव्य गंधि आवे, जो व्रण मर्म स्थानों पर होकर अत्यन्त पीडा करें, बाहिर से शीतल और अत्यन्त दाह करें, अत्यन्त दुबले, कास, क्षय, अरोचक आदि उपद्रवों से युक्त हो जिनसे बहुत ही लहू और पाक निकले, मर्म पर हों, चिकित्सा करने पर भी जो ठीक नहीं होते ऐसे व्रण दुष्ट एवं असाध्य होते हैं।

### व्रणचिकित्सा

गेहूँ को चबा कर व्रण पर बांधे तो सात दिन में व्रण पक कर फूट जावे और शीघ्र भर जावे।

### अन्य उपाय

सुहांजने की छाल, सैंधानमक मिला गोमूत्र से पीस कर लेप करे तो व्रण पक कर फूट जाता है।

### अन्य उपाय

भेड़, बकरी की मींगनें गोमूत्र से पीस कर लेप करे तो व्रण पक कर फूट जाता है।

### वात व्रण धोने का उपाय

रायसन, वच, सोठ, इनको पीस कर थोड़ा बिजौरे का रस मिला, काजी मे घोल व्रण धोया करे तो वायु का व्रण दूर होता है।

### पित्त व्रण धोने का उपाय

मुलट्ठी, मजीठ, पटोलपत्र, निंबपत्र इनका काढ़ा बना व्रण धोने से पित्त का व्रण और पीड़ा दूर होती है।

### कफ व्रण धोने का उपाय

कैथ का फल, कदंब और अर्जुन की छाल और त्रिफला इनका काढ़ा कर धोने से कफ का व्रण दूर होता है।

### सर्व व्रण धोने का उपाय

असगंध और निंबपत्र दोनो का काढ़ा बना कर धोने से सब प्रकार के व्रण दूर होते हैं।

### वात व्रण पर लेप

बिजौरा और अरनी का फूल दोनो को कांजी मे पीस लेप करे, अथवा देवदार और सोठ कांजी मे पीस लेप करे तो वायु का व्रण दूर होता है।

### पित्त व्रण पर लेप

वड़ की जड़, मूर्वा, मुलट्ठी, लालचंदन, सफेद चन्दन, इनको चावलो के धोवन मे पीस लेप करे तो पित्त का व्रण दूर होता है।

### कफ व्रण पर लेप

लोध पठानी, ढेरा, कदंब, नीम, अर्जुन, वेद, इनका छिलका पानी मे पीस कर लेप करे तो कफ का व्रण दूर हो।

### गंभीर व्रण की चिकित्सा

धावे के फूल, नीम, करञ्जुआ, कदंब, अर्जुन, वैत, भ्रेक, इनका काढ़ा बना व्रण धोवे तो गंभीर व्रण दूर हो।

### सर्व प्रकार के व्रण पर

जौखार, मजीठ, रसौंत, मनसिल, इनको गोमूत्र मे पीस कपड़े पर चिपका कर लेप करे तो सब प्रकार का व्रण दूर हो।

### अन्य तीन लेप

१—नीम के पत्ते शहद मे पीस लेप करे। २—निंबपत्र, तिल, शहद मे मिला लेप करे। ३—दारुहलदी शहद मे मिला लेप करे तो सब प्रकार के व्रण दूर हो।

### अन्य उपाय

१—तिलों को पीस कर व्रण पर लगावे और २—तिल, निम्बपत्र, इनके काढ़े से व्रण धोवे तो सब प्रकार के व्रण दूर हो।

### सर्व व्रण का उपाय ( मरहम )

चिडिया की सफेद बीठ ३० माशे, फटकरी फूल ४ माशे, शिंगरफ २ माशे, नीलाथोथा २ माशे, बिरौजा कलकतिया ४ तोला, प्रथम बिरौजे को आग पर पिघलाए फिर अन्य चीजों को बारीक कर उसमे मिला ले, अच्छी तरह सब मिला कर दीवाली के दिये मे भर रखे ( और कोई बर्तन न ले ) कपड़े की टाकी पर लगा व्रण पर चिपकावें और थोड़ा थोडा सेक दे तो सब प्रकार के व्रण दूर होते हैं।

### अन्य मरहम

मीठा तेल १० टंक आग पर गर्म करे, फिर उतार कर उसमे पैसा भर देसी मोम मिला ले, फिर पैसा भर सफैदा काशगरी मिला दे, फिर ३ माशे नीलाथोथा पीस कर मिला दे और सब अच्छी तरह मिला कर मरहम बना ले, कपड़े पर चिपका कर व्रण पर लगावें तो आतशक के व्रण दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

चूना, साबन, राड़ा, नमक, चोक, निंबपत्र, गुग्गुल, रीठा, एलुआ, कुचला, गुलबास और बेरी के पत्ते, इनको गोमूत्र मे पीस कर लेप करे तो सब प्रकार के व्रण फूट कर दूर होते हैं।

### अन्य उपाय

चूना, सज्जीखार, साबन, इनको गोमूत्र मे पीस लेप करे तो व्रण पक कर फूट जाते हैं और भर जाते हैं।

## नाड़ीव्रण निदान

व्रण पकने पर उसकी चिकित्सा न की जाय तो उसकी राध पाक अंदर ही अंदर मांस, सिरा और नाडी को गला देती है, उस समय नाड़ी से बूंद २ मवाद वहता रहता है, उसे नाडीव्रण या 'नासूर' कहते हैं। यह व्रण पाच प्रकार का होता है, वात, पित्त, कफ, सन्निपात और शल्य।

### वातज नाड़ीव्रण के लक्षण

वात के नाडीव्रण में भागदार पतली राध वहती है, व्रण का मुख सूक्ष्म और कठोर होता है।

### पित्तज नाड़ीव्रण के लक्षण

पित्तज नाड़ीव्रण में दाह होता है, ज्वर और तृष्णा होती है, व्रण से गरम गरम घना और पीले रंग का स्राव होता है।

### कफज नाड़ीव्रण के लक्षण

कफज नाड़ीव्रण में लेसदार, गाढ़ा, सफेद मवाद निकलता है, खाज होती है, रात को अधिक कष्ट होता है।

### सन्निपातज नाड़ीव्रण के लक्षण

तृषा, मूर्च्छा, दाह, ज्वर, श्वास और तीनों दोषों के लक्षण हों, यह महादु खदायी और असाध्य होता है।

### शल्यज नाड़ीव्रण के लक्षण

जिसमें से भागदार गर्म गर्म लहू निकले वह शल्यज नाड़ीव्रण होता है। कांटा, सुई आदि चुभ जाने से उसका कोई अंश अंदर रह जावे तो वह किसी नाड़ी में पहुँच कर व्रण पैदा कर देता है, उसे शल्यज नाड़ीव्रण कहते हैं।

साध्यासाध्य—सन्निपात का नाड़ी व्रण असाध्य, अन्य चार व्रण साध्य होते हैं।

### नाड़ीव्रण चिकित्सा—

नीलाथोथा, चोक, गीदड़ की टट्टी, सीप, चूना, आदमी की हड्डी, वकरी की हड्डी। हड्डियों को पानी में पीस ले, फिर अन्य चीजों को वारीक कर शहद से वत्ती वना नासूर में दे तो सात दिन में नाड़ीव्रण दूर हो।

अथवा—केसर, सोंठ, सिंधूर इनको पीस गोघृत मे वत्ती करे तो नासूर दूर हो जाता है।

अथवा—धतूरे के रस मे कपड़ा तर करके वत्ती वना नासूर मे देवे तो नासूर दूर हो।

अथवा—धतूरे के वीज पीस टिकिया वना नासूर पर वाँधे तो नासूर दूर हो।

अथवा—एरण्ड की छाल थोडा नीलाथोथा मिला पीसे और वत्ती वना नासूर मे दे तो नाडीव्रण दूर हो।

मरहम ( योगचिन्तामणि से )

आक और धतूरे की जड, गुग्गल, मोथा, राल, कत्था, कमीला, सुहागा, मुरदासंग, राडा, माजू, मिर्च, शिंगरफ, केसर, हरड़, गंधाविरोजा, इलायची, वेरी के पत्ते, सिंधूर, इन सव को जुदा जुदा पीस सव से दुगना गोघृत लेकर गर्म करे और सव दवाइयो को घी मे मिला पहर भर घोंट कर रखे, इसके लगाने से नासूर, फुलवहरी, घाव आदि दूर होते हैं।

अथवा—भैंस का सींग जला ले और घी मिला कर लगावे तो १४ दिन मे नासूर दूर हो।

अथवा—शरपुंखा, रायसन, मिर्च, सेंधानमक, चित्रा इनको पानी मे पीस लेप करे तो नासूर दूर हो।

नारवा चिकित्सा

माघ शुदी सप्तमी को निराहार व्रत रखे तो साल भर तक नारवा नही हो सकता।

अथवा—माघशुदी षष्ठी के दिन १०८ मिर्चें पाव भर घी के साथ खावे तो नारवा रोग दूर हो।

अथवा—माघशुदी सप्तमी को तालु के केश मुंडवा कर रात को अजवायन की टिक्की वॉधे प्रातः खोल दे तो नारवा दूर हो।

अथवा—कबूतर की वीठ ले गुड़ मे गोली बना ले, एक-एक गोली तीन दिन तक खावे तो नारवा दूर हो।

अथवा—रात को कबीरागूंद पानी मे पीस ऊपर बांधे तो नारवा दूर हो।

अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से )

१—चोक को नरमूत्र में पीस लेप करे। २—एरण्ड और आक की जड़ नरमूत्र मे पीस गरम गरम लेप करे तो नारवा दूर हो।

अथवा—नीचे लिखे मन्त्र से तेल को हर रोज सात वार मंत्रित करके पीवे तो नारवा दूर हो।

मन्त्र—"सवाभार लोहे की तांई, वार नवे उतेऊ चढ़ाई, तेल सकारे काएगा तेलस, विश्व लेपा संहरणा वायु विरिया नाथ की आज्ञा, फाट फूट गल जाओरे नहरुआ, शिव नास्ति विषा, ठ"।

अन्य उपाय—रविवार को कायफल के फूल जितने निगले उतने साल तक नहरुआ नहीं होता।

अन्य—एतवार को गुड़ की सात गोलिया करे, एक गोली एक वार नीचे लिखे मंत्र को पढ़ कर खावे तो नारवा दूर हो।

मन्त्र—"ओ नमो आदेश गुरु को माता सुंदरी, पिता पञ्च वायु, जहां जन्मे स्वामी विप्रनाथ, पढ़ गुण विप्र दरश दीया, तोड़ जनेऊ कुए महि दिया, जिसका नहरुआ या डमरुआ अंधा वावला हुआ, पकै फूटै केरे मेरी भक्त फुरो, ईश्वरोवाच।"

अन्य—एतवार के दिन गुड़ को २१ वार नीचे लिखे मंत्र से मंत्रित करके पीने से नारवा रोग दूर होता है।

मन्त्र—"ओ ह्रीं, श्रीं, क्लीं. सुज्वल डमल वरे जय ह्रीं, ह्रौं, श्रां, श्रीं, सहस्रकिरणाय जगच्चक्षुषे नमः"॥

अन्य उपाय—मुरगे की वीठ गुड़ मिला कर तीन दिन तक खावे तो नारवा दूर हो।

अन्य उपाय—एतवार के दिन कच्चा सूत आदमी के वरावर लेकर वारीक वारीक टुकड़े करके गुड़ मे मिला तीन गोली वनावे, एक एक गोली को सात सात वार नीचे लिखे मंत्र से मंत्रित करके नित्य एक गोली लिखे मंत्र से खावे तो नारवा दूर हो।

मन्त्र—"ॐ नमो वाँमन फोटी जोगी भयो, जनेऊ तोड नारवा कियो, पाचे फूटे पीडा करे, श्री वीरनाथ जोगी की आज्ञा फुरे, ईश्वरोवाच"।

## व्रण, नाड़ीव्रण, नारवा आदि में पथ्य

रक्त निकालना, शोधन, पाचन, रोपण, नश्तर आदि शस्त्रकर्म, जोक लगाना, मैनफल, पुराने चावल, बैंगन, चौलाई, ककोडे, करेले, उष्ण भोजन, अनार, केला, छोटी मूली, परवल, अंगूर, घृत और चंदन का लेप ये पथ्य हैं।

## कुपथ्य

दूध, कुलफी, उडद, मखन, गुड, गन्ना, रस आदि, पत्रो वाले साग, शराब, मांस, भारी, कब्ज करने वाले पदार्थ, नमकीन, खट्टे, शीतल पदार्थ, स्त्रियो का ध्यान अथवा मैथुन, दिन को सोना, रात को जागना, पान, नसवार, वर्षा आंधी और धूप मे घूमना, क्रोध, शोक, वमन, भार उठाना, विषम भोजन करना, ऊचे हंसना, बोलना, इस प्रकार के अन्य भी विरुद्ध उपचार व्रण के रोगी को छोड़ देने चाहिये।

इति नाड़ीव्रण रोगाधिकार।

# अथ भग्नरोगाधिकार

भग्न कहते हैं हड्डी का टूटना, वह भग्न दो प्रकार का होता है, १—सन्धिभग्न अर्थात् जोड का टूटना या जुदा हो जाना। २—काण्ड-भग्न अर्थात् हड्डी का बीच मे से टूट जाना। संधिभग्न भी छः प्रकार का होता है, १ उत्पिष्ट, २ विश्लिष्ट, ३ विवर्तित, ४ तिर्यग्भग्न, ५ क्षिप्त, ६ अधःक्षिप्त।

## संधिभग्न के लक्षण

संधिभग्न में जोड को फैलाने और इकट्ठा करने मे अत्यन्त कष्ट होता है और छूने मे भी अत्यन्त कष्ट होता है। १ उत्पिष्ट संधिभग्न के चारो ओर सूजन और विशेषकर रात के समय अधिक पीड़ा होती है। २ विश्लिष्ट मे सूजन और दिन रात पीड़ा होती रहती है। ३ विवर्तित में दोनो ओर अधिक पीडा होती है। ४ तिर्यग्भग्न, ५ क्षिप्त एवं ६ अधः-क्षिप्त मे अपने अपने स्थान पर अत्यन्त पीडा होती है।

## काण्डभग्न के सामान्य लक्षण

काण्डभग्न बारह प्रकार के होते हैं, उनका सामान्य लक्षण—अंग-शिथिल, सूजन, तीव्र-पीडा, दवाने से हड्डी में शब्द, कप, शूल, छूने से अत्यन्त पीडा और भी इसी प्रकार के लक्षण होते हैं।

## भग्न रोग की चिकित्सा

फटकरी फूल ३-४ माशे दूध के साथ खावे तो तत्काल भग्न की पीड़ा दूर हो।

लेप—हालो, मैदासक, दोनो को गोमूत्र में पीस गरम गरम लेप करे तो भग्न की चोट और पीड़ा दूर हो।

## अन्य उपाय

बारहसिंगे को गोमूत्र मे घिस कर लेप करे तो सब प्रकार की चोट पीड़ा दूर होती है।

अन्य—हलदी, बीजाबोल समभाग पीस घी मिला कर दूध से खावे तो चोट की पीड़ा दूर हो।

अन्य—मैदासक, कसीस, हलदी, हालो को गोमूत्र मे पीस कर लेप करे तो भग्नपीड़ा दूर हो।

अन्य—बास की गाठ का कोइला कर एक माशा भर नित्य घी के साथ खावे तो तीन दिन मे पीड़ा दूर हो।

अन्य—एक बैगन लेकर उसमे छेद करके दो तोला गुड़ भरे और रात भर पड़ा रहने दे, प्रात काल खावे। सात दिन, नित्य नया बैगन ले तो सात दिन मे भग्न पीड़ा दूर हो।

अन्य—सैंधानमक १ टंक, गुड़ १ टंक दोनो मिला प्रातःकाल नित्य खावे तो भग्नपीडा दूर हो।

अन्य—बैरोवाल का साबुन एक एक पहर के बाद घिस कर लगावे तो भग्नपीडा दूर हो।

नोट—बैरोवाल व्यास नदी के किनारे एक प्रसिद्ध गांव है, किसी समय वहां साबुन का एक बड़ा कारखाना था किन्तु १६३२-३४ संवत्

विक्रमी मे गाव का वह भाग नदी की बाढ से वह गया।

## कांटा चुभे और पक जावे, पर निकले नहीं-उसका उपाय

नमक और गुड दोनो मिला गरम करके बांधे तो पक कर कांटा बाहर निकल आवे।

अन्य—सच्ची चीनी पीस काटा जहा चुभा हो वहा लगावे तो पीड़ा नाश होवे।

## सब प्रकार के अभिघात व्रण का निदान

घाव छः प्रकार के होते हैं, १ छिन्न, २. भिन्न, ३. पिच्चित, ४ घृष्ट, ५ विद्ध, ६ क्षत। १ चाकू, छुरा आदि से अंग कट जाने को छिन्न कहते हैं। २. पेट मे छुरा आदि घोपने को भिन्न कहते हैं। ३ किसी अग के कुचले जाने को पिच्चित कहते हैं। ४. रगड लग जाने को घृष्ट कहते हैं। ५. सुई, काटा आदि चुभ जाने को विद्ध कहते हैं। ६. लाठी, पत्थर आदि के प्रहार को क्षत कहते हैं।

## व्रण का उपाय

नीम के पते उबाल कर व्रण धोने पर शुद्ध हो जाता है मक्खी नहीं बैठती

अन्य—असंगध और नीम उबाल कर व्रण धोने से जखम जल्दी भर जाता है, पीडा कम हो जाता है।

अन्य—आटा और हलदी को घी मे भून लुपरी बनाकर बाधे तो पीड़ा दूर हो जाती है।

## घाव से लहू बंद करने का उपाय

१—घाव पर रूई रख कर कसकर पट्टी बाध दे तो लहू बंद हो जाता है जखम भर जाता है।

२—काकजंघा का रस घाव पर निचोड़े, उसको बारीक पीस कर ऊपर बांधे तो लहू निकलना बंद हो।

अन्य—अच्छी शराब से व्रण धोया जाय तो बहुत शीघ्र घाव का रुधिर बंद होता है।

## अन्य सिद्ध योग

अनसूई भैंस का सींग छील कर घी मे मिला दो मास तक रख छोड़े, पश्चात् पुष्पनक्षत्र एतवार अथवा मूलनक्षत्र एतवार के दिन आक के फल की रुई मे लपेट कर आग लगा कर कज्जल वना ले, इस कज्जल को व्रण पर लगाने से वहता हुआ खून वंद होता है, और जखम शीघ्र भर जाता है।

## सव घावों पर मरहम

नीलाथोथा, मुरदासग, कथ, मजीठ, शिगरफ, सिंदूर सव ६-६ माशे लेकर वारीक पीस ले, फिर कड़वा तेल ६ पैसे भर लेकर सव दवाइयां अच्छी तरह मिलाकर मरहम वनाये, इस मरहम मे रूई की फुरेरी तर करके लगाये तो सव प्रकार के व्रण दूर होते हैं ।

## तीर, वरछी, गोली आदि के घाव का उपाय

जखम पर कांतपाषाण (चुम्वक पत्थर) का टुकड़ा वांधे तो उसकी कशश से लोहे का तीर आदि वाहिर निकल आवे और फिर पुठकडे का रस लगाते रहने से भी व्रण दूर हो जाता है, व्रण को नीम के पानी के साथ धोना चाहिये और पीछे कही आटा और हलदी की लुपरी वना कर वांधना चाहिये।

## अन्न उपाय ( रसरत्नाकर से )

देवदाली ( घघरवेल ) फल के रस की शहद मिलाकर वत्ती वना शल्यस्थान मे दे, ऊपर से गेहूँ के छने हुए आटे की टिकिया वाधने से लहू शल्य घाव आदि दूर हो जाते है।

## हड्डी मे रुके हुए शल्य की चिकित्सा

सावुन, सुहागा, नीलाथोथा, इनको शहद मे पीस वत्ती वना व्रण में देवे तो अस्थिगत शल्य दूर हो।

अन्य—जीयापोता के वीजों की गिरि को पीस वत्ती वना व्रण मे देवे और ऊपर लेप करे तो व्रणादि शल्य दूर हो।

## सव जखमों पर मलहम

शिंगरफ, सुहागा, मुरदासंग, संगजराह, राल, कत्था, नीलाथोथा

सब ७-७ माशे, मोम देसी ४ तोले, घी ८ तोले, सब को बारीक कर ले, फिर घी को गरम करे और उसमें मोम मिला दे, फिर कपड़ छान की हुई चीजे मिला दे, बारीक कर मरहम बना लेप करे सब प्रकार के व्रण दूर हो।

अन्य—सफेद पुठकंडे की जड़ जल मे बारीक पीस शहद मिला कपड़े की बत्ती बना व्रण मे देवे और ऊपर से दृढ़ पट्टी बाध दे, एक पहर मे ही शल्य व्रण की पीडा दूर हो। ( रसरत्नाकर से )

### अन्य उपाय

राल सफेद, कत्था, मुरदासग, शिंगरफ, नीलाथोथा सब ६-६ माशे लेकर जुदा जुदा पीस ले, कीकर की कोपले, नीम के पत्ते ४-४ तोले, जुदा जुदा पीस कर दो टिकिया बना ले, फिर इनको मीठा तेल १ सेर ( ३२ तोले ) मे पकावे, जब दोनो टिकिया जल जावें तो तेल को छान ले और उसमे दो तोले मोम मिला ले जब मोम पिघल जावे तो अन्य भी मिला ले और एक जान करके मरहम को किसी डिब्रिया या चौड़े मुह की शीशी मे रख छोड़े इसके लगाने से बरछी, नेजा, तलवार आदि का घाव मिट जाता है।

### अन्य मरहम

शिंगरफ, सुहागा फूल, मुरदासंग, राल सफेद, कत्था, नीलाथोथा सब सात २ माशे, मोम ४॥ तोले, गाय का घी ६ तोले, प्रथम घी को गरम करे, फिर उसमे मोम मिला ले, फिर अन्य वस्तुओ को बारीक कपड छान कर मिला दे, इसके लगाने से सब प्रकार के घाव मिट जाते हैं।

### व्रण रोग पर पथ्य

शीतल जल का तिरड़ा देना, पट्टी बाधना, शुद्ध कीचड का लेप, कंगुनी, सब प्रकार के यूष, मूग, मटर, तेल, मक्खन, घी, दूध, शहद, छोटी मूली, सुहाजना, परवल, लहसन, अगूर, दाख, बादाम, न्योजे, पिस्ता, चावल, गेहू, आमले, अस्थिसंहारी तथा अन्य भी हड्डी मांस को जोड़ने वाला उपाय हो, सेक, टकोर, उत्तम सुरा तथा और भी बृंहण चिकित्सा इसमे पथ्य हैं।

### कुपथ्य

अधिक नमक, चरपरे पदार्थ, खारी पदार्थ, मछली, अनूपमास, मैथुन, व्यायाम, घूमना-फिरना, चिन्ता, भय, शोक, क्रोध, विरुद्ध अन्न यह व्रण रोग मे कुपथ्य हैं।

इति सद्योव्रणरोगाधिकार।

## अथ भगन्दररोगाधिकार

गुदा के चारो ओर दो अंगुल के घेरे में विशेपकर सीवन पर एक छोटा सा फोडा हो जाता है, जो फूट कर गुदा की नाली मे छिद्र कर देता है उसे भगंदर कहते हैं। भगंदर पांच प्रकार का होता है—१ वात ( शतपोनक ), २. पित्त ( उष्ट्रग्रीव ), ३ कफ ( परिस्रावी ), ४ सन्निपात ( शम्बूकावर्त ), ५. क्षत ( उन्मार्गी )। भगन्दर का फोडा जब फूटता है तो कमर और सिर में दर्द होता है, भगन्दर मे चुभके पड़ती हैं, दाह होता है, खुजली और दर्द होती है।

### भगंदर की चिकित्सा ( रसरत्नाकर )

सब से प्रथम यह यत्न करना चाहिये कि भगन्दर का फोडा पकने और फूटने न पावे, इस लिये जब फोड़ा बन जावे तो तत्काल अच्छी जोके लगवा दे, गदा लहू निकलने से भगन्दर बैठ जावेगा।

### अन्य उपाय

काला धतूरा, कलिहारी और कुचला, इन तीनो को पानी मे पीस कर लेप लगा दे तो भगन्दर दूर होता है।

### रवितांडव रस ( रसरत्नाकर से )

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग दोनो की कजली करे, फिर शुद्ध तावे के बारीक पत्र ( वर्क ) अथवा पतली तारें दोनो के बराबर ( ३ भाग ) मिला कर घीकुमार से अच्छी तरह खरल कर गोला बना कर सुखा ले, फिर एक हांडी में नीचे ऊपर पलाश की राख भर बीच मे गोला रख दृढ़ सपुट करके दोपहर तक आग दे, फिर शीतल होने पर निकाल ले, फिर इसी तरह जंबीरी के रस मे खरल कर पलाश की राख में सात

पुट दे, फिर निकाल बारीक पीस रख छोड़े। एक रत्ती दवाई घी शहद (१ तोला घी, ६ माशे शहद) के साथ खावे तो भगन्दर दूर हो।
अन्य—१. संभालू के रस का लेप करे। २. अथवा आक की जड घिस कर लगावे। ३. अथवा पुठकंडे के रस का लेप करे तो भगन्दर दूर हो।

### अन्य उपाय

हरड, बहेडा, आमला, कुठ, कौंचबीज, चिरायता, शुद्ध गन्धक, और लहसन सब समभाग लेकर चूर्ण करे और सबके बराबर मिश्री मिला ले। यह चूर्ण एक तोला भर रात को सोते समय गूलर की जड के काढ़े के साथ नित्य खावे तो पाचो भगंदर दूर हो।

### अन्य भेद

शुद्ध तावे का चूरा १ भाग, शुद्ध पारा १ भाग, सैंधा नमक ६ भाग, शुद्ध गन्धक ६ भाग सबको भांगरे और जंबीरी के रस मे खरल कर सेवन करे तो भगन्दर और गम्भीर फोडे दूर हो।

अन्य—मनुष्य की हड्डी का तेल निकाल कर लगावे, तो भगन्दर दूर हो।

अन्य—ताम्रभस्म को शहद, मुलट्ठी और इटसिट के काढ़े में एक दो दिन खरल करे, फिर काकड़सिंगी के रस से लेप करे तो भगन्दर दूर हो।

अन्य—बिल्ली की हड्डी को त्रिफले के काढ़े मे घिस कर लेप करे तो भगन्दर दूर हो, भगन्दर को नित्य त्रिफले के काढ़े के साथ ही धोना चाहिये।

अन्य—एक केंचुआ (गंडोआ) लेकर गधे के खून मे पीस कर लेप करे तो भगन्दर दूर हो।

अन्य—अथवा गधे की हड्डियो का तेल लगाते रहने से भी भगन्दर नष्ट होता है।

### भगन्दर रोग के पथ्य

कच्चे भगन्दर मे शोधन करना, लंघन करना, लेप लगाना, रक्त निकालना, भगंदर पक जावे तो शस्त्र द्वारा चीरा देना, अग्नि से दाग़ देना, अथवा क्षार लगाना चाहिये। खाने के लिये—पुराने चावल, मूंग, खिचड़ी, परवल, सुहाँजना, तिल, सरसो का तेल, नरम छोटी मूली, घी, शहद अन्य रक्तशोधक पदार्थ पथ्य हैं।

### भगन्दर में कुपथ्य

मैथुन, युद्ध करना, पीठी के पदार्थ, भारी पदार्थ, व्यायाम, वेग रोकना, अन्य कब्ज करने वाले पदार्थ तथा रक्त बिगाडने वाले पदार्थ कुपथ्य हैं।

इति भगंदररोगाधिकार।

## अथ उपदंश-रोगाधिकार

### उपदंश-निदान

हाथ की चोट से, नाखुन वा दांत के काटने से लिंग पर कहीं जखम हो जाये अथवा इन्द्रिय स्थान को शुद्ध न रखने से, अत्यन्त मैथुन करने से, योनि की खराबी से अथवा अन्य इसी प्रकार के कारणों से मूत्रेन्द्रिय पर कोई व्रण हो जाये और वह व्रण जहरीला हो जावे तो उस रोग को उपदंश कहते हैं।

नोट—उप-दंश यह दो शब्द हैं, दंश का अर्थ काटना और विशेष कर सांप के काटे हुए को दंश कहते हैं, उप का अर्थ है कि कुछ कम, इस सब का अर्थ यह हुआ कि सर्पदंश से कुछ कम शक्ति का एक जहरीला रोग है इस लिये इसे उपदंश कहते हैं। इसे आतशक भी कहते हैं, क्योंकि यह भी 'आतिश' अर्थात् आग की तरह शरीर में प्रतिसमय आग सी लगाए रखता है। यह बड़ा भयानक रोग है, जब अपनी पूर्णावस्था में होता है तो इन्द्री भी गल कर कट जाती है और अंग-प्रत्यंग से गंध फूटती है और अन्य भी कुष्ठ के लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

उपदंश पांच प्रकार का होता है, १—वात, २—पित्त, ३—कफ, ४—सन्निपात, ५—रक्त।

### वातज उपदंश के लक्षण

वात के उपदंश में तोद होता है, चीरने फाड़ने की सी पीडा होती है और फुंसी अतिश्याम रंग की होती है।

### पित्तज उपदंश के लक्षण

पित्त से दाह होता है और फुंसी से पीला गाढ़ा स्राव निकलता है, अन्य पित्त के लक्षण पाए जाते हैं।

### कफज उपदंश के लक्षण

कफ से इन्द्री पर सोज और खुजली होती है, स्राव गाढ़ा और श्वेत वर्ण का होता है।

### सन्निपातज उपदंश के लक्षण

जिसमे तीनो दोषो के लक्षण पाए जाये वह सन्निपात का उपदंश होता है।

### रक्तज उपदंश के लक्षण

रक्तज उपदंश मे व्रण की रंगत मास के समान होती है, अन्य लक्षण पित्त के समान होते हैं।

### असाध्य लक्षण

इन्द्री मे कीडे पड़ गए हो और झड गई हो तथा अन्य नाक, हाथ-पाओ की अंगुलिया सड गई हो और तालु मे छिद्र हो गया हो, वह उपदंश असाध्य है। यह रोग पाप कर्म का फलभोग है, इसलिये मनुष्य को मन, वाणी और कर्म द्वारा बुरे कर्मो से बचना चाहिये।

### उपदंश रोग की चिकित्सा (रसरत्नाकर से)

शंख को पानी मे घिस कर लिंग पर लेप करे तो, लिंगपीड़ा, दाह, पाक, फिंसिया दूर होती हैं, उपदंश नष्ट होता है।

अन्य—काठा सुपारी और वच दोनो के पानी मे पीस लेप करे तो उपदंश नष्ट होता है।

अथवा—खैर और अनन्तमूल को पानी के साथ पीस लेप करे तो पाका, फिंसिया और उपदंश दूर हो।

### अन्य धोने का काढ़ा

त्रिफला काथ से थोड़ी २ देरी बाद लिंग धोने से पाका, शूल, उपदंश दूर होता है।

लेप—गंधक को घी के साथ पीस लेप करे तो पाका, शूलयुक्त उपदंश दूर होता है।

अथवा—सफेद जीरा घीकुआर के रस मे पीस लेप करे तो लिंगशूल, पाकयुक्त उपदंश दूर हो।

### अन्य उपाय

बरगद, गूलर, पीपल, जामुन, आम, इनके छिलके का काढ़ा बना कर जखम धोने से व्रणपाकयुक्त उपदंश दूर होता है।

### अन्य उपाय

रसौंत और गेरू को पानी में पीस लेप करने से व्रण, शूल, पाकयुक्त उपदंश दूर होता है

### अन्य काढ़ा

त्रिफला, नीम, चिरायता, खैर, पटोलपत्र, विजयसार इनका काढ़ा बना उसमे १ माशा शुद्ध गुग्गुल मिला पीवे तो सब प्रकार के उपदंश दूर हो।

### अन्य उपाय (शार्ङ्गधर से)

लोहे के बर्तन मे त्रिफला को जला कर शहद मे मिला उपदंश व्रण पर लगाना भी रोगनाशक है ।

अन्य—शुद्ध पारा १ टंक, शुद्ध गंधक १ टंक (दोनों की कज्जली), बावची १ टंक, चित्रा १ टंक, शुद्ध भिलावे १२ टंक, गुड ३ टंक सब कूट छानकर घी और शहद मे एक २ टंक की गोली बनावें। एक वा दो गोली नित्य खावे तो सात कुष्ठ, मंडल, दद्रु, उपदंश दूर हो। पथ्य—दूध, भात। जखमों पर पतालगरुड़ी जिसे तरड़ी व तरड़ भी कहते हैं घिस कर लगावे।

अन्य—चोबचीनी, कालीमिर्च दोनों का चूर्ण बना शहद के साथ चाटे तो सब प्रकार के पाक, रुधिर, टाकी, पीड़ायुक्त उपदंश दूर होता है।

अन्य—असगंध ४ माशे, सफेद मूसली ४ माशे, लौंग, अजवायन, रससिंदूर, शुद्धभिलावे, खुरासानी अजवायन सब दो २ माशे लेकर बारीक कर पुराने गुड में बेर बराबर गोली बनावे। फिर १-२ गोली खट्टे दही के साथ खावे, और ऊपर से १ छटांक दही खावे। मीठा तथा मांस आदि न खावे तो सब प्रकार का आतशक फिरंगवाद दूर हो।

अन्य—शुद्धपारा, जंगहरड, देसी अजवायन, वज्रअजवायन, खुरासानी अजवायन, चोबचीनी, बड़ी हरड, सब छः छ: माशे, सबको बारीक कपड़छान करके पुराने गुड़ में कोकन बेर बराबर गोली करे, नित्य ताजे पानी के साथ

एक गोली खावे, सब प्रकार का आतशक दूर हो। परन्तु इससे रोगी का मुंह पक जाता है, इसलिये पारे की जगह रससिंदूर मिलाना चाहिये।

अन्य—मैदासक ४ तोले, मुरदासंग ४ तोले, पुराने गुड में एक एक टंक की गोली करे, एक वा दो गोली सांझ सवेरे ताजे पानी के साथ खावे तो सात वा चौदह दिन मे फिरंग दूर हो अलूनी गेहूं की रोटी घी के साथ खावे।

अन्य—शुद्ध गुग्गुल, वलअजवायन, कत्थ, ६-६ माशा, शुद्ध भिलावे ६ दाने, रससिंदूर दो माशे, सब को पीस कर घी मिला १४ गोली बनावे और घी के साथ नित्य एक गोली खावे तो वादफिरंग दूर हो।

अन्य—देसी अजवायन, वलअजवायन, खुरासानी अजवायन, शुद्ध भिलावे, पुरानी गिरी ( खोपा नारियल ) सब एक एक तोला, कालीमिर्च ६ माशे, काले तिल ६ माशे, गुड पुराना २॥ तोले, रससिंदूर २॥ माशे, लौंग २॥ माशे, सबको बारीक कर गुड मे नौ गोली बनावे, गौ के दही के साथ नित्य एक गोली खावे तो सात दिन मे टाकी फोड़ा वायुयुक्त फिरंग दूर हो।

सिंचलादि वटी ( वैद्य कुतूहल से )

संखिया, वायविड़ंग, सुपारी, कत्था, धतूरे के बीज, सब एक एक टंक, माजू सब के बराबर सब को बारीक कर कंडियारी के रस मे तीन दिन तक खरल कर एक एक रत्ती की गोली बनावे, नित्य एक एक गोली दोनो समय ताजा पानी के साथ खावे। पथ्य—गेहूँ का दलिया। १४ दिन मे फिरंग दूर हो।

अन्य—आदमी के सिर की हड्डी की भस्म जखमो पर लगावे तो उपदंश दूर हो।

अथवा—कनेर की जड़ की छाल जल में पीस कर लगावे तो उपदंश के व्रण दूर हो।

अन्य—माजू, माई, शिंगरफ, सब दो दो टंक, हजारदानी दोधक एक तोला, सबको पीस कर टिकिया बना हुक्के की चिलम मे रख कर बिना जल डाले हुक्के से प्रातःकाल पीवे, पथ्य—दूध, चावल, और निवात गृह

( हवा आदि से बचे ) मे विश्राम करे तो सब प्रकार का उपदंश दूर हो ।

## मरहम

शुद्ध नीलाथोथा १ माशा, कत्थ, राल छ छ' टंक, सब को बारीक करले और १२ टंक गोघृत में खूब खरल करे, फिरंग के जखमो पर लगावे तो सब प्रकार का व्रण दूर हो ।

## अन्य मरहम

राल, सिंदूर, धाय के फूल, गुग्गुल, मोम, सफेदा सब एक एक तोला गोघृत दो तोले प्रथम घी को गरम करे, फिर उसमें मोम पिघलावे, पीछे सब दवाइया बारीक कर उसमे मिला दे और मरहम बनाले, इसके लगाने से सब प्रकार के उपदश व्रण दूर होते हैं ।

अन्य—घोड़े की दाढ को भस्म कर कडवे तेल मे मिला कर लगावे तो सब प्रकार के उपदंश दूर हो ।

अन्य—नीलाथोथा, कुठ, कत्थ, एक एक टंक, मोम दो टंक, सबको बारीक करे, मोम को दो तोले घी में पिघला ले और अन्य दवाइयां मिला कर मरहम करे, इसके लगाने से सात दिन मे टाकी, वा चादी वाला आतशक दूर होता ।

धूनी—गधक, शिगरफ, नीलाथोथा, इनको बारीक कर अंदर बैठ कर धूनी ले तो आतशक दूर हो ।

अन्य धूनी—आक की जड़, शिगरफ, अकरकरा, हवा से बच कर इनकी धूनी लेने से भी आतशक दूर होता है ।

## वृद्ध उपदंश उपाय

जंग हरड़, सुहागाफूल, कौड़ीभस्म, तवाशीर, भुना हुआ नीलाथोथा सब बराबर और सब के बराबर कालीमिर्च, ( जंग हरड़ आठवा भाग हो ) सबको बारीक कर निंबू के रस मे सात दिन तक खरल करे, और कोकन- बेर बराबर गोली बनावे एक गोली निंबू के रस के साथ खावे तो सब प्रकार का चांदी टाकी वाला उपदंश दूर हो । पथ्य—अलूनी रोटी, दूध, चावल, दलिया आदि देवे, इससे रोगी का मुंह नहीं आता ।

### उपदंश में पथ्य

वमन-विरेचन, तरेडा, लेप, जोक लगाना, जौ, चावल, करेला, सुहाजने की फलिया, परवल, छोटी मूली, शहद, कुएं का जल, तेल, यह वस्तुएं पथ्य हैं।

### कुपथ्य

दिन मे सोना, भारी अन्न, मैथुन, गुड, खटाई, व्यायाम करना, लस्सी, मूत्र आदि वेगो को रोकना इत्यादि कुपथ्य कहे हैं।

इति उपदंशरोगाधिकार।

## अथ शूक-रोगाधिकार

### शूकरोग निदान

जो मूर्ख नर लिंग वढाने की इच्छा से लिंग पर गरम, तेज और जहरीली दवाइयां मलता है, उसे १८ शूक रोग हो जाते हैं। शूक लिंग पर फिंसिया होती हैं, और वे १८ प्रकार की होती हैं-१-सर्षपिका, २-अष्ठीलिका, ३-ग्रथित, ४-कुम्भिका, ५-अलजी, ६-मृदित, ७-संमूढ पिडका, ८-अवमंथ, ९-पुष्करिका, १०-स्पर्शहानि, ११-उत्तमा, १२-शतपोनक, १३-त्वक्-पाक, १४-शोणितार्बुद, १५-मासार्बुद, १६-मासपाक, १७-विद्रधि, १८-तिलकालक। इस रोग को शूक इसलिये कहते हैं कि शूक एक जल का कीडा है जिस पर काटे से होते हैं, उसको तेल मे जलाकर तिला बनाते हैं, यदि कोई विषयुक्त शूक हो तो इसकी मालिश से यह रोग हो जाता है इस रोग को बरूरी भी कहते हैं।

### शूक रोग की चिकित्सा

रसौंत और गेरू दोनो को मक्खन से पीस कर इन्द्री पर लेप करे तो शूक रोग दूर हो।

अन्य—कत्थ, केवड़े का फूल, रसौंत, गेरू, इनको पीस मक्खन से लेप करे तो शूक रोग दूर होता है।

अन्य—शूक को नीम के पानी से धोकर ऊपर कत्थ शहद मे मिला कर लगावे तो शूक रोग दूर हो।

अन्य—मनुष्य के सिर की हड्डी जला कर मक्खन से लेप करे तो शूक दोष दूर हो।

### शूक रोग में पथ्य

लेप, विरेचन, रक्तमोक्षण, घी, चावल, जौ, मूंग, इनका यूष, करेला, अनार, कुएं का जल, तेल, कड़वे पदार्थ, छोटी मूली, श्वेतचन्दन, परवल, सुहांजना, यह शूक रोग मे पथ्य हैं।

### शूक रोग मे कुपथ्य

दिन को सोना, मैथुन करना, व्यायाम करना, गुड तथा अन्य विदाही एव गुरुपदार्थ, मूत्रवेग रोकना यह कुपथ्य हैं।

इति शूकरोगाधिकार

## अथ १८ कुष्ठ-रोगाधिकार

### कुष्ठ रोग निदान

विरुद्ध भोजन, जैसे—दूध और मछली, दूध और खटाई आदि इकट्ठा खाने से, भारी चिकने और तीक्ष्ण पदार्थ खाने से, वमन-विरेचनादि पञ्चकर्म के उलट पलट होजाने से, पूर्वजन्म के पाप से, गुरु वृद्ध ऋषियो के शाप से, भोजन के अनन्तर ही व्यायामादि करने से, धूप तथा श्रम से क्लान्त होने पर तत्काल ठण्डे जल में स्नान करने से, अजीर्ण एवं अध्यशन, नवीन अन्न, दही, मछली, तथा अत्यन्त लवण और अम्ल-पदार्थ खाने से, उडद, मूली, पिट्ठी, गुड आदि, भिण्डी तिल दूध आदि पदार्थों को साथ २ खाने से तथा इसी प्रकार मिथ्याहार-विहार से मनुष्य को कुष्ठ रोग अर्थात् कोढ़ रोग हो जाता है।

### कुष्ठ के पूर्व रूप

पसीना अधिक आवे अथवा विलकुल ही न आवे, जहां कुष्ठ होना हो उस स्थान पर सुई चुभोने की सी पीड़ा हो, विना कार्य के थकावट, शरीर मे दाह हो, शूल हो, फोड़े हों, शरीर की रंगत वदल जावे, चमड़ी रूक्ष अधिक हो जावे अथवा अधिक चिकनी हो जावे, वार २ रोमांच हो जावे,

चमडी कठोर हो जावे, व्रण शीघ्र उत्पन्न हो और देर तक रहे, अङ्ग सोते जावे, खून काला पड़ जावे, शरीर मे खुजली अधिक हो यह कुष्ठ के पूर्व रूप हैं।

## कुष्ठों के १८ भेद

१ कापाल कुष्ठ—यह वायु से होता है, टूटे घडे के खपरैल की तरह लाल काला तोदयुक्त और रूक्ष होता है।

२ उदुम्बर कुष्ठ—गूलर के फल के समान रंग वाला, पीड़ा, दाह, लाली, खाजयुक्त, पीले रोम वाला पित्त से उदुम्बर कुष्ठ होता है।

३. मण्डल कुष्ठ—श्वेत, लाल, स्थिर, मोटा, स्निग्ध, उभरे हुए गोल २ और परस्पर जुडे हुए चट्टों वाला कफ से मडल कुष्ठ होता है।

४. ऋष्यजिह्व—खुरदरा किनारे लाल हो, अन्दर से सब्ज हो जो ऋष्य मृग की जिह्वा के समान हो, वह वात पित्त से ऋष्यजिह्व होता है।

५ पुण्डरीक—श्वेतवर्ण, किनारे लाल कमल के फूल के समान, दाह, कण्डूयुक्त हो, उभरा हुआ हो, लाली युक्त हो, पित्त कफ से पुंडरीक कुष्ठ होता है।

६. सिध्म—श्वेत, लाल, मलने से भूसी सी उतरे, जो घिया कद्दू फूल के समान वर्ण हो उसे सिध्म कहते हैं। यह वात कफ से होता है।

७ काकण—जो गुञ्जा ( रत्ती ) के समान लाल काला हो, पक जावे, तीव्र पीड़ायुक्त हो वह त्रिदोष से काकणकुष्ठ होता है।

ये सात महाकुष्ठ होते हैं। इनके अतिरिक्त ११ क्षुद्र कुष्ठ होते हैं।

८. चर्म कुष्ठ—जिसकी जड दृढ हो, जो मछली के टुकड़े के समान मोटा हो या हाथी की चमडी समान मोटा हो उसे एकचर्म कुष्ठ कहते हैं।

९ किटिभ—सावा, खुरदरा व्रण स्थान हो, शरीर भी रूक्ष हो जावे उसे किटिभ या कुष्ठ कहते है।

१०. वैपादिक—जिसमे हाथ-पाओ फट जावे और उनमे तीव्र पीड़ा हो उसे वैपादिक कुष्ठ कहते हैं।

११. अलसक—शरीर मे मोटे २ कण्डू और लालीयुक्त गूमड़े उठ आवे उसे अलसक कहते हैं।

१२. दद्रुमण्डल—अंगूठी की तरह गोल लाल २ कण्डूयुक्त फिंसियो को दद्रुमंडल या दाद कहते हैं।

१३. चर्मदल—लाल, शूल और कण्डूयुक्त और दलवाले फोड़े हो उसे चर्मदल कुष्ट कहते हैं।

१४ पामा, विचर्चिका—छोटी २ श्वेत मुंहवाली सारे शरीर मे अत्यन्त खुजली और सफेद दाग वाली फिंसिया हो जावे उन्हे पामा कहते हैं। यदि वही बड़ी २ और दाहयुक्त और कंडूयुक्त विशेष कर हाथ की अंगुलियों मे और कूल्हे और चूतडो पर हो उन्हे विचर्चिका कहते हैं।

१५. विस्फोट—सब्ज और लाल, पतले छिलकों वाले फोड़े हो तो उन्हें विस्फोट कहते हैं।

१६ रकसा—तीव्र खाजयुक्त और बहने वाली फुडिया को रकसा कहते हैं।

१७. शतारु—लाल सब्ज, दाह और पीड़ायुक्त फिंसियां जो प्रायः बच्चों को सिर मे हो जाती हैं उसे शतारु कहते हैं।

१८. विचर्चिका—कण्डूयुक्त सब्ज और स्राव वाली पिडका को विचर्चिका कहते हैं।

## श्वेत कुष्ठ

श्वित्र कुष्ठ--अर्थात् सफेद कोढ़, इसे फुलबहरी भी कहते हैं, इसे किलास भी कहते हैं, यह भी पूर्वजन्म के पाप कर्म से त्रिदोषज ही होता है, वात-प्रधान रूक्ष और अरुण, पित्त प्रधान कमलफूल की तरह लाल, दाहयुक्त, रोमनाशक, कफप्रधान श्वेतवर्ण, घना, भारी, कण्डूयुक्त होता है। यह क्रम से रक्त, मांस और मेद से हो जाता है। इस प्रकार कुष्ठो का विस्तार तो अधिक है, किन्तु यहां संक्षेप से वर्णन किया है।

## कुष्ठ रोग चिकित्सा

गूलर, सिरस, कुडा, नीम, कदंब, खैर, इनकी छाल, त्रिवी, गुलाब, केसू, मघ, वासा, पीलु, इनका काढ़ा बना कर दो तोले घी मिला कर नित्य पीवे तो सब प्रकार के कुष्ठ दूर होते हैं।

## अन्य उपाय ( रसरत्नाकर से )

रससिंदूर, हीरे की भस्म, अभ्रकभस्म, स्वर्णभस्म, सबके समान शुद्ध हरताल, सब को खरल मे डाल, सुहांजना, आक धतूरा और थूहर इनके रस मे एक २ दिन खरल करे, कोई २ आक और थोहर के दूध की भावना देते हैं, फिर एक २ रत्ती की गोली बनाले, नित्य एक गोली माशा भर बावची के तेल मे मिला कर खावे तो सब कोढ़ दूर होते हैं। बावची का तेल पातालयन्त्र से निकालना चाहिये।

## अन्य उपाय

निर्गुण्डी की जड, बावची, मुसली, इनको पीस छान कर तीन माशे से एक तोला तक घृत मधु से खावे तो कुष्ठ दूर हो।

नोटः—घी १ तोला से २ तोला तक हो, मधु ६ माशे से १ तोला तक, बराबर नही लेने चाहिये।

## महातालेश्वर रस

शुद्ध हरताल, स्वर्णमाक्षिकभस्म, शुद्ध मनसिल, शुद्ध पारा, सैंधानमक, सुहागाफूल, सब एक एक तोला, शुद्ध गधक दो तोला, ताम्रभस्म दो तोला, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे पश्चात् अन्य औषधियां मिला कर जभीरी के रस मे एक दिन खरल कर पियालियो मे बंद कर लघुपुट दें, इस प्रकार सात पुटे जंबीरी के रस मे दे। पश्चात् इसमे १६ तोले लोहभस्म और आठ तोले ताम्रभस्म मिला कर जबीरी के रस मे खरल करे और पियालियो मे बंदकर लघुपुट दे, फिर इस दवाई का तीसवां भाग शुद्ध मीठा तेलिया मिला कर खूब खरल करे और बिलफल अथवा शीशी मे भर रख छोड़े। रोगी एक रत्ती दवाई यथाशक्ति भैस के घी के साथ खावे, पश्चात् १ माशा बावचीचूर्ण शहद में मिला कर नित्य चाटे तो सब प्रकार के कुष्ठ दूर होते हैं।

नोटः—अन्य रसग्रंथो मे लोहभस्म गंधक से द्विगुण अर्थात् ४ तोले ली गई है और ताम्रभस्म नहीं लिखी, अतः यह योग दो प्रकार से हो सकता है। एक-१६ तोले लोह और ८ तोले ताम्र वाला, दूसरा-बिना

ताम्र के और ४ तोले लोह वाला ताम्रभस्म वाले रस को तांबेश्वर रस कहा है। मीठा तेलिया दोनों में मिलाना चाहिये। इसलिये आप इस योग को इस प्रकार समझिये। यथा—

महातालेश्वर रस—शुद्ध हरिताल, स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध पारद शुद्ध सुहागा, सैंधानमक, सब एक २ तोला, शुद्ध गंधक दो तोला, ताम्रभस्म दो तोला, लोहभस्म चार तोला, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे, फिर अन्य दवाइयां मिला कर जम्बीरी के रस मे खरल कर टिकिया बना सुखा कर प्यालियों में बंद कर लघुपुट मे फूंक दे, इस प्रकार सात पुट दे, फिर इसमे तीसवां भाग शुद्ध विष मिला कर खरल करें, और संभाल कर रख छोड़े। इसमे से एक रत्ती दवाई भैंस के घी मे मिला कर रोगी को पीछे से १ तोला घी ६ माशे शहद मे एक माशा बावचीचूर्ण मिला कर देवे, इस से सब कुष्ठ दूर होते हैं।

तांबेश्वर रस—लोहभस्म १६ तोले, ताम्रभस्म ८ तोले दोनों को जंबीरी के रस मे खरल कर लघुपुट दे, ऐसा सात बार करे, फिर इसमे तीसवां भाग मीठा तेलिया मिला कर खरल कर रख छोड़ें, मात्रा १ रत्ती, अनुपान महातालेश्वर रस मे कहा हुआ, इससे भी सब प्रकार के कुष्ठ दूर होते हैं।

कुष्ठकुठार रस—रससिंदूर, शुद्ध गंधक, लोहभस्म, ताम्रभस्म, शुद्ध गुग्गुल, हरड, बहेडा, आमला, भ्रेक, चित्रा, शुद्ध शिलाजीत, सब १६-१६ टंक लेकर चूर्ण करे, फिर ६४ टंक करंज की गिरी, ६४ टक अभ्रकभस्म मिला सब को बारीक कपड़छान करके घी और शहद मिला चिकने पात्र मे चटनी बना रक्खे। फिर इसमे से ३-४ माशे दवाई नित्य खावे पथ्य से रहे तो सब प्रकार के कुष्ठ दूर हो।

## श्वेत कुष्ठ उपाय

१—मनसिला, वंगभस्म दोनों को पानी मे पीस लेप करने से श्वेत-कुष्ठ दूर हो।

२—चोक को काजी मे पीस लेप करने से भी श्वेत कुष्ठ दूर होता है।

अन्य—चित्रे की जड , रत्तिया दोनों को कडवे तेल मे पीस लेप करे तो २१ दिन मे सफेद कोढ ( फुलवहरी ) दूर होता है।

अन्य—कुठ, वच, चित्रा, निंगोली, रत्तिया इनको कांजी मे पीस लेप करने से श्वेत कुष्ठ दूर होता है।

अन्य—वंगभस्म, बावची, मनसिल, इनको कांजी मे पीस लेप करने से श्वेत कुष्ठ दूर होता है।

अन्य—मनसिल, पुठकंडे की राख दोनों को आमले के रस मे पीस लेप करे। अथवा सफेद रत्तिया आमले के रस मे पीस लेप करे तो श्वेत कुष्ठ दूर हो।

अन्य—गंधक और जमालगोटा दोनो कुआर के रस मे पीस लेप करने से श्वेतकुष्ठ दूर होता है। इससे छाला पड जाता है, उस पर सौ बार धुला हुआ मक्खन लगावे।

अन्य—बावची की भस्म खट्टे दही मे मिला कर लेप करे तो श्वेत कुष्ठ मिट जाता है।

नोट:—श्वेतकुष्ठ को दूर करने वाली दवाइयाँ प्राय तेज होती हैं अतः यदि छाला पड़ जावे तो शतधौत मक्खन आदि लगावे, इससे व्रण मिट जाता है।

## विस्फोटक श्वेत दाग आदि का उपाय

नील 'वसमा' के पत्ते, रत्तियां, हीरा, कसीस, धतूरे के पत्ते, शिगरफ, चित्रा और चन्दन इनका लेप करने से,दो सप्ताह मे विस्फोटक आदि दूर हो।

श्वेत दाग को उपले से रगड़ कर उस पर इसी लेप को कांजी मे पीस कर लगावे तो तीन सप्ताह मे श्वेत दाग मिट जाते हैं।

अन्य—चिरायता, नागरमोथा, कौड, पटोलपत्र, नीम के पत्ते, हरड, वहेडा, आमला, खस, वासे के पत्ते, मुलट्ठी, पापड़ा, इनको बारीक कर घी मे पीस लेप करने से विस्फोट दूर होते हैं।

अन्य—मघा, गजपीपल, मिर्च, चंवेली के पत्ते, ब्रह्मडंडी, इनको चावलों के पानी से लेप करे तो विस्फोटक दूर हो।

अन्य—नीलकंठी, कुठ, निर्विसी, इन्द्रजौ इनका चूर्ण बना कर बासी पानी से प्रातःकाल पीवे, अथवा इनको पानी मे रगड़ कर पीवे तो विस्फोटक दूर हो जाते हैं।

### सब कुष्ठों का उपाय

चंदन, नागरमोथा, इलायची, तगर, मुलट्ठी, त्रिवी, हल्दी, दारुहलदी, सिरस की छाल, वालछड, कुठ इनका चूर्ण कर घी मे पीस लेप करने से ज्वर, वीसर्प, कोढ़, विस्फोट आदि दूर होते हैं।

अन्य—कमल, चंदन, रायसन, मुलट्ठी, देवदार इनको घी मे पीस कर लेप करने से वीसर्प, कोढ़, ज्वर आदि दूर हो जाते हैं।

### दद्रु ( दाद ) का उपाय

सैंधानमक, हरड, पमाड़ के बीज, निगन्धवावरी, दूबवास, इनको काजी मे पीस कर लेप करने से दाद मिट जाता है।

अन्य—दूबवास, हरड़, सैंधानमक, कौंचबीज, पंवाड के बीज इनको बारीक कर कांजी वा खट्टी लस्सी मे पीस लेप करने से दाद मिट जाती है।

अन्य—नसादर को पानी मे घिस कर लगावे तो दाद दूर हो।

अन्य—सोठ, सुहागाफूल, अफीम, नसादर इनको पानी में पीस लेप करने से सब प्रकार की दाद मिट जाती है।

अन्य—कसौंदी, सोठ, आमले, चावल, इनको पानी मे पीस लेप करने से दाद वा खुजली दूर हो जाती है।

अन्य—अमलतास के पत्ते अथवा कनेर के पत्ते, कपास के फल, त्रिवी, मैनसिल, इनको पानी मे पीस नौ दिन तक लेप करे तो खुजली दूर हो।

अन्य—सुहागाफूल, कीकर के पत्ते, चम्बे के फूल, इनको गोमूत्र मे पीस कर नौ दिन तक लेप करे तो दाद और खुजली मिट जाती है।

अन्य—नीम के पत्ते, चित्रे की छाल, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, हलदी, दारुहलदी इनको वांसा के रस के साथ नौ दिन तक लेप करने से दाद, खाज सब मिट जाती है।

अन्य--मूली के बीज, पंवाड के बीज दोनों कूट कर खट्टी लस्सी मे सात दिन तक भिगो छोडे, फिर अच्छी तरह मिला कर शरीर पर मलने से सब प्रकार की दाद खाज मिट जाती है।

अन्य—पारा १ टंक, गंधक १ टंक, नीलाथोथा १ टंक, भाड़ की रेत ६ तोले, तारेमीरे का तेल ५ पल, पहले पारा गंधक की कज्जली करे फिर अन्य वस्तुओं को मिला कर खूब बारीक करे और तेल मे मिला कर मालिश करे और कम से कम एक घंटा भर धूप मे बैठे। पश्चात् भैस का गोबर सारे शरीर मे मल कर ठण्डे जल से स्नान करे तो इससे पामा कण्डू तथा अन्य कुष्ठ सात दिन में नष्ट हो जाते हैं।

अन्य—रसौत, मनसिला, पारा, दोनो जीरे, हलदी, दारुहलदी, सिन्दूर इनको घी मे पीस लेप करने से पामा, खुजली, दाद आदि मिट जाते हैं।

अन्य—कुठ, दूब, सैंधानमक, हरड़, पवाड़ के बीज इनको बारीक कर दही और कांजी मे पीस कर लेप करने से तीन दिन मे पामा आदि रोग दूर हो जाते हैं।

अन्य—हरड, बावची, पंवाड के बीज, मजीठ, चदन, मिर्च इनको बारीक कर लस्सी मे पीस लेप करने से सब प्रकार की पामा खाज दूर हो।

अन्य—शोरा १ पल, सुहागाफूल आधा पल, फटकरी १ तोला, गेरु दो टंक इनको पानी मे पीस सात वा चौदह दिन लेप करने से सिध्म (थिम) कोढ दूर हो।

केले के पत्तो की राख, हलदी दोनो को पानी मे पीस लगाने से थिम दूर होते हैं।

अन्य—गंधक और चन्दन इनको निंबू के रस के साथ लेप करे तो सात दिन मे थिम दूर हो।

अन्य—गाजर, मूली, सुहांजना, मकोय, कंडियारी इनके पत्ते ले गोमूत्र मे पीस लेप करने से थिम मिट जाते हैं।

१—सफेद संखिया, और सफेद चंदन दोनो को दही के साथ पीस

लेप करने से तीन दिन मे थिम और सफेद कोढ़ मिट जाता है।

### चम्बल का उपाय

सिन्धूर, तावे का जंगार, पारा, सुहागाफूल, कुठ, कमीला, नीला-थोथा, इन सब को बारीक पीस ले, फिर सब से दुगुना घी मिला दे, कड़ाही मे डाल नीम की लकड़ी से सात दिन तक रगड़ाई करे (कोई नीम के डंडे से तावे का पैसा लगा लिया करते हैं), फिर इस दवाई के लगाने से चर्मदल, चम्बल, पामा आदि दूर होजाते हैं।

अन्य—तपड की राख ५ टंक, मिर्च १ पैसा भर, सफेद कत्था १ पैसा भर, नीलाथोथा ७ माशे सब को बारीक कपडछान कर शीशी मे संभाल कर रख छोडे। प्रथम दाद वा चम्बल वाले स्थान को खूब रगड़ ले, जब उसमे खून निकल आवे तो उस पर घी मल दे और उस पर चूर्ण बुरक दे। सात दिन मे चम्बल, दाद आदि कुष्ठ दूर होते हैं।

अन्य—हरड़, अंकोल, नीम के पत्ते, घर का धुआं, सफेद जीरा इन सब को गोमूत्र मे पीस लेप करने से लूता आदि कुष्ठ-विकार दूर होते हैं।

अन्य—कमल, चन्दन, मैनसिल, कुठ, जीवन्ती, सोठ, पाढल, ब्रह्मडंडी, तगर, मैनफल, बिलगिर, संभालू, नख, इन्द्रजौ, बरने की छाल, इनको जल के साथ पीस कर लेप करे तो सब लूता आदि कुष्ठ दूर हों।

श्वेत चन्दन , कमल, रेणुका के बीज, नागरमोथा, कलिहारी की जड़, कुठ, मुलट्ठी, सोठ, कसुंभा और सुगन्धवाला, इनको जल के साथ पीस लेप करने से सब प्रकार के लूत दूर होते हैं।

अन्य—चित्रा, सारिवा, बरने की छाल, नागकेसर, वच, पाठा, लसूड़ियां, वांस की छाल, इनको जल मे पीस कर लेप करने से सब प्रकार की लूत दूर होती है।

### त्रिदोष लूता का उपाय

सरफोका को आदमी के पेशाब से रगड़कर लेप करे तो त्रिदोष की लूता दूर हो।

## कुष्ठ पर आरग्वधादि काढ़ा

अमलतास के फूल, धावे के फूल, कर्णिकार, साल की छाल, नीम की छाल, अर्जुन, सुहांजना, कुडा, कदंब, खेर, फालसा, आम इनकी छाल, मूर्वा, इनका अष्टांश शेष काढ़ा करे, फिर उसमे घी मिला कर पीने को दे तो १८ कुष्ठ दूर हो।

## सर्वकुष्ठ पर निम्बादिचूर्ण

नीम का पंचाग (जड, छाल, फल, फूल, पत्र) ६४ तोले, लोहभस्म, हरड, पंवाड, चित्रा, शुद्ध भिलावे, वावडिंग, खाड, मघ, सोंठ, मिर्च, हलदी, आमला, वावची, अमलतास, भखड़े, यह सब ४-४ तोले, सब का वारीक चूर्ण कर भांगरे के रस की भावना दे, खेर के अष्टमाश काढ़े की भावना दे और सुखा कर रख ले। ६ माशे वा १ तोला दवाई सरसो के पानी अथवा खैर के काढ़े से नित्य खावे तो सब प्रकार के कुष्ठ दूर होते हैं। यह दवाई एक महीना भर खावे, पथ्य से रहे, क्रोध, शोक, चिन्ता आदि भी न करे।

## कुष्ठ मे पथ्य

कुष्ठ रोगी को पंद्रह २ दिन के बाद उलटी करानी चाहिये। महीने २ बाद विरेचन देना चाहिये। तीन तीन मास के बाद नसवार दे और छ छ. मास बाद रक्त निकलवाए। रक्तशोधक लेप, पुराने मूंग, चावल, गेहू, मसूर, जौ, शहद, चने, नीम, लहसन, चित्रा, तैल, कपूर, इटसिट, पंवाड़, गौ, गधा, ऊंट, भैंस इनका मूत्र, एरण्ड, तोरी, खैर, जायफल, चंदन तथा अन्य रक्तशोधक वस्तुएं पथ्य है।

## कुपथ्य

पसीना, मैथुन, व्यायाम, तिल, उडद, गन्नारस, मास, दही, दूध, शराब, गुड़ तथा अन्य रक्तविकार करने वाले द्रव्य कुपथ्य हैं।

इति कुष्ठरोगाधिकार।

## अथ अग्निदग्ध उपाय

घी २० तोले, मोम ४ तोले, घी को गरम करके उसमे मोम

मिला दे। ठंडा होने पर उसे सौ वार जल से धोवे। इसके लेप करने से अग्निदग्ध पीडा शान्त हो जाती है।

अन्य—गाय के सींग को जला कर कडवे तेल मे मिला कर लेप करे।

अन्य—सब प्रकार के वाल लेकर भस्म कर कडवे तेल मे मिला कर लेप करे।

अन्य—भैंस के मक्खन अथवा दूध मे तिल पीस कर लेप करे।

अन्य—कम्बल का टुकडा जला कर कडवे तेल के साथ लेप करे।

अन्य—धावे के फूल जला कर कड़वे तेल से १ महीना भर लेप करे तो दाग निशान मिट जाते हैं।

## अथ शीतपित्त-उदर्दरोगाधिकार

शीतल वायु के स्पर्श से कफ और वायु कुपित होकर पित्त को भी कुपित्त करके जब शरीर के अन्दर वाहर फैल जाते हैं तब शीतपित्त रोग हो जाता है। इसे छपाकी कहते हैं।

### पूर्व रूप

तृष्णा, अरुचि, उबकाई, दाह, अंगो का भारी होना, आँखो का लाल होना, ये शीत पित्त ( छपाकी ) के पूर्वरूप होते हैं।

### शीतपित्त के लक्षण

सारे शरीर मे चिउंटी वा ततैया ( भिड ) के काटने जैसे चट्टे ( धप्पड़ ) पड़ जाते हैं तीव्र खुजली उठती है, उलटियाँ आती हैं, ज्वर और दाह होजाते हैं। यदि इस रोग मे वायु वलवान् हो तो उसे शीतपित्त यदि कफ वलवान् हो तो उदर्द कहते हैं।

अन्य—शीतकाल मे शीत जल के अतिस्पर्श से शरीर पर धवड़ी निकल आती है उसे छपाकी कहते हैं। यदि धप्पड़ मोटे २ अत्यन्त लाल और कण्डूयुक्त हों तो उस रोग को कोठ कहते हैं। इस प्रकार एक रोग के 'शीतपित्त, उदर्द और कोठ' यह तीन भेद होते हैं।

### शीतपित्त रोग की चिकित्सा

रोगी को लाल कंवल ओढ़ाकर अजवायन की धूनी देनी चाहिये।

अन्य—गेरू, हलदी, कालीमिर्च, मजीठ, अडूसा इनका चूर्ण शहद के साथ ले।

अन्य—हलदी, दारुहलदी, गेरी, बावची, मजीठ, हरड़, बहेडा, आमला इनका चूर्ण कर १ तोला भर रात को पानी मे भिगो छोड़े, प्रातःकाल नितार कर शहद मिला पीवे और फोक को शरीर पर मले तो, शीतपित्त, उदर्द, कोठ, आदि रोग दूर होते हैं।

### शीतपित्त में पथ्य

वमन, विरेचन, रक्त निकालना, लेप, पुराने चावल, मूंग, कुलथी, ककोडा, सुहांजना, अनार, इन्द्रायण, कडवा तेल, गरम जल, शहद, अन्य भी कड़वे, तीखे, कसैले पदार्थ शीतपित्त मे पथ्य हैं।

### शीतपित्त में कुपथ्य

गन्ना, सरदी, मदिरा, वेगो का रोकना, दक्षिण की पवन, दिन को सोना, चिकने और भारी पदार्थ, धूप, नहाना और व्यायाम ये शीतपित्त, उदर्द, कोठ मे कुपथ्य कहे हैं।

इति शीतपित्त-रोगाधिकार।

## अथ अम्लपित्त-रोगाधिकार

दूध-मछली इत्यादि विरुद्ध भोजन तथा खराब भोजन करने से, अधिक खट्टे, विदाही तथा पित्त को प्रकुपित करने वाले भोजन करने से, तथा अन्य कारणो से कुपित हुआ पित्त सञ्चित होकर अम्लपित्त रोग उत्पन्न कर देता है।

### अम्लपित्त के लक्षण

भोजन का न पचना, विना काम किये थकावट, उबकाइया, अत्यंत खट्टे जले, सड़े डकार, शरीर भारी होना, हृदय और कंठ मे जलन होना, अरुचि तथा शरीर मे भी जलन सी प्रतीत हो तो अम्लपित्त रोग समझो।

अम्लपित्त दो प्रकार का होता है, एक अधोगति और दूसरा ऊर्ध्व-गति, जिसमे तृष्णा, दाह, मूर्छा, भ्रम, मद, मोह हो और मल पीला, पतला, जला सड़ा उतरे, उबकाइया, कोठ, अग्निमांद्य, रोमाच हो, सारा शरीर

पीला पड़ गया हो तो अधोगत अम्लपित्त जानो। जिसमें हरी, पीली, नीली, काली, लाल, रंग की अत्यंत खट्टी उलटियां आवे अथवा मास जल के समान, अथवा अत्यन्त स्वच्छ लेसदार उलटी आवे और भोजन के पचने पर अथवा बिना भोजन के इसी प्रकार के डकार आवें हृदय में, कुक्षि और कंठ में दाह हो उसे ऊर्ध्वगत अम्लपित्त जानें।

## अम्लपित्त-चिकित्सा

### लीलाविलास रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक ( कज्जली ), ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, सोंचर नमक, सबको समान भाग लेकर बारीक कर जल में टिकिया बना लघुपुट दे, फिर एक भाग आमले और दो भाग हरड़ें, दोनों का अष्टमाश काढ़ा बना उसकी भावना देकर २५ लघुपुट दें, फिर भंगरे के रस से खरल कर २५ लघुपुट दें, रस सिद्ध होने पर २ से ४ रत्ती तक शहद से खावे तो सब प्रकार का अम्लपित्त दूर होता है।

### कूष्मांड खंड ( पेठा पाक )

पके हुए पेठे का रस १०० पल, गोदुग्ध १०० पल, आमले का चूर्ण ८ पल तीनो को मीठी २ आंच पर पकावे, जब तीनों गाढ़े हो जावें तो ८ पल खांड मिला कर चाशनी करले, नित्य दो तोले खाने से अम्लपित्त दूर होता है।

अन्य—चिरायता और मुलट्ठी दोनों को पानी में घोट खांड मिला पीने से अम्लपित्त दूर होता है।

### पथ्य

ऊर्ध्वगत अम्लपित्त में वमन, अधोगत में विरेचन, पुराने मूंग, गेहूं, चावल, शहद, सत्तू, खांड, केला, पटोलशाक, पेठा, बथुआ, अनार, आमले, ककोड़े तथा करेले अन्य त्रिदोषनाशक वस्तुएं इसमें पथ्य हैं।

### कुपथ्य

वमन का रोकना, तिल, उड़द, कुलथी, तेल, तथा चिकने और भारी

पदार्थ, शराब, दही, खटाई, मिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थ इसमे कुपथ्य हैं।

इति अम्लपित्तरोगाधिकार।

## अथ मसूरी-रोगाधिकार

अत्यन्त तीक्ष्ण, खट्टे, नमकीन, खारे, पदार्थ खाने से, विरुद्ध भोजन करने से, गले सड़े शाक आदि खाने से, दुष्ट जल-वायु सेवन करने से, अथवा दुष्ट ग्रहो के प्रकोप से, शरीर मे बढ़े हुए दोष दुष्ट रक्त के साथ मिलकर शरीर मे मसूर के दाने के समान वा इससे बड़ी छोटी फिंसियां सारे शरीर मे कर देते हैं, इस रोग को मसूरिका कहते हैं।

### मसूरिका के पूर्व रूप

ज्वर, खुजली, अंगभंग, अरुचि, भ्रम, तथा त्वचा मे सूजन हो, शरीर की रंगत बदल जाती है, आँखें लाल हो जाती हैं।

यह, वात, पित्त, कफ, रक्त, सन्निपात से होती हैं। इनके लक्षण दोषानुसार समझे, इस रोग को शीतला, माता वा चेचक आदि नामो से पुकारते हैं, इसमे शारीरक चिकित्सा बहुत कम करते हैं, दैवी चिकित्सा ही मुख्यतया की जाती है, किन्तु शास्त्र में इसकी चिकित्सा भी लिखी हुई है।

### मसूरिका-चिकित्सा

रक्तचंदन, श्वेतचन्दन, कौड़, खस, पापडा, नीम, पटोलपत्र, इनका चूर्ण बना कर मिश्री मिला शीत जल से पीवे तो मसूरी रोग दूर हो।

अन्य उपाय—धेरू के पत्तो से नीचे लिखे मंत्र से २१ वार नित्य झाड़ा किया करे तो शीतला रोग दूर हो।

**मन्त्र—"ॐ ह्रीं प्रतिचक्रे फुट विचकाय स्वाहा ॐ ह्रीं नमः"**

अन्य—नीम और गेरु इनका लेप करे अथवा फस्द खुलावे।

### शीतला मे पथ्य

लंघन, वमन, विरेचन, शिरावेध, पुराने शालि चावल, सठी के चावल, चने, मसूर, मूंग, सुहांजना, जौ, अनार, अंगूर, मुनक्का, पेठा, शीतल जल, ककोड़ा, कपूर, गोहे की भस्म, केला, गोघृत, ये पथ्य हैं।

### कुपथ्य

हवा, पसीना, श्रम, तेल, भारी पदार्थ, मैथुन, क्रोध, शोक, चिन्ता, वेगों का रोकना, खट्टे, चरपरे, तीक्ष्ण पदार्थ, गर्भवती की छाया तथा अन्य इसी प्रकार के पदार्थ कुपथ्य है।

इति मेघविनोदस्य सौदामिनीभाषाभाष्ये विद्रधि-शोथ-व्रण-नाडीव्रण-भगदर-उपदंश-शूक-कुष्ठ-शीतपित्तोदर्द-कोठ-अम्लपित्त-वीसर्प-स्फोट-मसूरिकारोगात्मको नवमोऽध्याय।

# अथ दसवां अध्याय

ऋद्धि सिद्धि देने वाले श्री गुरुदेव के चरण कमलों मे नमस्कार कर अब दसवे अध्याय का वर्णन करते हैं।

## अथ कर्णरोगाधिकार

कर्ण मे वायु के प्रकोप से अनेक रोग हो जाते है। सक्षेप से कान मे २८ रोग होते हैं, जैसे—कर्णशूल, कर्णनाद, बधिरता, कर्णक्ष्वेड, कर्णस्राव, कर्णकण्डू, कर्णगूथ, प्रतिनाह, जन्तुकर्ण, दो विद्रधिया, कर्णपाक, पूतिकर्ण, ४ प्रकार का कर्णार्श, ७ प्रकार का कर्णार्बुद और ४ प्रकार का कर्णशोफ।

### कर्णशूल चिकित्सा

अदरक के रस मे सैंधानमक घोल कर कान मे डालने से कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—आक के पीले पत्तो को घी चुपड़ आग पर सेक कर पानी कान मे डाले तो कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—अदरक का रस, मुलट्ठी और सैंधानमक तेल मे पकावे, उस तैल को कोसा २ कान मे डालने से कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—हुलहुल के पत्तो का रस कान मे डालने से कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—१ अदरक का रस, २ सुहाजने का रस, ३ मूर्वा का रस,

४ बैंगन की जड का रस, सैंधा नमक अथवा शहद इनमें से किसी एक को कान मे डालने से शूल मिट जाता है।

अन्य—चिरायता २ टंक, कड़वा तेल ५ टंक दोनो को पकावे, जब चिरायता जल जावे तो तेल को छान रखे और कोसा करके कान में डाले तो कर्णशूल दूर होता है।

अन्य— मूली, तुंबर (नेपाली धनियां) सोठ, हींग सब बराबर ले, कड़वे तेल मे पकावे तो कोसा २ कान मे डाले तो कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—मूली के पत्ते, एरण्ड के पत्ते, इनका रस निकाल कर ५ टंक तेल पकावे, इसके डालने से कर्णशूल मिट जाता है।

अन्य—सुहागाफूल पीस कान मे डाले, ऊपर से २-३ बूंद कड़वे तेल की डाले तो कर्णशूल तुरत दूर होता है।

अन्य—अदरक, गुग्गुल, सैंधानमक, बिजौरे की जड, इनको कांजी और कड़वे तेल मे पका कर कान में डालने से कर्णपाक, कर्णशूल, सब दूर होते हैं।

अन्य वंगसेन से

देवदारु, वच, हींग, सैंधानमक, और गोमूत्र इनको कड़वे तेल में पकावे और कान में डाले तो कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—लहसन के पानी को गरम कर कान मे डाले तो कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—सैंधानमक बकरी के पेशाब में घोल कर कान में डाले तो कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—चमेली के पत्तो को गोमूत्र मे पीस रस निकाल कोसा २ कान मे डाले।

अन्य—गुग्गुल और मद्य दोनो की कपड़े में पोटली बना आग पर रक्खे और धुआं कान मे ले तो कर्णशूल दूर होता है।

अन्य—थोहर के पत्तो को गरम कर उसका रस कान मे निचोड़े।

पूतिकर्ण उपाय (रसरत्नाकर से)

लहसन, आक और तिल के पत्तो का रस अथवा चौलाई के पत्तो

का रस कोसा २ कान मे भरने से कान की सडाद और दुर्गन्धि दूर होती है।

अन्य (कालज्ञान से)

असगंध, हुलहुल का रस, शतावर इनको बकरी के दूध मे पका कर कान मे डाले तो पीड़ा बदबू आदि दूर हो जाती है।

कान में कोई जीव प्रवेश कर जावे उसका उपाय

कौड, कुआर का रस, देवदारु, वच, इनको कड़वे तेल मे पका कर कान मे डाले तो कान की पीड़ा दूर होती है।

अन्य—तत्काल मनुष्य का मूत्र कान मे डाले तो कान का जीव मर जाता है और पीड़ा नष्ट हो जाती है।

अन्य—सफेद प्याज का रस, नीलाथोथा, मिर्च, ब्रह्मदण्डी का रस, नकछिकनी सब ४-४ माशे लेकर पंवाड़ के रस मे पीस कर कान मे डाले तो जीव जन्तु की पीड़ा दूर हो।

वधिरता ( बहिरापन ) का उपाय

सफेद मुसली, बावची दोनो बराबर लेकर चूर्ण करे, १ तोला चूर्ण नित्य दूध के संग खावे तो बहिरापन दूर हो।

अन्य—लोधपठानी, मजीठ, कैथ का फूल, लाखकच्ची, धावे के फूल, महुवे की गुठली की राख, इनको तेल मे पका कर कान मे डालने से बहिरापन दूर होता है।

अन्य—काकजंघा की जड़ का रस कान मे डालने से बहिरापन दूर होता है।

अन्य—बिलकथ को गोमूत्र मे पीस तेल में पकाकर कोसा २ कान मे डालने से बहरापन दूर होता है।

अन्य—हलदी, मघां ३-३ तोले, सोठ ५ टंक, कुआर का रस ५ टंक, एरण्ड की गिरी १० टंक, आक के फूल ३ टंक, शहद ५ पल, गोघृत ३ पल, कूटने वाली वस्तुओ का बारीक चूर्ण कर सब को मिला कर १ तोला से ४ तोला तक नित्य खावे तो कान के सब विकार दूर हो जावे, बहिरापन नष्ट होकर मनुष्य खूब सुन सकता है।

### कनेड्ढू ( कनपेडे ) का उपाय

धतूरे के पत्र, सुहांजने की छाल, नमक इन को कांजी मे पीस गर्म २ लेप करे तो कनेड्ढू दूर हो।

अन्य—मुसली को पीस भैंस के मक्खन में मिला सात दिन तक चिकने भांडे मे रक्खे, फिर निकाल कर उसके सात लेप करे तो कनेड्ढू दूर हो।

अन्य—असगंध, बावची, गजपीपल, इनको भैंस के मक्खन मे पीस लेप करने से कनेड्ढू दूर होते हैं।

अन्य—कालीजीरी, कालीमिर्च, कुचला, इनको गोमूत्र मे पीस कर लेप करने से कनेड्ढू दूर होते हैं।

### कर्णपाली उपाय

गुंजा ( रत्तियाँ ) की जड़ भैंस के दूध मे पीस कर लेप करे तो कर्णपाली रोग नष्ट हो।

### कर्णवेध पक जाने का उपाय

कत्था सफेद पीस कड़वे तेल मे मिला कर लगावे तो कर्णवेध की पीडा दूर हो।

अन्य—नित्य मक्खन लगाने से अथवा कडवा तेल, अथवा भाड़ का धुआँ तेल व मक्खन मे लगाने से कर्णपाक दूर होता है।

### जोंक का डंक पक जाने का इलाज

नीम के पत्तो को कड़वे तेल मे जला ले, अथवा नीम के पत्तो को बारीक कर कड़वे तेल के साथ बुरके, अथवा मसूर की राख बना कर जखमो पर छिड़के तो जोक के डक जो पक गये हो शात होते हैं।

### कर्णरोग में पथ्य

स्वेदन, वमन, विरेचन, फस्द, नस्य, पुराने गेहू, मूंग, चावल, जौ, मक्खन, सुहांजना, तिल, बैगन ये पथ्य हैं।

### कर्णरोग में कुपथ्य

कान खुरचना, सिर नहाना, सरदी, मैथुन, दातुन, भारी अन्न ये कर्णरोग मे कुपथ्य हैं।

इति कर्णरोगाधिकार।

## अथ मुख रोगाधिकार

अनूप मांस, उड़द, दूध, दही, आदि पदार्थों के अधिक सेवन करने से कफप्रधान दोष मुख में कई प्रकार के रोग पैदा कर देते हैं। मुख मे थूक लार आदि रूप मे कफ ही प्रधान होता है, और इस लिये मुख के अंदर का मांस जिह्वा, तालु आदि बड़े ही कोमल और लाल रग के होते हैं, इस-लिये मुखरोगो मे कफ और रक्त दोनों ही प्रधान माने गये हैं। यदि फिंसियां अधिक निकले तो वायु का प्रकोप जानो, यदि मुख, तालु, जिह्वा आदि पक जावे तो रक्त का प्रकोप जानो।

### गलमुखपाक उपाय

सोठ, तिल, मुलट्ठी इनका काढ़ा बना कर कुल्ला करे तो सात दिन मे मुखपाक दूर हो।

अन्य—दारुहलदी का काढ़ा बना उसमे शहद मिला कुल्ला करे तो भी मुख पाक दूर हो।

अन्य—पापड़े के रस अथवा काढ़े मे शहद मिला पीने से भी मुख-पाक तथा अन्य मुख के रोग दूर होते हैं।

अन्य—वड़, पीपल, गूलर, पिलखन, पारिष पीपल, इनकी छाल का काढ़ा बना शहद मिला पीवे, अथवा त्रिफला का काढ़ा बना मधु मिला पीवे, और इनके कुल्ले भी करे तो मुखरोग दूर हो।

अन्य—चम्बेली के पत्ते, त्रिफला, मुनक्का, मध, देवदारु इनका काढ़ा बना शहद मिला पीने वा कुल्ला करने से मुखरोग दूर होते हैं।

अन्य—दारुहलदी, गिलोय, वड की कोपले, मुनक्का, त्रिफला, जवाहा, इनका काढा बना शहद मिला कुल्ले करने और पीने से अनेक प्रकार के मुखरोग दूर होते हैं। फिरंग रोग का मुखपाक भी इससे दूर होजाता है।

अन्य—त्रिफला, मुनक्का, गिलोय, दारुहलदी, जवाहा, चंबेली के पत्र इनका काढ़ा बना शहद मिला प्रातःकाल पीने से और कुल्ला करने से मुखरोग दूर होते हैं।

अन्य—कत्था, केवड़ा, इलायची, तोखाखीर, मिश्री, मुर्दासंग, इनको बराबर ले पीस कर बार २ मुख मे रखे तो मुखपाक दूर हो।

### बादफिरंग ( आतशक ) के मुखपाक का उपाय

१—कचनार की छाल का काढ़ा कर कुल्ले करने से फिरंग का मुखपाक दूर हो।

अन्य—चम्बेली के पत्तो का काढ़ा कर कुल्ले करने से भी यही लाभ होता है।

अन्य—धनिया का काढ़ा कर उसमे मिश्री मिला पीवे तो मुखपाक दूर हो।

अन्य—बकरी के दूध की धार मुख मे छुडवाने से सब प्रकार का मुखपाक दूर हो।

### गलरोग का उपाय

त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, दालचीनी, कौड़, मुनक्का, दारुहलदी, इनको बारीक कर शहद मे गोली बाधे। इस गोली को मुख मे रख कर चूसने से गले के सब रोग दूर हो।

अन्य—कुठ, मघां, पाठा, मिर्च, सैंधानमक, वच, इनको बारीक कर शहद मिला चाटने से गलशुंडी ( विंडी ) खांसी, तथा अन्य गले के रोग दूर होते हैं।

अन्य—नागरमोथा, पतीस, पाठा, कौड, इन्द्रजौ, देवदारु इनका गोमूत्र मे काढ़ा कर पीने से गले की पीड़ा दूर हो।

अन्य—त्रिफला, दारुहलदी, त्रिकुटा, दालचीनी, कौड़, मुनक्का, नागरमोथा, कत्था इनको शहद मे चाटने से गलरोग दूर होता है।

अन्य—मघां, पिप्पलामूल, चब, चित्रा, सोंठ, मिर्च, काला मोखा (फरवाहा), सज्जीखार, सुहागाफूल, जौखार, तालीसपत्र, इलायची, दालचीनी इनको पीस चूर्ण करे, और सब से दुगना पुराना गुड़ मिला बेर समान गोलियां बनावे, मुंह मे रख कर चूसे तो सब मुख और गले के रोग दूर हो।

अन्य—रसौंत, मघां, पाठा, देवदारु, हलदी, तेजबल, जौखार,

इनको पीस शहद मिला चटनी चाटे तो मुख और गलरोग दूर हो।

## दन्तरोग उपाय

लोधपठानी, कमल, मजीठ, कुठ, पाठा, कौड, हलदी, दारुहलदी, तेजबल सब को पीस मंजन बना दांतो पर मले तो दांतो से रुधिर का आना दूर होता है, दान्त का कीड़ा मर जाता है और दांत दृढ होजाते हैं।

अन्य—मालकंगुनी, मजीठ, हरड़, दारुहलदी कौड़, लोधपठानी पाठा इनका चूर्ण कर मलने से दांतो मे से रक्त आना तथा दांतो का हिलना आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—गुञ्जामूल ( रत्ती की जड़ ) और असगंध दोनो को पीस दांतो पर मले और आक की जड़ की दातुन करे तो दांत वज्रसमान हो जाते हैं।

अन्य—माजू, सैंधानमक, मघां, हीराकसीस, कत्था, सब समान भाग पीस कर मले और दाढ़ के खोड़ मे भरे तो दाढ़ पीड़ा दूर होती है।

अन्य—नसादर और सोंठ दोनो को पीस दाढ़ मे भरने से कीड़ा और दाढ़पीड़ा दूर होती है।

अन्य—हरड़ पीस शहद मिला तावे के वर्तन मे काढ़ गोली बना चूसने से दांतपीड़ा दूर होती है।

अन्य—हीराकसीस, फटकरीफूल, देवदारु और हींग, इनको पानी मे पीस गोली बना मुंह मे रखे तो दांत का कीड़ा, दुर्गन्ध आदि दूर होते हैं, दांत वज्रसमान होजाते हैं।

अन्य—सूखे तुम्मे के फल को ले, पीस, गरम तवे पर डाल मुंह मे धुआं ले तो दांत का कीड़ा निकल जाता है, दांत की पीड़ा भी दूर होती है।

अन्य—छोटी और वड़ी कंडियारी का पंचाग ( फल, फूल, पत्र, जड़, शाखा ), चिरायता, कदंब की छाल इनका काढ़ा बना घी वा तेल मिला गंडूष ( गरारे, कुरले ) करे तो दांत का कीड़ा और पीड़ा आदि दूर होकर दांत वज्रसमान दृढ़ हो जाते हैं।

अन्य—अदरक के टुकड़े मे केसर रख कर चबाता जावे, इस प्रकार

तीन दिन मे दात की पीडा और कीडा आदि दूर होते हैं। दात दृढ हो जाते हैं।

अन्य—संभालू के पत्ते, सैधानमक, आक का दूध, वायविडंग, जौखार इनको पीस दात पर मलने से वायु की दात पीडा दूर हो।

अन्य—मघ, मिर्च, सोंठ, वायविडंग, हरड, नागरमोथा नीम के पत्ते इन सब को गोमूत्र मे पीस गोली बना मुख मे रखने से हिलते हुए दात स्थिर हो आते हैं, दातपीडा और कीडा आदि दूर हो जाते हैं। इससे अच्छी दवाई और कोई नहीं।

अन्य—पाठा, दारुहलदी, लोधपठानी, मंजीठ, नागरमोथा, कौड, मव, तेजबल, हलदी इनको पीस मजन बनावे, इसके मलने से दांत की मैल, खुजली और दातो से रक्त और पीप का आना वन्द हो जाता है, दांत दृढ़ हो जाते है।

अन्य—चमेली के पत्ते, इटसिट, मघ, कुरंड, कुठ, चव, सोठ, हरड़, खैर (कत्था), इनको बारीक पीस मंजन बना दान्तो मे मलने से दान्तो का शूल, खुजली, दंतकृमि, रक्त का निकलना, मुख से दुर्गंध का आना दूर होता है, दांत दृढ़ हो जाते हैं।

अन्य—मघचूर्ण, शहद और घी तीनो की गोली बना मुख मे रखने से दंतशूल दूर होता है।

### दन्तमसी ( योगचिन्तामणि से )

हीराकसीस, हरड, बहेडा, आमला, माजूफल, जंगहरड़, कत्था, लोहचून, सोनामाखी, कपूर, मूंगा, अनार की छाल, लोधपठानी, मजीठ, फटकडी, नीलाथोथा भुना हुआ, मघां, चिकनी सुपारी, रूमीमस्तकी, इनको चूर्ण कर मसी बना दान्तो पर मलने से मसूढ़े, होठ काले और अत्यन्त दृढ़ हो जाते हैं। लगाने से प्रथम दान्तो मे कुछ खटाई मल लेनी चाहिये।

### लाल मसी

कत्था, चिकनी सुपारी, रूमी शिंगरफ, एक एक तोला, लाख ६ तोला, मजीठ ३ टंक, प्रथम मजीठ का ८ तोले पानी मे काढ़ा करे और

दो तोले बचे तो उतार छान कर उसमें तीनों चीजों को रगड़े, फिर लाख को पाव भर पानी में बारीक पीस काढ़ा करे। जब ३॥ तोले रहे तो छान कर उसमें बारीक रगड़े, फिर सुखा कर रख छोड़े। इसको लगाने के पूर्व दान्तों पर कुछ खटाई मल लेनी चाहिये, इसके मलने से दांत, होंठ, मसूड़े लाल हो जाते हैं, और सब प्रकार की पीड़ा दूर हो जाती है।

अन्य—अच्छी मजीठ २ तोले, आमले ५ माशे, रूमी शिंगरफ ७ माशे, कत्था ५ माशे, रूमीमस्तकी सबसे आधी ( २ तोले ) सब को पीस कर मसी बनावे, इसके लगाने से भी पहले खटाई लगा ले, दांत वज्रसमान हो जाते हैं।

## मुखशोष का उपाय

पुठकंडा, इटसिट, काला जीरा, सफेद जीरा, इनका चूर्ण कर तक्र के के साथ पीने से मुंह का बार २ सूखना बंद होता है।

अन्य—पिप्पलामूल, नेपाली धनिया, अदरक, इनको नीम के काढ़े में पीस कर गोली बनाले, मुख मे रखने से कंठशोष दूर होता है।

## मुखदुर्गंधि का उपाय

इलायची, इटसिट, चंदन, फटकरी, तेजपत्र, हरड़, सुहांजने के बीज इनको पानी मे पीस गोली बना मुख में रखने से मुख की दुर्गंधि दूर होती है

अन्य—मुश्कबाला, हलदी, नागरमोथा, कुठ, हरड़, इनका गोमूत्र में काढ़ा कर गरारे करने से मुख की दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—चम्बेली के पत्ते, गजपीपल, इटसिट, बच, कुठ, वासापत्र, सोंठ, शतावरी, लौंग, इनका कूट छान कर चूर्ण कर घी मिला कर मुख में रखने से मुख की पीड़ा, क्रिमि और दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—लौंग, कपूर, तेजपत्र, नागकेसर, कस्तूरी इनको बारीक पीस अर्क केवड़े से घोट गोली बना मुख में रखने से दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—कत्था, शीतलचीनी, नागकेसर, लौंग, जावित्री, जायफल, वंशलोचन, अगर, गुलाब के फूल, कपूर सब बराबर, सबके समान मिश्री इनका चूर्ण बना कर मुख में रखने से मुख की दुर्गंधि दूर होती है।

## मुख मे फोड़ा होने का उपाय

गिलोय, मुनक्का, दारुहलदी, पान के पत्ते, अजवायन, त्रिफला, कौड इनका काढा बनाकर कुरले करे तो मुख का फोडा तथा मुखपाक, पीडा आदि दूर होते हैं।

## मुख और जीभ पर छाले पड़ने का उपाय

पुरानीखुंब और सेलखडी वा तोखाखीर पीस मुख मे धूडने से जीभ वा मुख का पाक दूर हो।

अन्य—इलायची, तेजपत्र, मध, मुलट्ठी, नागरमोथा, मुनक्का, वंशलोचन सब समान भाग, सब के समान मिश्री मिला चूर्ण करे और शहद से खावे तो मुख से रक्त का आना तथा अन्य मुखरोग दूर हो।

## मुखविरसता का उपाय

कांजी मे सैधानमक मिला गरम करके गरारे करे तो सात दिन मे मुख की विरसता दूर हो।

अन्य—जौखार १ तोला, जल २२ पल, काढा करे, पांच पल शेष रहे तो उतार कर पीवे, इसके पीने से मुख को विरसता तथा कफ विकार का लोप, खासी आदि रोग दूर हो।

अन्य—काठी सुपारी नित्य चबाने से मुख की विरसता दूर होती है।

अन्य—मिश्री, मुनक्का, अनारदाना, बिजौरा, खजूर, सैधानमक, इनकी शहद मे चटनी बना कर चाटने से मुख की विरसता दूर होती है।

## होंठ फटने का उपाय

लाख, मोम, तेल, तीनो सम भाग, प्रथम तेल को गरम करे, फिर उसमे मोम मिला दे, फिर लाख बारीक कर उस मे डाल दे, जब तीनो एक जान हो जावे तो उतार कर रख छोडे, होठ जब फटते जावे वा रूखे हो तो इस मरहम को लगावे, होठ सुन्दर नरम और मुलायम हो जाते हैं।

अन्य—आम के कोमल पत्ते कडवे तेल से चुपड कर गरम कर के होठ सेंके, होठ कोमल और नरम पड जाते हैं।

अन्य—गेरी, सज्जीखार, सेधानमक, मोम, सरसो का तेल। प्रथम तेल

को गरम करें, फिर मोम मिलावे, फिर अन्य वस्तुओ को वारीक कर उसमे मिला दें। इस मरहम के लगाने से होठ सुन्दर और कोमल हो जाते हैं।

### होंठ की सूजन का उपाय

नीम की कोपले वारीक कर दोनो होठो पर बाधे।

अथवा—कन्दूरी के फल को चीर कर दोनों होठो पर बाँधे।

### यौवनपिडका का उपाय

वचे, धनिया, लोधपठानी इनको पानी में पीस कर लेप लगाने से यौवनपिडका अर्थात् चेहरे के कील, छांइयां, फिसियां जो जवानी में निकल आती हैं, दूर हो जाती हैं।

अन्य—सैंधानमक, लोधपठानी, सफेद सरसों, वचे, इनको पानी में पीस मुख पर लेप करें।

अथवा—सफेद मिर्च, गोरोचन दोनो को पानी मे पीस लेप करने से मुख के कील दूर हो जाते हैं।

अन्य—कुठ, फूलप्रियंगु, मजीठ, मसूर, वट की कोपले, लोधपठानी, लालचंदन, इन सब को जल मे पीस मुख पर लेप करने से मुख की छाईं व्यंग, कील और फिसियाँ दूर हो जाती हैं।

अन्य—वट के पके हुए पीले पत्ते, लालचंदन, चंबेली के पत्ते, कुठ, अगर, लोधपठानी, इनको जल में पीस लेप करे तो छाईं, कील, पिडका आदि दूर होकर मुख कोमल एवं सुंदर हो जाता है।

अन्य—सज्जीखार, लोधपठानी, खस, जौ का आटा, चन्दन, शहद, घी, गुड सब समान भाग लेकर गोमूत्र में पका कर लेप करे तो कील, छांइयाँ दूर हों। इसी प्रकार इस लेप को हाथ-पाओ के फटने पर भी लगा सकते हैं। शीतकाल मे प्राय. बच्चों के हाथ-पाओं फट जाया करते हैं, तब इसके मलने से हाथ-पाओं सुन्दर और कोमल हो जाते हैं।

अन्य—दारुहलदी, अगर, कमलगट्टा, शंख की नाभि इनको दही में पीस लेप करे।

अन्य—चंदनश्वेत, वक्रम की लकड़ी, फूल प्रियंगु, कुठ, लोधपठानी,

बड़ के पीले पत्ते, लालचन्दन इनको जल मे पीस लेप करने से मुख चन्द्रमा के समान सुंदर हो जाता है।

### मुखरोग पर पथ्य

पसीना, वमन, विरेचन, गण्डूप ( कुल्ले गरारे ), प्रतिसारण ( दवाई मुँह मे बुरकना वा छिडकना ), रक्त निकालना, धूम, शस्त्र, अग्निकर्म, कुलथी, मूँग, जौ, परवल, करेला, छोटीमूली, कपूर, गर्मजल, क्वाथ, घृत, अन्य कटु और तिक्त वस्तुएं मुखरोग मे पथ्य हैं।

### मुखरोग में कुपथ्य

दातुन, स्नान, खटाई, माँस, मछली, दही, गुड, दूध, भारी एवं रूखा सूखा अन्न मुख के भार सोना, दिन मे सोना, यह मुखरोग में कुपथ्य हैं।

इति मुखरोगाधिकार।

## अथ नासारोगाधिकार

कफ के विकार से ही नासा के रोग होते हैं, उनमे जुकाम नजला आदि प्रसिद्ध हैं।

नासा रोग मे, कभी नाक बहता है, कभी बंद हो जाता है, कभी दुर्गंधि युक्त कफ आता है, कभी नाक गर्मी से जलता रहता है, कभी गंध नहीं आती, कीड़े पड़ जाते हैं, नाक से रक्त निकलता है, कभी छींके अधिक आती है, कभी नाक पक जाता है, यह इस प्रकार से नाक मे १८ प्रकार के रोग हो जाते हैं।

### नासाशोथ का उपाय

यदि नाक बार २ सूखता हो तो मिश्री, सफेद जीरा, दोनो गोघृत मे पीस नसवार दे तो नासाशोष और दुर्गंध दूर हो जाती है।

### पीनस का उपाय

घगर बेल का फल, तिल, दोनो के समान कालीमिर्च, तीनो को जल के साथ पीस कर नसवार देने से पुराना जुकाम, नजला आदि दूर होते हैं।

अन्य—त्रिकुटाचूर्ण को नित्य गुड़ के साथ प्रातःकाल खावे तो पीनस दूर हो।

अन्य—लालमिर्च और हींग दोनो को पीस नसवार लेने से नाक के कीड़े गिर पड़ते है, और नाक मे गुन्नापन ( गुनगुनाना ) दूर हो जाता है।

अन्य—लालमिर्च, घग्गरवेल का फल, हीग, इन तीनो को पीस कर नसवार लेने से गुगली और नाक के कीड़े मर जाते हैं।

अन्य—समुद्रफल, कायफल, कडियारी के बीज, पिप्पलामूल इनको पीस नसवार लेने से सात दिन मे पीनस दूर होता है।

### नाक की दुर्गंध का उपाय

हरड़, बहेड़ा, आंवला, मघ, मिर्च, सोठ, कायफल, नकछिकनी, पिप्पलामूल इनको पीस नसवार लेने से सात दिन मे नजला और नाक की दुर्गंध दूर होती है।

अन्य—केसर, कपास के फूल, कस्तूरी, समुद्रफल इनको पीस नसवार लेने से नजला और नाक की दुर्गंध दूर होती है।

### उल्ल का उपाय

नवीन रुहेडे के फल को पानी मे घिस कर नसवार देने से उल्ल रोग ( हुल्ला, कडाका ) दूर हो जाता है।

अन्य—धन्वन्तर ( सोसन ) के बीज, और मिर्च दोनो को पीस सूखी नसवार लेने से उल्ल रोग दूर होता है।

### नाक से रक्त निकलने का उपाय

फटकरी को पानी मे घोल नाक मे टपकाने से नकसीर दूर होती है।

### नाक की लूत का उपाय

मघ, मिर्च, सोठ, करंजुए के बीज, इनको जल मे पीस लेप करने से और नसवार लेने से नाक की लूत मिट जाती है।

अन्य—मिर्च और निर्विसी दोनो को पानी मे रगड़ कर लेप करने से सात दिन मे लूता दूर होती है।

### नाक पके का उपाय

कड़वे तेल मे मिर्च घिस कर लगाने से अथवा केवल कड़वे तेल के लगाने से नासापाक दूर होता है, पित्त की खुजली जलन भी दूर होती है।

### नासारोग पर पथ्य

कुलथी, मूंग, बैंगन, सुहांजना, छोटीमूली, लसन, दही, गर्म जल, मद्य, नमक, लघुभोजन यह नाक रोग पर पथ्य हैं।

### कुपथ्य

स्नान करना, क्रोध करना, भूमि पर सोना, मूत्र आदि वेगों को रोकना, चादनी, यह नासा रोग मे कुपथ्य कहे हैं।

इति नासारोगाधिकार।

## अथ नेत्ररोगाधिकार

घाम में से आते ही ठंडे जल मे प्रवेश करने से (सर्द गर्म हो जाने से), वेगों को रोकने से, नींद उखड़ जाने से, आंख मे पसीना पड जाने से, धुआं लगने से, गर्दगुबार पड़ जाने से, वमन का वेग रोकने से, रोने से, शोक से, अतिक्रोध से, मद ( ब्लड प्रैशर ) से, ऋतुओ के पलटने से, अतिमैथुन से, आसुओ को रोकने से, चोट लगने से, बहुत पसीना आते रहने से नेत्र के रोग हो जाते हैं।

यद्यपि नेत्र रोग बहुत से हैं, परन्तु मुख्य वात-पित्त-कफ तीन दोष से ही होते हैं, अतः सब नेत्ररोग इन दोषो से ही माने गये हैं।

### वातज नेत्ररोग के लक्षण

नेत्र में चुभके पडती हैं, अकड़न, रड़क अधिक होती है। सिरदर्द, रोमांच, रूक्षता, नेत्र मे रेत भरी हुई प्रतीत हो, ठण्डे आंसु बहे तो वात का नेत्ररोग जानो।

### पित्तज नेत्ररोग के लक्षण

नेत्र मे दाह होता है. नेत्र पक जाते हैं, नाक और आंख मे धुएं की सी कड़वाहट होती है। ठंडी वस्तुओ की इच्छा, नेत्रो में गरम २ आंसु उतरते रहते हैं, आंखे लाल पोली हो जाती हैं, आंखें सूज जाती हैं।

### कफज नेत्ररोग के लक्षण

कफज नेत्ररोग मे गर्म वस्तुओ की इच्छा होती है, आंखें भारी रहती हैं, सूज जाती हैं, ठंडे और चेपदार आंसू टपकते हैं, आंखे सफेद रंग की होती हैं।

### रक्तज नेत्ररोग के लक्षण

आंख से गर्म और लालवर्ण के आंसू टपकते हैं, आंखे अधिक लाल होती हैं, अन्य भी पित्त के लक्षण पाए जाते हैं।

### वातज नेत्ररोग का उपाय

सैंधानमक, लोधपठानी, शीरखिश्त इनको शीतल जल के साथ पीस कर नेत्र के अदर टपकाने से और ऊपर लेप करने से वातज नेत्ररोग दूर होता है।

अन्य—एरण्ड की जड़ और फल, सोंठ, मुलट्ठी, शीरखिश्त इनको माखन में पीस लेप करने से वायु का नेत्ररोग शान्त होता है।

अन्य—शरपुंखाबूटी, सैंधानमक, मुलट्ठी, सोठ इनको पानी में पीस आंख मे टपकाने से एवं ऊपर लेप करने से वातज नेत्र रोग दूर होता है।

### पित्तज नेत्ररोग का उपाय

मैनसिल, दारुहलदी, मुलट्ठी, लोधपठानी, रसौत, इनको बकरी के दूध में पीस कर आख में टपकाने से एवं ऊपर लेप करने से संपूर्ण पित्तज नेत्ररोग दूर होता है।

अन्य—लोधपठानी, नीम के पत्ते इनको पीस पोटली बना गुलाबजल अथवा पानी मे भिगो छोड़ें, फिर उसकी टकोर करने से पित्तज नेत्ररोग दूर होते हैं।

अन्य—चन्दन, मुलट्ठी, चमेली के फूल, गेरी इनको जल में पीस नेत्रों पर लेप करने से पित्तज नेत्ररोग दूर होते हैं।

### कफज नेत्ररोग का उपाय

सोंठ को नीम के पत्तों के रस में पीस आंख पर लेप करने से कफ के नेत्र रोग दूर होते हैं।

अन्य—लोधपठानी, नीम के पत्र, सैंधानमक इनको कूट कर पोटली बनावे पानी में भिगो कर टकोर करने से कफ के नेत्ररोग दूर होते हैं।

अन्य—आमले का भरता कर घी में भून ले उसमे मनसिल और पठानीलोध मिला कर नेत्र पर लेप करे तो कफ के नेत्ररोग दूर हों।

अन्य—समुद्रझाग, शीरखिश्त दोनो को पानी मे पीस आख पर लेप करने से कफ के नेत्ररोग दूर होते हैं ।

सैंधानमक, मिर्चकाली दोनो को तक्र में पीस कांसे के वर्तन में रख छोड़े, इसको आंख मे टपकाने एवं लेप करने से कफ के नेत्र रोग दूर हो ।

## रक्तज नेत्ररोग का उपाय

चमेली के फूल, जोखार, हरड, बहेडा, आमला, मुलट्ठी, वला, शंखनाभि इनको पानी मे रगड कर वत्ती वनावे, इसके आजने से रक्त-पित्तज नेत्ररोग दूर होते हैं ।

अन्य—हरड, वहेडा, आमला, गिलोय इनका काढ़ा वना शहद मिला पीने से रक्तपित्त तथा कफ के नेत्ररोग तत्काल दूर हो जाते हैं ।

अन्य—हरड़, वहेडा, आमला, नीम के पत्ते, पटोल के पत्ते, करंज के पत्ते, इनका काढ़ा कर उसमे ४ रत्ती शुद्ध गुग्गुल मिला पीने से कफ, रक्त और पित्त के नेत्ररोग दूर होते हैं ।

अन्य—त्रिफला को रात भर भिगो छोड़ो, प्रातः पानी नितार कर नित्य आंखो मे छींटें देने से सम्पूर्ण नेत्ररोग दूर होते हैं ।

अन्य—गेरी १ माशा, हलदी कच्ची १ माशा, सोंठ १ माशा, अफीम १ रत्ती, लौंग १ रत्ती, इन सबको पानी मे घिस कर कोसा २ आखों पर लेप करने से नेत्र की चोट, लाली, पीड़ा आदि सब दूर होती है ।

## नेत्रों में अंजन करने का समय

शिशिर और हेमन्त ( शीतकाल ) मे दोपहर के समय, वसन्तऋतु मे सब समय, ग्रीष्म और शरद् मे प्रातःकाल और सायंकाल मे अंजन करना चाहिये ।

## अंजन न करने का समय

वर्षाऋतु मे वादल घिरने पर, गर्दगवार तथा अत्यन्त गर्मी मे अंजन नहीं लगाना चाहिये ।

अन्य—रसाञ्जन मधु के साथ अथवा चमेली के पत्तों का रस मधु के साथ आँख मे लगाने से पित्तज नेत्ररोग दूर होता हैं ।

अन्य—गेरी और तुलसी के पत्र गोवर के रस मे पीस कर नेत्र में डालने से पित्तज नेत्ररोग शान्त होते हैं।

## तिमिरांजन

तगर, तेजपत्र, कपूर, हलदी, रसाञ्जन, सुरमा नीलकमल, इनको वारीक पीस नित्य अञ्जन करने पर तिमिर रोग दूर होता है।

अन्य—१७ कमलफूल की पंखुडिया, मूंग के पत्र १००, मव के चावल १०० सुरमा सव के वरावर सव को पीस कर अंजन करने से तिमिर रोग दूर होता है।

अन्य—निर्मली के वीज मधु के साथ घिस कर अंजन करने से तिमिर रोग, आँख की लाली और पीड़ा दूर होती है।

अन्य—मघ के दाने ६०, तिलफूल ८०, चमेली के फूल ५० मिर्च १६, इनको वारीक पीस कर आँख मे लगाइये, यह चन्द्रप्रभा नाम का अजन है, इससे सम्पूर्ण नेत्र रोग शान्त हो जाते हैं। वकरी के दूध मे घिस कर लगाने से तिमिर, फोला और रतौंधी दूर होती है, गोमूत्र से चिपर और तीनो दोप दूर होते है।

## ढलका का उपाय

कपास के वीजो की गिरि, आम के पत्ते, रसौंत इनको वारीक कर मधु के साथ अंजन करने से आंख का नजला, ढलका आदि दूर होते हैं।

## पटल रोग का उपाय

तिंतरीक का पका फल लेकर उसमे सैधानमक मिला कर काच के पात्र में रगड़ कर आंजने से पटल रोग दूर होता है।

## रतौंधी का उपाय

कमल की डंडी, गेरी, पिंडारक इनको वारीक पीस गोवर के रस मे मिला कर आंख मे आजने से रतौंधी दूर होती है।

अन्य—कमल, करंजुए की गिरि, रसौंत, त्रिफला, लोध, धतूरे के पत्र, सोठ इनको वारीक पीस कांजी मे घोट कर गोलियां वना ले। और छाया में सुखा ले, फिर पानी मे घिस कर आंजने से रतौंधी, तिमिर आदि नेत्ररोग शान्त हो जाते हैं।

अन्य—रीठड़ा घिस कर आंख में आजने से, आंख की खुजली रतौंधी तथा पीड़ा, फोला, आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—चमेली पत्र और हलदी, रसौंत और हलदी इन दोनों योगों को जल के साथ पीस कर नेत्र मे आंजने से रतौंधी आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—बहेड़े की गिरि पानी में पीस आंख मे लगाने से रतौंधी दूर होती है, ज्योति बढ़ती है।

### चन्द्रप्रभा वटी

हरड, बहेड़ा, आमला, सैंधव नमक, लोहचूर्ण, मव, मिर्च, सोंठ, इनको बारीक पीस कर बकरी के दूध मे खरल कर गोलिया बना ले, स्त्री के दूध मे घिस कर नेत्र मे आजने से दुखते नेत्र ठीक होते हैं, काजी के साथ घिस कर आख मे लगाने से फोला दूर होता है, शहद के साथ घिस कर आजने से तिमिर रोग दूर होता है, सिवाल ( पानी का जाला ) के साथ पटल रोग दूर होता है, मकोय के रस के साथ रतौंधी और कामला दूर होता है। ढलका, आंख मे पानी उतरने पर केले के रस से आख मे आंजे।

अन्य—कच्ची हलदी, आमले, मवां, चमेली की कोंपलें इनकी गोली बना कर आंख में आंजने से फोला दूर होता।

अन्य—बड़ के दूध मे कपूर घिस कर आख मे लगावे तो फोला दूर हो।

अन्य—बहेड़े की गिरि सैंधानमक घिस कर नेत्र मे लगावे तो फोला दूर हो।

अन्य—घोघा, मुर्गी के अडे का छिलका दोनो की भस्म करे माखन मे मिला आख मे आजने से फोला रोग दूर हो जाता है।

अन्य—काला कांच २ टंक, दाना खांड ४ टंक इन दोनो को बारीक सुरमे के समान पीस कर रख छोड़े, इस चुटकी को आंख मे डालने से फोला रोग दूर होता है।

अन्य—सोनामाखी को मधु के साथ घिस कर आंख मे आंजने से फोला दूर होता है।

शीतला के फोला का उपाय

काली काच को बारीक पीस कर कासे के वर्तन मे निम्बू का रस डाल तावे के टुकड़े से ३ पहर रगड़ाई करे, अथवा तांवे के वर्तन मे डाल कांसी के टुकड़े से रगडाई करे, फिर १-१ रत्ती की गोलिया वनावे। नित्य एक गोली आंख मे आजने से ३५ दिन मे शीतला का फोला तथा अन्य नेत्ररोगों को दूर करता है।

अन्य—वारहसिंगा, काले गधे की दाढ दोनो को स्त्री के दूध मे रगड़ कर गोली वना ले, फिर स्त्री के दूध मे घिस कर आंख मे लगाने से तीन मास में शीतला का फोला दूर हो जावेगा।

अन्य—दाना खाड निम्वूरस मे मिला १४ दिन तक आंख मे लगावे तो फोला, तिमिर तथा अन्य नेत्ररोग दूर हो जाते हैं।

पड़वाल का उपाय

शुद्ध विष ( मिट्ठा तेलिया ) को सिक्के के टुकड़े पर निबु के रस के साथ घिस कर आख मे लगाने से पड़वाल दूर हो जाते हैं।

अन्य—आक की रुई को आक के दूध से वत्ती वना कर जलावे, उस काजल को आख मे लगाने से सम्पूर्ण नेत्ररोग दूर होते हैं।

अन्य—सुहाजने के पत्तो का रस शहद मिला कर आख मे डालने से वात, पित्त, कफ के नेत्ररोग दूर होते हैं, यह वहुत उत्तम औषधि है।

अन्य—शुद्धपारा शुद्ध गन्धक दोनो की कज्जली कर चंगेरी के रस मे खरल कर अंजन वनावे, इसके आजने से नेत्र के सब रोग मिट जाते हैं।

अन्य—सोठ, मुलट्ठी, भंगरे का रस और तेल इनको खूब रगड़ कर आंख मे डाले तो सम्पूर्ण नेत्ररोग दूर होते है।

अन्य—गेरु, चन्दन, दोनो को चंगेरी के रस मे पीस कर नेत्र पर लेप करे तो नेत्रो के सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं।

अन्य—गेरु, हरड, देवदार, सैंधानमक, रसौंत इनको पीस कर लेप करे तो नेत्र के सम्पूर्ण रोग दूर हो।

अन्य—नागरमोथा, बिल की जड, दोनो को गोमूत्र मे घिस कर अंजन करने से नीलवाय, तिमिर और पटल रोग दूर होते हैं।

अन्य—नागरमोथा को बकरी के मूत्र में पीस कर नेत्र मे डालने से फोला, धुंद, जाला, लाली दूर होती है।

### नेत्रकामला का उपाय

द्रोणपुष्पी ( गूमा ) का रस आख मे डालने से पीलिया कामला रोग दूर होता है।

### अतिनिद्रा का उपाय

हींग को जल मे घोल कर अंजन करने से अतिनिद्रा रोग दूर होता है।

अन्य—सैधानमक जल मे घोल कर नेत्र मे डाले।

अथवा—कडियारी के बीज, त्रिफला, सूक्ष्म पीस मधु के साथ नेत्र मे आजने से नेत्ररोग दूर हो जाते हैं।

अन्य—सुहाजने के बीज और नागकेसर, अथवा सुहांजने के बीज और नीलकमल, जल मे पीस कर आखो मे डालने से अतिनिद्रारोग दूर होता है।

अन्य—त्रिफला, सैधानमक, मिर्च, इनको पानी के साथ पीस नसवार लेने से अतिनिद्रारोग दूर होता है।

अन्य—शहद, मिर्च दोनो को घोडे की लार मे पीस आखो मे आजने से अतिनिद्रारोग दूर होता है।

अन्य—सिरस के बीज, मघ, मिर्च, सैधवनमक, लसन, मनसिल, वच, इनको गोमूत्र मे पीस आजने से सन्निपात तथा अतिनिद्रारोग दूर होते हैं।

अथवा—सिरसबीज, मिर्च, मघ, सैधानमक इनको गोमूत्र मे पीस आजने से सन्निपात तथा अतिनिद्रारोग दूर होता है।

अन्य—त्रिफला, मुलट्ठी, कंटकारी के बीज, इनका काढ़ा बना सैधवनमक मिला पीने से अतिनिद्रारोग दूर होता है।

## निद्रा लाने के उपाय

शरपुंखाबूटी की जड़ पानी मे पीस सिर पर लेप करने से उचटी हुई निद्रा आ जाती है।

अथवा—गो या भैंस का दूध मिश्री मिला पीने से नींद आ जाती है।

अन्य—घोड़े की लार, बकरी का दूध, कस्तूरी इनको घिस कर नेत्रो में डालने से अनिद्रारोग दूर होता है और खूब नींद आती है।

अन्य—जायफल और भांग दोनों समभाग कूट ले, बकरी दूध मे पीस कर तालु एवं पाओं के तलवो पर लेप करने से नींद आ जाती है।

अन्य—पिप्पली, गुड दोनो मिला खाने से नींद आती है।

अन्य—काकजंघा की जड़ लेकर सिर मे बाधे।

अन्य—जायफल को भेड़ के दूध मे घिस कर हाथ-पाओं मे मलने से और सिर पर लेप करने से अनिद्रारोग दूर होता है, नींद खूब आती है।

## नेत्ररोग पर पुनर्नवाकल्प

इटसिट की जड को तेल मे घिस कर आख मे डाले तो तिमिररोग दूर होता है, घृत मे घिस कर आंजने से फोला, भंगरे के रस मे घिस कर नेत्र की खुजली दूर होती है, मधु के साथ घिस कर आंजने से रक्तरोग दूर होता है। कांजी के साथ घिस कर रतोंधी को दूर करती है।

## नयनामृत अंजन

शंखनाभि, नीलाथोथा, बोलगोंद, मघ, खपरिया, इन सब को निबू के रस में खरल कर नेत्र में आंजने से सम्पूर्ण नेत्ररोग दूर होते हैं।

अन्य—त्रिकुटा, त्रिफला, सैंधानमक, मुलट्ठी, नागरमोथा, रसौंत, लोधपठानी, नीलाथोथा इनको बारीक पीस कपड़छान कर वर्षा के जल या ओस जल मे पीस गोली बना ले, इसको नारी के दूध में घिस कर लगाने से तिमिर तथा अन्य नेत्ररोग दूर होते हैं।

## अंधे का उपाय

नर के केश जला कर तीन टंक ले, श्वेतमिर्च २० दाने, कांच तोल मे मिर्च के बराबर ले, सब को बारीक पीस कर कपड़छान करले इसके

अंजन करने से तिमिर, फोला, लाली, छौड आदि नेत्ररोग दूर होते हैं।

### भूताञ्जन

मिर्च, कंडियारी की छाल, हींग, कायफल, साबुन की झाग, इनको बारीक कर गोली बनाले और गधे के मूत्र मे घिस कर गोली आंख मे आंजे तो भूत-प्रेत की बाधा दूर होती है।

### मोतियाबिंद का उपाय

कौड़, बावडिंग, जंग हरड, नीम के पत्र, दारुहलदी, चित्रा, दालचीनी, मघ, ममीरा, हरताल, सैंधवनमक, सोंठ, सब को बारीक पीस कर केसर के जल मे रगड कर गोली बनावे, थूक मे घिस कर नेत्र मे डाले तो मोतियाबिंद को दूर करता है।

### अन्य अञ्जन

हरा, पीला, नीला, सफेद, काला पाच रंग का कांच १ तोला, घोड़े की गर्दन के बाल, मनुष्य के सिर के बाल, घोड़े के खुर सब १-१ तोला, भुना हुआ नीलाथोथा १ तोला सबको मिट्टी के कुल्हड़े मे मुह बंद कर चूल्हे पर धरे और और नीचे दो पहर की आग दे, फिर ठंडा होने पर उतार ले और बारीक पीस ले और मघ, संगवसरी, बीजाबोल, समुद्रझाग सब १-१ तोला सबको बारीक पीस अजन बनावे, इस अंजन को २१ दिन नेत्रो मे आंजने से मोतियाबिंद, तिमिर, पटल, लाली, धुद तथा अन्य नेत्ररोग दूर होते हैं।

### लाली तथा दुखे नेत्रों पर पोटली

सैंधानमक, बकरी का घी, लोध, इनको बारीक कर पोटली बांधे, इस पोटली को कांजी के पानी मे भिगो कर बार बार नेत्रो पर लगाता जावे, इससे आंखो की लाली, पीड़ा, खुजली, दुखना आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य पोटली—हरड, बहेडा, आमला, लोधपठानी, नीम के पत्र, सैंधानमक, हलदी, पटोलपत्र इनको पीस पोटली बना पानी अथवा गुलाब के अर्क मे भिगो कर आंख पर बार बार टकोर करने से १४ दिन मे नेत्र की लाली, पीड़ा, खुजली आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य पोटली—इमली के पत्ते, लोधपठानी, हलदी, भुनी फटकरी, इनको पीस पोटली बना पानी अथवा गुलाब जल में भिगो टकोर करने से नेत्र की पीड़ा, लाली, खुजली आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—कत्था, रसौंत, सफेद जीरा, खांड, फटकरी, सब ६-६ माशे, अफीम ८ माशे, नीलाथोथा ४ माशे, प्रथम फटकरी और नीलाथोथा को भून ले, फिर सबको बारीक कर जल से पीस कर तावें की कटोरी में रख छोड़े, इसके लगाने से नेत्र की लाली, कुकरे पडवाल आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—रसौत, मिश्री ( बीकानेर की ), फटकरी भुनी हुई सब ६-६ माशे, अफीम ८ माशे, भुना हुआ नीलाथोथा ४ माशे सब जल के साथ पीस तावे की कटोरी में भर छोड़े, इसके आजने से धुंद, फोला, छोड़, तिमिर, लाली, खुजली, कुकरे, लाली आदि सब दूर होते हैं।

### पड़वाल का उपाय

प्रथम पड़वालो को निकालले फिर बाज पची की बीठ का लेप करे तो १४ दिन में पड़वाल दूर हों।

### आंख दुखने का उपाय

कौड़ी की भस्म, कत्था, अफीम, सब ४-४ माशे, सबको कांसी की थाली में कड़वा तेल मिला कर तावे के टुकड़े से दो पहर तक घासा करे, फिर कांसे के वर्तन में ही रख छोड़े, इसके लगाने से नेत्रों के सब रोग दूर होते हैं।

### नेत्ररोग पर घृत

संगबसरी २। तोले, फटकरी भुनी हुई २। तोले, परोला ( जिस कपड़े के साथ ठठेरे वर्तन पोछते हैं उसको परोला कहते हैं) की भस्म ४ टंक सब को बारीक पीस पांच टंक गोघृत में मिला दे, फिर नीम के डंडे के साथ तांवे का पैसा लगा कर लगातार एक मास तक रगडाई करे, फिर तावे की कटोरी में रख छोड़े, और सलाई से आंख में लगावे तो दुखते हुए नेत्र ठीक हो जाते हैं, लाली, धुंद, फोला, परवाल, कुकरे, खुजली, अंजन-हारी आदि नेत्ररोग ठीक होते हैं, इसको संभाल कर गुप्त रखना चाहिये,

किसी को वताना नहीं चाहिये, क्योंकि परदे और भेद मे ही गुण होता है नहीं तो मनुष्य ख्वार होता है।

### धुंद, फोला, बगलगंध, खुजली के लिये

सिक्का ४ तोले, वारीक कतर कर खरल में डाले, उतनी ही उसमे मवा मिला दे और दोनो की सूखी रगड़ाई करे, संगवसरी, समुद्रफाग, ४-४ तोले उसमे मिला दे और खूब अच्छी तरह पीस कर रख ले, इसके लगाने से धुंद, फोला, वगलगंध, खुजली आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य फोला का उपाय—बीकानेर की मिश्री ४ तोले, नीलाथोथा भुना हुआ २ तोले, दोनों को खूब वारीक पीस कर अंजन करने से धुंद, फोला आदि दूर होते हैं।

अन्य —४ तोले तोले सिक्के के वारीक पत्रे, नकछिकनी बूटी ८ तोले, दोनो को खूब वारीक कपडछान कर नेत्र मे आजने से नेत्ररोग दूर होते हैं।

### नेत्ररोग मे पथ्य

आश्च्योतन ( नेत्र मे दवाई टपकाना ), लंघन, अंजन, स्वेदन, विरेचन, लेप, घृतपान, प्रतिसारण, रात को सोना, रक्तनिकालना, अग्नि का सेक देना, नश्तर लगाना, मूग, जौ, पुराने चावल, शहद, सैंधा-नमक, द्राक्षा, छोटीमूली, इटसिट, जलपीपल, मकोय, धनिया, चन्दन, नारीदूध, भंगरा, लाल चावल, अन्य कड़वे और हलके पदार्थ नेत्ररोग मे पथ्य हैं।

### नेत्ररोग मे कुपथ्य

क्रोध, चिन्ता, मैथुन, मल, मूत्र, नींद, आसु, वमन इनका वेग रोकना, वारीक देखना, जल मे डुवकी लगाना, रोना, दातुन, रात को भोजन करना, धूप मे चलना, वहुत वोलना, उलटी लेना, महुआ, दही का पानी, सब प्रकार के साग, करेले, मछली, शराब, सब प्रकार के मास, अन्य नमक और विदाही, तीक्ष्ण, खट्टे, गरम, भारी, चरपरे अन्न पान नेत्ररोग मे कुपथ्य कहे हैं।

इति नेत्ररोगाधिकार।

## अथ शिरोरोगाधिकार

वात, पित्त, कफ सन्निपात, क्षय, रक्त, तथा क्रिमियो से १० सिर के रोग हो जाते हैं।

### सिर रोगों के नाम

१ वात, २ पित्त, ३ कफ, ४ सन्निपात, ५ क्षत, ६ रक्त, ७ क्रिमि, ८ सूर्यावर्त, ६ अर्धावभेदक ( अधसीसी ), १० शिरोभ्रम (सिर का घूमना) ये १० प्रकार के शिरोरोग होते हैं।

### वातज शिरशूल के लक्षण

शीतकाल और रात को सिर मे पीड़ा अधिक, मुख फीका, गरमी मे आराम प्रतीत होता हो, मस्तक ठंडा रहे तो वात का शूल जानो।

### पित्तज शिरशूल के लक्षण

तृष्णा अधिक, मस्तक गरम रहे, शिर मे पीडा, सिर मे चक्कर आते हों, मुख कड़वा हो तो पित्त का शूल जानो।

### कफज शिरशूल के लक्षण

सिर भारी रहे, सरदी से जकड़ा हुआ हो, जुकाम हो, मुख कफ से भरा हुआ हो तो कफ का शिरशूल जानो।

### रक्तज शिरशूल के लक्षण

रक्त के शूल मे शिर अत्यन्त गर्म, सिर मे फिसियां निकले, सिर में गरमी के कड़ाके पड़े, नेत्र लाल हो, अन्य पित्त के लक्षण भी पाए जाते हैं।

### सन्निपात शिरशूल के लक्षण

जिस मे, वात पित्त कफ तीनो के लक्षण पाए जावे उसे सन्निपात का शूल जानो।

### सूर्यावर्त के लक्षण

प्रातःकाल सूर्य के निकलते पीड़ा आरम्भ हो जैसे २ सूर्य बढ़ता जावे पीडा भी बढ़ती जावे, और सायंकाल सूर्य अस्त होने पर पीड़ा शान्त हो उसे सूर्यावर्त रोग कहते हैं।

## अर्धावभेदक ( अधसीसी के लक्षण )

जिस रोग मे आधे सिर मे पीड़ा हो उसे अर्धावभेदक कहते हैं।

## क्रिमिशिरोरोग के लक्षण

जिस मे सिर के अंदर कीड़े पड़ जावे, नाक से लहू निकले उसे क्रिमि से ही जानो।

## शिरोभ्रम के लक्षण

सिर मे चक्कर आने से मूर्च्छा आदि रोग हो जाते हैं।

ये १० शिरोरोग कहे गये है।

# शिर के रोगों का उपाय

## वातज शिरशूल का उपाय

एरण्ड के तेल मे कुठ को पीस कर सिर पर लेप करने से वायु की पीड़ा दूर होती है, यह सिद्ध योग है।

अन्य – देवदारु, कुठ, खस, तगर सोठ, इनको कॉजी मे पीस कर सारे सिर मे लगाने से वायु की सिर दर्द बंद हो जाती है।

अन्य—एरण्ड की जड, मुचकंद इनको पानी मे पीस कर मस्तक पर लेप करने से वायु की पीडा दूर होती है।

अन्य—कालीमिर्च को सुहाजने के रस मे पीस कर सिर मे लगाने से वायु का सिरदर्द दूर होती है। अथवा मिर्च को एरण्डतेल मे पीस लेप करो।

अन्य—कुठ, देवदारु, कायफल, इनको एरण्ड तेल मे पीस कर लेप करने से वायु की पीड़ा दूर होती है।

## पित्तज शिरशूल का उपाय

सफेद चंदन, दूबघास, कसेरु, आमले हरड, खस, कौलडौडा, मुरकवाला इनको पानी अथवा गुलाव-केवड़े के जल मे पीस कर मस्तक पर लेप करने से पित्त की सिर दर्द दूर होती है।

अन्य—चन्दन, कपुर, कचूर, इनको जल मे पीस लेप करने से भी पित्त की सिरदर्द दूर होती है।

अन्य—चन्दन, नेत्रवाला, कमल, खस, पद्माख, कसेरु, आमले, इनको जल मे पीस लेप करने से पित्त की सिरदर्द बंद होती है।

अन्य—सोंठ, चावल, गाजती, चदन, कपूर, इनको पानी में पीस मस्तक पर लेप करने से पित्त का शिरशूल दूर होता है।

अन्य—केसर, मुलट्टी, हरड, खाड इनको घी मे घिस कर लेप करने से पित्त की मस्तकपीडा दूर होती है।

## कफज शिरशूल का उपाय

कुठ, रायसन, मोचरस, छाड़छडीला, एरण्डमूल, विवारे के वीज, वच इनको पानी मे पीस लेप करने से कफ का शिरशूल दूर होता है।

अन्य—वच, सोठ, हरड, जीरा, सैंधानमक, इनको गर्म जल मे पीस नसवार लेने से कफ की सिरदर्द दूर होती है।

अन्य—शिलाजीत, चव, रेणुका, मघ, सोठ, वावडिंग, सुहाँजना के वीज, पुठकंडा के वीज, हलदी, इन्द्रायण की जड, इनको पानी मे पीस दिन मे तीन चार वार नसवार लेने से कफ का शिरशूल दूर होता है।

## आधासीसी का उपाय

मवा, मिर्चा, लोधपठानी, मनसिल, इनको पानी मे पीस कर दिन मे तीन चार वार नसवार देने से आधासीसी दूर होती है।

अन्य—हरमल की जड की नसवार ले, अथवा कान मे बाँधे तो आधासीसी दूर होती है।

अन्य—मरी हुई मक्खी और कालीमिर्च दोनो वरावर पीस जिस ओर पीडा हो उस ओर के नेत्र मे अंजन करे तो आधासीसी दूर होती है।

अन्य—लाल कनेर के पत्तो का रस मिला कर प्रात.काल नसवार लेने से आधासीसी की पीडा दूर होती है।

अन्य—समुद्रफल को वकरी के मूत्र मे घिस कर नसवार लेने से आधासीसी दूर होती है।

अन्य—अथवा आगे लिखे मंत्र से तीन वार वा सात वार झाड़ देने से भी आधासीसी दूर होती है।

"ओं नमो आधासीसी हूं हूं कारी, पहरपचारी, मुखमूंद धार ले डारी, अमुकारे सीस रहै, सुखमहेश्वर की आज्ञा फुरै, ओं ठः ठः स्वाहा"।

## सूर्यावर्त का उपाय

मिर्च, कुठ, वच, मुलट्ठी, मघां, चित्रा, इनको कांजी मे पीस मस्तक पर लेप करने से सूर्यावर्त रोग दूर होता है।

नसवार—मिश्री और केसर दोनो को गोघृत मे पीस नसवार लेने से सूर्यावर्त रोग दूर होता है।

अन्य—गुड़, हीग, पानी मे घोल नसवार लेने से सूर्यावर्त रोग दूर होता है।

अथवा—समुद्रफल को घिस कर नसवार लेने से सूर्यावर्त रोग दूर होता है।

## अधा, हेडा, घूघता, घेरा, का उपाय

गुड और सोठ पानी में पीस नसवार लेने से अधा, हेडा, घूघता, घेरा इन तीनो सिरपीडाओ का नाश होता है।

अन्य—सूखामदली के बीज, कालीमिर्च मनुष्य के मूत्र मे पीस कर नसवार लेने से अधा हेडा, घूघता, घेरा दूर होता है।

## घूघता का उपाय

मघ, मिर्च, सोठ, अकरकरा, पिप्पलामूल सब ५-५ टंक, मिश्री ३ टंक, गुड पुराना ४ पल, प्रथम गुड की चाशनी करे, फिर सब मिला २-२ माशे की गोली बनाले, एक वा दो गोली प्रतिदिन खाने से २१ दिन मे सिर घूमना दूर हो।

अन्य—मुनक्का ५ तोले, मिश्री ४ तोले, कालीमिर्च ६ माशे, मघ ८ माशे सबको पीस २-२ माशे की गोली बना २—२ गोली दोनो समय जल के साथ खावे तो सब प्रकार की सिरदर्द दूर होती हैं।

## मस्तकरोग शीतांग सन्निपात (योगचिन्तामणि से)

कुठ, कलौंजी, मिट्ठातेलिया, वच, अजवायन, अजमोदा, पुहकरमूल, इनको समान भाग ले चूर्ण करले, फिर गेहू की रोटी बना कर तवे पर डाल उसकी एक ओर यह चूर्ण बुरक दे, जब एक तरफ पक जावे

तो उतार कर ( घी चुपड कर ) गरम २ सिर पर बाँधे, इससे शीतांग सन्निपात, शिरशूल, मिर्गी आदि सब रोग दूर होते हैं।

अन्य—सोंठ ४ टंक, मिर्च ४ टंक, धनियां २ तोले, सट्ठी के चावल ४ तोले, खजूर सुलेमानी ४ तोले, इन सबको बारीक करे। इस चूर्ण को नीचे लिखे मंत्र से इतवार के दिन १०८ वार मन्त्रित करे, फिर वासी जल के साथ खावे तो हुल्लां और सिर का कड़ाका दूर हो।

मन्त्र—"सूर्यनाथेन तत् प्रोक्तं यत् प्रोक्त ब्रह्मचारिणा।
तदुक्तं नारसिंहेन तेन चक्रे हि वायुना॥"

### सर्वसीसरोग का उपाय ( वंगसेन से )

लौंग १ नग, छिलके रहित जौ २ नग, सरसों ३ दाने, धनिया ४ दाने, हींग चने के बराबर, मघा २ नग, मिर्चा २ नग,सैंधानमक सब के बराबर, सबका चूर्ण करले, इसको जल में घिस कर नसवार लेने से सिरदर्द दूर होती है। इसके अतिरिक्त अपतंत्र, मन्यास्तम्भ, हनुस्तम्भ, सूर्यावर्त, कर्णशूल, रतौंधी, तिमिर, नेत्रार्बुद तथा अन्य नेत्ररोग, सिर, कान के रोग दूर होते हैं।

### क्रिमिजशिर शूल का उपाय

वावड़िंग, सज्जीखार, जमालगोटा, हींग तोला तोला; इनको गोमूत्र मे पीस ले। फिर इनको दो सेर गोमूत्र और आध सेर सरसों का तेल मिला कर पकावे, जब तेल बाकी रहे तो तेल को छान संभाल कर रख छोड़े, इस तेल की नसवार लेने से नाक और सिर के कीड़े दूर होते हैं और क्रिमि से होने वाली सिरदर्द भी दूर होती है।

अन्य—चन्दन, कुठ, हलदी, दारुहलदी, एरण्ड की जड़, इनको कांजी मे पीस सिर पर लेप करने से सिरदर्द दूर होती है।

### इन्द्रलुप्त ( वालचर ) का उपाय

पंवाड़ के बीज कांजी मे पीस सिर पर लगाने से वालचर दूर होता है। इसके अतिरिक्त—दद्रु, खुजली एवं अन्य रक्तविकार भी दूर होते हैं।

अन्य—कंडियारी की जड़, भिलावा, तिल; इनको पानी मे पीस कर लगाने से वालचर रोग दूर होता है।

अन्य—मघ को गोमूत्र मे पीस कर सिर पर लेप करे।

अथवा—गुलहड़ के फूल गोमूत्र में पीस कर लेप करने से वालचर दूर होता है।

अन्य—अमलतास के पत्ते, लाख, हरड, पंवाड के बीज; इनको पानी में पीस कर लेप करने से वालचर रोग दूर होता है।

अन्य—काकोली की जड, हरड; इनको तिलतेल मे पका कर सिर पर लगाने से सिर का वालचर, कर, फुंसी आदि दूर होती हैं।

अन्य—केसर असली और कालीमिर्च दोनो को तेल में घिस कर लेप करने से गंज, वालचर, कर, फिंसि आदि दूर होती हैं,

अन्य—काकजंघा की जड़ एवं पत्तो का रस निकाल सिर पर लेप करने से गंज, कर, छिलके, फिंसियां, वातरक्त दूर होता है।

अन्य—कडियारी के फल, रत्ती की जड एवं फल, इनको जल के साथ पीस सिर पर लेप करने से गंज, वालचर, सिर दर्द आदि दूर होते हैं।

अन्य—भखड़ा, तिल के फूल दोनो पीस लगाने से सिर, मूंछ, दाढ़ी का वालचर दूर होता है।

अन्य—उत्तम रसौत, हाथी दात जला कर उसकी स्याही, दोनो को जल मे पीस लेप करने से वालचर रोग दूर होता है।

### गंज का उपाय

त्रिफला को लोहे के वर्तन मे जला कड़वे तेल मे मिला कर सिर मे लेप करे तो सिर का गञ्ज दूर हो।

अन्य—कौड़ी की भस्म और कमीला दोनों को मिला सिर पर कड़वा तेल लगा कर ऊपर बुरके इससे सिर का गञ्ज, फोड़ा, फिंसी, दद्रु, लूत आदि दूर हो जाती है।

अन्य—रत्तिया जला कर उनकी भस्म सिर पर कडवा तेल लगा कर बुरके तो गञ्ज रोग दूर होता है।

अन्य—सैंधानमक, नीलाथोथा, सांप की केंचुली, कमीला, कत्था, मुर्दासंग; सबको बारीक पीस कड़वे तेल मे मिला सिर पर लेप करने से गञ्ज दूर होता है।

अन्य—कम्बल के टुकड़े को जला कर भस्म करले, भैंस के गोबर के रस को सिर पर चुपड़ कर ऊपर से भस्म बुर के गंज रोग दूर होता है।

अन्य—गोमूत्र के साथ नित्य सिर धोने से भी गंजरोग दूर होता है

### बालों में छोटी बरूरी का उपाय

महिंदी, कीकर की कोपले, कत्था, मुर्दासंग, नसपाल, घर का धुआ कमीला, तपड़, प्रथम कीकर की कोपलें और तपड को जला ले, फिर सब को मिला कर बारीक पीस रखे सिर पर कड़वा तेल लगा कर बुरके तो बरूरी दूर हो । यदि सिर पक गया हो तो सज्जी थोड़ा सैंधानमक दोनो को नीम के पत्तों के साथ पीस लेप करने से गंज, बरूरी, कर, छिलके, दाद, लूत, फोड़ा, चम्बल आदि दूर होते हैं।

उल्ल रोग पर—महुए के बीज की गिरी जल से पीस कर नसवार लेने से उल्लरोग दूर होता है।

### उल्ल पर कागजी

नीलाथोथा, गूगल, अफीम, मिट्ठा तेलिया इनको जल मे पीस कागज पर चिपका कनपटियो मे लगावे तो तीन, पाच वा बीस दिन में हुल्लां और कड़ाका रोग दूर होता है।

अथवा—जमाल गोटे की गिरी पानी मे घिस सर कागजी लगावे। पक जावे तो धुला हुआ मक्खन लगावे तो हुल्ला कड़ाका रोग दूर हो।

अथवा—लसन पीस कर कनपटियो पर लगावे, पक जावे तो धुला हुआ मक्खन लगावे तो हुल्लां कड़ाका दूर होता है।

### शिररोग में पथ्य

पसीना, नसवार, धूमपान, लेप, वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण, सेक-करना, शिरोवस्ति, लंघन, पुराना घृत, वासमति के चावल, सठी चावल यूष, दूध, परवल, मुनक्का, सुहाजना, करेला, पालक, नारियल, बिजौरा, तेल, तक्र, अनार, आमले, भृंगराज, कांजी हरड़, कुठ, घीकुआर, खस, चन्दन, नागरमोथा, इलायची, ये द्रव्य शिरशूल मे पथ्य हैं।

### शिरोरोग में कुपथ्य

भूख, प्यास, जंभाई, मूत्र, वायु, निद्रा, इनके वेगों को रोकना, मार्ग की थकावट, विरुद्ध भोजन, शीतल (नदी आदि का) जल दातुन, दिन को सोना, शीतजल मे गोता लगाना, यह शिरोरोग में कुपथ्य है।

इति मेघविनोदस्य सौदामिनीभाषाभाष्ये कर्ण, मुख, नासा, नेत्र, शिरोरोगात्मकदशमोऽध्यायः।

---

# अथ ग्यारहवां अध्याय

श्री गुरुदेव के चरण कमलों मे नमस्कार कर उनकी कृपा से अब हम ग्यारहवा अध्याय आरम्भ करते हैं।

## अथ वाजिकरणाधिकारः

### सोमरोग के लक्षण

जो मनुष्य वार २ पेशाब करे, और जिसे शीतकाल मे इससे भी अधिक पेशाब उतरे, अन्य लक्षण जल प्रमेह के समान हो तो उसे मूत्रातिसार वा बहुमूत्र वा सोमरोग कहते हैं।

### सोमरोग का उपाय

ताल का फल, खजूर, मुलट्ठी, विदारीकंद, इनका चूर्ण कर मधु और मिश्री मिला कर चाटे तो सोमरोग दूर होता है।

अन्य—ताल फल, चन्दन लाल, केला, खजूर, इनको नित्य प्रातः दूध के साथ खाने से सोमरोग, बहुमूत्र रोग वा मूत्रातिसार दूर हो।

अन्य—अफीम एक माशा लेकर एक बड़े जायफल के अन्दर भर दें, फिर जायफल को अनार मे रखें और अनार पर सात कपड़-मिट्टी कर आग मे पकावें, इस बात का ध्यान रखें कि अनार जलने न पाये, जब ऊपर की मिट्टी लाल हो जावे तो निकाल ले मिट्टी को उतार अन्य सब को पीस १-१ रत्ती की गोलियां बना लें, एक व दो गोली शहद के साथ देने से सोमरोग, जलमेह, मूत्रातिसार दूर होता है। वीर्य का बंधेज होता है, यह अत्युत्तम योग है।

## विंदकुशाद का निदान

रजस्वला स्त्री के साथ भोग करने से, अथवा भोग करते समय कोई विघ्न आ पड़ने से अथवा सुजाक से विंद रोग हो जाता है।

## विंदरोग के लक्षण

लिंग का छिद्र मोकला अर्थात् खुला हो जाता है और वीर्य भी शीघ्र स्खलित हो जाता है, अथवा प्रतिसमय इन्द्री से वीर्य चुड़ता ही रहे इसको विंदरोग अथवा हिरसमेह कहते हैं। इसमे यह भी होता है कि सुन्दर स्त्री को देख कर लिंग मे तेज़ी आती है और उसी समय वीर्य चुड़ने लग पड़ता है। और भोग करते समय वीर्य जलदी स्खलित हो जाता है।

## विंदरोग का उपाय

११। तोले शुद्ध वंग ( कलई ) को कढाही मे डाल आग पर पिघलावे, पिघल जावे तो उस पर दो तोले अजवायन, दो तोले कच्ची हलदी, दो तोले पीपल का छिलका, दो तोले आमले, इनको कूट कर चूर्ण कर ले और थोड़ा थोडा पिघली हुई कलई पर बुरके और कडछी से हिलाता जावे, जब कली मर जावे तो उसे कढ़ाही मे इकट्ठी करके ऊपर एक प्याला देकर ढक दे और नीचे एक पहर तेज आंच दे, शीतल होने पर उसे कपड़ छान कर ले अथवा पानी मे घोले, फिर गाय के दही मे खरल कर टिकिया बना प्यालो मे बद कर गजपुट की आग दे। इस प्रकार तीन पुटे दे। जब अच्छी तरह सफेद रंग की भस्म हो जावे तो वारीक पीस कर शीशी मे संभाल रखे। फिर उसमे से ६ माशे कली लेकर उसमे गेहूँ का निशास्ता ६ माशे, मिर्च ६ माशे, गिलोय सत ६ माशे, वडी इलायची का दाना ६ माशे, इन सब को मिला वारीक पीस कर रख छोड़े, इसे १–१ माशा प्रति दिन दूध के साथ खावे तो विंदरोग दूर हो जाता है। तथा प्रमेह मूत्रातिसार सोमरोग दूर हो जाता है, लिंग में तेज़ी आती है। यह योग अत्युत्तम है।

## लिंग पर मलने का तिला

हरमल, मूली के बीज, कुचला, अकरकरा, मालकंगुनी, बावची, कुठ, ये सब ६-६ टंक लेवे, विष ( मीठा तेलिया ) ८ मारो, जायफल २ तोले, सबका दरडा कर शीशी मे भर दे, और शीशी के मुंह मे खस अथवा कोई सूराख वाला कार्क अड़ा कर उस कार्क मे शीशे की पोली नली लगा दे, शीशी का मुंह नीचा करे और नीचे कटोरी रखे, ऊपर आग दे, इन वस्तुओ का तेज़ निकल कर कटोरी मे पड़ेगा, तेल को संभाल कर रख छोड़े। यह तेल चिकने मिट्टी के वर्तन द्वारा भी निकाला जा सकता है ( इस यन्त्र को पतालयन्त्र कहते है )। फिर इस तेल मे अफीम ४ रत्ती भर और पारा २ रत्ती भर दोनो को अच्छी तरह मिला कर शीशी मे भर छोड़े, इस तेल की लिंग पर मालिश करे और ऊपर से पान का पत्ता बांधे, सात वा १४ दिन मे नपुसकता ( नामर्दी ), विन्दुकुशाद रोग, हथरस, सोमरोग दूर होते हैं, लिंग चेतन तेज़ तथा दृढ़ और मोटा हो जाता है।

अन्य—शुद्ध यशद (जिस्ता) को पिघला कर बासे के पत्ते बुरकता जावे, जब मर जावे, तो उतार कर बासे के रस मे खरल कर टिकिया बना गजपुट मे फूंक दे, इस तरह तीन वा पांच पुट मे कासे की भस्म हो जाती है, इस भस्म को १ भर ले और एक माशा बड़ी इलायची का चूर्ण मिला कर नित्य खावे तो विन्दुकुशाद रोग दूर होता है।

अन्य—कालपी मिश्री ४ तोले, सिरस के बीज ४ तोले, दोनो को बारीक कर ६ माशे वा १ तोला भर पानी के साथ खावे तो बिंदुकुशाद-रोग दूर हो।

अन्य—सगजराह ६ तोले, लौंग ४ तोले, अफीम ४ तोले सबको मिला, ठीकरे मे डाल आग पर रख भस्म करे, और लोह की कड़छी से रगडता जावे, रगडते २ जब भस्म हो जावे उतार कर रखले, उसमे से एक रत्ती पान मे रख कर २१ दिन तक खाने से विंदुकुशाद रोग दूर होता है, इन्द्री तेज होती है।

अन्य—बीजबंद, मोचरस, जायफल, समुद्रशोष, जावित्री, तज, कमरकस, भखडे, असगंध, शतावर, तेजपत्र, मुसली काली, लसूडियां, गाजर के बीज, रूमी मस्तकी, यह सब द्रव्य ४-४ तोले ले। चूर्ण करले, फिर गोदूध पाच सेर लेकर उसमे यह चूर्ण मिला कर खोया करे उस खोए मे शहद मिला कर १-१ तोले का लड्डू बाधे, नित्य प्रति रात को एक लड्डू दूध के साथ खाने से विदुकुशाद दूर होता है, कामशक्ति बढ़ती है, वधेज होता है, इन्द्री तेज होती है। सोमरोग दूर होता है, स्त्री अतिप्यार करती है, और पीछा नहीं छोड़ती।

अन्य—बकाइन की जड़ का छिलका, पोस्त की कोपलें, खस, छोटी दूधी ४-४ तोला सब को सुखा कर कपड़छान कर ६ सेर दूध में मिला खोया करे। फिर इसमे १३॥ तोले खाड, १३॥ तोले शहद और १३॥ तोले घी मिला दे, दो से चार तोले तक नित्य खाने से विदुकुशाद रोग दूर होता है।

अन्य—हरमल आध सेर लेकर दो सेर पानी मे उबाले, फिर छाया मे सुखा ले और फिर एक सेर दूध मे मिला कर अग्नि पर सुखावे, फिर नगोरी सोठ ५ तोला भर, जायफल १० टक, इलायची, लौंग प्रत्येक ५-५ टंक, विष (मिट्ठा तेलिया) एक टंक, इनका वारीक चूर्ण करे, फिर मिश्री १ सेर लेकर चाशनी करे और उस खोए मे उस दवाई को मिला दे तथा ठंडा होने पर एक सेर शहद भी मिला दे. नित्य १ तोला भर दवाई दूध के साथ खावे तो सोमरोग, विदुकुशाद, प्रमेह, हथरस आदि रोग दूर होते हैं।

## वाजीकरण औषध

हरड़, सोठ, मघ, इलायची, तेजपत्र, मिर्च, जायफल, असगंध, केसर, लौंग इनको वारीक कर सब के समान वंगभस्म मिला लेप करले, ३-४ मारो के लगभग दवाई दूध के साथ नित्य सेवन करने से सोमरोग मूत्रातिसार तथा अन्य इन्द्री के रोग दूर होते हैं, लिंग दीर्घ दृढ़ और शक्ति युक्त हो जाता है।

अन्य—आमला, जायफल, मिश्री, इलायची बडी, लौंग कपूर, भखड़े केसर, सेमल की छाल, सोठ, सौंफ तथा वंगभस्म उत्तम लेवे, सब वारीक चूर्ण कर ले, ६ माशा चूर्ण नित्य दूध के साथ लेने से बीस प्रकार के प्रमेह, नपुंसकता, विंदुकुशाद रोग दूर होते हैं।

अन्य—मघ, मिर्च, सोठ, हरड़, वहेडा, आमला, वालछड़, दालचीनी, इलायची, सरदचीनी, तेजपत्र, केसर, चंदन, जावित्री, लौंग, सिंघाड़े कलौंजी, अजवायन, सब समान भाग लेकर चूर्ण करे। इस चूर्ण से आधी वंगभस्म ले और सब से दुगुनी खाड, सब को अच्छी तरह मिला कर नित्य ६ माशा से १ तोला तक गोदूध के साथ खाने से विंदुकुशाद, २० प्रमेह, नपुसकता आदि रोग दूर होते हैं। इनके अतिरिक्त स्त्रियो के प्रदर, रक्तप्रदर, अश्मरि, धातुक्षय, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त आदि कष्टसाध्य रोग भी दूर होते हैं, अग्नि का बल बढता है। अम्लपित्त, शुक्रदोष, नेत्ररोग नित्यप्रति के सेवन करने से दूर होते हैं, नर १०० वर्ष तक जीता है और वहुत स्त्रियो को भोग सकता है। यह रसायन और वाजीकरण योग अत्युत्तम है।

अन्य—असगंध, विधारे के बीज, दोनो १०-१० पल दोनो को वारीक पीसे और दोनो के समान मिश्री मिला ले, १ तोला नित्य गोदुग्ध के साथ पीने से एक महीने मे शरीर मे शक्ति आ जाती है, वीर्य गाढा और लिंग दृढ हो जाता है, सम्पूर्ण वीर्य दोष दूर होते हैं।

अन्य—असगंध, भखड़े, कौंच के बीज, गंगेरन, शतावर, सफेद मुसली, तालमखाना, सब समान भाग लेकर चूर्ण करले, यदि इच्छा हो तो इसमे सब के समान मिश्री मिला ले, फिर १ तोला चूर्ण दूध के साथ नित्य खावे तो सात दिन मे वीर्य के सम्पूर्ण दोष दूर होते हैं, अत्यन्त वंधेज होता है।

अन्य—सालिब मिश्री, शकाकल, शिलाजीत शुद्ध, सुरजा मिट्टिया, शतावर, रूमी मस्तकी, तज्ज, वंशलोचन, मूसली काली, सत गिलोय, तालमखाना, गोखरू, मोचरस, सलयारा, छोटी-बडी इलायची, तेजपत्र,

समुद्रशोष, भूफली, खस, बीजबंद, लसूडियां, मुसली सफेद, चंदन सफेद, यह सब १-१ तोला, वंगभस्म दो तोले, सबके समान कालपी (बीकानेर की) मिश्री मिला ले । नित्य एक तोला चूर्ण गोदुग्ध के साथ अथवा बकरी के दूध के साथ खाने से मनुष्य बलवान् हो जाता है, वीर्य गाढ़ा हो जाता है, अत्यन्त बंधेज हो जाता है, इन्द्री की तथा वीर्य की कमजोरी दूर होती है, बीस प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं, सोमरोग, मूत्रातिसार दूर हो जाता है, मनुष्य घोड़े के समान बलशाली होता है ।

## धातुक्षीणता का उपाय

भखड़ा, पान की जड, शतावर, विदारीकंद, यह सब ४-४ तोले, कौंचबीज, उटंगनबीज, बीजबंद यह सब ८-८ तोले, असगंध १२ तोले, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, मघ, आमले, नागकेसर, लालचन्दन, छड, केसर, लौंग, गिलोय, मुसली वंशलोचन, यह सब ४-४ माशे, इन सबको बारीक पीस चूर्ण करे, फिर सिंबल की जड के रस की २१ भावना दे, फिर कुशा के रस की बीस भावना देकर सुखा ले और इस सारे चूर्ण के समान भाग मिश्री पीस कर मिला दे, और नित्य प्रति १-२ तोले दूध के साथ ४० दिन तक खावे तो अपार बल बढ़ जाता है, वीर्य अत्यन्त गाढा और बहुत ज्यादा हो जाता है, लिंग दृढ़ हो जाता है । मनुष्य घोड़े के समान अत्यन्त वेग से स्त्रियों को भोग सकता है, यह कामदेव चूर्ण अत्यन्त बाजीकरण एवं रसायन है ।

अन्य—अफीम, केसर, सोंठ, मिर्च, पीपल, अकरकरा, जावित्री, छोटी इलायची, जायफल, नागकेसर, धतूरे के बीज, दालचीनी, रेणुका, मोचरस, इनका बारीक चूर्ण कर पान के रस मे ३ पहर तक घोटे, और एक एक माशे की गोली बना ले, रात को नित्य दूध के साथ एक वा दो गोली खाने से अत्यन्त बंधेज होता है, वीर्य बढ़ता है । हमारे विचार मे प्रातःकाल ऊपर का चूर्ण दूध के साथ खावे, और रात को यह गोली दूध के साथ खावे, नपुंसक तथा जिनके घर संतान नहीं होती उनके लिये अत्यन्त उत्तम औषधि है, यदि स्त्री जन्म से बंध्या न हो तो उसके ऋतु

की खराबी को दूर कर इन दोनो दवाइयो का सेवन कराना चाहिये, इससे स्त्री सन्तान उत्पन्न करने योग्य हो जाती है।

अन्य—आधसेर शुद्ध बावची का चूर्ण करले, फिर उसे सेर भर दूध मे खोया करे, और नित्य एक तोला भर प्रात काल दूध के साथ खावे, और २१ दिन मे गया हुआ वीर्य फिर प्राप्त हो जाता है, शरीर मे बल बुद्धि बढ़ती है इन्द्री मे बल आता है।

अन्य—माष ( उडद ) का आटा ४ तोला, घी ४ तोले से भून ले, फिर उसमे ४ तोले शहद और ४ तोले खांड मिला कर चटनी सी बना ले. इसको दूध के साथ चाटे तो अपार बल वीर्य बढ़ता है।

### हथरस का उपाय

भखड़ा १ तोला, काले तिल १॥ तोला, दूध १ सेर इनकी खीर बनावे, नित्य प्रातः काल एक महीना भर खावे, और भोजन संध्या समय ही किया करे तो हथरस की कमजोरी दूर होती है, वीर्य बढ़ता है। इसके साथ २ इन्द्री पर पूर्वोक्त तिला भी लगावे।

अन्य—अकरकरा १० टंक, केसर २ टंक, वंगभस्म तीन टंक, जायफल ५ टंक, शुद्ध शिंगरफ ६ टंक, इनको बारीक पीस अफीम के जल में खरल कर २-२ रत्ती की गोली बनावे, इसको रात के समय दूध के साथ खाने से अत्यन्त बंधेज होता है।

### अन्य हथरस का उपाय

सोंठ, अकरकरा, जायफल, लौंग, कंकोल, पद्माख, केसर, मर्वा, अगरकाला, यह सब ३-३ टंक, सब को बारीक चूर्ण कर मधु से १-१ माशा की गोलियां बना ले, और प्रतिदिन संध्या समय दूध के साथ गोली खाने से अत्यन्त बंधेज होता है, धातु पुष्ट होती है, हथरस की कमजोरी दूर होती है। इसके साथ पूर्वोक्त तिला का प्रयोग भी करना चाहिये।

अन्य—सफेद कनेर तथा लाल कनेर की जड़ दोनो ६-६ टंक ले, इनका चूर्ण करे, १ टंक अभ्रकभस्म, रससिन्दूर १ टंक, शुद्ध विष ( मिट्ठा तेलिया ) दो टंक, सब का चूर्ण कर बच्चे के मूत्र मे खरल कर

चने प्रमाण गोली बनावे, फिर इस गोली को अपने मूत्र मे घिस कर इन्द्री पर सोते समय, लेप करे, फिर स्त्री से भोग करे तो अत्यन्त वधेज हो, लिंग मे अत्यन्त बल आवे, इससे स्त्री तो हार जाती है पर मर्द नहीं हारता ।

### वीर्य बढ़ाने का उपाय

सेमल की मुसली का रस निकाल उसमे मिश्री मिला कर ४० दिन मे पीवे, इससे अत्यन्त वीर्य बढ़ता है ।

अन्य—मोचरस ६ माशे, मिश्री २ तोले इन दोनो को ७ दिन खाने से अत्यन्त वीर्य बढता है, शक्ति आती है ।

अन्य—बहुफली, खरैटी, पान के पत्र इनको घोट कर खाड मिला खाने से अत्यन्त वीर्य बढ़ता हैं ।

### वंधेज लेप

कडवी तोरी के बीज पानी मे घिस कर पाओं पर लेप करे और स्त्री भोगे तो दो घडी तक वंधेज रहे, वीर्य स्खलित नहीं होता, जब पाओ जमीन पर लगावे गा तब वीर्य स्खलित होगा ।

अन्य—इटसिट की जड को पीस पाओ मे लेप करे, जब लेप सूख जावे तो भोग करे, जब तक लेप उखड़े नहीं अथवा जल से धोवे नहीं तब तक वीर्य स्खलित नहीं होता ।

अन्य—सफेद कमल, अफीम, श्वेत काकजंघा की जड़, इनको पीस पुरुष नाभि पर लेप करे और स्त्री से भोग करे, वीर्य नहीं छूटता । यह सिद्ध योग है ।

अन्य—पारा, लाख, अफीम, धतूरे के बीज, कपूर; इनको जल में पीस कर पुरुष नाभि पर और स्त्री जंघा में लेप करे, फिर दोनो भोग करे तो दोनों ही स्खलित नहीं होते, जब तक लेप को धोए नहीं ।

अन्य—हरमल ४ सिरसाही भर चूर्ण कर सेर भर दूध मे डाल दे, उसमे अफीम एक माशा मिला कर खोया बना ले, रात के समय ४ माशे खाकर ऊपर से दूध पीवे, इसके बाद जल न पीवे, स्त्री से भोग करे तो भी वीर्य शीघ्र स्खलित नहीं होता ।

अन्य—अफीम ४ माशे, वड़ के फल ६ माशे, भुने हुए चने ८ टंक, भाग ८ माशे, जायफल ६ माशे, इन सब को बारीक कर निम्बु के रस मे खरल कर १-१ माशे की गोली वना ले, एक दो गोली नित्य सेवन करने से अत्यन्त बंधेज होता है, हथरस की नामर्दी दूर होती है, स्त्री को अत्यन्त सुख मिलता है।

अन्य—तालमखाना, खसखस, कौंच के बीज, ढाक की गूंद, सठी के चावल, सफेद खाड; सब को बराबर लेकर चूर्ण करे और गोघृत मे मसल कर नित्य ६ माशे खावे ऊपर गोदुग्ध पीवे तो अत्यन्त बंधेज होता है।

### धातुजली का उपाय

नगौरी गूंद ( घी मे भून कर ) १० तोले, खसखास ५ पल, दोनो को बारीक कूट कर ६ माशे भर गोदुग्ध से १४ दिन तक खावे, इसके सेवन से जली हुई धातु फिर पैदा हो जाती है, शरीर मे रक्त बढ़ता है, वल वढता है, शरीर की रगत लाल हो जाती है, शरीर मे मस्ती आती है।

### नामर्दी का उपाय

भेडी का दूध तीन सेर, कौंचबीज, उटंगन के बीज, सफेद कनेर की जड़ की छाल, आक की जड की छाल, भांग की जड़ की छाल, यह सब २-२ तोले, इन सब को चूर्ण कर दूध मे मिला खोया करे और पाच रात तक लिग पर लेप करे तो करमर्द की अर्थात् हथरस की नामर्दी दूर हो। इन्द्री मोटी और दृढ हो।

अन्य—उटंगन के बीज १ पाव, भेड का दूध १ सेर, दोनो को रांध कर खीर पकावे, इस को लिंग पर मलने से स्त्री स्खलित हो जाती है।

अन्य—सुअर की चर्बी ८ माशे, असली शहद दोनो को खूब मिला कर लिग पर लेप करे, इससे लिंग मोटा, लंबा और मजबूत हो जाता है। हथरस की नामर्दी नष्ट होती है और हिजड़े मे भी स्त्री भोगने की सामर्थ्य आ जाती है।

### अन्य स्तंभन

कुत्ता-कुत्ती को विषय करते देख उन दोनो की पूंछ के बाल काट ले

फिर थोड़ा सिंधूर मिला कर तावीज बनवा ले, इस तावीज को कमर में बांधने से वीर्य नहीं छूटता, तावीज को कमर से खोले तो वीर्य छूटे।

### लिंग स्थूल करने का उपाय

सरसों, असगंध, जायफल, मजीठ, इनको घिस कर इन्द्री पर लेप करने से लिंग बहुत मोटा हो जाता है।

अन्य—कीकर के पत्ते, कालीमिर्च, बहेड़े के फल की छाल, तीनो के बराबर कत्था ले पान के रस से खरल कर चने के बराबर गोलिया बनाले, और तब के साथ घिस कर इन्द्री पर लेप करे, तो इन्द्री आगे से चौगुनी मोटी हो जाती है, स्त्री को अत्यन्त सुख होता है।

अन्य—असगंध, मघ, पीपल, जला हुआ जमालगोटा, केसर, इनको भैंस के मूत्र मे घिस कर इन्द्री पर लेप करे तो इन्द्री अत्यन्त फूल कर मोटी हो जाती है।

अन्य—थोहर का दूध, वच, असगंध, नागकेसर, धतूरा, कंटकारी के फल, बीजबंद, पानी का जाला (सिवाल) इनको पानी के साथ बारीक पीस कर सांझ के समय इन्द्री पर लेप करे तो लिंग फूल कर मूसल के समान हो जाता है, स्त्री मद में आजाती है, अत्यन्त आनन्द आता है।

अन्य—बड़ी कड़ियारी के फलों के रस मे कपूर १ रत्ती बारीक पीसे और शहद मिला कर लिंग पर लेप करे तो लिंग अत्यन्त फूल जाता है।

अन्य—तालमखाना, भखड़ा, अरनी, धतूरे के बीज, सभालू के पत्तो का रस, वनतबाकू के पत्तो का रस, इनको बारीक कर लिंग पर लेप करे ऊपर से एरण्ड का पत्ता बाधे इससे लिंग अत्यन्त मोटा हो जाता है।

### लिंग बढ़ाने का उपाय

पुठकंडा, जौ, तगर, कड़ियारी, विधारा, मिर्च, सैंधानमक, कुठ, तिल, उड़द, पिप्पली, असगंध, सरसों, इनको शहद से पीस कर इन्द्री पर लेप करे, इस प्रकार बीस दिन करने से लिंग मोटा और लंबा हो जाता है।

अन्य—सिंबल की गूंद को गोघृत मे पीस कर इन्द्री पर नित्य लेप करे, इससे लिंग मोटा और लंबा हो जाता है।

अन्य—इटसिट की जड, नीम की गोद दोनो को करंजुए के तेल के साथ बारीक पीस कर इन्द्री पर लेप करने से लिंग लंबा हो जाता है।

इति वाजीकरणाधिकार।

## अथ स्त्रीरोगाधिकार

१ जन्मवंध्या, २ काकवंध्या, ३ मृतवत्सा, ४ नालपरावर्ति यह चार प्रकार की बाझ स्त्रियां होती हैं।

### १ जन्मवंध्या का लक्षण

जिस को कभी गर्भ रहे ही नहीं वह जन्मवंध्या होती है।

### २ काकवंध्या का लक्षण

जिस को एक बार पुत्र होकर फिर गर्भ न रहे वह काकवंध्या होती है।

### ३ मृतवत्सा का लक्षण

जिस के बच्चे हो कर मर जावे वह मृतवत्सा वंध्या होती है।

### ४ नालपरावर्ति वंध्या का लक्षण

जिसे लडकिया ही उत्पन्न हो, लड़के न हो वह नालपरावर्ति वध्या होती है।

### वंध्या ( वांझ ) की योनि शुद्ध करने के उपाय

मुनक्का, भुनी हुई मेथी, दोनो को कपड़े मे पोटली बांध रजस्वला होने पर योनि मे रखे, फिर स्नान करके प्रातःकाल इस प्रकार करे और रात को पति से भोग करे तो प्रभु की कृपा से अवश्य गर्भ रहेगा।

अन्य—बैंगन के तीन लम्बे टुकड़े करले और गोघृत मे तल ले और गंधक बारीक कर उन पर बुरक दे, फिर तीन दिन तक योनि मे रखे इससे ऋतु शुद्ध हो जाती है, और प्रभु की कृपा से भोग करने पर गर्भ ठहरता है और पुत्र उत्पन्न होता है।

अन्य—लौंग, जावित्री, कालाजीरा, समुद्रशोथ, जायफल, कमरकस, गरीखोपा, अखरोट की गिरी, न्योजे की गिरी, पिस्ता, बादामगिरी, सब समान भाग पीस कर तीन पोटली बनावे, और तीन दिन तक भग

मे रखे, इससे भग के सारे रोग दूर हो जाते है। यदि भग के अंदर गर्मी प्रतीत हो तो धुले घी का फोहा बना कर भग के अन्दर रखे। इससे भग की गर्मी दूर हो जाती है, तत्काल स्त्री गर्भधारण कर लेती है।

संतान उपाय

मोरशिखा (सिलयारा), नागकेसर, मुलतानी मिश्री यह ७-७ टंक, केसर ४ टंक, इनको पीस तीन पुड़िया करे। ऋतुस्नान के बाद १पुड़िया एक रंग के बछड़े वाली गौ के दूध के साथ खावे, तीन दिन तक तो अवश्य गर्भ ठहर जाता है और मनमाना पुत्र उत्पन्न होता है।

अन्य—इतवार के दिन शरपुखा बूटी का पंचांग ले कन्या के हाथ से दूध मे मिला कर ऋतुस्नान करने के बाद लगातार सात दिन तक पीवे, मूंग चावल पथ्य खावे तो बंध्या के भी पुत्र हो जाता है। स्त्री दिन को न सोवे, भय, शोक, क्रोध, और उद्वेग आदि न करे और प्रेम और प्रसन्नता-पूर्वक पति के साथ भोग करे।

अन्य—रुद्रजटा, शरपुंखा, दोनो बराबर पीस ले, तोला भर एक रंग के बछड़े वाली गौ के दूध से तीन दिन तक पिये और गणेशमंत्र का जप करे तो अवश्य गर्भ ठहर जाता है।

अन्य—सफेद कंडियारी की जड़ अथवा शरपुंखा की जड़ को जल अथवा दूध से पीस कर पीवे तो अवश्य गर्भ ठहर जाता है।

अन्य—इतवार के रोज पुष्य नक्षत्र हो तो देवदाली की जड़ लाकर १ तोला भर गोदूध से खावे तो गर्भ ठहर जाता है।

अन्य—शिवलिंगी बूटी के सात बीज, मोती ७ दाने, मोरशिखा, ऊंटकटारा, जायफल, सफेद जीरा ४-४ माशे, इन सब को पीस ७ पुड़िया बना ले. ऋतुस्नान के अनंतर प्रतिदिन १ पुडिया गोघृत से चाट कर ऊपर से पाव भर गोदुग्ध पीवे और ७ दिन तक नमक न खावे तो वध्या के भी पुत्र हो।

अन्य—मोरशिखा, असली नागकेसर, शंखाहुली, समान भाग लेकर ३-३ टंक की पुडिया बना ले, ऋतुस्नान के बाद प्रतिदिन १ पुड़िया

गोदुग्ध से खावे तो प्रभु की कृपा से अवश्य गर्भ स्थिर हो जायगा। दूध, चावल पथ्य हैं।

अन्य—चन्दन, कमलफूल, तेजपत्र, नागकेसर, आमले के बीज, रक्त चन्दन, सब तीन तीन माशे, सब को जल से घोट कर तीन तीन माशे की गोली बना ले। ऋतुस्नान के अनन्तर १-१ गोली गोघृत से खा कर ऊपर से दूध पीवे तो इस प्रकार प्रभु की कृपा से अवश्य गर्भ होगा।

अन्य—शिवलिंगी के बीज २१, देवदारु, शुद्ध गंधक, हलदी १-१ टंक, इन सब को गुड में पीस ३ गोली करे। ऋतुस्नान के बाद, एकवर्णा गौ के दूध के साथ नित्य १ गोली खावे तो स्त्री को अवश्य गर्भ ठहर जाता है।

अन्य—नागकेसर असली, शतावर, गोरोचन, असगंध प्रत्येक २०-२० टंक, सब को पीस कर सात पुडिया बनावे, प्रातःकाल १ पुडिया केवल गो के दूध के साथ ७ दिन खावे तो स्त्री गर्भवती होगी। पथ्य दूध चावल है, नमक न खावे, पुत्र पैदा होगा।

अन्य—असली नागकेसर, हाऊबेर दोनो २० टंक लेवे, चूर्ण कर सात पुड़िया बनावे, प्रतिदिन १ पुड़िया एकवर्णा गौ के दुग्ध से खावे तो वंध्या पुत्रवती होवे।

## काकवंध्या का उपाय

विष्णुक्रान्ता ( कोयलबूटी ) को भैंस के दूध में पीस भैंस के मक्खन के साथ ७ दिन खावे तो काकवंध्या को भी पुत्र हो।

अन्य—एतवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तो असगंध की जड़ दो तोले भैंस के दूध में पीस सात दिन तक स्त्री को पिलावे तो स्त्री गर्भवती होवे, और दीर्घायु पुत्र होवे।

## काकवंध्या का उदरशुद्धिकरण

खांड, त्रिवी, चिरायता, २-२ टंक इनको पीस ऋतु आरम्भ होने से तीन दिन तक दूध के साथ दोनो समय खावे, और दूध भात पथ्य दे, काकवंध्या की योनि और गर्भाशय शुद्ध हो जाता है।

## मृतवत्सा का लक्षण

जिसका १-२-३-४ अथवा ५ वर्ष का बच्चा होकर मर जावे उसे मृतवत्सा कहते हैं।

## मृतवत्सा का उपाय

नेत्रबाला, हलदी, चित्रा, दारुहलदी, देवदारु, हरड़, इलायची छोटी, पित्तपापड़ा, मच, मुसव्वर, कचूर, मूंगा की भस्म, अजमोद, पद्माख, कुसुम्मा, रसौत, बकाइन, कड़वी तुंबी के बीजो की गिरी सब समान इनका चूर्ण करले और गर्भ रहने पर प्रतिदिन एक माशा भर जल के साथ ६ मास तक खावे, फिर न खावे तो मृतवत्सा दोष दूर हो जाता है और उसके बच्चे दीर्घायु और चिरजीवी होते हैं।

अन्य—मँहिदी, गुड़, रसौंत, कड़वी तुम्बी के बीजो की गिरी, कुड़ासक, कमलफूल, गधे का लेडना यह सब समान भाग लेकर चूर्ण करले और गधे के मूत्र मे पीस कर बेर समान गोली बना ले। जब स्त्री गर्भवती होवे तो १ गोली नित्य जल के साथ पाँच मास तक खावे तो अठराह का दोष दूर होता है।

अन्य—लौंग, कदंब की जड़, मिर्च, इलायची, पतीस, अजवायन, अजमोद, कौंडतुम्मा, नसादर, तुलसीबीज, मच, संगबसरी की भस्म हलदी, सुहागा भूना हुआ, बिड नमक, सैंधानमक, चित्रा, सोंचलनमक, कनेर की कोपलें, बालछड़, खजूर, भंडिगी, स्वर्णमाक्षिकभस्म, हरड़, हींग इन सब का बारीक चूर्ण कर मनुष्य के मूत्र में पीस कर चने समान गोली बनावे पांच मास तक जब स्त्री गर्भ धारण करले तो नित्य एक गोली जल के साथ खावे, छठे महीने से दवाई बंद करदे। जब बच्चा उत्पन्न हो तो उसे एक महीना भर थोडी २ गोली जल में घिस कर देता जावे तो मृतवत्सा का दोष दूर हो जाता है, बचा चिरजीवी होता है।

## नालपरावर्ति का उपाय

जब स्त्री को दो मास का गर्भ हो तो यह दवाई करे (गर्भ के ६२ वें वा ६३ वे दिन से) नित्य १ माशा भांग के बीज गुड़ के साथ मिला तीन

मास तक खावे, इससे नाल बदल जाती है। और जिस घर मे कन्या ही कन्या हो वहा बहुत सुन्दर पुत्र उत्पन्न होता है।

अन्य—मोरपंख की टिकी ( चन्द्रिका ) १, घोड़े का पर २ रत्ती, दोनो को गुड मे लपेट कर गोली बनावे, पर जब गर्भ ४५ दिन का हो जावे तो कन्या के स्थान सुन्दर पुत्र उत्पन्न होता है।

अन्य—काली बुई की जड ४ टंक लेकर जब गर्भ ७०, ७१, ७२ दिन का हो जावे तो तीन दिन तक दूध के साथ खावे तो उस स्त्री को कन्या नहीं होती किन्तु सुन्दर बालक उत्पन्न होता है।

अन्य—नीम की जड का रस और चावलो का पानी, दोनो मिला कर ऋतुस्नान के अनन्तर पीवे तो पुत्ररत्न उत्पन्न हो।

अन्य—कबूतर की बीठ, समभाग सुहागा पीस लिंग पर लेप करे फिर रात को स्त्री से भोग करे तो पुत्र होवे।

अन्य—कृष्णपक्ष की पञ्चमी को जब चन्द्रमा उदय हो तो उस समय शतावरी की जड उखाड़ रखे। ऋतुस्नान के अनन्तर एकवर्णा गौ के दूध के साथ पीवे तो पुत्री के स्थान पर सुन्दर और दीर्घायु पुत्र उत्पन्न हो।

अन्य—असली नागकेसर, बिजारे के बीज, कुठ, इनको जल मे पीस बेर के समान गोली करे, ऋतुस्नान के अनन्तर रात दिन तक स्त्री एकवर्णा गौ के दूध के साथ सेवन करे तो अत्यन्त सुन्दर पुत्र उत्पन्न हो।

## गर्भस्राव का उपाय

चन्दन श्वेत, मुलतानी मिश्री, सुगंधवाला, यह तीनों ४-४ माशे लेकर नित्य जल के साथ खावे तो गर्भस्राव बंद हो।

अन्य—मिश्री मुलतानी १ तोला, कालीमिर्च ३ माशे, इनको पीस कर शीतल जल के साथ नित्य पीने से गर्भस्राव बंद हो।

अन्य—मौली की २१ तारे लेकर स्त्री के सिर से पाओ तक माप ले, फिर इसमे ७ वार मंत्र पढ के सात गाठ दे, और रविवार को गुग्गुल की धूनी देकर स्त्री की कमर मे बाधे तो वहता हुआ गर्भ बन्द होता।

मन्त्र—"ओं बांधो सखो, बांधो जाई, बांधो मैं सबही बलराई।
बांधो नदी बहतो नीर, बांधो सबको ढका शरीर।
हाड की बींधन मैंन का बाण, बांधा रे रक्तिया बीर॥
ॐ' अमुकी" का गर्भ दे मत जान, गुरुकी शक्ति हमारी भक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ठः॥

नोट —जहां अमुकी लिखा है वहां गर्भिणी का नाम लेना चाहिये।

अन्य—कुमारी कन्या के हाथ का कता हुआ सूत लेकर उसका डोर बनावे, और इतवार के दिन प्रातःकाल एक सौ आठ बार नीचे का मन्त्र पढ़ कर गर्भिणी की कमर मे बाँध दे तो गिरता हुआ गर्भ रुक जावे।

मन्त्र "ॐ रक्ते रक्तवाते हुं फट् स्वाहा"

गर्भशोष ( सजीव छोड़े फलने ) का उपाय

असगंध, मुलहटी, भंगरा, इनको सात दिन तक बकरी के दूध के साथ गर्भिणी पीवे तो सूखा गर्भ हरा होवे।

अन्य—कमल के बीज, पद्माख, सिंघाडे, श्वेतजीरा, यह सब ४४ टंक प्रमाण ले, इनका चूर्ण करले, तीन टंक नित्य प्रातः गोदूध से पीने पर गर्भशोष अर्थात् पेट मे सूख रहा बच्चा हरा हो जाता है।

अन्य—तेजपत्र, तज, चिरारे के बीज बेसन, लौंग, इलायची, जायफल, जीरा, मुलहटी सब समान भाग लेकर बारीक पीसले, फिर सब के समान मुलतानी मिश्री मिला कर नित्य प्रातःकाल दो टंक दवाई गोघृत ५ टंक मे मिला खावे ऊपर गोदूध पीवे तो सूखता हुआ गर्भ हरा हो जावे। यह सिद्ध योग है।

अन्य—सन के बीज १८ ( गिन कर लेवे ) तेल अथवा गोदूध के साथ पीस के पीवे तो सूखता हुआ बालक हरा हो जावे।

निनावां से जिसके बच्चे मर जावें उसका उपाय

वांसा, श्वेतजीरा, मेहदी, कलौंजी, पातालगरुड़ीकंद, कड़वी तुंबी के मगज, रक्तचंदन, सब आठ २ माशे इनका काढ़ा बना चतुर्थांश शेष रहने पर स्त्री को पिलावे ( जब गर्भ सात मास का हो तब यह करना चाहिये ) १० दिन तक, तो गर्भ शोष रोग दूर हो जाता है।

## मूढ़गर्भ व गर्भ में मृतबालक का उपाय

गाजर के बीज ७ टंक, कडवा तेल २० टंक, गाजर के बीजो को पीस कड़वे तेल के साथ तीन दिन तक पीने से गर्भ का करंग रोग मिट जावे, गर्भाशय के अंदर रुका हुआ बच्चा अथवा चिपका मृतगर्भ जिसे 'पात' भी कहते हैं, निकल आता है, इसके अतिरिक्त गर्भ के अंदर जेर तथा पेट का गोला दूर हो जाता है, पेट शुद्ध हो जाता है और अच्छा बालक उत्पन्न होता है।

अन्य —काली मकोय की जड़ को चावलो के पानी मे पीस कर पीने से तीन दिन मे स्त्री का कुरंग रोग मिट जाता है।

अन्य —नसादर, जौखार, पांचों नमक ( सैंधा, सोंचल, विड़, सांभर और सामुद्र ), शुक्तिभस्म, संखियासफेद, इनको जुदा २ पीस ८-८ मासे ले, फिर सब को मिला आकके दूध मे घोट कर तीन पुटें दे, फिर घीकुआर के रस मे तीन पुटे दे और पीस कर रख छोड़े। फिर तीन रत्ती दवाई रोगी को देवे और १ रत्ती नित्य बढाता जावे जब तक दो माशे दवाई हो जावे। इसके खाने से वायगोला, रक्तगुल्म, करंग, फिरंग आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—विसखपरा ४ टंक चूर्ण कर बकरी के मूत्र से तीन दिन तक पीने से करंग रोग तथा छिलका दूर हो।

अन्य—शोरा ८ टंक, खांड ८ टंक दोनो को मिला कर स्त्री सात दिन तक गर्मजल वा सौंफ के काढ़े के साथ खावे तो रक्तगुल्म वा करंग दूर हो।

## योनिशूल का उपाय

इन्द्रायण की जड, कलहारी की जड, पुठकंडा इनको जल मे पीस बत्ती बना योनि मे रखने से योनिशूल दूर होता है।

अन्य—एरण्ड के बीज, नीम के पत्तो के काढ़े मे पीस कर भग के अंदर लेप करे तो योनिशूल दूर होता है।

अन्य—कपास के ताजे पत्ते पीस गोली बना योनि के अंदर रखे, तो योनिशूल दूर हो।

## गर्भशूल का उपाय

अकस्मात् जब गर्भ में पीड़ा आरम्भ हो तो दस मास तक उसका मासानुमासिक अर्थात् महीने महीने का उपचार करना चाहिये—

१—प्रथम मास में यदि गर्भशूल हो तो लालचंदन और कमल का केसर दोनों को पीस दूध से पिलावे तो प्रथम मास का शूल दूर हो।

२—द्वितीय मास में यदि गर्भ मे पीडा हो तो ककड़सिंगी, मुलट्ठी और नील कमल इनको गो के दूध में पीस और उबाल उस दूध को पिलाने से दूसरे मास का गर्भशूल दूर होता है।

३—तृतीय मास के गर्भशूल में कुठ, तगर, श्वेतचंदन, खस, कमल-केसर इनको जल के साथ पीस पिलाता जावे तो गर्भशूल दूर हो।

४—चतुर्थ मास में गर्भशूल हो तो नीलकमल, खस, गोखरू और कसेरू, इनको गोदुग्ध में पीस कर पिलाने से चतुर्थ मास की पीडा दूर हो।

५—पंचम मास में गर्भशूल हो तो काकोली, इटसिट, तगर, नील कमल इनको गोदुग्ध के साथ पीस कर पिलावे और दूध ही पीने को दे तो पंचम मास का शूल दूर होता है।

६—छठे मास के गर्भशूल का उपाय—कैथ का गूदा और खाड को शीतल जल के साथ पीने से छठे मास का गर्भशूल दूर होता है।

७—सप्तम मास के गर्भ शूल का उपाय—नरकचूर, पोहकर-मूल, नीले कमल इनको पीस जल के साथ खाने से अथवा जल अथवा दूध में पीस कर पीने से सातवे मास का गर्भशूल दूर होता है, पीने के लिये दूध ही देवे।

८—आठवें मास के गर्भशूल का उपाय—मुलट्ठी, बहेड़ा, पद-माख, नागरमोथा, कसेरू, नीलकमल, गजपीपल इनको चूर्ण कर गोदुग्ध के साथ खाने से अष्टम मास का शूल दूर होता है।

९—नवम मास के गर्भ शूल का उपाय—कंकोल, इन्द्रायण के बीज, इनका चूर्ण कर शहद से चाटे तो नवम मास की गर्भ पीड़ा दूर होवे।

१०—दशम मास के गर्भ शूल का उपाय—मुनक्का काला, मुनक्का

लाल, नीलकमल इनको गोदुग्ध मे उबाल कर मधु और खांड मिला पीवे तो दशम मास का शूल दूर हो।

### गर्भिणी स्त्री के सर्वशूलहारक उपाय

नीलकमल, आमले, चीरकाकोली, सुखाई हुई मूली, मजीठ इनको बारीक पीस चूर्ण कर गोदुग्ध से खावे तो गर्भिणी का सर्व प्रकार का गर्भशूल दूर हो।

## गर्भिणी के ज्वर का उपाय

चन्दन, लोधपठानी, अनन्तमूल, मुनक्का इनका काढ़ा कर उसमे खाड मिला कर पीवे तो गर्भिणी का ज्वर दूर होता है।

अन्य—चिरायता, लोधपठानी, खरेटी, कघी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, वच, नीम के पत्र सब २॥-२॥ तोले लेकर जल में पीस गोला बनाले, फिर तेल १ सेर और पानी चार सेर लेकर उसमे छोड दे, नीचे आग दे, जब दवाइया पक जावे पानी बिलकुल न रहे तो उतार कर उस दवाई की नसवार ले, और शरीर पर मालिश करे और इन दवाइयो का चूर्ण कर के खाने को भी दे तो गर्भिणी का सब प्रकार का संताप ज्वर दूर हो।

### अर्धनारीनटेश्वर

शुद्धपारा १ टक, कालीमिर्च, १ टंक, शुद्धजमालगोटे क ७ दाने, मघा २०, इन सब को पीस कपड़े मे पोटली बाधे, बकरी के एक सेर दूध मे डोलायन्त्र से पकावे, इस दवाई को बारीक पीस रख छोड़े। एक आख मे आजने से शरीर के दूसरी ओर का ज्वर दूर होता है। अर्थात् यदि दाहिने नेत्र मे दवाई आजे तो बाई ओर का, यदि बाई ओर आजे तो दाहिनी ओर का ज्वर दूर हो। और दोनो ओर आजने से दोनो ओर का ज्वर दूर हो जाता है।

### विषूचिकाशूलहर अंजन

मघ, मिर्च, सोठ, करञ्ज की गिरी, हलदी, दारुहलदी, सब समान भाग पीस बिजौरे के रस की भावना देकर बेर समान गोली बना ले और छाया मे सुखा कर रख ले, पानी के साथ घिस कर आख में आजने से विषूचिका रोग दूर हो तथा ज्वरशूल दूर हो।

### स्त्री का फूल लाने का उपाय

इलायची बडी, समुद्रनमक, जायफल, इनको गोमूत्र मे पीस वत्ती बनावे और योनि मे रखे तो फूल ( रज ) खुल कर आते हैं।

अन्य—बिल्ली की विष्ठा लेकर भग मे तीन वा सात दिन धूनी देवे इस से ऋतु खुल कर आती है।

अन्य—तुम्मे की जड को पानी में पीस वत्ती वना योनि मे रखे तो स्त्री को ऋतु खुल कर आती है।

अन्य—मव, राडा, गुडपुराना, तिल, दन्ती, कीकर की छाल, तुम्मे की जड, जौखार सब को पीस थोहर के दूध के साथ खरल कर वत्ती बनावे इसको भग मे रखने से तीन वा सात वा दस दिन मे सूखा फूल फिर उतर आता है। अर्थात् ऋतु खुल कर आती है पीडा दूर होती है।

अन्य—काले तिल एक पाव, पानी एक सेर इनका एक सेर जल मे काढा करे जब पाव भर पानी शेष रहे तो उतार छान कर नित्य पंद्रह दिन तक पीवे तो ऋतु खूब खुल कर आवे, पीडा दूर हो, स्त्री गर्भधारण करने के योग्य हो जाती है।

अन्य—चूनाकली १ टक, पानी मिला गोली करे नित्य निराहार जल के साथ निगल ले तो फूल खुल कर आवे।

अन्य—नसादर ३ टंक, कुठ ३ टंक, इनका चूर्ण कर दस मात्रा बनावे, दस दिन तक नित्य प्रात.काल घी के साथ चाटे तो फूल खुल कर आते हैं। पीड़ा दूर होती है।

### ऋतु (फूल) नाश करने का उपाय

सिंबल के फूल, केसू के फूल, खैर की छाल, आक की कोपले सब समान भाग लेकर पांच पांच टक की पुडिया वना तेल २॥ तोले में मिला कर ऋतु के समय खावे तो ऋतु जन्म भर नहीं आती।

अन्य—ऋतु के समय केसू के फूल तक्र के साथ पीने से जन्म भर ऋतु नहीं आती।

अन्य—सोनागेरी ( स्वर्ण गैरिक ) १ तोला भर, ऋतु के समय वासी जल के साथ खावे तो फिर फूल नहीं आते।

अन्य—शरपुंखा बूटी की जड़ १ तोला, चावलों के पानी में पीस ऋतुकाल में पीवे तो फूल नष्ट हो जाते हैं।

## गर्भ न ठहरने का उपाय

रत्तियों का चूर्ण ६ माशे, तेल ४ तोले, ऋतु समय तीन दिन तक पीवे तो स्त्री को गर्भ नहीं ठहर सकता।

अन्य—सरसों और निम्बल का फूल इनको पानी में उबाल कर ऋतुकाल में पीने से गर्भ नहीं ठहरता।

अन्य—देवदाली (घगरबेल) १ तोला भर जल में पीस कर पीने से गर्भ गिर जाता है। बदमाश स्त्रियों के लिये श्रेष्ठ है।

अन्य—एरण्ड के पत्र अथवा एरण्ड की नरम लकड़ी आठ अगुल योनि में रखने से तत्काल गर्भ गिर जाता है।

अन्य—निर्गुण्डी के पत्ते, चित्रे की जड़, शहद में पीस गर्म कर १ तोला भर खाने से तत्काल गर्भ गिर जाता है।

अन्य—पलाश के बीज, शहद और घी में पीस योनि में लेप करने से स्त्री बांझ हो जाती है।

अन्य—सैंधानमक और उड़द दोनों को तिलतेल में पीस योनि में वत्ती दे तो स्त्री बांझ हो जाती है।

अन्य—बच्चे का दूध का दांत जो पहले उखड़े उसे चांदी में मढ़ा कर के कमर में बांधने से स्त्री बांझ हो जाती है।

अन्य—पुष्य नक्षत्र में भाग की जड़ उखाड़ कर कमर में बांधने से स्त्री बांझ हो जाती है, अर्थात् गर्भधारण नहीं करती।

अन्य—गुड़हल के फूल कांजी में पीस ऋतुकाल में पीवे तो गर्भधारण नहीं करती।

अन्य—चौलाई के दाने चावलों के पानी के साथ पीस कर ऋतुकाल में पीवे तो स्त्री बांझ हो जाती है और गर्भ धारण नहीं करती।

## अथ प्रदररोगाधिकार

स्त्री की योनि की श्लैष्मिक कला ( झिल्ली ) जब गल जावे तो छिछड़े बन कर निकलती है, और योनि से सफेद पानी वहता है उसे कल-

छूटना या श्वेतप्रदर कहते हैं। और यदि गर्भाशय की रक्तवाहिनियों का मुख खुला रहे और उनसे रक्त बहता रहे तो रक्तप्रदर हो जाता है।

### रक्तप्रदर का उपाय

सुगंधबाला, चंदन, शीरखिश्त इनको चावलों के धोवन के साथ पीस कर पीवे तो रक्तप्रदर दूर होता है।

अन्य—रसौंत, शीरखिश्त, चौलाई की जड, इनको चावलों के पानी में पीस पीने से श्वेत वा रक्तप्रदर दूर होता है।

अन्य—आमले के बीज ( गिरि ) चावलों के पानी में पीस पीने से रक्तप्रदर दूर होता है।

अथवा—बांसा का रस वा काढ़ा मधु मिला कर पीने से रक्तप्रदर दूर होता है।

अन्य—बला की जड़ को जला कर उसकी भस्म मधु के साथ खावे तो रक्तप्रदर दूर होता है।

अन्य—मुलट्ठी ४ पल, खांड १ पल इनको कूट ले और इसमें से १ तोला दवाई चावलों के पानी में पीस कई दिन तक पीने से रक्तप्रदर दूर होता है।

अन्य—चनों का रस घृत दूध मिला कर पीवे। अथवा गुग्गल शुद्ध, शहद और खांड मिला कर दूध से खावे तो रक्तप्रदर दूर होता है।

### श्वेतप्रदर का उपाय

काकजंघा की जड, अथवा कपास की जड़, चावलों के पानी के साथ पीवे तो श्वेतप्रदर दूर होता है।

अन्य—दारुहलदी का काढा मधु मिला कर पीवे।

अथवा—धाय के फूल का काढ़ा मधु मिला के पीवे।

अथवा—आमले का काढ़ा मधु मिला कर पीवे तो श्वेतप्रदर दूर हो।

अन्य—नागकेसर ३ माशे, तक्र के साथ नित्य पीवे तो श्वेतप्रदर दूर हो।

अथवा—लोहभस्म तक्र के साथ देवे तो श्वेतप्रदर दूर हो।

## सर्व प्रदर का उपाय

चूहे की सींगनिया ३ टंक, बकरी के दूध के साथ खावे तो सब प्रकार का प्रदर दूर होता है।

अथवा—पीपल की लाख धोकर बारीक चूर्ण कर ले, जल अथवा बकरी के दूध के साथ खावे तो सब प्रकार का प्रदर दूर हो।

अन्य—आक के फूलों का चूर्ण कर ले, २-३ माशे चूर्ण गरम जल के साथ पीवे तो सब प्रकार का प्रदर सात दिन में दूर हो।

अन्य—आम की गुठली दो टंक, मिश्री दो टंक, दोनों को बारीक पीस चावलों के पानी के साथ खावे तो सब प्रकार का प्रदर दूर होवे।

अन्य—चिरायता, रसौंत, नागरमोथां, शुद्ध भिलावे, विलगिरी, वासापत्र, दारुहलदी, इनका काढ़ा बना उसमें मधु मिला कर प्रातः सायं पीवे तो श्वेत, लाल, पीला, नीला प्रदर तथा प्रमेह रोग दूर होता है।

अन्य—कुरंड की जड, चन्दन, मुलट्ठी सब १ तोला, इनको चावलों के पानी के साथ पीवे तो सब प्रकार के प्रदर दूर हों।

## योनिशूल का उपाय

बावची, देवदारु, दारुहलदी, इनको जल के साथ पीस कर पीवे तो सम्पूर्ण योनिरोग दूर होते हैं।

अन्य—लसन, घर का जाला, वायविडंग, इन्द्रायण, कंडियारी के फल, इनको जल में पीस योनि में लेप करने से कृमिजन्य योनिशूल तथा अन्य योनिरोग दूर होते हैं।

अन्य—कलोंजी, बिडनमक, बांसा की जड़, मद्य, मिर्च, सोंठ, पिप्पलामूल, इनको पानी में पीस कल्क बना कर खावे तो सब प्रकार का योनिशूल दूर होता है।

अन्य—नीम की छाल, एरण्ड की जड, इनका काढ़ा अथवा खस का काढ़ा शहद मिला कर पीने से सब प्रकार का योनिशूल दूर होता है।

लेप—एरण्ड के तेल में मुण्डी की जड़ पीस कर योनि में लेप करने से योनिशूल व नई प्रसूता स्त्री का योनिशूल दूर होता है।

अन्य—ओखार ६ माशे, गर्म जल से पीवे तो योनिशूल दूर हो।

अथवा—शरपुखा की जड़ पीस गर्म जल से पीवे तो योनिशूल दूर हो।

### योनिदुर्गन्धि का उपाय

निंबू की जड़ का छिलका ले उसका काढ़ा करे और उस काढे से योनि धोवे तो योनिदुर्गंधि दूर होती है और अन्य योनिरोग भी दूर होते हैं।

अन्य—गुड, गुग्गुल, घी, श्वेत चन्दन, मिश्री इनको मिला कर योनि में धूनी देवे तो एक दिन में ही योनिदुर्गंधि दूर हो जाती है।

अन्य—देवदारु, धतूरे के पत्ते, नीम के पत्ते, नागकेसर, अर्जुन की छाल, इनका काढ़ा कर योनि धोने से अथवा लेप करने से योनि की दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—नीम के पत्तो का काढा बना योनि धोने से, अथवा नीम के पत्तों को पीस लेप करने से योनिदुर्गंधि दूर होती है।

### स्त्री के शरीर की दुर्गंधि का उपाय

चन्दन, केसर, देवदारु, इन्द्रजौ, कुठ, लौंग, खस इनको पीस मधु से गोली बनावे, और सारे शरीर को धूप देवे, इससे शरीर की दुर्गंधि दूर होती है, सारा संसार वश में हो सकता है।

### दशांग धूप

१ श्वेत चन्दन, २ सुगंधवाला, ३ नागरमोथा, ४ कपूर, ५ केसर, ६ अगर, ७ कस्तूरी, ८ छड़ीला, ९ नख, १० छड़ इनको पीस धूप देने से शरीर की दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—नागरमोथा, श्वेतचन्दन, खस, हरड़, सोठ, लोधपठानी, इनको पीस सारे शरीर में मालिश करने से शरीर की दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—हरड़, बेल की जड़ की छाल, करञ्जवे की गिरि, निंबू, कचूर इनको पीस शरीर पर सूखी मालिश करने से अथवा पानी में मिला मलने से शरीर की दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—काला अगर, चन्दन, खस, नीम के पत्तों का रस, सबको मिला कर शरीर पर मलने से शरीर की सम्पूर्ण दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—नागरमोथां, हरड, पान के पत्ते, इनको पानी मे पीस शरीर पर लेप करने से सम्पूर्ण शरीर की दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—लोध, नीम के पत्ते, नसपाल इनको जल के साथ पीस कर शरीर पर मलने से शरीर की दुर्गंधि दूर होती है।

अन्य—कुलथी को भून कर पीस ले, छाडछड़ीला, चंदन श्वेत, कुठ, वासा के पत्ते, दालचीनी इनको पीस शरीर पर मलने से अथवा धूडने से शरीर की दुर्गंधि तथा पसीना अधिक आना दूर होता है।

अन्य—हलदी, दारुहलदी, सैंधानमक, कुठ, वच, मिर्च, इनको जल के साथ पीस शरीर पर मलने से शरीर की दुर्गंधि दूर होती है।

### योनिजलहरण, संकोचन उपाय

करेले की जड़ पीस कर वत्ती बनावे और योनि मे रखे तो योनि का जल सूख जाता है। खुली योनि संकुचित हो जाती है।

अन्य—वेत की जड का काढा करके नित्य योनि धोवे तो सात दिन में योनि सूख कर संकुचित ( तंग ) हो जाती है। बूढ़ी स्त्री भी जवान सी प्रतीत होती है।

अन्य—पलास के फल, गूलर के फल दोनो को पीस तिलतेल और शहद मिला कर योनि मे रक्खे वा लेप करे तो योनि संकुचित हो जाती है।

अन्य—कुठ, कालीमिर्च, नीलकमल, वच, असगंध, लोधपठानी हल्दी इनको पीस योनि मे वुरकने से योनि तंग हो जाती है।

अन्य—तुम्बी के पत्र वा बीज और लोधपठानी समभाग दोनो को पीस योनि मे लेप करने से योनि तंग हो जाती है।

### भग चौड़ी करने का उपाय

तिलतेल, गरी खोपरा दोनो को मिला कर लेप करे तो योनि चौड़ी और वडी हो जाती है अर्थात् जिन स्त्रियो की भग कम चौड़ी वा तंग

होती है, मैथुन करते समय लिंग अंदर न जावे तो ऐसी स्त्रियों के लिये यह लेप उत्तम है।

### अन्य डामर तंत्र से

सफेद कलिहारी की जड़, शहद में पीस योनि में लेप करे तो योनि बड़ी स्त्री के समान चौडी हो जाती है। इस समय नीचे का मन्त्र पढ़ कर लेप करना चाहिये।

मन्त्र—"ओं ह्रीं विकासय विकासय स्वाहा"

### भगसंकोचन उपाय

गौ की लस्सी लेकर स्त्री नित्य भग को धोवे तो योनि इतनी तंग हो जाती है कि उसमे पतली सींक भी नहीं समा सकती। अर्थात् जिस स्त्री की भग बहुत चौडी हो वह तंग हो जाती है।

अन्य—फटकरी, वड का दूध दोनों को मिला रुई में लपेट कर भग में रखे तो भग तंग हो जाती है, मनुष्य का लिंग भी कठिनता से प्रवेश कर पाता है।

अन्य—तोरी का फूल, फटकरी दोनों को ताजे पानी के साथ योनि में लेप करने से योनि अत्यन्त संकुचित हो जाती है।

अन्य—फटकरी, धावे के फूल, माजूफल इनको वारीक कपड छान कर जल मे गोली वना ले और भग के अंदर गर्भाशय के मुँह मे रखे तो योनि संकुचित हो जाती है, और योनि का पानी सूख जाता है।

### सुखप्रसव का उपाय

कुएं से ताजा जल मंगाकर नीचे लिखे मन्त्र से ७ बार मन्त्रित कर के स्त्री को पिलावे तो रुका हुआ बच्चा तत्काल उत्पन्न हो स्त्री को सुख प्राप्त होता है।

मन्त्र—"ओं मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः।
मुक्तः सर्वभयाद् गर्भ एहि माचिर माचिरम् स्वाहा"॥

अन्य—शालपर्णी की जड़ चावलों के पानी मे घिस कर वस्ति

और योनि मे लेप करने से स्त्री का कष्ट दूर हो जाता है और बच्चा सुखपूर्वक उत्पन्न हो जाता है।

अन्य—बिजौरे की जड़, मुलट्ठी दोनो का चूर्ण कर घी के साथ पीने से बच्चा तत्काल उत्पन्न हो जाता है और स्त्री का कष्ट दूर हो जाता है।

अन्य—पीपल की जड की छाल १ तोला, एक सेर दूध के साथ पीवे तो बच्चा तत्काल उत्पन्न हो जावे, स्त्री कष्ट से मुक्त हो जाती है।

अन्य—पुठकडा की जड को पीस भग के अंदर रखे तो तत्काल बच्चा उत्पन्न हो जाता है, स्त्री सुखी हो जाती है।

अन्य—घास की जड, पित्तपापडा दोनो को जल मे पीस योनि के अंदर लेप करने से बच्चा तत्काल उत्पन्न हो जाता है।

अन्य—तूम्बे के पत्ते, लोधपठानी दोनो सम भाग ले पीस योनि मे लेप करे तो तत्काल बच्चा उत्पन्न हो जाता है।

अन्य—पुरुष के लिंग को गोदूध से धोकर वह दूध स्त्री को पिलावे तो तत्काल बच्चा उत्पन्न हो जाता है।

अन्य—कृष्णपक्ष की अष्टमी, वा चतुर्दशी को सहदेवी की जड लेकर स्त्री की कमर के साथ बाधने से तत्काल बच्चा पैदा हो जाता है।

अन्य—छोटी कडियारी की जड एतवार के दिन उखाड कर गौ के सींग के साथ बाधे फिर उतार कर गूगल की धूनी देकर स्त्री के गले मे बाधे तो बच्चा तत्काल उत्पन्न हो।

अन्य—पाठा की जड पानी मे पीस कर भग मे लेप करे तो तत्काल बच्चा उत्पन्न हो जावे।

### स्त्रीद्रावण के उपाय

इमली और सिधूर दोनो को शहद मे मिला योनि मे लेप करे फिर जवान पुरुष भोग करे तो स्त्री तत्काल खलास होवे।

अन्य—घग्गरवेल, मध दोनों को पीस मधु के साथ योनि में लेप करे फिर पुरुष भोग करे तो स्त्री खलास होवे और पुरुष को अति आनंद प्राप्त हो।

अन्य—कत्था, कबूतर की बीठ, फटकरी इनको पीस पान के रस मे सुपारी के समान गोली करे, इसके खाने से भी स्त्री तत्काल द्रवित हो जाती है।

अन्य—मद, मिर्च, धतूरे के पत्ते, लोधपठानी, कडियारी के बीज इनको मधु मे बारीक पीस लिंग पर लेप करने से भोग करते समय स्त्री तत्काल द्रवित होती है।

अन्य—नागकेसर, सेवाल ( पानी का जाला ) कपूर, मुंडी के फूल इनको बारीक कर मधु मिला लिंग पर लेप करने से स्त्री द्रवित होकर वश हो जाती है।

अन्य—सुहागा, कपूर दोनो को बारीक कर शहद मे मिला इन्द्री पर लेप कर के भोग करने से स्त्री तत्काल द्रवित और वश हो जाती है।

अन्य—बडी कडियारी की जड, कालीमिर्च, मद, गोरोचन सब को बारीक पीस लिंग पर लेप कर मैथुन करने से स्त्री शीघ्र द्रवित हो जाती है पुरुष को अत्यन्त आनन्द आता है।

अन्य—मनशिला, गंधक दोनो को शहद मे पीस लिंग पर लेप करके भोग करे तो स्त्री द्रवित होकर वश मे हो जाती है।

अन्य—कलिहारी को जल मे पीस हाथो पर लेप करे, मैथुन के समय वह स्त्री पर मलता जावे तो अत्यन्त आनन्द आता है और स्त्री द्रवित हो जाती है।

नोट—जो डामर के योग हैं उनको नीचे के मन्त्र से १०८ वार मन्त्रित करके प्रयोग मे लावे।

मन्त्र—"ओ नमो भगवते, ओ डामरेश्वराय स्त्रीणा मदं पातय पातय स्वाहा"

### भर्तावशीकरण मन्त्र

कुमारी कन्या के हाथ के कते हुए सूत की २१ तारें करे और उनको मिला २१ गांठें दे, और गांठ देते समय एक २ गांठ पर एक २ वार मन्त्र पढ़ता जावे, फिर घी और गुग्गल दोनो की धूनी देकर डिबिया मे

बंद कर रखे, और रोज स्नान करने के अनंतर नित्य ऊपर की धूनि दिया करे तो उस स्त्री का पति तत्काल वश हो जावे।

मन्त्र इस प्रकार है—

"ओ नमो मेरा कामन राता माता सिंहर वन्ना सुख देना, मैं पिय वाध्यो आपनेजिऊ, वाछो वाधो होले डोले, मैं पिय वाध्यो मूल न डोले, जानि वाधो जनपति वाधो, एक सासू ननद एक सौकन वाध्यो, जब लग जीवै तब लग वाधों. चाठ्यो मुआ पाछई खेह, पलाट इजहू "अमुकऊ" ओर कंनही जाइतो तूं "अमुक" पकडो ता नाथ गुरु की शक्ति, मोरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ठ"

कुच कठिन करने का उपाय

वच, कुठ, गजपीपल, असगंध, कनेर की जड इनको जोकुट (दरडा) कर रात भर जल मे भिगो रखे और प्रातःकाल खूब बारीक पीस कर और उसमे मक्खन मिला कर मरहम बना कर कुचो ( स्तनों ) पर लेप करे तो ढिलकते हुए स्तन पत्थर के समान कठोर हो जावें।

अन्य—रत्नजोत को पानी के साथ पीस कर चार सेर जल डाल काढा करे और उसमे १ छटाक कायफल बारीक कर मिला दे, और १६ तोले तेल भी मिला दे और मीठी २ आच पर पकावे। जब तेल रह जावे तो उतार छान कर रख छोडे, रुई के फुहे से कुचो पर लगावे तो कुच वेल के समान छोटे और अत्यन्त कठिन हो जाते हैं।

अन्य—कमलगट्टा, कमल की जड और मिश्री इनको पीस मिला छोड़े, नित्य १ तोला दवाई महीना भर लगातार खावे तो कुच अत्यत कठोर हो जाते हैं।

अन्य—कुठ का चूर्ण कर घी और शहद मे मिला कर चटनी बना ले, इसके चाटने से कुच कठिन और गोल हो जाते हैं।

अन्य—देवदारु को घी और शहद के साथ पीस के कुचो पर लेप करे अथवा भैंस के मक्खन में मिला कर कुचो पर लेप करे तो कुच कठिन हो जाते हैं।

तेल--मुंडी की जड १० पल, जल ४० पल मे काढा करे जब २ पल रहे तो आग पर से उतार छान ले और उसमे उतना ही तिलतेल मिला कर पकावे, जब तेल रह जावे और पानी सूख जावे तो उतार ले, उस तेल को नसवार लेने से वा पीने से और कुचो पर मलने से कुच कठिन हो जाते हैं।

अन्य—सारिवा, हलदी, खरैंटी की जड, नमक, लाजा, सब बराबर ले, जल सब से आठ गुना काढा करे, जब चौथा हिस्सा जल रह जावे तो उतार छान ले और उस काढ़े से आधा तिलतेल वा भैंस का घी शेष रह जावे तो उतार ले, उस तेल अथवा घी की नसवार लेने से कुच कठिन हो जाते हैं।

### कुच प्रफुल्ल करने का उपाय

हाथाजोडी बूटी, प्रियङ्गु, हरड़, बहेडा, आमला, मिर्च, सोठ, काले तिल, हलदी, मवा, यह सब ६-६ माशे गोघृत ४ पल, जल १६ पल सब दवाईयो को कूट पानी में पीस गोला बना ले पकावे, जब पानी जल जावे और घी शेष रहे तो उतार छान ले फिर उस घी की नित्य कुचो पर मालिश करने से २१ दिन मे कुच रबड़ के गेंद की तरह फूल जाते हैं। ऋतु समय बराबर चावलो के पानी के साथ नसवार भी लेनी चाहिये। स्तनों को गोल, कठिन और ऊंचे करने वाली इससे अच्छी औषधि कोई नहीं।

अन्य—गेहूँ का आटा, खाड और सोए इनको समभाग लेकर गो के घी में मसल कर कुल्लर सी बना ले ( सब मिला लगभग आध सेर के हो ) इस को १४ दिन वा २१ दिन तक स्तनो पर बांधने से स्तन चमकदार, सुंदर, ऊंचे, गोल और कठिन हो जाते हैं। यह भी सिद्ध योग है।

### स्तन में दूध बढ़ाने का उपाय

दूध अथवा लस्सी १ सेर ले नीचे लिखे मन्त्र से २१ बार मंत्रित करके स्त्री पीवे तो स्तनों में दूध उतर आता है।

मन्त्र—"सथा पला सह दुग्धं कुरु कुरु स्वाहा"

अन्य—सफेद जीरा ४ माशे, १ सेर दूध के साथ नित्य पीवे तो स्तनों में दूध उतर आता है।

अन्य—वासमती के चावल दो तोले, बकरी का दूध एक सेर इनको नीचे लिखे मंत्र से सात वार मंत्रित करके पीवे तो स्तनों में दूध उतर आवे।

मन्त्र—"ॐ आँ क्रों क्लीं *अमुकी स्तनं दुग्धेन पूरय पूरय मुंचय मुंचय स्वाहा'

*नोट—मंत्र पढ़ते समय "अमुकी" के स्थान पर उस स्त्री का नाम पढ़े।

अन्य—काला जीरा ५ माशे लेकर गोदुग्ध से खावे तो स्तनों में बहुत दूध उतर आवे।

### कुचपाक ( स्तनविद्रधि ) का उपाय

छोटी ज्वार को लस्सी में रींध कर कुच पर बांधे इससे स्तन का फोड़ा पक कर फूट जाता है और भर जाता है।

अन्य—काकजवा को जड़ समेत ले जल में पीस लेप करने से स्तनपाक, व्रण आदि दूर होते हैं।

अन्य—नीम के पत्तों को पानी में पीस कुच पर बांधने से कुच-व्रण पक कर फूट निकलता है और व्रण भरने लग जाता है।

### कुचगांठ का उपाय

जडपत्र समेत ब्रह्मदण्डी और काला जीरा दोनों को बराबर लेकर तीन टंक नित्य जल के साथ खावे तो कुच की गांठ दूर हो।

### कुचछिद्र का उपाय

एक छटांक घी को गरम करे उसमें १ तोला सफेद राल बारीक पीस कर मिला दे, जब घी में पिघल कर घी के समान हो जावे तो उतार कर शीत होने पर उसमें जल मिला दे और अंगुल अथवा हाथ की तली से अच्छी तरह मले जब मक्खन समान श्वेत रंग का फूल बन जावे तो जल निकाल ले और मरहम को सभाल कर रख छोड़े, रुई की बत्ती बना कर उसमें दवाई लगावे और स्तन के छिद्र में ( जो स्तन पकने के अनंतर हो

जाता है ) मे दें तो कुछ दिनो मे ही स्तनछिद्र भर जाता है। जले हुए व्रण पर, पुराने जखमो पर यह मरहम अत्युत्तम है।

और यदि इस में थोड़ा नीलाथोथा भी मिला दिया जावे तो यह मरहम गले सडे जखमो के लिये भी अत्युत्तम है।

अन्य—तुम्मे की जड़ को पानी मे पीस गरम कर के बांधे।

अथवा—हलदी और कुआर का गूदा दोनो को गरम करके स्तनो पर बांधे तो स्तन की पीडा दूर हो।

अन्य—नीम के पत्त, चिरायता, देवदारु, पाठा, गिलो, मूर्वा, कौड इनका काढ़ा करके पीने से और इसी के साथ स्तन धोने से कुच की पीड़ा और कष्ट दूर हो।

अन्य—सब प्रकार के स्तनरोग मे जोके लगवाना चाहिये इससे रक्त निकल कर स्तन के रोग दूर हो जाते हैं।

### कछराली का उपाय

कालाजीरा, कालीमिर्च, दोनो को आक के दूध के साथ पीस कर कछराली पर लेप करने से कछराली दूर होती है।

अथवा—कछराली पर बड़ का दूध लगाने से भी पक कर फूट जाती है।

अन्य—एरने उपले की राख नीचे लिखे मन्त्र से मंत्रित करके सात दिन तक लगाने से कछराली दूर होती है।

मन्त्र—"ॐ नमो आदेश गुरु को,
वन मे व्याही वांदरी जिन जाया हनुमन्त।
वध वनेला कोषोलाई, ये तीनों भस्मंत॥ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति,
फुरो मन्त्र ॐ ह्रीं जाः जाः जाः, ठः ठः ठः स्वाहा"

### स्त्री-पुरुष के केशरञ्जन का उपाय

भांगरे का रस, हरड़, वहेड़ा, आमला, गुड, कासीस, लोधपठानी, इनको वारीक करे फिर गन्ने का रस मिला कर एक महीना भर रख छोड़े, इसे वालो पर लगावे, इसके लगाने से वाल काले और घने हो जाते हैं।

अन्य—भागरे का रस, वसमा, हरड, बहेड़ा, आमला, आम की गुठली, लोहचून इनको काजी मे पीस लेप लगाने से बाल काले हो जाते हैं, बूढा भी जवान प्रतीत होता है, इसको धोने के अनंतर सिर मे तेल लगाना चाहिये ।

अन्य—हरड़, वहेड़ा, आमला, लोहचून यह सब बराबर पानी मे पीस ले और इन सब के बराबर तेल मिला ले और तेल के बराबर भागरे का रस मिला कर पकावे, जब तेल बाकी बच जावे तो उतार चिकने वर्तन मे रख एक महीना भर पृथ्वी मे गाढ़ देवे, फिर एक मास के पीछे निकाल कर दाढ़ी मूछ को अच्छी तरह लगावे, प्रातःकाल वालों को त्रिफला के काढ़े से धोवे मुख सिर मे सात दिन तक निरंतर लगावे और प्रातःकाल त्रिफले के काढ़े मे सिर को धो डाले, इस प्रकार वाल जो नये नये निकलते जावे वह भी काले निकलते हैं और बाल भ्रमर के समान काले और दृढ हो जाते हैं ।

अन्य—नीलाथोथा १ माशा, माजूफल भुना हुआ तीन टंक, जंग-हरड़ १ टक इनको कूट वारीक कर कासी के वर्तन मे डाल कासी के वर्तन से ४ पहर तक खूब घोटे और रात को वालो पर लेप करे, फिर प्रातःकाल वालो को आमले के पानी से धो डाले, इस प्रकार वाल विल-कुल स्याह और लम्बे हो जाते हैं ।

### भूरी कल्प

मुलतानी मिट्टी २॥ तोले, बुझा हुआ पत्थर का चूना २॥ तोले, मुरदासंग ८ माशे सब को पीस कांसी के थाल मे जल के साथ एक पहर भर रगड़े और रात को केशों पर लगावे और ऊपर तेजपत्र बांधे, प्रातःकाल आमलो के पानी के साथ सिर धोवे तो केश विलकुल काले स्याह हो जावें ।

### स्त्रीरोगों में पथ्य

जो पीछे रक्तपित्त रोग के अधिकार मे पथ्यापथ्य कहे हैं वही पथ्यापथ्य रक्तप्रदर मे देवे । इसके अतिरिक्त शाली चावल, सट्टी के चावल मूंग, लाजा के सत्तू, दूध, मक्खन, घी, मिश्री, कटहल, केला, आमला,

अंगूर, शीतल जल, चंदन, कपूर, मोतियो की माला, शीतल जल से स्नान, वातकफ को दूर करने वाली अन्य वस्तुएं, तथा तर्पण पदार्थ कस्तूरी तथा अन्य हलके सुपाच्य द्रव्य स्त्रीरोग मे पथ्य हैं।

### स्त्रीरोग में कुपथ्य

स्वेदन, वमन, लडाई झगडा, क्रोध, खारे पदार्थ, विषम भोजन, असात्म्य भोजन, अंधेरे मे फिरना, अत्यंत मैथुन करना, अत्यंत व्यायाम करना, भारी बोझ उठाना, बे-मौका जागना, वलदार सेज पर सोना, मन का क्षोभ, शोक, वेगो का रोकना, उपवास करना, तीक्ष्ण और उष्ण पदार्थों का अधिक सेवन करना, विष्टम्भि भोजन, फस्द खोलना, ऊंचे होकर सोना ये गर्भवती के लिये कुपथ्य हैं।

जो गर्भिणी वातल पदार्थों को खाती है उनका वच्चा कुबडा, अंधा अथवा बौना उत्पन्न होता है।

जो गर्भिणी पित्तकारक आहार अधिक करती है उसका बच्चा गञ्जा क्रोधी होता है,और उस बच्चे के केश जल्दी पक जाते हैं। जो स्त्री कफ-कारक पदार्थों का अधिक सेवन करती है उसका बच्चा पाण्डु रोगी और बादी से भरा हुआ होता है। इस लिये वैद्य को गर्भिणी स्त्री के लिये सोच विचार कर पथ्यापथ्य का निर्णय करना चाहिये।

इति स्त्रीरोगाधिकार

## अथ बालरोगाधिकार

बालक तीन प्रकार के होते हैं, १-केवल दूध पीने वाले, २-दूध और थोड़ा आहार करने वाले, ३-केवल आहार करने वाले अर्थात् यदि उनको दूध न भी मिल सके तो भी उनको कोई कष्ट नहीं होता, प्रथम अवस्था मे नन्हा सा बच्चा केवल दूध ही पी सकता है, सातवें आठवे मास मे बच्चे के दांत निकलने आरम्भ होते हैं, लगभग एक वर्ष का बच्चा कुछ अन्न ( पतले चावल खिचड़ी आदि ) लेने के योग्य भी हो जाता है, और दो वर्ष के बाद बच्चा दूध के विना केवल अन्न पर ही रह सकता है, किन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिये, जहां तक हो सके बच्चे का दूध बंद नहीं करना

चाहिये क्योकि दूध बच्चे के लिये ही नही किन्तु प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है । फिर बच्चे का तो शरीर ही दूध से बनता है ।

## बच्चे के लिये दवाई की मात्रा

एक वर्ष के बच्चे को दवाई उडद के समान देनी चाहिये, दो वर्ष के बच्चे के लिये दो उडद के दाने के समान, ज्यो २ बालक बढता जावे एक एक मास मे दवाई की मात्रा भी बढाता जावे, इस प्रकार जब बालक १६ वर्ष का हो जावे तो दवाई की मात्रा १ टंक तक दी जा सकती है ।

नोट—इस बात का ध्यान रहे कि बच्चे अत्यन्त कोमल होते है । इस लिये इनको कोमल और सौम्य दवाइया ही देनी चाहिये कोई तीव्र दवाई नही देनी चाहिये । एक टंक मात्रा फिर नौजवान की है, यह मात्रा चूर्ण आदि शार्ङ्गधर के अनुसार कही हैं ।

## बालरोग का निदान

बच्चा जिस प्रकार का माता का दूध पीवे उसी प्रकार के उसमे गुण दोष होते हैं । अर्थात् यदि माता का दूध वातादि दोषो से विकृत होगा तो को भी वात पित्त कफ के रोग हो जावेंगे, और यदि माता का दूध शुद्ध होगा तो बच्चा भी स्वस्थ रहेगा ।

यदि माता के दूध मे वायु का कोप होगा तो बच्चा कमजोर दुबला सूखा होगा और उसका मूत्र रुक जावेगा ।

पित्त दोष से दूषित दूध पीने से पसीना अधिक आता है, अतिसार, कामला, तृष्णा, ज्वर आदि रोग हो जाते हैं ।

कफ दोष से दूषित दूध पीने से बच्चे को वमन, अजीर्ण, अपच, खासी, निद्रा, आदि रोग हो जाते हैं । इस लिये माता के दूध को शुद्ध करने का उपाय करना चाहिये । इनके अतिरिक्त जो २ रोग मनुष्यों को होते हैं वे बच्चो को भी हो सकते हैं, इस लिये उन रोगो का उपाय बडे बडे मनुष्यो की तरह करना चाहिये, किन्तु मात्रा बच्चो की बहुत थोड़ी होती है ।

## बच्चे के ज्वर का उपाय

सांप की केंचुली, मनुष्य के केश, गुग्गल, श्वेत सरसो, छाडछलीरा, इनको कूट कर घी मिला धूप बनावे, इस धूप को मंत्रित करके बच्चे को धूनी देवे और मन्त्र से झाड़ा भी करे तो सात दिन मे ज्वर दूर हो।

मन्त्रः—"ॐ नमो भगवते रुद्राय सत्यं सत्यं वन स्वाहा"

अन्य—तबाशीर, छोटी इलायची, वासमती की खील, जटामांसी, मुलट्ठी, मिश्री इनको समभाग ले चूर्ण करे मधु मिला कर चाटने से बच्चे का ज्वर दूर हो जाता है।

अन्य—चिरायता, जटामासी, मुलट्ठी, वासमती की खील इनको मधु साथ चटाने से बच्चे का ज्वर तत्काल दूर हो जाता है।

अन्य—काकडासिंगी, अतीस, मघ इनको चूर्ण कर शहद से चटावे तो बच्चो का ज्वर, खांसी, वमन आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—पतीस का चूर्ण मधु से चटावे तो बच्चे के ज्वर, खासी, वमन दूर हो।

अन्य—वालछड, खील, मघा, ककडसिगी, रसौत इनको पीस शहद से चटावे तो बच्चे का श्वास, कास, ज्वर, वमन आदि रोग दूर हो।

## अतिसार का उपाय

मघ, रसौत, आम की गुठली इनको वारीक कर शहद से चटावे तो बच्चे का अजीर्ण, अतिसार दूर हो।

अन्य—लाजा, सैंधानमक आम की गुठली इनका काढ़ा वना मधु डाल बच्चे को पिलाने से अतिसार रोग दूर होता है।

## बच्चे की वमन का उपाय

सैंधानमक, लाजा, इनको पीस बिजौरे के रस मे मिला बच्चे को देने से बच्चे का वमन दूर होता है।

अन्य—वेरी के पत्ते, चंगेरी के पत्र, मकोय, कैथ इनको पीस पेट पर लेप करने से बच्चे का अतिसार रोग दूर होता है।

### वातगुल्म का उपाय

सैंधानमक, सोंठ, हींग घी मे भुनी हुई, इलायची, भडिंगी, इनको पीस घी से चटावे तो वायु का गोला वा विबन्ध दूर हो।

अन्य—गोखरु, सैंधानमक, देवदारु, वच, ककड़सिंगी, नागरमोथा, वायविड़ंग इनको पीस घी से चाटे तो वायु का गोला दूर हो।

### बालक के कंठे का उपाय

वच, कुठ, हरड़ इनको पीस शहद से चटाने से बच्चे का तालु-कटक दूर होता है।

### बच्चों के दुख नेत्रों का उपाय

मनसिल, शख, रसौत इनको पीस शहद के साथ आंखों मे आंजने से दुखती हुई आखे ठीक हो जाती हैं।

अन्य—कसेरु नागरमोथा, देवदारु, इनको बकरी के दूध के साथ आंख में लेप करने से आखो की पीड़ा, शोथ और लाली दूर होती है।

### बच्चों के अतिसारादि का उपाय

आम की गुठली, सैंधानमक मिला मधु से चटावे तो अतिसार दूर होता है।

अथवा—बिजौरे का रस, मुलट्ठी, मिश्री इनको मिला चटाने से भी खासी और अतिसार दूर होता है।

अन्य—मव, मुलट्ठी, मिश्री इनका चूर्ण कर बिजौरे के रस में मधु मिला चाटने से बच्चे का वमन, हिचकी, खांसी आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—जामुन की गुठली, तिन्दुक के फूल, फल घी और शहद मिला चाटने से बच्चों की हिचकी दूर होती है।

अन्य—कोड़ को पीस शहद से चटावे तो बच्चों की हिचकी, कै तथा ज्वर दूर हों।

अन्य—गेरी को घी से भून कर पीस ले और शहद से मिला कर बच्चे को थोड़ा थोड़ा चाटने के लिये दे तो बढ़ी हुई हिचकी भी दूर होती है।

### बच्चों के विसर्प का उपाय

पटोलपत्र, हरड, बहेडा, आमला, नीम के पत्र, इनका काढ़ा बना कर पिलाने से बच्चे का विसर्प रोग दूर होता है।

अथवा—हलदी, दारुहलदी, और त्रिफला इनका काढा कर पिलाने से बच्चो का विसर्प रोग और ज्वर दूर होता हे। इन दोनो योगो को पानी मे पीस कर भी पिला सकते हैं।

अन्य—नीलकमल, अतीस, लालकमल, रक्तचन्दन, सारिवा, मुलट्ठी, पुंडरिया घास, मजीठ इनका चूर्ण शहद और घी से अथवा इनको जल से पीस कर बच्चे के शरीर पर लेप करे तो नाक, मुख से रक्त निकलना, अथवा विसर्प रोग, जहरवाद, विस्फोट आदि रोग दूर हो। यह बहुत उत्तम योग है।

अन्य—बड, गूलर, पिलखन, पीपल, वेत इनकी छाल, मजीठ, चंदन, जामुन, मुलट्ठी, पद्माख, खस इन सब को जल मे पीस कर बच्चे को लेप करे तो विसर्प, दाह, ज्वर, विस्फोट, फोड़े, व्रण दूर होते हैं।

### बच्चों के थिम का उपाय

घर का जाला, हलदी, कुठ, इन्द्र जौ, राल, खस, चंदन, कमल सब समान भाग लेकर जल मे पीस कर लेप करने से थिम, पामा, विचर्चिका खुजली आदि रोग दूर होते हैं।

अन्य—तिल और चावल स्त्री के दूध मे पीस कर बच्चे के शरीर पर मले तो बच्चे का थिम, विचर्चिका, खुजली आदि रोग दूर होते है।

### बच्चे के अफारे और शूल का उपाय

सैंधानमक, सोंठ, भंडिगी, इलायची, घी में भुनी हुई हींग सब को समभाग ले चूर्ण करे, एक चुटकी भर दवाई घी के साथ मिला कर चटावे तो वायु का शूल और अफारा दूर होता है।

अन्य—मघ, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा इनका चूर्ण करे और बच्चे को शहद के साथ चटावे तो शूल, अफारा दूर हो।

### बच्चे का पेशाब रुकने का उपाय

मघ, मिर्च, खांड, इलायची, सैंधानमक इनका चूर्ण कर मधु के साथ

चटावे तो रुका हुआ मूत्र उतरता है। यह औषध कम से कम सात दिन तक अवश्य देनी चाहिये।

### बच्चे के नेत्र दुखने का उपाय

मा का दूध, कड़वा तेल और कांजी इनको मिला कर दीपक की लौ पर गरम कर नेत्रो पर लेप करने से दुखते हुए नेत्र ठीक हो जाते हैं।

### कुकूणक का उपाय

हलदी, दारूहलदी, कौड़, मुलट्ठी, नीम के पत्र इनको जल के साथ तावे के वर्तन से रगड कर नेत्रो पर लेप करे तो बच्चे का कुकूणक रोग दूर होता है।

कुकूणक बच्चों की आंखों का रोग है, इसमे नेत्रो में कडक पड़ती है, बच्चा चाहता हुआ भी आख खोल नही सकता, खुजली होती है।

अन्य—हरड, वहेडा, आमला, लोधपठानी, छोटी कटेरी, वडी कटेरी, सोंठ, इटसिट इनको जल के साथ पीस कर कोसा २ नेत्रों पर लेप करे तो कुकूणक रोग ठीक हो जाता है।

अन्य—मैनसिल, मघा, शख, रसौत इनको वारीक कर वकरी के दूध अथवा जल के साथ खरल कर गोलिया व वत्तिया वना ले, इसको थूक में घिस कर नेत्र में आजने से कुकूणक दूर होता है।

### बच्चों के मुखपाक का उपाय

सरसो और केतकी के फूल, आम की गुठली, गेरी, रसौंत, इनको वारीक कर शहद मिला मुंह मे लगाने से वच्चे का मुखपाक दूर होता है।

### गुदपाक का उपाय

पीपल की छाल और पत्ते वारीक कर शहद मे घोट कर गुदा पर लेप करने से गुद का पाका दूर होता है।

अन्य—जायफल, हरड, दारुहलदी, मुलठ्ठी इनको वारीक कर शहद के साथ पीस पानी मिला गुदा धोने से गुदपाक दूर होता है।

अन्य—पानी में रसौंत घिस कर गुदा पर लगावे और थोडी वच्चे को पिला भी देवे तो गुदपाक दूर होता है।

अथवा—शंखभस्म और मुलट्ठी चूर्ण शहद में चटावे तो भी बच्चे का गुदपाक दूर होता है।

### बालशोथ का उपाय

कालीमिर्च पीस कर गौ के मक्खन में मिला चटाने से बच्चों का सोजा जहरबाद दूर होता है।

अन्य—नागरमोथा, पेठे के बीज, देवदारु, इन्द्रजौ इनको जल के साथ पीस गरम करके लेप करने से बच्चों का शोथ दूर होता है।

### चोर दांत का उपाय

जिस बालक के उत्पन्न होते ही दांत होते हैं, अर्थात् जो बालक गर्भ से दांतों वाला उत्पन्न होता है, वह बालक मनुष्य नहीं किन्तु राक्षस होता है, ऐसे बालक के माता पिता को, अडोस-पडोस को बल्कि नगर को भी भय होता है।

### जिस २ मास में बच्चे के दांत निकलने आरम्भ हों उनका फल

प्रथम मास में दांत दिखाई देवे तो बच्चा माता को खा लेता है। दूसरे, तीसरे में पिता को, चौथे महीने दांत निकाले तो भ्राता को, पांचवें मास में दांत निकाले तो मामा को। जिस बच्चे का ऊपर का दांत प्रथम निकले वह भी मामा के लिये हानिकार है। छठे महीने में दांत निकाले तो माता पिता के धन का नाश करे और नवें महीने में दांत निकाले वह नाशकारक होता है। जो दांतसमेत उत्पन्न हो वह दैत्य होता है, सब का नाश कर देता है। इस लिये पैदा होते हुए बच्चे के दांत उखाड देने चाहिये, या जब निकले उसी समय निकाल दे।

### पूजाविधि

बच्चे को नाव ( नौका ) पर ले जाकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठावे और उसके सामने दीपक जला रखे और बच्चे के आगे दही और खील रखे, अक्षत, पुष्प, तिलक लगावे, इस प्रकार पूजा करके बच्चे को घर ले आवे और बच्चे को प्यार कर तीन चुम्बन लेवे, इस प्रकार तीन दिन तक रोज पूजा करे और पूजा के बाद बच्चे को स्नान करा लिया

करे, तब घर मे लावे। इस प्रकार करने से बच्चे को सुख प्राप्त होता है। इसका ग्रह आदि का कोई भय नहीं रहता, बच्चा दीर्घायु होता है।

### त्रिखल बालक

प्रथम तीन लड़कियां उत्पन्न हो और फिर जो लड़का उत्पन्न हो तो उसे त्रिखल वा तेलड कहते हैं, तीन लड़को पर जो लडकी पैदा हो उसे भी त्रिखल वा तेलड कहते हैं, यह बालक भी माता पिता वा धन का नाश करने वाले होते हैं, प्रायः ऐसी लडकी माता को खाती है, और लड़का पिता को खाता है, इस लिये इनकी भी पूजा करनी चाहिये, नहीं तो बालक को अत्यन्त कष्ट होता है अथवा मर भी सकता है।

### त्रिखल का उपाय

तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु ( सोना, चाँदी, ताँबा ) यह किसी सुपात्र ब्राह्मण को देवे और नवग्रह की पूजा करे, मृत्युञ्जय, गायत्री आदि का जाप करावे तो त्रिखल का दोप दूर हो।

### बालक को पुष्ट करने का उपाय

ब्रह्मी, कुठ, जवाहा, सैधानमक, सिरस की छाल, मघ, काकोली इनका कल्क बनाकर घी मे पकावे, इसमे दूध भी डाल देवे, जब घी मात्र रह जावे तो उतार छान कर रख छोड़े, नित्य तीन माशा घी दूध में डाल कर बच्चे को पिलाया करे तो कमजोर बचा हृष्ट पुष्ट हो जाता है। बच्चों की भूतप्रेत बाधा, सूखा, मसान तथा अन्य बचो के रोग शांत हो जाते हैं, इसे ब्राह्मीघृत कहते हैं।

अन्य—असगंध का काढा करे चौथा भाग जल रहे तो उतार लेवे फिर उससे दसगुणा दूध मिला कर और सब के समान घी मिलाकर पकावे जब घी रह जावे तब उतार छान कर रख लेवे इस घी के चाटने से बच्चा हृष्ट, पुष्ट, बलवान् और रूपगुणयुक्त होता है, इसे अश्वगंधाघृत कहते हैं।

### बच्चों की संग्रहणी का उपाय

घी एक सेर, बकरी का दूध एक सेर, चांगेरी का रस ४ सेर, धावे

के फूल, कमल, मजीठ सैंधानमक, कैथ, मघ, मिर्च, सोठ, कुठ, बिलगिरी यह सब मिला कर एक पाव ( २० तोले ) हो, इनको जल में पीस गोली बना बीच में छोड देवे और धीरे धीरे पकावे, जब घी ही बाकी रहे तो उतार छान कर संभाल रखे। इस घी के विधिपूर्वक सेवन कराने से बच्चे के पुराने दस्त और समग्रहणी रोग दूर होता है, इसे चागेरीघृत कहते हैं।

### पाठादि घृत

पाठा, अतीस कुठ, देवदारु, चीड, पीपल छोटी, गजपीपल तेजबल, चित्रा, मजीठ, सोठ, राल के फल, शतावर, हलदी, दारुहलदी, रायसन, अजमोद बावड्गि, कौड, वच, खब्बीघास, बिजौरे की जड, अनार की छाल, सब मिला कर एक पाव, घी एक सेर, दूध ४ सेर, इन दवाइयों को पानी में पीस गोला बनावे और सब आग पर चढा कर पकाये, जब घी मात्र बाकी रहे तो छान ले, इस घी को ३ माशा प्रमाण मे बच्चे को देने से बच्चे के अतिसार, समग्रहणी, पुराना ज्वर, खासी, शोष रोग शरीर के फोड़े तथा अन्य सारे रोग शान्त होते हैं।

### बालक की बुद्धि बढ़ाने का उपाय

देवदारु, अतीस, वच और मालकगुनी इनको बारीक पीस कर घी, गोमूत्र और कडियारी रस मे मिलाकर चटाने से बच्चे की बुद्धि तीव्र हो जाती है।

अन्य—ब्रह्मी, मुंडी, सोठ, वच, मघ इनका चूर्ण कर शहद से चटावे तो बच्चे की बुद्धि तीव्र होती है, और वाणी साफ हो जाती है।

अथवा—पुठकंडा और वच दोनो को मधु के साथ चटावे तो बुद्धि तीव्र होती है।

अन्य—पुठकंडा, वच, सोठ, वा विडग, सौंफ, शतावरी, गिलोय, हरडे सब समान भाग ले चूर्ण करे और घी के साथ चटावे तो बच्चा बुद्धिमान् और तेजस्वी व वाक्चतुर होता है।

अन्य—असगंध, अजवायन, पाठा, मघ, मिर्च, सोंठ, कुठ, सैंधानमक, पलाशपापड़ा, सौफ, वच इनको चूर्ण करके शक्ति के अनुसार घी और शहद के साथ चटावे और भोजन दूध वा खीर का करे तो बुद्धि

अत्यन्त तीक्ष्ण हो जाती है। एक २ हजार श्लोक कण्ठस्थ कर लेता है।

अन्य—बला, वच, दोनो का चूर्ण करले उसमें मालकगुनी का तेल मिला ले, और थोड़ा २ खावे, मीठे पदार्थ पथ्य खावे तो वच्चे की बुद्धि अत्यन्त तीव्र हो जाती है। और दीर्घायु होता है। इनके खाने से उलटि आती है किन्तु थोड़े दिन के अनन्तर आदत वन जाती है और उलटिया बद हो जाती हैं।

अन्य—चांद व सूर्यग्रहण के दिन वच को उखाड लावे और उसे सुखा कर चूर्ण कर घी के साथ चटावे तो वालक सात दिन मे १४ दिन की विद्या अभ्यास कर सकता है।

ऊपर जितने योग बुद्धि विद्या वढाने के वताए हैं, इनको सेवन करने से पूर्व नीचे लिखे १० हजार मन्त्र जाप करके खाना चाहिए।

अन्य—मन्त्र—"ॐअः ह्य श्रीवागीश्वराय नम."

वालक के सोते समय दांत कटकिटाने का उपाय

नीचे लिखे मंत्र से २१ वार सुपारी को मंत्रित करके वच्चे के गले मे बांध छोड़े तो वालक का दात किटकिटाना दूर होता है।

यथा—मन्त्र—'ॐ हर हर तिमिर रक्त स्वाहा"

अन्य—एतवार के दिन कुत्ते की दाढ लेकर गुग्गुल की धूनी देकर वच्चे के गले मे वाधे तो दात किटकिटाना दूर होता है।

वालक की पसली (डव्वारोग) का उपाय

अजवायन और गीदड की विष्टा दोनो को पीस वच्चे को खिलावे।

अथवा—चोका, लौंग और रत्तिया इनको घी थोड़ी मात्रा मे वच्चे को खिलावे तो डव्वा रोग दूर होता है।

अन्य—केसर, वोलगूंद २-२ रत्तिया, एलुआ ४ रत्तिया इनको गोमूत्र मे पीस ७ गोलियां वना ले, फिर मां के दूध या जल में पीस कर वच्चे को पिलावे तो पसली की पीडा और डव्वा रोग दूर होता है।

वालक के वुरलावी (पाके) का उपाय

गेरी, हलदी, कौड़, नीलकंठी, नीम के पत्र, नीम की छाल, काली-

जीरी रक्तचन्दन, कुठ, मुलतानी मिट्टी, आमले, इन सब को नीम के पानी में घोट कर बच्चे के पाके पर लेप करे तो बच्चे की बुरतावो, विसर्प और पाका दूर हो।

वालक के परछामा का उपाय

एतवार के दिन दोपहर के समय काले घोडे पर बच्चे को स्नान करावे। सात बार करने से वालक का परछामा दूर होता है।

वालक रोग पर पथ्य

जो वडे आदमियो के लिये पथ्य हैं वह बच्चे को भी पथ्य हैं। बच्चे को थोड़ी मात्रा में देनी चाहिये। यदि बच्चा दूध पीता हो तो उसकी माता को भी पथ्य देवे, कुपथ्य से बचावे।

माता का दूध शुद्ध करने का उपाय

मुलट्ठी, सारिवा, शतावरी, पटोलपत्र, नीम, रक्तचन्दन, गिलोय, इनका काढ़ा बना कर पिलावे। यदि वायु का विकार हो तो केवल दशमूल का काढ़ा बच्चे को माता को पिलावे इससे दूध शुद्ध हो जाता है।

इति सौदामिनी-भाषाभाष्ये पुरुष, स्त्री, वालक रोगाधिकारो नाम एकादशोऽध्यायः समाप्तः

---

# अथ बारहवां अध्याय

## मिश्रित अध्याय वर्णन

अलख पुरुष परमात्मा, सरस्वती, गणेश, गुरु महाराज तथा सब महात्माओं के चरण-कमलो में नमस्कार करके बारहवे मिश्रित अध्याय का वर्णन करते हैं।

स्थावर जगम विष का उपाय

जियापोता की गिरि को घिस कर नसवार लेने से, नेत्रों मे अंजन करने से, लेप करने से और खाने से सम्पूर्ण शरीर का विष दूर होता है।

अन्य—शरपुंखा बूटी का पञ्चांग नरमूत्र में पीस कर पिलावे तो सब प्रकार का विष दूर होता है।

अथवा—घगरवेल का पञ्चाग नरमूत्र मे घोटकर पिलाने से सब प्रकार का विष दूर होता है ।

अन्य—साबुन को नरमूत्र मे घोल कर पिलावे ।

अन्य—सुहागा फूल मनुष्य के मूत्र मे घोल कर पिलावे ।

अन्य—नीलाथोथा मनुष्य के मूत्र मे घोल कर पिलावे ।

अन्य—वच आदमी के मूत्र मे घोल कर पिलावे ।

अन्य—घगरवेल का फल नरमूत्र के साथ पीस कर पिलावे ।

अन्य—हलदी को मनुष्य के मूत्र मे घोट कर पिलावे ।

अन्य—सुहागा और घगरवेल का फल जल मे घोट कर पिलावे तो सब प्रकार का विष दूर होता है ।

अन्य—घघरवेल का फल मघ, मिर्च, सोंठ इनको पीस नसवार लेवे तो विष दूर होता है ।

अन्य—सफेद फूल वाली कोयल की जड व पत्ते घोट कर पिलावे तो कालग्रस्त भी विषरोगी वच जावे ।

इन ऊपर की दवाइयों को पीस ढोल, नक्कारा, दमामा, बंसरी, जोडी, मृदंग आदि बाजो को लेकर बजाने से भी सुनने वालो का विष दूर होता है, और वायु मे भी फैला हुआ विष दूर होता है । परन्तु इन दवाइयो के प्रयोग से प्रथम नीचे लिखे मंत्र से २१ बार मन्त्रित करके प्रयोग करना चाहिये, क्योकि मन्त्रसिद्धि के बिना इनका कुछ फल नही होता, अतः मन्त्रसाधना अवश्य करनी चाहिये ।

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते ॐ डामरेश्वर कविव्रत अमृतजराह ठा.ठाः ।"

## अथ सर्व विष का उपाय

### कालवज्राशनि रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक (दोनो की कज्जली करे), भुना हुआ सुहागा, हलदी, नीलाथोथा, इनको समभाग लेकर घगरवेल के रस के साथ घोटे और रोगी की अवस्थानुसार १ माशे से १ तोला तक देवे तो सब प्रकार

के विष दूर होते हैं, यदि नरमूत्र के साथ खावे तो सर्प का डसा हुआ भी अच्छा हो जाता है। इस रस को कालवज्राशनि रस कहते हैं।

अन्य—श्वेतफूल वाली कोयल की जड और घगरवेल का फल पीस नसवार लेने से सब प्रकार का विष दूर होता है।

अन्य—सुहागा और आक की जड को पानी मे पीस कर लेप करे और नसवार देवे तथा पिलावे तो कालग्रस्त भी विषरोगी स्वस्थ होता है।

अन्य—सुहागा और मुसली को जल मे पीस कर पिलावे।

अथवा—सैंधानमक मनुष्य के मूत्र मे घोल कर पिलावे।

अन्य—कडवी तुंबी की जड, गोमूत्र मे पीस गोली बना कर छाया मे सुखावे और रोगी को नरमूत्र वा गोमूत्र से अथवा पुराने घी से घोल कर पिलावे तो सब प्रकार के विष दूर होते हैं।

अन्य—हलदी का काढ़ा गोदुग्ध मिला कर पिलावे।

अथवा—कुठ और हलदी का काढा बना कर पिलावे।

अथवा—कुठ, हलदी दोनों, घी और शहद मे मिला चाटे तो सब प्रकार के विष दूर होते हैं।

अन्य—कडवी तुंबी का काढा करके पिलावे तो विष दूर होता है।

नोट—ऊपर जितने योग कहे हैं उनको भी मन्त्रित कर लेना चाहिये।

यथा मन्त्र—"शतावरी का लिय संजवे स्वाहा"

अन्य—जियापोता की गिरि को दूध मे पीस लेप करे और नेत्र मे अंजन करे तो सर्व विष दूर हों।

### सांप भगाने का उपाय

पातालगरुड़ी ( छिलहिंटा ) की जड निकाल कर छत पर लटका छोड़े तो साप उस घर मे नहीं आता।

अन्य—नीचे लिखे मंत्र से दूध को मंत्रित करके छिडकावे तो सांप तत्काल भाग जावे।

यथा मंत्र—"उशनः सर्प्यः कुलाय स्वाहा"।

## बिच्छू के विष की औषधि

गधे के सिर वा पूंछ के बालो की धूनी देने से बिच्छू का ज़हर दूर होता है।

अन्य—मोर, कबूतर, मुर्गे इनकी बीठ, आक की जड इन चारो को पीस कर धूनी देने से बिच्छू का विष दूर होता है।

अन्य—हलदी को पीस धूनी देने से बिच्छू का ज़हर दूर होता है।

अन्य—घोड़े के बालो की धूनी देनी चाहिये।

अन्य—मोर, कुकड़ के पंख, सैंधानमक, सरसों का तेल इनको मिला कर धूनी देने से बिच्छू का विष दूर होता है।

अथवा—मोरपंख और घी इनकी धूनी देवे।

अन्य—चावलो के जल के साथ बास के बीज पीस कर लेप करने से बिच्छू का विष दूर होता है।

अन्य—बांस के बीजो को कपास के पत्तों से पीस लेप करने से बिच्छू का का विष दूर होता है।

अन्य—मोरपख, घृत, हींग इनको पीस कर लेप करे तो बिच्छू का विष दूर होता है।

अन्य—सोंठ को जल से पीस नसवार देवे तो बिच्छू का विष दूर हो।

अन्य—मोर के पख, ध्रेक की डंडी, वा झाड की सींक से नीचे लिखे मंत्र का झाड़ा करे तो बिच्छू का विष दूर होता है।

मन्त्र—"ओ विषकंटा उतर उतर स्वाहा"

## कनखजूरा और उसके विष का उपाय

दीपक का तेल डंक पर लगावे तो कनखजूरे का विष दूर हो।

जहां कनखजूरा चिपक जावे वहां उस पर गरम गरम पानी डाले, अथवा लोह का चिमटा खूब गरम करके उस पर लगावे तो कनखजूरा तत्काल उतर जाता है।

अन्य—चंगेरी और सैंधानमक दोनों डंक पर लगावे तो कनखजूरे का विष दूर हो।

### वानर के विष का उपाय

आक के फूल, कनेर के फूल, कलिहारी का कंद, कालीमिर्च, पाठा इनको कांजी के साथ पीस कर लेप करने से वानर का विष दूर होता है।

अन्य—कौंच की जड़ चावलों के पानी में पीस लेप करने वानर का विष दूर होता है।

### चूहे के विष का उपाय

मनसिल, कुठ, हरताल इनको निर्गुण्डी के रस में पीस कर लेप करे तो चूहे का विष दूर होता है। इसकी गोली बना कर खाने को दे तो चूहे का विष दूर हो जाता है।

अन्य—इमली का फल और घर का धुआं दोनों १-१ माशा, घी २ तोले सब को मिला कर प्रतिदिन सात दिन तक चाटे तो चूहे का विष दूर होता है।

अन्य—घर का धुआ चावलो के पानी के साथ पीस कर काटे पर लगावे।

अथवा—दूध को काढ़कर चूहे के काटे पर लेप करे तो विष दूर हो।

अन्य—पुठकंडे की जड़ १ तोला, मधु के साथ पीस नित्य चाटे तो चूहे का विष दूर हो।

अन्य—कैथ, शहद दोनों को गोबर के रस में मिला पीने से चूहे का विष हो।

अन्य—कैथ का रस मधु और शर्करा मिला कर पिलाने से चूहे का विष दूर हो।

अन्य—वकाइन ( ध्रेक ) के पत्ते काली मिर्च दोनों को घोट कर पिलाने और जखम पर लेप करने से चूहे का विष दूर होता है। यह सिद्ध योग है।

### पागल कुत्ते के काटे का उपाय

कुआरपठ्ठे को बीच से चीर नमक बुरक कर गरम करके कुत्ते के व्रण पर बांधे तो सात दिन में कुत्ते का विष दूर होता है।

अन्य—शुद्ध जमालगोटा, तुम्मे की गिरि, कालीमिर्च, सुहागा, शुद्ध

शिगरफ, सब बराबर २ ले पीस कर गुड मिला गोली करे और गर्म पानी के साथ खावे तो विरेचन होकर कुत्ते का विष दूर हो जाता है।

अन्य—शुद्ध जमालगोटा, इंटसिट, पटोलपत्र सब एक एक टंक, सब को पीस दुगुना गुड मिला कर बेर के बराबर गोली करे, प्रातःकाल गरम जल से देवे तो कुत्ते का विष दूर हो। इस दवाई को कम से कम तीन दिन तक करे, इससे दस्त आवेंगे और जहर दूर होगा।

अन्य—जिस दिन कुत्ते ने काटा हो पहले दिन आधा कुचला, दूसरे दिन पौना और तीसरे दिन साबित कुचला खावे तो कुत्ते का विष दूर हो।

अथवा—पुठकंडे की जड तोला भर घी और शहद के साथ तीन वा सात दिन खावे तो कुत्ते का विष दूर हो।

अन्य—आक का दूध गुड और तेल तीनो को मिला कर काटे स्थान पर लेप करे।

अथवा—कुक्कड़ की बीठ का कटे पर लेप करे तो भी कुत्ते का विष दूर हो।

### सर्वजीव-विष का उपाय

दंशस्थान ( कटे हुए स्थान ) को नश्तर चाकू आदि से काट कर तत्काल लहू निकाल दे, और लोहे की सलाई गर्म कर उस स्थान को जला ( दाग़ ) दे, फिर उस पर विषखपरा पीस कर लेप कर दे तो विष सारे शरीर मे फैलने नही पाता और सम्पूर्ण जहरीले प्राणियो के विष दूर होते हैं।

अन्य—जीयापोता के बीज की गिरी को पानी से घिस कर नसवार ले, आख में अंजन करे, जहर के व्रण पर लेप करे और ४ माशे प्रमाण पानी मे घोट कर पिलाए तो भी बाघ, चूहा, मेडक, बिच्छू, बिल्ली इनके विष तत्काल दूर होते हैं।

अन्य—बंबई ( वर्मी, साप के रहने का घर ) की मिट्टी को भांगरे के रस मे पीस दंशस्थान पर लगाने से तत्काल सर्प आदि का विष दूर होता है।

अन्य—कुलथी को चावलों के पानी में पीस घृत मिलाकर लेप करने से सम्पूर्ण कीड़ो का विष दूर होता है।

अन्य—पाठा, मध, मिर्च, सोंठ, सेंधानमक, जौखार, वायविडंग, सज्जीखार, पतीस, कुठ हींग, तगर, चव, सब समान भाग लेकर जल में पीस कर पिलाने से कुत्ते, चूहे तथा वानर आदि का विष दूर होता है।

अन्य—सिरस का पञ्चाग लेकर काढा करे, उसमें त्रिकुटा का चूर्ण बुरक कर शहद मिला प्रातःकाल पिलावे तो सम्पूर्ण शरीर का विष दूर होता है।

अन्य—सैंधानमक और सौंफ दोनो को घी के साथ पीस कर लेप करने से मक्खी का विष दूर होता है। अथवा—गोमूत्र से पीस कर लगाने से चिऊंटी व भ्रमर मक्खी का विष दूर होता है।

अन्य—सैंधानमक घी में पीस लेप करे तो मक्खी, मच्छर, भूंड, चिऊंटी, भ्रमर के डंक का विष दूर होता है।

अन्य—हरताल को पानी में घिस कर लेप करे तो सर्व प्रकार का विष भी दूर होता है

### अफीम-भंग-धतूरा आदि के मद का उपाय

१—अफीम, भंग, इन दोनों का नशा गर्म २ दूध पीने से दूर हो जाता है।

२—धतूरे का मद कपास ( बड़ेमा ) की गिरी पानी में पीस पिलाने से दूर होता है।

३—कड़वे तेल की मालिश से गन्दे कीचड़ का विष दूर होता है।

४—साफ मिट्टी का लेप करने से आक और थोहर का विष दूर होता है।

५—कालीमिर्च, सैंधानमक दोनो को बारीक कर जल से पीवे तो सुपारी का मद दूर होता हैं।

### कृत्रिम विष का लक्षण

विषैले दांत, नख, केश, कांटा, शस्त्र, दांव, सींग वाले प्राणियो के

विष, केश, वनावटी विष, कच्चालोह, स्त्रियो के मासिकधर्म का रज, संयोगविरुद्ध, संस्कारविरुद्ध तथा अन्य गला सड़ा पुराना विष शरीर मे पहुंच जावे तो नीचे लिखे लक्षण प्रकट होते हैं, आलस्य, जड़ता, बल का नाश, श्वासवेग बढ जावे, ज्वर, खून का आना, आंखो का पीला पड़ जाना, शरीर मे सूजन हो जाती है तो कृत्रिम विष के लक्षण जानो।

कृत्रिम विष का उपाय

शुद्ध पारा १ तोला, शुद्धगंधक ३ तोला दोनो की कज्जली करे, फिर स्वर्णभस्म १ तोला, स्वर्णमाक्षिक भस्म १ तोला सब को घीकुआर के रस मे तीन दिन खरल करे। जब सूख जावे तो संभाल रखे और ४ रत्ती से एक माशा तक दवाई ब्रह्मीबूटी से सिद्ध किये हुए दूध के साथ मिश्री मिला पीने से कृत्रिम विष दूर होता है।

अन्य—१ टक प्रमाण जियापोता की गिरी पीस कर गोमूत्र से नित्य पीवे तो सब प्रकार के विष दूर होते हैं।

अन्य—जियापोता की गिरी पानी से पीस खावे।

अथवा—कांजी के साथ कच्ची हलदी पीवे।

अथवा—नरमूत्र के साथ देवदाल (बगरबेल) का फल खावे।

अथवा—सर्पाक्षी ( गंधनाकुली ) अथवा सफेद कोइल को नरमूत्र में पीस कर पिलावे।

अथवा—इन्द्रायण को नरमूत्र मे पीस कर पिलावे तो सब प्रकार के विष दूर होते हैं, तथा जिसने तेल मे मिला कर अफीम खाई हुई हो उस अफीम के विष को भी दूर करती है।

अन्य—काचमाच (मकोय) का रस घी और शहद मिलाकर पीवे।

अथवा—नागदमनी, कोइल, मुंडी बूटी इनको मुंडी के रस के अथवा जल के साथ पीवे तो सब विष दूर हो।

अन्य—रीठड़े का काढ़ा पिलाने से भी सब विष दूर होते हैं। (इससे वमन होते हैं)।

अथवा—तावे को उबाल कर पिलाने से विष दूर होते हैं।

अथवा—नीलाथोथा को पानी में घोल व खट्टी लस्सी में घोल पीने से सब विष दूर होते हैं।

इन तीनो योगों से उलटिया आती हैं और सारा विष दूर हो जाता है।

इस नीचे लिखे मन्त्र से २१ बार झाडा करने से सारे विष दूर होते हैं। (परन्तु जितने भी मन्त्र होते हैं कम से कम ४० दिन उनको विधि द्वारा सिद्ध करना पडता है तब जाकर फलदायक होते हैं) तथा भूतप्रेत आदि की छाया भी दूर होती है।

अथ मन्त्र—"ॐ नमो भगवते श्रीघोणे य. हर हर दर दर पर पर तर तर वर वर वेत्र वेत्र स्वः स्वः रर रर रर रर रर रर रर रर रर रर लां लां हर हर हर भां भा भां सर श्रीं सर खीं खीं खीं वखी वखी ह्री ह्री ह्री भगवती श्री ग्रोणेया भगवती श्रीग्रोणेया जस जस सवर सवर जुसः जुसः सदावर रूप ह्री सदावर रूप ह्री सदावर रूप ह्रीं वर विहंग मानुष योगक्षेमं च सदे परि सरावरि विहंगमानुषयोगक्षेमं सदे परि सदावरि विहंग मानुष योगक्षेमं सदेपरि प. प प. स्वाहा'

## विषरोग में पथ्य

आरिष्टा (विषदंश के चार अंगुल ऊपर वस्त्र, डोरी, वृक्ष की छाल अथवा विष को दूर करने वाले प्राणियो की चमड़ी को मन्त्रित करके बांधना) बांधना, सिद्ध मंत्रों द्वारा झाड़ा करना, वमन, विरेचन, जागना (अर्थात् विष रोगी को सोने नही देना चाहिये सोने से विष के वेग का हृदय पर असर तत्काल हो जाता है), रक्त निकालना, अंग को मुट्ठी चापी करना, अभिषेक, अञ्जन दवाइयो का बुरकना, उबटन, नसवार, लेप, टकोर सिरहाना, विष को दूर करने वा प्रतिविष, धूनी, मूर्च्छाहर उपाय, भोजन के लिये सट्ठी के चावल, कोदों, मुंग, घी पुराना, कंगुनी, तेल, बैंगन, मधुर पदार्थ, आमले, ब्राह्मीबूटी, चौलाई, जीवन्ती, अनार, लसन, कालिचशाक, नागकेशर, हरड, शहद, शीतल जल, शर्करा, सैंधानमक, हलदी, पश्चिम और उत्तर की पवन, नागरमोथा, चंदन सफेद, शिरीष, कस्तूरी, कोढ़, ईख, स्वर्ण, केसर यह विष रोगियो के लिये पथ्य हैं।

जिस प्रकार के विषरोगियो के लिये जो अनुकूल हो उनके लिये इन उपरोक्त पदार्थों मे से वही २ पथ्य देवे।

### विषरोग में कुपथ्य

क्रोध, विरुद्ध आहार, पान चबाना, मैथुन, अभ्यञ्जन, श्रम, स्वेद, हवा से घूमना फिरना, धूमपान यह विषरोगी के लिये कुपथ्य हैं।

इतिविषरोगाधिकार ।

## अथ विरेचनाधिकार

विरेचन देने से पूर्व स्नेहन, स्वेदन अर्थात् घृत तैल की मालिश आदि से शरीर को चिकना करले, पश्चात् स्वेद अर्थात् पसीना देवे इससे एक तो शरीर नरम हो जाता है, दूसरे सारे शरीर में चिपके हुए दोष ढीले पड जाते हैं। और पश्चात् विरेचन अर्थात् जुलाब देने से सारे दोष मल द्वारा बाहर निकल आते हैं। यदि शरीर मे कच्ची श्लेष्मा अड़ी हुई हो तो पाचन दवाई देनी चाहिये।

### विरेचन का काल

शरद् ( आश्विन, कार्तिक ) ऋतु और वसन्त ( फालगुन चैत्र ) ऋतु विरेचन के लिये अच्छी हैं, अन्य ऋतुओ में गरमी, सर्दी और वर्षा अधिक होती है इस लिये अच्छी नहीं। विरेचन भी प्रत्येक रोगी को नही देना चाहिये, इस में रोगी का बल अवस्था और समय का विचार अवश्य रखना चाहिये। प्रत्येक रोगी जुलाब नहीं सह सकता।

### विरेचनयोग्य रोगी

कफ पित्त वाले रोगी, अफारे वाले, कब्ज वाले, जीर्ण ज्वर वाले, गर ( संयोगज विष वा कृत्रिम विष ) रोगी, बवासीर, पाण्डु, उदररोग, पेचिश के रोगी, गंठिया वातरक्त, भगंदर, हृद्रोग, अरुचि, प्रमेह, प्लीहा, योनिरोग, गुल्म, व्रणरोगी, विद्रधिरोगी, छर्दि, विषूचिकारोगी, विस्फोटक, अर्दित, गुदरोग वाले, इन्द्री रोगवाले, कोढ़ी, नासारोगी, नेत्ररोगी, कृमिरोगी, उद्गार, शूल और मूत्राघात के रोगियो को विरेचन देना चाहिये।

## विरेचन के अयोग्य प्राणी

बालक, बूढ़े, अतिस्निग्ध, अत्यन्त क्षीण, अतिकायर ( डरपोक ), कामी, दीन, मार्ग की थकावट वाले, दुबले पतले, सुकुमार, भ्रम के रोगी तृष्णा के रोगी, स्थूल, नारी, नवीन ज्वरवाला, गर्भिणी, प्रसूता, रूक्ष प्रकृति वाले, शल्य रोगी, शराबी, मंदाग्नि वाले रोगियो को विरेचन नहीं देना चाहिये।

## प्रकृति रेचन

पित्त अधिक बढ़ा हो तो बिलकुल मृदु ( नरम ) जुलाब देवे, कफ बढ़ा हो तो मध्यम जुलाब देवे, वात बढ़ा हो तो तीक्ष्ण विरेचन देना चाहिये।

मृदुरेचन—२-४ तोले एरण्डतेल को दूध में मिला कर पिलावे तो विना किसी कष्ट के दस्त आ जाते हैं, यह मृदुरेचन है।

मध्यमरेचन—अमलतास का २ तोले गूदा, ६ माशे त्रिवी और ३ माशे कौड़ यह मध्यम विरेचन है।

तीक्ष्ण विरेचन—शुद्ध जमालगोटा, थोहर का दूध, चोक यह तीक्ष्ण विरेचन है।

नोट—यह भी ध्यान रखना चाहिये कि एरण्डतेल वायु के रोगो के लिये भी विशेषतया अत्यन्त हितकर है। यहा पर विरेचन की शक्ति कोष्ठ शक्ति के अनुसार निश्चित की है। अर्थात् जो नरम कोठे वाले मनुष्य हैं उनको एरण्डतेल और दूध से विरेचन आजावेगे, दोषो के हिसाब से वायु-रोगों के लिये एरण्डतेल, पित्तरोगो के लिये अमलतास, तथा कफरोगो के लिये जमालगोटा थोहर का दूध आदि हितकर होते हैं।

## विरेचन क्वाथ ( काढ़े ) की मात्रा

१—विरेचन के लिये बडी मात्रा ८ तोले है, अर्थात् बड़े बलशाली और मोटे ताजे ग्रामीण लोगो को ८ तोले तक एरण्डतेल दे सकते हैं। इससे कम से कम ३० दस्त आने चाहिये।

मध्यम मात्रा—एक पल की है, इससे कम से कम २० दस्त आने चाहिये।

हीन मात्रा—दो तोला की है, इससे कम से कम १० जुलाब आने चाहिये।

### दवाई के साथ मधु, घृत की मात्रा

रोग तथा रोगी का बल विचार कर, चूर्ण, गोली वा कल्क के साथ शहद वा घी देना हो तो १ तोला, २ तोले वा ४ तोले तक दे सकते हैं।

### वातप्रकृति वाले को विरेचन

सैंधानमक १ भाग, त्रिवी ४ भाग, सोंठ २ भाग, इनका चूर्ण बना कर गर्म जल से अथवा दूध से देवे तो वातप्रकृति वाले को विरेचन आ जाते हैं।

### पित्तप्रकृति वाले को विरेचन

त्रिवी के चूर्ण को अंगूरों के रस के साथ अथवा मुनक्का के काढ़े से देवे तो पित्तप्रकृति वाले को विरेचन आते हैं।

### कफप्रकृति वाले को विरेचन

त्रिफला का काढा बना कर उसमे गोमूत्र ४ तोला मिला ले, फिर मघ, मिर्च, सोठ, कौड़ इनके चूर्ण बुरक कर पिलावे तो कफप्रकृति वाले को विरेचन आजाते हैं।

### षड् ऋतु विरेचन

१. ग्रीष्म ऋतु मे—त्रिफला के काढ़े मे एरण्डतेल मिला कर पिलावे, अथवा दूध के साथ एरण्डतेल पिलावे। गरमी ( जेष्ठ, आषाढ़ ) के मौसम मे यह अच्छा विरेचन है।

अन्य—त्रिवी के समान शर्करा मिला कर दूध के साथ देवे तो गरमी मे सर्वोत्तम विरेचन है।

२ वर्षा ऋतु मे—त्रिवी, इन्द्रजौं, मघ, सोठ इनका चूर्ण करके अगूरो के रस मे मधु मिला कर पीवे। वर्षा ( श्रावण, भाद्रपद ) मे यह विरेचन अच्छा है।

३ शरद् ऋतु मे—त्रिवी, धमाहा, नागरमोथा मिश्री, नेत्रवाला, चंदन इनका चूर्ण बना कर अंगूरो के रस के साथ वा मुलट्ठी के काढ़े के साथ पीवे, यह विरेचन आश्विन, कार्तिक मास मे अच्छा है।

४ हेमन्त ऋतु मे—त्रिवी, चित्रा, पाठा, देवदारु, जीरा, वच, चोक इनका चूर्ण बना कर गर्म जल से खावे तो मार्गशिर, पौष मे उत्तम विरेचन है।

५ शिशिर ऋतु मे—मघ, सोंठ, त्रिवी, सैंधानमक, सनाय इनका चूर्ण कर मधु के साथ खावे तो माघ, फाल्गुन के लिये अच्छा जुलाव है।

६ वसन्त ऋतु मे—अर्थात् चैत्र वैसाख मे भी शिशिर ऋतु वाला विरेचन देना चाहिये। यह छः ऋतुओ के लिये साधारण विरेचन कहे हैं।

### सब के लिये साधारण विरेचन—अभयामोदक

हरड, मिर्च, सोंठ, वायविड़ंग, आमला, मघ, दालचीनी, पिप्पलामूल, नागरमोथा, तेजपत्र १-१ तोला, दन्ती ३ तोले, त्रिवी ८ तोले, मिश्री ६ तोले सब का चूर्ण कर शहद मिला १-१ तोले के मोदक बना ले, शीतल जल के साथ प्रभात काल १-१ मोदक खाने से विरेचन आकर शरीर शुद्ध हो जाता है। गर्म जल पीवे तो विरेचन बंद हो जाते हैं। इस विरेचन से विषमज्वर, मंदाग्नि, पाण्डुरोग, कास, भगंदर, बवासीर, क्षय, कोढ़, वुरनाई, दाह, वमन, भ्रम, उदररोग, गलगण्ड, अफारा, मुटापा, नेत्ररोग, तापतिली, वायु के रोग, मूत्रकृच्छ्र, पीठ, पसवाड़े तथा जंघा के रोग, पथरी, उदररोग तथा अन्य शरीर के रोग दूर होते हैं, केश शीघ्र पकते नहीं। यह महारसायन है।

### जुलाव में रक्षा विधि

दस्तों के वेग को न रोके, स्वप्न मे भी शीतल जल को न छुए, वार वार गर्म जल पीता जावे, पवन से बचे, नीचे पाओं न धरे तो विरेचन अच्छी तरह लग जाते हैं।

### शुद्ध विरेचन के लक्षण

प्रथम मल निकले, फिर मल के साथ पित्त निकले, फिर दवाई और सब से पीछे कफ निकले तो शुद्ध विरेचन जानो—अर्थात् जब विरेचन आरम्भ हो तो सब से प्रथम दस्त के रास्ते मल अर्थात् टट्टी आती है, जब मलाशय साफ़ हो जावे तो पित्त मल के साथ आता है, मलाशय के ऊपर

पित्त का स्थान है, जब बिगडा हुआ पित्त भी निकल जावे तो पीछे से कफ निकलता है क्योंकि आमाशय मे कफ का ही स्थान है, और औषध नीचे से क्रमपूर्वक अपना कार्य करती जाती है। इस प्रकार से सारा कोठा शुद्ध हो जाता है।

## अशुद्ध विरेचन के लक्षण

नाभि, पेट, पसवाडो मे शूल तथा खिंचावट, मल और हवा इकट्ठी आवें, शरीर भारी हो जावे और चकत्ते पड़ जावें, खुजली होवे, अरोचक, अफारा, वमन, तथा सारे शरीर मे जलन हो, भ्रम हो तो जानो कि विरेचन ठीक नहीं लगा है। ऐसे मनुष्य को फिर पाचन व स्नेहन औषधि देकर विरेचन देना चाहिये।

खाने के लिये पथ्य—सठी के चावल, मूंग की दाल देवे।

## वृहद् नाराच रस

शुद्ध शिंगरफ, शुद्ध जमालगोटा, शुद्ध गंधक, शुद्ध पारा ( दोनो की कज्जली ) सुहागाफूल, शुद्ध हरताल, सबको बारीक पीस निम्बू के रस मे खरल करे और एक एक रत्ती की गोलिया बनाले, एक वा दो गोली गर्म जल के साथ खावे तो जुलाब आजाते हैं, इससे उदर के रोग, वायगोला, विषमज्वर दूर होते हैं।

## नाराच रस

शुद्ध पारा १ टंक, सुहागाफूल १ टंक, कालीमिर्च १ टंक, शुद्ध गंधक २ टंक, सर्घा २ टंक, सोंठ, २ टंक, शुद्ध जमालगोटा सबके बराबर, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे, फिर सब दवाइयो को मिला कर दो प्रहर तक खरल करे, दो रत्ती दवाई खाड के साथ मिला गर्म जल से पीवे तो बहुत अच्छी तरह विरेचन आ जाते हैं। पथ्य—खिचडी।

## इच्छाभेदी रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक ( कज्जली ), सुहागा फूल, शुद्ध जमालगोटा, कालीमिर्च, हलदी, सैंधानमक, अजवायन, जौखार, एरण्ड के बीज सब समान भाग लेकर बारीक कर निम्बु के रस मे तीन दिन तक खरल करे, पीछे २-२ रत्ती की गोली बना रक्खे, दवाई खाकर ऊपर से दस घूंट

गर्म जल के पीवे तो दस जुलाब हो जावेंगे, रोगी जितने घूंट गर्म जल पीवेगा उतने ही दस्त आजायेंगे। दूसरी विधि यह भी है कि गर्म जल से दवाई खालेवे, जब दस्त शुरू हो जांव तो प्रति दस्त के अनन्तर गर्म जल पीता जावे, जितनी वार जल पियेगा उतने ही दस्त आते जावेंगे। जब दस्त बंद करने हों तो हाथ मुंह धोकर दही खिचड़ी खा लेवे ऊपर से शीतल जल। यह इच्छाभेदी रस है, इसके सेवन से अपनी इच्छानुसार दस्त आते हैं, जब चाहो बंद कर लो।

### वमन विधि

बलवाले, कफप्रकृति वाले, कोढ़ी, हृल्लास ( उबकाई ), विष, अर्बुद शूल, स्तन रोग, मंदाग्नि, श्लीपद, हृद्रोग, अजीर्ण, विसर्प, प्रमेह, भ्रम, विदारिका रोग, पीनस, अपस्मार, वृद्धिरोग, कफज्वर, श्वास कास, जिह्वा के रोग, तालु के रोग, नासारोग, रक्तातिसार, कर्णस्राव, होठ के रोग, गलशुण्डि, आमातिसार तथा अन्य कफ एवं मेद के रोगियों को वमन देना चाहिये।

### वमन निषेध

तिमिर रोगी, गुल्म रोगी, कमजोर, गर्भिणी, बहुत मोटे मनुष्य तृष्णा से पीड़ित, बालक, उदावर्त रोगी, उरःक्षत रोगी, क्षय रोगी, छाती धड़कती हो, पढ़ने वाले, स्वरघात वाले, वृद्ध मनुष्य, बच्चा, बूढा तथा डरपोक मनुष्य को वमन नहीं देना चाहिये।

### वमन का समय

शरदऋतु ( आश्विन-कार्तिक ), वसन्तऋतु ( फाल्गुन-चैत्र ) और प्रावृड्ऋतु ( आषाढ़-श्रावण ) इन तीन ऋतुओं में वमन देना चाहिये वर्षाऋतु में, हेमन्तऋतु मे तथा रात्रि समय मे किसी को वमन नहीं देना चाहिये।

वमन देने से पूर्व रोगी को दूध, दहा, लस्सी, यवागू तथा अन्य कफ को प्रकुपित करने वाले पदार्थ पेट भर खिला कर कफ को बढ़ा लेना चाहिये फिर वमन की औषध पिलाये, इस प्रकार कफ बढ़ जाने से वमन

खुल कर आजाते हैं। वमन मे पहले अन्नादि, फिर कफ और कफ के पश्चात् पित्त ( हरी, पीली, कडवी उलटिया ) और सब के पीछे वायु अर्थात् जब अधिक वमन आकर कोठा खाली हो जावे तो केवल वायु के सूखे डकार और उबक्त आते हैं।

## वमन में काढ़े की मात्रा

दवाई एक कुडव ( १६ तोले ) लेकर ४ सेर पानी मे क्वाथ करे जब २ सेर शेष रहे तो रोगी को पिला दे तो रोगी को वमन करावे।

नौ प्रस्थ जल वमन की उत्तम मात्रा, छः प्रस्थ मध्यम मात्रा, तीन प्रस्थ हीन मात्रा कही है। इसी प्रकार कल्क, चूर्ण, अवलेह इनकी उत्तम मात्रा ३ पल है, मध्यम मात्रा २ पल तथा हीन मात्रा १ पल है।

आठ वमनवेग उत्तम कहे हैं, छः वेग मध्यम और तीन वेग हीन माने गये हैं।

नोट—वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण, इनमे प्रस्थ १३½ पल का माना गया है और सब जगह प्रस्थ १६ पल का माना गया है। कफ को नाश करने के लिये कडवे तथा तीक्ष्ण पदार्थों से वमन कराना चाहिये। पित्त रोगो मे मधुर शीतल पदार्थों से वमन कराना चाहिये, वात रोगो मे मधुर, अम्ल, लवण और उष्ण पदार्थों से वमन कराना चाहिये।

## कफ के लिये वमन

मघा, सैंधानमक, मैनफल इनका चूर्ण कर गर्म जल से पीवे तो वमन द्वारा सारा कफ निकल जाता है, छाती हलकी हो जाती है।

## पित्त रोगों में वमन

पटोलपत्र, वासापत्र, निंबपत्र ( मैनफल ) इनको पीस चूर्ण कर शीतल जल से पीवे तो वमन आती है और सब पित्त रोग शान्त हो जाते हैं। कफवात के रोग पर मैनफल को दूध से पिला वमन करावे, अजीर्ण मे सैंधानमक गर्म जल मे घोल कर पिलावे तो वमन अजीर्ण को दूर करती है।

### वमन उपद्रवों की चिकित्सा

वमन बहुत आने से यदि जीभ बाहिर खिंच आवे तो मुनक्का और तिल इनका लेप करने से जिह्वा अंदर हो जाती है।

नोट—वमन की दवाई पीकर मनुष्य खाट वा कुरसी आदि पर बैठे, नीचे आसन पर बैठने से पेट में ऐठन आदि होने का भय रहता है। वमन की दवाई पीने पर भी यदि वमन न उतरे तो एरण्ड की डण्डी लेकर मधु और नमक लगा कर गले में दे तो वमन आ जाता है।

### इन्द्रीजुलाब

रेवन्दचीनी ४ तोले, कलमीशोरा २ तोले, जौखार १ तोला सबको पीस कर एक सिरसाही भर (लगभग दो तोले) कच्ची लस्सी के साथ पीवे तो पेशाब खुल कर आ जाता है।

अन्य—जौखार १ तोला कच्ची लस्सी के साथ पीने से पेशाब खुल कर आजाता है, इन्द्री की जलन और दुखणूता दूर हो जाता है।

अन्य—केसू के काढ़े से तोला भर जौखार खाने को दे तो मूत्र खुल कर आ जाता है। इसमें रोगी को दूध भात पथ्य देना चाहिये।

### वमन पथ्य

सठी या वासमती के चावल और मूंग की खिचड़ी तीसरे पहर रोगी को देवे।

### वमन विधि

सैंधानमक को आक के दूध में पीस तीन पुट देवे, पश्चात् बारीक कर रख छोड़े, १ टंक प्रमाण रोगी को गोदुग्ध से देवे तो उलटियां आ जाती हैं।

अन्य—नीलाथोथा को गर्म जल, दूध अथवा तक्र में घोल कर पिलावे तो वमन हो जाता है।

अथवा—मैनफल को गर्म जल से पीवे तो वमन आ आती है।

### वस्ति विधि

वस्ति कर्म दो प्रकार का होता है। १-अनुवासन, २-निरूहण। १-जो वस्ति केवल स्नेह अर्थात् केवल एरण्डतेल अथवा अन्य औषधियों से

सिद्ध किए हुए तेल को पिचकारी द्वारा गुदा के अंदर पहुँचा देते हैं उसे अनुवासन वस्ति कहते हैं। जैसे आजकल ग्लीसरीन (Glycerine) की पिचकारी देते हैं ।

२—जिस मे काढा, दूध, तेल आदि मिला कर पिचकारी द्वारा गुदा मे चढाए जावे उसे निरूहण वा आस्थापन वस्ति कहते हैं। जैसे आजकल गर्म जल मे साबुन घोल लेते हैं और उसमे ३-४ तोले एरण्डतेल मिला और ६ माशे नमक घोल टूटी द्वारा गुदा मे चढ़ा देते हैं, जिसे अनीमा वा हुकना कहते हैं। यह दो प्रकार की वस्ति होती है।

नोट—वस्ति मे घी, तेल, शहद, चूर्ण कल्क आदि की मात्रा एक पल की होती है और आध पल की भी। तीक्ष्ण अग्नि वाले, वातरोगी, रूक्ष प्रकृति वाले मनुष्यो के लिये अनुवासन वस्ति ही श्रेष्ठ है।

## वस्ति निषेध

कोढी, प्रमेह रोगी, स्थूल शरीर वाले और उदर रोगी को निरूहण वस्ति न करे। कोढ़ी को छोड़, अन्य को अनुवासन भी न करे। इसी प्रकार अजीर्ण, पागलपन, तृष्णारोग, शोषरोग, मूर्च्छा, अरुचि, भय, श्वास, क्षय, कास इन रोगियो को निरूहण वस्ति नहीं करनी चाहिये।

नोट—इन रोगियो मे से कइयों का तो मन वश मे नही होता और कई रोगियो का उदर ( अतड़ियां ) ठीक कार्य नहीं करता, इस लिये वस्ति देने पर यह भय रहता है कि वस्ति का जल अंदर ही न रुक जावे, जिससे कि अन्य उपद्रव उत्पन्न हो जावे। इसी लिये इन रोगियो को वस्ति देने का निषेध किया गया है।

## वस्तिनेत्र ( टूटी ) प्रमाण

प्राचीन काल मे वस्ति पशुओ के वस्ति ( मसाने ) से बनाई जाती थी जैसे कि आजकल चमड़े की थैली होती है, उसमे दवाई भर दी जाती थी और उसके आगे एक टूटी बाधी जाती थी और उस टूटी को गुदा मे दिया जाता था, पीछे से धीरे २ दबाया जाता था। इस प्रकार वस्ति की दवाई ( काढ़ा आदि ) गुदा मे चली जाती थी और अन्दर के मल आदि

को लेकर दवाई बाहर आ जाती थी। अगली टूटी सोने चांदी, तांबा, पीतल, हड्डी, सींग, वांस, नड़ा, काच आदि की होती थी। ६ से १२ वर्ष के बच्चे के लिये ६ अंगुल, १२ से २० वर्ष के लिये ८ अंगुल और वीस से लेकर ७० वर्ष तक १२ अंगुल तक। इसकी अगली ओर चतुर्थ भाग में एक कर्णिका अर्थात् टूटी के इर्द गिर्द ढिबरी लगाई जाती थी ताकि सारी टूटी गुदा मे न घुस जावे, और पिछली ओर दो गहरे घेरे होते थे जिनके साथ वस्ति का मुख बांधा जाता था। आजकल रबड आदि के मिल जाने से पशुओं की वस्ति की आवश्यकता नही रही। आजकल दो प्रकार की वस्तियां मिलेंगी। नं० १-एक डब्बा सफेद चीनी का, जिसमे डेढ़ दो सेर जल आ जाता है, उसका पिछला भाग सपाट होता है, अगला अर्ध गोलाकार, जिसके निचले भाग मे एक टूटी लगी रहती है और टूटी मे एक दो डेढ़ गज़ रबड़ की नली और नली के आगे चार छ अंगुल टूटी यह सब सामान बाज़ार से बिना किसी कष्ट के मिल जाता है। आप डब्बे मे इच्छानुकूल दवाई भर देवे और ऊंचे स्थान पर टांग दें, और टूटी को रोगी की गुदा मे दे दे, दवाई अपने आप गुदा मे चढ़ जावेगी।

नं० २—एक रबड़ की नली लगभग डेढ़ दो फुट, बीच मे रबड के गेंद के समान मोटी, उसके अगले सिरे मे टूटी और पिछले सिरे मे एक छल्ला सा होता है, एक चिलमची मे दवाई भर दें और पिछले सिरे को उसमे डुबो दे, अगली टूटी को गुदा मे दे दे, और बीच के गेंद को हाथ से दबाते जावें, इससे दवाई अपने आप गुदा मे चलती जावेगी। आजकल गर्म जल मे साबुन घोल लिया जाता है और उसमे ४ तोले तक एरण्ड का तेल मिला कर गुदा मे चढा दिया जाता है।

नं० ३—अनुवासन के लिये ग्लीसरीन सिरिंज ( Glycerine Syringe ) भी बाज़ार से बिना कष्ट के मिल जाती है।

नं० ४—इन्द्री की पिचकारी को उत्तर वस्ति कहते हैं, इसके देने से सूजाक आदि के व्रण दूर हो जाते हैं।

आजकल की यह विलायती वस्तुएं विलकुल हमारे प्राचीन आयुर्वेद की नकल हैं।

## वस्ति का समय

शीतकाल और वसन्त में दिन के समय, ग्रीष्म और शरत्काल मे रात्रि समय में वस्ति देनी चाहिये। अनुवासन देने से प्रथम स्निग्ध भोजन नहीं करना चाहिये क्योंकि दोनों ओर स्नेह से मूर्च्छा आदि रोग हो जाते हैं।

अनुवासन की मात्रा—छः पल स्नेह की उत्तम मात्रा, तीन पल की मध्यम, डेढ़ पल की हीन मात्रा कही गई है।

शतावर और सैंधानमक दोनो को पीस स्नेह में मिला देना चाहिये, इनकी ६ माशे उत्तम मात्रा, ४ माशे मध्यम और २ माशे हीन मात्रा कही हैं।

नोट—आजकल थोड़ा नमक ही मिलाते हैं।

## अनुवासन वस्ति स्नेह

गिलोय, एरण्ड की जड़, रोहिपतृण, भंडिगी, वासा, करञ्ज, कौआ-टोडी, पियावांसा, शतावर यह सब एक एक पल, जौ, उड़द, अलसी, कुलथी, यह सब दो २ पल, जल ५२ सेर मे काढ़ा करे। जब १३ सेर जल शेष रहे तो उसे छान ले और उसमें ३ सेर तेल और एक एक पल जीवनीयगण ( जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुलट्ठी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, जीवन्ती ) की प्रत्येक दवाई एक एक पल जल में पीस कर उसमे पकावे, जब तेल पक जावे तो छान कर रख ले और इस तेल की अनुवासनवस्ति करने से सम्पूर्ण वायु के रोग दूर होते हैं।

## नस्य प्रकरण

नस्य ( नसवार ) दो प्रकार की होती है-१ स्नेहन, २ रेचन नस्य। नस्य और नावन ये नसवार के नाम हैं।

## नस्य प्रकरण

कफ के रोगों में प्रभातकाल नसवार देनी चाहिये, पित्त के रोगों में दोपहर के समय, वात रोगों मे पिछले पहर नसवार देनी चाहिये। यदि रोग बढ़ा हुआ हो तो आवश्यकता के अनुसार रात के समय भी नसवार दे सकते हैं, परन्तु छोटे छोटे रोगों में रात के समय नसवार नहीं देनी चाहिये।

### नस्य का निषेध

भोजन के पश्चात्, स्नान के पश्चात्, बादल झड़ी के दिन, तर्पण करने के पश्चात्, नवीनप्रतिश्याय में, विष खा लेने पर, अजीर्ण मे, शोक मे, स्नेहवस्ति लेने पर, मद्य पीने पर तथा क्रोधी को, वेग रोकने वाले, तृष्णा वाले तथा बालक, गर्भिणी स्त्री और वृद्ध मनुष्य को नसवार नहीं देनी चाहिये।

आठ वर्ष से ऊपर और अस्सी वर्ष तक करे, इसमे जो रेचन नस्य है वह तेल व तीक्ष्ण रस वा क्वाथ आदि की देवे।

### नस्य मात्रा का प्रमाण

यदि तेल की नस्य देनी हो तो उसकी ८ बूंदें उत्तम मात्रा, ६ बूंदें मध्यम मात्रा और ४ बूंदें हीन मात्रा कही हैं। इतनी बूंदें नाक मे टपकानी चाहिये।'

तीक्ष्ण स्वरस आदि की १ टंक, हींग की १ जौ प्रमाण, सैंधानमक की १ माशा, दूध ८ टंक, जल की ३ कर्ष, मद्य आदि की एक कर्ष मात्रा होती है, अर्थात् उपरोक्त मात्रा से दवाई नाक में टपकानी वा चढ़ानी चाहिये।

### नस्य के भेद

नस्य के दो और भेद होते हैं, १-अवपीड़, २-प्रधमन। गीली दवाई कूट कर नाक मे निचोड़ी जावे उसे 'अवपीड' कहते हैं। जो दवाई सूखी पीस कर ६ अंगुल लंबी नली में रख नाक मे चढाई जावे उसे 'प्रधमन' कहते हैं।

## नस्य के योग

क्षय, गलरोग, ज्वर, निद्रा, विष, सन्निपात, मन के रोग, कृमि इन रोगो में 'अवपीड' नस्य देनी चाहिये ।

हंसली के ऊपर के रोग, कफ, क्षय, अरुचि, कुष्ठ, अपस्मार, पीनस, प्रतिश्याय, शिरशूल, शोफ इन रोगो मे रेचन नस्य देनी चाहिये ।

कायर, स्त्री, कृश, दुर्बल, बालक, इनको स्नेहन नस्य देनी चाहिये ।

तीव्र विष तथा सन्निपात आदि मे सूखी नसवार देनी चाहिये ।

धीरज वाले बलवान् मनुष्य को तीक्ष्ण नस्य देनी चाहिये ।

## नस्य के योग

१—सोठ और गुड़, दोनो को जल मे पीस नसवार दे । २—सैधा-नमक और मद्य इनको जल मे पीस नसवार दे । इससे सिर, कान, नाक, मुख के रोग शान्त हो जाते हैं ।

## धूमपान प्रकरण

१२ वर्ष की आयु से ८० वर्ष तक धूमपान कराना चाहिये, धूमपान की दवाई की मात्रा १ तोला तक है ।

## धूमपान के गुण

श्वास, कास, मन्यास्तंभ, हनुस्तंभ, शिररोग, पीनस, जुकाम तथा अन्य कफवात के रोगो मे धूमपान कराना चाहिये ।

## धूमपान का निषेध

थका हुआ, डरा हुआ, यात्रा किया हुआ, वस्ति लिया हुआ, विरेचन लिया हुआ, रात को जगा हुआ, दाह और तृष्णा युक्त, तिमिर रोग वाला, अफारे वाला, सिरदर्द वाला, तालुशोष वाला, उदररोग वाला, वमन वाला, प्रमेह वाला, गर्भिणी स्त्री, क्षीण मनुष्य, उरःक्षत वाला, पाण्डुरोगी, रूक्ष मनुष्य तथा जिसने दूध, घी, शहद तथा मद्य पिया हो, अन्न दही, मछली खाई हो, बच्चा, बूढा, कमजोर इनको तथा अकाल समय मे धूमपान नहीं करना चाहिये ।

## गंडूष प्रकरण

पांच वर्ष की अवस्था के अनन्तर ही गंडूष, कवल आदि करने चाहिये। गण्डूष ( कुल्ला वा गरारा ) ५ वा ७ करने चाहिये।

## लेप प्रकरण

लेप आध अंगुल, वा अंगुली की तीसरा वा चौथा भाग मोटा करना चाहिये।

## अंजन प्रकरण

लेखन अंजन की आठ बूंदे, स्नेह की १० बूंदे, और रोपण अंजन की १२ बूंदे नेत्रो मे डालनी चाहिये। दो अंगुल भर मोटी पोटली कर शीतकाल मे उष्ण और उष्ण काल मे शीत रस आदि मे भिगो कर आंखो पर टकोर करनी चाहिये।

### मात्रा प्रमाण

आश्च्योतन के लिये मात्रा—१०० तक गिनती, अथवा १०० चुटकी तक अथवा १०० अक्षर तक बोलने को मात्रा कहते हैं।

आंखें बन्द कर ऊपर लेप करने को विडालपद कहते हैं।

### अंजन विधान

अंजन तीन प्रकार का होता है, १ गुटिका, २ रस और ३ चूर्ण।

दोष जब पक जावे तो नेत्रो मे सुरमा लगाना चाहिये, कच्चे दोष मे अंजन विकार करता है। शिशिर और हेमन्त मे दोपहर के समय अञ्जन लगाना चाहिये। वसन्त मे किसी भी समय अञ्जन लगा सकते है। ग्रीष्म और शरद् में पहले और पिछले पहर मे और वर्षा ऋतु मे जब आकाश मेघो से रहित निर्मल हो।

### अंजन निषेध

रोता हुआ, शराब पिया हुआ, नवीन ज्वर वाला, अजीर्ण रोगी तथा वेग रोकने पर अञ्जन नहीं लगाना चाहिये। इससे कई नेत्रविकार हो जाते हैं। तथा अत्यन्त शीत, वर्षा, बादल आदि मे अञ्जन नहीं लगाना चाहिये।

### अंजन मात्रा

तीक्ष्ण अञ्जन रेणु के प्रमाण वा इसे डयोढ़ा वा दुगना लगाना

चाहिये। रसाञ्जन की उत्तम मात्रा तीन विडंग के बराबर, मध्यम दो विडंग और हीन एक विडंग के बराबर है।

सुरमुचु—आठ अंगुल लंबा बनाना चाहिये और अञ्जन आंख के नीचे भाग मे लगाना चाहिये।

## स्वरस

१ गीली ताजी औषधि को कूट कर उसका रस निचोड लिया जावे उसे स्वरस कहते हैं।

दूसरा—सूखी वा गीली दवाई को आठगुना जल मे भिगो छोड़े, प्रातःकाल काढा करे, जब एक भाग शेष रहे तो इसे भी स्वरस कहते हैं इसकी दो तोले मात्रा है।

तीसरा—दवाई को रात दिन पानी मे भिगो छोडे, फिर आग पर पका लेवे, जब एक हिस्सा शेष रहे उसे भी स्वरस के स्थान पर वरतना चाहिये।

अन्य—कुछ गीली कुछ सूखी दवाई ३२ तोले, जल ६४ तोले दवाई जौकुट करके ८ पहर जल मे भिगो छोडे, फिर उसको छान कर रख ले उसे भी स्वरस कहते हैं।

## प्रक्षेप प्रमाण

किसी क्वाथ आदि मे यदि शहद, मिश्री, गुड़, जौखार, लवण, जीरा, तेल, घृत, चूर्ण आदि डालने हो तो दो टक प्रमाण डाल सकते हैं।

## तण्डुलोदक ( चावलों का पानी )

चावल ४ तोले, जल ३२ तोले मे एक पहर तक भिगो छोडे, फिर चावलो को मसल कर जल नितार ले, इस जल को तण्डुलोदक वा चावलो का धोवन वा तण्डुलजल कहते हैं। इसकी मात्रा एक पल से दो पल तक है।

## पुटपाक विधि

दवाई कूट कर जल वा औषधस्वरस से भिगो छोड़नी चाहिये, पश्चात् पीस कर गोला बना ले और ऊपर गीला कपडा और कपड़े पर पत्ते लपेट ले और फिर एक अंगुल मोटी मिट्टी का लेप कर दे और उपलो पर पकावे। जब मिट्टी लाल हो जावे तो निकाल शीतल कर उस गोले का

रस निचोड़ लें इसे पुटपाक स्वरस कहते हैं । इस स्वरस की मात्रा एक पल तक है ।

### क्वाथ परिभाषा

औषध ४ तोले हो तो जल १६ गुणा ( ६४ तोले ) डाल कर काढ़ा करो, ८ तोले जल शेष रहे तो उतार रोगी को पिलाओ । काढ़ों का विशेष वर्णन ज्वर अधिकार में कर दिया गया है ।

कल्क प्रमाण—१ पल द्रव्य ले, जौकुट कर रात भर आठगुने जल में भिगो छोड़े, प्रातःकाल काढ़ा करे, ८ तोले शेष रहे तो उतार छान कर पिलावे ।

### यवागू प्रमाण

दवाई चार पल, जल ६४ पल काढ़ा करे, जब आधा रहे तो उतार कर उससे यवागू बनावे ।

### यूष विधि

साधारण दवाई का कल्क एक पल तथा सोंठ और मघ १-१ टंक ले कर प्रस्थ भर जल में पकावे उसे यूष कहते हैं ।

### पानक विधि

चूर्ण एक पल और जल ६४ पल, ३२ पल शेष रहे तो पीने को दे, उसे पानक कहते हैं ।

### क्षीरपाक विधि

दवाई से आठगुणा दूध और दूध से चारगुणा जल इनको पकावे, जब जल जल जावे और दूध शेष रह जावे तो उतार कर छान ले और रोगी को पिलावे ।

### अन्नक्रिया—यवागू

चावल आदि में ६ गुणा जल देकर पकावे तो यवागू होती है ।

### विलेपी

द्रव्य एक पल, जल १६ पल, जब चतुर्थांश शेष रहे तो उसे विलेपी कहते हैं ।

### पेया-यूष आदि

द्रव्य मे ६४ गुणा जल डाल पकावे, जब १४ गुणा शेष रहे तो उतार ले, उसे पेया वा यूषा कहते हैं।

### भक्त ( भात ) विधि

चावल ४ पल, जल १४ पल में उबाल ले, उसमें मंड ( पीछ ) निकाल कर पिलावे। इसे दूसरे शास्त्रो मे मण्ड भी कहते हैं।

### शुद्ध मण्ड

ऊपर के मण्ड मे फिर १४ गुणा जल मिला कर पकावे, जब मण्ड ही रह जावे तो उतार उसमे सोंठ और सैंधानमक मिला कर पिलावे, यह शुद्ध मण्ड दीपन-पाचन है।

### वाट्य मण्ड

तुष समेत जौ लेकर १४ गुणा जल मे पकावे, उस जल को वाट्य मण्ड कहते हैं।

### लाजामण्ड

लाजा ( धान की खील ) को १४ गुणा जल मे पका लें, उसे लाजा-मण्ड कहते हैं।

### फांट विधि

१ पल द्रव्य लेकर ८ पल गर्म २ जल मे डाल कर रख छोड़े, शीतल होने पर मसल छान कर पिलावे, इसे फाट कहते हैं। इसकी मात्रा दो पल है, इसमे मधु, शर्करा, गुड़ आदि भी योग के अनुकूल मिला सकते हैं, इसकी मात्रा पीछे बता दी गई है।

### मंथ विधि

चार द्रव्य को पीस कर १६ तोले शीतल जल मिला मिट्टी के पात्र में मथ कर मंथ बनाया जाता है। इसकी मात्रा भी दो पल से चार पल तक है।

### हिम विधि

एक पल द्रव्य पीस ले और ६ पल जल मे रात भर भिगो छोड़े,

प्रातःकाल मल छान कर पिया जावे, उसे हिम कहते हैं। उसकी मात्रा दो पल है।

### कल्क विधि

हरी व सूखी औषधि लेकर पानी से पीस गोली बांध ले, इसे प्रक्षेप भी कहते हैं, कल्क भी कहते हैं। इसकी मात्रा १ तोला है। इसमें मधु घृत दुगुना, जल चौगुना और मिश्री वा गुड समान भाग मिलाना चाहिये।

### चूर्ण विधि

चूर्ण की साधारण मात्रा १ तोला है, गुड चूर्ण के समान, मिश्री दुगुनी मिलानी चाहिये। यदि हींग मिलानी हो तो भून कर मिलानी चाहिये। घी चूर्ण से दुगुना लेना चाहिये। मट्ठा वा छाछ चौगुना लेना चाहिये। स्नेह वायु प्रकृति वाले को तीन पल, पित्त वाले को दो पल और कफ प्रकृति को एक पल की होती है।

### गुटी

गोली में दवाई से गुड दुगुना और मिश्री चौगुनी लेनी चाहिये। गुग्गुल समान भाग, मधु भी दवाई के समान लेना चाहिये। जल दुगुना मिला कर खरल करे, जब गोली योग्य हो जावे तो गोली करे। गुड़ आदि को दुगना जल मिला काढ कर चाशनी करके मिलावे।

### नूराविधि—वालसफ़ा

हरताल दो टंक, शंखचूर्ण ६ टंक, पलाश खार २ टंक, इन सब को केले के रस के साथ मर्दन करके वालों पर लेप करे तो सात लेप करने से शरीर के सब वाल साफ़ हो जाते हैं।

अन्य—पटोल के फल लेकर पानी से पीस सात वार लेप करने से वाल साफ़ हो जाते हैं।

### पित्त का उपाय

पारदभस्म, अभ्रकभस्म, कान्तलोहभस्म, लोहभस्म, ताम्रभस्म, स्वर्णमाक्षिकभस्म, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल सब समान भाग लेकर मुलट्ठी, अंगूर, गिलोय, वांसा और कलिहारी के रस में खरल करे। १ रत्ती मात्रा

६ माशे मिश्री और ६ माशे मधु मिला कर खावे तो पित्तरोग, दाह, भ्रम, शोष, तृष्णा, ज्वर आदि पित्तविकारों को दूर करती है।

अन्य—दूध मे मिश्री मिला कर पीने से पित्तरोग शान्त होते हैं।

अथवा—मुलट्ठी के काढ़े में मिश्री मिला पीने से पित्तरोग दूर होते हैं।

अन्य—श्वेत चंदन को जल मे घिस कर पीने से पित्तरोग नष्ट होते हैं।

अन्य—इलायची छोटी, चन्दन श्वेत, धनिया, खरेंटी, आमले, मुलट्ठी, अनारदाना, गुल दुपहरिया, खजूर सब समान भाग लेकर पीस ले, और सब के समान मिश्री मिला कर रख छोड़े, एक सिरसाही भर नित्य खावे तो सम्पूर्ण पित्त के रोग शान्त हो जाते हैं।

कफ का उपाय—(मंथानभैरव रस)

पारदभस्म, ताम्रभस्म, भुनी हुई हींग, पोहकरमूल, सैंधानमक, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल, कौड यह सब समान भाग लेकर चूर्ण करे। फिर देवदार, इटसिट, चौलाई, निर्गुण्डी, कडवी तुम्बी, इनके रस से एक २ दिन खरल करे। फिर एक वा दो रत्ती दवाई ६ माशे मधु के साथ खावे और ऊपर से निम्बपत्र का काढ़ा पीवे तो सब प्रकार के कफरोग दूर होते हैं।

अन्य—शुद्ध गन्धक ३ माशे से १ तोला तक यथाशक्ति गर्म घी अथवा गर्म जल से पीवे तो तत्काल कफ के रोग शान्त होते हैं।

वात का उपाय—( वातगजांकुश रस )

अभ्रकभस्म, शुद्धगन्धक, लोहभस्म, शुद्ध पारा, शुद्ध सिगियाविष, शुद्ध हरताल, मघ, मिर्च, सोठ, स्वर्णमाक्षिक भस्म, हरड, सब समान भाग, प्रथम पारा गंधक की कज्जली करे, फिर अन्य दवाइयां बारीक पीस उसमें मिला दे और सब को मुंडी के रस मे सात दिन खरल करे। दो रत्ती मात्रा मधु, पान का रस अथवा घृत से खावे तो अर्दित, कुबड़ापन, धनुस्तंभ, मन्यास्तंभ, कमरदर्द, अधरंग, सोका, झोला, नलशूल तथा सातो धातुओ के वायुरोग शांत हो जाते हैं।

### दुष्टजल ( पानीबदल ) का उपाय

नागरमोथा, कौड़, चिरायता, त्रिवी, हरड, मघ, नीम के पत्ते, शतावरी इनका चूर्ण करके घी मिला कर खावे तो दुष्टजल वा पानीबदल का विकार दूर होता है।

अन्य—ग्रेक और जोखार दोनों का चूर्ण कर गर्म जल से पीवे तो अनेक देशों के जल का विकार दूर होता है।

### सन्तान का उपाय

समुद्रफल ८ तोले बछडी के मूत्र में पीस ७५ गोलियां बनावे, ऋतु समय से नित्य स्त्री एक २ गोली जल वा दूध से खावे और दाल भात पथ्य करे तो अवश्य संतान होती है, वह भी पुत्र होता है।

### सर्वव्रण पर मरहम

राल सफेद ६ माशे, नीलाथोथा १ माशा, हलदी ३ माशे सब को बारीक कपड़छान कर ४ माशे कड़वे तेल मे पीसे, फिर सब को सौ बार पानी मे धोवे पीछे गुग्गुल ३ माशे बारीक पीस कर मिला दे, व्रण को धोकर उसे इस मरहम की टाकी लगावे तो सम्पूर्ण व्रण दूर होते हैं।

अथवा—इस मरहम को यूं बनाइये कि प्रथम तेल को गर्म करे, फिर उसमे राल और गुग्गुल, हल्दी और नीलाथोथा पीस कर मिला दे, जब सब एकजान हो जावें तो आग पर से उतार शीतल जल से सौ बार धोवें; मक्खन के समान मरहम बन जायगा। यह मरहम सब व्रणो को दूर करता है।

इति मिश्रित-रोगाधिकार।

## अथ निघण्टु वर्णन

### हरीतकी ( हरड़ )

हरीतकी अर्थात् हरड—हर के निवासस्थान ( हिमालय ) मे प्रकट हुई और सम्पूर्ण रोगो को हरती है, इस लिये इसे हरीतकी कहते हैं, यह दिव्य गुणो वाली होती है।

## हरीतकी के भेद

विजया, अभया, अमृता, जीवन्ती, रोहणी, चेतकी, पूतना यह हरड़ की सात जातियां ( भेद, किस्मे ) होती हैं।

जीवन देने से जीवन्ती, पवित्र करने से अर्थात् शरीर के मल को साफ़ करने से पूतना, अमृत के समान गुण होने से अमृता, सब स्थान पर विजय ( कार्यसिद्धि ) पाने से विजया, भय को दूर करने से अभया, शरीर को पुष्ट करने से रोहणी और शरीर को चेतन करने से इसे चेतकी कहते हैं। जीवन्ती हरड स्वर्ण के समान वर्ण वाली होती है, पूतना बड़ी गुठली वाली होती है, मोटे छिलके वाली को अमृता कहते हैं, तुम्बी के रूप वाली विजया होती है, पांच रेखा वाली अभया कहलाती है, हरे रंग की रोहणी होती है। चेतकी हरड पर तीन रेखा होती हैं।

## हरड़ के गुण

जीवन्ती सब रोग दूर करती है। लेप के लिये पूतना प्रयोग की जाती है। दस्तों के लिये अमृता दी जाती है। विजया भी सब रोगों को दूर करती है। अभया नेत्रो के लिये हितकारी है। रोहणी व्रणो को हरती है। चूर्णों मे चेतकी हरड़ वर्तनी चाहिये।

हरड उष्ण है, रूक्ष है, बुद्धि देने वाली है, दस्तावर है, लघु है, आयु देने वाली है, नेत्रो को हितकारी है, शरीर को पुष्ट करती है, कोढ़, बवासीर, शोफ, उदररोग, कृमि, प्रमेह, अफारा, ग्रहणी, वमन, हिचकी, स्वरभग, कण्डू, व्रण, तिल्ली, वायगोला, शूल, श्वास, कास, हृद्रोग तथा पेट की तनावट और अतिसार को दूर करती है, दीपन और पाचन है। हरड़ यह प्रसिद्ध दवाई है इसको सब लोग जानते हैं।

## बहेड़े के गुण

बहेड़ा सिर के बालो के लिये अत्यन्त हितकर है, रूक्ष है, स्पर्श मे शीतल और वीर्य मे उष्ण, पाक मे मधुर है। बहेड़े की गिरि का तेल सिर मे लगाने से केश लंबे हो जाते हैं, शीघ्र श्वेत नहीं होते। बहेड़े पर आटा लपेट भूभल मे भून मुंह मे चूसने से खांसी को तत्काल लाभ होता है।

## आमले के गुण

आमला भी बड़ी प्रसिद्ध दवाई है, इसके गोल २ ताजे चमकदार फल बड़े मनलुभावने होते हैं, सूखा फल बिखर जाता है, आमले को हर एक व्यक्ति जानता है, आमला रक्तपित्त, प्रमेह, तृष्णा को दूर करता है, बालो को काला करता है, वीर्य को बढ़ाता है और वीर्य का रेचन भी करता है। अन्य सब गुण हरड़ के समान होते हैं-किन्तु यह हरड से अधिक वाजीकरण शक्ति देने वाला है। मधुर होने से पित्त को, खट्टा होने से वायु को, रूक्ष और कषाय होने से कफ को शान्त करता है। इसलिये आमले का फल तीनों दोषो को दूर करता है।

## त्रिफला के गुण

हरड़ बहेड़ा, आमला इन तीनों को मिला कर त्रिफला कहते हैं, त्रिफला वात, पित्त, कफ, क्षय, वमन, कुष्ठ, प्रमेह, कामला, पाण्डु, श्वास रोग और रक्त रोगो को दूर करता है, दस्तावर है, नेत्ररोग और शिर के रोगों के लिये अत्यन्त हितकारी है।

## गिलोय के गुण

गिलोय गर्म, भूख बढ़ाने वाली, वमन को हरने वाली, जीर्णज्वर, मल, पित्त, वात, वातरक्त, कोढ़, प्रमेह, श्वास, कास और रक्तविकारो को दूर करती है।

वृत्तात—गिलोय की बेल होती है, इसका ऊपर का छिलका पतला होता है और शीघ्र जुदा हो जाता है, अंदर का छिलका हरा और मोटा होता है, इसके अंदर का भाग श्वेत तारो का समूह ( रेशेदार ) होता है, इसको गोल काटने से चक्राकार चिह्न पाये जाते हैं। यह रसायन है, इसका टुकड़ा कितनी देर पडा रहने पर भी सूखता नहीं और जब चाहो लगा दो और इसमे पत्ते फूट आते हैं। पत्र पान के समान होते हैं।

गिलोयसत्व विधि—इसका हरा छिलका उतार कर टुकड़े टुकड़े कर कूट लेते हैं और खुले पानी मे मसल कर रख छोड़ते हैं, और प्रतिदिन मसलते हैं, तीन दिन के अनन्तर पानी की तह मे श्वेत सार बैठा हुआ

मिलता है, टुकड़ो को निचोड कर फैंक देते हैं, और पानी को नितरने के लिये रख छोड़ते हैं, धीरे धीरे सफेद सत्व नीचे बैठता जायगा और पानी नितरता जावेगा, पानी को नितार कर फेंक दें और सत्व को सुखा लें। यह "गिलोय सत्व" है, यह परम रसायन है। पुराने ज्वर, राजयक्ष्मा, खांसी आदि के लिये परम हितकारी है। आजकल लोग मैदा में चिरायते की भावना देकर नकली गिलोयसत्व भी बना लेते हैं।

### वांसा के गुण

वांसा को वहेकड, वसूटी भी कहते हैं। फाल्गुन-चैत्र में इसके श्वेत-वर्ण के फूल मुंह फैलाये हुए अत्यन्त शोभा देते हैं। वासा कफ, पित्त, क्षय, रक्तपित्त, खांसी, श्वास, प्रमेह, कोढ़, ज्वर आदि को दूर करती है, वायु को बढ़ाती है, स्वर को शुद्ध करती है। इसके पत्तों का स्वरस व जड़ का काढा मधु मिला कर पीने से छाती से रक्त आने को रोकता है, उरःक्षत ( सिल ) को दूर करता है, इसके फूलों का मधु रक्त और तपेदिक के लिये अत्युत्तम है, इसके फूलों का गुलकन्द भी बनता है।

### विल्व ( वेल ) के गुण

विल्व की छाल गर्म है, दीपन है, पाचन है, दस्तों को रोकने वाली है, कटु, कषाय और लघु है, स्निग्ध है, तिक्त है, हृदय को बल देने वाली है। कच्चे विल्वफल का गूदा ( वेलगिरि ) ग्राही है, शूल को दूर करता है, आम अतिसार को दूर करता है, लघु है, बच्चों के अतिसार को दूर करता है, ग्रहणी और अतिसार के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक।

### कंटकारी के गुण

कंटकारी, कंडियारी, ममोली, भिंडी, इसके देशभाषा नाम हैं, यह पृथ्वी के चारों ओर फैलने वाली बिछी हुई बेल होती है, इसके पत्तों के नीचे ऊपर नोकीले कांटे होते हैं, फूल बैंगनी और गोल गोल फल लगते हैं। बीज असख्य ( लालमिर्च के बीजों के समान ) होते हैं। कंटकारी गर्म, रूखी, चरपरी, कड़वी, हलकी, दीपन, पाचन, अरुचि और खासी, श्वास, कफ के मूत्रकृच्छ्र, पुराने जुकाम, कृमिरोग, प्रमेह, वात, खुजली तथा पीड़ा

को शान्त करती है, विशेषकर इसका पंचांग पुरानी खांसी और श्वास को दूर करता है।

### अरणि के गुण

अरणि को अंगिमंथ व वंखार भी कहते हैं, प्राचीनकाल में इसकी दो लकड़ियों को रगड़ कर अग्नि उत्पन्न कर लेते थे। अरणि गर्म, वीर्य में भी गर्म, कफ वात को शान्त करता है, चरपरा, कड़वा, कसैला और मधुर है, अग्नि को बढ़ाता है, अजीर्ण को दूर करता है।

### कोद्रु के गुण

कोद्रु हलकी, रूक्ष, शीतल होती है, पित्त, दाह, ज्वर, अरुचि, कफ, कास, कृमि, श्वास, कास, पित्तज्वर, पाण्डु, कामला और मल को दूर करती है।

### चिरायता के गुण

चिरायता वातल है, शीतल है, रूक्ष है, लघु है, सन्निपातज्वर, विषमज्वर, श्वास, कास, दाह, पित्त तथा रक्तविकारों को दूर करता है।

### कुड़ा के गुण

कुड़ा की छाल को कुड़ासक कहते हैं और बीजों को इन्द्रजौ कहते हैं। कुड़ा की छाल दीपन है, रूक्ष है, शीतल है, पित्तरक्त के अतिसार को दूर करती है, ग्रहणी ववासीर के लिये अत्यन्त ही लाभकर है, इसके अतिरिक्त पाण्डु, कुष्ठ, तृष्णा तथा कफरोगों को दूर करती है।

इन्द्रजौ—कुड़ा के बीजों को इन्द्रजौ कहते हैं,इन्द्रजौ त्रिदोष अतिसार को दूर करते हैं, कुष्ठ को दूर करते हैं। सग्रहणी और खूनी ववासीर के लिये यह अत्यन्त लाभकर होते हैं। इन दोनों की मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है।

### असगंध के गुण

असगंध को नगौरी असगंध भी कहते हैं, असगंध शोथ, उदररोग, कफ, वात, क्षय को दूर करती है, वीर्य को अत्यन्त बढ़ाती है, कामदेव को जगाती है, उष्ण है, वाजीकरण तथा रसायन है, विशेषकर शोष को दूर करती है। मात्रा ३ माशे तक।

### गोखरू ( भखड़ा ) गुण

भखडा शीतल है, वल वढाता है, मधुर है, श्वास, कास, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र को दूर करता है, मूत्र लाने वाला तथा मूत्र शुद्ध करने वाला है, वीर्य को वढ़ाता है, कमर दर्द को दूर करता है। मात्रा ६ माशे तक।

### मधुयष्टि ( मुलट्टी ) गुण

मुलट्टी शीतल है, भारी है, वल-वीर्यवर्द्धक है, तृषा, उलटी तथा पित्तरोगों को दूर करती है। कच्ची वलगम को पका देती है और खासी को दूर करने में अद्वितीय है। इसको ऊपर से छील कर वर्तते हैं। इसके काढ़े को गाढ़ा करके सत्व वनाते हैं। जो कि खासी के लिये अतिहितकर है, परन्तु वाजार में नकली सत्व भी मिलता है।

### शुण्ठि ( सोंठ ) गुण

सोंठ आम को पकाती है, रूक्ष है, आमवात को दूर करती है, मल को तोड़ती है, दस्तों को रोकती है। स्निग्ध है, उष्ण है, वायु और कफ को दूर करती है, कोष्ठ के विवंध ( कब्ज) को दूर करती है, श्वास, कास, हृद्रोग, वमन, शोथ, शूल, ववासीर, अफारा, श्लीपद, इनको दूर करती है। दीपन तथा पाचन है।

### आर्द्रक ( अदरक ) गुण

अदरक दीपन है, पाचन है, कब्ज तथा श्लेष्मा को तोड़ता है, गुरु, कटु, रूक्ष, तीक्ष्ण, एव उष्ण है, वायु को शान्त करता है, अफारा शूल, श्वास, कास को दूर करता है। भोजन से पहले नमक और अदरक अवश्य खाना चाहिये।

### मरिच ( मिर्च ) गुण

कालीमिर्च गर्म है, दीपन है, पित्त वढ़ाने वाली है, कफ और वात को हरने वाली है, श्वास, शूल और खासी को दूर करने वाली है।

### पिप्पली ( मघ ) गुण

मघ वीर्य वढ़ाने वाली है, रसायन है, दस्तावर है, पित्तकारक तथा खासी को दूर करती है, श्वास, उदररोग, ज्वर को दूर करती है, हलकी है।

### ग्रंथिक ( पिप्पलामूल ) गुण

पिप्पलामूल दीपन है, पाचक है, कब्ज को तोड़ता है, परन्तु अति-सार को भी दूर करता है, कफ और वातरोग, उदररोग, वायगोला, तिल्ली, कृमि, अफारा, श्वास आदि रोगों को दूर करता है, दिल को बल देता है।

### चवक गुण

चवक गजपीपल के पौदे को कहते हैं। चवक दीपन है, पाचन है तथा गुदा के रोगों को दूर करती है। इसके फल को गजपीपल कहते हैं, जो गुण पिप्पलामूल में हैं वही चवक और गजपीपल में कहे गये हैं।

### चित्रक गुण

चित्रक को चित्रा कहते हैं। इसका झाड़ ५-६ फुट तक ऊंचा हो सकता है, शाखाएं बीच से पोली सी होती हैं, फूल सफेद रंग के, फल कांटेदार और हाथ को चिपकने वाले होते हैं। इसकी जड़ की छाल काम आती है, त्वचा पर इसको पीस लगाने से दाह तथा छाला पड़ जाता है।

गुण—चित्रा पाक में कटु, पाचन है, हलका है, दीपन है, रूक्ष और उष्ण है, कोढ़, क्रिमि, बवासीर, संग्रहणी को दूर करता है, विशेषकर कफ और वादी की बवासीर व संग्रहणी के लिये अत्यन्त लाभकारी है।

### पञ्चकोल गुण

मघ, पिप्पलामूल, चव, चित्रा, सोंठ इन पांचों को पञ्चकोल कहते हैं। पञ्चकोल तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, पाचन, वायगोला तथा कफ रोगों को दूर करता है। पित्त को बढ़ाता है, शूल को हरता है तथा उदररोग, तिल्ली, अफारा को नाश करता है।

### अजवायन गुण

अजवायन दीपन है, पाचन है, तीक्ष्ण है, उष्ण है, चरपरी, कड़वी तथा हृदय को बल देने वाली है, पित्त को बढ़ाती है, शूल, वातश्लेष्म को नष्ट करने वाली है।

### अजमोद गुण

अजमोद उदररोग, अफारा, वायगोला, क्रिमी, तिल्ली तथा कफ-वात को नष्ट करती है।

## धनिया गुण

धनिया चरपरा, चिकना, दीपन, पाचन, लघु, मूत्र लाने वाला, वमन और क्रिमि रोग तथा तीनो दोषो को नष्ट करता है, रुचिकारक तथा गर्म होता है।

## श्वेतचंदन गुण

श्वेत चन्दन रियासत मैसूर ( दक्षिण ) मे पाया जाता है, इसके वृक्ष होते हैं, इसके पत्ते तिल के पत्तो के समान लम्बे पतले होते हैं। इसकी छाल तथा पत्तों मे सुगन्धि नही होती अन्दर की लकडी मे ही सुगंधि पाई जाती है। यह हमारे अपने अनुभव की बात है। चन्दन स्वाद मे कडवा, घिसने पर हलका पीला, काटने पर लाल, शरीर पर श्वेत और जिसमे अनेक गाठे एवं कोटर ( खोड खड्डे ) हो वह श्रेष्ठ होता है। श्वेतचन्दन शीतल है, रूक्ष है, कडवा है, हलका है, मन को प्रसन्न करने वाला है, श्रम को, शोष को, विष को, श्लेष्मा को, तृषा तथा पित्त, रक्त और दाह को दूर करता है।

## रक्तचन्दन गुण

रक्त चन्दन शीतल है, वीर्यवर्धक है, ज्वर को, भ्रम को, नेत्ररोगो को, तृष्णा तथा पित्त रोगो को नष्ट करता है।

## अगर के गुण

अगर शीत को, वायु को, कफ और पित्त को नाश करता है, त्वचा के रोगो को, नेत्र तथा कर्ण के रोगो को दूर करता है, उष्ण तथा तीक्ष्ण है।

## कपूर गुण

कपूर के वृक्ष शीशम के वृक्ष के समान होते हैं, साधारण मनुष्य इनमे पहचान नहीं कर सकता। इसका तना ऊंचाई के रुख नहीं प्रत्युत लंबाई के रुख फैला हुआ होता है, शीशम का वृक्ष बहुत ऊंचा और सीधा निकल जाता है। इसके पत्ते मसलने से कपूर की सुगधि स्पष्ट प्रतीत होती है। कपूर प्रायः चीन जापान से आता है। आजकल इसमे मोम की

मिलावट करके देसी कपूर कह कर नकली कपूर भी बहुत बिकता है। कपूर शीतल होता है, तृष्णा, दाह, दाह, पित्त, रक्तपित्त, ज्वर, कफ और विपूचिका को दूर करता है।

### कस्तूरी गुण

कस्तूरी खारी, गर्म, कड़वी, चरपरी एवं गुरु है, शीत को, कफ, वात, वमन और ज्वर को दूर करने वाली है, कामोत्तेजक, वीर्यवर्द्धक, हृदय को बल देने वाली है, नाड़ी की गति को ठीक रखती है, सन्निपात मे परम लाभदायक है। आजकल बाजार मे सेरो नकली कस्तूरी बन कर बिकती है, चतुर मनुष्य भी नकली असली मे बडी कठिनता से पहचान कर सकता है।

### केशर गुण

केशर भारतवर्ष मे केवल काश्मीर के कुछ भाग मे होता है, इसके फूल बैगनी होते हैं। बाहिर से फारिस तथा स्पेन से भी आता है, केशर गर्म, व्रण को शुद्ध करने वाला, त्रिदोष को दूर करने वाला है। रक्त को शुद्ध करता है, चेहरे को सुन्दर बनाता है, मुख की दुर्गंध को दूर करता है, शिर दर्द को दूर करता है। क्रिमियो को नष्ट करता है। चरपरा है, शरीर मे तत्काल गर्मी उत्पन्न करता है। हिचकी, वमन को दूर करता है।

आजकल बाजार मे कई प्रकार का नकली केशर मिलता है। असली केशर का मिलना हर एक व्यक्ति के लिये अत्यन्त कठिन है। इसी लिये आयुर्वैदिक औषधिया आजकल उतना लाभ नही देतीं जितने कि उनमे गुण लिखे गये हैं, कारण कि आजकल तो हमे खाने पीने की वस्तुएं भी खालिस और असली नहीं मिलती फिर यह तो दवाइयां हैं। यदि केशर कस्तूरी, अम्बर आदि बहुमूल्य वस्तुएं खालिस मिल जावें तो कोई कारण नहीं कि पूरी लाभदायक सिद्ध न हो।

### लवङ्ग गुण

लौंग रूखे, शीतल, पाचन, कड़वे, हलके, चरपरे होते हैं और नेत्ररोग, शूल, अफारा, विपूचिका, क्षत, क्षय, खांसी, कफ, श्वास तथा

पित्त रोगों को दूर करते हैं तथा पुराना जुकाम, तृष्णा, रक्त के रोग और अफारा आदि रोग भी दूर होते हैं।

## जातिफल गुण

जायफल उष्ण है, तीक्ष्ण है, रुचिकारक है, दीपन है और क्रिमियों को नाश करने वाला है। तथा वमन, पुराना जुकाम, हृद्रोग, श्वासरोग, खांसी, स्वरभग, मुख की विरसना तथा कफरोगों में भी लाभकारक है। वीर्यस्तंभन करने वाला है, कामदेव को जगाने वाला है।

## दालचीनी गुण

दालचीनी, लघु, उष्ण, चरपरी, कड़वी, पित्त करने वाली तथा कफ और वात को हरने वाली है। इससे खारिश, अरुचि, कृमि, बवासीर, जुकाम, हृद्रोग, वस्तिरोग दूर होते है, यह वीर्य पैदा करती है।

## तज गुण

तज जुकाम को, रक्तविकार को, आमकफ को, खुजली को, मुखदुर्गंध को, हृदय तथा वस्ति के रोगों को दूर करती है। उष्ण है, लघु है, पित्तकारक है, गुदा के कीडों को मार देती है। कफ को सुखा देती है और वीर्य को बढ़ाती है।

## छोटी इलायची के गुण

छोटी इलायची मूत्रकृच्छ्र, कफ, श्वास, कास, बवासीर, अतिसार, वमन तथा वायु को हरने वाली है, रुचिकारक तथा हृदय को बल देने वाली है, दीपन और पाचन है।

## बड़ी इलायची ( बुजी ) के गुण

बड़ी इलायची रूक्ष है, हलकी है, गरम है, पित्तकारक है, रुचिकर है, घर्षाकारक है, कफ वात को शान्त करती है।

## नागकेसर के गुण

नागकेसर कसैला, गरम, रूक्ष, हलका, आम को पकाने वाला, ज्वर, कण्डू, तृष्णा, स्वेद, वमन, उबकाई, दुर्गन्धि, कुष्ट, विसर्प, कफपित्त विष को हरने वाला है। असली चम्पे के फूल का नागकेसर गर्भकारक है।

### तेजपत्र गुण

तेजपत्र गर्म, हलका, मधुर, तीक्ष्ण, पित्तकारक, कफ, अरुचि, पीनस, कास और वातरोगो को हरने वाला, दीपन-पाचन है।

### त्रिजात चतुर्जात गुण

दालचीनी, इलायची, तेजपत्र इनको त्रिजात व त्रिसुगंध कहते हैं। और नागकेसर मिला कर चतुर्जात कहा जाता है। इनके गुण पूर्ववत् हैं।

### सैंधवलवण गुण

सैंधव अर्थात् लाहौरीनमक दीपन है, पाचन है, पाक मे मधुर है, शीतल है, नेत्र रोगो मे अत्यन्त हितकर है और तीनो दोषो को शान्त करता है।

### सौंचल लवण गुण

सौंचल नमक गर्म एवं पित्तकारक है, तीक्ष्ण है, कब्ज तथा पेटदर्द को दूर करता है। रुचिकारक है, उद्गार ( डकार ) का शोधक है। यह दोनो नमक उत्तम हैं।

सांभर नमक गरम, तीक्ष्ण पित्तकारक, हलका, वायु को शान्त करने वाला पाक मे कटु तथा अभिष्यन्दि है।

### यवक्षार गुण

जौखार अग्नि को दीप्त करने वाला, कफ और वात हरने वाला, आमवात एवं शूल को, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, पथरी तथा उदर रोगो को दूर करता है।

### स्वर्जिका ( सज्जी ) क्षार गुण

सज्जीखार गुल्म तथा शूल को दूर करता है, भूख बढ़ाता है, कफ को दूर करता है।

### टंकण ( सुहागा ) क्षार गुण

सुहागा अग्निकारक है, रूक्ष है, गरम है, उदररोग और खासी, श्वास और कफ, वायु को शात करता है, द्रावण अर्थात् पसीना लाने वाला है।

### क्षार विधि

जिस वस्तु का खार बनाना [illegible] उसे सुखा कर जला ले।

फिर उसे जला कर राख करले, फिर राख को छः गुने जल मे घोल दें, और कम से कम २१ वार नितारे, और नितरे हुए स्वच्छ जल को आग पर खुश्क करलें, आपको श्वेत वा मटियाले रग की जो वस्तु मिलेगी वह ही क्षार होता है।

## तांबूल ( पान ) गुण

पान कडवा, कसैला, चरपरा, कुछ कुछ मधुर, गर्म तथा कफ को नाश करने वाला है वायु, कृमि, मुख की दुर्गंध को दूर करने वाला है, स्वर को शुद्ध करने वाला, मुख की सुन्दरता वढाने वाला, कामाग्नि को जगाने वाला है। रक्त-पित्त और नेत्ररोगो को हितकर नही है।

## बैंगन गुण

बैगन कडवा, गरम, दीपन तथा चरपरा, वीर्यकारक, ज्वर, वायु, कृमि, श्वास, आमवात और अरुचि को दूर करता है। इसका भुरता भी गुणकारक है।

## करेला गुण

करेला वात, श्लेष्म, कास, बवासीर, कृमि को नाश करता है, दीपन है, कच्चा करेला रक्तशोधक है। चेचक मे इसका रस अत्यन्त लाभकारक है।

## कर्कोटक ( ककोड़ा ) गुण

ककोडा श्वास, कास, ज्वर, कुष्ठ, उबकाई और अरुचि को नष्ट करता है। दीपन है, पाक से कटु है।

## वस्तूक ( बथुआ ) गुण

बथुए का साग खारा, चरपरा, पाचन, बलकारक, रुचिकारक व खूनी बवासीर, तिल्ली, क्रिमी तथा त्रिदोष को शान्त करता है। इसमे लोह अधिक होता है।

## चौलाई गुण

चौलाई शीतल है, लघु है, कफपित्त को हरने वाली है, दीपन है, पाचन है, रक्तपित्त को हरने वाली, मल मूत्र साफ लाने वाली तथा विष को दूर करने वाली है।

## पालक गुण

पालक हलका, कब्जनाशक, कफ करने वाला, मद श्वास, विष

तथा रक्तपित्त को नाश करने वाला है। आजकल रोगियो को प्राय. यह पथ्य दिया जाता है।

### सोया के गुण

सोया वायु को हरने वाला, कफपित्त को करने वाला, रुचिकारक, पाक मे लघु और गरम होता है।

### मेथी के गुण

मेथी दीपन, हृदय को वल देने वाली, कब्ज, कृमि, शुक्र, गुल्म, शूल, कफ और वात को दूर करती है।

### चने के साग के गुण

चने का साग कठिनता से पचता है, कब्ज करने वाला, वात-कफ-कारक, पित्त हरने वाला, शोफ को दूर करने वाला है।

### सरसों के साग के गुण

मल मूत्र वहुत उतरते हैं, गर्म है, भारी है, तीक्ष्ण, खारा, विदाही तथा दोषो को वढ़ाने वाला है, परन्तु पञ्जाब के कृषको का तो जीवन ही यह है। इनके लिये तो वस्तुतः सरसो का साग अत्यन्त वलदायक है।

### मूली के गुण

मूली पाचक, हलकी गरम, वातकफ को हरने वाली, पित्तकारक है, यह गुण छोटी मूली में हैं। वडी मूली शीतल, मूत्रल और दोषकारक होती है।

### तरवूज़ के गुण

तरवूज भारी, स्निग्ध, पित्त को शान्त करने वाला, मधुर है, शीतल है, वायु को शान्त करने वाला, मूत्र लाने वाला, नेत्र तथा दिमाग के लिये अत्यन्त हितकारी है।

### फूट व तर के गुण

कच्ची तर शीतल, रूक्ष, ग्राही, मधुर तथा पित्त को हरने वाली है।

पकी हुई तर पित्त को वढाती है तथा अग्नि को भी वढ़ाती है।

### खरवूजा के गुण

खरवूजा वलकारक, म मूत्र लाने वाला, उदर को शुद्ध करने

वाला, भारी, स्निग्ध, शीतल, मधुर, वीर्यवर्द्धक है, वात और पित्त को दूर करने वाला है।

### खीरा के गुण

कच्चा खीरा तृष्णा, दाह, क्रम ( बिना श्रम के थक जाना ), रक्तपित्त और क्रिमि को दूर करता है, मधुर है, कड़वा है। पका हुआ गरम होता है।

### घीया के गुण

घिया स्निग्ध, मल-मूत्र लाने वाला, पित्त को नाश करने वाला, मस्तिष्क ( दिमाग ) को तर करने वाला, ज्वरादि रोगियो के लिये अत्यन्त पथ्य है। तरबूज, खीरा, खरबूजा और घिया इन चारो के बीजो की गिरी को चार मगज कहते हैं। चारो मगज गरमी के मौसिम में घोट कर मिश्री मिला पिलाते हैं, इसमे बादाम की गिरी, छोटी इलायची, सौंफ भी मिला देते हैं, इसे ठण्डाई व सरदाई कहते हैं, इससे गरमी की ऋतु मे गरमी से बचाव रहता है।

### घिया तोरी के गुण

घिया तोरी शीतल, मधुर, बलकारक पित्त को हरने वाली है। यह भी घिया की तरह ज्वरादि रोगो मे पथ्य है। कड़वी तोरी को महाकोशातकी कहते है, यह अत्यन्त कडवी होती है तथा वमन लाने वाली, विष और कफ को नष्ट करने वाली होती है।

### पटोल के गुण

पटोल को परवल भी कहते हैं पटोल दीपन, पाचन, हृदय को बल देने वाले, रुचिकर, पित्त को शान्त करने वाले होते हैं, कुछ उष्ण, वीर्य को बढाने वाला, खासी, रक्तपित्त, ज्वर, त्रिदोष तथा क्रिमिरोग को शान्त करते हैं। कड़वे पटोल भी होते हैं, वह कफपित्त ज्वरो को शान्त करते हैं।

### कद्दू के गुण

कद्दू वातपित्त को दूर करता है, बलकारक, रुचिकर, कफवर्द्धक है।

### श्वेत कृष्ण जीरे के गुण

जीरे रूक्ष, कटु, उष्ण, लघु, दीपन, पाचन, ग्राही, पित्तकारक,

रुचिकारक, नेत्रों को हितकारी, वायु, गुल्म, वमन तथा कफ को हरने वाले, दिल और दिमाग को प्रफुल्लित करने वाले, विशेषकर गर्भाशय को शुद्ध करते हैं। स्त्रियों के दूध बढ़ाने वाले तथा उद्गारशोधन ( डकार साफ लाने वाले ) होते हैं।

### कलौंजी के गुण

कलौंजी के गुण भी जीरे के समान होते हैं। विशेषकर यह स्त्रियों के मासिकधर्म की रुकावट को दूर करती है, तथा गुर्दे की पीडा को दूर करती है।

### हींग के गुण

हींग तीक्ष्ण है, पाचक है, गर्म है, रुचिकर, शूल, कफ और वात को दूर करती है, गुल्म, क्रिमिरोग, उदररोग तथा पेट की वायु को मल के विबन्ध व सुद्दों को तोडने वाली है।

### वंशलोचन के गुण

वंशलोचन शरीर को पुष्ट करने वाली, वीर्य को बढाने वाली, शीत है, मधुर है। ज्वर, श्वास, कास, पित्त, तृष्णा, क्षयरोग तथा कामला को दूर करती है।

### इक्षु ( गन्ना ) के गुण

इक्षु को ईख व गन्ना कहते हैं, गन्ने कई प्रकार के होते हैं इनमे पौंड्र ( पोना ) तथा देसी गन्ना दोनों ही उत्तम माने गये हैं। गन्ना मधुर, भारी, शीतल, बलकारक, कफवर्धक, शरीर को पुष्ट करने वाला, मूत्रकारक, स्निग्ध तथा क्रिमिकारक है।

### इक्षुरस के गुण

गन्ने का रस अत्यन्त तृप्तिकारक है, मन को प्रसन्न करने वाला है, पेशाब को लाने वाला है।

### मधु के गुण

मधु-शहद दीपन है, ग्राही है, नेत्ररोगों के लिये अत्यन्त हितकारी है, वर्ण को स्वच्छ करता है, सब प्रकार के व्रणों को नष्ट करता है, स्रोतो ( शरीर की नाड़ियों ) को शुद्ध करने वाला है, बुद्धि को बढ़ाने वाला है,

कफ, पित्त, वमन, मेदरोग, हिचकी, तृष्णा, श्वास, दाह, उदर के रोग, क्रिमि, विष, कास, कोढ़, बवासीर, मोह तथा पित्त प्रमेह और रक्त के रोगों को शान्त करता है।

### मिश्री के गुण

मिश्री भारी है, मलमूत्र लाने वाली है, वात, पित्त, कफ को हरने वाली है। मिश्री का शर्बत शीतल तथा तृष्णा को हरने वाला है।

### शर्करा ( खांड ) के गुण

सफेद खांड शीतल, चिकनी, वीर्यवर्द्धक, भारी, रक्तपित्त, क्षत, क्षीण, तृष्णा को दूर करने वाली है, मलमूत्र उतारने वाली है।

### लाल शर्करा ( शक्कर ) के गुण

लाल शक्कर बलकारक, कसैली, ग्राही, रसों को समान करने वाली, वातनाशक है, उष्ण है, तीक्ष्ण है, कटु है, रुचिकारक है।

### गुड़ के गुण

गुड रुचिकारक, तीक्ष्ण है, उष्ण है, चरपरा है, बलदायक है, खांसी, श्वास तथा वायु और कफ को दूर करता है। पुराना गुड सब से अच्छा माना गया है।

### छोटे अंगूर के गुण

ताजा अंगूर कफपित्त एवं वातपित्त को दूर करता है, बलकारक है, पाचन है, कुछ गर्म है, हृदय को बल देने वाला तथा नवीन रक्त पैदा करने वाला है।

### बड़े अंगूर के गुण

बडा अंगूर श्वास, मदात्ययरोग, दाह, रक्तपित्त, ज्वर, तृष्णा को दूर करता है, रुचिकारक है, रक्तवर्द्धक है। छोटे अंगूर को दाख व सौगी, किशमिश बेदाना आदि नाम से बोलते हैं। बड़े को अंगूर और सूखने पर 'मुनक्का' कहते है। अंगूर अत्यन्त रक्तवर्धक है और जिगर को साफ करने वाला है।

### छुहारा के गुण

छुहारा श्वास को, कास को, प्यास को, ज्वर को, क्षत को और पेट की वायु को नष्ट करता है, अतिसार को बन्द करता है।

### खजूर के गुण

खजूर मधुर है, शीत है, रुचि करने वाली है, क्षत, क्षय, कफ, वायु और रक्तपित्त को शान्त करती है, और वीर्य को बढ़ाती तथा स्तंभन करने वाली है।

### निम्बु के गुण

निम्बु वायु को, पित्त को, वमन को, तृष्णा को, मुखशोष तथा रक्तपित्त को नष्ट करता है, कफ, अरुचि, कब्ज, क्रिमिरोग, सम्पूर्ण ज्वर को दूर करने वाला है। सब खटाइयों मे निम्बु की खटाई श्रेष्ठ है। इसकी शिकंजवीन ( शर्बत ) बना कर पिलाने से पित्तज्वर तथा तृष्णा दूर होती है। और जिनको शिकजवीन अनुकूल न बैठे वह इसे चीर कर नमक कालीमिर्च मिला आग पर गर्म करके चूसते हैं। निम्बु अत्यन्त रुचिकर एवं त्रिदोष को दूर करता है।

### दाडिम के गुण

दाडिम-अनार अत्यन्त रुचिकर, मधुर है, ज्वर तथा त्रिदोष और जिगर की गर्मी को दूर करता है, रक्त के उबाल को दूर करता है, रक्त बढ़ाता है, मन को प्रफुल्ल करने वाला, ग्राही, दीपन एव पाचन है। वमन तथा पित्तज्वर को दूर करता है। मीठे अनार कंधार से आते है। खट्टे अनार जिसे अनारदाना कहते हैं शिमला तथा काश्मीर की पहाडियो से आते हैं। अनारदाना भी अत्यन्त रुचिकर, ग्राही, दीपन-पाचन है, वमन को नाश करने वाला है।

### आम्र के गुण

आम पित्तकारक तथा वायु को शान्त करने वाला है, रुचिकारक है, शरीर को मोटा ताजा करने वाला है, मधुर है, स्निग्ध है, ग्राही तथा ग्रहणी रोग को दूर करता है और बलकारक है। आमाशय के विकारों को दूर करता है। यह पक्के आम के गुण हैं।

कच्चा आम अत्यन्त पित्तकारक है, किन्तु भून कर पानी में घोल कर खाने से गर्मी को दूर करता है। गर्मी के मौसिम मे जब कच्चे आम खाकर बच्चों की आखे दुख आती हैं तब कच्चे आम का भुरता बनाकर आंखों पर बांधने से आराम आ जाता है । इसी प्रकार गर्मी के मौसिम मे जब लू लग जाने से मनुष्य बेहोश हो जाता है, शरीर में दाह और ज्वर अधिक हो जाता है तब कच्चे आमो का भुरता बना पानी मे मिश्री मिला शर्बत बना लें। यदि उसमें श्वेतचदन घिस कर मिला ले तो और भी उत्तम हो। इस शर्बत को थोड़ा २ पिलाते रहने से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

## सठी चावल के गुण

सठी के चावल लघु होते हैं, शीतल, कब्ज करने वाले है, त्रिदोष को शान्त करने वाले हैं, वासमती के चावलों मे भी यही गुण हैं।

## मूंग के गुण

मूंग रूक्ष हैं, कफ पित्त को दूर करने वाले हैं, हलके, ग्राही, मामूली वायु को शान्त करने वाले, नेत्रो को हितकारी तथा सम्पूर्ण रोगों मे पथ्य होते हैं।

## मोठ के गुण

मोठ वमन तथा कफ पित्त को हरने वाले हैं, क्रिमि करने वाले, रूक्ष, वातकारक हैं, ज्वरनाशक और लघु हैं।

## चणक ( चना ) के गुण

चना शीतल, रूखा, वायु को, रक्त को, पित्त को और कफ को हरने वाला है। कब्ज करने वाला, वीर्य नाश करने वाला और कोढ़ को दूर करने वाला है।

वृत्तांत—हमारे देश में चना गर्म, खुश्क और कब्ज को दूर करने वाला माना गया है। प्रतिश्याय को दूर करता है, तथा पित्तप्रकृति वालों को अनुकूल नहीं बैठता।

## मसूर के गुण

मसूर हलके, ग्राही, शीतल, रक्त, कफ तथा पित्त रोगों को हरता

है, वर्ण को स्वच्छ करता है । मसूर की दाल हलकी तथा अतिसार को दूर करती है।

### कुलथी के गुण

कुलथी गरम हल्की, कास, श्वास और कफ का नाश करती है, कब्ज को दूर करती है, नेत्ररोग, नजला, पथरी को दूर करती है, वीर्योष्ण है, वायगोला, पसीना, अफारा, हिचकी, क्रिमि तथा रक्तपित्त को दूर करने वाली है। कुलथी मे पत्थर को गलाने की शक्ति है अतः पथरीरोग मे यह अत्यन्त लाभ करती है । अधिक पसीना आता हो तो कुलथी का आटा बना शरीर पर सूखा मलना चाहिये ।

### पापड़ के गुण

मूंग के पापड़ हलके और रूक्ष होते हैं । उड़द के पापड़ पुष्टिकारक चिकने तथा भारी होते हैं । दाल को सज्जी के पानी मे भिगो कर उससे पापड़ बनाए जाते हैं।

### यव लाजा के गुण

जौ की लाजा ( जौ को भून कर फुलिया बनाई जाती हैं ) हलकी, दीपन, शीतल, मेद तथा प्यास को दूर करती है, मल तथा कफकारक, दाह वमन हरनेवाली है, रक्तपित्त, प्रमेह, अतिसार, ज्वर को दूर करती है। जौ को उबाल कर यूष को 'जवाश' वा 'आश जौ' कहते हैं, यह भी पथ्य हैं।

### शाली लाजा के गुण

धानो की लाजा शीतल, मधुर, और ग्राही, हलकी तथा वातकारक हैं, हृद्रोग, ग्लानि, ज्वर, दाह, अतिसार, मूर्च्छा, पित्त, रक्त, भ्रम, गर्मी तथा थकावट को दूर करती हैं।

### सक्तु ( सत्तू ) के गुण

जौ के सत्तू हलके, तृप्तिकारक, पित्त, रक्त, तृष्णा, दाह को नाश करने वाले हैं।

## दुग्ध-प्रकरण

### गोदुग्ध वर्णन

गौ का दूध रसायन है, गुरु है, मधुर है, वलकारक है, शीतल है,

सुगंध है, धातुवर्द्धक, पित्त हरने वाला, बुद्धि बढ़ाने वाला, कामदेव को चेतन करने वाला होता है। काली गौ का दूध सर्वोत्तम और श्वेत गौ का दूध श्लेष्मकारक है। वस्तुतः गोदुग्ध अमृत के समान है। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश मे जहा गौ को माता कह कर पुकारा गया है, इतनी दुर्गति की जाती है जितनी किसी भी अन्य देश में नहीं। विलायत में जितनी सेवा गौ की की जाती है इतनी अन्य किसी पशु की नही की जाती। वे देश गौ को सदा प्रसन्न तथा पुष्ट रखने की चेष्टा करते हैं, प्रसन्न तथा पुष्ट गौ का दूध अमृत से भी अधिक गुणकारक है। हमारे देश मे गौ की बिलकुल सेवा नही की जाती, वाणी से तो हम गोरक्षक है, परन्तु, कर्म से नहीं।

### भैंस के दुग्ध के गुण

भैंस का दूध भारी, कफकारक, वीर्य और बलवर्द्धक तथा शरीर को मोटा ताज़ा करने वाला अग्नि तथा बुद्धि को कम करने वाला होता है। नींद लाता है, चर्बी को बढ़ाता है।

### बकरी के दूध के गुण

बकरी का दूध हलका, रूक्ष, त्रिदोष दूर करने वाला, विषनाशक, कास, श्वास, जीर्णज्वर तथा अतिसार को दूर करने वाला है।

### ऊंटनी के दूध के गुण

ऊटनी का दूध गर्म होता है, हलका तथा नमकीन होता है, बवासीर, क्रिमि रोग, वायु, शोफ, श्लेष्मा तथा अफारे को दूर करता है। जिगर के रोगों के लिये अत्यन्त हितकर है।

### नारी के दूध के गुण

माता का दूध जीवन देने वाला, शरीर का मोटा ताज़ा करने वाला, तृप्ति करनेवाला, नेत्रो के लिये हितकर, पित्त और रक्त तथा रक्तपित्त को नसवार से दूर करता है।

## दधि-प्रकरण

### गोदधि के गुण

गौ का दही अम्ल, मधुर, ग्राही, गुरु, उष्ण, वायु शान्त करने वाला,

मेद, शुक्र, बल, कफ करने वाला, रक्तपित्त को बढ़ाने वाला, अग्नि तथा शोष करने वाला, चिकना, मधुर, दीपन, बलकारक, वायु को नाश करने वाला, मगज़ देने वाला तथा पवित्र होता है, यह गौ के दही के गुण हैं।

### भैंस के दही के गुण

भैंस का दही घना, मधुर, मज्ज रक्त को बढाने वाला, चर्बी और शोफ करने वाला, रक्तपित्त और कफ को बढ़ाने वाला है।

### अजा ( बकरी ) के दही के गुण

बकरी का दही गरम, वायु को नाश करने वाला, बवासीर तथा खासी को दूर करने वाला, अग्निवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, मधुर, वातपित्त को नाश करने वाला है।

### गोतक्र के गुण

गौ का तक्र तीनों दोषों को हरने वाला, रुचिकारक, दीपन, हृदय को बल देने वाला, बवासीर, संग्रहणी, अतिसार को दूर करने वाला तथा उदररोगों के लिये परम हितकारी है।

### भैंस के तक्र के गुण

भैंस का तक्र तिल्ली, ग्रहणी, बवासीर को दूर करने वाला, शरीर को मोटा करने वाला, शोथ करने वाला, अग्निमांद्य तथा अतिसार को दूर करता है।

### अजातक्र के गुण

बकरी का तक्र हलका, उष्ण, त्रिदोष को दूर करने वाला, वायगोला, शूल, ग्रहणी तथा पाण्डुरोग को दूर करता है, दीपन पाचन है।

### नवनीत (मक्खन) के गुण

ताज़ा मक्खन भारी होता है, ग्राही होता है, मधुर, शीतल और बुद्धिवर्धक है, हलका है, पित्त वात को दूर करने वाला है, भूख बढ़ाता है। क्षय को दूर करता है। नेत्र तथा दिमाग को परम हितकारी है। बवासीर व पुराने व्रण को नष्ट करता है। देर का निकाला हुआ मक्खन—भेदकारक, बलकारक, बच्चे को शोथ करने वाला होता है।

### गोघृत के गुण

गो का घृत बुद्धि बढाने वाला, आयु बढाने वाला, मधुर है, वीर्य-वर्धक है, वात, पित्त तथा नेत्ररोगो के लिये परम हितकारक है। भ्रम मूर्च्छा को हरने वाला होता है।

### अजा ( बकरी ) घृत के गुण

बल देने वाला, दीपन, नेत्रहितकारी, श्वास, कास, क्षय को नाश करने वाला, बवासीर, कफ तथा ग्रहणी को नाश करने वाला है।

### भैंस घृत के गुण

भैंस का घी वातपित्त को शान्त करने वाला, शीतल, मधुर, भारी, बलदायक तथा विष्टम्भि अर्थात् कब्ज करने वाला है। शरीर को पुष्ट करता है, वीर्य बढाता है।

## मूत्र-प्रकरण

### अश्वमूत्र के गुण

घोडे का मूत्र दस्तावर, कृमिनाशक, दद्रु और बच्चो के छालो को दूर करने वाला, कफ तथा सिर के गंज को दूर करता है।

### भैंस के मूत्र के गुण

भैंस का मूत्र बवासीर, पाण्डु, शोथ, गुल्म को दूर करता है।

### भेड़ के मूत्र के गुण

भेड़ का मूत्र शोफ, गुल्म, बवासीर तथा मल को नाश करता है।

### हाथी के मूत्र के गुण

हाथीमूत्र बवासीर, वायगोला, विष, तिल्ली, कुष्ठ कृमियो को दूर करता है।

### ऊंट के मूत्र के गुण

ऊंट का मूत्र शोफ, तिल्ली, पाण्डु, जिगर की खराबी, बवासीर, कृमिरोग, उन्माद, तथा शूल को दूर करता है।

### गोमूत्र के गुण

गोमूत्र शोथ, पेट के कीड़ो, कुष्ठ, वायु, पाण्डुरोग, वमन, वायगोला, अफारा, विष, अरुचि, शूल को दूर करता है, रेचक है।

### खरमूत्र के गुण

गधे का मूत्र ग्रहणी, कोढ़, उन्माद, मिर्गी, कृमि, प्रमेह को दूर करता है।

### नरमूत्र के गुण

मनुष्य का मूत्र तीनों दोषों को तथा विष को दूर करता है, अत्यन्त गुणकारक है।

## तैल-प्रकरण

### तिलतैल के गुण

तिल का तैल वर्णकारक, बलकारक, लघु तथा उष्ण है, दुबले, पतले मनुष्यों को मोटा ताजा बनाता है। प्रमेहरोग, नेत्ररोग, शिरःशूल को नाश करता है।

### सरसों के तेल के गुण

सरसों का तेल गर्म है, खुजली, कृमि, कोढ़ को दूर करता है, शिर-रोग, कर्णरोग, रक्त तथा पित्तरोगों को भी शान्त करता है। त्वचा को स्वच्छ, चमकदार तथा अत्यन्त दृढ बनाता है, व्रणों के लिये अत्यन्त हितकारक है तथा बल देने वाला है।

### मालकंगुनीतैल के गुण

मालकंगुनी का तेल पित्तवर्धक, बुद्धि तथा स्मरणशक्ति को बढ़ाता है, वायु को शान्त करता है। इसके तेल की मात्रा १ बूंद से १० बूंद तक। यह उलटी लानेवाला है।

नोटः—मालकंगुनी की बेल होती है जो कि जंगलों में पाई जाती है। वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होती है, बढ़ती और फैलती है, शरद् ऋतु मे इसके फल पक कर फूट पड़ते हैं और उनमें लाल और गहरे नारङ्गी रंग के बीज प्रकट हो जाते हैं, यह तिकोने से होते हैं। इन बीजों को लोग संग्रह करते हैं, यही मालकंगुनी वा ज्योतिष्मति है। इसके बीजों का तेल पातालयन्त्र से वा कोल्हू द्वारा निकाला जाता है। इसकी मात्रा १ बूंद से दस बूंद तक हो सकती है, इसके खाने से आरम्भ में वमन होते हैं और

छाती का सारा श्लेष्मा दूर होजाता है, बुद्धि और स्मरणशक्ति को वढाने के शौकीन लोग वा विद्यार्थी प्राय: इसका सेवन करते हैं।

## एरण्डतैल के गुण

वायु को नाश करने वाले जितने तेल हैं, उनमे एरण्डतैल सर्वप्रधान है। तीन चार तोले तक पिलाने से विना किसी कष्ट के विरेचन हो जाते हैं। आजकल विलायती चिकित्सा में तो इसका प्रचार अत्यधिक है।

विधि—रोगी की शक्ति के अनुसार ३-४ वा ५ तोले एरण्डतैल को १०-१५ तोले दूध मे मिला पिला दीजिये। दो घड़ी वाद लगभग आध सेर दूध और पिला दीजिये। इससे विरेचन खुलकर आजाते हैं, पेट साफ हो जाता है। वायु के रोग दूर हो जाते हैं। कभी २ वायु के रोगो में तोला २ मात्रा मे गर्म जल के साथ दिया जाता है। इससे उदर की रूक्षता, विवंध तथा वायु का शूल वंद हो जाता है। प्राय: योगराजगुग्गुल के साथ इसे दिया जाता है।

## मद्य ( शराव ) के गुण

मद्य दीपन है, रुचिकर पाचन है, तथा सर अर्थात् मल साफ लाने वाला है, अग्नि तथा पित्त को वढाने वाला है, मनुष्य को मोटा तथा प्रसन्न करने वाला है, वात और श्लेष्म को नाश करने वाला है। शराव को सुरा कहा है, जिसका अर्थ अमृत हो सकना है, युक्तिपूर्वक मात्रा और वल के अनुसार समय पर पिया हुआ मद्य अवश्य अमृत के समान गुण करता है, शरीर मे युक्ति, स्फूर्ति और ओज पैदा करता है, परन्तु जब मनुष्य इसका स्वभावी वन जाता है और नशे के लिये वोतल पर वोतल पीने लग जाता है तो अवश्य मद्य विष के समान गुण करता है और यह मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता, इसी लिये धर्मशास्त्रो ने मद्य पीने का निषेध किया है कि इससे अत्यन्त मद होता है, यदि कोई मनुष्य १ तोला से आरम्भ करता है तो अवश्य दूसरे तीसरे दिन दो तोले फिर ३-४-५ तोले यहा तक कि वह अत मे वोतल पर वोतल पीने का आदी वन जाता है। शरावी की जो दशा होती है, वह सब लोग जानते

ही हैं। ठंडे देशो मे शराब पीना एक स्वाभाविक बात है, लोग इसके बिना रह नहीं सकते। मद्य उन लोगों को अवश्य बल पौरुष देता है, परन्तु गर्म देशों में यह स्वय आग होने के कारण शरीर मे भी आग सी लगा देता है। नई शराब से पुरानी गुणकारक है।

## दिशाओं के वायु के गुण

### पूर्व दिशा के वायु के गुण

पूर्व दिशा का वायु गुरु है, स्निग्ध है, गर्म है, पित्त और रुधिर को बढ़ाने वाला है, दाहकारक है, कफ और शोप को हितकारी है, अम्ल स्वाद वाला, अभिष्यन्दी है, बवासीर, विप क्रिमि, सन्निपातज्वर, श्वास और आमवात को कुपित करने वाला है।

### दक्षिण वायु के गुण

दक्षिण दिशा का वायु रक्तपित्त को हरने वाला, मधुर, लघु, शीतल, बलवर्धक, नेत्रो को हितकारी, वीर्य बढाने वाला होता है।

### पश्चिम वायु के गुण

पश्चिम का वायु तीक्ष्ण है, शोषण तथा बलकारक है, मेद, पित्त तथा कफ को हरने वाला है। हलका तथा वायु रोगो को बढ़ाने वाला है।

### उत्तर वायु के गुण

उत्तर का वायु शीतल है, चिकना है, दोषों को कुपित करनेवाला क्लेद करने वाला और प्रकृति को समान करने वाला है, बलकारक है, मधुर है, मृदु है।

नोटः—आजकल प्रायः दीर्घ रोगी, तपदिक व सिल के रोगी तथा अन्य भी अत्यन्त दुर्बल मनुष्य ग्रीष्म काल मे अन्तरीय पर्वत प्रान्तो जैसे काश्मीर, शिमला, मसूरी आदि मे चले जाते हैं, इससे उनके स्वास्थ्य मे अवश्य फर्क पड़ जाता है। और रोगी प्रायः रोगमुक्त एवं स्वस्थ होकर आते हैं। इसी लिये उत्तर की वायु को प्रकृति समान करने वाला कहा है।

### विदिशाओं ( कोणों ) के वायुओं के गुण

१-अग्निकोण का रूक्ष, २-नैर्ऋत का विदाही, ३-वायव्य का कटु,

तथा ४-ईशान का भी कटुक होता है। यह हमने दिशाओं और उनके कोणों के वायु के गुण बता दिये हैं।

## नस्य के गुण

नस्य ( नसवार ) दृष्टि को निर्मल रखती है, दांतों को दृढ़, केशों को पकने से रोकती है, चेहरे पर झुर्रियां नहीं पडने देती, मुख को सुगंधित तथा कंठ को भी साफ रखती है। नसवार कडवे तेल की अथवा जो शास्त्रविहित तेल या अन्य वस्तुएं हो उनकी नसवार ही लाभ करती है, तंबाकू तथा अन्य जो बाजार में नसवारें मिलती हैं वे अत्यन्त हानिकर तथा अंधा कर देने वाली होती हैं।

## वमन के गुण

वमन—खांसी, गले का कफ, स्वरभेद, तंद्रा (ऊंघनी), अधिक निद्रा, मुख से लार टपकना, दुर्गंधि, विष, कफ की ग्रहणी तथा अन्य कफ के रोगों को नाश करने वाला है।

## विरेचन के गुण

विरेचन—पांचो इन्द्रियों को बल देने वाला है, बुद्धि बढ़ाने वाला है, शरीर के सम्पूर्ण धातुओं को स्वच्छ करके बल देने वाला है, अग्नि को दीप्त करने वाला, आयु को स्थापित करने वाला तथा पित्त के रोगों का समूल नाश करने वाला है।

## बस्ति के गुण

बस्ति—वात, पित्त, कफ रक्त तथा सन्निपात को नाश करने वाला है, और विशेष वायु के जितने रोग हैं उनके लिये बस्ति भी अमृतसमान गुणकारक है।

## शीतल जल के गुण

शीतल जल हृदय को बल देने वाला, व्रण, पित्त, दाह, विष, श्रम, को नाश करने वाला है। तथा वमन, अजीर्ण, मद, मदात्यय, कुष्ठ और नवज्वर, गले के रोग, पीनस, अफारा, हिचकी, वायगोला, विद्रधि, प्रमेह, अरुचि पाण्डु को नाश करने वाला है। जल सबका जीवनमूल है। किसी

को शीतल किसी को उष्ण जल लाभ पहुँचाता है, परन्तु जल के बिना कोई रह नही सकता है।

### त्रिवी के गुण

त्रिवी कड़वी है। कफपित्त, ज्वर को दूर कर करती है, चेतना देती है और रेचन है।

### काली त्रिवी के गुण

काली त्रिवी रेचन करने वाली है, मूर्च्छा, दाह, भ्रम हरने वाली है, उष्ण है, गले मे तीक्ष्णता तथा खेच उत्पन्न करती है, अन्य गुण सनाय के समान हैं।

### इन्द्रायण ( तुम्मा ) के गुण

तुम्मे के फल व जड़, कड़वी, चरपरी, पाक मे कटु गरमी पैदा करती है, पित्तविकार, उदररोग, प्लीहारोग तथा कफ के रोगो को विरेचन द्वारा शान्त करती है। यह अत्यन्त तीक्ष्ण विरेचन है। गर्भवती स्त्रियो को नहीं देना चाहिये। इन्द्रायण (तुम्मे) की बेलें वर्षाऋतु मे खेतो मे पाई जाती है। पत्ते तरबूज के पत्तो के समान होते हैं। फल गोल २ चितकवरे बहुत सुन्दर प्रतीत होते है। ताजे फलो के रस से कई प्रकार की औषधियां बनाई जाती हैं। इसकी जड़ और फल काम मे आते हैं। यह अत्यन्त कड़वे होते हैं।

### अमलतास के गुण

अमलतास को ख्लीसफली व गुडलक्कड़ भी कहते हैं, इसका गूदा शीतल, मधुर, कषाय, तिक्त, अम्ल तथा रेचनकारक है, पित्त तथा कफ विकारो को बिना किसी कष्ट के विरेचन द्वारा बाहर निकाल देता है, यह अत्यन्त सौम्य तथा निर्दोष विरेचन है। किसी भी रोग मे, जहा विरेचन देने हों, दे सकते हैं।

वृत्तात—इसका वृक्ष होता है, पत्ते जामुन के पत्तो के समान होते हैं, जेठ-आषाढ़ मे इसके वृक्ष केवल पीले २ फूलो के गुच्छे से लदे रहते हैं, पत्तो मे केवल छोटी २ कोपले ही कहीं २ होती है, इसलिये राजवृक्ष, स्वर्णाङ्ग व

स्वर्णभूषण कहते हैं, अर्थात् पीले फूलों से सोने के गहने पहरे हुए प्रतीत होता है। इसकी छाल का लेप करने से त्वचा के रोग शान्त होते हैं।

## जयपाल ( जमालगोटे ) के गुण

जमालगोटा भारी है, रेचक है, चिकना है, पित्त और कफ को दूर करने वाला है। बड़ा तेज जुलाब है। इसको शुद्ध करके बरतना चाहिये।

शोधनविधि—जमालगोटे के बीजों पर कड़ा छिलका होता है जो कि हलके दबाव से टूट जाता है, छिलका उतार कर अंदर की गिरी को भैंस के गोबर के पानी में घोल उबाल लेना चाहिये, उबलने पर गिरी फूल जाती है, फिर गिरी को जुदा करके बीच से पत्ती निकाल लेनी चाहिये, फिर इसको पीस कर किसी कोरे मटके पर बिछा देना चाहिये जिससे कि गिरी में से फालतू तेल मटका चूस ले, फिर उतार कर निम्बू के रस में खरल कर सुखा रखना चाहिये इस प्रकार शुद्ध जमालगोटा अत्यन्त गुणकारी विरेचन होता है।

## दन्ती गुण

दन्ती जयपाल वा जमालगोटे की जड़ होती है, दन्ती रस और पाक में कटु होती है, दीपन है, तीक्ष्ण है, उष्ण है, पित्त, रक्त, सूजन, क्रिमि और उदररोगों को दूर करती है।

दन्ती—दन्ती के तीन भेद होते हैं, १—छोटी दन्ती, २—बड़ी दन्ती, ३—द्रवन्ती। १ एक छोटी दन्ती को दन्दनदाना भी कहते हैं। दन्ती के पत्ते द्रान्ती या तून की तरह दन्दानों वाले होते हैं, इसीलिये दन्ती कहते हैं अर्थात् दांतों वाली। छोटी दन्ती के बीज जमालगोटे की अपेक्षा छोटे होते हैं और बच्चों की घुट्टी आदि में प्रयोग करते हैं। बड़ी दन्ती के बीज को जमालगोटा कहते हैं, यह बड़े मनुष्यों के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं। द्रवन्ती के पत्ते बड़े २ होते हैं। जैसे एरण्ड के पत्ते होते हैं, अनूप देश में इसकी हरी लकड़ी गाड़ देने से इसके पत्ते फूट आते हैं और धीरे २ कुछ समय में कतार की कतार में असंख्य पेड़ हो जाते हैं। इसका पत्ता व टहनी तोड़ने से इससे हलके नीले रंग का पतला द्रव (दूध सा) निकलता

है इसी लिये द्रवन्ती कहते हैं, इसके बीज जमालगोटे के बीजो की अपेक्षा दुगने वा तिगने बड़े होते हैं, यह बड़ा भयंकर जुलाब होता है। यदि भूल से मनुष्य इसको खा जावे तो कभी २ खून के दस्त और वमन आरम्भ हो जाते हैं। इसका पशुओ पर व्यवहार हो सकता है।

### यवासा-धमासा के गुण

जवाह्-धमाह् दोनो एक ही प्रकार के क्षुप हैं, नदियो के किनारे, कांटेदार भाड होते हैं। इनकी जड बहुत गहरी होती है। यह वर्षाऋतु के पौदे हैं। पर दोनो तिक्त हैं, दस्तावर, शीतल, पित्त और भ्रम को दूर करने वाले है। सिर मे चक्कर व भ्रम रोग होजावे, अथवा आजकल जिसे ब्लडप्रेशर वा खून का दबाव कहते हैं उसके लिये इनका हिम वा काढ़ा अत्यन्त लाभकर है।

### मुंडी के गुण

मुंडी बूटी पानी वाले खेतो मे वा तालावो के किनारो मे अधिक पाई जाती है, इसका क्षुप बालिश्त-डेढ़ बालिश्त ऊचा और सिरे पर डोडी होती है। यह भी बहुत फैलने वाली बूटी है, इसे मुंडी इसलिये कहते हैं कि जैसे जनसमूह के सिर ही सिर प्रतीत होते हैं वैसे ही मुंडी के खेत में मनुष्यो के सिरो के समान इनकी डोडिया ही डोडिया दिखाई पड़ती हैं। मुंडी परम रक्तशोधक है, तिक्त है, चरपरी है, उष्ण है, मधुर है, लघु एवं दीपन पाचन है, गडमाला, अपची, पाण्डु उपदंशरोगो को दूर करती है, बुद्धि तथा स्मृतिशक्ति को बढ़ाने वाली तथा रसायन है।

### अपामार्ग (पुठकंडा) के गुण

अपामार्ग को पुठकंडा इसलिये कहते हैं कि इसको मञ्जरी पर उलटे बीज लगे रहते हैं, बीज चावलो के समान होते हैं और ऊपर का छिलका नोकदार चुभने और चिपकने वाला होता है। वर्षाऋतु में उत्पन्न होता है, पौष-माघ मे प्रायः सूख जाता है, इसके भाड़ो मे उलझ कर विपत्ति मे फंस जाना है क्योकि इसके बीज कपड़ो मे चिपक जाते हैं और उनका बीनना भी कठिन हो जाता है। अपामार्ग के पत्ते, बीज, मूल सब काम आते हैं।

अपामार्ग सर है, तीक्ष्ण है, कफ और वात को हरने वाला है, दीपन है, दद्रु, ववासीर, अफारा, शूल, कण्डू, उदर और अपची (कंठमाला, हंजीरां) को दूर करता है। इसके पञ्चांग को जला कर क्षारविधि से क्षार बनाया जाता है, इसकी क्षार श्वास के लिये अत्यन्त हितकारी है।

## कमीला के गुण

कमीला कफ, पित्त, क्रिमि, गुल्म, उदर के रोग, व्रणरोगों के लिये अत्यन्त लाभकारी है। जखम पर तेल लगाकर ऊपर से छिडक देते हैं। इससे व्रण के सम्पूर्ण ( परोक्ष-अपरोक्ष ) विकार दूर होते हैं और अन्दर के प्रयोग के लिये लगभग ६ माशे तक कमीला लेकर खट्टी लस्सी के साथ पिलाते हैं, इससे पेट के कीड़े मर कर बाहर निकल आते हैं।

वृत्तान्त—इसका भी वृक्ष होता है। मंजरियां आती हैं और शीतकाल मे मंजरियों मे गोल २ फल लग आते हैं, वैशाख ज्येष्ठ मे इसके फल पीपल के फल के समान हो जाते है और पीछे उनका रग बिलकुल लाल हो जाता है, पकने पर मनुष्य इसकी शाखाओ को काट लेते हैं और किसी कपड़े पर झाड़ते जाते हैं, और डोडियो पर का लाल रग का चूर्ण कपड़े पर झडता जाता है, इसी चूर्ण को कमीला कहते हैं। आजकल कमीला औषधियो की बजाय लाल रग बनाने के काम भी आता है इसलिये बाहर विलायतो को भेजा जाता है। और जो हमे मिलता है उसमे नकली भी बहुत बनता है, ईंटो का चूरा बारीक करके उसमे मिला देते हैं। इसकी पहचान यह है कि इसे पानी मे घोल दीजिये, ईंटो का चूरा नीचे बैठ जायगा, कमीला पानी मे तैरता रहेगा।

## नील ( वसमा ) के गुण

नील ( वसमा ) दस्तावर, कड़वा, केशों को काला करनेवाला, मोह, भ्रम तथा विष को दूर करने वाला, गर्म है, उदररोग, कफरोग तथा तिल्ली को दूर करने वाला है।

वृत्तांत—नील के पौदे डेढ़ दो फुट तक ऊंचे होते हैं, इसके पत्ते, 'शरपुखा' बूटी के समान परन्तु रंगत मे अधिक गहरे होते हैं। रंगरेज़

( कपड़ा रंगने वाले ) इसका साड़ डाल नील बनाया करते थे, किन्तु विलायती नील वा अनेक प्रकार के रंग आजाने से अब नील का व्यवसाय बहुत कम हो गया है।

## नीम के गुण

नीम शीतल है, हलका है, ग्राही है, अग्नि तथा वायु को बढ़ाने वाला है, श्रम, कफरोग, व्रण, कुष्ठ, प्रमेह तथा पित्त को नष्ट करने वाला और परम रक्तशोधक तथा अत्यन्त कड़वा है।

वक्तव्य—नीम को कौन नहीं जानता, भारत के कोने २ में कहीं न कहीं नीम के वृक्ष मिल ही जाते हैं। इसके पत्ते, छाल, बीज, फूल, जड़ सब काम आते हैं। बीजों से तेल निकाला जाता है। जो कि मालिश के लिये तथा कई प्रकार के मरहम बनाने के काम आता है।

## चोक के गुण

सत्यानासी की जड को चोक कहते हैं, चोक दस्तावर है, कडवी है, मद को नष्ट करती है, वमन भी लाती है, केश पैदा करने वाली है, क्रिमि, खुजली, कफ, कोढ़, विष, अफारा को दूर करती है।

वक्तव्य—सत्यानासी के पौदे लगभग दो फुट तक ऊंचे हो सकते हैं। इसके पत्ते लम्बे, किनारों से कटे हुए, बिलकुल नीले रंग के श्वेत धारियों वाले तथा कांटों वाले होते हैं। इसका फूल पीले रंग का होता है, शीतकाल में खूब फैलती है, वैसाख जेठ में इसकी कांटेदार लंबी २ डोडियों के मुंह खुल जाते हैं और काले २ बीज प्रकट हो जाते हैं, डोडियों के मुख नीचे करने से सारे बीज अपने आप नीचे बिखर जाते हैं। इसके बीजों से तेल निकाला जाता है जो कि रक्तशोधन के काम आता है। आतशक के रोगियों के लिये यह बड़े काम की चीज़ है। इसका दूध भी सोने जैसा पीला होता है, अतः स्वर्णक्षीरी भी कहते हैं।

## मदनफल ( मैनफल ) के गुण

मैनफल को राड़ा कहते हैं। जंगलों में इसके वृक्ष अधिक पाये जाते हैं, इसका वृक्ष अधिक ऊंचा व बड़े वृक्षों में से नहीं होता। हां, तीन चार

गज के लगभग ऊंचा होता है, इसकी शाखाओं पर मोटे २ कांटे भी होते हैं। वर्षा में इसका फूल आता है, सरदी में इसके हरे २ फल बढ़ते रहते हैं, और वसन्त ग्रीष्मऋतु में इसके फल पक कर पीले रंग के हो जाते हैं। इसलिये वसन्तऋतु के कचपके फल ही लेने चाहिये। मैनफल तिक्त है, उष्ण है, वीर्य में भी उष्ण है, लघु है, लेखन है, वमनकारक है, रूक्ष है, कुष्ठ, कफ, गुल्म, अफारा और शोथ को दूर करता है। उलटी लाने वाली जितनी दवाइयां हैं राढा उन सब में उत्तम है। फोडे फिंसी पर पानी में घिस कर लेप लगाने से बहुत शीघ्र व्रण पक कर फूट जाता है। यह दो गुण राढा में विशेष पाये जाते हैं।

### पाषाणभेद के गुण

पाषाणभेद को पत्थरफोड भी कहते हैं, पाषाणभेद पथरी को दूर करता है, ग्राही है, चरपरा है, शीत और कफ को दूर करता है, गलगंड, रक्त, वात तथा मूत्राशय के रोगो को दूर करता है।

वक्तव्य—पाषाणभेद दो प्रकार का पाया जाता है, एक क्षुप एक डेढ़-फुट तक ऊचा होता है, पत्ते किनारो पर दंदानेदार मोटे और खट्टे होते हैं। दूसरा पाषाणभेद शिमला, मसूरी आदि उच्च पर्वतो पर चट्टानो को फोड़ कर उत्पन्न होता है, इसका पत्ता सागवान के पत्ते से भी अधिक चौड़ा पाया गया है, नं० १ का पत्ता मोटा और चिकना होता है, नं० २ के पत्तो पर तीक्ष्ण रुई सी होती है। यह चट्टानो पर बिछा होता है, इसकी जड़ वा काण्ड भी चट्टानो में घुसे रहते है। नं० २ का पाषाणभेद रक्तार्श और रक्तप्रदर के लिये भी अत्युत्तम माना गया है।

### कचनार के गुण

कचनार शीतल, रूक्ष, कब्ज करने वाली, हलकी, पित्त और रक्त रोगो को नाश करने वाली तथा ज्वर, प्रदररोग, तपदिक, गंडमाला, सिल तथा खांसी को भी नष्ट करती है।

वक्तव्य—कचनार एक प्रसिद्ध वृक्ष है, बाजार मे इसकी कच्ची कलियां फाल्गुन चैत्र में विकने आती हैं, इनका साग तथा रायता बहुत

स्वादिष्ट बनता है। दवाइयो मे इसकी छाल काम आती है, स्त्रियो के प्रदर तथा गंडमाला ( हंजीरा ) रोग के लिये यह अत्युत्तम औषध है । इसके फूल कासनी, नीले तथा पीले रंग के देखे गये हैं। कई वृक्षो को आश्विन कार्तिक मे भी फूल आते हैं।

## निर्गुंडी ( सम्भालू ) के गुण

निर्गुंडी कटु, तिक्त, कषाय, लघु, दीपन, पाचन होती है, नेत्रो को अत्यन्त हितकारी, आम वात, शोथ, शूल कृमि, कुष्ठ, रक्त तथा कफ, वायु, अरुचि और सब प्रकार के व्रणो मे हितकारी है।

परिचय—निर्गुंडी को सम्भालू, सिन्धुवार तथा देसी भाषा मे बन्हा भी कहते हैं, इन सबका अर्थ रोकने वाला है, जैसे १—संभालु-संभालने और रोकने वाला, २—सिंधुवार-सिन्धु अर्थात् नदी वा दरिया को वारण करनेवाला वा रोकने वाला, ३—बन्हां अर्थात् बाध डालने वाला, इन तीनो नामो का एक ही अर्थ है। संभालू एक प्रसिद्ध वृक्ष है, गीष्मऋतु मे इसकी शाखा काट कर लगाई जाती है, थोड़े ही काल मे इसमे नये पत्ते फूट आते हैं और कुछ वर्षों मे छोटे से वृक्ष का आकार धारण कर लेती हैं। इसकी लकडी लचकदार और चिकनी होती है इसलिये किसान लोग नदी के बहाव से अपने खेतो की रक्षा के लिये इसे लगा देते हैं, रेतली व नमदार जमीन मे यह खूब फैलता है, बरसाती नदी का तीव्र वेग इससे टकरा कर गुजर जाता है, भूमि को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता इसकी जड़े भी दृढ़ होती हैं, पानी के बहाव से उखड़ती नहीं हैं, एक बार लगाने से यह अपने आप फैल कर बढता जाता है इसी लिये इसे सिंधुवार वा संभालू कहते हैं। इसके पत्ते लम्बे, पतले, नोकदार एवं पाच २ के समूह मे होते हैं, पत्तो की पीठ श्वेत होती हैं। इसमे तुलसी के समान नीले रंग की लंबी २ मंजरियां लगती हैं। इसकी दो तीन पत्तिया चबाने से शूल को तत्काल आराम आ जाता है। इसके काढ़े की टकोर करने से शोथ दूर होता है, इसके पत्तों से झाड़ा करने से विष दूर होते हैं। प्रसूति स्त्रियो को इसके काढ़े से स्नान कराया जाता हैं।

## ककड़सिंगी के गुण

काकड़ासिंगी कुछ खट्टी, कसैली, दस्तावर तथा बच्चों की खांसी को दूर करती है, रूक्ष है, पित्त के व्रण, कफरोग तथा नेत्रशूल में हितकर है।

परिचय—ककड़सिंगी का वृक्ष भी छोटा सा होता है, किन्तु जंगलों में इसकी फली मेढ़े के सींग या कैकड़ा की अगली कातरों की तरह मुड़ी हुई और बीच से पोली होती है, इसको मुंह मे रख कर चूसने से खासी दब जाती है, बच्चों की खासी मे इसका चूर्ण बना कर मधु से चटाया जाता है।

## पुनर्नवा ( इटसिट ) के गुण

इटसिट रूखी, गर्म, दस्तावर, कड़वी, मधुर, तीक्ष्ण होती है, यह शोथ, पाण्डुरोग, वायुरोग, व्रण तथा कफ को नाश करने वाली एवं रुचिकर है।

वक्तव्य—पुनर्नवा का अर्थ है फिर नई, अर्थात् बरसात का पानी पड़ते ही इसकी जड फिर नई बेल का रूप धारण कर लेती है। यह दो प्रकार की होती है एक लाल फूल वाली जो कि बरसात के बाद तक भी कम सूखती है। दूसरी श्वेत फूल वाली जो अधिकतया वर्सात मे भी उत्पन्न होती है और ग्रीष्म से पूर्व २ सूख जाती है। यह खेतो मे आम फैली रहती है। पाण्डु व जिगर के रोगो मे यह अत्यन्त हितकारी है।

## रास्ना ( रायसन ) के गुण

रायसन गर्म, कड़वी, वात और कफ रोगो को जीतने वाली, शोथ को, श्वासरोग को, शूल तथा उदररोगो को दूर करती है।

वक्तव्य—असली रास्ना का अभी तक ठीक निर्णय नहीं हो पाया, कोई कुछ बर्तता है तो कोई कुछ, निघण्टु मे रास्ना को युक्तरसा अर्थात् जिसमें हर वक्त रस मौजूद रहे एलापर्णी अर्थात् जिसके पत्ते इलायची के पत्तो के समान हो। आजकल ऐसी रास्ना कठिनता से मिलती है।

## शतावरी के गुण

शतावरी को सतावर भी कहते हैं, इसे शतपुत्री वा सहस्रपदी भी

कहते हैं, इन सबका अर्थ है सैंकडो पुत्रो वाली व हजारो पाओ वाली। शतावरी का पौदा अधिक से अधिक ६-७ फुट तक का देखा गया है, इसके पत्ते वारीक झाऊ (बावूना) के समान होते हैं, शाखाओ पर लंबे २ बे-नोकदार काटे होते हैं, शाखा शीघ्र टूटनेवाली होती है। इसकी जड उखाड़ने से एक पौदे के नीचे से ही सैकडो लम्बी पतली २ दूध से भरी हुई जडें निकल आती हैं, इनका ताजा स्वरस अधिक मात्रा मे निकल सकता है जो कि अत्यन्त गुणकारक होता है। बाजार मे इसकी भूरी २ चमकदार जड़ें मिलती हैं। शतावरी—भारी है, चिकनी है, शीतल है। यह रसायन है, पुरुषो के वीर्य को बढ़ाती है और स्त्रियो के दूध को बढाती है। यह पुष्टिकर तथा नपुंसकता, शोफ, वातरक्त को दूर करती है। वसन्तऋतु मे में इसकी कोमल २ शाखाएं फूटती हैं जिनका शाक अत्यन्त स्वादु एवं पुष्टिकर होता है।

## सहदेवी ( वला ) के गुण

१-सहदेवी, २-खरैंटी, ३-मरैहटी, ४-गगेरन, यह ४ प्रकार की वला होती हैं। चारो वलाए शीतल, मधुर, वल और कान्ति को करने वाली होती हैं। चिकनी, ग्राही, वात, क्षय, पित्त, रक्त तथा सब प्रकार के प्रमेह को दूर करने वाली होती हैं। वला को तूती वूटी भी कहते हैं इसके पत्ते तून के समान और लेसदार होते हैं। इसके फूल पीले और श्वेत भी होते हैं, अतिवला को कंघी व पिटारी भी कहते हैं, इसका झाड़ सभालू के समान ऊंचा होजाता है, नागवला के पत्ते चिकने, टहनी काले से रंग की होती है, इसके वीजों को बीजवंद कहते हैं। वला हृदय को तथा सारे शरीर को वल देने वाली और रसायन होती है।

## तेजवल के गुण

तेजवल चरपरा, तीक्ष्ण, पाचन, गर्म अग्निकारक है। श्वास, कास, कफ, वमन को दूर करता है। मुख को स्वच्छ करता है, अत्यन्त रुचिकर है। तेजवल के वृक्ष शिमला आदि पर्वतस्थानो पर पाए जाते हैं। इसके पत्ते गुलाव की तरह तथा शाखाएं भी काटेदार होती हैं। इसकी शाखाओ

की दातुन की जाती है जो कि चरपरी और सुगन्धयुक्त होने से मुख दातो को स्वच्छ और सुगन्धि युक्त कर देती हैं। इसके बीजो को तुम्बरु या हसामा भी कहते हैं।

## मालकंगुनी के गुण

मालकंगुनी को ज्योतिष्मती कहते हैं, इसका वर्णन हम पीछे ५३६ पृष्ठ पर कर आए हैं, ज्योतिष्मती इसीलिये कहते हैं कि यह मस्तिष्क ( माथे की आख, बुद्धि ) को बढाने वाली होती है। ज्योतिष्मती-कटु है, तिक्त है, तीक्ष्ण एवं दस्तावर है, कफवात को दूर करती है, अत्यन्त गर्म है, वाणी, बुद्धि, स्मृति तथा भूख को बढाने वाली है।

## देवदार के गुण

देवदार को दयार कहते हैं। देवदारु का अर्थ देवताओ की लकड़ी, देवदारु के वृक्ष ( ८ हजार फुट तथा कुछ इससे अधिक ऊचे ) हिमालय पर्वत मे पाए जाते हैं, हिमालय को देवताओ का स्थान कहा जाता है। दूसरा इसका इन्द्रदारु वा अमरदारु, इन्द्र का अर्थ हो देवताओं का राजा, उसका वृक्ष, अमर देवताओ का वृक्ष—इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि वृक्षो का राजा और न मरने वाला वृक्ष, यह अर्थ बिलकुल ठीक है। इसके वृक्ष सब वृक्षो मे ऊंचे हिमालय की चोटियो पर अत्यन्त शोभित होते हैं। इसकी लकड़ी सैकड़ों वर्ष तक पडी रहने पर भी खराब नहीं होती, न इसको घुन व कीडा खा सकता है और न ही दीपक। इसकी लकड़ी बहुत कोमल तथा सुगन्धियुक्त होती है, इस लकड़ी को तो सब लोग जानते हैं। आजकल घर २ मे इसकी लकड़ी के दरवाजे, खिड़कियां तथा अन्य आवश्यक सामान बनाया जाता है। इससे लाखो रुपयो का व्यापार चलता है। इसकी और भी कुछ किस्मे हैं। गुण—देवदारु कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, उष्ण, लघु, हिचकी, अफारा, शोफ, ज्वर, कण्डू, कफ और वात-रोगो को दूर करता है।

## सरल ( चीड़ ) गुण

चीड़ की लकड़ी—रसमे मधुर और पाक मे कटु, चिकनी, हलकी,

गर्म, वायुरोगो को, नेत्र, कंठ तथा कर्णरोगो को दूर करती है। चीड़ भी देवदार की किस्म की लकडी है, किन्तु इसके जंगल ४ हजार फुट तक ही ऊंचे जा सकते हैं और दयार से इसकी लकडी हलकी होती है। इस में से ही गन्धाविरोजा निकलता है, इसकी गाठो मे तेल होता है। पुराने जङ्गली ग्रामीण इसकी लकडी के प्रकाश से मशालो का काम लेते रहे हैं। इसके जगल की हवा व जल तपदिक के रोगियो के लिये अत्यन्त हितकर है। गन्धाविरोजा सब प्रकार के व्रणो के मरहम के लिये वर्ता जाता है।

## पुहकरमूल के गुण

पोहकरमूल रियासत चम्बा वा काश्मीर से आता है, यह कुठ का भेद है, आकार मे शृंगी विष के समान नोकदार होता है, इसमे से सुगंधि निकलती है। पोहकरमूल कडवा, चरपरा, गर्म, वायु और कफ के ज्वर, कास, श्वास तथा अन्य रोगो को शान्त करता है, इसके अतिरिक्त शिरशूल, सन्निपात, पसली का शूल, कृमि, शोथ आदि रोगो को भी नष्ट करता हैं। मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक।

## कुष्ट के गुण

जहा पोहकरमूल उत्पन्न होता है वही कुठ उत्पन्न होती है, कश्मीर और चम्बा के राज्य दोनो को ठेके पर दे देते हैं। कुठ विलायत को जाती है और इससे तेल निकाला जाता है इस लिये बाजार मे इसका भाव दो रुपया प्रति सेर से आठ रुपया प्रति सेर तक हो जाता है। कुठ कड़वी है, चरपरी है, मधुर है, शुक्रकारक है, हलकी है, ज्वर, कास, श्वास, वातरक्त, कोढ़, क्रिमि, कफवात के रोग तथा विसर्प को दूर करती है। औषधियो के अतिरिक्त साधारण जनता इनको गरम कपडो मे रखती है, इससे कपडो मे कीडा नहीं लगने पाता और कपड़े सुरक्षित रहते हैं। मात्रा २ रत्ती से ४ रत्ती तक।

## भडिंगी के गुण

भडिंगी बाजार मे श्वेत, पीत रंग की छाल के टुकड़े से मिलते हैं। भडिगी रूक्ष है, कड़वी, चरपरी, पाचन, रुचिकर और गर्म है, शोफ, खासी,

कफश्वास, ज्वर, पीनस और वायुरोगों को शान्त करती है । विशेषकर पुरानी खांसी के लिये अत्युत्तम है ।

### कायफल के गुण

कायफल के वृक्ष भी पहाड़ी जंगलो मे पाए जाते हैं, इसकी छाल काम मे आती है, जो कि बहुत मोटी और लाल से रंग की होती है । इसकी छाल का चूर्ण बना कर नसवार के काम आता है । सन्निपात आदि मे इसका क्वाथ भी बना कर पिलाया जाता है । कायफल—तीक्ष्ण, कड़वा, चरपरा, वात, कफ, प्रमेह, श्वास, कास, सन्निपात, पार्श्वशूल, कण्ठ के रोग, अरुचि तथा श्लेष्म के लिये अत्यन्त हितकर है। इसकी नसवार देने से मूर्च्छा, वातश्लेष्म का शिरशूल, प्रतिश्याय आदि दूर हो जाते हैं । इसके काढ़े की चटनी मधु मिला कर गले मे लगाने से गले के सम्पूर्ण रोग दूर हो जाते हैं ।

### मुस्तक के गुण

नागरमोथा चरपरी, शीतल, तीक्ष्ण, कसैली, दीपन, पाचन होती है, कृमि, पित्तरक्त, कफ और तृष्णा को दूर करती है । मोथा दो प्रकार की होती है, १-जगली मोथा, २-नागरमोथा । बरसात के मौसिम मे खेतो मे एक प्रकार का घास होता है जिसके बीच मे से तिकोनी डडी निकलती है, इसके ऊपर श्वेत रंग का फूल होता है, जिसे पञ्जाबी मे डीला घास कहते हैं, इसकी जड़े बड़ी सुगंधित होती हैं, यह १ मोथा है । बड़े २ तालाबो के किनारे व अनूपदेश मे जो मोटी २ जड़ो वाले, मोटी डडी वाले बारहमासी क्षुप होते हैं वह २ नागरमोथा कही जाती है । यह बडा सुगंधित द्रव्य है, सुगधित तेल, उबटन वा अन्य हवनसामग्री आदि मे इसका प्रयोग किया जाता है ।

### धातकी ( धावे के फूल ) के गुण

धावे के फूल कसैले, दस्तो को रोकने वाले, शीतल, मद करने वाले, रक्त और पित्त को शान्त करने वाले, रक्तार्श, रक्तपित्त व रक्तप्रदर, रक्तप्रवाहिका को नष्ट करने वाले, कृमिरोग, विसर्परोग, तृष्णा और विष को नष्ट करते हैं ।

वक्तव्य—धावे का भी झाड होता है, इसकी पत्ती नोकदार लम्बी होती है, वसन्त और ग्रीष्म मे इसके लाल गुलाबी रंग के पतले २ फूल लगते हैं। प्रयोग मे इसके फूल ही लिये जाते हैं।

### माई के गुण

माई को संस्कृत मे माचिका कहते है, यह भी अत्यन्त ग्राही (काबिज) तथा शोषण होती है। माई रस मे कषाय और पाक मे अम्ल होती है शीत है, रक्तपित्त, कफ, कंठरोग, रक्तातिसार, रक्तप्रदर को नाश करती है, योनिसंकोच भी है।

### विदारीकंद के गुण

विदारीकंद शरीर को पुष्ट करने वाला, वीर्य तथा दूध को बढाने वाला, मधुर, स्निग्ध तथा भारी है, पित्त, दाह तथा वायु को शान्त करता है। रसायन है।

वक्तव्य—विदारीकंद बरसाती बेल है, जो कि जंगलो मे बहुतायत से पाई जाती है, इसके पत्ते पान की शकल के,-पर नीचे से सफेद, गांठ २ पर तीन २ (ढाक के पत्तो के समान) इकट्ठे लगते हैं, बेल प्राय: भूमि पर बिछती हुई समीप के वृक्ष पर भी चढ़ जाया करती है, जहा २ इसकी गांठ भूमि पर टिकी रहती है, वहा २ ही जड पकड लेती है और धीरे २ उसकी गांठ के नीचे कंद बनने आरम्भ हो जाते हैं। जंगली लोगो की धारणा है कि जिस बेल के जितने चप्पे (जड़दार गाठे) हो वह बेल उतने ही वर्ष की होती है। मूल जड से एक गोलकंद निकलता है जो कि एक सेर से १० सेर तक भी देखा गया है, यही विदारीकंद है, इसको धोकर छील लेते हैं और अंदर से बहुत सुंदर श्वेत वर्ण के टुकड़े कर सुखा लेते हैं, यह कंद मीठा और कुछ कड़वा होता है। टप्पो मे जो कंद निकलते हैं वे छोटे होते हैं, परन्तु बहुत कोमल, मीठे दूध के घूट ही होते हैं। गोपाल लोग वहीं उखाडते हैं और कपड़े से मिट्टी पोछ कर वहीं खा लेते हैं, इसे क्षीरविदारी कहते हैं। इसकी बेल का घास पशुओ को अत्यन्त पुष्ट तथा शक्तिशाली बनाता है।

### मंजिष्ठा (मजीठ) के गुण

मंजीठ मधुर, तिक्त, कषाय, गरम और भारी होती है, स्वर और वर्ण

को शुद्ध करती है, कोढ व विसर्प, प्रमेह उपदंश, शोथ, श्लेष्मा, नेत्रपीड़ा, विष तथा अन्यरक्त रोगों के लिये अत्यन्त लाभदायक है। बाजार में इसके लाल रंग के लंबे २ टुकड़े आते हैं। खून को साफ करने के लिये यह एक ही चीज है। इसका काढ़े और चूर्णों मे प्रयोग होता है। इसका मजीठी रंग भी बनता है।

## हरिद्रा ( हलदी ) के गुण

हलदी कडवी, कसैली, चरपरी, रूक्ष, कफ, पित्त, प्रमेह, रक्त, शोथ, पाण्डुरोगों को दूर करती है। हलदी प्रत्येक व्यक्ति के नित्य खाने की चीज है, इसका पौदा अदरक के पौदे के समान होता है, नीचे से कद पीले रंग का अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होता है। चैत्र वैशाख मे इसकी फसल तैयार होजाती है, लोग इसे उबाल कर सुखा लेते हैं और बाजार मे बेच आते हैं। हमारी खाने की हलदी यही होती है। दवाइयो के लिये कच्ची हलदी का ही प्रयोग सर्वोत्तम रहता है। इसका स्वरस मधु मिलाकर नित्य पीने से सब प्रकार के प्रमेह, चर्बी के रोग, रक्तरोग और यकृत् के विकार दूर होते हैं।

## दारुहरिद्रा ( दारहलदी ) के गुण

दारुहलदी के गुण भी हलदी के समान हैं, विशेषकर यह नेत्र और कान के रोगो मे हितकारी है। रसाञ्जन ( रसौंत ) इसका ही बनाया जाता है।

वक्तव्य—दारुहलदी का झाड़ मेंहदी के समान होता है, पत्ते भी वैसे कुछ बड़े होते हैं, परन्तु इसमे कांटे होते हैं। यह पहाड़ो मे पाई जाती है, इसकी लकडी अंदर से पीली होती है, वहा के लोग लकड़ी के टुकड़े करके उबालते हैं और फिर गाढ़ा करके रसौंत वा रस तयार कर लेते। हैं बाजार मे पत्तो में लिपटी हुई यही रसौंत बिकती है। यह आम घरेलू दवाई है, प्रायः बच्चो के नेत्र, फोड़े, फिंसी, पेट के कीड़ो पर इसका प्रयोग होता है। खूनी बवासीर के लिये भी इसका प्रयोग अत्युत्तम है।

## चक्रमर्द ( पमाड़ ) के गुण

पमाड़—इसे देसी भाषा मे एलवां भी कहते हैं, यह बरसाती

पौदा है, वर्सात की पहली वारिश पडते ही यह भूमि से फूट निकलती है, इसके बादामी पीले फूल निकलते हैं, श्रावण के अन्त मे इस मे लम्बी २ फलिया निकल आती है, मार्गशिर पोष मे यह बिलकुल सूख जाता है, फलिया फट कर बीज भूमि पर बिखर जाते हैं, बीज इसके लम्बे गोल २ दोनो ओर से तिरछे नोकदार होते हैं, यही इस की जीवनी है। इसका संस्कृत नाम पामारि बिगड कर पमाड बन गया, जिसका अर्थ है पामा खुजली उसका अरि-नाश करने वाला। दूसरा नाम है चक्रमर्द अर्थात् चक्र दाद व धद्दर को कहते हैं उसको भी यह नाश करता है। इसके बीजो की रगत मेढ़े की पीली २ आंखो के समान होती है इसलिये इसे मेषलोचन कहते हैं। पमाड—हलकी, रूखी, वात-पित्त-कफ-नाशक, शीतल है, श्वासरोग कोढ़, खुजली, विष, दद्रुमडल तथा वातरक्त को नाश करती है। इसके बीजो को खट्टी लस्सी मे भिगो छोडते हैं जब बिलकुल गल कर एकजान हो जावें तो उस लस्सी मे बारीक गधक मिला मालिश करने से दाद, खुजली तथा अन्य रक्तविकार शान्त हो जाते हैं। इसके बीजो का पाताल यन्त्र से तेल भी निकाला जाता है। इस तेल के लगाने से दाद कण्डू आदि दूर होते हैं। ताजे कोमल पत्तो की भुजिया बहुत अच्छी लगती है।

## बावची के गुण

बडी एलवां को लोग बावची कह देते हैं, परन्तु वास्तव मे बावची गुण मे तो एलवां के समान है परन्तु एलवां का भेद नहीं। क्यो कि बावची से भी तो एक विशेष प्रकार की गंध आती है जो रुचिकर नही होती, इसके खाने से उलटी आजाया करती है। गुण-बावची मधुर, तिक्त, पाक में कटु, दस्तावर एवं रसायन है। इसके बीज काले रंग के गोल चपटे होते हैं। बाह्यलेप आदि के लिये इसके पमाड़ और बावची के बीज इकट्ठे ही व्यवहार मे आते हैं। बावची परम रक्तशोधक और कुष्ठनाशक है। पित्त, रक्त, कफ, प्रमेह, ज्वर और सब प्रकार के कृमियो को दूर करती है।

## भृङ्गराज ( भांगरा ) के गुण

भागरा कड़वा, चरपरा, रूक्ष, कफनाशक, रुचिकर, वात और कुष्ठ

को दूर करता है। सिर के रोगो के लिये तथा बालों को काले वा दृढ़ करने के लिये इसका प्रयोग करते हैं। यह रसायन है।

वक्तव्य—भांगरा एक घास-सा है जो कि प्रायः नालियों, नदियों, तालाबों वा अधिक जल वाले स्थानों में होता है, इसका पत्ता लम्बा, नोकदार और फूल गोल, चपटा और श्वेतवर्ण का होता है। इसमें से काला स्वरस निकलता है, सिर में जितने प्रकार के तैल लगाये जाते हैं भृङ्गराजतैल सब से उत्तम है।

## पित्तपापड़ा के गुण

संस्कृत मे इसे पर्पट कहते हैं, कारण कि यह सूखकर इतना नर्म हो जाता है कि हाथ छूते ही पापड़ की तरह चूरा चूरा हो जाता है, इसी लिये इसे पर्पट कहते हैं। पापडा—अत्यन्त कडवा, पित्त तथा पित्तज्वर, कफ और रक्तविकार, तृष्णा, भ्रम को दूर करता है। पापडा शीत, रूक्ष, वातकारक, ग्राही अत्यन्त कडवा और भारी होता है।

## त्रायमाण के गुण

त्रायमाण को त्रामण कहते हैं, यह पांच-छः हजार फुट की ऊँचाई पर शीत पर्वत-प्रान्तों मे होती है। इसका पत्ता लम्बा, फूल भी लम्बे और नीले रङ्ग के होते हैं। यह अत्यन्त कड़वी होती है। त्रायमाण दस्तावर, पित्तज्वर, कफ, रक्तविकारों को तथा शूल को नष्ट करती है।

## पतीस के गुण

पतीस को प्रतिविषा या अतिविषा कहते हैं, इसका अर्थ है विष को नाश करने वाली। पतीस उष्ण है, पित्तज्वर, अतिसार और कफ के रोगों को नाश करने वाली है। यह भी अत्यन्त कडवी है, बच्चो के ज्वर, खांसी और अतिसार के लिये मघ, काकडासिंगी और नागरमोथा के साथ इस का प्रयोग करते हैं। बाजार मे इसकी पतली पतली नोकदार जड़ें मिलती हैं, यह भी श्वेत काली के भेद से दो प्रकार की होती है।

## काकमाची (मकोय) के गुण

मकोय तीनो दोषो को नाश करती है, स्निग्ध है, उष्ण है, हृदय को

वल देने वाली, विशेषकर पाण्डु, जिगर के रोग और शरीर के शोथ को दूर करती है। रसायन है।

### काकजंघा के गुण

काकजंघा को कुरमुरु भी कहते है, इसकी धारीदार डंडी होती है, शाखाओ के जोड पर मोटी मोटी गांठें होती हैं। इसके पत्ते बारीक और फूल भी छोटा कासनी रंग का होता है। काकजंघा विषमज्वरो को दूर करती है, विशेषकर चतुर्थ ज्वर तथा नीद लाने मे हितकर है। रक्तपित्त तथा मूत्ररोगो को भी शान्त करती है।

### लोध्र के गुण

लोध दो प्रकार की होती है, एक दस्तावर और दूसरी दस्त रोकने वाली है, दूसरी को लोधपठानी कहते है और प्रथम को गुलेची कहते हैं। गुलेचीं दस्तावर है,शीतल है,नेत्ररोग,कोढ़,कफपित्त को हरने वाली है।

२. लोधपठानी—रक्तविकार, नेत्रविकार, अतिसार, प्रदर, प्रमेह तथा पित्तरोगो को शान्त करती है। बाजार मे भुरभुरी-सी छाल मिलती है।

### विधारा के गुण

विधारा कषैला, दस्तावर, गर्म, कुछ कडवा, आमवात, वातरक्त, कफ और प्रमेह को दूर करता है। विधारे की मोटी मोटी पुरानी वेले और चौड़े चौड़े पत्ते होते हैं। विदारी कन्द के समान यह भी वर्सात मे अधिक फैलता है। पशुओं को खिलाने से दूध अधित बढ़ता है। इसके वीज व जड़ काम मे आते हैं।

### वंदालडोडा (घग्घरवेल) के गुण

घग्घरवेल पानी वाले छभो मे अधिक पाई जाती है, इसके पत्ते कड़वी तोरी की तरह किन्तु छोटे, फल गोल ककोड़े के बराबर ऊपर काटे भी वैसे ही। पक्के फलो के अन्दर से जाला व वीज कड़वी तोरी के समान निकलते है। यह अत्यन्त कड़वी, तीक्ष्ण, शोथ, वायुरोग, कफ की बवासीर, कृमिरोग, कफ के रोग, प्रतिश्याय, नजला शूल, रक्तविकार (कुष्ठ आदि), क्षय, हिचकी तथा ज्वर को दूर करती है। वमन विरेचन लाने वाली है तथा रज को शुद्ध करती है और गर्भ को गिरा देती है।

## लज्जालु ( लाजवन्ती ) के गुण

लाजवन्ती शीतल, तिक्त, कसैली, रक्तपित्त, रक्तातिसार, रक्तप्रदर तथा कफ के विकार को नष्ट करती है। योनिरोगों के लिये भी अत्युत्तम है।

वक्तव्य—लाजवन्ती का क्षुप बेल समान भूमि पर अपने चारों ओर फैलता है, इसके पत्ते कीकर के पत्तों के समान, फूल लाल, पीले, गुलाबी, कासनी रंग के, कीकर के फूलों के समान होते हैं, किन्तु आकार बड़े होते हैं। इसकी जड़ व शाखाएं लाल रंग की होती हैं, फली छोटी व चपटी बीज भी चपटे मसूर के दाने के समान परन्तु बहुत छोटे। इसकी बड़ी पहचान यह है कि हाथ लगाते ही इसके पत्ते बंद हो जाते हैं और टहनी झुक जाती है, इसी लिये लज्जालु व लाजवन्ती कहते हैं। प्राय इसके बीज वीर्य तथा स्त्रियों के योनिरोगों में वर्ते जाते हैं।

## मुसली के गुण

मुसली मधुर है, वृष्य है, उष्णवीर्य है, भारी है, तिक्त है, शरीर को पुष्ट करनेवाली है, गुदा के रोगों को नाश करने वाली तथा रसायन है।

वृत्तांत—मुसली पहाड़ी नमदार जंगलों में होती है, इसके पत्ते खजूर के पत्तों के समान, किन्तु वही दो तीन पत्ते होते हैं, पौदा भी बालिश्त भर ऊंचा होता है, बड़ी आसानी से उखड़ जाता है, और नीचे से लम्बी सी लेसदार दूधिया जड़ निकलती है इसे ही मुसली कहते हैं। मुसली दो प्रकार की होती है, काली और सफेद, सफेद बहुत गुणकारी होती है। नपुंसक मनुष्य में वीर्य उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये यह सब से उत्तम है।

## कौंचबीज के गुण

कौंचबीज अत्यन्त वीर्य बढ़ाने वाले, भारी, मधुर, शरीर को मोटा करने वाले, वायु को शान्त करने वाले होते हैं। कौंच को कपिकच्छु कहते हैं। यह भी जंगली बेल है और इसके भी तीन पत्ते एक वृंत में लगते हैं, इसकी फलियां मोटी लम्बी और आगे से मुड़ी हुई होती हैं। फलियों पर गहरे भूरे रंग की चमकदार मखमली धुर होती है, जहां यह फली छू जाती है वहीं खुजली आरम्भ हो जाती है, और खुजाते २

खून निकल आता है। इसी लिये इसे कपिकच्छू कहते हैं, कपि के अर्थ बंदर, कच्छू का खुजली। अर्थात् बंदर की तरह इसमे शरारत होती है। इसके बीज अत्यन्त शक्ति देने वाले तथा वीर्य पैदा करने वाले और कामदेव को जगाने वाले होते हैं। खुजली के कारण इसके बीजो का संग्रह कठिन होता है किन्तु चतुर लोग इकट्ठा कर ही लेते हैं इसकी बेलो को इकट्ठा करके आग लगा देते हैं, ऊपर की बुर जब जल जाती है तो बीज इकट्ठे कर लेते हैं, यह भी छोटे बड़े भेद से दो प्रकार के होते हैं।

## विष्णुक्रान्ता ( कोयल ) के गुण

विष्णुक्रान्ता कटु है, बुद्धि बढ़ानेवाली, क्रिमि, व्रण तथा पित्त, कफ को जीतने वाली है, विषों को दूर करती है। रसायन है।

वक्तव्य—इसकी बेल फैलने वाली, पत्ते गुलाब के समान, फूल नीले बीच में श्वेत सी रेखाओ वाले होते हैं, लोग प्रायः घरो एवं उद्यानो मे लगा छोडते हैं। इसके बीज काले चमकदार होते हैं। इसकी जड प्रायः काम में आती है।

नोट—कई लोग कुलफे के साग को विष्णुक्रान्ता कहते हैं, कुलफा शीतल, लेसदार रक्त, ज्वर, पित्त और वायु को दूर करता है, सूखी बलगम को तर करता है, इसके बीज लेसदार और वीर्य को बढाने वाले हैं। हमारे मत मे कुलफा विष्णुक्रान्ता नहीं है।

## शंखावली के गुण

शंखावली, शंखपुष्पी, शंखाहुली इसके नाम हैं। यह भी छोटा-सा क्षुप अपने चारो ओर फैलने वाला होता है। पत्तिया छोटी छोटी और फूल शंख के समान श्वेत होते हैं, यह चैत्र-वैशाख मे अधिक फैलती है, इसके सारे क्षुप पर श्वेत रंग की बुर होती है। शखपुष्पी अत्यन्त बुद्धि-वर्धक है, रसायन है, उष्ण है, स्मरणशक्ति को बढ़ाने वाली है, पागल-पन को दूर करने वाली है।

## दोधक के गुण

दोधक गर्म, भारी, रूक्ष तथा गर्भकारक है, वीर्यवर्द्धक, कब्ज करने

वाली, कोढ़ और कफ के रोगों को दूर करती है। यह छोटी दोधक के गुण हैं।

## भिलावा के गुण

भिलावा कसैला, अत्यन्त गर्म, वीर्यवर्धक, हलका, मधुर, चरपरा, बवासीर और कुष्ठ के लिये अत्यन्त लाभकारक है। ग्रहणी, अफारा, गुल्म, मंदाग्नि, क्रिमि तथा व्रण को नाश करता है।

वक्तव्य—भिलावे के वृक्ष दक्षिण और मध्यप्रान्त मे अधिक होते हैं, पत्ता चौड़ा, कच्चे फल हरे होते हैं। पक कर छिलका उतर जाता है और अंदर वाली काले रंग की गुठली पृथक् हो जाती है, गुठली की तह के अदर एक प्रकार का काला तेल होता है, धोबी लोग इसी तेल से कपड़ो पर निशान लगाते हैं। यह तेल वडा तीक्ष्ण होता है, एक छींट पड़ने पर भी हाथ-पाव और मुख सूज जाते हैं, खुजली और जलन हो जाती है। मक्खन, तिलतेल वा नारियल का तेल मलने से सूजन दूर हो जाती है इसके अन्दर से एक बादाम की-सी गिरी निकलती है जो खाने मे मधुर और अत्यन्त गर्म होती है।

## द्रोणपुष्पी ( गूमा ) के गुण

द्रोणपुष्पी, गूमा को देसी भाषा में 'मेडे' भी कहते हैं। यह बरसाती क्षुप है, इसके सिर पर भिड के छत्ते के समान गुच्छा लगता है और उसमे पतले २ श्वेत फूल लगते हैं। कही २ छत्ते पर से सीधी शाखा निकल कर, उस पर फिर छत्ता बन जाता है, वैसे ही फूल लगते हैं। द्रोणपुष्पी अत्यन्त कडवी, कसैली, चरपरी, पित्त और कफ को नाश करने वाली, रूक्ष, वातकारक होती है, विशेषकर विषमज्वर, कृमि, पाण्डु तथा कामला रोग को दूर करती है।

## ब्रह्मी के गुण

ब्रह्मी नदियो एवं नहरो के किनारे २ होती है, इसका पत्ता महराव-दार कंगूरो वाला होता है। जैसे विलायती पंखा गोल होता है, अथवा कबूतर की दुम फैल कर गोल हो जाती है वैसे ही इसका पत्ता होता है

इसलिये इसको कपोतवंका भी कहते हैं। ब्राह्मी दस्तावर, शीतल, कड़वी, कसैली, चरपरी, रूक्ष, हलकी, बुद्धि और स्मृतिशक्ति को बढानेवाली, स्वरशोधक, कोढ, प्रमेह पाण्डु तथा रक्तविकारों को शान्त करती है और रसायन है। ब्राह्मी को शंखपुष्पी के साथ मिला कर ही सेवन करना चाहिये अन्यथा यह अत्यन्त रूक्षता उत्पन्न करती है। गरमी मे लोग इसका शर्बत व ठंडाई बना कर पीते हैं।

### मोचरस के गुण

मोचरस शीतल है, ग्राही है, भारी है, वीर्य बढ़ाने वाला है, रक्त अतिसार, रक्तप्रवाहिका, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, कफ तथा दाह को नाश करने वाला है। मोचरस सेमल की गोद होता है, रक्त रोकने मे यह अत्युत्तम है।

### इक्षुर ( तालमखाना ) के गुण

तालमखाना शीतल है, वृष्य है, भारी है, वातकफ और रक्त को दूर करता है, इसको देसी भाषा में 'छुरा' कहते हैं, यह एक बरसाती घास होता है, इसका फूल नीला होता है। शीतल पर्वतों मे यह सदैव रहता है इसके बीज वर्ण और आकार मे अलसी से मिलते जुलते हैं और अत्यन्त लेसदार होने के कारण वीर्य के रोगियो को इसका चूर्ण बनाकर खिलाते हैं।

### शितिवार ( सिलयारा ) के गुण

सिलयारे के बीज वा फूल चौलाई ( स्यूहल ) जैसा हलका गुलाबी होता है, यह भी बरसाती पौदा है। इसके गुण तालमखाने के समान हैं, विशेषकर पुराने ज्वर में हितकारी है।

### धत्तूरा के गुण

धत्तूरा मद करने वाला, वर्णकारक, अग्नि और वायु करने वाला, ज्वर, कोढ़, श्वास, कृमि, कंडू आदि को दूर करता है, गर्म है, रूक्ष है।

वक्तव्य—धत्तूरा भी एक प्रसिद्ध पौदा है, इसके मोटे २ डंठल, कोनो वाले चौड़े २ पत्ते, तुर्री जैसा लंबा श्वेत नील, व हलके पीले रंग का फूल, गोल और नरम कांटों वाला फल कौन नहीं जानता। इसके बीज पत्ते और

पत्तों का रस काम आता है, इसके खा लेने से एक पागलो का सा नशा चढ़ जाता है, जैसे किसी को भूत चढा है। आंखो की पुतली फैल जाती है। वाजीकरण योगो मे इसके बीज पड़ते हैं, पत्तों को सुखाकर तंबाकू के समान पीने से श्वास का वेग दूर हो जाता है, पत्तो के रस मे पारा खरल कर सिर पर व शरीर पर मलने से जुंएं मर जाती हैं। विषमज्वरो के लिये भी इसके बीज व पत्तो का चूर्ण व्यवहृत किया जाता है। इसके विष मे घी दूध पिलाना चाहिये।

## विजया ( भांग ) के गुण

भांग, कडवी, चरपरी, कसैली, कब्ज करने वाली, हलकी, दीपन, उष्ण, वातकारक, कफ और प्रमेह, रक्तार्श तथा रक्त के उबाल को शान्त करती है। भाग को कौन नहीं जानता ? भंगड लोग गरमियो मे इसकी ठंडाई पीते हैं और शीतकाल में इसकी गोलिया बना कर खाते हैं। भाग मनुष्य को अस्त-व्यस्त कर देती है, मनुष्य जिस ओर लगता है लगा ही रहता है। अंदाजे मे पीने से वाणी बुद्धि और अग्नि को बढाने वाली है। कवि लोग प्रायः इसका सेवन करते ही हैं। इसके विष मे कपास की जड़ व खट्टी वस्तु दिलानी चाहिये।

## पोस्तडोडा के गुण

डोडा पोस्त रूक्ष है, कब्ज करने वाला है, अतिसार को नाश करने वाला है, इन्द्रियो को शिथिल करने वाला है। शूलनाशक, निद्राकारक है, वीर्य का स्तंभन और मस्ती लाने वाला है, अधिक मात्रा मे नपुंसकता करने वाला है। लोग इसकी खेती करते हैं, गेहू की फसल के साथ इसकी फसल भी तयार हो जाती है।

## अफीम के गुण

अफीम में भी वही गुण हैं जो कि पोस्तडोडा मे होते हैं, डोडे का दूध ही अफीम होता है। कच्चे डोडो को चारो ओर चिरके देते हैं उनमे से दूध सा तरल निकलता है उसे खुरच लेते हैं यही अफीम है।

वक्तव्य—अफीम इन्द्रियो को शिथिल करने वाला, दस्तो को रोकने

वाला, हृदय की गति को कम करने वाला, वीर्यस्तंभक, शूल को शान्त करने वाला होता है। नशई लोग तथा कई बूढ़े इसे नित्य मात्रा मे सेवन करते हैं, जब तक उनको अमल न मिले उनमे शक्ति नहीं आती, इन्द्रिया शिथिल हो जाती हैं, अफीम की गोली खाते ही चेतन और घुडसवार हो जाते हैं। कामी लोग इसे स्तंम्भक दवाइयो मे मिला कर खाते हैं, इससे वीर्य शीघ्र स्खलित नहीं होता। केसर, जायफल, सोंठ तथा अफीम इनको गौ के घी में मर्दन कर शरीर पर मालिश करने से अंगो की पीडा दूर होती है। अधिक मात्रा मे खाने से हृदय को संकुचित कर देता है और आख की पुतली भी संकुचित हो जाती है। इसके प्रतिकार के लिये हींग को जल में घोल कर पिलाना चाहिये।

## शतपुष्पा ( सौंफ ) के गुण

सौंफ लघु है, तीक्ष्ण है, दीपन है, कटु है, गर्म तथा पित्तकारक है, ज्वर, वात, कफ, नेत्ररोग, योनिरोग तथा व्रण आदि मे अत्यन्त हितकारी है।

वक्तव्य—सौंफ दो प्रकार की होती है, १-देसी वा मीठी सौंफ, २-पहाड़ी वा कड़वी सौंफ। देसी सौंफ मधुर तथा सौम्य गुणो वाली होती है जैसे कि ऊपर बताया गया है, परन्तु कड़वी सौंफ मे यह गुण भी तीक्ष्णावस्था तक पाये जाते हैं। कडवी सौंफ तीक्ष्ण है, अत्यन्त दीपन पाचन है, स्वेद लाने वाली, मल-मूत्र के विबंध को तोडने वाली है, स्त्रियो के रुके हुए मासिकधर्म को खोलने वाली है। योनिशूल, उदरशूल तथा सर्वांगशूल को इसका क्वाथ ( घी मिला कर ) पिलाने से दूर करती है। यह दोनों घरेलू दवाइयां हैं।

## कासनी के गुण

कासनी यकृत् वृक्क तथा वस्ति को शुद्ध करने वाली है, अतः मूत्र को अधिक मात्रा मे लाती है। यकृत् रोगो मे मकोय, कासनी तथा सौंफ का अर्क पिलाने से अधिक लाभ होता है। यह भी एक नीले फूल का घास है जो कि गेहूं की फसल के साथ खेतो मे होता है।

## घीकुआर के गुण

घीकुआर शीतल, शूलनाशक, दस्तावर, तिल्ली, कफरोग, ज्वर, फोड़े, रक्त और पित्त के रोगों को दूर करती है। यह भी रसायन है।

वक्तव्य—घीकुआर को कुआरपाठा भी कहते हैं। इसके लम्बे २ नोकदार, किनारों पर कांटों वाले मोटे पट्ठे होते हैं, जिनके अंदर गूदा भरा रहता है। घीकुआर का गूदा अधिक काम में आता है। इसके किनारे व सिरों को काटने से इसमें से पीले रंग की लेस निकलती है, इसको सुखा कर 'एलुआ' बनता है। घीकुआर छोटी पहाड़ियों पर अधिक पाई जाती है। कुआर के महीने मे यह अधिक फैलती है, शीतकाल में इसमें से एक कोमल डण्डी निकलती है, सिरे पर गाओदुम मंजरी होती है, जिसमें से जोगिया रंग के फूल निकलते हैं। इस कोमल डंडी का शाक अत्यन्त स्वादु होता है। कुमारी अतरीप मे यह अधिक पाई जाती है, वहां ही एलुवा तैयार किया जाता है। एलुवा गर्म है, रेचक है, उदरशूल, पार्श्वशूल तथा योनि-गर्भाशय-शूल को खाने से व लेप करने से दूर करता है। कुमारी को इसी लिये कुमारी कहते हैं कि सदैव ताजी बनी रहती है, सूखती नहीं है। यह रसायन है।

## वच के गुण

वच तीव्र गंध वाली, गर्म, कटु, तिक्त तथा कसैली होती है, अग्नि-वर्धक तथा अपस्मार और उन्माद कफ के शूल को दूर करने वाली है। वाणी और बुद्धि को बढ़ाने वाली है।

वक्तव्य—वच चश्मों मे वा छोटे नदी नालों मे, जहां कि पानी तीव्र गति वाला नही पाया जाता है, होती है, इसके चपटे २ लम्बे पत्ते होते हैं, इसकी जड़ मोटी बालों वाली और पानी मे दूर तक चली जाती है, इसी जड को वच वा घुडवच कहते हैं। वच इसी लिये कहते हैं कि यह वाणी को शुद्ध करती है, सिर, नाक, मुख के सारे श्लेष्मा को दूर कर दिमाग को साफ कर देती है। घोड़ों को भी मसाले मे इसे देते हैं इस लिये इसे घुडवच कहते हैं।

## विडंग के गुण

वायविडंग, कड़वे, चरपरे, गर्म, हलके, रूखे, शूल, कफ, अफारा विशेष कर क्रिमियो को नाश करने वाले होते हैं। बाजार मे इसके गोल काले २ बीज मिलते हैं।

## तालीसपत्र के गुण

तालीसपत्र हलका, तीक्ष्ण, गर्म होता है, श्वास, कास, कफ, वायु को दूर करता है। रुधिरकारक है, वायगोला, क्षयरोग, मंदाग्नि को भी नाश करता है। इसको फारसी मे 'जरनव' कहते हैं। यह काश्मीर आदि से आता है। इसमे से बहुत अच्छी गंध निकलती है।

## जटामांसी के गुण

जटामांसी को बालछड़ भी कहते हैं। बाजार मे यह काले रंग की बालो की कूची के समान मिलती है, इसीलिये इसे जटामांसी वा बालछड कहते हैं, इसे भूतकेशी भी कहते हैं क्योकि भूतो के समान खड़े केशोंवाली होती है। जटामांसी ६ हजार फुट की उंचाई वाले बर्फानी पर्वतो पर पाई जाती है। इसमे से एक विशेष प्रकार की गंध आती है इसे सूंघने से बिल्ली लोटने लग पड़ती है अतः इसे 'बिल्लीलोटन' भी कहते हैं।

जटामांसी शीतल है, तीनो दोषो को हरने वाली, रक्त, दाह, कुष्ठ, विसर्प तथा वायुरोगो को दूर करती है। स्त्रियो की भूत-प्रेत-बाधा को तथा योषापस्मार ( हिस्टीरिया ) को दूर करने मे सर्वश्रेष्ठ है।

## उशीर ( खस ) के गुण

खस सुगंधित एवं शीतल है, पाचन है, रूक्ष है, स्तम्भन है, कफपित्त को नाश करने वाली, तृष्णा, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, व्रण और विसर्परोग को दूर करती है।

वक्तव्य—वीरन घास की जड़ो को खस कहते हैं, यह घास सरकंडे के समान होता है, प्रायः नदी-तालाबो के किनारे पाया जाता है। गरमी मे धनी लोगो के घरो मे खस की टट्टिया [illegible] जाती हैं। खस की छोटी २ मुट्ठियां बाजार मे मिलती हैं जो कि अ[illegible]न सुगंधियुक्त होती हैं। इसका इतर भी बनाया जाता है।

## कचूर के गुण

कचूर दीपन है, हलका, गर्म है, रुचिकारक है, कोढ़, विसर्प, बवासीर, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, वात और कफ को, तथा श्वासरोग गुल्म और कृमिरोग को दूर करता है।

वक्तव्य—कचूर का पौदा हलदी के समान होता है, परन्तु इसका कंद श्वेत वर्ण का होता है और इसमें कचूर की सुगंधि आती है।

## गुग्गुल के गुण

गुग्गुल विशद ( अग २ को खोलने वाला ) कडवा, मधुर है, गर्म है, वीर्यवर्धक, टूटी हड्डी पसली को जोड़ने वाला, दस्तावर, क्रिमिरोग, आमवात ( गंठिया ) कुष्ठ, वातरक्त, फोड़े-फिंसी तथा अन्य वायु और कफ के रोगों को दूर करता है, रसायन है, बलकारक है, व्रण, प्रमेह, मेदरोग, कंठमाला, ग्रंथिरोग शोथरोग को दूर करता है। पुराना गुग्गुल लेखन होता है।

वक्तव्य—गुग्गुल के वृक्ष सिंध राजपूताने मे अधिक पाए जाते हैं, इनके मद को गुग्गुल कहते हैं। यह पाच प्रकार का होता है, १–महिषाक्ष, २–महानील, ३–कुमुद, ४–पद्म, ५–हिरण्य, इनके नामो से रंग और भेद प्रकट हो जाता है। इनमे महिषाक्ष और महानील हाथियों के लिये, कुमुद, पद्म, घोड़ो के लिये और मनुष्यो के लिये केवल हिरण्य ही अच्छा रहता है। गुग्गुल खाने मे, मरहमो मे तथा धूप आदि मे वर्ता जाता है, देवताओं तथा भूत-प्रेत को झाड़ने के लिये भी इसकी धूनी देते हैं।

## राल के गुण

राल शीतल है, ग्राही है, कड़वी है, कसैली है, रक्तरोग, रक्तातिसार, प्रवाहिका, रक्तप्रदर, रक्तपित्त, विसर्प, पसीना, व्रण तथा भूतप्रेत बाधाओ को दूर करती है।

वक्तव्य—राल वर्ण मे श्वेत, पीली, तथा कुछ काली भी होती है, यह एक गोद है, जो सूख कर चुरचुरी होजाती है। यह धूनी, मरहम तथा चूर्ण आदि के रूप मे प्रयुक्त होती है। जले हुए पर इसका मरहम अत्यन्त गुणदायक है।

### कमल के गुण

कमल लाल, श्वेत और नीले रंग के होते है। कमल का फूल सब फूलों मे उत्तम माना गया है, इसकी भीनी २ सुगंध मन को प्रफुल्लित कर देती है। कमल के फूल बड़े २ सरोवरो मे पाये जाते हैं, इसके बड़े२ गोल २ पत्ते पानी पर बिछे हुए अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होते हैं। पत्तों पर पडी हुई जल की बूंदें मोतियो के समान चमकती हैं। संसार की सुन्दरता कमल मे ही आ गई है, जैसे मुखकमल, नेत्रकमल, करकमल, चरणकमल इसी की शोभा को बताते हैं।

सब कमल शीतल, मधुर, ग्राही तथा वर्ण करने वाले हैं, हृदय को बल देने वाले, दाह, तृष्णा, रक्त के प्रकोप, फोड़े-फिसी आदि को नष्ट करने वाले होते हैं। कमल की जड़ को बिस वा भे कहते हैं और कद को शालूक। यह भी अत्यन्त शीतल एवं ग्राही होते हैं।

### शरपुंखा के गुण

शरपुंखा के झाड़ दो फुट के लगभग होते हैं, इसके पत्ते नील के समान होते हैं, जड़ मे से विशेष प्रकार की गंध आती है, यह बरसात मे उत्पन्न होती है। शरपुंखा लोहा, विष, व्रण, कास, ज्वर और श्वास को दूर करती है, तिक्त और कषाय है।

### कनेर के गुण

कनेर तीन प्रकार के पाये जाते हैं, १-लाल फूलो वाला, फूल गुलाबी और गुच्छो मे लगते हैं। २-पीले फूलो वाला, इसके पत्ते पतले लम्बे फूल भी लम्बे पीले, घंटी के समान, इससे दूध निकलता है। ३-श्वेत फूलो वाला, इसका फूल पृथक् पत्ती वाला होता है। कनेर गर्म, चरपरा और तीक्ष्ण होता है, वर्ण, कण्डु, कुष्ठ, क्रिमि, शोथ को दूर करता है। लाल कनेर के झाड़ प्राय पथरीली नदियो के किनारे अधिक पाए जाते हैं। यूं तो बारह महीने फूल निकलते ही रहते हैं किन्तु वैसाख जेठ मे इसमे फूल खूब खिलते हैं। इसकी जड़ की छाल को पीसकर कड़वे तेल मे मिलाकर लगाने से खुजली दूर होती है, अन्य दवाइयो के साथ इसका तिला

बनाते हैं जो कि बच्चो की खांसी प्रतिश्याय तथा तालुपात के लिये अत्युपयोगी है। श्वेत कनेर के फूल भी नसवार के काम आते हैं।

### गेहूं के गुण

गेहू मधुर है, भारी है, वातपित्त को दूर करती है, रुफ और वीर्य को बढ़ाती है, स्निग्ध, संधानकारक ( शरीर को जोडने वाली ) है, जीवन देनेवाली, शरीर को पुष्ट करने वाली, वर्ण और रुचि करनेवाली, वायु शात करने वाली, मूत्र लाने वाली, दूध बढ़ाने वाली, सब अन्नो मे श्रेष्ठ है।

### माष के गुण

उड़द अत्यन्त स्वाद, स्निग्ध, रुचिकारक, गर्म, भारी कठिनता से पचने वाले, कफ, बल और वीर्य को बढ़ाने वाले, शरीर को मोटा करने वाले, मेद और पित्त को बढाने वाले, बवासोर, अर्दित (लकवा), परिणाम-शूल को नाश करने वाले, मल-मूत्र लाने वाने, दूध बढ़ानेवाले और श्वास ( वायु के ) नाशक होते हैं।

उड़द, दही, बैंगन और मछली इनके गुण समान ही होते हैं, यह चारो पित्तकफ को करने वाले वायु को हरने वाले होते हैं।

### राजमाष के गुण

राजमाष ( रवाह ) तृप्ति देने वाले, कसैले, भारी, ग्राही, रुचिकर, मधुर ( तिक्त ), वायुकारक, दूध तथा बल बढ़ाने वाले होते हैं।

### अध्याय-संग्रह

इस अध्याय मे जहां से निघण्टु ( वनौषधिगण ) आरम्भ होता है, उनका हम सक्षेप से वर्गीकरण बताते हैं—त्रिफला, गिलो रसायन हैं, वासा से लेकर मुलट्ठी तक द्रव्य मिश्रित हैं, अर्थात् कुछ द्रव्य वायु को और कुछ द्रव्य पित्त कफ को दूर करने वाले हैं। सोठ से लेकर धनिये तक तीक्ष्ण, दीपन और पाचन हैं। चंदन से लेकर त्रिजात तक सुगन्धित द्रव्य, सैंधव से सुहागा तक लवण और क्षार, बैंगन से लेकर कद्दू तक साग-सब्जिया तथा गरमी के फल, जीरा हींग दीपन-पाचन, वंशलोचन रसायन, गन्ना से लेकर छुहारा तक मधुर द्रव्य वर्णन, नींबू से लेकर आम तक अम्ल

एवं रुच्यवर्ग, मूंग से सत्तू तक आहार द्रव्यवर्णन, दुग्धप्रकरण से तेल तक पृथक् प्रकरण हैं। त्रिवि से जेपाल तक वमन विरेचन, जवाह से चोक तक रक्तशोधक, मैनफल से इटसिट तक मिश्रित, रास्ना से कायफल तक वातकफशामक द्रव्य, धावे से लेकर लोध्र तक संकोचक ग्राही तथा रक्त-शोधक द्रव्य, विधारा से तालमखाना तक वीर्यवर्द्धक रसायन हैं, धतूरा से अफीम तक मादकद्रव्य, वच से राल तक शोधनरोपण द्रव्य हैं।

इति मेघविनोद-सौदामिनीभाषाभाष्ये, विष,पञ्चकर्म, द्रव्यगुण, वर्णनात्मकः द्वादशोऽध्यायः।

---

# अथ तेरहवां अध्याय

श्री मेघमुनि कहते हैं कि—श्री गुरुदेव के चरणकमलों में नमस्कार कर अब तेरहवें अध्याय में धातु, उपधातु, पाक, अवलेह, घृत, तैल, आसव इनके बनाने की विधि का वर्णन करेंगे।

### सात धातुओं के नाम

१ स्वर्ण, २ रजत, ३ ताम्र, ४ वंग, ५ नाग, ६ यशद, ७ लोह, यह सात धातु कहे गये हैं।

### चतुर वैद्य के लक्षण

जो वैद्य धातुओं के शोधन मारण तथा पारद का शोधन मारण मूर्च्छन, गन्धकजारण, अभ्रक का शोधन मारण, हीरे का शोधन मारण, तथा पारद के पूर्ण संस्कार और घृत, तैल, आसव, अरिष्ट, पाक, अवलेह; इन सब का साधन जानता है, गुरुसेवक हो और जिसका सेवक (कम्पाउडर) भी चतुर हो ऐसा वैद्य संसार में यश और लक्ष्मी का पात्र होता है।

### वैद्य के सेवक के लक्षण

शान्त स्वभाव वाला, मधुर बोलने वाला, रोगियों पर दया करने वाला, सुन्दर हो और उसमें कोई विकार ( व्यसन ) न हो, परस्त्री को माता बहिन के समान समझने वाला हो, वैद्य को गुरु समान तथा माता-पिता के समान समझ उसकी सच्चे हृदय से सेवा करने वाला हो। उसके

इशारे को समझने वाला ( अर्थात् कई बार कई औषधियां समाप्त होती हैं मूर्ख सेवक तो रोगी के सामने ही वैद्य को उचितानुचित कह देगा, बुद्धिमान् सेवक अपनी बुद्धि के बल से अथवा वैद्य के संकेत पर कार्य कर देगा, उसमे न वैद्य को कुछ कहने की आवश्यकता होगी और न किसी को पता भी लगेगा ), सब औषधियो का ज्ञाता, रोगी की परीक्षा जानने वाला, चतुर, परिश्रमी, आलस्य रहित व्यक्ति वैद्य का सेवक होने योग्य होता है।

## सात धातुओं का शोधन

तिलतेल, तक्र, गोमूत्र, काञ्जी, कुलथी का काढ़ा, इनमे धातुओं को गर्म करके सात २ बार बुझावे तो सातो धातुएं शुद्ध हो जाती हैं।

## स्वर्ण मारण विधि

१ तोला कुंदन सोने के बारीक पत्र करवा कर अथवा सोने के वर्क लेकर २ तोले शुद्ध पारा, २ तोले शुद्ध गधक दोनो की कज्जली करके कचनार के रस में रगड कर सोने के पत्रों पर लपेट कर प्यालो मे नीचे ऊपर कचनार का गूदा देकर बंद कर कपडमिट्टी कर सुखा ले और उपलो की तीव्र आंच दें, ऐसी तीन पुटें देने से स्वर्ण (सोने) की भस्म होजायगी। इस प्रकार का सोना सब कार्यों पर वर्ता जा सकता है।

अन्य—शुद्ध पारा ८ तोले, शुद्ध गंधक १६ तोले, १ तोला सोना प्रथम सोने के बारीक पत्र बनवा कर टुकड़े कतर ले, फिर उनको पारे मे डाल कर खूब रगडाई करे, जब दोनो एक जान हो जावे तो गंधक डाल कर तीनो की बारीक कज्जली कर लें, उसमे घीकुआर, कमल और वटांकुर की भावना दे जब बिलकुल सूक्ष्म बन जावे तो आतशी शीशी मे भर दे। एक हांडी के नीचे छेद करें, उस पर अभ्रक वर्क का टुकड़ा बिछा दे, आतशी शीशी उसमे रख हांडी मे बालू भर दें और आग पर चढ़ा दें। एक पहर के बाद गंधक का धुआं निकलना आरम्भ होगा और जब गंधक का धुआं समाप्त हो जावे ( इसकी पहचान यह है कि उस धुँएं पर पैसा रखे यदि पैसा मलने से सफेद रंग का हो जावे ) तो समझो गंधक समाप्त

हो गई है तो तत्काल शीशी का मुंह बंद कर दे, इसके वास्ते ईंट के टुकड़े रगड कर गोल कार्क बना ले और शीशी मे डाट दे दे। गुड, सुहागा, पानी मे पीस शीशी के मुख पर लेप कर दे और फिर चार पहर तेज आंच दें, बिलकुल शीतल होने पर उस शीशी को आहिस्ता से फोड लें, इसमें शीशी के ऊपर भाग मे शिंगरफ के समान लाल रंग की वजनदार चक्की सी मिलेगी। यह मकरध्वज कहाता है। शीशे की तली मे सोना आधा मरा हुआ मिलेगा, इस सोने को लेकर उसमे बराबर का पारा मिला कर कचनार वा तुलसी के स्वरस मे खरल कर पुट दें, इससे स्वर्ण बहुत उत्तम भस्म हो जाती है। इसका रंग कबूतरी अथवा पीला लाल होता है।

## स्वर्णभस्म के गुण

स्वर्णभस्म शीतल, वीर्य बढ़ाने वाली, भारी है, तिक्त, चरपरी है, हृदय और शरीर को बल देने वाली, पाक मे मधुर है, शरीर को मोटा ताज़ा करने वाली है, मेधा तथा स्मृति शक्ति बढाने वाली है, शरीर की उष्णता को स्थिर रखने वाली है, सिद्धि तथा कान्ति देने वाली है, विष, क्षय, ज्वर, त्रिदोष, शोष, उन्माद को नाश करने वाली, शरीर मे ओज को स्थिर रखने वाली तथा सिर के सम्पूर्ण रोगो को नाश करने वाली, पवित्र एवं रसायन है।

## रजत ( चांदी ) शोधन मारण विधि

चांदी को पिघला कर तीन बार अगस्तिया के रस मे बुझावे, यह चांदी की विशेष शुद्धि है, इससे पहले तेल तक्र वाली सामान्य शुद्धि भी कर लेनी चाहिये।

मारण विधि—शुद्ध चादी ३ तोले, शुद्ध हरताल १ तोला, प्रथम हरताल को निम्बु के रस मे बारीक खरल करे और चांदी के पत्रो पर लेप करे और इनको प्यालियों में बंद करके दृढ़ संपुट कर दे और तीस अरने उपलो मे फूंक दे, इस प्रकार १४ पुटें दे और प्रत्येक में हरताल मिलाता जावे। इस प्रकार चादी की बहुत उत्तम भस्म हो जाती है।

### रजतभस्म के गुण

चादी शीतल है, दस्तावर है, रस में अम्ल और पाक में मधुर है, कषाय है, आयु को स्थिर करने वाली है, लेखन, स्निग्ध, वात और पित्त को शान्त करती है, बीस प्रमेह को दूर करती है।

### ताम्र शोधन मारण विधि

तांबे की बारीक तार लेकर प्रथम साधारण शुद्धि करे, फिर एक पहर जंभीरी के रस मे और एक पहर चंगेरी के रस मे उबाले, तो ताम्र शुद्ध हो जाता है।

शुद्ध ताम्र १ सिरसाही ( २। तोला ), शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गंधक २ तोले दोनों की कज्जली कर निम्बू के रस में खरल कर तांबे की तारों पर लपेटे और प्याले मे बंद कर कपरौटी करे, पीछे गजपुट देवे। इस प्रकार तीन गजपुट देवे। पश्चात् सात पुट घीकुआर के रस मे खरल करके देवे। इस प्रकार ताम्र की भस्म बन जाती है। पीछे से तांबे को पञ्चामृत ( दूध, दही, घृत, मधु, खाड ) मे खरल कर तीन पुट दें, पश्चात् केवल दही का जल में खरल कर तीन पुट दे। इस प्रकार करने से ताम्र की अत्युत्तम भस्म बन जाती है, वमन, विरेचन व भ्रम आदि विकारो को नहीं करती। इसकी मात्रा १ चावल से २ चावल तक है, रोगानुसार मक्खन, मलाई, मधु, अदरकरस के साथ दे।

### ताम्र के गुण

ताम्र मधुर, कडवा, कसैला, चरपरा, पाक मे अम्ल, वमन विरेचन द्वारा पित्त को निकालने वाला, व्रणरोपण, लेखन, कफ को नाश करने वाला, कृमियों को नाश करने वाला, शरीर को चेतन करने वाला एवं शीतल है।

### वंग ( कली ) शोधन मारण विधि

वंग ( कली ) की तैल तकवाली साधारण शुद्धि ही पर्याप्त है। शुद्ध वंग को मिट्टी के ठीकरे में डाल आग पर धरे, जब पिघल जावे तो ऊपर से इमली और पीपल की छाल का चूर्ण बुरकता जावे और लोहे की कडछी आदि से हिलाता जावे, इस प्रकार करने से वंग की भस्म हो जावेगी,

फिर उसको प्याले से ढक कर नीचे एक पहर तेज आंच दे, शीतल होने पर निकाल कर धो ले ताकि खार का जल निकल जावे। पीछे जितनी वंग हो उतनी वरकिया हरताल मिला निम्बू के रस से खरल करे और गजपुट मे फूंक दे, इस प्रकार दस पुट देने से वंग की भस्म हो जाती है। यह वंगभस्म अत्यन्त फलदायक होती है।

नोटः—वंग, यशद, नाग आदि जो धातु पिघला कर शुद्ध की जाती है, इनमे इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वह उछला करती है, इसलिये एक बड़ी हांडी मे काढ़ा व स्वरस भर दे और उसके मुंह पर प्याला रखें। प्याले के बीच छेद ( सूराख ) करे और उस छेद के रस्ते उस पिघली हुई धातु को डाले, इससे धातु उछल कर उस हाडी से बाहर नही निकलेगी।

## वंग के गुण

वंगभस्म हलकी है, दस्तावर है, रूक्ष है, कफ के रोग, कृमिरोग, बीस प्रकार के प्रमेह, पाण्डुरोग, शोथ को दूर करती है, शरीर मे बल बढ़ाती है, शरीर की गरमी को स्थिर रखती है, वीर्य बढ़ाती है, सुख और सौभाग्य बढ़ाती है, वीर्य के दोषो को दूर करती है, हृदय को बल देती है, कुछ २ उष्ण है। मात्रा—१ रत्ती, अनुपान—शहद, मक्खन, मलाई दूध आदि से देवे।

## यशद ( जस्त ) शोधन मारण विधि

जस्त का शोधन वंग के समान ही होता है। मारण विधि भी वंग के समान है, परन्तु इसे गला कर इस पर इटसिट की जड़ का चूर्ण बुरकते जाना चाहिये और लोहे की कड़छी आदि से हिलाते जाना चाहिये, एक पहर मे भस्म हो जाती है, फिर उसे प्याले से ढक कर एक पहर तेज आंच दे। शीतल होने पर निकाल पानी मे घोल ले और खारे पानी को नितार दे, पश्चात् घीकुआर के रस मे खरल कर ३ पुटे दे, यदि कच्चा रह जावे तो इसी विधि से फिर भस्म करे।

## यशद के गुण

जस्तभस्म शीतल, कसैली, कड़वी है, कफ, पित्त, प्रमेह, पाण्डुरोग, श्वास,

और नेत्ररोगों को दूर करती है। मात्रा—१ रत्ती, अनुपान—शहद, मक्खन, मलाई आदि।

## नाग ( शीशा-सिक्का ) शोधन मारण विधि

शीशे व सिक्के का शोधन भी वंग की तरह ही है, मारण भी वैसा ही, परन्तु इस पर पीपल की छाल और आमले की छाल का चूर्ण बुरकना चाहिये। यह दोनों सीसे से चौगुने हों। इस प्रकार एक पहर में सिक्के की भस्म हो जाती है। उस भस्म को फिर प्याले से ढक कर नीचे एक पहर तेज आंच दे, शीतल होने पर निकाल धोकर खारा पानी नितार ले। फिर सीसे के समान शुद्ध मनसिल और कसीस मिला कर कांजी में रगड़ाई करे और प्यालों में बंद कर गजपुट दे दे। इस प्रकार साठ पुटे दे। नाग की अत्युत्तम भस्म हो जाती है, यदि ३० पुटें कांजी और ३० पुटें वांसा के रस की देवे तो भी नाग की अत्युत्तम भस्म हो जाती है।

## नाग के गुण

नागभस्म भी वंगभस्म के समान गुण वाली है और प्रमेह में उससे भी अधिक गुणकारक है। कान्ति देने वाली, भूख बढ़ाने वाली, सौ हाथी का बल देने वाली और मृत्यु को जीतने वाली है, हाथी का बल और मृत्यु को जीतने का अर्थ यह है मनुष्य बुद्धि, बल और स्फूर्ति में हाथियों का मुकाबला कर सकता है और बे-मौत मरता नहीं।

## सार ( फौलाद ) शोधन मारण विधि

असली इसपात लोहे का चूरा लेकर तेल तक्र आदि में बुझावे, फिर त्रिफला के काढ़े में सात बार बुझावे, इस प्रकार लोहा शुद्ध हो जाता है। फिर इस लोहे से दसवां भाग शुद्ध शिंगरफ मिला कर दोनों को घीकुआर में खरल कर टिकिया बना प्यालों में बंद कर गजपुट दे, इस प्रकार ६० पुटें दे तो लोह की लाल रंग की अत्युत्तम भस्म हो जाती है। दूसरी विधि यह है कि बजाय गजपुट देने के चूल्हे पर धर नीचे आंच देकर भस्म करे। रसायन और वाजीकरण के लिये लोहे की ५०० और १००० पुटे दी जाती हैं। कम से कम १०० पुट तो अवश्य देनी चाहिये।

## सार ( फौलाद ) के गुण

लोहभस्म तिक्त, दस्तावर, शीतल, रूक्ष, मधुर, लेखन, कषाय है, भारी है, आयु को स्थिर करने वाली है, नेत्रो को हितकारी, वात, पित्त, कफ को सम करने वाली, शूल, शोफ, ववासीर और पाण्डु को, लीहा, यकृत्‌रोग को, सब प्रकार की नपुंसकता को, प्रमेह को, कुष्ट को नाश करने वाली एवं रसायन है, लोहे के समान शरीर के विकारो को नष्ट कर बल देने वाला अन्य कोई द्रव्य नहीं, क्यो कि लोहा शरीर मे नवीन रक्त और शक्ति उत्पन्न करता है, रक्त ही शरीर का जीवन है। जिसके शरीर मे लहू नहीं वह मनुष्य कब तक जी सकेगा। जो गुण लोह मे हैं वही गुण लोह के किट्ट अर्थात् मण्डूर मे हैं, मण्डूर के टुकड़ो को आग मे तपा कर गोमूत्र और त्रिफले के काढ़े मे सात २ वार बुझाना चाहिये, फिर गोमूत्र मे पीस कर गजपुट की आंच देनी चाहिये, १० पुट मे अत्युत्तम भस्म हो जाती है। मात्रा—आधी रत्ती से एक रत्ती तक। अनुपान—मक्खन, मलाई, शहद, आदि।

## सात उपधातुओं की शोधन मारण विधि

१-अभ्रक, २-सुरमा, ३-मनसिल, ४-नीलाथोथा, ५-हरताल, ६-खपरिया, ७-सोनामाखी, यह सात उपधातु होती हैं।

## अन्य मत से सात उपधातु

१-सोनामाखी, २-रूपामाखी, ३-शिलाजीत, ४-पित्तल, ५-कासा, ६-सिंदूर, ७-नीलाथोथा, यह सात उपधातु हैं।

## सोनामाखी शोधन विधि

सोनामाखी १ पल, सैंधानमक ६ माशे, दोनो मे जंभीरी का रस डाल लोहे की कड़ाही में आग पर धरे और लोहे के डण्डे से रगड़ता जावे जब लाल रंग का वारीक चूर्ण हो जावे तो उतार कर उसमे ककोड़े की जड़ का रस, जंभीरी का रस अथवा मेढासिंगी का रस देकर धूप मे सुखा ले इस प्रकार करने से स्वर्णमाक्षिक शुद्ध हो जाती है फिर इसको थोड़ा नमक और एरण्डतेल में खरल कर टिकिया बना ले और प्यालो मे बंद

कर गजपुट मे फूंक दे, इस प्रकार तीन पुट देने से स्वर्णमाक्षिक की बहुत सुन्दर लाल रंग भी भस्म हो जाती है।

### नीलाथोथा शोधन विधि

नीलाथोथा मे दसवां भाग कबूतर की बीठ मिला ले और दशवां भाग सुहागे को मिला कर दही के पानी में खरल कर हलकी पुट देवे इस प्रकार करने से नीलाथोथा शुद्ध हो जाता है।

### हिंगुल शोधन विधि

शिंगरफ रूमी लेकर निम्बू के रस मे सात दिन खरल करे अथवा भेडी के दूध मे सात दिन खरल करे, पश्चात् धो लेवे तो हिंगुल शुद्ध हो जाता है।

### शिंगरफ मारण विधि

शिंगरफ की डली २ पल लेकर एक ठीकरे मे रख दे, फिर ठीकरे के नीचे आग जलावे, और ऊपर कंडियारी के रस का चुआ देता जावे, १६ पहर तक। इस प्रकार शिंगरफ की उत्तम भस्म होती है, जो कि सब योगों मे वर्ती जाती है। मात्रा आधी रत्ती से एक रत्ती तक मक्खन, मलाई, दूध, मधु, पान का रस आदि के साथ।

शिंगरफ के गुण—शिंगरफ तीक्ष्ण, कसैला, कड़वा, कफ, पित्त तथा नेत्ररोगो को दूर करता है, आमवात, तिल्ली, नपुंसकता, कुष्ठ तथा उपदंश आदि रोगो को दूर करता है, अनुपान से शरीर के सब रोगों को दूर करता है। रसायन है और पारे के स्थान पर वर्ता जाता है।

### शिलाजीत शोधन विधि

शिलाजीत के पत्थर होते हैं जो अलमोड़ा गढ़वाल आदि हिमालय पर्वत के प्रांतो से आते हैं। गरमी मे जब सोना चांदी आदि धातुओ वाले पर्वत-खण्ड पिघलते हैं, तो गाढ़ा २ द्रव पत्थरो पर चिपक जाता है इनमे कोई लोहे की, कोई सोने की, कोई चांदी की और कोई तांबे की शिलाजीत वाले पत्थर होते हैं। लोग इनको गोमूत्र मे, त्रिफला के काढ़े मे अथवा पानी में उबाल कर छान लेते हैं और इस पानी को धूप मे रख देते हैं,

इस पर मलाई की तह आती रहती है इसे इकट्ठा कर दूसरे साफ पात्र मे जमा करते रहते हैं, सूखने पर यह शिलाजीत-सूर्यतापी कहाती है, वाकी वचे हुए काढ़े वा पानी को आग पर गाढा कर लेते हैं, इसको अग्नितापी कहते हैं। कई व्यापारी इसमे अनेक प्रकार की वेइमानी कर लेते हैं, इसमें वजन वढ़ाने के लिये वकरी की मेगनी मिला देते हैं। सड़को पर जो शिलाजीत वेचते हैं, वह पुराने से गुड को गोमूत्र अथवा त्रिफले के काढ़े में घोल अग्नि पर पका कर गाढ़ा कर लेते हैं इससे लोगो को ठगते हैं। इसलिये शिलाजीत विश्वस्त स्थान से लेनी चाहिये। शिलाजीत लेसदार भी मिलती है और विलकुल सूखी भी, इसका रंग एलुआ की तरह होता है। यदि इसको विशेष शुद्ध करना हो तो दूध मे घोल कर गाढा कर लो अथवा भंडिगी के काढ़ा में घोल कर गाढ़ा करलो। इसकी पहचान यह है कि शिलाजीत को अग्नि में डालने से धुआं निकले विना वत्ती सी वन जाती है और पानी में डालने से अपने चारो ओर तारें छोडती है। शिलाजीत रसायन है, लेखन है, प्रमेह, चर्वी के रोग, यकृत के रोगो तथा विधि अनुसार सेवन करने से सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करती है। मात्रा— १ रत्ती से ४ रत्ती तक। मधु अथवा त्रिफला काढ़ा के साथ।

## खपरिया ( संगवसरी ) शोधन विधि

खपरिया ( खर्पर ) को आग में लाल करके मनुष्य के मूत्र मे सात वार वुझाने से, अथवा दोलायन्त्र द्वारा स्वेदन करने से शुद्ध हो जाता है। फिर इसे खरल मे डाल गोमूत्र में टिकिया वना पुट देकर भस्म कर लेनी चाहिये।

गुण—खर्परभस्म गुरु है, नेत्ररोगो को तथा क्षय और प्रमेह को नष्ट करती है। मात्रा—१ रत्ती मधु से।

## मनशिल शोधन विधि

मनशिल की डलियां नारंगी रंग की वहुत वज़नदार होती हैं, अच्छी मनशिल जलदी टूट जाती है और चमकदार होती है। मनशिल को बकरी के मूत्र में दोलायंत्र-विधि से सात वार पकाने से, अथवा अदरक के रस

मे खरल करने से शुद्ध हो जाती है। मनशिल खाने के प्रयोग मे बहुत ही कम आती है, बाहर के लेप आदि मे परम रक्तशोधक तथा धूनी आदि के प्रयोग मे भूत-प्रेत की बाधाओ को दूर करती है।

मनशिल मारणविधि—जिस प्रकार हरताल की भस्म की जाती है उसी प्रकार मनशिल की भस्म कर लेनी चाहिये।

मनशिल के गुण—मनशिल भारी, वर्ण को स्वच्छ करने वाली, व्रणो को दूर करने वाली, दस्तावर, गर्म, कटु, तिक्त, लेखन, स्निग्ध, कफ और रक्त के रोगो को दूर करने वाली, भूत-प्रेत तथा श्वास को दूर करती है। मात्रा—आधी रत्ती, अनुपान—मधु, अदरक का रस।

### हरताल शोधन विधि

हरताल वर्कीया के छोटे २ टुकड़े कर पोटली बाध कर पेठे के रस में लटका कर ४ पहर पकावे, फिर तिलतेल मे पकावे, फिर चूने के पानी में, फिर त्रिफला के काढ़े मे और कांजी मे पकावे। इस प्रकार हरताल परम शुद्ध हो जाती है।

शुद्ध हरताल को बारीक कर घीकुआर के रस मे खरल करके रख छोडना चाहिये और योगों मे वर्तना चाहिये। हरताल का रसमाणिक्य भी बनता है।

विधि—हरताल के बारीक टुकड़ो को अभ्रक के दो बड़े २ टुकड़ो मे बंद कर चारो ओर से चूंटियो से बंद कर देना चाहिये ताकि कहीं से धुआं न निकले। कोयलो की आंच पर धरे एक दो मिन्ट मे लाल रंग के चमकदार टुकड़े प्रतीत होने लगते हैं, शीतल कर उन्हे निकाल ले। यही रसमाणिक्य है। इसकी एक दो रत्ती मात्रा शहद के साथ खाने से रक्त शुद्ध हो जाता है, फोड़े-फिंसी तथा सम्पूर्ण रक्तविकार नष्ट हो जाते हैं। हरताल पुराने ज्वरो के लिये भी परम हितकारी है।

### हरताल मारण विधि

इस प्रकार घीकुआर वा आक के दूध में हरताल को सात २ दिन तक लगातार खरल करके टिकिया बना धूप मे सुखा ले, जब बिलकुल सूख जावे तो पीपल की राख को कपड़छान करके हाडी मे आधी नीचे

और आधी ऊपर भरे, बीच मे टिकिया रख दे, राख को इतना दबाए कि पोली न रह जावे, फिर चूल्हे पर चढ़ा कर नीचे बेरी को पतली लकड़ियो की धीमी २ आंच दे, दो पहर के अनन्तर उस राख पर धान वा जौ के दाने बिखेर कर देखे यदि खील हो जावे तो आग बंद कर शीतल होने दे, फिर धीरे २ राख को अलग करे और बीच मे से श्वेत रंग की टिकिया को निकाल ले, कई बार टिकिया उड़ जाया करती है, हाडी में राख ही रह जाती है, यदि उड़ जावे तो राख को भी सभाल कर रखना चाहिये, क्योंकि हरताल सारी भस्म में मिल जाती है, यह राख भी हरताल की तरह गुण करती है।

हरताल गुण—कटु, स्निग्ध, विष, खुजली, कफ, पित्त, कुष्ठ, रक्तविकार, पलित, पुराने ज्वर को नष्ट करती है। भस्म मात्रा—१ चावल से ४ चावल तक। अनुपान—मक्खन, मलाई, मधु आदि।

## अभ्रक शोधन-मारण विधि

वज्र अभ्रक ( अभ्रक दो प्रकार का होता है, काला और श्वेत, यहां काला ही लेना चाहिये, इसकी पहचान यह है कि इसके टुकड़े आग मे गरम करने पर न चिड़चिड़ाते हैं, न उनमें अन्य किसी प्रकार का शब्द निकलता है और न आग पर रक्खे जाने से मुड़ते वा दोहरे होते हैं ) को आग पर गरम करके दूध में सात बार बुझावे, फिर बेरी के पत्तो के रस में सात बार बुझावे, फिर बारीक कूट कर चौलाई के रस में रगड़ाई करे तो अभ्रक शुद्ध हो जाता है।

धान्याभ्रक विधि—अभ्रक को ऊपर की विधि से शुद्ध करके चौथा भाग धान मिला कर कम्बल के टुकड़े में बाध दे। फिर उसको कांजी में भिगो छोड़े, तीसरे दिन खूब मसले, अभ्रक बारीक २ होकर कम्बल से निकल कर कांजी में आता जावेगा, जब सारा अभ्रक निकल जावे तो कांजी को निनार ले और अभ्रक को सुखा ले इसे 'धान्याभ्रक' कहते हैं। यह सब में श्रेष्ठ होता है।

मारणविधि—अभ्रक को आक के दूध में खरल कर टिकिया बना ले

और आक के पत्तो मे लपेट प्यालो मे रख कर गजपुट की आंच दे, इस प्रकार सात पुटे दे। फिर वट के अंकुरो के काढ़े में टिकिया बना तीन गजपुट दे, इस प्रकार दस पुट मे अभ्रक की अच्छी भस्म हो जाती है।

दूसरी विधि—अभ्रक से आधा गुड और चौथा भाग शोरा मिला कर बेरी के पत्तो के काथ का छींटा देकर टिकिया बना बड़ के पत्तो में लपेट कर किसी खुले ठीकरे में गजपुट की आंच दे, इस प्रकार एक ही पुट मे अभ्रक की लाल रंग की चमक रहित भस्म हो जाती है, यदि एक में न हो तो दो व तीन पुट मे अवश्य निश्चन्द्र भस्म हो जाती है। फिर गुण अधिक करने के लिये इन द्रव्यो की अधिक पुटे देता जावे। जैसे—नागरमोथा, ताम्बूल, एरण्ड, बड, पीपल, आक, बकरी का दूध, घीकुआर, मुसली, गोखरू, कौंच, केले की जड, तालमखाना, दूध, दही, घृत, मधु, खांड, पुनर्नवा, बेरी की जड़, कसौंदी, इनके स्वरस अथवा काढ़ो मे खरल कर गजपुट की १००, ५०० अथवा १००० पुटें देता जावे, इसे सौपुटी, पांचसौपुटी वा हजारपुटी अभ्रक कहते हैं।

अभ्रक का अमृतीकरण—अभ्रकभस्म मे बराबर गोघृत मिला, लोहे की कडाही में डाल नीचे आंच दे, जब घृत जल जावे तो अभ्रक को उतार बारीक पीस संभाल कर रख छोड़े। यह अभ्रक रसायन है।

अथवा—अभ्रकभस्म १० भाग, गोघृत ६ भाग, त्रिफला काथ १६ भाग को लोहे के पात्र में डाल आग पर जलावे, जब अभ्रक ही रह जावे तो इसे पीस रख छोड़े।

अभ्रक के गुण—अच्छी तरह से भरा हुआ निश्चन्द्र अभ्रक परम रसायन है, जरा, मृत्यु और सम्पूर्ण विकारो को शान्त करता है, विशेषकर पुराने ज्वर, खासी, श्वास, क्षय आदि रोगो कोस मूल नष्ट करता है। बल वीर्य बढ़ाने वाला, शरीर को सुन्दर करने वाला, मधुर है, शीतल है, त्रिदोष को दूर करने वाला, आयुवर्धक है। मात्रा—½ रत्ती से १ रत्ती तक यथा रोगानुपान।

### गन्धक शोधन विधि

आमलासार बढ़िया गंधक लेकर बारीक पीस ले, फिर एक हाडी में

गंधक से चार गुणा दूध और गंधक से चौथा भाग घृत डाले, हांडी के मुख पर साफ कपड़ा बांधे, कपड़े पर गंधक बिछा दे, हांडी पर प्याला औंधा कर टिका दे और कपड़मिट्टी से बंद कर दे। हांडी को गले तक पृथ्वी में गाड़ दे और ऊपर से उपलो की आंच दे, आंच से पिघल कर गंधक हांडी में चला जावेगा, शीतल होने पर खोल ले और गरम जल से धोकर सुखा ले, इस प्रकार गंधक अतिशुद्ध हो जाता है।

दूसरी विधि—यदि थोडा करना हो तो गंधक को लोहे की कडछी में डाल थोड़ा घी मिला आग पर पिघलावे और दूध मे बुझा दें, फिर गर्म जल से धोकर सुखा ले।

गुण—गंधक भी रसायन है, परम रक्तशोधक है, उष्ण है, पित्तकारक है, अत्यन्त बल देने वाला है, पाचनशक्ति को बढ़ाता है, नेत्रो की ज्योति को ठीक रखता है, शरीर को शीघ्र वृद्ध नहीं होने देता, कफ, क्षय और वायुरोगो को दूर करता है। इसके अतिरिक्त, खुजली, फोड़े-फिंसी, कोढ़, तथा तिल्ली आदि रोगो को दूर कर करता है। मात्रा—४ रत्ती से ३ माशा तक।

## पारा शोधन मारण विधि

पारे की पहचान—पारा एक वजनदार श्वेतवर्ण की पिघली हुई धातु है जो कि सोने को छोड़ सम्पूर्ण धातुओ से भारा होता है। सब से अच्छा पारा वह है जो अदर से नीली चमक वाला, वाहर श्वेत और उज्ज्वल प्रतीत होता है, जैसे कि मध्याह्न का सूर्य चमकता है। जो पारा मैला धुमैला हो वह अच्छा नहीं होता। पारे में-नाग, वंग, मल, अग्नि, चञ्चलता, विष, गिरिदोष और असह्य अग्नि यह महादोष होते हैं, वैद्य को चाहिये कि इनको दूर करे।

पारा शोधन के लिये कम से कम एक सेर लेना चाहिये, कारण कि थोड़े पारे के लिये भी उतना ही परिश्रम करना होता है जितना कि अधिक के लिये। पारे को तप्त खरल मे डाल पारे से सोलहवा भाग क्रम से, ऊन, हलदी, ईट का चूर्ण, जंभीरी का रस, इन्द्रायण, ढेरा, अम्लतास, चित्रा,

काला धतूरा, त्रिफला, त्रिकुटा, गोखरू इनका सोलहवा भाग चूर्ण देकर सात २ वार रगड़ता जावे और कांजी से धोकर शुद्ध करता जावे, इस प्रकार पारे के उपरोक्त दोष दूर हो जाते हैं। फिर पारे को २१ दिन तक लहसन के रस मे खरल करे, फिर २१ दिन त्रिकटु, राई, घर का जाला, सुहांजने के बीज, चित्रा, घीकुआर मिला कर अच्छी तरह खरल करे। इस प्रकार पारा शुद्ध और सब रोगो को दूर करने मे समर्थ हो जाता है। यह साधारण शुद्धि है। पारद की विशेषशुद्धि के लिये संस्कार करने पड़ते हैं जिनका वर्णन रसशास्त्रो मे किया गया है। यहां विस्तारभय से नहीं बताया जा सकता।

२—शिंगरफ को लेकर निम्बू मे खरल करे और एक हांडी मे लेप करे, फिर एक पानी से भरी हुई हांडी ले, दोनो हांडियो का मुख अच्छी तरह कपड़मिट्टी कर बंद कर दे। पानी वाली हांडी को मुंह के ऊपर तक गढ़े में गाड दे और शिंगरफ वाली हांडी के ऊपर उपलो की आग दे दे, शिंगरफ में से पारा उड़ उड कर नीचे पानी में जमा होता जावेगा, यह शुद्ध पारद है, फिर भी इसे निम्बू के रस मे सात दिन तक खरल करले।

३—शिंगरफ रूमी के छोटे २ टुकड़े करके चीथडो में लपेट कर छोटे २ गेंद बनाले, फिर लोहे की चौड़ी तवी पर आग लगा दे और ऊपर चौड़े मुंह की हांडी इस प्रकार से रखे कि थोडी २ ऊंची रहे ताकि धुआं बाहर निकलता रहे। शीतल होने पर आपको हांडी मे तथा तवी पर गिरा हुआ पारा मिलेगा, रुई से वा ऊन के टुकड़े से उसे इकट्ठा कर ले इसे भी सात दिन निम्बू के रस मे खरल करे। यह भी पारे का साधारण शोधन है, इस प्रकार से शुद्ध किया हुआ पारा सम्पूर्ण योगो मे वर्ता जाता है।

नोट—कच्चा पारा अकेला नही वर्ता जाता, जिस योग मे पारा आता है वहां गन्धक भी अवश्य होता है, अतः सब से प्रथम पारे और गंधक की कज्जली अवश्य कर लेनी चाहिये।

कज्जली विधि—शुद्ध पारा और शुद्ध गंधक दोनो बराबर लेकर

खरल में खूब रगडाई करे, जब दोनो सुरमे के समान बारीक हो जावें और चमक न रहे तो समझो कज्जली बन गई है, कही २ पर गधक पारे से दुगनी भी होती है ।

जिस योग मे केवल पारा ही लिखा हो, गधक न हो, वहां रस-सिन्दूर डालना चाहिये । कज्जली भी रक्तशोधक है, उपदंश (आतशक) के व्रणो के लिये तथा अन्य विकारो के लिये अत्यन्त उपयोगी है । मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती तक ।

## पारा मारण विधि

शुद्ध पारा लेकर उसे फगवाड़े के दूध मे एक पहर खरल करे, उसकी गोली बन जावेगी, फिर फगवाड़े की जड को बारीक कर उसमे फगवाड़े का दूध मिला दो कुठालिया बनावे, एक कुठाली मे पारे की गोली रख कर ऊपर दूसरी कुठाली रखे, और दोनो का मुख फगवाड़े के दूध से बंद करे, और फिर जितना फगवाड़े का दूध मिले कुठालियो के ऊपर लेप करता जावे, कहीं से छिद्र न रह जावे । फिर चिकनी मिट्टी और रुई दोनो की खूब कुटाई करे, जब दोनो एकजान हो जावें तो उस पर सात कपरौटी करे और खूब सुखा ले तथा गजपुट की आंच दे, शीतल होने पर निकाल ले । इस प्रकार पारे की श्वेत भस्म मिलेगी । इसमे बड़ी सभलने की जरूरत होती है, नही तो पारा उड़ जाया करता है ।

## पारदभस्म के गुण

पारा मे छः ही रस होते हैं, इस लिये रसायन है, स्निग्ध है, वीर्य को बढाने वाला, कुष्ठ तथा बुढ़ापे और अकालमृत्यु को दूर करने वाला है, पारा योगवाही है, अर्थात् जिस योग मे पारा डाला जावेगा उसकी शक्ति को चारगुणा अधिक कर देगा, यदि दस्त के योगो मे मिलाएंगे तो दस्त अधिक लायेगा, यदि रोकने वाले रोगो मे मिलाओगे तो दस्तो को तत्काल रोक देगा । बड़े २ सिद्धो ने अपने योगबल से पारद के संस्कार किये है । पारद भगवान् शंकर का रूप है, जिस प्रकार शिव संसार के

दुखो से मुक्त करके सुख देकर संसार से पार कर देते हैं, उसी प्रकार १८ संस्कारो से शुद्ध पारा सारे शरीर को अजर अमर कर देता है।

श्री गोरखनाथ आदि सिद्धों ने पारद के सम्बंध मे कई ग्रंथ लिखे हैं जिन्हे रसग्रंथ वा रसशास्त्र कहते हैं। साधारण मनुष्य पारद के सारे संस्कार नहीं कर सकता।

इति रसधातु प्रकरण।

## अथ अवलेह-प्रकरण

अवलेह चटनी को कहते हैं—अवलेह मे दवाइयो के चूर्ण से जल चौगुना मिलाना चाहिये और गुड़ दुगना और मिश्री चौगुनी लेनी चाहिये, फिर गुड वा मिश्री की चाशनी करके दवाई मिला लेनी चाहिये। अवलेह दो प्रकार के बनते हैं—एक केवल जल मे चाशनी बना कर, दूसरे किसी क्वाथ आदि मे। प्रथम क्वाथविधि से दवाइयो का काढ़ा करे, फिर उसमे गुड़ आदि मिला कर चाशनी करे, फिर उस चाशनी मे कुटी दवाइयो का बारीक चूर्ण कर उसमे मिला दे और चटनी सी बना ले। इसे अवलेह वा चटनी कहते हैं।

इससे आगे भिन्न २ रोगो पर अवलेह बताएंगे।

अवलेह का अनुपान—अवलेह चाटने के पश्चात् दूध, गन्ने का रस, यूष, बासा का काढ़ा, दशमूल का काढ़ा, मुनक्का का काढ़ा अथवा दोष बल के अनुसार अन्य कोई काढ़ा आदि पिलाना चाहिये।

### कंटकारी अवलेह

कंडियारी का पञ्चांग १०० पल ( पांच सेर ), जल ३२ सेर, क्वाथ करे, शेष ८ सेर रहे तो उतार कर छान ले और फिर आग पर धरे, जब ४ सेर रह जावे तो उसमे सेर भर मिश्री मिला कर चाशनी करे और उसमे त्रिकुटा, ककडसिंगी, चव्य, नागरमोथा, चित्रा, गिलोय, कचूर, रायसन, भडिंगी, धमासा—यह सब ४-४ तोले चूर्ण कर उसमे मिला दे, फिर गाढा करे, पश्चात् उसमे ३२ तोले गौ अथवा बकरी का घृत और ३२ तोले कड़वा तेल मिला कर भूने, जब लाल हो जावे तो देखे कि उसमे जल का

अंश नही रहा तो उतार ले, शीत होने पर उसमें २४ तोले मधु, मघ का चूर्ण १६ तोले और तवाशीर १६ तोले मिला कर रख छोड़े। इसकी मात्रा ६ माशे से २ तोला तक है। कही खांड दुगनी भी डालते है, इस प्रकार चाशनी अच्छी वन जाती है और अवलेह शीघ्र खराब नही होता। इसके खाने से हिचकी, श्वास, पुरानी खांसी, कफ, ज्वर एक महीने मे नष्ट हो जाते हैं, इसके ऊपर बकरी का दूध, बांसा वा मुनक्का का काढा पीना चाहिये। यह पुरानी खासी के लिये अत्युत्तम औषधि है।

## च्यवनप्राश अवलेह

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी वडी कंडियारी, भखड़े। विल, गंभारी स्योनाक, अरणी, पाढल इन पाँचो की छाल। मघ, काकडासिगी, मुनक्का, हरड़, गिलोय, बला, भुई आमला, वासा, ऋद्धि, जीवन्ती, कचूर, जीवक, ऋषभक, नागरमोथां, पोहकरमूल, काकमासा, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, विदारीकंद, इटसिट, काकोली, क्षीरकाकोली, कमल, मेदा, महामेदा, छोटी इलायची, अगर, चंदन, यह दवाइयां ४-४ तोले, इन सबको जौकुट करले। एक कपड़े मे ५०० आमले बाध दे, फिर आमले और दवाइया एक बड़े कलई किये पात्र मे एक द्रोण जल डाल कर काढ़ा करे, जब चौथा भाग जल रह जावे तो आमले निकाल ले और काढ़े को छान ले। आमलो की गुठलियां निकाल कर जुदा करले, फिर खद्दर के कोरे कपड़े मे आमलों का गूदा छान ले, उस गूदे को २४ तोले घी और २४ तोले तेल में अच्छी तरह भूने, जब आमले ठीक भुन जावें और रंग लाल हो जावे तो उतार ले। फिर उस काढ़े मे अर्धतुला (२॥ सेर) खांड मिला चाशनी करे, जब चाशनी ठीक पक जावे तो उसमे भुने हुए आमले मिला दे और फिर पकावे, जब चटनी के समान गाढ़ा हो जावे तो उतार ले, शीतल होने पर उसमे ८ तोले मघचूर्ण, १६ तोले तवाशीर, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र और नागकेसर प्रत्येक ४-४ तोले और मधु २४ तोले खूब मिला दे। कही २ इसमे खांड दुगुनी डाल देते हैं, इससे आमलो की खटास कम प्रतीत होती है। इसे च्यवनप्राश कहते हैं, यह च्यवन ऋषि ने लिखा है। इसके निरन्तर

सेवन करने से बूढ़े च्यवन ऋषि फिर से नौजवान होगये थे। यह च्यवनप्राश परम रसायन है, बच्चे, बूढ़े, कमजोर, क्षयरोगी, कामी, धातुक्षय, हृद्रोग, श्वास, पुरानी खांसी, स्वरभेद, वायु के रोग, पित्त के रोग, कफ के रोग, मूत्रदोष, फेफड़ो के दोष दूर होते हैं, इसके सेवन से बच्चो के शरीर की पुष्टि होती है, बूढो मे बल आता है, जिनको पुरानी खासी, तपदिक वा अन्य किसी प्रकार की दुर्बलता हो उनके लिये यह औषधी अत्यन्त लाभकारक है। शीतकाल मे लोग इसका सेवन करते हैं शरीर को मोटा ताजा व नीरोग करने के लिये यह सर्वोत्तम दवाई है। यह बडी स्वादिष्ट वस्तु है। मात्रा—इसकी ४ मासे से १ तोला तक है। इसके निरन्तर सेवन करने से शरीर मे बल, बुद्धि और वीर्य की वृद्धि होती है। तेल, गुड, खटाई, तीक्ष्ण और विदाही पदार्थ छोड़ दे।

## कूष्माण्ड अवलेह

अच्छा पका हुआ कूष्माण्ड (पेठा) लेकर ऊपर से छील ले और बीच का गूदा और बीज निकाल ले। फिर ४-४ अंगुल के टुकड़े कर ले, टुकड़े पांच सेर हो और इनको दुगने पानी मे उबाले, जब पानी आधा रह जावे तो उतार टुकडो को निचोड़ थोड़ा धूप मे सुखा ले, फिर इनको सुओं से वेधकर ३२ तोले घी मे भून ले। फिर खाड ५ सेर लेकर उस पानी मे चाशनी करे जब चाशनी ठीक पक जावे तो उसमे पेठे के टुकड़े मिला दे और फिर पकावे, ठीक हो जावे जल का अश न रहे तो उतार ले और उसमे पीपल, सोंठ, जीरा, प्रत्येक दो पल, धनिया तेजपत्र, इलायची, दालचीनी दो तोले और शहद १६ तोले मिला, संभाल कर रख छोड़े और अपनी अग्नि और बल के अनुसार खावे। इसके खाने से शोष, भ्रम, रक्तपित्त, क्षय, खांसी, ज्वर, तृष्णा, वमन, श्वास, कास आदि सम्पूर्ण विकार दूर होते हैं।

## अगस्त्य हरीतकी अवलेह

नई ताजी और उत्तम हरड़े १०० लेकर, अच्छे जौ १ आढ़क, दशमूल २० पल, चित्रक, पिप्पलामूल, पुठकण्डा, कचूर, कौंच, शंखावली,

भांगी, गजपीपल, खरेंटी, पोहकरमूल; प्रत्येक दो दो पल, सब को २० सेर जल में क्वाथ करे। जब जौ खूब उबल जावें और चतुर्थांश काढा रह जावे तो हरडें पृथक् निकाल ले, बाकी क्वाथ को छान लेवे। फिर हरडो को १६ तोले घी और १६ तोले तैल मिलाकर भूने, फिर काढे में ५ सेर गुड मिलाकर चाशनी करे और हरडें उसमे डालकर पकावे, जब चाशनी पक कर गाढ़ी हो जावे तो उतार ले, शीतल होने पर उसमे १६ तोले शहद और १६ तोले मघ का चूर्ण मिला कर चिकने वर्तन मे रख छोड़े। इसमें से नित्यप्रति १ वा २ हरडे खावे, इसके सेवन से, क्षय, खांसी, ज्वर, प्यास, हिचकी, ववासीर, अरुचि, पीनस, ग्रहणी, वली-पलित (बुढापा), इनका नाश होता है, शरीर का बल-वर्ण बढता है। यह अवलेह रसायन है। अगस्त्य मुनि ने इसे कहा है इस लिये इसे अगस्त्यहरीतकी कहते हैं।

## सूरण अवलेह

जिस प्रकार पेठे का अवलेह बनाया जाता है उसी प्रकार सूरण (जिमीकन्द) का अवलेह बनाया जाता है। सूरण अवलेह बिगड़ी हुई ववासीर, पेट की हवा और मन्दाग्नि को दूर करता है।

नोट—जिमीकन्द के ऊपर एक एक अंगुल मिट्टी लपेट कर भूभल मे भुरता करले, फिर छील कर टुकडे करले और कूष्माण्डलेह की तरह पका ले। पुटपाक विधि से इसमे की खुजली दूर हो जाती है।

## कुटजावलेह

कुड़े की छाल ५ सेर कूट कर द्रोण परिमाण जल मे क्वाथ करे, जब चतुर्थांश शेष रहे तो उतार कर कपडछान करले, फिर इसमे १२० तोले पुराना गुड़ मिला कर पकावे, जब गाढ़ा हो जावे तो उसमे रसाञ्जन, मोच-रस, त्रिकुटा, त्रिफला, लाजवन्ती के बीज, चित्रा, पाठा, बिलगिर, इन्द्रजौ, वच, शुद्ध भिलावे, पतीस, वायविडंग, सुगन्धवाला, प्रत्येक ४ तोला, घी १६ तोले मिलाकर अवलेह बनावे, गाढ़ा होने पर उतार ले और शीत होने पर उसमे १६ तोले मधु मिला दे। यह अवलेह ववासीर तथा ववा-सीर से होने वाले रोगों को तथा मन्दाग्नि, अरोचक, अतिसार, ग्रहणी,

पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कामला, अम्लपित्त, शोथ, कृशता, मरोड़, पेचिश आदि रोग दूर होते हैं। मात्रा ६ माशे से २ तोला तक। इस पर बकरी का तक्र, दूध, दही, घृत, जल का अनुपान देना चाहिये। औषध पच जाने पर पथ्य अन्न का भोजन करना चाहिये। बवासीर और पुराने दस्तो के लिये अत्युत्तम है।

## अभयादि अवलेह

हरड़े और कुडा की छाल ५ सेर, दोनो को द्रोण जल मे पकावे, जब जल चतुर्थांश रह जावे तो उतार छान कर फिर गाढ़ा करे, फिर नागरमोथा, पाठा, लाजवन्ती के बीज, मोचरस, धावे के फूल, अतीस, इनका चूर्ण एक एक पल प्रमाण मिलाकर पकावे, जब खुश्क हो जावे तो उतार ले और १ तोला दवाई मधु से खावे ऊपर से गौ का मट्ठा, दूध, घी आदि। इसके खाने से अतिसार खूनी पेचिश, बवासीर, पेट का भारीपन तथा मन्दाग्नि आदि उदर के अन्य रोग नष्ट होते हैं।

नोट—इसमे गुड, खांड का प्रक्षेप नहीं लिखा, यदि चिकित्सक चाहे तो इस काढ़े मे डेढ़ सेर पुराना गुड मिला कर चाशनी बनाले और उसमें ऊपर की दवाइयो का चूर्ण डाल कर पकावे। उससे दवाई देर तक नहीं बिगड़ती है।

## जीरकादि अवलेह

जीरा, नागरमोथा, हाऊबेर, नागकेसर, धनिया, चित्रा, जरिश्क, असगन्ध, मर्घा, हिंगोट, कालीमिर्च, सौंफ, पिप्पलामूल, यह सब एक एक पल लेकर ४ सेर जल मे क्वाथ करे, चतुर्थांश काढ़ा रहे तो छान ले और उसमे १६ पल गुड़ डाल चाशनी करे, फिर सोंठ, सफेदजीरा, कालाजीरा, इन चारो का एक एक पल चूर्ण मिलावे और १६ पल घी मिलाकर रख छोड़े, इसकी १ तोला मात्रा खावे तो गर्भरोग तथा सूतिकारोग दूर होते हैं, योनि और गर्भाशय शुद्ध हो जाते हैं, मन्दाग्नि, अरुचि आदि रोग भी दूर होते हैं।

इति अवलेह अधिकार।

## घृत तैल साधनविधि

घृत और तैल की साधन विधि पीछे भी कही जा चुकी है, फिर संक्षेप से लिखते है—घी वा तैल एक भाग, रस वा काढ़ा आदि चार भाग, और कल्क आदि घी तैल का चौथा भाग। मीठी २ आच से पकावे, जब घी वा तैल ही शेष रह जावे, कल्क की अंगुलियो मे मलने से बत्ती सी बन जावे, आग मे डालने से पानी की चिड-चिड सी आवाज न आवे, गंध और वर्ण ठीक हो तो घृत-तैल सिद्ध हुआ समझो। परन्तु घी तेल मे इतना फरक है कि घृत सिद्ध हो जावे तो उसके झाग बैठ जाते हैं, तेल सिद्ध हो जावे तो उस पर झाग उठते हैं।

### क्षीर षट्पल घृत

मघ, पिप्पलामूल, चव, चित्रा, सोठ, सैधानमक सब एक २ पल, गो-घृत १ प्रस्थ, गोदूध ४ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ। ऊपर के छः द्रव्यो को जल मे पीस कर गोला सा बना ले, फिर सब कलई किये हुए ताम्र के पात्र मे डाल धीमी आंच पर पकावे, जब घी शेष रहे तो उतार कर छान ले। जहां दही, दूध, स्वरस आदि से पाक करना लिखा हो वहां जल भी बराबर का देना चाहिये, इससे इनका पाक ठीक हो जाता है। इसे क्षीरघृत तथा पञ्चकोलघृत भी कहते हैं, यह घृत पुराने ज्वर, विषमज्वर, प्लीहा, मंदाग्नि और अरुचि को दूर करता है। मात्रा—घृत की प्राय ६ माशे से १ तोला तक होती है।

### चांगेरी घृत

पिप्पली, पिप्लामूल, चित्रा, गजपिप्पल, गोखरू, सोठ, धनिया, पाठा, बिलगिर, अजवायन यह सब दवाइयां ४-४ तोले, इनका जल से कल्क बना ले। घृत ६४ पल, चागेरी ( चौपतिया खट्टी बूटी ) का रस घृत से चौगुना, दही भी घृत से चौगुना, और इतना ही जल मिलाकर पूर्व विधि से पाक करे, सिद्ध होने पर छान कर रख ले। यह घृत कफ और वात, ग्रहणी, अतिसार, बवासीर, अफारा, गुदभ्रंश, मूत्रकृच्छ्र और पुरानी पेचिश को दूर करता है। मात्रा ६ माशे से १ तोला तक।

## मसूर घृत

मसूर पाच सेर, जल ३२ सेर क्वाथ करे, शेष ८ सेर रहे तो उतार कर छान ले, उसमे ३२ तोले बिलगिर पीस कर मिला दे और एक प्रस्थ गोघृत डाल पकावे। यह घृत सब प्रकार के अतिसार को, संग्रहणी, पेचिश, मरोड़ तथा पतली टट्टी को ठीक करता है। मात्रा ६ माशे से १ तोला तक।

## कामदेव घृत

असगंध ५ सेर, गोखरू २॥ सेर, शतावरी, विदारीकंद, शालपर्णी बला, गिलोय, पीपल की कोपलें, कोलडोडा, इटसिट, गभारी के फल, उड़द यह सब दस २ पल, सब को कूटकर ४ द्रोण जल मे क्वाथ करे, एक द्रोण शेष रहे तो उसमे ४ प्रस्थ गोघृत डाल कर पकावे और मुनक्का, पद्माख, कुठ, मघ, रक्तचन्दन, तेजपत्र, नागकेसर असली, कौंचबीज, कमल, अनंतमूल, सारिवा जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, जीवन्ती, मुलट्ठी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी यह सब एक २ तोला, पीस कर कल्क बनावे। शर्करा २ पल, पोने गन्ने का रस ४ प्रस्थ, दूध १६ प्रस्थ। सबको यथाविधि स्वच्छता से पकावे, जब घृत सिद्ध हो जावे तो उतार छान कर चिकने बर्तन मे संभाल रक्खे। यह घृत, नकसीर, उरःक्षत (सिल) हलीमक, पाण्डुरोग, कुठ, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, छाती की जलन, पसली की पीड़ा, को दूर करता है। यह घृत पुरुषो के सम्पूर्ण वीर्यरोगो को दूर करके वीर्य को पुष्ट तथा संतान उत्पन्न करने योग्य बनाता है। स्त्रियो के योनिरोग, गर्भाशयरोग, संतान न होना, होकर मर जाना तथा अन्य प्रसूति के विकारो को शान्त करता है। यह घृत श्रेष्ठ है, बल, वर्ण, पुष्टि, ओज, तेज बढाने वाला है, हृदय और प्राणशक्ति को बढ़ाने वाला रसायन है। मनुष्य सम्पूर्ण रोगो से मुक्त होकर कामदेव के समान सुन्दर हो जाता है।

## पानीय कल्याण घृत

हरड़, बहेड़ा, आमला, हलदी, दारुहलदी, रेणुका, अनन्तमूल, सारिवा, फूलप्रियंगु, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, देवदारु, एलवालुक, तगर, इन्द्रा-

यश, दन्ती, अनारदाना, नागकेसर, नीलकमल, इलायची, मंजीठ, वायविडंग, कुष्ठ, पद्माख, चम्बेली के फूल, चन्दन, तालीसपत्र, कंडियारी, यह सब एक २ तोला जल से पीस कर कल्क बना ले, फिर गोघृत १ प्रस्थ और पानी ४ प्रस्थ मिला कर पाक करे, जब घृत सिद्ध हो जावे तो छान कर स्निग्ध पात्र में संभाल कर रख छोडे। इस घृत के सेवन से उन्माद, वातरक्त, खासी, मन्दाग्नि, जुकाम, कमरदर्द, तिजारी, चौथिया ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, जहरबाद, खुजली, पाण्डुरोग, स्थावर जंगमविष, तथा सम्पूर्ण प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं। वन्ध्या स्त्रियों को संतान देता है, भूत, प्रेत, यक्ष, राक्षस आदि ग्रहों को दूर करता है। मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

### अमृतादि घृत

गिलोय का काढा ४ सेर, गिलोय का कल्क १ पाओ, गोदुग्ध ४ सेर, घृत १ सेर सब को मिला कर घृतपाक करे। यह घृत कुष्ठ, विशेषकर वातरक्त के लिये अमृत समान है।

### महातिक्तक घृत

सप्तपर्ण ( इसके पत्ते सेमल की तरह और वृक्ष भी वैसा ही शिमला मसूरी आदि में पाया जाता है, इसके फल अखरोट के समान होते हैं, छाल कडवी होती है ), पतीस, अम्लतास, कोड, पाठा, नागरमोथा, खस, हरड, बहेड़ा, आमला, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र, नीम की छाल, मजीठ, मघा, पद्माख, कचूर, चन्दन, धमासा, दोनों इन्द्रायण ( एक का फल पीला, दूसरी का लाल टमाटर की तरह ), हल्दी, दारुहलदी, गिलोय, सारिवा, अनंतमूल, मोडयां, वासा, शतावरी, त्रायमाणा, इन्द्रजौ, चिरायता, मुलट्ठी, सब दवाइयां एक २ तोला, गोघृत इन सब से चौगुना, आमले का स्वरस घी से दुगना, जल घी से आठगुणा, पूर्व दवाइयों को पीस कर कल्क बनावे, फिर सबको मिलाकर घृत पकावे, जब घृत मात्र शेष रह जावे छान कर रख ले। यह घृत वातरक्त, कुष्ठ, रक्तपित्त, खूनीबवासीर, हृद्रोग, गुल्म, जहरबाद, प्रदर, गण्डमाला तथा सम्पूर्ण क्षुद्ररोगों को तथा सम्पूर्ण ज्वरों को दूर करता है। इसकी मात्रा भी ६ माशे से १ तोला तक है।

## कासीसादि घृत

हीराकसीस, हलदी, दारुहलदी, नागरमोथा, हरताल, मैनसिल, कमीला, गंधक, वायविडंग, गुग्गुल, मिर्च, कुठ, सफेद सरसों, नीलाथोथा, रसौंत, सिन्दूर, रक्तचंदन, कत्था, नीम के पत्ते, करञ्जुआ, अनंतमूल, वच, मजीठ, मुलट्ठी, जटामासी, सिरस, लोध, पद्माख, हरड़, पंवाड़ के बीज, मोम, सब एक २ तोला, सबको कूट कपड़छान करके तीस पल घृत में अच्छी तरह मथ कर ताम्रपात्र में सात दिन तक धूप में रखे। इसके मलने से कोढ़, दाद, पामा, खुजली, शूकरोग, जहरबाद, विस्फोट, वातरक्त, सिर के फोड़े, उपदंश, नाड़ीव्रण, बिगड़े हुए व्रण, शोथ, भगंदर, लूत, तथा बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं। यह घृत व्रणशोधन तथा रोपण है। इसके लगातार लगाने से व्रणों के निशान साफ और चमड़ी एक रंग की हो जाती है।

## जात्यादि घृत

चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, पटोलपत्र, हलदी, दारुहलदी, कौड़, मजीठ, मुलट्ठी, मोम, करंजुए की गिरि, खस, अनंतमूल, नीलाथोथा, यह सब समान भाग लेकर मोम को छोड़ सबको पीस ले, घी इन सब से चारगुणा हो और जल घी से चौगुणा। यथाविधि घृत पाक करे, जब सिद्ध हो जावे तो उतार कर छान ले और फिर गर्म कर उसमें मोम मिला दे। इस घी के लगाने से पुराने गले सड़े व्रण, सूक्ष्ममुख वाले तथा नाड़ीव्रण, गंभीरव्रण, मर्मस्थान के व्रण, निरन्तर बहनेवाले तथा पीड़ा वाले व्रण नष्ट हो जाते हैं। इस घी की टाकी लगानी चाहिये तथा रुई की बत्ती बना कर नाड़ी व्रणादियों में देनी चाहिये।

## पद्मबिंदु घृत

चित्रा, शंखिनी ( थोहर ) हरड़, कमीला, काली त्रिवी, सफेद त्रिवी, विधारा, अम्लतास, दन्तीजड, जमालगोटा, कडवी तोरी। वंदालडोडा, कालादाना, कोयल, सातला थोहर, पिप्पलीमूल, वायविड़ंग, कौड़, सत्यानासी, सब एक २ तोला पानी में पीस कल्क बनावे, घृत एक सेर, थोहर

का दूध २४ तोले, आक का दूध ८ तोले, जल ४ प्रस्थ, यथाविधि घृत पाक करे। इस घृत की बीस, पचीस, तीस वा इससे न्यूनाधिक बूंदे ही दूध आदि मे मिला कर पीनी चाहिये। इसके पीने से शूल, उदावर्त, शोथ, आध्मान, भगंदर तथा आठ प्रकार के उदररोग नष्ट होते हैं, इसको गोदुग्ध में, ऊंटनी के दूध मे, कुलथी के काढ़े मे अथवा गर्म पानी मे मिला कर पीना चाहिये। इसके पीने से दस्त आते हैं।

## त्रिफला घृत

त्रिफला का काढ़ा १ प्रस्थ, बांसा का स्वरस १ प्रस्थ, भांगरे का स्वरस १ प्रस्थ, गोदुग्ध १ प्रस्थ, गोघृत १ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ। त्रिफला, मघां, मुनक्का, चंदन, सैंधानमक, खरैटी, मेदा, काकोली, चीरकाकोली, कालीमिर्च, सोठ, खांड, नीलकमल, कमल, हलदी, दारुहलदी, मुलट्ठी यह सब एक २ तोला, इनको जल मे पीस कल्क बना कर घृतपाक करे। इस घृत के पीने से रतौंधी, नकुलांध्य ( इस रोग मे आंखें खूब चमकती हैं परन्तु ज्योति बंद होती है नजर कुछ नहीं आता ), नेत्रो की खुजली, पिल्ल, नेत्रो का पानी, मोतिया आदि सम्पूर्ण रोग शान्त होते हैं। इस घृत की नसवार भी लेनी चाहिये। मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

## गौराद्य घृत

हलदी, दारुहलदी, मूर्वा, अनन्तमूल, श्वेतचदन, रक्तचंदन, मुलट्ठी, गिलोय, कमलकेसर, पद्माख, नीलकमल, खस, मेदा, त्रिफला, पञ्चवल्कल, ( वड़, गूलर, पीपल, पारिसपीपल, पिलखन इनकी छाल ) यह सब एक २ तोला, इनका कल्क बना, १ प्रस्थ घृत और ४ प्रस्थ जल, सब को यथाविधि पकावे। इससे जहरबाद, लूत, फोड़े, विष, कीड़ो के जखम, कीड़ो के जहर आदि सब दूर होते हैं। मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

## मयूर घृत

खरैटी, मुलट्ठी, रायसन, दशमूल, त्रिफला सब जुदा २ दो दो पल लेवे, एक मोर का मांस ( पंख, चोंच, पंजे, पित्ता और अंतड़ियां जुदा करके ) इन सब को ३२ सेर जल मे क्वाथ करे, ८ सेर शेष रहने पर उतार

कर छान ले और उससे बराबर का दूध मिला कर एक प्रस्थ घी पकावे, जब घृत सिद्ध हो जावे तो छान कर रख ले, इसके प्रयोग करने से सिर, गर्दन, पीठ, इनकी पीडा, लकवा, कान, नाक, आख, जीभ, गला इनकी पीडा दूर होती है। इसे पीना चाहिये, नसवार लेनी चाहिये, मालिश करनी चाहिये, कान मे डालना चाहिये। हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतु मे इसका प्रयोग करना चाहिये। इसकी मात्रा—१ तोला तक है।

## फलघृत

त्रिफला, मुलट्ठी, कुठ, हलदी, दारुहलदी, कौड़, वायविड़ग, मघां, नागरमोथा, इन्द्रायण, कायफल, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, अनन्तमूल, सारिवा, प्रियंगु, सौंफ, हींग, रायसन, चन्दन, रक्तचन्दन, चमेली के फूल, तवाशीर, कमल, शर्करा, अजवायन, दन्ती, सब एक २ तोला पीस कर कल्क बना ले। जिसका बछडा गौ के रंग का और जीवित हो, ऐसी हृष्ट पुष्ट गौ का घृत एक प्रस्थ, उसी गौ का दूध ४ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ, सबको मिला मिट्टी वा ताम्र के पात्र मे डाल, नीचे रखे उपलो की मीठी २ आंच दे, घृत सिद्ध होने पर निकाल छान कर स्वर्ण वा चांदी, ताम्र वा मिट्टी के चिकने पात्र मे से रख छोड़े। इसके सेवन करने से पुरुषो के वीर्यसम्बंधी सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं, नपुंसकता दूर होती है। मनुष्य स्त्रीभोग मे समर्थ होता है। स्त्रियो के योनि तथा गर्भाशय के सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं, जिन स्त्रियो को बच्चे न होते हो अथवा होकर मर जाते हो, उनके लिये यह घृत अत्यन्त उपयोगी है। वन्ध्या स्त्रियो के लिये पुत्र-रूपी फल देने वाला यह फलघृत है। मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

नोट—इसमे यदि मिल सके तो लक्ष्मणा की जड, यदि वह न मिले तो सफेद कंडियारी की जड़ मिला लेनी चाहिये।

## लघुफल घृत

त्रिफला, हलदी, दारुहलदी, पियावासा, लालवांसा, गिलोय, इटसिट, कौआटोडी, रायसन, मेदा, शतावरी, यह सब १६ तोले, घृत ६४ तोले, और दूध ४ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ, यथाविधि घृतपाक करे, इस घृत के पीने से

योनि का शूल तथा योनिभ्रंश (अर्थात् जिसकी योनि बाहिर आ निकले), योनि के संपूर्ण विकार, वंध्यायोनि तथा गर्भाशय के सम्पूर्ण रोग शान्त होकर स्त्री गर्भधारण मे समर्थ हो जाती है । मात्रा—६ माशे से १ तोला तक ।

### पञ्चतिक्त घृत

वासा, नीम, गिलोय, कडियारी, पटोल इनका काढ़ा और इनका ही कल्क बना कर सिद्ध किया हुआ घृत पीने से सम्पूर्ण विषमज्वर, पाण्डु, कुष्ट, विसर्प, क्रिमि, बवासीर आदि रोग शान्त होते है ।

इति घृताधिकार ।

## अथ तैलाधिकार

### षट्कङ्कर तैल

पारा ४ माशे, कालीमिर्च २ माशे, चन्दन, नीलाथोथा २-२ माशे, मोम ६ टङ्क, कड़वातैल ६ पल, इन सब को बारीक पीस कपड़छान कर ले, प्रथम तैल को गर्म कर उसमें मोम डाले, जब मोम पिघल जो जावे अन्य वस्तुओं को डाल खूब मिलावे, फिर उतार कर रख छोड़ें । इस तैल के लगाने से हाथ-पाओं का फटना (बिवाई) और दाह दूर होते हैं ।

### षट्तक्र तैल

सौंचरनमक, सोंठ, कुठ, लाख, हलदी, मोडया, मुलट्ठी, तीन तीन तोले कूट पीस कर कल्क बना ले, तिलतैल १ प्रस्थ, तक्र ६ प्रस्थ, जल ६ प्रस्थ, यथाविधि तैल पकावे, जब पक जावे तो उतार कर छान ले, इस तैल के लगाने से शीतज्वर तथा दाहज्वर दूर होते हैं ।

नोट—तैल पकाने की विधि हम घृताधिकार मे कह आए हैं ।

### लाक्षादि तैल

पीपल की कच्ची लाख ४ सेर, जल १६ सेर, थोड़े बेरी के पत्र डाल कर काढ़ा करे, जब ४ सेर रहे तो उतार कर छान ले, फिर उसमे तिलतैल १ प्रस्थ, दही का तोड़ ४ प्रस्थ, सौंफ हलदी, असगन्ध, देवदार, कोड़, रेणुका, मूर्वा, कुठ, मुलट्ठी, नागरमोथा, चन्दन, यह सब द्रव्य एक-

एक कर्ष, इनको पीस कल्क बना कर यथाविधि धीमी आंच पर पाक करे। सिद्ध होने पर उतार ले और छान कर रख ले। इसकी मालिश करने से विषमज्वर, क्षय, उरःक्षत, उन्माद, अपस्मार, श्वास, कास तथा त्रिक, पीठ आदि की पीडा, शूल, शरीर की दुर्गन्ध, ग्रहदोष, अलक्ष्मी आदि रोगों को दूर करता है।

नोट—लाक्षादि तैल बड़ा ही प्रसिद्ध तैल है, पुराने बुखार, तपदिक वा सिल के लिये यह अत्यन्त लाभदायक औषधि है, इसके अतिरिक्त छाती की पीडा, न्युमोनिया तथा शोप आदि मे इसकी मालिश अत्यन्त लाभकारक है। वायुरोग में इसमें महानारायणतैल मिलाकर मालिश की जाती है। न्युमोनिया आदि मे इसमे तारपीन का तैल मिलाकर मालिश करनी चाहिये।

## नारायण तैल

असगन्ध, खरैटी, बिलछाल, पाठा, पाढल, दोनों कण्डियारी, गोखरू, नीम, कंघी, अरनी, इटसिट, स्योनाक, प्रसारणी, यह सब दस-दस पल लेकर जौकुट करके ४ द्रोण जल मे पकावे, जब एक द्रोण जल शेष रहे तो इसमे ४ प्रस्थ तिलतैल, ४ प्रस्थ शतावर का रस, गोदुग्ध १६ प्रस्थ, कुठ, इलायची, चन्दन, खरैटी, जटामांसी, छरीला, सैंधानमक, असगन्ध, वच, रायसन, सौंफ, देवदारु, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, तगर, यह सब दो-दो पल लेकर पीस कर कल्क बनावे, मीठी मीठी आंच पर सब का यथाविधि पाक करे, सिद्ध होने पर उतार कर छान ले। इस तैल की मालिश करने से, नसवार लेने से, वस्ति देने से तथा पीने से लकवा, अधरङ्ग, हनुस्तंभ, मन्यास्तंभ, गलग्रह ( गले मे श्वास आदि का रुकना ), क्षय, कुबडापन बहिरापन, चलने में रुकावट, पीठ और कमर मे पीड़ा, जोड़ो का सूजना, गंठिया, वीर्य का क्षय, गृध्रसी, अंडवृद्धि, कुरण्ड-रोग, दन्तरोग, शिररोग, पसली का शूल, लंगड़ापन, मस्तिष्क और बुद्धि के रोग तथा अन्य सर्वशरीरव्यापी वायु के रोग नष्ट होते हैं। इसके निरन्तर सेवन करने से वन्ध्या स्त्री के भी पुत्र उत्पन्न होता है। तथा मनुष्य

घोड़े, हाथी के समान बलशाली होता है। जिस प्रकार नारायण के वज्र से दैत्यों का नाश होता है उसी प्रकार इस तैल के प्रभाव से सम्पूर्ण वायु-रोग नष्ट होते हैं।

### बला तैल

खरैटी का काढ़ा ८ प्रस्थ, दशमूल का काढ़ा ८ प्रस्थ, कुलथी, जौ, बेर, इनका काढ़ा ८ प्रस्थ, दूध ८ प्रस्थ, तिलतैल १ प्रस्थ, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, मापपर्णी, मुद्गपर्णी, जीवन्ती, मुलट्ठी, शतावरी, इन्द्रायण, मजीठ, कुठ, छलीरा, अगर, तगर, सैन्धानमक, वच, इटसिट, जटामासी, कृष्णसारिवा, अनन्तमूल, तेजपत्र, सौंफ, असगन्ध, इलायची, यह एक एक तोला, इनको पीस कर कल्क बनावे। यथाविधि तैल पकावे, सिद्ध होने पर उतार ले। इस तैल की नस-वार लेने से, मालिश करने से, पीने से पुरुषो तथा स्त्रियो के सम्पूर्ण रोग दूर हो जाते हैं। शरीर हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर सन्तान उत्पन्न करने योग्य हो जाता है तथा सम्पूर्ण वायुरोगो को नाश करता है। यह तैल राजाओ के योग्य है।

### प्रसारणी तैल

प्रसारणी बूटी का पञ्चांग १०० पल जौकुट करके द्रोण जल मे काढ़ा करें, जल चतुर्थांश शेष रहे तो उतार छान ले, उसमे तिलतैल, दही तथा कांजी यह भी क्वाथ के बराबर डाले, परन्तु दूध तैल से चारगुणा अधिक डालें, मुलट्ठी, पिप्पलामूल, चित्रा, सैंधानमक, वच, प्रसारणी, देवदारु, रायसन, गजपीपल, शुद्ध भिलावे, सौंफ, बालछड़ सब द्रव्य मिलाकर तैल का आठवां भाग ( ⅛ प्रस्थ ) हो, इनका कल्क बनाकर यथाविधि तैलपाक करे। यह तैल वात और कफ के सम्पूर्ण रोगो को, कुबड़ेपन को, लूलेपन को रीधनवाय, लकवा, हनुस्तम्भ, पीठ, ग्रीवा, सिर, कमर तथा जोड़ो की पीड़ा गठिया तथा अकड़न को दूर करता है, इसके अतिरिक्त अन्य भी वायु के प्रकोप से होने वाले रोगो को दूर करता है, प्रसारणी तैल इस लिये कहते हैं कि जुड़े हुए जोड़ो हुए जोड़ो को फैला देता है।

## माप तैल

१-माप ( उडद ), जौ, अलसी, कंडियारी, कौंच, कुरण्ड, गोखरू, स्योनाक, यह सब द्रव्य सात २ पल, जौकुट करके चोगुणे जल मे क्वाथ करे, जब चतुर्थांश शेप रहे तो छान ले। २-कपास के बीज (वड़मे), वेर, सन के बीज, कुलथी यह सब दस २ पल लेकर चोगुणे जल में काढ़ा करे, और चतुर्थांश रहने पर उतार कर छान ले। ३-वकरे का मास १ प्रस्थ ले कर ६४ पल जल मे काढ़ा करे, चतुर्थांश शेप रहे तो उतार कर छान ले, तिलतेल १ प्रस्थ। गिलो, कुठ, सोठ, रायसन, इटसिट, एरण्डमूल, मवां सौंफ, खरैटी, प्रसारणी, जटामासी, कोड़, सब आध २ पल ले, जल से पीस कल्क बना ले, फिर सब को वडे पात्र में डाल तैलपाक करे, सिद्ध होने पर उतार कर छान ले, इस तैल को मालिश से, नसवार से व पीने से ग्रीवास्तंभ, अपवाहुक अर्धांगवात, आक्षेपक, अपतानक, हाथ-पाओ और सिर का कांपना, विश्वाची तथा लकवा, शोथ आदि सम्पूर्ण वायु के रोग शान्त होते है।

## शतावरी तैल

शतावरी, खरैटी, कंघी, शालपर्णी पृष्टपर्णी, एरडमूल, असगंध, गोखरू, विल की छाल, काश, कटसरैमा, यह सब डेढ़ २ पल लेकर जौकुट करे और चोगुने जल मे पकावे, जब चतुर्थांश शेप रहे तो उतार कर छान ले, फिर तेल १ प्रस्थ, गोदुग्ध १ प्रस्थ, शतावरी का स्वरस १प्रस्थ, जल १ प्रस्थ, शतावर, देवदारु, जटामासी, तगर, चन्दन, सौंफ, खरैटी, कुठ, छलीरा, इलायची, कमल, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, मुलट्ठी, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋपभक यह सब एक २ कर्ष लेकर पीस कर कल्क वनावे, जगली उपलो की धीमी आच से तैलपाक करे। जब तैल सिद्ध हो जावे तो उतार कर सम्भाल रखे। इस तेल की मालिश करने से, नस्य लेने से, पीने से पुरुपो के सम्पूर्ण वीर्यरोग नष्ट होते हैं, स्त्रियो का योनिशूल तथा अन्य गर्भाशय के रोग दूर होते है। जिनके घर संतान न होती हो उनके उत्तम सन्तान होने लगती है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण शरीर की

पीडा, शिरशूल, पाण्डुरोग, कामला विष, रीघण, तिल्ली, शोथ, प्रमेह, दण्डापतानक, दाहयुक्त रक्तपित्तज्वर, वातपित्त के रोग, लकवा ,अफारा, रक्त-प्रदर, रक्तपित्त तथा शोथ आदि रोग दूर होते है।

"ॐ नारायणीये स्वाहा" इस मन्त्र को पढ कर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके शतावरी को उखाड़े। तथा—"ॐ कुमारी जीवनीये स्वाहा" इस मन्त्र से इस तेल का पान करे।

### कासीसादि तेल

हीराकसीस, कलिहारी, कुठ, सोठ, मवा, सैंधानमक, मनसिल, कनेर, वायविड़ग, चित्रा, अम्लतास, दन्ती, कडवी तोरी के वीज, सत्यानासी, हरताल, यह सब दवाइया एक २ तोला लेकर बारीक पीस कर कल्क करे, थोहर का दूध २ पल, आक का दूध २ पल, तेल १ प्रस्थ, गोमूत्र ४ प्रस्थ सबको मिला कर तेल पकावे, जब सिद्ध हो जावे तो छान कर रख लेवे। इस तेल को अगुली से गुदा मे बवासीर के मस्सो पर लगावे तो कुछ दिनो मे मस्से सूख कर गिर जाते हैं। यह किसी प्रकार का नुकसान भी नहीं करता। यह तेल बवासीर के लिये अत्युत्तम है।

### पिण्ड तेल

मजीठ, अनतमूल, मुलट्ठी, राल, मोम, सब दवाइया ४-४ तोले, प्रथम तीन दवाइयों को कपड़छान करले। तिलतेल अथवा एरण्डतेल १ सेर, दूध ८ सेर, जल ४ सेर ले। यथाविधि तेल पकावे, जब तेल पक जावे तो छान ले और उसमे राल पीस कर व मोम मिला कर गर्म करे। यह तेल वातरक्त को दूर करता है।

### अर्क तेल

सरसो का तेल १ प्रस्थ, आक के पत्तो का स्वरस ४ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ, हलदी जल मे पिसी हुई १ कुडव लेकर तेलपाक करे। यह तेल खुजली, पामा, कच्छू आदि को दूर करता है।

### मरिच्यादि तेल

कालीमिर्च, हरताल, त्रिवी, रक्तचन्दन, मोथा, मनसिल, जटामांसी,

हलदी, दारुहलदी, देवदारु, इन्द्रायण, कनेर की जड़, कुठ, आक का दूध, गोवर का रस, सब एक २ कर्ष, तेलिया विष २ तोले सबको पीस ले, फिर कड़वा तेल १ प्रस्थ, गोमूत्र २ प्रस्थ, जल २ प्रस्थ लेकर तेलपाक करे। यह तेल दुष्टव्रण, कुष्ठ, श्वित्र, विचर्चिका, पामा, रक्तविकार, सब प्रकार की खुजली को दूर करता है।

## त्रिफलादि तेल

त्रिफला, नीम के पत्ते, चिरायता, हलदी, दारुहलदी, रक्तचन्दन यह सब मिला कर जल मे पीस कल्क करे, तेल १ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ, ले तेलपाक करे। यह तेल भी फोड़े-फिंसी खुजली आदि को दूर करता है।

## निम्बबीज तेल

नीम की निमोली लेकर भृंगराज के रस में भिगो कर सुखा ले, फिर लसन के रस में भिगो कर सुखा ले, फिर उनका तेल निकाले। इस तेल की नसवार से आयु से पहले ही बुढापा, बालो का पक जाना और झुर्रियां पड़ जाना दूर होते हैं।

## मधुयष्टि तेल

आमले का स्वरस ४ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ, तिलतेल १ प्रस्थ, मुलट्ठी और यवक्षार इनका कल्क बना कर तेलपाक करे। यह तेल नस्य से व सिर मे लगाने से बालो को घना और काला करता है।

## करञ्ज तेल

करंजुए की गिरि, चित्रा, चमेली के पत्ते, कनेर के पत्ते, इनका कल्क बना कर तेल १ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ, तेलपाक करे। इसकी मालिश से बालचर तथा सिर का गञ्ज दूर होता है।

## नीलकादि तेल

नील के पत्ते (वसमा), केवड़े की जड़, भांगरा, पियावासा, अर्जुन के फूल, बीजक के फूल, काले तिल, तगर, जड़ समेत कमल, लोहचून, प्रियंगु, अनार की छाल, गिलोय, हरड़, बहेड़ा, आमला, कमल की जड़, यह सब १-१ तोला, इनका कल्क बना कर तेल १ प्रस्थ, त्रिफला का काढ़ा

४ प्रस्थ, भृंगराज का स्वरस ४ प्रस्थ, जल ४ प्रस्थ, तेल सिद्ध करे। यह तेल सिर के बालो को दृढ़, काले और लम्बे करता है। बालो को पकने से रोकता है। सिर की रूखी कर को दूर करता है। नसवार से उपजिह्विका रोग को दूर करता है।

### भृंगराज तेल

भृंगराजस्वरस ४ प्रस्थ, तेल १ प्रस्थ, लोहचून, त्रिफला, सारिवा, इनका कल्क बना कर ४ प्रस्थ जल देकर तेलपाक करे। यह तेल सिर के गंज, रूखी, सिर की खुजली, बालचर को दूर करता है, बालो को शीघ्र पकने से रोकता है।

### इरिमेदादि तेल

इरिमेद ( विड् खदिर, 'रेडू' यह खैर का भेद है ) की छाल १०० पल, एक द्रोण जल मे क्काथ करे, जब चतुर्थांश शेष रहे तो उतार कर छान ले, उसमे २ प्रस्थ तिलतेल और एक २ कर्ष, इरिमेद की छाल, लौंग, गेरू, अनार, पद्माख, मजीठ, लोध, मुलट्ठी, लाख, बट की छाल, नागरमोथां, दालचीनी, जायफल, कपूर, कंकोल, खैर कत्थ , पतंग, धाय के फूल, छोटी इलायची, नागकेसर, कायफल, इनको जल मे पीस कल्क बना कर तैलपाक करे। इस तेल को मुख मे धारण कर गरारे करने से मासखोरा, दान्तो की बदबू, पानी लगना, दांत हिलना, दांतो का कालापन, दन्तविद्रधि, दांत का कीड़ा, दातो का भुरना आदि सम्पूर्ण दन्तरोग नष्ट होते हैं।

### जात्यादि तेल

चमेली के पत्र, नीम के पत्र, पटोलपत्र, करंजुए के पत्र, मोम, मुलट्ठी, कुठ, हलदी, दारुहलदी, कौड़, मजीठ, पद्माख, लोधपठानी, हरड, नीलकमल, नीलाथोथा, अनन्तमूल, करंजुए की गिरी, यह सब समान भाग लेकर इनसे चौगुना तेल और ठीक पाक करने के लिये तेल से चौगुना जल मिला दे, नीलेथोथे को जल मे घोल कर मिलाना चाहिये। तेल सिद्ध होने पर छान ले और पीछे गरम करके मोम को मिलावे। इस तेल के

लगाने से नाडीव्रण ( नासूर ), फोडे, खारिश, शस्त्रव्रण, जले हुये, छिंधे हुए, नख और दात के काटने से होने वाले तथा अत्यन्त गले सड़े व्रण भी ठीक हो जाते हैं।

### हिंग्वादि तेल

हीरा हींग, नेपाली धनिया, सोंठ इनको जल मे पीस कल्क बनावे, फिर इनसे चौगुना कड़वा तेल और तेल से चौगुना जल मिला कर पाक करे, सिद्ध होने पर छान ले। इस तेल को कान मे डालने से कान का शूल, कृमि आदि नष्ट होते हैं। कान मे तेल प्रायः कुछ कोसा करके डाला जाता है।

### विल्वादि तेल

कच्ची बिलगिर को गोमूत्र मे पीस कर और तेल से चौगुने गोमूत्र में घोल कर कडवा तेल पकावे, चौगुना बकरी का दूध और चौगुना पानी भी डाले, सिद्ध होने पर छान ले। इस तेल को कोसा करके कान मे डालने से बहिरापन दूर हो जाता है।

### क्षार तेल

मूलीखार, जौखार, सज्जीखार, पाचो नमक, हीरा हींग, सुहांजना, सोंठ, देवदारु, वच, कुठ, सौंफ, रसौत, पिप्पलामूल, नागरमोथा, यह सब द्रव्य एक २ कर्ष पीस ले, तिलतैल १ प्रस्थ, केले की जड़ का रस, बिजौरे का रस, मधुशुक्त यह सब ४-४ प्रस्थ, पाक के लिये जल भी ४ प्रस्थ। तेल पकावे। इस तेल को कान मे डालने से कान का बहना, दुर्गंध, कर्ण-शूल, बहरापन, कान के कीड़े तथा अन्य कान और मुख के रोग दूर होते हैं।

### मधुशुक्त विधि

क्षारतेल मे कहे हुए मधुशुक्त की विधि बताते हैं। जंभीरी का रस १ प्रस्थ, शहद १ कुड़व, पिप्पलीचूर्ण ४ तोले इनको चिकने मिट्टी के भांडे में डाल मुख बंद करके तीन दिन तक अनाज की कोठी में दबा रक्खे, इसे मधुशुक्त कहते हैं। यदि ऐसा मधुशुक्त न मिल सके तो उसमें गन्ने का सिरका या अंगूरी सिरका डाल लेना चाहिये।

### पाठाद्य तेल

पाठा, हलदी, दारुहलदी, मूर्वा, मघा, चमेली के पत्र, दन्ती इनको पीस कल्क बना ले। इससे चौगुना तेल और तेल मे चौगुना पानी मिला कर पाक करे। इस तेल की नसवार लेने से पुराना जुकाम और नजला दूर होता है।

### कुष्ठाद्य तेल

कुठ, बिलगिर, मघ, सौंठ, मुनक्का इनका काढा करे और इनका ही कल्क करे, इससे तेल वा घी सिद्ध करे। इसकी नसवार लेने से छींको का रोग दूर हो जाता है। अर्थात् जिस मनुष्य को बहुत छींके आती हो, उसकी छींको को दूर करता है।

### गृहधूम तेल

घर का जाला, मर्वा, देवदारु, जौखार, करंजुआ, सैंधानमक, पुठकंडे के बीज, इनसे सिद्ध किया हुआ तेल नाक की बवासीर को दूर करता है। पाक करने के लिये इसमे भी चारगुणा जल मिला ले।

### वज्री तेल

थोहर का दूध, आक का दूध, धत्तूरे का रस, चित्रे का रस, भैंस के गोबर का रस, सब समान भाग, तेल सब का चौथा भाग, गोमूत्र तेल से चारगुणा, जल भी चारगुणा, यथाविधि तेलपाक करे। तेल सिद्ध होने पर छान ले और फिर गंधक मिलावे, मनसिल, हरताल, वायविडंग, अतीस, मिट्ठा तेलिया, कड़वी तोरी, कुठ, वच, बालछड़, मघ, मिर्च, सोंठ, हलदी, मुलट्ठी, सज्जीखार, जीरा देवदारु, सब एक २ कर्ष इनका बारीक कपड़-छान चूर्ण करके उस तेल मे अच्छी तरह मिला दे। इस तेल की मालिश करने से सम्पूर्ण प्रकार के कुष्ठ दूर होते हैं।

### करवीरादि तेल

कनेर की जड़, दन्ती, त्रिवी, कड़वी तोरी यह सब तेल से चतुर्थांश, तेल १ प्रस्थ, केले के खार का जल ४ प्रस्थ, तेलपाक करे। इसके मलने से बाल उड जाते हैं, यह 'बालसफा' तेल है।

## चन्दनादि तेल

चंदन, सुगंधवाला, नख, रक्तचन्दन, मुलट्ठी छलीरा, पद्माख, मजीठ, चीड, देवदारु, खस, इलायची, गंधविलाव के अंडकोश, तेजपत्र, मुरा, जटामांसी, कंकोल, प्रियंगु, नागरमोथा, हलदी, अनंतमूल, कोड, लौंग, अगर, केसर, दालचीनी, रेणुका, नालुक—यह सब एक २ कर्ष, तिल-तेल १ प्रस्थ, दही का तोड़ ४ प्रस्थ, लाक्षारस १ प्रस्थ लेकर यथाविधि तेल पाक करे। इसके मलने से शरीर के अंदर का पुराना ज्वर, क्षय, शोष, भूत-प्रेत, राक्षस, जादू-टोना आदि, ग्रह, मिर्गी, पागलपन, दुर्गंधि कुरू-पता आदि दूर होते हैं, बलवर्धक है, आयु-वर्द्धक और पुष्टिकारक है, वशीकरण है। विशेषकर तपदिक और रक्तपित को दूर करता है।

## वचा तैल

वच, कचूर, हलदी, दारुहलदी, देवदारु, सोंठ, हरड़, पतोस, नागर-मोथा, इन्द्रजौ, यह सब १०-१० पल लेकर कूट कर ४ द्रोण जल मे पकावे, १ द्रोण रह जावे तो छान ले, उसमे कड़वा तेल १ आढक, पंवाड़ के पत्तो का रस ४ प्रस्थ, मीठी आंच से पकावे, सिद्ध होने पर छान ले और उसमे आठवा भाग सिन्धूर अच्छी तरह से मिला दे। इस तेल के मलने से कण्ठमाला (हंजीरां) दूर होती है।

## लांगली तेल

निर्गुण्डी का स्वरस ४ प्रस्थ, कलिहारी कंद $\frac{3}{4}$ प्रस्थ (कलिहारी को महासनी भी कहते हैं, इसका कंद हल की तरह तिकोना होता है। ऊपर के सिरे मे दण्डाकार पौदा निकलता है, पत्ते बांस के पत्तो की तरह किन्तु अत्यन्त कोमल और आगे से मुड़े हुए, सिरे पर कुछ पतली २ नरम शाखाएं हो जाती हैं जिन पर कि फूल लगते हैं, फूल बिखरी हुई हाथ की अंगुलियो की तरह कर्वदार लाल पीली पंखुडी वाले होते हैं, इसे वह्निशिखा भी कहते हैं अर्थात् आग की लपट जैसे लाल पीली है वैसे ही इसका फूल होता है। इसका कंद ही प्रायः प्रयोग में आता है), कड़वा तेल १ प्रस्थ, कल्क को पीस ले और ४ प्रस्थ जल मिला कर पाक करे। यह तेल कंठमाला और वातरक्त के लिये अत्युपयोगी है।

### नपुंसकतानाशक तेल

सुअर की विष्ठा को सुखा कर पातालयन्त्रविधि से तेल निकाले। इस तेल की मालिश करने से इन्द्री के सारे दोष दूर हो जाते हैं, नामर्दी तथा कमजोरी दूर हो जाती है, लिंग मोटा तथा जोर वाला हो जाता है।

इति तैलाधिकार।

## अथ आसव अरिष्ट अधिकार

दवाइयां मधु, गुड आदि के साथ पानी मे घोल कर मटके मे चिरकाल तक पडी रहने दें और जब उनमे मद्यांश ( शराब का खमीर ) उत्पन्न हो जावे तो छान कर रख लेते हैं। उन्हें आसव या अरिष्ट कहते हैं। आसव-अरिष्ट मद्य ( शराब ) के भेद होते हैं। किन्तु इनमे मद ( नशा ) नहीं होता, उनमे जो भी मद्यांश होता है, उसका फल यह होता है कि १-औषधि का शरीर मे शीघ्र प्रभाव होता है। २-चूर्ण और काढ़ों की अपेक्षा आसव और अरिष्ट मे अधिक शक्ति होती है। ३-आसव-अरिष्ट वर्षों तक खराब नहीं होते, जितने पुराने होते जावेगे उतने ही अधिक गुणकारक होगे।

### आसव अरिष्ट का भेद

दवाइयो का चूर्ण, गुड और शहद को पानी मे घोलकर चिकने मटके मे डाल दे और मुँह बन्द करके महीनाभर तूडी व ढेर मे दवा छोड़े और फिर निकाल कर छान बोतलो मे भर रखे, इसे आसव कहते हैं। अरिष्ट—दवाइयो का काढा बना ले, फिर छान कर उस जल को चिकने मटके में भर दे, फिर उसमे गुड़, मधु तथा अन्य प्रक्षेप की दवाइयां मिला कर पूर्वोक्त विधि से बन्द कर महीनाभर दबा रखे, फिर निकाल कर छान ले और बोतलो मे भर रखे इसे अरिष्ट कहते हैं।

साधारण मान—जल १ द्रोण, गुड़ १ तुला, शहद ½ तुला, प्रक्षेप दवाइयां जल से दसवां भाग।

नोट—प्रायः कई बार आसव अरिष्ट कच्चे रह जाते हैं। अधिक देर

तक पड़े रहने से खट्टे ( सिरका ) हो जाते है, इसलिये इनकी परीक्षा कर लेनी चाहिये। गरमी के मौसिम मे आसवारिष्ट १५ दिन मे तयार हो जाते हैं, सरदी के मौसिम मे महीना वा इससे अधिक। कच्चे रह जावें तो खमीर बोतलो मे बनता रहता है, कई बार बोतलो के कार्क अपने आप उड़ जाया करते हैं, अथवा बोतले फट जाया करती हैं। परीक्षाविधि—ऋतुकाल के अनुसार १५ दिन वा महीने के बाद मटके का मुँह खोले और कान लगा कर सुने यदि उसमे 'शाँ शाँ' की आवाज प्रतीत होती हो अथवा दियासलाई मटके के अन्दर बुझ जावे तो कच्चा जानो। यदि आवाज न आवे, दियासलाई जल तक पहुँच कर भी न बुझे, मद्यगन्ध प्रतीत हो, रङ्ग कुछ निखरा हुआ हो तो आसवारिष्ट सिद्ध हुआ जानो। आसवारिष्ट छ छः मास के अनन्तर दोबारा छान लेने चाहिये, यदि कुछ स्वच्छ हो तो वर्ष वर्ष के अनन्तर छान लेने चाहिये। जैसे जैसे पुराने होते जावेगे वैसे ही निर्मल एव पारदर्शक बनते जायेगे। मात्रा—आसवारिष्टो की साधारण मात्रा १। तोले से २॥ तोले तक है। रोगी का बल और अवस्था विचार कर न्यूनाधिक भी कर सकते हैं। आसवारिष्ट नित्य भोजन के एक या डेढ़ घण्टा बाद थोडा जल वा कोई अर्क मिला कर पीने चाहिये।

अब हम भिन्न-भिन्न रोगो पर भिन्न-भिन्न आसवारिष्ट बताते हैं।

## उशीर आसव

खस, सुगन्धबाला, तेजपत्र, गम्भारी, नीलकमल, फूलप्रियङ्गु, पद्माख, लोधपठानी, मजीठ, धमाह, पाठा, चिरायता, बड़ की छाल, गूलर की छाल, कचूर, पापड़ा, श्वेतकमल, पटोलपत्र, कचनार की छाल, जामन की छाल, मोचरस, यह सब द्रव्य एक एक पल लेकर जौकुट कर ले, इसमे मुनक्का, २० पल, धाय के फूल १६ पल, खाड ५ सेर, शहद ५ सेर, जल दो द्रोण। सब को मिट्टी के चिकने मटके मे डाल कर मुख बन्द कर ढेर में मास भर दबा छोड़े। जब ठीक सिद्ध हुआ समझे तो निकाल छान ले और बोतलो मे भर कर बन्द कर रखे। इसकी मात्रा—१ तोला से २ तोला तक। भोजन के दो घण्टा पश्चात् थोड़ा जल

मिलाकर देवें। इसके निरन्तर पीने से रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ, प्रमेह, प्रमेहपिडका, रक्तज बवासीर, कृमिरोग, शोथरोग दूर होते हैं।

## पिप्पल्यासव

मघ, मिर्च, चव्य, हलदी, चित्रा, बावड़िंग, सुपारी, लोधपठानी, पाढ, आमले, एलवालुक, खस, चन्दन श्वेत, कुठ, लौंग, तगर, जटामासी, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, प्रियंगुफूल, यह सब दो दो तोला लेकर चूर्ण कर ले, गुड १५ सेर, धाय के फूल १० पल, मुनक्का ६० पल, जल दो द्रोण, सब को मिट्टी के मटके मे डाल मुँह बन्द करके एक महीना भर रख छोड़े। सिद्ध होने पर निकाल छान बोतलो मे भर ले। मात्रा—इसकी एक-दो तोला तक है। इसके पीने से क्षय, वायगोला, गुल्म, उदररोग, दुर्बलता, ग्रहणी, पाण्डुरोग, बवासीर दूर होते हैं। विशेषकर क्षय और पुरानी खांसी को दूर करता है।

## लोहासव

शुद्ध लोहचून, त्रिकुटा, त्रिफला, अजवाइन, बावडिंग, नागरमोथा, चित्रा, प्रत्येक ४-४ पल, धाय के फूल २० पल, इन सब का चूर्ण करके जल दो द्रोण, शहद ६४ पल, गुड ५ सेर सबको चिकने मटके मे डाल, आसवविधि से संधान करे। मात्रा—१ तोला से २ तोला तक। लोहासव के पीने से मन्दाग्नि, पाण्डु, शोथ, गुल्म, उदररोग, बवासीर, कुष्ठ, तिल्ली, खुजली, खांसी, श्वास, भगंदर, अरोचक, ग्रहणी और हृद्रोग दूर होते हैं। लोहासव रक्त उत्पन्न करने वाले यकृत और तिली के विकारो को दूर कर देता है, जिससे कि शरीर मे नवीन रक्त उत्पन्न हो जाता है और मनुष्य स्वस्थ और बलवान् बन जाता है।

## लोध्रासव

लोधपठानी, कचूर, पोहकरमूल, बावड़िंग, मूर्वा, त्रिफला, चव, चित्रा, सुपारी, इन्द्रायण, चिरायता, प्रियंगु, कौड, पिप्पलामूल, पतीस, इन्द्रजौ, कुठ, पाढ, तगर, तेजपत्र, कालीमिर्च, नागरमोथा सब एक एक कर्ष, इनका चूर्ण कर १ द्रोण जल मे मिला, सब का क्वाथ करे, फिर क्वाथ से

आधा मधु डाले और १५ दिन तक भूमि मे गाड़ छोडे । आसव सिद्ध होने पर निकाल ले । इसके पीने से वात, पित्त, कफ के प्रमेह, पाण्डु, रक्तबवासीर, ग्रहणी, कुष्ठ, रक्तप्रदर आदि सब रोग दूर होते हैं ।

## दशमूलारिष्ट

शालपर्णी, पृष्टपर्णी, छोटी बड़ी कंडियारी, भखड़े । विल, अरणी, स्योनाक, पाढल, खंभारी इनकी छाल, यह दसो द्रव्य पाच पाच पल, चित्रा २५ पल, पोहकरमूल २५ पल, लोध २० पल, गिलोय २० पल, धाय के फूल १६ पल, जवाहा १२ पल, खैर कत्थ, बीजक और हरड़ आठ ८ पल, कुठ, मजीठ, देवदारु, बावडिंग, मुलट्ठी, भडिंगी, कैथ, इटसिट, चव, जटा-मांसी, प्रियगु, कृष्णासारिवा, कालाजीरा, त्रिवी, रेणुका, रायसन, मघ, सुपारी, कचूर, हलदी, सौंफ, पद्माख, नागकेसर, नागरमोथा, इन्द्रजो, सोठ, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, प्रत्येक दो २ पल सब को कूट कर आठगुणा जल मे काढा करे, चतुर्थांश शेष रहे तो छान कर चिकने मटके में भर दे । मुनक्का ६० पल लेकर चौगुने पानी मे क्वाथ करे, तीसरा भाग शेष रहे तो उस क्वाथ को भी उसमे मिला दे, शहद ३२ पल, गुड़ पुराना ४०० पल ( २० सेर ), धाय के फूल ३० पल । ककोल, सुगंधवाला, चन्दन, जायफल, लौंग, तेजपत्र, दालचीनी, इलायची, नागकेसर, मघ प्रत्येक दो २ पल, कस्तूरी शाण प्रमाण ( ३ माशे पोटली बाध कर ) मिला कर एक मास भर भूमि मे दबा दे । सिद्ध होने पर निकाल छान ले । यदि कुछ अधिक साफ करना हो तो छटाक भर निर्मली के फल पीस कर उसमे मिला दे, इससे गाद नीचे बैठ जावेगी । दशमूल अरिष्ट के पीने से, ग्रहणी, अरोचक, श्वास, कास, गुल्म, भगंदर, क्षय, वातव्याधि, उलटी, पाण्डुरोग, कामला, कोढ़, बवासीर, प्रमेह, मंदाग्नि, उदररोग, शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, धातुक्षय, आदि रोग दूर होते हैं । यह आसव कमजोर और दुबले पतले मनुष्यो को हृष्ट-पुष्ट करता है । जिन स्त्री-पुरुषो के संतान न हो उनको संतान देता है । विशेषकर जब बच्चा उत्पन्न हो उस समय इसका ४० दिन तक प्रयोग करने

से स्त्रियों को प्रसूति से होने वाले, सन्निपात, अफारा, शूल तथा वायु के रोगों का भय नहीं रहना। आजकल यह अरिष्ट प्राय प्रसूति स्त्रियों पर ही अधिक प्रयोग किया जाता है।

## हारहूरासव वा द्राक्षारिष्ट

मुनक्का २॥ सेर, जल दो द्रोण ले काढ़ा करे, उसे छान कर उसमे गुड़ १० सेर, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेसर, प्रियंगु, कालीमिर्च, मघ, वायविड़ंग, इनका चूर्ण प्रत्येक १-१ पल, चिकने वर्तन मे डाल पृथ्वी में गाड़ छोड़े, सिद्ध होने पर छान ले। इसके पीने से उरःक्षत, क्षय, कास, श्वास, पाण्डुरोग, अरोचक, अग्निमांद्य आदि रोग दूर होते हैं। शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है।

## अभयारिष्ट

अच्छी हरड़े गुठली निकाल कर १ प्रस्थ, आमले, कैथफल, चित्रा, पाठा, बिलगिर, सोठ यह सब १-१ पल, जल १ द्रोण इनका काढ़ा करे, जब चौथा भाग शेष रहे तो छान कर चिकने मटके मे डाल दे, फिर उसमे पुराना गुड़ ५ सेर डाले और बंद करके १५ दिन वा महीना भर पृथ्वी मे गाड़ दे। इसके पीने से ग्रहणी, पाण्डुरोग, बवासीर, तिल्ली, विषमज्वर, उदावर्त, कामला, हृद्रोग, श्वास, दाह, अफारा. पेटदर्द, सोजा, मंदाग्नि तथा अन्य उदररोग दूर होते हैं।

## कुमारी-आसव नं० १

घीकुआर का गूदा, अदरक का रस, गुड़ यह तीन तीन प्रस्थ लेवे, और इनमे दो प्रस्थ गर्म जल मिला कर मटके मे डाल मुंह बंद कर भूमि मे दबा दे। पंद्रह दिन के अनंतर निकाल कर छान ले। इसके पीने से वायगोला, पेटदर्द, पाण्डु, कामला, श्वास, कास, क्षय, मंदाग्नि आदि रोग दूर होते हैं।

## कुमारी-आसव नं० २

कुमारीरस १ द्रोण, गुड़ ५ सेर, शहद २॥ सेर, शुद्ध लोहचून २॥ सेर, पोटली बांध कर डाले, त्रिकुटा, लौंग, दालचीनी, इलायची,

तेजपत्र, नागकेसर, चित्रा, पिप्पलामूल, बावडिंग, गजपीपल, चव, कौड, हाऊवेर, धनिया, सुपारी, नागरमोथा, त्रिफला, रायसन, देवदारु, हलदी, दारुहलदी, मूर्वा, दन्ती, पोहकरमूल, बला, अतिबला, कौंच, गोखरू, सौंफ, हिंगोट, लाल और श्वेत इटसिट, लोध, स्वर्णमाक्षिकभस्म प्रत्येक दो २ तोला, धाय के फूल ८ पल सब का चूर्ण कर महीना भर दबा छोड़े, सिद्ध होने पर निकाल बल के अनुसार १-२ तोले पीने से मंदाग्नि, आठ प्रकार के उदरविकार, परिणामशूल, क्षय, प्रमेह, उदावर्त, अपस्मार, पाण्डु-रोग, कामला, मूत्रकृच्छ्र, वीर्यदोष, अश्मरी, कृमिरोग, हृद्रोग, यकृत् तथा प्लीहा के रोग, रक्त की न्यूनता आदि रोग दूर होते हैं। बल बढ़ता है, वर्ण स्वच्छ हो जाता है, विशेषकर स्त्रियो के मासिकधर्म की रुकावट तथा योनि-गर्भाशयशूल दूर हो जाते हैं, रक्त खुल कर आ जाता है। वायगोला, देर की कब्ज और पेट के क्रिमि आदि रोग दूर हो जाते है, जिन रोगियो का जिगर बढा हुआ हो, रक्त कम बनता हो, तिल्ली हो उनके लिये अत्युत्तम है।

नोट:—इसमे से लोहचून की पोटली निकाल लेनी चाहिये। और खरल मे डाल त्रिफला के काढ़े अथवा घीकुआर मे खरल कर पुटे देता जावे इससे अत्युत्तम लोहभस्म बनती है।

## कुटजारिष्ट

कुडा की छाल ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर, महुआ के फूल, गंभारी के फल दस दस पल, सब का ४ द्रोण जल मे क्वाथ करे। १ द्रोण शेष रह जावे तो छान ले, इसमे धावे के फूल २० पल, गुड ५ सेर डाल कर महीना भर दबा छोड़े। इसके पीने से विषमज्वर, संग्रहणी, मंदाग्नि और बवासीर आदि रोग दूर होते हैं। ग्रहणी और रक्तबवासीर के लिये यह अत्युत्तम है।

## विडंगारिष्ट

बावड़िंग, रायसन, पिप्पलामूल, कुडाछाल, इन्द्रजौ, पाढ, एलवालुक, आमला, यह प्रत्येक पाच २ पल, जल ८ द्रोण, काढ़ा करे, १ द्रोण जब शेष रहे तो उतार छान ले, शीतल होने पर उसमे शहद १५ सेर, धाय के फूल १० पल, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र दो-दो पल, प्रियंगु, कचनार,

लोध एक-एक पल, त्रिकुटा ८ पल, इनका चूर्ण उसमे मिला दे और महीना भर दबा छोड़े। इसके पीने से अंतर्विद्रधि, उरुस्तम्भ, पथरी, प्रमेह, प्रत्यष्ठीला, भगंदर, गंडमाला, हनुस्तंभ आदि रोग विशेषकर रक्त और कृमिरोग दूर हो जाते हैं। मात्रा—२ तोला तक।

### देवदारु अरिष्ट

देवदारु $\frac{1}{2}$ तुला, वासा २० पल, मजीठ, इन्द्रजौ, दन्ती, तगर, हलदी, दारुहलदी, रायसन, नागरमोथा, बावडिंग, सिरसछाल, खैरछाल, अर्जुनछाल प्रत्येक १०-१० पल। अजवायन, इन्द्रजौ, चन्दन, गिलोय, कौड, चित्रा, प्रत्येक ८-८ पल, सब को जौकुट करके ८ द्रोण जल मे पकावे, १ द्रोण शेष रहने पर छान ले और उसमे धाय के फूल १६ पल, शहद १५ सेर, त्रिकुटा २ पल, त्रिजात ( इलायची, दालचीनी, तेजपत्र ) ४ पल, प्रियंगु ४ पल, नागकेसर २ पल सब को कूट कर चिकने मिट्टी के पात्र मे डाल कर मुख बंद करे और महीना भर गड़ा रहने दे। पश्चात् निकाल कर छान ले। इसके पीने से दुर्जय प्रमेह, वायु के रोग, ग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, आदि रोग दूर होते हैं। इसके अतिरिक्त यह कुष्ठ, पाण्डु, पिड़का, रक्तजविष को भी दूर करता है। मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक।

### खदिरारिष्ट

खैर की लकड़ी २$\frac{1}{2}$ सेर, बावची १२ पल, दारुहलदी २५ पल, त्रिफला २० पल इनको कूट कर ८ द्रोण जल मे क्वाथ करे, जब १ द्रोण शेष रहे तो उतार छान कर उसमे १० सेर मधु और ५ सेर खांड, धाय के फूल २० पल, कंकोल, नागकेसर, जायफल, लौंग, इलायची, तेजपत्र, यह सब एक २ पल, पीपल ४ पल, इनको कूट कर मिला दे और पूर्वविधि से महीना भर दबा छोड़े। पश्चात् निकाल ले और छान कर संभाल रक्खे। इसके पीने से महाकुष्ठ, हृद्रोग, पाण्डुरोग, अर्बुद, गुल्म, ग्रंथि, कृमिरोग, श्वासरोग, सीहा, उदर आदि रोग दूर होते हैं। यह परम रक्तशोधक है।

### बब्बूलारिष्ट

कीकर की छाल १० तुला कूटकर ४ द्रोण जल मे क्वाथ करे, १ द्रोण

शेष रह जावे तो उतार छान ले और चिकने मटके मे डाल दे, फिर गुड १ तुला, धाय के फूल १६ पल, मघचूर्ण ४ पल, जायफल, लौंग, कंकोल, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, मरिच, तेजपत्र सब १-१ पल चूर्ण कर उसमे मिला दे और बंद करके एक महीना भर दबा छोड़े, पश्चात् निकाल छान कर उसमे से आयु बल के अनुसार १ तोला से २॥ तोला तक पीवे तो कोढ, अतिसार, प्रमेह, श्वास कासादिरोग दूर होते है।

इति आसवारिष्टाधिकार।

## अथ गुडिकाधिकार

गुडिका बनाने के लिये चूर्ण से मिश्री चारगुणा, गुड़ दुगना और शहद या गुग्गुल समान लेना चाहिये। मिश्री वा गुड मे थोडा जल डाल खड़ी चाशनी कर लेनी चाहिये, उसमे चूर्ण मिला कर एक २ माशे की गोली बना ले। मधु की चाशनी नहीं करनी चाहिये। गुग्गुल शुद्ध करके चूर्ण मिला कर कुटाई करनी चाहिये, कुटाई से गरम होकर नरम हो जाता है और दवाइयां उसमें मिल कर एकजान हो जाती हैं। गुग्गुल की मात्रा भी ४ रत्ती से १ माशा तक हो सकती है।

गुडिका को मोदक, वटी, वटिका, गुडा, वर्ति और पिण्डी भी कहते हैं। किन्तु यहा मोदक आदि की मात्रा ६ माशे से १ तोला तक भी हो सकती है। छोटी गोली को वटी, बडी को गुटिका और लड्डू के समान को मोदक कहते हैं।

### बाहुशाल गुड़

इन्द्रायण, नागरमोथा, सोठ, दन्ती, हरड, त्रिवी, कचूर, वायविडंग, भखड़े, चित्रा, तेजपात, सब दो-दो कर्ष, जिमीकंद ८ पल, विधारामूल ४ पल, शुद्ध भिलावे ४ पल, सब को जौकुट करके एक द्रोण जल में काढ़ा करे, जब चौथाभाग शेष रहे तो उसमे ऊपर की दवाई से तिगुना (६० पल) गुड लेकर चाशनी करे, जब चाशनी ठीक हो जावे तो चित्रा, त्रिवी, दन्ती, तेजबल यह एक २ पल, मघ, मिर्च, सौंठ, इलायची, आमले, दालचीनी सब तीन २ पल, सब का कपड़छान चूर्ण करे और उसे चाशनी मे मिला दे।

शीतल होने पर प्रस्थ मधु मिला दे, फिर ६-६ माशे के मोदक ( लड्डू ) बना ले, इसको दूध, जल अथवा किसी क्काथ आदि से खावे तो वायु का उदररोग, बवासीर, वायगोला, उरुस्तम्भ, जुकाम, नजला, क्षय, हलीमक, पाण्डुरोग, प्रमेह आदि रोग दूर हो जाते हैं। यह रसायन है। अनुपानभेद से सम्पूर्ण रोगो को नाश करता है।

### मरिचादि वटी

मरिच १ कर्ष, मद्य १ कर्ष, जौखार ½ कर्ष, अनारदाना २ कर्ष इन सब का कपड़छान चूर्ण करले, फिर पुराना गुड़ ८ कर्ष लेकर उसमे एक २ माशे की गोली बना ले। इस गोली को मुख मे रखने से सब प्रकार की खासी दूर होती है। यह अनुभूत योग है।

### गुड़वटिका

गुड, सोठ, हरड़, नागरमोथा, गुड़ दुगना, बाकी सब समानभाग, चूर्ण कर गुड मे गोली बनाले। इसके चूसने से खांसी दूर होती है।

अथवा—केवल बहेड़ा चूसने से भी खांसी दूर होती है।

### आमलक्यादि गुडिका

आमले, कमलफूल, कुठ, लाजा ( धान की खीले ), वट के अंकुर, इनको कूट कर शहद में एक २ माशे गोली बना ले, मुंह में रख कर चूसता जावे। इसके चूसने से बढी हुई प्यास और मुखशोष दूर होता है।

### सञ्जीवनी वटी

बायबिड़ंग, सोठ, मर्चा, हरड़ बहेडा, आमला, वच, गिलोय, शुद्ध भिलावे, शुद्ध मिट्ठा तेलिया विष सब समभाग लेकर चूर्ण करे और गोमूत्र मे खरल कर १-१ रत्ती की गोली बनावे, इसको अदरक के रस के साथ खावे तो, अजीर्ण, हैजा, अतिसार, सन्निपात, विष तथा सर्पविष दूर होते हैं। इसकी मात्रा १ से ४ रत्ती तक, इलायची, सौंफ, दालचीनी आदि के क्काथ से भी दे सकते हैं। यह बड़ी प्रसिद्ध और अनुभूत दवाई है, इसमे विशेष गुण यह है यदि किसी को ज्वर चढ़ा हुआ हो तो उसे उतार देती है, यदि कोई ठंडा पड़ गया हो तो उसमे गर्मी पैदा कर देती है। विदेशों मे भ्रमण

करने मे अथवा तीर्थयात्रा आदि मे जहां कि पानी की लाग का भय रहता है वहा नित्य गोली खाने से शरीर मे किसी प्रकार का विकार होने का भय नहीं रहता ।

## व्योपादि वटी

त्रिकुटा, चित्रा, चव, अम्लवेत, तालीसपत्र, समाकदाना, जीराश्वेत सब १-१ कर्ष. तेजपत्र, दालचीनी, इलायची १-१ टंक, गुड पाच पल। प्रथम गुड की चाशनी करे, फिर दवाइयो का चूर्ण बना कर उस मे मिलाकर १-१ माशे की गोली बना कर चूसे। इससे जुकाम, नजला, श्वास, खासी, हिचकी, अरुचि, स्वरभेद तथा अन्य कफ के रोग दूर होते हैं।

## गुडचतुष्टय वटी

१—गुड और सोठ मिलाकर खाने से आमवात गंठिया तथा अन्य आम के रोग दूर होते हैं। २—गुड और मघा मिला कर खाने से अरुचि दूर होती है। ३—गुड और जीरा खाने से मूत्रकृच्छ्र दूर होता है। ४—गुड और हरड खाने से छ: प्रकार की ववासीर दूर होती है। यह गुड़ के चार योग हैं।

## सूरण वटक

सूखा जमीकंद पीसकर ३२ कर्ष ले, चित्रा १६ कर्ष, सोठ ४ कर्ष, मिर्च २ कर्ष, गुड़ सब से दुगना सबको कूट कर ३-३ माशे की गोली बनाले। इसके खाने से ६ प्रकार की ववासीर दूर होती हैं।

## वृहत्सूरण वटक

जमीकंदचूर्ण १६ कर्ष, विधाराचूर्ण १६ कर्ष, मुसली ८ कर्ष, चित्रा ८ कर्ष, हरड, बहेडा, आमला, बावड़िंग, सोठ, मघां, शुद्ध भिलावे, पिप्पलामूल, तालीसपत्र ४-४ कर्ष, दालचीनी, इलायची, मिर्च दो-दो कर्ष सब का चूर्ण कर ले और दुगने गुड मे तीन-तीन मासे की गोली बनावे। इसके खाने से मदाग्नि, ६ प्रकार की ववासीर, वातकफ की सग्रहणी, श्वास, खांसी, क्षय-रोग, तिल्ली, श्लीपद, शोथ, प्रमेह, भगंदर तथा बुढ़ापे को दूर करती है। बुद्धिवर्धक तथा रसायन है। भूख बढ़ाने मे और बवासीर के लिये यह एक प्रसिद्ध औषधि है।

### मण्डूर वटक

त्रिफला, त्रिकुटा, देवदारु, नागरमोथा, चित्रा, पिप्पलामूल, स्वर्ण-माक्षिकभस्म, चव्य, दारुहलदी, दालचीनी, वायविडंग, सब समान भाग ले कर चूर्ण करे। १०० वर्ष के पुराने मण्डूर की भस्म सब से दुगनी और गोमूत्र सबसे आठगुणा लेकर पाक करे, जब गाढी हो जावे तो एक माशे की गोली बनावे। इसे नित्य तक्र के साथ खाने से पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, बवासीर, शोथ, कोढ़, कफ के रोग, उरुस्तम्भ, तिल्ली तथा यकृत के रोग नष्ट होते हैं।

### चन्द्रप्रभा वटी

कपूर, वच, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, देवदारु, हलदी, अतीस, दारुहलदी, पिप्पलामूल, चित्रा, धनिया, त्रिफला, चव्य, विडंग, गजपीपल, त्रिकुटा, सोनामाखीभस्म, जौखार, सज्जीखार, सैंधानमक, सौंचलनमक, विडनमक सब दवाइयां एक-एक टक, त्रिवी, दन्ती, तेजपत्र, दालचीनी, इलायची, वंशलोचन प्रत्येक एक एक कर्ष, लोहभस्म २ कर्ष, मिश्री ४ कर्ष, शुद्ध शिलाजीत ८ कर्ष, शुद्ध गुग्गुल ८ कर्ष सबको मिला कर खूब कुटाई करे, जब एकजीव हो जावें तो दो-दो रत्ती की गोलियां बना ले। आयु और बल के अनुसार एक वा दो गोली दूध, त्रिफलाक्वाथ अथवा अन्य किसी उपयुक्त अनुपान के साथ खाने से सम्पूर्ण प्रकार के प्रमेह, यहां तक कि मधुमेह (मूत्र में शक्कर आना), मूत्र में चर्बी जाना, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, विबंधशूल, आध्मानशूल, ग्रंथिरोग, अर्बुदरोग, अन्त्रवृद्धि, अंडवृद्धि, कमरदर्द, श्वास-कास, खुजली, पाण्डु, कामला, हलीमक, कुष्ठ, बवासीर, प्लीहा, उदररोग, भगंदर, दन्तरोग, नेत्ररोग, स्त्रियों के मासिक-धर्म की रुकावट एवं पीडा, पुरुषों के वीर्यरोग, मंदाग्नि, अरुचि, वात पित्त, कफ के रोगों को दूर करती है। वृष्य है, बल देने वाली है, रसायन है।

नोट—इसमें कर्ष ४ शाणा का लेना चाहिये। यह अतिप्रसिद्ध गोलियां हैं। जितनी दवाइयां ताकत की बाजार में बिकती हैं वे चन्द्रप्रभा होती हैं, लोग इसका नाम बदल बदल कर इश्तहारबाजी करते हैं।

## कांकायन गुडिका

अजवायन, जीरा, धनिया, मिर्च, गिंगियारी ( इसपंद ), अजमोद, कलौंजी प्रत्येक ४-४ टंक, घी मे भुनी हुई हींग ६ टंक, जौखार, सज्जीखार, सैंधा, सौंचल, विड, साभर, सामुद्र यह पांचो नमक, त्रिवी यह ८-८ टंक। दन्ती, कचूर, पोहकरमूल, वायविडंग, अनारदाना, हरड़, चित्रा, अम्लवेत, सोठ यह सब १६-१६ टंक, सबका बारीक चूर्ण कर बिजौरे के रस में भावना देकर गोली बना ले। यह गोली गुल्म के लिये अत्यन्त हितकर है। मद्य के साथ देने से वायु क. गोदुग्ध के साथ देने से पित्त का, गोमूत्र के साथ देने से कफगुल्म और दशमूल क्वाथ से सन्निपात का, ऊटनी के दूध से स्त्रियों का रक्तगुल्म दूर होता है। इसके अतिरिक्त हृद्रोग, ग्रहणी, शूल, क्रिमि और बवासीर दूर होती है।

## योगराजगुग्गुल

सोठ, मघा, चव, पिप्पलामूल, चित्रा, घी मे भुनी हुई हींग, अजवायन, श्वेत सरसो, दोनो जीरे, रेणुका, इन्द्रजौ, पाढ, वायविड़ंग, गजपीपल, कोड़, अतीस, भंडिगी, वचा, मूर्वा प्रत्येक एक-एक टंक, त्रिफला सब से दुगुना, सब का कपड़छान चूर्ण करले, शुद्ध गुग्गुल सबके बराबर सबको इकट्ठा करके अच्छी तरह कुटाई करे, वृद्ध वैद्यो के मत मे गुग्गुल को सवा लाख चोट लगानी चाहिये। इससे गुग्गुल रसायन का गुण करता है। कुटाई घी का हाथ देकर करनी चाहिये, ठीक होने पर ४-४ रत्ती की गोली बनाले, यदि गोली न बनानी हो तो इसे किसी चिकने वर्तन मे रख छोड़ना चाहिये। योगराजगुग्गुल बड़ी प्रसिद्ध दवाई है। इसकी मात्रा— ४ रत्ती से १ माशे तक गरम दूध, गरम जल वा कोई वायु वा कफ को दूर करने वाले काढ़े के साथ देनी चाहिये। इसके सेवन करते समय कोई विशेष पथ्य परहेज़ नहीं, चलता फिरता मनुष्य खा सकता है। इसके सेवन से सब प्रकार के वायुरोग, कुष्ठ, बवासीर, प्रमेह, ग्रहणी, वातरक्त, नाभिशूल, उदावर्त, भगंदर, क्षय, गुल्म, मिर्गी, छाती का रुकना, मंदाग्नि, श्वास, कास, अरुचि, वीर्य के दोष, स्त्रियो के योनिशूल,

गर्भाशयशूल तथा मासिकधर्म की रुकावट आदि रोग दूर होते हैं। पुरुष-स्त्रियो के वीर्य और रज को शुद्ध करके संतान उत्पन्न करने के योग्य बना देता है।

अनुपान—रास्नादि क्वाथ के साथ देने से वायु के रोगो को शान्त करता है। काकोल्यादिगण के काढ़े से पित्त के रोगो को दूर करता है। आरग्वधादि के काढ़े के साथ सेवन करने से कफ के रोगो को नष्ट करता है। दारुहलदी के क्वाथ से प्रमेह को दूर करता है। मधु के साथ सेवन करने से चर्बी को कम करता है। गोमूत्र के साथ सेवन करने से पाण्डुरोग को दूर करता है। नीम के काढ़े मे मधु मिला कर खाने से कुष्ठ, गिलोय के काढ़े से वातरक्त, मध के काढ़े से शूल, पाढल के काढ़े से चूहे के विष, त्रिफला के काढ़े से नेत्ररोग और पुनर्नवादि के काढ़े से खाने पर सम्पूर्ण उदररोगो को दूर करता है।

नोट—आजकल विशेषकर इसे गंठिया तथा स्त्रियो के मासिकधर्म की रुकावट पर वर्तते हैं। लोग नाम बदल कर बाजार मे इसका व्यवहार करते हैं।

## कैशोर गुग्गुल

बढ़िया भैंसिया गुग्गुल १ प्रस्थ ले। त्रिफला ३ प्रस्थ, गिलोय, १ प्रस्थ, जल १½ द्रोण काढा करे, जब आधा शेष रहे तो छान कर उसमे उस गुग्गुल को कूट कर डाल दे और धीमी धीमी आच पर पकावे और कड़छी आदि से बार बार हिलाता जावे, जब गाढ़ा हो जावे तो उसमे त्रिफलाचूर्ण २ पल, गिलोयचूर्ण १ पल, त्रिकुटाचूर्ण ६ कर्ष, बावड़िंग चूर्ण ½ पल, दन्तीचूर्ण १ कर्ष, त्रिवीचूर्ण १ कर्ष मिला दे। जब गोली बनाने योग्य हो जावे तो ४-४ रत्ती की गोलिया बना ले। इसको गर्म जल, दूध, मञ्जिष्ठादिकाथ अथवा गिलोय के क्वाथ के साथ देने से सम्पूर्ण कुष्ठ, त्रिदोषज वातरक्त, सम्पूर्ण प्रकार के व्रण, वायगोला, प्रमेह-पिड़का, प्रमेह, उदररोग, कास, मंदाग्नि, शोथ, पाण्डु आदि रोग दूर होते हैं। यह गुग्गुल भी रसायन है। वासादि क्वाथ से नेत्ररोगो को,

वरुणादि क्वाथ से गुल्म को, खदिरादि क्वाथ से सब प्रकार के व्रण एवं कुष्ठों को, गिलोय के क्वाथ से वातरक्त को शान्त करता है।

पथ्य—कैशोर गुग्गुल सेवन करने वाले मनुष्य को—खटाई, तीक्ष्ण मिर्च आदि, व्यायाम, अजीर्ण, धूप, परिश्रम, शराब, क्रोध आदि छोड़ देने चाहिये।

## त्रिफला गुग्गुल

त्रिफलाचूर्ण ३ पल, मघचूर्ण १ पल, शुद्ध गुग्गुल ५ पल, सब को घी का हाथ देकर एकत्र कर खूब कुटाई करे और ४-४ रत्ती की गोली बना ले। इसको सेवन करने से भगंदर, वायगोला, बवासीर, शोथ आदि रोग दूर होते हैं।

## गोक्षुरादि गुग्गुल

गोखरू २८ पल को जौकुट करके ६ गुणा जल मे क्वाथ करे, आधा रहने पर उतार छान ले, फिर उसमे उत्तम भैंसिया गुग्गुल ७ पल मिला कर पकावे, जब गाढ़ा हो जावे तो उसमे हरड, बहेडा, आमला, मघ, मिर्च, सोठ, नागरमोथा इनका चूर्ण २-२ पल ले उसमें मिला दे, पूर्वविधि से ४-४ रत्ती की गोली बना कर त्रिफला के क्वाथ से, बकरी के दूध अथवा गोक्षुरादि वा वरुणादि काढ़े से लेने पर प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, रक्त-प्रदर, वातरक्त, वीर्यदोष, पथरी तथा वायु के रोग दूर होते हैं।

## त्रिफला मोदक

त्रिफला ८ पल, शुद्ध भिलावे ४ पल, बावची ५ पल, बावड़िंग ४ पल, लोहभस्म, त्रिवी, शुद्ध गुग्गुल, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक एक-एक पल, पोहकर ½ पल, चित्रा ½ पल, मिर्च २-२ टक, सोठ, मघा, नागर-मोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, केसर, प्रत्येक एक एक टंक, कूटने-योग्य औषधियो का बारीक कपड़छान चूर्ण कर ले और खांड की चाशनी करके ६-६ मासे के लड्डू बना ले, इनके सेवन करने से सब प्रकार के कोढ़, सन्निपात के रोग, भगंदर, लीहा, गुल्म, जिह्वा-तालु और गले के रोग, सिर, आंख, कान, नाक, भौंह, पीठ तथा सारे शरीर के रोग

दूर होते हैं। यदि रोग शरीर के निचले भाग में हो तो भोजन के प्रथम, उदर के रोग हो तो भोजन के मध्य में, ऊर्ध्वजत्रुगत रोग हो तो भोजन के पश्चात् खानी चाहिये।

### कांचनार गुग्गल

कचनार की छाल १० पल, त्रिफला ६ पल, त्रिकुटा ३ पल, वरने की छाल १ पल, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र सब एक-एक कर्ष, सबका चूर्ण करे। चूर्ण के समभाग शुद्ध गुग्गल मिला कर खूब कुटाई करे। फिर ४-४ रत्ती की गोली बना ले। एक वा दो गोली कचनार, मुंडी, खैर अथवा हरड़ वा गर्म जल से काढ़े से नित्य खावे तो कण्ठमाला, अपची, अर्बुद, ग्रंथिरोग, नाडीव्रण, कुष्ठ, भगंदर आदि रोग दूर होते है।

### माषादि मोदक

उडद का चूर्ण, गेहूं और जौ का आटा और चावलों का चूर्ण, प्रत्येक एक-एक पल, सब मिला कर सब से आधे घी मे भूने, जब ठीक भुन जावे तो सब के समान खांड लेकर चाशनी करे और उसमे मिला कर एक एक तोले के मोदक बनावे। सायंकाल एक मोदक खाकर ऊपर से पाव भर दूध पीवे। खारे, खट्टे तथा मिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये। इसके सेवन से वीर्य पुष्ट होता है। नपुंसक मनुष्य के लिये अत्यन्त हितकारी है। बहुत सी स्त्रिया भोगने पर भी मनुष्य कमजोर नही होता।

इति गुडिकाधिकार।

## अथ पाकाधिकार

पाक मे सिक्का वा वंग ( कली ) भस्म पड़े व न पडे किन्तु अन्य भस्मे अवश्य मिलानी चाहिये। किन्तु जो भी धातु, रस, भस्म मिलानी हो वह प्रथम पूर्णतया शुद्ध करके उनकी शास्त्रविधि से उत्तम भस्म होनी चाहिये, कच्ची और अशुद्ध भस्म डालने से लाभ को बजाय अत्यन्त हानि होती है। अच्छी विधि से बनाये हुए पाक प्रमेह, गुल्म, उदररोग तथा अन्य पित्त, कफ और वायुरोगो को शान्त करते हैं।

### सौभाग्यशुण्ठी-पाक

सोंठ ३ प्रस्थ ले गोघृत मे भूने, फिर उसमें ३ प्रस्थ दूध मिला कर खोया करे, फिर ३ प्रस्थ खांड की चाशनी करे और उसमे उस खोए को डाल दे और अच्छी तरह मिला दे, पश्चात् जायफल, जावित्री, सोंफ, त्रिफला, पीपल, लौंग, चिकनी सुपारी, धनिया, इलायची, दाख, कपूर, खजूर, शतावरी, विदारीकंद इनका चूर्ण आधा-आधा पल लेकर मिला दे, त्रिकटुचूर्ण ८ पल, लोहभस्म ४ टंक, पाषाणभेदचूर्ण ४ टंक, त्रिवी २ टंक, सौंफ, चिरोंजी, प्रत्येक ८-८ टंक। सबको मिला देवे। इसके सेवन से स्त्रियों के सम्पूर्ण विकार दूर हो जाते हैं, सौन्दर्य, रूप और वर्ण बढ़ता है। शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है, प्रसूति के सम्पूर्ण उपद्रव नष्ट हो जाते हैं, योनि के रोग, स्तनो के रोग भी दूर होते हैं। पुरुषों के भी सम्पूर्ण वीर्यरोग दूर हो जाते हैं, शरीर में बल, वर्ण और तेज बढ़ते हैं। इसकी मात्रा १ तोले से २ तोले तक यथाशक्ति दूध आदि के साथ।

### पूगी-पाक ( सुपारी-पाक )

सुपारी ८ पल, शतावरी और आमले ४-४ पल, सब का ८ सेर जल में काढ़ा करे। फिर सुपारी को कूट कपडछान कर ४ प्रस्थ दूध में खोया करे। खांड ५० पल लेकर उस काढ़े में चाशनी करे और खोए को अच्छी तरह मिला दे, जब ठीक पक जावे तो उतार ले और नागकेशर, लौंग, चंदन, नागरमोथा, धनियां, मिर्च, सोंठ, चिरोंजी, पीपल, दाख, पिस्ता, गरी खोपरा, तेजपत्र, दालचीनी, इलायची, दोनों जीरे, जायफल, संघाड़े, जावित्री, वंशलोचन इनका चूर्ण आध-आध पल, वंगभस्म आधा पल, सबको मिला कर चिकने वा शीशे के बर्तन मे रखे। इसको १ तोला नित्य प्रातःसायं खाने से ज्वर, शूल, वमन, दाह, नाक तथा इन्द्री, गुदा और योनि के निकलने वाले रक्त को बंद करता है। जिन स्त्रियो की योनि से लाल, पीला, श्वेत पानी पडता हो उनके लिये यह अत्यन्त फलप्रद दवाई है। जिन पुरुषों को धात पड़ती हो प्रमेह मूत्राघात हो, उनके लिये भी यह अत्युत्तम है, वीर्य को गाढ़ा करती है। बंधेज करती है।

स्त्रियों के लिये विशेषकर लाभदायक है। गर्भाशय को शक्ति देकर संतान देती है।

### पीपल-पाक

पीपल ( मघ ) का चूर्ण १ प्रस्थ, दूध ५ प्रस्थ दोनों का खोया करे और ४ पल घी में भून ले। फिर खांड २ प्रस्थ लेकर चाशनी करके उसमें खोया मिला यथाविधि पाक करे और उसमें अकरकरा, मुसली, लौंग, कौंचबीज, गोखरू, इलायची, जायफल, जावित्री, दालचीनी, तेजपत्र, भंडिगी, पिप्पलामूल, सोंठ, कत्था, नागकेसर, धनिया, अजवायन, नागरमोथा, बांसा, कमल इनका चूर्ण, ४-४ टंक, तामेश्वर ४ टंक, शिगरफभस्म ४ टंक, कपूर २ टंक इनको मिला देवे और चिकने पात्र में संभाल रक्खे। इसमें से ६ माशे तक यथाशक्ति दूध आदि के साथ खाने से शरीर को शुद्ध करके बल और वर्ण को बढ़ाता है, जीर्णज्वर, मूर्च्छा, भ्रम, श्वास, हिचकी, पाण्डुरोग, प्रमेह, वमन, कास यह रोग दूर करता है। धातु को पुष्ट करता है।

### मुसली-पाक

मुसली सफेद ८ पल, चूर्ण कर ५ सेर दूध में पका कर खोया करे, फिर उसे १ सेर घी में भूने, और ५ सेर खांड की चाशनी करके उसमें मिला कर पाक करे, फिर बादामगिरी, पिस्ता, न्योजे एक-एक पल, चव, धनिया, लौंग, कौंच, जायफल, जावित्री, केसर, त्रिकुटा, बालछड़, अकरकरा, चंदन, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर इनका चूर्ण एक-एक कर्ष, वंगभस्म १ कर्ष, गूंद ४ पल ( गूंद घी में भून लेनी चाहिये ), सबको मिला कर तोले तोले के लड्डू बना ले। एक वा दो लड्डू प्रातःसायं पाव भर दूध के साथ खाने से वीर्य अत्यन्त पुष्ट हो जाता है, जिन पुरुषों को धात पड़ती हो, वीर्य पतला पड गया हो, स्त्री भोगने के लिये शक्ति न हो ऐसे मनुष्यों के लिये यह दवाई रसायन है। वीर्य को उत्पन्न करती है, गाढा करके संतान उत्पन्न करने के योग्य बना देती है। इसके अतिरिक्त प्रमेह, विषमज्वर, बुढ़ापा और दुर्बलता को दूर करके शरीर को मोटा,

ताजा हृष्ट-पुष्ट कर देती है। मस्तिष्क (दिमाग) की खुश्की को दूर करती है। निद्रा लाती है। पागलपन को भी दूर करके मनुष्य को मस्त बना देती है, रसायन है।

### सेमल-पाक

सेमल की जड का रस १ प्रस्थ, गोखरूचूर्ण ½ प्रस्थ, कौंचबीजचूर्ण ८ पल, शतावरचूर्ण ४ पल, ½ द्रोण भैंस के दूध मे पका कर खोआ करे, फिर ५ सेर खाड की चाशनी करके उसमे मिला दे और फिर अकरकरा, जावित्री, तालीसपत्र, मघ, मिर्च, सोंठ, लौंग, बालछड, जायफल, हरड़, बहेडा, आमला, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, कपूर, तालमखाना, बादामगिरि, नारियल और न्योजे एक-एक पल, वट के अकुर, नागकेसर, कश्मीरी केसर इनका चूर्ण आध-आध पल, रससिन्दूर, अभ्रकभस्म, आध आध पल, भांग का चूर्ण ४ पल इनको अच्छी तरह से मिला कर चिकने पात्र मे रक्खे। इसमे ६ माशे से एक तोले तक दोनों समय दूध से पीवे तो बीस प्रकार के प्रमेह दूर होते हैं, नपुसकता तथा शरीर की सब प्रकार की दुर्बलता दूर हो जाती है, मनुष्य हृष्ट-पुष्ट मोटा-ताजा हो जाता है। कामशक्ति तथा स्त्रियो मे रुचि बढती है। वीर्य गाढ़ा और संतान उत्पन्न करने योग्य हो जाता है। स्त्रियो के योनि और गर्भाशय के रोग दूर हो जाते हैं। यह दवाई रसायन है।

### चोपचीनी-पाक

चोबचीनी का चूर्ण १० पल लेकर ४ प्रस्थ दूध मे खोया करे, खाड ५ सेर मे चाशनी करके मिलावे और इलायची बडी, मघ, मिर्च, सोंठ, लौंग, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपत्र, नागकेसर. काकोली, कस्तूरी, कपूर, सिंघाडा, वंशलोचन, जावित्री, केसर कश्मीरी, जायफल, बालछड, कौंच की जड, तेजबल, विदारीकद, शतावरी, मुसली, शीतलचीनी, सीप की भस्म, इनका चूर्ण कर अभ्रकभस्म, तावेश्वर, वंगभस्म, नागभस्म यह सब एक-एक पल लेकर उसमे मिलावे और एक तोले के लड्डू बना ले। इसके खाने से आतशक, कुष्ठ, वातरक्त, आमवात, कमरदर्द, वायु के ८० रोग, मिर्गी,

जोड़ों की पीड़ा, पागलपन, अधरंगवायु, अपतंत्र, अपतानक, सिर के रोग, श्वास, खांसी, गले की रुकावट, पीनस, जुकाम, नजला, क्षय, अरुचि, उपदंश आदि रोगों को दूर करता है। धातु, बल और ओज को बढ़ाता है। इसके सेवन से क्रोध, शोक, रूक्षता और वायु उत्पन्न करने वाले पदार्थों का त्याग करना चाहिये।

नोट—जहां केसर, कस्तूरी तथा लोह, अभ्रक आदि भस्मों का का प्रयोग आता है, इनको खोया बनते समय उसमे मिलाना भी अच्छा होता है इससे यह दवाई सारे दूध मे समानरूप से मिल जाती है।

### जायफल-पाक

जायफलचूर्ण १० पल, गोदुग्ध ४ सेर, दोनों का खोया करे और १६ तोले घी मे भूने, पश्चात् ३ प्रस्थ खाड की चाशनी बना कर उसमे मिला दे। दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, लौंग, मव, मिर्च, सोठ, बालछड, जीरा, चित्रा, सेमल के फूल, जायफल, कचूर, रूमीमस्तकी, तज, छुहारे, कत्था, शतावर, मुलट्ठी, नागरमोथा, आमले, तगर, समुद्रशोष, लसुड़े, सुपारी, अकरकरा, सिंघाड़ा, कौंचबीज, बादामगिरि, पिस्ता, न्योजे, त्रिफला, त्रिकुटा, तालमखाना, मुसली, सौंफ, चन्दन इनका चूर्ण ४-४ तोले, मोतीभस्म, रूपामाखीभस्म, चांदीभस्म, स्वर्णभस्म, ताम्रभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, कस्तूरी, शुद्ध शिंगरफ, वगभस्म एक-एक तोले, मधु १६ तोले, सबको मिला कर चिकने अथवा शीशे के बर्तन मे रक्खे और ६-६ माशे की मात्रा मे दोनों समय खावे। यह अत्यन्त पुष्टिकर पाक है। प्रमेह, बवासीर, सग्रहणी, क्षय, श्वास, कास, मदाग्नि, ज्वर, वात, कफ, पाण्डु, कुष्ठ, हृद्रोग, शिर के रोग तथा सम्पूर्ण शरीर की दुर्बलता को नष्ट करता है। शरीर मे गर्मी और बल वीर्य को बढाता है। अत्यन्त वाजीकरण है। शीतकाल मे यह पाक बहुत उत्तम रहता है।

### लवंग-पाक

लौंगचूर्ण २५ तोले, दूध ४ प्रस्थ मे खोया करे, फिर २ प्रस्थ खांड की चाशनी कर उसमे मिला दे। केसर, चव, सोठ, अकरकरा, मुसली,

गोखरू, दोनों जीरे, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, वला, जावित्री, हरड, आमला, वालछड, कौंचबीज, मव, धनिया, पिप्पलामूल इन सब का चूर्ण, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, कपूर, कस्तूरी, स्वर्णभस्म, चांदीभस्म, वंगभस्म, लोहभस्म सब दो-दो तोले मिलावे । इसमे से एक तोला तक दूध के साथ खाने से श्वासरोग, क्षय, ज्वर, खासी, कफ और वायु के रोग दूर होते हैं, कामशक्ति अत्यन्त बढ़ती है, मंदाग्नि दूर होकर भूख बढती है, शरीर हृष्ट-पुष्ट और बलवान् होता है । नलशूल, वायगोला तथा शारीरिक रोग दूर होते हैं।

## केसर-पाक

केसर कश्मीरी २० तोले पीस कर ४ प्रस्थ दूध मे खोया करे, पश्चात् १६ तोले घी मे भूने, खाड २ प्रस्थ लेकर चाशनी करे और उसमे मिला दे। भाग का चूर्ण १ पल, मिर्च, जायफल, सोंठ, दारचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, लौंग, मुलट्ठी, गोखरू, मुसली, समुद्रशोष, तालमखाना, चंदन, नागरमोथा, सिंघाड़े, तगर, कपूर, कस्तूरी, मघां, हरड़ें, चव, कौंचबीज, सीप की भस्म यह सब दो-दो तोले। अभ्रकभस्म, लोहभस्म, ताम्रभस्म, वंगभस्म एक एक तोला, अफीम २ टक, सब को मिला कर ६-६ मासे की गोली बनावे और यथाशक्ति खावे। इसके खाने से शरीर मे कामशक्ति अत्यन्त प्रबल हो जाती है। वीर्य, चेहरे की कांति, ओज, बल, मास और शक्ति बढ़ती है। शरीर की उष्णता स्थिर रहती है। उपदंश, कुष्ठ आदि रक्तविकार भी नष्ट हो जाते हैं।

## कपिकच्छु ( कौंच ) पाक

कौंचबीजचूर्ण १२ पल, दूध ५ सेर मे खोया करे और १६ तोले घी मे भूने। फिर खांड ५ सेर लेकर चाशनी करे और खोया मिला दे। दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, लौंग, इलायची, वंगभस्म, नागभस्म, चव, शतावरी, मुंडी, सोंठ, मुसली, तगर, मुलट्ठी, उटंगनबीज, मिर्च, कौंचबीज, लसूडिया, शीतलचीनी, विदारीकंद, शुद्ध शिंगरफ, केलाकंद, कायफल, असगध, भखड़े, सेमल की मुसली, कपूर, केसर,

कस्तूरी, मघां, जायफल, चित्रा, जावित्री, रससिंदूर, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, बादामगिरि, पिस्ता, न्योजे, चन्दन, स्वर्णभस्म, चांदीभस्म, सब दो-दो तोला, अफीम १ कर्ष, शुद्ध भांग ४ पल, शहद १६ तोले। इसकी मात्रा—६ माशे से १ तोला तक। दूध के साथ लेवे। इसके सेवन से हृद्रोग, पाण्डु-रोग, ज्वर, क्षय, क्षत, अतिसार, संग्रहणी, कास, श्वास, शोथ आदि सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं। शरीर मे अत्यन्त वीर्य बढता है। मन हर समय प्रफुल्ल रहता और शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है। कामशक्ति तीव्र होती है। बहुत स्त्री भोग करने पर भी मनुष्य थकता नहीं है, वीर्य भी कम नहीं होता। चेहरा अत्यन्त सुन्दर हो जाता है। इसके निरन्त सेवन से नपुंसकता तथा अन्य शरीर को दुर्बल करने वाले रोग नष्ट हो जाते हैं। जिन स्त्रियों के संतान नहीं होती उनको सुन्दर रूपवान पुत्र प्राप्त होते हैं। कामदेव को और वीर्य को बढाने में यह पाक सर्व-श्रेष्ठ है।

### गुलाब-पाक

गुलाबफूल का चूर्ण १५ पल लेकर ४ सेर गोदूध में खोया करे, मिश्री २ प्रस्थ लेकर चाशनी करे, फिर उसमे खोया मिला दे। सिंघाडे, बालछड़, हरड़, कौंच की जड, कौंचबीज, मिर्च, जावित्री, कुंदरु, भृंगराज, इलायची, कस्तूरी, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, स्वर्णभस्म, चादीभस्म, कपूर, अनार, वंगभस्म सब एक एक तोला और शहद १६ तोले मिलावे। मात्रा—३ से ६ माशे तक। इसके खाने से शरीर मे सुन्दरता तथा कोमलता आ जाती है। शरीर के अंदर कोई विष हो तो भी दूर हो जाता है। पित्त और वायु के प्रमेह, श्वास, कास, वमन, ज्वर आदि सब दूर हो जाते हैं। कामशक्ति बढ़ जाती है। वीर्य पुष्ट होता है।

### गोखरू-पाक

गोखरूचूर्ण १० पल, अफीम २ तोले, भांग के बीज २ पल, धतूरे के बीज २ टंक, गोदूध ५ सेर में खोया करे। ५ सेर खांड की चाशनी कर उसमें खोया मिला दे तथा नीचे की वस्तुओं का चूर्ण कर उसमे मिला दे। लौंग, कौंचबीज, जायफल, कस्तूरी, केसर, असगंध, मुसली, मुलट्ठी,

चंदन, सुगंधवाला, नागरमोथा, उटंगनबीज, नीलकमल, जायफल, सोंठ, जावित्री, बालछड, तगर, कायफल, शतावर, सुपारी, ललूड़िया, न्योजे, पिस्ता, बादामगिरि, तालमखाना, हरड़, आमले, ताम्रभस्म, लोहभस्म, सब २-२ तोले। ६-६ माशे की मात्रा से खावे। अनुपान भेद से यह सम्पूर्ण प्रमेहो को दूर करता है। पाण्डुरोग, अतिसार, संग्रहणी, क्षय, कटिशूल, नपुंसकता को दूर करता है। अत्यन्त वीर्य बढानेवाला है। वीर्य को शुद्ध करनेवाला है, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी आदि सम्पूर्ण मूत्ररोगो को नष्ट करता है।

## भांग-पाक

भांग का रस १ प्रस्थ, दूध ४ प्रस्थ, खोया करे, खांड १०० पल लेकर चाशनी करे और १६ तोले घी मे भूने। इलायची, लौंग, छुहारे, रूमीमस्तकी, अकरकरा, कौंचबीज, केसर कश्मीरी, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेसर, तबाशीर, नीलकमल, शतावरी, मुनक्का, जायफल, असगध, मुसली, समुद्रशोष, इटसिट, सेमल की मुसली, त्रिफला, हलदी, कालीमिर्च, जीरा, बला, पिप्पली, चन्दन, अगर, कपूर, कस्तूरी, जावित्री, सुपारी, धनिया, लोहभस्म, चांदीभस्म, मृगांक अभ्रक, ताबेश्वर, वंगभस्म, सब एक-एक कर्ष चूर्ण कर मिलावे। शहद १६ तोले मिलावे। फिर ६-६ माशे की मात्रा से नित्य खावे तो बवासीर, सग्रहणी, पाण्डुरोग, रक्त-पित्त, यक्ष्मा को दूर करता है। विशेषकर पुराने अतिसार, सग्रहणी, गोला और सब प्रकार के प्रमेह तथा नपुंसकता को दूर करता है। वीर्य और कामशक्ति को अत्यन्त तीव्र करता है। शरीर को कान्तियुक्त तथा ओजयुक्त करता है। शरीर मे मस्ती तथा आनन्द भर देता है। मात्रा—६ माशे तक दूध के साथ।

## असगंध-पाक

असगंध का चूर्ण १२ पल, दूध ४ प्रस्थ, खोया करे, खांड २ प्रस्थ की चाशनी करे और उसमे मिला दे, १६ तोले घी मे भूने, पश्चात् निम्न दवाइयां भी पीस कपड़छान कर मिला दे। सोंठ २ पल, दालचीनी,

इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, वंगभस्म, त्रिकुटा, केसर कश्मीरी, दन्ती, भर्डिगी, बला, कौड़, अजवायन, चव, जायफल, जावित्री, चित्रा, कमलकंद, अकरकरा, मुलट्ठी, सौंफ, चन्दन, आमले, इटसिट, शतावरी, लोहभस्म, चांदीभस्म, सब २०-२० माशे मिला कर किसी चिकने बर्तन मे रक्खे और यथाशक्ति ६ माशे तक दूध से खावे तो श्वास, अरोचक, बवासीर, ज्वर, नपुंसकता शरीर की दुर्बलता आदि रोग दूर होते है। वंधेज बहुत होता है, वीर्य शीघ्र स्खलित नहीं होता।

### जावित्री-पाक

जावित्रीचूर्ण ८ पल, गोदुग्ध तीन प्रस्थ, दोनो का खोया करे, गोघृत ८ पल लेकर भून ले, पश्चात् दो प्रस्थ खाड की चाशनी कर उसमें मिला दे, तथा दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, लौंग, दोनो जीरे, चव, मघ, मिर्च, सोंठ, कपूर, बालछड, आमले, जायफल, हरड़, धनिया, तगर, वंगभस्म, लोहभस्म, चादीभस्म, अभ्रकभस्म, स्वर्णभस्म, ताम्रभस्म, मोतीभस्म सब एक-एक कर्ष, केसर कश्मीरी आधा पल, कस्तूरी असली १ कर्ष, शहद असली १ प्रस्थ, सबको अच्छी तरह मिला कर चिकने पात्र मे रख छोड़े। इसमें से ६ माशे तक नित्य खावे तो मंदाग्नि और अरुचि दूर होती है। शरीर हृष्ट-पुष्ट मोटा-ताजा हो जाता है, वीर्य अत्यन्त बढता है, वंधेज होता है। अतिसार, सग्रहणी, श्वास, कास, शोफ को दूर करता है। स्त्रियो के कुच को कठिन और स्थूल करता है। योनि को संकुचित करता है। सुन्दरता बढ़ाता है। बहुत स्त्रियो से भोग करने पर भी लिंग शिथिल नहीं होता।

### उटंगण-पाक

उटंगणबीज १० पल लेकर चूर्ण करे, दूध ४ प्रस्थ लेकर उसमे खोया करे और १६ तोले घी मे भूने। मिश्री ३ प्रस्थ लेकर चाशनी करे और खोया मिला दे, पश्चात् भांग ८ तोले, त्रिकुटा, जटामांसी, लौंग, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, बला, कौंच, सोठ, असगंध, मिर्च, कायफल, मुलट्ठी, शतावर, आमले, लसूडियां, मोचरस, विदारीकंद,

मुसली, गोखरू, तालमखाना, लोहभस्म, ताम्रभस्म, रससिंदूर, अभ्रक-भस्म, बंगभस्म, चांदीभस्म यह सब दो दो कर्ष, कश्मीरी केसर, कस्तूरी, कपूर एक-एक कर्ष सबको पीस कर मिला दे। पीछे १६ तोले शहद भी मिला दे। सबको स्निग्ध बर्तन में रखे। इसकी मात्रा—६ माशे। यह गोली अत्यन्त स्तंभक तथा कामशक्ति उत्पन्न करती है। इससे संग्रहणी, अतिसार, ज्वर, खासी, अरोचकता, सब प्रकार के वायुरोग तथा श्वास, कास आदि रोग भी दूर होते हैं।

### अफीम-पाक

अकरकरा, केसर, लौंग, शुद्ध शिंगरफ, जायफल, भांग यह सब एक-एक तोला, इन सब से आधी अफीम ले, प्रथम अफीम को पोटली में बाध दूध में लटकावे और धीमी-धीमी आंच पर पकाता जावे, जब अफीम घुल जावे तो पोटली को निकाल ले, और दूध का खोया बना ले और अन्य वस्तुएं कूट कर उसमें मिला दे, फिर मिश्री ६ पल लेकर चाशनी करे और खोया मिला दे। आग से नीचे उतार कर अन्य वस्तुओं को भी मिला दे। इसकी आयुबल के अनुसार १ माशे से ३ माशे तक मात्रा रात को दूध के साथ खाने से प्रमेह, उरःक्षत, शोष आदि रोग दूर होते हैं। लिंग अतिदृढ़ हो जाता है, वीर्यस्तंभन होता है। कामशक्ति को बढ़ाता है, वात और कफ के रोगों को शान्त करता है।

### कामेश्वर-पाक

असगंध, मिर्च, बला के बीज, सोंठ, शतावरी, सेमल की मुसली, मघा, कौंचबीज, हरड़, सिंघाड़े, आमले, जटामांसी, तबाशीर, छुहारे, लौंग, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, कपूर, वंशलोचन, कश्मीरी केसर, रूमीमस्तकी, मुनक्का, जावित्री, कस्तूरी, चव, शुद्ध शिंगरफ, काला जीरा, विदारीकंद, तेजबल, नीलकमल, बादामगिरि, न्योजे, पिस्ता, गोखरू, मुलट्ठी, कायफल, तालमखाना, जायफल, उटंगनबीज, समुद्रशोष, कचूर, बीजबंद मोचरस, यह सब एक-एक पल, अभ्रकभस्म, बंगभस्म, लोहभस्म सब औषध एक-एक पल लेकर बारीक चूर्ण कर ले, इन सब से

दुगनी खांड लेकर चाशनी कर ले और इन दवाइयों को मिला दे, शीतल होने पर खांड के समान भाग शहद मिला कर ३-३ माशे की गोली बना ले। यथाशक्ति एक वा दो गोली दूध से खानी चाहिये। इसके सेवन से २० प्रकार के प्रमेह, जीर्णज्वर, अरोचकता, वायु के रोग, श्वास, कास, नजला, जुकाम, क्षय, उरःक्षत आदि रोग दूर होते हैं। वीर्य इतना बढ जाता है कि मनुष्य रुक नहीं सकता, अतिमैथुन से भी मनुष्य थकता नहीं और शीघ्र वीर्यनाश नहीं होता है। शरीर की सम्पूर्ण धातुओं को बल देता है। जरा और मृत्यु को दूर करता है।

## रतिभंजन गुटी

नारियल का गोला लेकर उसमे एक सिरे पर एक छेद करे, उसमे एक-एक तोला नीचे की दवाइयां कूट कर डाल दे, इलायची, केसर, शुद्ध शिंगरफ, जावित्री, जायफल, समुद्रशोष, अफीम, लौंग, अकरकरा, कस्तूरी, दालचीनी, अभ्रकभस्म, रूमीमस्तकी और कौंचबीज। फिर उस छेद को आटे से बंद करदे और १६ सेर गोदूध मे पकावे, जब दूध का खोया बन जावे तो गोले को निकाल कर पीस ले और खोए में मिला दे। फिर खांड सब से दुगनी लेकर चाशनी करे और उस चाशनी मे इन सब को मिला दे। शीतल होने पर खाड के समान मधु मिला ५-५ माशे की गोली बना कर रख छोड़े और सायंकाल दूध से खावे तो रात भर स्त्रियो से भोग करते रहने पर भी पुरुष थकता नहीं, वीर्य का बंधेज होता है, शरीर कामदेव के समान सुन्दर हो जाता है, बल बढता है, वीर्य बढ़ता है, शरीर मे फुर्ती आती है।

## लघु जवाहरी ( याकूती )

मोतीभस्म, मूगाभस्म, चूनी, कहरवाशमई यह सब एक एक टक, लौंग, अगर, चंदन, तज, बड़ी इलायची, वंशलोचन, आमले, यह सब ७-७ माशे, केसर, कस्तूरी, जावित्री, जायफल यह सब १२-१२ रत्तियां, मुश्ककपूर १ माशा, इनका बारीक चूर्ण करे, वर्कसोना २५, वर्कचांदी ५०, सबसे चोगुनी मिश्री और मधु ले, प्रथम मिश्री की चाशनी करके सब

दवाइयां मिला दे और शीतल होने पर शहद मिला दे। इसकी मात्रा—३ माशे तक। खाने से होलदिल, पागलपन, दिल का बैठना, श्वास, खांसी, कमर की दर्द दूर होती है। मन कमल की तरह प्रतिसमय प्रफुल्ल और प्रसन्न रहता है। चिन्ता, भ्रम, शोक, क्रोध आदि दूर रहते हैं। मुखमे से सुगंध आती रहती है, वंधेज रहता है।

### बड़ी जवाहरी (याकूती)

मोतीभस्म, चूनीभस्म, मूंगाभस्म, फीरोजा (नीलम) भस्म, अकीकभस्म, लाजवर्द, सगयशव, कहरवाशमई, रेहचूनी, पीली चूनी, सोने चांदी के वर्क, अंबर, कस्तूरी, यह सब एक-एक टंक। दालचीनी, चंदन, गुलाब के फूल, लौंग, सर्दचीनी, इलायची, तेजपत्र, जायफल, केसर कश्मीरी, वंशलोचन यह सब ६-६ माशे, कच्चे रेशम की भस्म, अगर, तगर, कासनी, संगतरे के चार फल की छाल, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, इनका चूर्ण ८-८ माशे, मुश्ककाफूर २-२ माशे, शहद सबसे दुगना, खांड शहद से दुगनी। प्रथम खांड की चाशनी करे, अन्य द्रव्य भी मिला दे, शीतल होने पर उसमे शहद मिला दे और किसी शीशे के बर्तन मे संभाल कर रख छोड़े। इसके खाने से सम्पूर्ण पुराने रोग दूर होते हैं। शरीर हृष्ट-पुष्ट और चेहरा लाल और ओजस्वी रहता है। यह हृदय को शक्ति देती है, वीर्य को शक्ति देती है।

### लघु कामेश्वर-पाक

मुसली सफेद, मुनक्का, छुहारे, तिल, मोचरस, शतावर, गोखरू, असगंध, विदारीकंद, तवाशीर, सिंघाडे, जायफल, कौंचबीज, कंकोल (सर्दचीनी), सोंठ, चमेली के फूल, तवाशीर, नीलकमल, जटामांसी, लौंग, चव, तगर, हरड, आमले, रूमीमस्तकी समुद्रशोष, अकरकरा, दालचीनी, इलायची, नागकेसर, तेजपत्र इनका चूर्ण एक-एक पल। केसर कश्मीरी, कस्तूरी, धतूरे के बीज यह सब एक-एक टंक। ताम्रभस्म स्वर्ण-भस्म, चांदीभस्म, मोतीभस्म, रससिंदूर, लोहभस्म यह सब २-२ तोले, मिश्री सबसे दुगनी लेकर चाशनी करे और उसमे सब को मिला दे,

शीतल होने पर उसमे मिश्री के बराबर शहद मिला दे। और यथाशक्ति ६ माशे से १ तोला तक दवाई दूध के साथ खाने से शरीर अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट हो जाता है, वीर्य और कामशक्ति इतनी बढ जाती है, कि अतिमैथुन से भी मनुष्य कमजोर नहीं होता। इसके अतिरिक्त प्रमेह, मंदाग्नि, पाण्डु-रोग, उलटी, मूर्च्छा तथा वात, पित्त, कफ के रोग शान्त हो जाते हैं।

## काम-रहस्य

केसर, कपूर, चंदन, शुद्ध हिंगुल, अफीम, जायफल, कस्तूरी, सोंठ, तेजपत्र, सब, भांग, अकरकरा, दालचीनी, लौंग, हरड़, इनका चूर्ण करके इनके समान मिश्री पीस कर मिला दे और मधु मिला कर २-२ माशे की गोली बना ले। इसे खाकर ऊपर से मिश्री मिला हुआ गोदुग्ध पीवे। इसके पीने से अत्यन्त वंधेज होता है, वीर्य शीघ्र नहीं स्खलित होता।

## कलानिधि वटी

केसर कश्मीरी, शुद्ध हिंगुल, जायफल, कस्तूरी, अफीम, भांग, अकरकरा, इनका वारीक चूर्ण कर मधु से ४-४ रत्ती की गोली बना ले, इसके ऊपर मिश्री मिला हुआ गोदुग्ध पीवे यह भी अत्यन्त स्तंभन करने वाली है, जिन लोगों का वीर्य शीघ्र ही स्खलित हो जाता है उनके लिये यह दवाई वहुत अच्छी है।

## नारिकेल-पाक

नारियलगोला २ प्रस्थ, गोघृत १ प्रस्थ, चिरौंजी के बीज १ प्रस्थ, गोदुग्ध ४ प्रस्थ, प्रथम नारियलगोला को कद्दूकस कर ले, और चिरौंजी को कूट ले, पश्चात् इनका खोया करे और खोए को घृत में भून ले तथा ५ सेर खांड में चाशनी कर सब को मिला दे, जायफल, जावित्री, लौंग, दोनों जीरे, अनारदाना, असगंध, गोखरू, कौंचबीज, धनिया, बालछड़, कपूर गंगेरन, सौंफ, शतावरी, तज्जसक, तेजपत्र, मच, मिर्च, सोंठ, नागरमोथा, विदारीकंद, सिंघाड़े, नागकेशर, इलायची, हरड़, बहेड़ा, आमला सब आध-आध पल, कस्तूरी, कपूर एक-एक टंक, कपड़छान करके उसमें मिला दे और २-२ तोले के लड्डू बना कर खावे, ऊपर से दूध पीवे तो बीस

प्रकार के प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। धातु पुष्ट हो जाती है। वृद्ध पुरुष भी जवान प्रतीत होता है।

### लशुन-पाक

१ प्रस्थ लसन का छिलका उतार कर गिरिया निकाल ले, उसे तक्र के साथ पीस कर धूप मे सुखावे, फिर ४ प्रस्थ दूध में खोया करे, फिर उसे १६ तोले गोघृत मे भून ले, खाड ५ सेर लेकर चाशनी करे और उसमे खोया मिला दे। रायसन, वासा, कचूर, गिलोय, सोठ, देवदारु, विधारा, चित्रा, अजमोद, शतावरी, इटसिट यह सब एक-एक पल प्रमाण चूर्ण करके मिलावे, फिर ६-६ मासे के लड्डू बना कर खावे, इसके सेवन से चौरासी वातरोग, उरुस्तभ, आमवात, धनुपवाय, अधरंग, झोला, रींघन, लकवा तथा अन्य शरीर मे होने वाले चय आदि रोग दूर होते हैं। पुराने बुखार, तपदिक के लिये भी यह दवाई अच्छी है।

### पाक-विधि

जब कोई पाक बनाना हो तो बडी सतर्कता ( होशियारी) से काम लेना चाहिये। प्रथम जिन दवाइयो को डालना हो उनका कपड़छान चूर्ण करके रख लेना चाहिये और अन्य भी दूध, घृत, मिश्री, खांड आदि सामान अपने पास रख लेना चाहिये। प्रथम जिस पाक को बनाना हो उसे दूध के साथ खोया कर लेना चाहिये, फिर उस खोए को घृत मे इस विधि से भूने कि वह लाल हो जावे न जले और न कच्चा रहे। फिर मिश्री खांड आदि की चाशनी करे. चाशनी भी ठीक होनी चाहिये, चाशनी एक नरम होती है और दूसरी खड़ी, नरम चाशनी दोतारी होती है, खड़ी चाशनी सूख कर इससे अधिक कठिन हो जाती है, जितनी कठिन चाशनी करनी हो उतना ही थोडा जल डाले और आग पर रख पकने दे, जब झाग से उठने लगें तो थोड़ी सी दोनो अंगुलियो मे लेकर देखे, यदि उसमे तारें छूटने लगें तो चाशनी ठीक समझे, कच्ची चाशनी रहने से दवाई के शीघ्र खराब हो जाने का भय रहता है। चाशनी पकने पर उसमे प्रथम खोया मिलाना चाहिये, पश्चात् अन्य पिसी हुई वस्तुएं मिला कर

शीघ्र उतार लेनी चाहिये। केसर, कस्तूरी आदि को रूह गुलाब केवड़ा मे पीस कर नीचे उतार कर मिलाना चाहिये। और यदि सोने चांदी आदि के वर्क मिलाने हों तो भी पीछे मिलाने चाहिये। इस प्रकार के पाक मे पूरे गुण पाए जाते हैं। देखने मे सुंदर होता है, सुगध भी अच्छी होती है। यह बातें गुरु की सेवा से प्राप्त होती हैं, पुस्तक मे कुछ और होता है किन्तु व्यवहार में कुछ और होता है। इसलिये प्रत्येक बात को सोच समझ कर अपनी बुद्धि द्वारा करना चाहिये।

## वैद्यक ग्रंथ की स्तुति

१—मेघ मुनि कहते हैं कि जिस प्रकार सात समुद्रों के जल का प्रमाण जानना कठिन है, इसी प्रकार चिकित्सा-शास्त्र का पता लगाना भी कठिन है।

२—वैद्यकशास्त्र तो मेरु पर्वत के समान ऊंचा है और मनुष्य की बुद्धि चिउंटी के समान। वहां से जो कुछ बुद्धि ने ग्रहण किया उसका यहां वर्णन किया गया है।

३—योगशास्त्र का सुर-नर-मुनि भी पार नहीं पा सकते मेरे जैसा अल्पबुद्धि मनुष्य क्या कह सकता है जितना कुछ बुद्धि मे आया सज्जनों की सेवा मे उपस्थित कर दिया है।

४—मेरी बुद्धि तो बालक के समान है। कविता का मुझे क्या पता है, जो भी इस ग्रंथ में कविता की गई है, वह सब गुरुदेव के चरणों की कृपा है।।

नोट—मेघविनोद मूल पुस्तक दोहे, चौपाइयो और छन्दो मे है, इसी लिये मेघ मुनि ने यह कहा है।

बालक के समान अल्प-बुद्धि होने के कारण इस ग्रंथ मे कई प्रकार की त्रुटियां मुझ से रह सकती हैं, किन्तु बुद्धिमान् और चतुर वैद्य अपने बुद्धि बल से ठीक कर मेरे प्रयत्न को सफल बना सकते हैं।

मेघ कहते हैं कि मेरी इस कविता को देख क्रोध न करना, क्योंकि भले मनुष्य बालक और अल्पबुद्धि वाले मनुष्यों की त्रुटियो पर क्रोध

नहीं करते। जो इस ग्रंथ मे अशुद्धि प्रतीत हो विद्वान् वैद्य इसे अपनी बुद्धि के अनुसार शुद्ध कर लेवें।

## मेघ मुनि की गुरु-वंशावली

आचार्य जटमल के शिष्य परमानंद जी हुए, परमानंद जी के शिष्य सदानंद हुए, सदानंद जी के शिष्य नारायणदास जी हुए और नारायण-दास जी के शिष्य श्री मेघ मुनि हुए जिन्होंने इस जगत्-प्रसिद्ध मेघविनोद ग्रंथ का निर्माण किया।

### ग्रंथनिर्माण काल

संवत् १८१८, पौष बदी तृतीया, सोमवार, पुनर्वसु नक्षत्र, ब्रह्मयोग, ऐसे पवित्र दिन श्री मेघमुनि ने इस श्रेष्ठ मेघविनोद नाम ग्रंथ को समाप्त किया।

जालंधर जिले मे फगवाडा एक नगर है (आजकल यह नगर रियासत कपूरथला मे है, और व्यापार की एक भारी मण्डी है) जहां के निवासी, चतुर, धनधान्य से पूर्ण और विद्वान् हैं। उस समय वहां का राजा चूहडमल्ल था, जो कि बड़ी न्यायप्रियता से राज्य करता था। उसके राज्य मे प्रजा संतुष्ट, सुखी तथा धन धान्यपूर्ण थी।

### मेघविनोद मे ग्रंथ-मत

इस ग्रंथ को पूर्ण करने के लिये—माधवनिदान, वंगसेन, योगचिन्ता-मणि, शार्ङ्गधर, योगशतक, कालज्ञान, सन्निपातकलिका, निघण्टु, सारसंग्रह, रत्नमाला, पथ्यापथ्य, वैद्यकुतूहल, ब्रह्मयामल, रसरत्नाकर, वीर-सिंहावलोक, डामरतंत्र, रसमञ्जरी, आत्रेयसंहिता, हारीतसंहिता, चरक-संहिता, सारोद्धार, मनोरमा, भावप्रकाश आदि उच्च तथा प्रमाणभूत ग्रंथो के प्रसिद्ध तथा अनुभूत योग दिये हैं, इसलिये यह ग्रंथ इनका संग्रह है। इसके अतिरिक्त इसमे प्रचलित रोगो का तथा रूढियो की चिकित्सा का भी वर्णन कर दिया है। ताकि चिकित्सक को किसी प्रकार को चिकित्सा करने मे कठिनाई न हो।

### औषध देने का योग

रेवती, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु मृगशिरा, हस्त, चित्रा, मूला, शत-भिषा स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, इन नक्षत्रो में दवाई देनी चाहिये।

## वारयोग

रविवार, शनिवार, मंगलवार, इन तीनो वारों मे औषध देनी चाहिये। इस प्रकार औषध देने से शीघ्र कल्याण होता है।

## रोग के बाद स्नान

रोहणी, स्वाती, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराफाल्गुणी—इन नक्षत्रो को छोड़ कर पुनर्वसु, रेवती, मघां, इसी प्रकार रिक्ता तिथि, चर लग्न, मंगलवार, एतवार के दिन रोगी को स्नान कराना चाहिये।

## छंद-संख्या

इस मूल मेघविनोद ग्रंथ मे पांच हजार पाच दोहे, चौपाइया और छंद हैं। और बत्तीस अक्षर के हिसाब से सात हजार तीन सौ हैं। इस प्रकार यह ग्रंथ पूर्ण हुआ है।

## ग्रंथ-समाप्ति पर मंगल कामना

इस ग्रंथ को रचने वाले मेघ मुनि फगवाडा मे आनन्द से निवास करते रहे और लोगों के उपकार के लिये उन्होंने मेघविनोद नामक ग्रंथ रचा, इसमे १३ अध्याय हैं।

इति श्री मेघविनोदस्य सौदामिनीभाषाभाष्ये पाकाधिकारो
नाम त्रयोदशोऽध्यायः समाप्तः।

इति दातारपुर वास्तव्य निखिलतन्त्र स्वतन्त्र श्रीपण्डित
मिहिरचन्द्रशर्मतनुजुषा, लवपुरीय-श्रीसनातनधर्म
प्रेमगिरि-आयुर्वेद महाविद्यालयस्याचार्येण
पण्डित नरेन्द्रनाथशर्मशास्त्रिणा
रचितं मेघविनोदस्य "सौदामिनी-
भाषाभाष्यं" समाप्तम्।

---

# भावप्रकाशनिघण्टु ( हरीतक्यादि )

प० श्री विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालंकार, प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वेदिक कालिजकृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित। इस में हर एक बूटी का पूर्ण विवरण दिया है। वनस्पति के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र ( पत्रपृष्ठ, पत्रोदर ) तना, काष्ठ आदि हर एक का वर्णन। वनस्पति कब फूलती है, किस भूमि में किस ऋतु में, किस काल में संग्रह करना चाहिये। औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और उसकी मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं। यद्यपि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि वनस्पति के पर्याय वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये पर्याप्त हैं किन्तु उसे हर एक व्यक्ति नहीं समझ सकता इस लिये उन्हें भी व्यक्त कर दिया है जहां २ आवश्यक समझा गया है औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। वंशलोचन, एलवा मुसव्वर आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है। हर एक वनस्पति के नाम भिन्न २ भाषाओं में दिये हैं। जहां पर इस पुस्तक में आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहां पाश्चात्य वनस्पति वेत्ताओं के भी विचार दिये हैं। यूनानी हकीमों के विचारों को भी यथा स्थान लिखा है। पाश्चात्य वनौषधि विज्ञान को साथ साथ रखने से वैद्यगण वा विद्यार्थी को अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियां जो विशेष गुण करती हैं तथा अत्यन्त लाभप्रद हैं उनका पता लग जावेगा। एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमों के सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियां प्राय. वैद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है अत. उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया गया है। एक बहुत बड़ी विशेषता इस में यह है कि प्राय. प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई हैं तथा औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्पनाशक के लिये क्या देना चाहिये। अत. यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है। छात्रों तथा वैद्यों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। कोई भी बात जो निघंटु में समझने लायक है इसमें नहीं छूट पाई। संपूर्ण पुस्तक लगभग १००० पृष्ठ में समाप्त हुई है। पक्की कपड़े की जिलद सहित। परन्तु दाम केवल ४) रु०, प्राय सभी पाठशालाओं तथा कालिजों में विद्यार्थी इसे ही उपयोग [illegible] रहे हैं।

---